



श्री सद्गुरुभ्योनमः

# ॥ रत्नसमुच्चय ॥

तथा

# ॥ रामविलास ॥

संग्रहकर्ता श्रीसाधुजीमहाराजके

पोत्र

उपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः

श्रीरामलालजी रुदिसारजीगणिः

—००००\*००००—

छपायके प्रगट कर्ता.

शिष्य पं। क्षेमचंद चि। पेमचंद चि। अमरचंद

( इसका सर्व हक इन तीनोंका है )

पुस्तक मिलणेका ठिकाणा

वीकानेर बडा उपासरे पास पं। क्षेमचंद मुनिः

चि। पेमचंद अमरचंद विद्याशाला.

मुंबई विचले भोईवाडे श्रीचिंतामणजीके

मंदिर मेहता पास

संवत् १९६० मिति आसो शुदी ९-सने १९०३

शांति सुधाकर प्रेस-मुंबई.



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें  
चीमनलाल सांकळचंद मारफतीयाने  
मुद्रित किया.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

## रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥

तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनाथंजिनंनत्वा, धर्मशीलंचसद्गुरुं ॥  
गीर्वाणींहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थंनव्यजोवा  
नां, तत्त्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं  
॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वानि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनंरम्यं,  
स्वाध्यायंगुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिबहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥  
जातोयंकटपकट्याणं, नित्यानंदश्चसंपदं ॥ ४ ॥

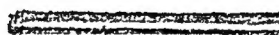
अथ ग्रंथ संग्रहकृतसंक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्गीरजिनेन्द्रतीर्थतिलकःसद्गुरुतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः  
सुधर्मगणनृत्तस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽनवत्सुविहितेपक्षे  
दाचारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनःसूरिराट् ॥ ५ ॥  
आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत्श्रीवर्द्धमानान्निधः, सूरिस्तस्यजिनेश्वर  
ख्यगणनृज्जातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्नृत्तसिद्धिपंक्तिसरदि ।  
१०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुद्धंरुतीखरतरे त्पाख्यं  
नृपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलान्नि  
धः ॥ दादाविरुद्विरुद्धातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ हेमकीर्त्तिनप  
ध्यायः, जातोसौसकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, हेमवाटी  
चिरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविक्तातः, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ  
कानेकनव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपालकाः ॥ ९ ॥ तच्चरणसमालोढा, नि  
धानकुशलान्निधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः ॥ १० ॥  
उपाध्यायसदाचारा, वादीनांमानज्जका ॥ शास्त्रार्थेविजयंप्राप, संप  
दंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकरुद्विसारेण, कृतोयंग्रंथसंग्रहः ॥  
स्वपरोपकृतेसम्यग्, प्रसिद्धंप्रापितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यहेमचंद्रेण,  
प्रेमामरसबांधवैः ॥ श्रीसंघकृतसहायेन, सुबध्यांशोसकाक्षरैः ॥ १३ ॥

यंत्रमुद्रापितसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पठकःपाठकेच्योवै, नि  
त्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेऽस्ये, वृहत्स्वरतरेगणे ॥ वृह  
दोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाज शुज  
हमारे पोषपुत्र शिष्य पं । श्रीक्षेमचंद्र चि । पैमचंद्र चि ।  
अमरचंद्रका हे. हमने हमारा सर्व स्वनपासरा पुस्तक धनमालका  
मालक इन तीनोंकों किया हे, दूसरा किसीका दावा नजर नहीं ॥  
शुज ॥

दसकत । ३० । श्रीरामलालगणिका खुद ॥



## ॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

### ॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रज्ञवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंजवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोज्ञसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंज्ञतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीज्ञबाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीशूलज्ज्ञस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिस्वरजी ज्ञये सो वीरजगवानसें २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकूं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोम सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगच्छ प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बने प्रज्ञावीक विद्यासिद्ध ज्ञये इनोसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तेसें १८ पट्टपर श्रीजिनचंडसूरी हुये इनोसे चंडकुल प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसें ३८ में श्रीउद्योतनसूरिः ज्ञये सो एक तो निजशिष्य नर इसरा साधुनके ८३ अपने विद्यार्थी शिष्योंको आचार्यपद दिया तबसें ८४ गच्छ ज्ञया, यह ८४ गच्छोंके आचार्य बने प्रज्ञावीक धर्मोद्योतक ज्ञए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाटधारी आवूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः ज्ञये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः ज्ञये सो अणहलपुरपट्टणमें दुर्लभराजाकी सन्नामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर विरुद्ध दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके ऊलज्जलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कह्ये बने कठोर इस वास्ते खरतर विरुद्ध पाया,

कोटिकगह्व वज्रशाखा चंडकुल खरतर विरुद्ध ऐसैं ४ जेद नवदी  
 क्षित शिष्यकूं कहणा सरू जया, इनोके ४१ में पट्ट दिह्लीके बाद  
 साह प्रतिबोधक जीवहिंसा ठुराणेवाले श्रीमालमहतियाण गोत्र  
 प्रतिबोधक श्रीजिनचंडसूरिजी जये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके  
 लघुभ्राता श्रीस्थंजणातीर्थ नर नवांगवृत्ति प्रगटकर्ता श्रीअन्नयदेव  
 सूरिः जये, तत्पट्टे ४३ में अठारे हजार वागमीश्रावक प्रतिबोधक  
 श्रीजिनवल्लभसूरिः युगप्रधान जये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रज्ञावीक  
 युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः जये जिनोनें चितोर नर उज्जयणी  
 वज्रखंजसे साठीतीन कोटी विद्यान्नायकी पुस्तक निकालके साध  
 कर बावनवीर चौसठ योगणी एक लाख तीस हजार घर राजन्य  
 वंशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर नुसवाल बनाया, नुस  
 बखत तीनलें गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा  
 सावणसुखा ठाजेर इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसैं इस बखत  
 सातसे करीब होगये हे, वह गुरूका गुण लिख नहीं सकते, वह  
 आज तक बने दादाजीके नामसैं सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५  
 में मणीधारी दिह्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दि-  
 खलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंडसूरिः जये जिनो  
 का दिह्लीके नरबजारमें दाग जया बसा चमत्कार देख बादसाहा-  
 दिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी जये, अनुक्रमे  
 ५० में पट्टपर महाप्रज्ञावीक कुशलसूरिःजी जये, सो आचार्यपद  
 पायके बावनवीर चौसठयोगणीकूं वसकर संघमें बने २ उपगार  
 किये, गूजरमल बोधरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूप  
 सैं उहां जाकर दरियावमें तिराई ऐसैं परमोपकारी अंतमें फागुण  
 वदि अमावशको स्वर्गवाश जये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्र-  
 गट होय प्रथम दर्शण दिक्षा, तिसपीवे जक्तलोकोका उपगार

जगेश करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघने अपने आचार्यको इष्टदेव  
समजके सर्व नगर गाममें चरणमूर्ति स्थूज स्थापन कर दादा  
जीके नामसे वंदन पूजन करणे लगे, सर्व जगे दादागुरुका जश  
प्रख्यात जया, प्रत्यक्ष परचा देखेवाले यह तीसरा दादाजी जये,  
इनोके पाटानुपाठ ६१ में श्रीजिनचंडसूरि जये, जिनोने अकबर  
बादसाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका वताणा  
इत्यादि दिखाकर अमारि उदघोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी  
हिंदुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियानुद्धार कर पतितोंको बांटा गन्धकी  
व्यवस्था करमचंद बठावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी,  
इनोके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरिः, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन  
राजसूरिः इनोके समयमें आचार्य गन्ध सागरचंडसूरिःसें जया, इ  
नोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरिः इनोके समय रंगविजयसूरिःसें  
रंगविजय गन्ध जया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंडसूरि, इनोके  
पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनजक्तिसूरजी  
जये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलाजसूरजी जये, इनोके पट्ट ६९  
में श्रीजिनचंद्रसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी  
जये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौजाग्यसूरिजी जये, इनोके स  
मयमें महेंद्रसूरिजीसें मंदोवरागन्ध जया, इनोके ७२ में पट्ट श्री  
जिनहंससूरिःजी जये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरिः जये,  
इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्तिसूरिःजी वर्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्त्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरिः सहाराजके शिष्य म.  
होपाध्याय श्रीक्षेमकीर्तिगणिः जीने जं । यु । प्र । ज । श्रीजि  
नपद्मसूरिःजीके वखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें ब  
होत थोमे रहे उर वनेर ज्ञानवंत क्रियावंतोंको उरर जगे चतु-



मांस करणे जेजेगये, थोमे बहोत रहेये सो जी गोचरी धर्मिन्ना  
 जूमी चलेगयेये उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी  
 ही बैठेये, श्रीजीका धर्मिन्नाजूमीका हाथ धुलाणेकूं नठै, अपने वि-  
 द्यापाठकजीका ऐसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप  
 विराजो समयका बना अपरबलीपणा हे सो गछमें साधू बहोत  
 कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे नठै, दादासाहिबके वखत  
 कैसेर ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसेर पंथित वि-  
 द्यमान थे, अब यह गछ किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय,  
 जिसमें सुपात्र तो बहोतही थोमे हैं, तब उपाध्यायजीने कहा म-  
 हाराज यह बृहज्जं खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी  
 अजी गुरुदेवकी कृपासें यतीर होजायंगे, एसा कह दादासाहि-  
 बका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे,  
 गुरुके ध्यानमें लीन जये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क-  
 रणेकूं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन  
 नमस्कार कर गुरुके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीने शांतराज  
 का जरा बैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोंने वि-  
 वाहकी वांछा ठोमे दीक्षा ली, दादासाहिबने देवशक्तीसें सबोंको  
 धर्मोपगरण वेप दीया, इन सबोंको लेकर श्रीआचार्य पास आये,  
 सूरिश्वरने कहा, हेमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीने  
 कहा तथास्तु, मेरे शंतानी हेमधाम नामहीसे प्रसिद्ध रहे,  
 उस दिनसें बृहत्साखा हेमधाम विस्तारजावकूं प्राप्त जई.  
 यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणची  
 देशमें जई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध  
 हे, इस साखामें बनेर विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये  
 अनेक प्रकारण काव्य न्याय टीका वगैरह विद्यमान हे, उस साखा,

मैं उपाध्याय श्रीनेममूर्तिजीजिज्ञः तत् शिष्य उ । श्रीकैममाणि  
 कजीज्ञः तत् शिष्य । पंरित प्रवर श्रीविनयज्जद्रजिज्ञः तत्  
 शिष्य श्रीपं । प्र । लब्धिहर्षजिज्ञः तत् शिष्य पं । प्र । श्रीधर्म  
 शीलजिज्ञः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्य पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजि  
 ज्ञः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीरुद्रिसारगणिजित्संगृहीत  
 रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलास तच्छिष्य पं । कृमासौजाग्यमुनिः  
 चि । पेमचंद चि । अमरचंदकी तरफतें यह ग्रंथ सब जीवोंके उ-  
 पगारार्थ पढणेकूं ठपाया । श्रीबीकानेरमें सं । १९५९ की ज्येष्ठ  
 वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ  
 स्थापन करी हे इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीका-  
 नेरमें दिया ॥

४१ रु । श्रीनम्रसेठजी चांदमलजी ढढा.

११ रु । श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी जावक.

११ रु । श्रीसदारामजी गोलठा.

११ रु । मानमलजी केसरीचंदजी साह.

११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलठा.

१० रु । श्रीराजरूपजी देवचंदजी नाहटा.

७ रु । श्रीआसकरणजी वरढिया.

११ रु । श्रीबादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.

११ रु । श्रीसिरदारमलजी तातेर.

२५ रु । श्रीबालचंद कनीराम आज्ञन मुमईवाला.

३ रु । श्रीबठराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक ईस पाठशालाकूं मदत देंगे तो  
 ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगे, जतीलोकोंके केइयक शिष्य जैनपं-  
 रित तत्वज्ञानी बण जायगें, जैनउपदेशक बधेगें, नर जो नही प



दते हैं उनोंको हरतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढ़ाणेकुं उद्यमवंत  
 करणा यह काम श्रावक मातपिता नर गुरुलोकोंका हे, इस नही  
 पढ़ाणेके सबब जैनके ज्ञेयधारी नर ज्ञेयधारणीयां अनेक कुरुर्मोंके  
 वश नरकके पात्र नर धर्मकुं लजाते हे, क्यों की दशवी-  
 कालक सूत्रमें लिखा हे ( ॥ सूत्रं पढमं नाणं तनु दया ॥ ) पढ-  
 ली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीवै दया पाल सकता हे ॥ ज्ञा-  
 नीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ ऐसा  
 कहते हैं हमारे ज्ञावे विगरे तो क्या नर सुधरे तो क्या, हम नतो  
 इनोंको गुरुकरके मानेगें न अन्नवत्त देंगे, देंगेतो मानरहित कंग-  
 लोकी तरे ॥ हम पढ़ाणेकी क्यों कोसील करें ॥ उत्तर ॥ यह स-  
 मजसें तो जैनधर्म अमावश चंडताकुं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें  
 जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसें उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि  
 श्रावकाचार ग्रंथोंमें ऐसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें ध-  
 र्मसें नृष्टज्ञये धर्माचार्यकुं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो बदला उत्तरे,  
 दस बीस आदमी एकठे होकर निंदा करणसें विगारका सुधार नही  
 होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जरु विद्यावृद्धि हे, स्वज्ञाव कोई  
 किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चै हे, तथापि कारणसें  
 कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढ़णा हे कार्य सो अठी क्रिया चोथा  
 पांचमा ठठा सातमा गुणठाणा चदशेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास  
 करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थकरोका हे सो विचारणा,  
 प्रश्न । हम जतियोंको धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोइ  
 कृतघ्नी अपने पितासे पिताज्ञाव न रखे तो उसका क्या कोइ कर  
 सकता हे लेकिन संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, ए-  
 सेइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल नसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य  
 सो जतीही हे, जतियोंसें पढ़ते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पम्क्कमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चौपी आदि वाचते हैं यह तो चलता उपगार है, नर जतियोंके वनेरोंने तुमारे वने-  
 रोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया है, यह उपगार सबसे  
 वना है ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हैं लेकिन सुणाणे  
 पढाणेवाले तो कम नर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोकों कैसे  
 माने? ॥ उत्तर ॥ सच्च है, इस बातका निर्णय हमने आगे लिखा  
 है सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जनीलोक चेला क्यों  
 करते हैं इनोंसें यथार्थ धर्म पलतानही? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ  
 धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा है सो तो वज्ररुपजनाराय सं-  
 हसन विह्वेद होतेइ गया, सामायक ठेदोपस्थापनी यह दोय रहा,  
 जिसमें जी उत्सर्ग नर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी  
 प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग  
 सूत्रोंमें वांचणें योग्य वहरगया, आपसमें कषायकी चोकमीका व-  
 रतावा देखके मध्यस्थ हो के रहै, आरंजत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे  
 पंचमकालमें वोही साधू है, जतियोंके चेला बणाणेमें इतना फायदा  
 है—मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रम-  
 का पाप ज्ञानपढे बाद आपसेंही ठेरुदेणा, केश्यक इनोंमें चोथा  
 पांचमा ठठा सातमादि गुणगणे चढणा, श्रावगवर्गका इस ज्ञव  
 परज्ञव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाज परजीवकूं  
 सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थकर गोत्रकर्म बांधता है, थोनेमें  
 विचारणा ॥ प्रश्न—जिनोकुं पढाया नही नर गुरु मरे बाद गुरुके क-  
 माये धनसें पापारंज करे तो वह पाप चेलेका गुरुकूं जरूर लगे  
 या नही? उत्तर—जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह  
 वोसिराय दिया उनोकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंज  
 सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकूं नही, यह जैनधर्मका

दते हैं उननोंको हरतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढ़ाणेकुं उद्यमवंत  
 करणा यह काम श्रावक मातपिता नर गुरुलोकोंका हे, इस नही  
 पढ़ाणेके सबब जैनके ज्ञेयधारी नर ज्ञेयधारणीयां अनेक कुरुर्मोंके  
 वश नरकके पात्र नर धर्मकूं लजाते हे, क्यों की दशवी-  
 कालक सूत्रमें लिखा हे ( ॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥ ) पढ-  
 ली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीबै दया पाल सकता हे ॥ ज्ञा-  
 नीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ ऐसा  
 कहते हैं हमारे ज्ञावे विगने तो क्या नर सुधरे तो क्या, हम नतो  
 इननोंको गुरुकरके मानेंगे न अन्नवत्त्व देंगे, देंगेतो मानरहित कंग-  
 लोकी तरे ॥ हम पढ़ाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह स-  
 मजसे तो जैनधर्म अमावश चंडताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें  
 जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसे उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविदाशादि  
 श्रावकाचार ग्रंथोंमें ऐसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें ध-  
 र्मसें जृष्टज्ञये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें शिर करे तो बदला ऊतरे,  
 दस बीस आदमी एकठे होकर निंदा करणसें विगारका सुधार नही  
 होता, धर्ममें शिर करणेकी असली जरु विद्याबृद्धि हे, स्वज्ञाव कोई  
 किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसें  
 कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढ़णा हे कार्य सो अठी क्रिया चोथा  
 पांचमा ठठा सातमा गुणठाणा चढाणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास  
 करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोका हे सो विचारणा,  
 प्रश्न । हम जतियोंको धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोई  
 कृतघ्नी अपने पितासे पिताज्ञाव न रखे तो उसका क्या कोई कर  
 सकता हे लेकिन संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, ए-  
 सेइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल नसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य  
 सो जतीही हे, जतियोंसें पढ़ते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पन्तिकमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चौपी आदि वाचते-हे यह तो चलता उपगार है, नर जतियोंके वनेरोंमें तुमारे वने- रोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया है, यह उपगार सबसँ वमा है. ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हे लेकिन सुणाणे पढाणेवाले तो कम नर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोकों कैसे माने? ॥ उत्तर ॥ सच्च हे, इस बातका निर्णय हमने आगे लिखा हे सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करते हैं इनोसँ यथार्थ धर्म पढतानही? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकू कहा हे सो तो वज्ररुपनारायण सं- हणन विच्छेद होतेइ गया, सामायक वेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें जी उत्सर्ग नर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकमीका व- रतावा देखके मध्यस्थ हो के रहै, आरंभत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे पंचमकालमें वोही साधू हे, जतियोंके चेला बणाणेमें इतना फायदा हे-मिथ्यात्वकुलसँ जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रम- का पाप ज्ञानपढे बाद आपसँही ठोरुदेणा, केइयक इनोमें चोथा पांचमा ठठा सातमादि गुणगणे चढणा, श्रावगवर्गका इस जव परजव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाज परजीवकू सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म बांधता है, थोमेमें विचारणा ॥ प्रश्न-जिनोकुं पढाया नही नर गुरुमरे बाद गुरुके क- माये धनसँ पापारंज करे तो वह पाप चेलेका गुरुकू जरूर लगे या नही? उत्तर-जिस मातापिताने मरणके वखत सर्व परिग्रह वोसिराय दिया उनोकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंज सो करणेवालेकू लगेगा, मातापिताकू नही, यह जैनधर्मका

मर्म हैं, मातापिता गुरु शुन अनुष्ठान सिखलाते हे संतान बेसा करे तो जरूर शुनफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नही इस वास्ते करै करावै अनुमोदे बलकूं पाप लगे ॥

बांकानेर वडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें न० । श्रीराम-  
लालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पास इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
सोलेचाणक्य स्वरोदय ज्ञाषा	१	०
करुणावलीस। दादासाहिबपूजा	०	४
मूर्तिमंरुणका अद्विजुत ग्रंथ सिद्धमूर्ति०	०	८
सर्वपूजामहोदधी खरतरगन्न तपगह्वकी	४	०
भावकव्यवहारालंकार	१	८

## विज्ञापन.

॥ अथ वर्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवन्त रूपवन्त नर विद्यावन्त सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसँही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राज्यासी होणा, बहोत प्रमादवन्त नहीं होणा, देश क्षेत्र काल ज्ञाव मुजब सदा ब्रह्मकी सारसंज्ञालसँ जैनधर्मके दीपक होणा, वेजा चलणसँ यतीयोंकों हटकणा, उनोके मन मुजब नही चलणे देणा, लांठित पुरुषकी संगत नही करणी, उन्नय काल प्रतिक्रमण करणा, अन्नद्वके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन नर आपनाचार्यादि पमिलेहण करणा, जती जतणीकूँ शुद्ध परंपरागम वेष नर संघ तारीफ़ करे ऐसे मार्गमें प्रवर्त्तणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूँ गणाद्वही करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अगै सुशील पंथितो की सोहबत करणी, क्लमावन्त ज्ञी होणा, समय ज्ञी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य नर पंथितकूँ देणा, स्वार्थके वश मूर्ख नर अयोज्ञ नर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूँ न देणा, अपणे २ गन्धके अधिष्ठायक क्षेत्रपाल मानज्जद्रादिकके साहायसँ धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिवलसँ संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रज्ञावीक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोके पढने नर पढाणेवाले होणा, वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

मर्म हैं, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते हे संतान वेसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नही इस वास्ते करै करावै अनुमोदे जसकूं पाप लगे ॥

वाकानेर बडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें न० । श्रीराम-  
लालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पास इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
सोलेचाणक्य स्वरोदय ज्ञाषा	१	०
करुणावतीस। दादासाहिबपूजा	०	४
मूर्तिमंरुणका अदञ्जुत ग्रंथ सिद्धमूर्ति०	०	५
सर्वपूजामहोदधी खरतरगह्व तपगह्वकी	४	०
भावकव्यवहारालंकार	१	८



## विज्ञापन.

॥ अथ वर्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवन्त रूपवन्त नर विद्यावन्त सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसँही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राच्यासी होणा, बहोत प्रमादवन्त नहीं होणा, देश क्षेत्र काल जाव मुजब सदा ब्रह्मकी सारसंज्ञासँ जैनधर्मके दीपक होणा, वेजा चलणसँ यतीयोंकों हटकणा, उनोंके मन मुजब नही चलणे देणा, लांठित पुरुषकी संगत नही करणी, उन्नव काल प्रतिक्रमण करणा, अन्नदकके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन नर आपनाचार्यादि पमिलेहण करणा, जती जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष नर संघ तारीफ करे ऐसे मार्गमें प्रवर्त्तणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणाद्वही करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अठै सुशील पंक्तियोंकी सोहबत करणी, क्षमावन्त ज्ञी होणा, समय ज्ञी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य नर पंक्तिकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख नर अयोज्ञ नर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणोर गन्धके अधिष्टायक क्षेत्रपाल मानजद्रादिकके साहायसँ धर्मके न्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिवलसँ संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रज्ञावीक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढने नर पढाणेवाले होणा, वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी



आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकें सुविहित मार्गमें चलाणा, गच्छ के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुद्ध अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधुओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके जंमार नहीं है जहां पुस्तक लिखवाके जंमार करवाणा, अपनी निश्चायें हजारों रुपेके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधुजंका धर्म नही, फकत अपनी सेमें उठे नर नित्य पन्निहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकुं चहीये तो ज्ञानजंमारसें लेकर पीठा देणा, जहां बोमासा करे अथवा शेपाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिसमें वस्तुकी आवश्यकता होय सो जहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रसन्न करवादेणा, अथवा दूसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके जेजादेणा, गृहस्थोंसें वैयावच्च कराणी नही, जती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंक्तियोंसें तो पहली ज्ञान पढे नर फेर कृतघ्नी होकर जतही की पीठी हीलणा नर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक नर बीजभूत जतीही है क्योंकि जतियोंकेही प्रतिबोधक जसवाल पोरवाल नर श्रीमालादि श्रावक हैं, फेर इन जतियोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पन्ते समयमें जती होतेआए है, तथा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बुंटे-रायजी नर आत्मारामजी वगैरे जये है, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी कृमाकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगैरे जये हैं नर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी ज्ञायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनोंकी जम् इन पुरुषोंके जतीही हे इस वास्ते जतीयोंका घराणा रत्नोंकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीजी प्रमादी बड़े गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे नर आजकलके साधूजी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो ठाने दोष लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोंमें ज्ञाव करके पंचम गुणछाणी हे केइयक चतुर्थ गुणछाणी, इसी तरे साधुजके मुजबही शुज ज्ञावसंयुक्त जतियोंके ज्ञाव आश्री गुणछाणा समऊणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीजगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुज बलवान हे, लोचादि कायक्केस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधूजमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गणेशवालोंसे आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोंके जी देखणेमें आता हे, जब कषाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद केसे सधेगा बलीहारी उनहींकी हे जिनोंने कषायकी चोकनी त्यागी हे. किंबहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन ब्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् बारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नहीं नर बहोत बोटालेणसे धाय रखणी होती हे उसकी पालगेट करणेकूं तब बहोतसे कमजात अपणी एबकूं बिपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन न्यायदंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूंमेंसे वात नही निकालते मूर्खोंके कहणेसे सोना पीतल नही वणता, दुष्टोंका स्वप्ना-

वही होता है सो गुणमें उगुण निकालते है, नर्तृहर लिखता है-  
 सूरवीरकुं निर्दश कहते हैं गमखाणेवालेकुं श्रोकम केते है ब्रह्म-  
 चारीकुं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत है, खैर ऐसे चेलेकुं सुखपाठ  
 जैनधर्मका अवस्य कर्तव्य गुणाना निज फेर अक्षर वांचने सि-  
 खाणा अक्षर जमाणे बोलखा पाटी लिखाणी फेर कोश व्या-  
 करण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक ब्रुध्यानुसार सीखाकर जी-  
 वविचारादि पट्ट प्रकरण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोल-  
 पट्टा मुंहपत्ती उघा सांसा चेहर पांगरणी स्वेत हथेसां रखणा, म-  
 स्तकके बाल केचीलें कतराणे या उस्तरेसैं मुंदाणा, पादस्त्राण स्वे-  
 त वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत जण्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर  
 देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां ऐसा उपसर्ग  
 नही देश विरुधके कारण त्याज्य है, प्रवचनसारोब्धार ग्रंथमें का-  
 रणविशेष साधूनेको पादस्त्राण पहरणेकी आज्ञा है, पुस्तक लि-  
 खणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गुंध्रणा तिरपणीके मोरे बणाणे  
 माला बणाणी ठोकरे पढाणा मंत्रविद्यामें छुशजाता रखणी सो ज्ञी  
 जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकूं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख  
 यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखन पम्कमणा करणा, ठनी शक्ते  
 सञ्चित त्यागणा, राजदंमे लोकजंमे ऐसे रस्ते नही चलणा, कुलम-  
 र्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके बरखि  
 लापनसा पीणेवालेकी संगत नही बैठणा, कुविसनीयोके संगतसे  
 लंठन लगता है, श्रावक जो द्रव्य देंवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थ-  
 यात्रा चेला लेणा उनोके खिवाणा पिवाणा पंढतोको रुजगार देके  
 चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय  
 पापोंकी गही सुकृतकी अनुमोदना कर सब बोसराके परजव सा-  
 धणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्तव्य ॥

॥ सुलज्जबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोंमें लिखा है, उस गुणोंकं धारणा चाहिये. गणान्गसूत्रमें साधुजकी प्रतिपाल करनेसे श्रावकोंकं मातापिता तुल्य जगवंतने कहा है, बालक कसूर ज्ञी करे तो ज्ञी मातापिता अपने शंतानपर अंतरंगसे कज्ञी द्वेष नहीं करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकं साधुलोकोंसे वर्तना चाहिये, जेषधारीसाधुजमें कोई तरेकी एब दीखपड़े तो एकांतमें हितशिक्षा देके बुझाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककं धमकावे जैसे धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नहीं दीखेतो कर्मोंकी विचित्रता समझके एसोंकी संगत न करे, जैनधर्मकं लजावै एसी एब कोई नहीं होय नर शरीरके परवशता अप्रवा देश क्षेत्र काल ज्ञाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय नर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, नर जिनधर्मकं लजावै एसा होयतो उहांसे रुकसत करादेणा. जिनमंदिर नर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंज्ञाल जरूर करे, विनासंज्ञाल किये बहोतसे मंदिर उपासरोकी तजबीजें बिगम रही है, जंमार लोक स्वागये है, ठती शक्ते इस बातका खयाल हरतरेसे करें, अपना लमका लमकीयोकं संसारविद्या नर धर्मकी मजबूती करणेकं पनिक्रमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार नर जैनन्यायशास्त्री अक्षर बचपणसे सिखलाणा चाहिये देव गुरु नर वन्दे अकलवंतोंकी संगत करवाणी चाहिये, विरादरीमें सनातन कुलमरजादसे जो विपरीत आचारणा करै उसकी देखदेख आप न करणा, वणे जहांतक नुणोंको ज्ञी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इडम लमकोंकं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसे हुतियार कर पीवै सिखलाणा क्योंकी इस अंग्रेजी इडमकी ज्यादा किताबोंके पढ़णसे पीवै नुस

कूं सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा नर अंग्रेजीमें चौथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ठढा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हैं इस वजें वेलासक पढे नर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती नर तारीफ जिसने समजा हे वोही जाणता हे नर लसनकूं मुसककी खसबो कब लग सकती हे, जिनोंको संसारमें अन्नी बहोत जवभ्रमण करणा बाकी रहा हे उनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही. कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे२ हे मानेजी तो कोन सच्चा नर कोण जूठा ? ( उत्तर ) हे जव्य हमने पेस्त-रही लिखा हे न्याय जो जैनका सात जंगरूप हे उसकूं समजा नर वस्तुज पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता हे. ( प्रश्न ) इतनी बुद्धि नर परिश्रम तो करणेवाले थोमे हैं सो ऐसा न्याय पढके निश्चय करे सहजमें निश्चय कैसे होय ? ( उत्तर ) जो इतना नही समजो तो जो रुषजदेवजीसे लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया हे वोही जैनधर्म सच्चा हे बीच२ में अटपड़ोने अहंकारके वस मनोकटिपत फंदसे एक नय पकमके अपने२ मत खमे किये हे, षट्शास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार जगवान् जड्बाहुस्वामी उमास्वाती ज्ञाप्यकार जिन-जद्रगणी कमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र सरीषे बुद्धीके धणी उनोंने जिस वातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समजणा, श्रावणधर्मवालों पर वसा उपगार स्तनप्रज्ञसूरि नर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया हे सो केइयक पापारंज की वार्ते तो इस जातीके कायदेसेही बंध होगई हे, जैसे मद्यका पोणा नर मांसादि अन्नक खाणा लेकिन आजकल कर्मके वस धीरे२ ऐसे उत्तम कुलमें निरबुद्धियोने अधोगतीकी समक बां-

धरने पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन  
 धर्म पाय के निरन्ताग्रकी तरे क्यों हाथसें फेकते हो पीठे पठ-  
 तावा होगा थोमे दिनकी जिंदगानी हे, मदिरा पीणेमें बावन  
 उगुण हे ऐसें मांत्तमें देखो जैनतत्वादर्श ज्ञाषाग्रंथ, यही चीज  
 अग्री होती तो तुमारे वमरे लाखों राजपूत इस चीजोंकों  
 क्यों ठोमते नर मुसलमीनोंकों जो धर्मकायदेसें इस बातकी  
 सकत मनाई हे इत्यादि, किंयहुना ॥ जैनपाठशालानु स्थापन  
 करणी पढ़नेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहियै,  
 जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं-  
 नित तो दुस्मन जो अग्रा होता है मूर्ख हितकारी जो कामका  
 नही, विद्यावान सब काम विचारकेहो करता है मूर्खके विनाका-  
 रण द्वेष नर अहंकारीपणा होता हे बाकी तो कवियोंने कहा हे—  
 दुहा ॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पचास ॥ जणनी जणके  
 क्या किया, जार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीज  
 अपने उपजोगमें लेता हे सो सब उत्तम चीजका दान करता हे  
 एक स्त्री वर्जके नस करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी ऐश्वर्यता ज्ञाग  
 कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये  
 जीवकूं पुन्यबोलानुरूप हे, अन्न वस्त्र नषधी सज्या पात्रादिकसाधुनेंकों  
 देवे, देवके निमत्त अष्टद्रव्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजानुसें  
 दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे ऊजमणें दान करे, सा-  
 धर्मी तथा जैनपंथितोंकूं नगदद्रव्य वस्त्र जोजनादिक यथायोग्य  
 दान करै, तीर्थकर जगवान जो संवत्सरी दान देते हैं, दानधर्म  
 मुख्य हे जगवतीजीमें ग्रहस्थका अजंगद्वार कहा हे, जगवतीसू-  
 त्रमें तीन गुरु कहे हे सिद्धगुरु १ जो कारीगरी सिखलावे सो, क-  
 लागुरु २ जो लिखणा पढ़णादि ७२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु



३। सामायिक पन्तिकमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्ति-  
पथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य नक्ती करे ॥ अब  
चञ्जोगी लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवत देसे विराधक । १ । कष्टरूप  
क्रिया करणेवाला देशोआराधक । २ । ज्ञान नर क्रियारहित सर्व-  
विराधक । ३ । ज्ञान नर सत्क्रियावत सर्वोआराधक । ४ । ॥ इति  
पात्रगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणां  
होय तो हमारा ठोपाया श्रावक व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोके कर्त्तव्य ॥

मारवारुमें प्राये जैनमंदिर जोजगही पूजते हैं उनोंमें इस  
लिखत प्राये मिथ्यात्वी बहोत सम्यक्ती बहोतही कम हे, गुजरातमें  
जो जोजक जैनमंदिर पूजते हैं सो सब जैन हैं जिनोंको अन्य  
देशमें गंधर्व कहते हैं, ( प्रश्न ) पूर्वोक्त जोजकोंने जैनधर्म कबसे  
ठोसा है ? ( उत्तर ) पहले श्रीकृष्णदेवजीने जोगवंश स्थाप-  
नकर अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे जगतजीने ब्राह्मणवंश  
स्थापन करा, राजा सूर्ययशने जोगवंशीयोको पूज्य जाण जिनमं-  
दिरकी सारसंज्ञाल सोपी लेकिन जिनमंदिरका चढापा मंदिरके  
कूटपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होऐसे बलिदाने जोगवंशी नही  
खातिथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनोको अनेक तरेसे पर्व  
महोत्सव पर इव्य वस्त्र जोजनादिकसे राजा नर प्रजा सब संत्कार  
करतेथे वो सब नवमें दशमें जगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये  
बाद केज्जी कोइ जैन कज्जी मिथ्यात्वी ऐसे होते चले आये, जब २४  
से वर्ष पहले नसीयामें जैनधर्म फैला तब राजाके पुरोहित राज-  
पूतोके संग जोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव प-  
आर वेगेरोने नक्ती नर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी-  
धर्मी सार्धर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् बारेसेमें रामानुज माधवाचारी वगेरोंने विष्णु संप्रदाय नि-  
 काली, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंको दादा दत्तसूरजी  
 ने लाखों नुसवाले फेर वणाये, तब राजवीरोंने गुरुसे अरज की  
 इस दयाधर्मके प्रज्ञावसे निर्दयीपणा हम लोकोंसे होगा नही राज्य  
 तो सदा थिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा,  
 गुरुने कहा जो जिनमंदिरोकी जत्ती नर जतीगुरुकी सेवा अन्नद  
 त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां  
 तक पाटका मालक राजा नर सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे  
 तथास्तु वरदान एसाइ जया, राजाजने अपणें ज्ञाई स्वजनवर्गी  
 नुसवालोंकूं प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथा-  
 योग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौ राजवामोंमें नुसवालोंका राज्या-  
 धिकार वणा तबसे नुसवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शि-  
 वालयादिकोंका पूजारीपणा ज्ञी जोजकोंको सोंपा वह जोगवंशी  
 फेर पीछे धारें मिथ्यात्वी वणवेछे, विद्याहीनता होणेसे सब तरे  
 की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण जोजकोंको कर्म कर  
 करके मानणे लगे पूज्यज्ञाव भुगया, जो कज्ञी जोजकलोक एसा  
 समजतें होंगे की हम तो अबलसेही शैव वैष्णव थे ( उत्तर )  
 यह समजकी जूल हे हम पहली लिखदिया हे जैनधर्मकी बहु-  
 लायतमें प्रजा जैन रही, बोधोकें अमल बोद्ध, शांख्यादिकोंके अ-  
 मलमें सांख्य, इत्यादि वाते तवारीकोसे ज्ञी पाईजाती है लेकिन  
 जैनधर्म नर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका हे इतना जोज-  
 कोंको जरूर समजणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी हो-  
 ते तो राजा उपलदेव पैमारादिक परमजैन तुमारा लागे नर बहु-  
 मान नुसवंश पर कज्ञी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोका जोर नुस-  
 वाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समजणा, पीछेसे



विष्णुमंदिरोकी पूजा नर राजा वगेरोकी देखादेख संग दोष लगा, उसवालोंने तिथि नहीं करी वध गया, इस तरेही बहो-तसें उसवंशी जी खुसामंदीसे दुसरा धर्म धारलिया तुमकों क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखते हैं उस पर अमल करणा तुमारा फरज है, लोकोक कहणावट जी हे “ जिसकी खावे बाजरी जिसको जरणी हाजरी ” उसमें हरज करणसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगनकीसें जिनमंदिरमे जासू देणा, वरतन मलणा, अंगलूहणा धौके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जैरा जी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेमें ढकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध बाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री ब-होतही विवेकसें रखणा, देवद्वयकी चोरी नही करणी, हकमें हरकत मालणा नही, देव नर गुरूकी सेवा करणसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो ज्ञावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवै तो जिसकी व दोलत रोटी आदि सइकमों रूपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य जपासरे के जरीये तुम्हें सइकमों रूपे आवक देते हैं वो सब देवगुरूका प्रताप समज इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर ठ उपदेश मैंने लिखे हे कोइ कछोर लबज लिखा होय तो माफी मांगताहूं सरलज्ञावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके ठापणेमे काना मात्रा ज्यादा वा कम जो रह गया होय सो सुधारके वांचे वा गुरूसें शुद्ध करालेवें में मनशु-द्धिसें सर्व संघसें कृपा मांगताहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होते

हैं, उनोका मैं सदा आज़ार मानताहूँ ॥ यतः ॥ तथापि क्रियत  
ग्रंथ, संतियद्यपि दुर्जना ॥ नहिदस्युज्जयाल्लोको, दैन्यवानिहवर्त्तते ॥  
॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तो ज़ी करताहूँ यद्यपि डुरजन बहोत हे  
चोरोके मरसें लोक कंगाल नही बण वेठते तेसे ? मेने अपने  
हाथसे लिखकर मुंबइ जेजकर शिष्यवर्गोके कहणेसे इसमें सं-  
ग्रह मेने अनेक ग्रंथोसे किया हे, बहोत चीजें पं। प्र। श्रीअवी-  
रचंडजीमुनिःसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे.  
रुषनदेवजीका आदिअक्षर। र। महावीरस्वामीका। म। इन दोनोंसे  
बणा जो। राम। उनोके मध्यवर्त्ती सब जगवंतोंके गुणोका विलास  
इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे ॥

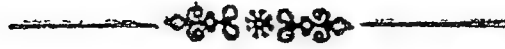
॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सर्वईया ॥

दाशानुदाशाश्वसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुगंति ॥ मरु-  
स्थलीकटपतरुःसजीया, ज्जुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंताम-  
णिः कटपतरुर्वराको, कुर्वन्तिज्जव्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्री  
जिनदत्तसूरैः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी,  
नचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेत्ताल पिशाचराक्षसगणाः, नोरो-  
गशोगोन्नयं नोमारीनचविग्रहः, प्रचृतयः प्रीत्याप्रणत्पुञ्चकैः ॥ य-  
स्तेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनामाक्षरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ स-  
र्वईया ॥ बावन वीर किये अपने वश, चौसर योगण पाय ल-  
गाई ॥ साइण साइण व्यंतर खेचर, जूतरुपेत पिशाच पुलाई ॥  
बीज तमक करक जटक, अटक रहै जु खटक न काई ॥ कहे भ्र-  
मसीह लंघै कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक डुलाई ॥ १ ॥ इति ॥  
राजै शुंन ठौरठौर, एसो देव नही और ॥ दादौ दादौ नामसें, ज-  
गत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही ज्ञाव आय, पूजै लख लोक पाय ॥  
प्यासनकूं रांनमांजि, पाणी आन पायो हे ॥ वाट घाट शत्रु दाट,

हाठ पुर पाठ्यमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल करतायो है ॥ धर्मसी-  
 ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम युं  
 कहायो है ॥ १ ॥ कुशल अंग जवरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कु-  
 शल देव देहरे, कुशलै घन राजडुवारे ॥ पुन्य प्रसाये कुशल कुशल  
 श्रीसंघ जणीजै, वाहण आवै कुशल कुशल घरर गार्जै ॥ जिन-  
 चंद्र सूरि पुहुँ पट्टधर नाम मंत्र आरति टूलै, श्रीजिनकुशल सूरि  
 पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वनो संसार  
 कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल मात लखि घर कुशले  
 आवै ॥ कुशलै घन वरसंत कुशल घन धनरुवन्नो, कुशलै धोमां  
 अट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशलै जग  
 रलियामणो, जट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर  
 होय वधामणो ॥ १ ॥



# रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



ग्रंथोका नाम.	पृष्ठांक.
१ लैकारं बिंडुसंयुक्तादि मंगलाचरणं ...	१
२ स्वरवर्ण ... ..	२
३ वर्णव्यंजनमाला ... ..	५
४ शिक्षावाक्य ... ..	३
५ संधिसूत्र ... ..	४
६ हितोपदेश ... ..	५
७ छिन्नं जिन नाम सोले सती नाम ...	७
॥ प्रतिक्रमण सूत्र प्रारंभ ॥	
८ नवकारमंत्र ... ..	१०
९ थापनाचार्यजीकी तेरेपमिलेहण ...	१०
१० खमासमण ... ..	१०
११ सुगुरुने शाता सुखपुढा ... ..	११
१२ मुहपत्ती पमिलेहणके पच्चीस बोल ...	११
१३ अंगकी पच्चीस पमिलेहण ... ..	११
१४ सामायकका पच्चखाण ... ..	१२
१५ इरियावहि ... ..	१३
१६ तस्सुत्तरी... ..	१३
१७ अन्नबूससिएणं ... ..	१३
१८ लोगस्स ... ..	१४
१९ वेसणोसंदिस्सानं ... ..	१४

२०	राई प्रतिक्रमण विधि...	...	...	१५
२१	सकलतीर्थनमस्कार ...	...	...	१५
२२	जंकिचिंतामति० ...	...	...	१५
२३	नमोऽनुं ...	...	...	१५
२४	जावंति चेइआई ...	...	...	१६
२५	जावंति केवि साहू ...	...	...	१६
२६	परमेष्ठिनमस्कार ...	...	...	१६
२७	उपसर्गहरस्तोत्र ...	...	...	१६
२८	जयवीथराय ...	...	...	१७
२९	पन्तिक्रमण गायवेका अवसर ...	...	...	१७
३०	सवस्सवि ...	...	...	१८
३१	इच्छामिगामि ...	...	...	१८
३२	वंदणवत्तियाए ...	...	...	१८
३३	पुरस्करवरदी ...	...	...	१९
३४	सिद्धाणंबुद्धाणं ...	...	...	१९
३५	वेयावच्चगराणं ...	...	...	२०
३६	संमासाप्रमार्जन ...	...	...	२०
३७	सुगुरुवांदणा ...	...	...	२०
३८	देवसियं आलोउं ...	...	...	२१
३९	रात्रि संबंधी अतिचार आलोयण ...	...	...	२१
४०	अगारे पापस्थानक आलोयण...	...	...	२२
४१	आवकवंदित्तासूत्र ...	...	...	२३
४२	वंदित्तासूत्र पीठेकी विधि ...	...	...	२६
४३	अपुठिनुमि ...	...	...	२६
४४	आयरिय नवझाए ...	...	...	२६

४५	आवश्यककीमुहपत्ती	...	...	२७
४६	सकल तीर्थ नमस्कार	...	...	२७
४७	परसमय तिमरतरणिं	...	...	२८
४८	संसारदावाकी स्तुति...	...	...	२९
४९	काजसगमें स्तुतिका पृथग् पाठ	...	...	२९
५०	अढाइजेसु दीवसमुदे	...	...	३०
५१	जय२ त्रिजुवन० सीमंधर चैत्यवंदन	...	...	३१
५२	सीमंधर स्तवन ॥ श्रीसीमंधर साहिबा...	...	...	३१
५३	सीमंधर स्तुतिकी एक गाथा महीमंमणं	...	...	३२
५४	सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन जय२ नाजिनरिंदनंद	...	...	३२
५५	सिद्धाचल स्तवन ॥ सिद्धाचलगिरि जेव्या रे	...	...	३२
५६	सिद्धाचलयुइ शेत्रुंजगिरिनमीये रुषनदेवपुंमरीक	...	...	३३
५७	पमिलेहण विधि	...	...	३३
५८	सामायक पारनेकी विधि	...	...	३४
५९	जयवं दसणनदो	...	...	३४
६०	संध्याकालसामायक विधि	...	...	३५
६१	देवसी पमिकमण विधि	...	...	३६
६२	जयतिहुअण	...	...	३६
६३	जयमहायश	...	...	४०
६४	महावीर स्तुति॥मूरति मनमोहन कंवर को०	...	...	४०
६५	स्तुति कल्यां पोठेकी विधि	...	...	४१
६६	श्रुतदेवताकी स्तुति...	...	...	४३
६७	क्षेत्रदेवताकी स्तुति...	...	...	४३
६८	वरकनक	...	...	४३
६९	नमोस्तु वर्द्धमानाय...	...	...	४४

७०	श्रीजिनविंश जुहारो रे ज्ञविका ॥ स्तवन	४४
७१	तिस पीठे काजसग करणकी विधि ...	४५
७२	थंजणापार्श्वनाथका चैत्यवंदन ॥ श्रीसेद'०	४६
७३	थंजणयद्विपाससामिणो ...	४६
७४	दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधना ...	४७
७५	दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधना	४७
७६	चक्रसाय चैत्यवंदन ...	४७
७७	लघुशांतिस्तवन ...	४८
७८	कमलदल स्तुति ...	४९
७९	कल्याणकमला गेहं ॥ स्तुति...	४९
८०	सकलकुशलवल्ली ॥ स्तुति ...	५०
८१	सर्व जिन स्तुति ॥ दर्शनात् डुरि० ...	५०
८२	आदिजिन स्तुति ॥ सुवर्ण वर्ण गजराजगामिनं	५०
८३	सोलम जिनवर शांतिनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८४	प्रह शम प्रणमुं ॥ नेमनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८५	पुरसादाणी पास नाह ॥ स्तुति चैत्यवंदन...	५१
८६	बंदू जगदाधार ॥ महावीर स्तुति चैत्यवंदन	५३
८७	अथ पाक्षिकादि प्रतिक्रमण विधि ...	५३
८८	वृहदतिचार ...	५२
८९	अतिचारके पीठैकी विधि ...	६३
९०	जुवनदेवता स्तुति ॥ चतुर्वर्णाय संवाध...	६४
९१	दस पञ्चस्काण ...	६५
९२	पञ्चखाणोकी आगार संख्या ...	६९
९३	पञ्चखाणके आगारोंका अर्थ ...	६९
९४	साधू प्रतिक्रमण सूत्र चत्तारिमंगलं ...	७२

९५	परकीसूत्र ...	७६
९६	अठपहरी पोसेकी विधि ...	९०
९७	पोसह का पञ्चकाण ...	९१
९८	चोवीस थंमिला करणेका पाठ ...	९२
९९	थंमिलाकहाकरणा ...	९३
१००	पांचे शक्रस्तवे देववंदण विधि...	९३
१०१	पञ्चकाण पारणेकी विधि ...	९५
१०२	राइ संथारा विधि ...	९८
१०३	पोसह पारणेकी विधि ...	९९
१०४	दिन उग्यां पीठै पोसह लेणेकी विधि ...	१००
१०५	रात्री चोपुहरी पोसेकी विधि...	१०२
१०६	ठाणेकमणें चंकमणे...	१०३

॥ देववांदणेमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके

प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

१०७	दूजकी शुइ ॥ मही मंगणं ...	१०३
१०८	पांचमीकी शुइ ॥ पंचानंतक०...	१०४
१०९	आठमकी शुइ ॥ चोवीसे जिनवर...	१०४
११०	मैानएकादशी स्तुति ॥ अस्य प्र० ...	१०५
१११	पार्श्वजिन स्तुति ॥ डेंडेंकि चतुर्दशीकी...	१०५
११२	निरुपम सुखदायक ॥ नवपद स्तुति ...	१०६
११३	वलिर हूं ध्याऊं ॥ पजूषण स्तुति ...	१०६
११४	सुर असुर वंदिय ॥ नेमजिन स्तुति ...	१०७
११५	पापायांपुर चारुः॥ दीपमालिका स्तुति...	१०८

॥ शुई संग्रह ॥

११६	पंचविदेह विषै विहरंता॥वीसविहरमान स्तुति:१०८
-----	---



११७	समदमोत्तम वस्तुमहापणं ॥ पार्थिवस्तुतिः	१०७
११८	वरमुत्तियहार ॥ रुक्मस्तुति ...	१०९
११९	प्रणमं परमपुरुष ॥ रुक्मस्तुति ...	१०७
१२०	विश्वनायक लायक ॥ अजितजिन थुई...	११०
१२१	यदंद्गिनमनादेव० वर्द्धमानस्तुति ...	११०
१२२	वीरंदेनं० वीरजिन थुई ...	१११
१२३	मुरति मनमोहन० वीर थुई ...	१११
१२४	चन्नवीस जिन पंचकल्याणक स्तुति ...	१११
१२५	श्रीशैत्रंजमंरुण आदिदेव ॥ सेत्रंज थुई...	११२
१२६	गिरनार शिखरपर० नेमजिनस्तुति ...	११२
१२७	सुख समकितदायक० शीतलजिनथुई...	११३
१२८	मिल चोविह सुरवर० समवसरणस्तुति...	११३
१२९	सेत्रंजगिर नमियै ॥ चैत्रीपूनमस्तुति ...	११४
१३०	समरुं सुखदायक० नवपदस्तुति...	११४
१३१	शिवसुख दाता ॥ वीसस्थानकस्तुति ...	११५
१३२	अरिहंत सिद्ध पवयण० वीसस्थानक थुई	११५
१३३	अनुपमगुण आगर० नवपद स्तुति ...	११६
१३४	विमलाचल मंरुण जिनवर ॥ शैत्रंजय स्तुति	११६
१३५	शांतिजिनेसर जगअलवेसर ॥ शांतिनाथ थुई	११७
१३६	मन सुध वंदो ज्ञावे ज्ञवियण ॥ सीमंधर स्तुति	११८
१३७	पंच अनंत मंहंत गुणाकर० पंचमी स्तुति	११८
१३८	अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा ॥ अग्यारस स्तुति	११९
१३९	जयकारी जिनवर वासुपूज्य ॥ रोहणी स्तुति	११७
१४०	प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर ॥ परकी चौदश स्तुति	१२०

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

१४१	अजित शांत स्तव प्रथम	...	...	१२०
१४२	उल्लासिक्रम ॥ द्वितीय स्तव लघुअजित शांति	...	...	१२५
१४३	नमिज्जण ॥ तृतीय स्तव	...	...	१२६
१४४	तंजयन ॥ गणधर स्तुति चतुर्थ स्तव	...	...	१२८
१४५	मयरहियं ॥ गुरुपारतंत्र्य ॥ पंचम स्तव	...	...	१३०
१४६	सिग्धमवहरिणं ० षष्ठ स्मरणं	...	...	१३१
१४७	नवसगहरं स्तोत्र ॥ सप्तम स्मरणं	...	...	१३२
१४८	नक्तामर स्तोत्र	...	...	१३३
१४९	वन्दी शांति ॥ नोन्नोन्नव्या	...	...	१३७
१५०	जिनपंजर स्तोत्र	...	...	१४१
१५१	किंकप्पत्तरुं ० वक्ता नवकार	...	...	१४२
१५२	तिजयपहुत्त ॥ शप्ततिजिन स्तोत्र	...	...	१४५
१५३	दोसावहारदस्को ॥ नवग्रह ० पा०	...	...	१४६
१५४	जगद्गुरु नमस्कृत्य ॥ शांति स्तोत्र	...	...	१४६
१५५	कल्याणमंदिर स्तोत्र	...	...	१४८
१५६	रुषिमंरुल स्तोत्र	...	...	१५२
१५७	लघुजिनसहस्रनाम	...	...	१५५
१५८	महिम्न स्तोत्र	...	...	१५८

॥ अथ लुटकर चैत्यवंदन ॥

१५९	सिद्धो विज्जाय चक्की ॥ सेत्रुंज चैत्यवंदन	१६२
१६०	श्रीसेहीतट मेरु धाम ॥ थंजणापार्श्व चैत्यवंद०	१६२
१६१	वंदू जिनवर वीहरमान ॥ सीमंधरजिन चै०	१६३
१६२	पूरव देसे दीपतो ॥ शिखरगिरी चैत्यवंदन	१६३
१६३	प्रथम महेसर पद्मनाभ ॥ पद्मनाभजिन स्तुति	१६३

१६४	अवामावामार्धे ॥ पार्श्व स्तुति ॥	१६३
१६५	अविरलशब्दघनोघा ॥ सरस्वती स्तुति...	१६३
१६६	दर्शनं देवदेवस्य ॥ सर्वजिन वंदन स्तुति	१६४
१६७	ज्ञाषामर्ष दोहा ॥ वंदनस्तुतिरूप ॥ हत्याजेहसुल.	१६४
१६८	श्रीअरिहंत उदार कांति ॥ नवपद चैत्यवंदन	१६५
	॥ अथ वक्ता स्तवन संग्रह ॥	
१६९	सुगण सनेही साजण श्रीसीमंघर स्वामि	१६५
१७०	सफल संसार ॥ दूजका वक्ता स्तवन ...	१६६
१७१	प्रणमुं श्रीगुरु पाय ॥ पंचमीका वक्ता स्तवन	१६८
१७२	पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी ॥ पंचमी लघु स्त.	१७०
१७३	अमल कमल० अष्टमी लघु स्तवनं ...	१७१
१७४	विमलजिन म्हारे तुमसुं प्रीत ॥ विमलजिन स्त.	१७२
१७५	समवसरण बैठा जगवंत ॥ मूनइग्यारस स्त०	१७२
१७६	सारदमात नमूं शिरनामी ॥ शांतिनाथ स्तवन	१७३
१७७	चौरासी आसातनाका स्तवन...	१७५
१७८	चोवीसजिन देहमान स्तवन ...	१७६
१७९	चोवीसजिन आयुप्रमाण स्तवन ...	१७७
१८०	त्रेसठ शलाकापुरुष स्तवन ...	१७८
१८१	श्रीविमलाचल शिरतिलो ॥ संत्रुज स्तवन	१८०
१८२	सिध्दाचल मंरुणस्वामी रे ॥ सिध्दाचल स्त०	१८१
१८३	रुषजजिनेसर दिनकर साहिव ॥ स्तवन	१८२
१८४	वीर सुणोमोरी वीनती ॥ अमावसका म. स्त.	१८३
१८५	चोवीस दंरुक स्तवन ...	१८५
१८६	इरियावही मिष्ठामिडुक्कम संख्या स्तवन	१८८
१८७	पंच समवाय स्तवन...	१९०

१८८	चौदे गुणगणा स्तवन	...	...	१८५
१८९	नव तत्व ज्ञाषागर्भित स्तवन...	...	...	१८६
१९०	दंरुक ज्ञाषागर्भित स्तवन	...	...	२०३
१९१	जीवविचार ज्ञाषागर्भित स्तवन	...	...	२०६
१९२	समवशरण विचारगर्भित स्तवन	...	...	२१०
१९३	सुणर सेत्रुंजगिरिस्वामी ॥ रुषन्नदेव स्त०			२१२
१९४	पासजिनेसर जगतिलो ॥ दशमीका पार्श्वस्त०			२१३
१९५	मंगल कमला कंद ए ॥ अजित शांति स्त०			२१५
१९६	मुंहपत्ती पन्तिहण स्तवन	...	...	२१८
१९७	आलोयण दंरु स्तवन	...	...	२१९
१९८	नंदीश्वर बावन जिनालय स्तवन	...	...	२२२
१९९	अढाईद्वीप वीस विहरमान स्तवन	...	...	२२३
२००	जात्रीमाजाइ आबूजीनी जात्रा करज्यो			२२७
२०१	सकल शाश्वता चैत्य नमस्कार स्तवन...			२२८
२०२	जविजन पूजो रे शीतल जिनपती ॥ स्तवन			२३०
२०३	म्हारे धरमजिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो ॥			
	धर्म जिन स्तवन	...	...	२३१
२०४	राणपुरो रलियामणो ॥ राणपुरा स्तवन...			२३२
२०५	समकित द्वार गुंनारे पेसतां ॥ दर्शन, आ, स्त.			२३३
२०६	आदिजिनेसर अरज सुणीजै ॥ स्तवन	...	...	२३३
२०७	देवचंदजी कृत अजितजिन स्त० ज्ञानादिक गुण			२३४
२०८	बे कर जोमी वीनवूंजी ॥ आलोयण स्तवन			२३५
	॥ आनंदघनजी कृत स्तवन ॥			
२०९	रुषन्न जिनेसर प्रीतम माहरो...	...	...	२३७
२१०	पंथियो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे...			२३८

२११	शंभुदेव ते धुर सेवो सवे रे...	...	२३९
२१२	अग्निनंदन जिन दरशन तरसियै	...	२३९
२१३	सुमति चरण कज आतम अरपणा	...	२४०
२१४	शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी	...	२४०
२१५	मनसो किमही न बाजे हो कुंशु जिन...		२४१

॥ पार्श्वनाथजीके गीते स्तवन प्रतिक्रमणके ॥

२१६	श्रीशंखेसर पास जिनेस जेदिये	...	२४२
२१७	मनमोहन माहाराज	...	२४२
२१८	जयकारी जिनराज ..	...	२४३
२१९	वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा	...	२४३
२२०	अरज सुणीजै अंतरजामी	...	२४४
२२१	प्यारी पासकी देखो मूरति०	...	२४४
२२२	श्रीचिंतामण पासजी	...	२४४
२२३	जीवन म्हाारा तेवीसमा जिनरायरे	...	२४५
२२४	सुगण सनेही प्रज्जुजी अरज सुणीज्यो...		२४६
२२५	मोरा पास जिनराज	...	२४६
२२६	जिनजी महिर करीने राज	...	२४७
२२७	तूं मेरे मनमें प्रज्जू तुं मेरे दिलमें	...	२४७
२२८	मार्ग देशक मोक्षनो ॥ दीवाली निर्वाण स्त०		२४८
२२९	सैत्रुंज रूपन समोसरया ॥ तीर्थमाला स्त०		२४८
२३०	आज आपे चालो सहिया ॥ सिद्धाचल स्त०		२४९
२३१	महावीरस्वामीका पारणा	...	२५०
२३२	पद्मावती जीवरास खमाणा ॥ हिवराणीपद्मा०		२५२
२३३	वाणी ब्रह्मा वादनी ॥ गोमीजीका वृद्धस्तवन		२५४
२३४	धम्मो मंगल मुक्खिं ॥ मंगलीक	...	२५९

२३५	आत्मरक्षा स्तोत्र ... ..	२५९
२३६	सुखकारण ऋविषण ॥ नवकार ढंद ...	२६०
२३७	सेवो पास संखेसरो मन सुधै... ..	२६१
२३८	वोर जिनेसर केरो सीस ... ..	२६१
२३९	झोल सती ढंद ॥ आदिनाथ आदिदेई...	२६२
२४०	गौतम स्तवन ॥ जय२ मंगल निधान ...	२६३
२४१	मुनिज्ञेय वर्णन स्तवन ... ..	२६४
२४२	जबसे श्रद्धा शुद्ध ऋई ॥ अरिहंत स्तवनं	२६४
२४३	श्रावककी करणी ॥ श्रावक तुं उठे० ...	२६४
२४४	गौतमस्वामीका रास... ..	२६६
२४५	सेत्रुंज रास ॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी ...	२७२
२४६	शिखरजीका रास ... ..	२८०
२४७	मुनिमालका ... ..	२९१
२४८	विभूजिन स्तवन ... ..	२९५

### ॥ अथ सिंज्ञायसंग्रह माला ॥

२४९	उपदेशमाला पोसह सिंज्ञाय ॥ जगचुक्रामणीभूत२९७	
२५०	राइ संघारा पोसह सिंज्ञाय ॥ निस्सिही०	३००
२५१	निंदावारक सिंज्ञाय ... ..	३०१
२५२	शीतासती सिंज्ञाय ॥ जलजलती मीलती०	३०२
२५३	अनाथोरुषि सिंज्ञाय ॥ श्रेणिक रयवामी०	३०३
२५४	प्रतिक्रमण सिंज्ञाय ॥ कर पम्तिकमणो जावसुं	३०३
२५५	मांगलिक सरणा चार ... ..	३०४
२५६	ढंढणरुषि सिंज्ञाय ... ..	३०५
२५७	श्रीजिन वाणी रे धन्ना ॥ धन्ना रुषीसिंज्ञाय	३०६
२५८	देव दाणव तीर्थकर ॥ कर्मसिंज्ञाय ...	३०७

२५९	सात व्यसन सिंझाय	...	...	३०८
२६०	चेलणा सती सिंझाय	...	...	३०९
२६१	वैराग्य सिंझाय ॥ जूलो मन जमरा कांइ जमे			३१०
२६२	बाहूवल सिंझाय ॥ राजतणा अति लोप्तीया			३११
२६३	अरणक मुनि सिंझाय	...	...	३११
२६४	इलापूत्र सिंझाय	...	...	३१२
२६५	मेघकुमार सिंझाय	...	...	३१३
२६६	असिंझाई निर्णय सिंझाय	...	...	३१४
२६७	बावीसअन्नक सिंझाय	...	...	३१५
२६८	गजसुकमाल सिंझाय	...	...	३१६
२६९	प्रणचंड सिंझाय	...	...	३१७
२७०	उतपति सिंझाय	...	...	३१८
२७१	आत्मनिंद्या	...	...	३२२
२७२	मंदिर जाणेकी नर दर्शन करणेकी विधि			३२७
२७३	चवदे नियम श्रावकके चितारणेकी विधि			३३१
२७४	श्रावकके बारे व्रत उच्चरावण विधि	...		३३४
२७५	वीसस्थानक लघु स्तवन देववंदनमें कहणेका			३३८
२७६	चलोदेखोरी मधुवनको राव ॥ पार्श्वजिन स्त०			३३९
२७७	मेरो मन वस कर लीनो ॥ पार्श्वजिन स्तवन			३३९
२७८	सुणो सुजाण नेमजी ॥ स्तवन	...		३४०
२७९	नेमजिनंदजीसैं आंखरुली ॥ स्तवन	...		३४०
२८०	आज प्रभु तोरे चरण लागि	...		३४०
२८१	रात गई अब प्रात होन ज्यो	...		३४०
२८२	तुम विन दीनानाथ दयानिध	...		३४१
२८३	ज्ञाव धर धन्य दिन० सिंझावल स्तवन	...		३४१



२८४	श्रीलीमंघर साहिबा ॥ स्तवन	...	३४१
२८५	मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो	...	३४२
२८६	सुण अरदासा सुगुण० पार्श्वजिन स्तवन		३४२
२८७	अंतरजामी सुण अलवेसर ॥ पार्श्वजिन स्त०		३४२
२८८	प्राण पियारा जीहो पासजी	...	३४३
२८९	महाराज वधाई वाजे वै ॥ सुमतिजिन स्त०		३४३
२९०	आज महोन्नव रंग रलीरी	... ..	३४४

### ॥ पूजा प्रारंभ ॥

२९१	देवचंडजी कृत स्नात्रपूजा	...	३४४
२९२	अष्टप्रकारी पूजाके आठ श्लोक	...	३५०
२९३	सतरहजेदी पूजाकी विधि	...	३५२
२९४	सतरहजेदी पूजा	... ..	३५२
२९५	आरतिविध तथा आरती॥ जै जै आरति शां०		३६२
२९६	नवपदजीकी पूजामें चहिये सो चीजोंकीविधि		३६३
२९७	नवपदजीकी बरुी पूजा	... ..	३६३
२९८	नवपदपूजामें कलसढालण त. वासकपूजा वि.		३७३
२९९	दादाजीकी अष्ट प्रकारी पूजा आठ श्लोक		३७४
३००	दादाजीकी आरती	... ..	३७५
३०१	सूतकविचार	... ..	३७५
३०२	असिझाई विचार	... ..	३७७
३०३	जकाजक विचार	... ..	३७९
३०४	नव ग्रह दश दिग्पालकी आहुत विशर्जनविधि		३८०
३०५	नवपद मंरुल पूजा विधि	... ..	३८६
३०६	नवपद मंरुल प्रतिष्ठा विधि नजमणे तक		३८९

## ॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

३०७	सत्तरसयको गुणनो...	...	...	३९९
३०८	सत्तरसय तप स्तवन...	...	...	४०३
३०९	कम्मपयसी तप गुणनो	...	...	४०५
३१०	कम्मपयसी स्तवन ...	...	...	४०७
३११	नवकार तप स्तवन ...	...	...	४०९
३१२	नवकार तप विधि ..	...	...	४११
३१३	पंच कल्याणक तप स्तवन ...	...	...	४१२
३१४	रूपिमंजल सुणणेकी पूजणकी विधि ...	...	...	४१५
३१५	जगवंतके नव अंगपूजन उहा...	...	...	४१५
३१६	शिक्षाका उहा ५ ...	...	...	४१६
३१७	नवपदोका नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा थुई.	...	...	४१७
३१८	शंस्कृतवद्ध चतुर्विंशति जिन स्तुति ...	...	...	४२५
३१९	नवपद वृद्ध स्तवन ॥ सुरमणी शम सहुमंत्र०	...	...	४२८
३२०	नवपद स्तवन ॥ तीरथनायक जिनवरू रे	...	...	४२९
३२१	नवपद ध्यान धरो रे जिविका ॥ स्तवन	...	...	४३०
३२२	जीया चतुरसुजाण नव० स्तवन	...	...	४३०
३२३	जिन नित नमो नित नमो नमो ॥ स्तवन ...	...	...	४३०
३२४	नितप्रति प्रणमुं ॥ नवपद थुई ...	...	...	४३०
३२५	अथ जैती संयुक्त नवपद उली करण विधि	...	...	४३१
३२६	अथ तपस्या ग्रहणकरणेकुं गुरु पाश जाणेकी वि.	...	...	४४८
३२७	उलीकी संक्षेप ऊजमणा विधि	...	...	४४९

## ॥ अथ छादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

३२८	प्रथम चैत्रमास पर्वाधिकार प्रथम १ उलीतप	४५०
३२९	अष्टापद उली करण विधि: मंजलविधि स. द्वि. १.	४५१

३३०	महावीरस्वामी जन्मकल्याणक पर्व तीसरा	४५४
३३१	चैत्रीपूनम पर्वधिकार पर्व ४ देववंदन वि०स०	४५४
३३२	चैत्रीपूनम स्तवन ... ..	४५६
३३३	नंदिश्वर तपस्या करण विवि ... ..	४५७
३३४	वैशाखमास पर्वधिकार आखातीज ...	४५८
३३५	ज्येष्ठ कृष्ण १३ श्रीशांति पर्वधिकार ...	४५९
३३६	आषाढमास १४ पर्वधिकार ... ..	४५९
३३७	श्रावणमासमें बृटकर तपस्याधिकार ...	४६०
३३८	भाद्रपदमासमें पर्युषण पर्वधिकार ...	४६५
३३९	आश्विनमासमें नली पर्वधिकार ...	४६७
३४०	कार्तिकमासमें ४ पर्वधिकार... ..	४६७
३४१	दीपमाला गुणनो करण विधि... ..	४६८
३४२	ग्यानपंचमी पर्वधिकार ... ..	४६९
३४३	ग्यानपंचमी देववंदन विधि ... ..	४६९
३४४	ग्यानका वमा चैत्यवंदन शुद्धि ... ..	४६९
३४५	श्रीआचारांगसूत्र सिंहाय ... ..	४७१
३४६	श्रीसुयगडांगसूत्र सिंहाय ... ..	४७२
३४७	श्रीगणांगसूत्र सिंहाय ... ..	४७२
३४८	श्रीसमवायांगसूत्र सिंहाय ... ..	४७३
३४९	श्रीनगवतीसूत्र सिंहाय ... ..	४७४
३५०	श्रीज्ञातासूत्र सि० ... ..	४७५
३५१	श्रीनपाशकदशासूत्र सि० ... ..	४७६
३५२	श्रीअंतगरुदशासूत्र सि० ... ..	४७६
३५३	श्रीअणुत्तरोववाइ सूत्र सि० ... ..	४७७
३५४	श्रीप्रश्नव्याकर्णसूत्र सि० ... ..	४७७

३५५	श्रीविपाकसूत्र सि० ...	४३८
३५६	इग्यारे अंग वर्णन सि० ...	४३९
३५७	मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी ॥ ज्ञानका स्त०	४३९
३५८	श्रुत अतहि जलो ॥ जिनागमस्तवनं ...	४४०
३५९	कार्तिक चतुर्मास पर्वधिकार...	४४०
३६०	कार्तिक १५ पर्वधिकार ...	४४०
३६१	सिद्धगिरि स्त० ते दिन क्यारे आवस्यै...	४८२
३६२	नमो रे नमो सेजुंजगिरी ॥ स्तवनं ॥ ...	४८२
३६३	अंग ऊमाहो मोने अतिघणो ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८३
३६४	जात्रा निनाणूं करियै ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८४
३६५	जाव धर धन्य दिन० सिद्धगिरि स्त० ...	४८५
३६६	मार्गशिरमास पर्वधिकार मौनएकादशी	४८५
३६७	मौन ११ देहसे कल्याणक गुणनो ...	४८६
३६८	पौषमासे वदि १० पर्वधिकार ...	४९०
३६९	माघमासे मेरुत्रयोदशी पर्वधिकार ...	४९१
३७०	फाल्गुनमासे पर्वधिकार ...	४९२
३७१	द्रव्यहोली जावहोली अधिकार ...	४९२

### ॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥

३७२	होरी खेलिये नर बहुरन० ...	४९५
३७३	जय बोलो पाश जिनेशरकी ...	४९६
३७४	मधुवनमें जाय मची होरी ...	४९६
३७५	यादव मन मेरो हर लियो रे ...	४९६
३७६	इक सुणले नाथ अरज मोरी ...	४९६
३७७	सांवरो सुखदाई जाकी ठिव ...	४९७
३७८	नेना हरखाई आज तेरी सू० ...	४९७

३७९	एसें फागुण मस्त महीनें चलोरी	...	४९७
३८०	नेम स्यामसें कहियो मोरी	...	४९७
३८१	होरी खेलो रे जविक मन थिर करकै	...	४९८
३८२	होरीके खेलइया तूं तो प्रजु०...	...	४९८
३८३	बाके ममतानें धूम मचाई	...	४९८
३८४	समकित विन जीव जगत जटक्यो	...	४९९
३८५	विसरे मत नाम प्रजुजीको	...	४९९
३८६	नेम निरंजन ध्यावो रे	...	४९९
३८७	गढ गिरनारकी तलहटी	...	४९९
३८८	धन राजुख तेरो जागरी	...	५००
३८९	एसी होरी तो हो रही चंपानगरमें	...	५००
३९०	बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी	...	५००
३९१	एसे प्रजु नेमनाथ मेरे दिल बसिया	...	५०१
३९२	संजव जिन सुखकारी हो लाला	...	५०१
३९३	सारो सोरठ देश दिखावो रसिया	...	५०२
३९४	जिनराज जुहारो, क्या बेठे जव हारो रे	...	५०२
३९५	मनमोहन गजगतकी कामनी...	...	५०३
३९६	रंग लग्यो गुरु ज्ञान...	...	५०३
३९७	चिदानंद खेल फाग...	...	५०३
३९८	होरी खेलो नेमसें धायर	...	५०४
३९९	मेरी घटकी गागरिया रंगसें जरी	...	५०४
४००	बावो रुपज बेठे अलबेसर	...	५०४
४०१	गिरराजकूं हमारी वंदना रे	...	५०४
४०२	दरशन कियो आज सिखर गिरको	...	५०५
४०३	सिद्धगिरीजीको दरशण करले	...	५०५

४०४	मौहें अपने रंगमें रंगदे	...	...	५०५
४०५	मेरे पारस प्रज्जुजीके रंगमंरुपमें	...	...	५०५
४०६	रंग मन्थो जिनद्वार चालो खेलिये होरी	...	...	५०६
४०७	नेमजीसैं कहियो मोरी	...	...	५०६
४०८	माहाराजा तोरे मंदिरमें वरसे रंग	...	...	५०६
४०९	तोरी अंगिया वणी है सुरंग	...	...	५०६
४१०	चित्तमणि चित्त ध्यावो रे	...	...	५०६
४११	मत मारो पिचकारी रे	...	...	५०६
४१२	नेम मिले तो वातां कीजिये	...	...	५०७
४१३	आत्मतत्त्व विचारो ज्ञानसैं	...	...	५०७
४१४	लाव तेरे नयनोकी गति न्यारी	...	...	५०७
४१५	दर्शन विन जीव संसार जन्मयो	...	...	५०८
४१६	मत गोमो माने यूँही रे कोइ चूक बतावो	...	...	५०९
४१७	अटकयो चित्त हमारो री जिनच०	...	...	५०९
४१८	मंगल राजै गिरनार...	...	...	५०९
४१९	मंगलकलश	...	...	५१०

### ॥ तपस्याविधि स्तवन संग्रह ॥

४२०	पांच कड्याणक टीप	...	...	५१०
४२१	पांच कड्याणक विधि	...	...	५१३
४२२	पखवासेको स्तवन...	...	...	५१४
४२३	पखवासा तप विधि...	...	...	५१६
४२४	दश पञ्चरूपाण स्तवन	...	...	५१६
४२५	दश पञ्चरूपाण तप विधि	...	...	५१९
४२६	वीश स्थानक तप स्तवन	...	...	५१९
४२७	वीश स्थानक तप करण विधि	...	...	५२१

४२८	वीश स्थानक गुणना नर काउसग प्रमाण	५२२
४२९	वीश स्थानक मंरुल पूजन विधि ...	५२४
४३०	रोहणी तप स्तवन... ..	५२९
४३१	रोहणी तप विधि ... ..	५३२
४३२	ठम्मासी तप स्तवन... ..	५३३
४३३	ठम्मासी तप विधि... ..	५३४
४३४	बारे मासी तप स्तवन ... ..	५३४
४३५	बारे मासी तप विधि ... ..	५३५
४३६	अठईस लब्धि स्तवन ... ..	५३६
४३७	अठईस लब्धि तप विधि ... ..	५३८
४३८	चौदे पूर्व स्तवन ... ..	५३८
४३९	चौदे पूर्व तप विधि... ..	५४०
४४०	तिलक तप स्तवन ... ..	५४१
४४१	तिलक तप विधि ... ..	५४२
४४२	शोलिये तपका स्तवन ... ..	५४३
४४३	शोलिये तपकी विधि ... ..	५४३
४४४	पैतालीश आगम तप विधि तथा गुणना	५४४
४४५	पैतालीश आगम स्तवन ... ..	५४५
४४६	झ्यारै गणधर तप विधि ... ..	५४८
४४७	११ गणधर नाम गुणना ... ..	५४८
४४८	सर्व तपस्या गुरु पास ग्रहण करण विधि	५४९
४४९	सर्व तपस्या पारण विधि ... ..	५५१
४५०	उपधान तप स्तवन... ..	५५१
४५१	संघ मालारोपण विधि: ... ..	५५३
४५२	संघमालाकी देववंदन विधी ... ..	५५४



४५३	उपधान तप नित्यकर्तव्यता ...	५५७
४५४	उपधान तप विधि ...	५५९
४५५	उपधान तप प्रवेश विधि ...	५६१
४५६	उपधान तप उत्क्षेप विधि ...	५६२
४५७	वाचना विधि: ...	५६३
४५८	तप संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ...	५६३
४५९	पद्मिषुन्ना विगय तप पारण विधि: ...	५६३
४६०	कृमाश्रमणादि प्रज्ञात संध्या पन्थिहण विधि: ...	५६४
४६१	उपधान तप विवरण गाथा ...	५६६
४६२	रुषिमंरुल मंरुलपूजा विधि ...	५६६
४६३	शांतिके पूजा विधि: ...	५६७
४६४	पंचतीर्थी आरती ...	५७०
४६५	चक्रेश्वरी आरती ...	५७१
४६६	चोपम खेलण सिझाय ...	५७१
४६७	सेत्रुंज खेलण सिझाय ...	५७२
॥ राग रागणी सरस स्तवन संग्रह १०१ ॥		
४६८	टुक निजर महर्दी क० ...	५७२
४६९	लोक चवदके पार किनारे ...	५७३
४७०	सखी सब बनठन ...	५७३
४७१	हो जिन तेमैं दरशपर० ...	५७३
४७२	म्हारा रुपन्न जिनंदने ग० ...	५७३
४७३	मन लीनो हमारो जिन चरणारे ...	५७४
४७४	अजित२ जिन ध्यान ...	५७४
४७५	यह अरजी मोरी सहीयां ...	५७४
४७६	मुजरो मानी लीजे हो गो० ...	५७४

४७३	तुं मैना प्रभु इण दिल वसणावे ...	५७४
४७४	हम जाणत हे तुम तारोगे ...	५७५
४७५	पंथीना पंथ चलेगो ...	५७५
४७६	तेवीशमा जिनराज जोमे आंरे कोण जुमेगो	५७५
४७७	केसें काज सेरे माहाराजविन केसें० ...	५७५
४७८	राजरी वधाई वाजैवै ...	५७५
४७९	मोतनकीमाला जिनगल सोहे... ..	५७६
४८०	रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय ...	५७६
४८१	हे माय वांकरी करमगति जाय न कही	५७६
४८२	म्हाने प्यारो लागेवै जी आंरो उपदेश ...	५७६
४८३	मेरो पिया परसंग रमत हे ... ..	५७७
४८४	वरषित वचन ऊरी० ... ..	५७७
४८५	या घरीमें रंग० ... ..	५७७
४८६	चिहुं नुर वदरिया वरसे ... ..	५७७
४८७	मोरवा पपइया बोले ... ..	५७८
४८८	समऊ नर जीवण ओरो ... ..	५७८
४८९	मत कर मान गुमान ... ..	५७८
४९०	निश दिन जोनें आंरी वाटनी० ...	५७८
४९१	आज तो हमारे ज्ञान्य वीरप्रभु आए हे	५७९
४९२	बावरो रे आज मनवो मेरो ... ..	५७९
४९३	रुषन विहारी आरीतो ठवि न्यारी हो ...	५७९
४९४	सुग मन होनहार न टरे रे ... ..	५७९
४९५	सहियोरी मिल चालो प्रभु पूजन काज...	५८०
५००	मनवा जिनंद गुण गाय रे ... ..	५८०
५०१	चलो देखोरी मधुवनको राव... ..	५८०

५०२	राखूं रे हमारा घटमें	...	...	५८०
५०३	तेरे दरशको चाह लग्यो	...	...	५८०
५०४	थारे मुखमारी हो वारी राज...	...	...	५८१
५०५	एसी विध तेने पाई रे	...	...	५८१
५०६	मोहि अपणो कर जाणो प्र०	...	...	५८१
५०७	वीर प्रजु तेरी दोस्तीमें	...	...	५८१
५०८	जोर जयो अब जाग बावरे	...	...	५८१
५०९	जाग रे सब रैण विहाणी०	...	...	५८१
५१०	सांवरो सलूनो सखी...	...	...	५८१
५११	आज रुषज घर आवै	...	...	५८३
५१२	अंगण कलप फट्योरी	...	...	५८३
५१३	ऊठेने मोरा आतमराम	...	...	५८३
५१४	जज मन नाजिनंदन देव	...	...	५८३
५१५	आवो नेम रह जावो सदन	...	...	५८४
५१६	कीरतीबाग मन प्रेम लाग	...	...	५८४
५१७	अधम जग काम जये अगीवान	...	...	५८४
५१८	प्रजु तेरी सूरतिया लागे जली...	...	...	५८५
५१९	आयो सही अब जाउं कहां	...	...	५८५
५२०	घमी२ पल२ ठिन२ निशदिन...	...	...	५८५
५२१	सुमतानें क्या कर मारा रे	...	...	५८६
५२२	तुम तो जले विराजो जी ॥ शिखर गिरि स्त०	...	...	५८६
५२३	शिखर गिरिंइ जुहारो ॥	...	...	५८६
५२४	सांवरिया में दीगो दरश तिहारो ”	...	...	५८७
५२५	त्रिजुवन नायक वीरजी ॥ पावापुरी स्तवन	...	...	५८७
५२६	निरख हीया हरख जरे ॥ चंपापुरी स्तवन	...	...	५८८

५२७	में मुँव देखो गोमीपारसको...	५८९
५२८	किरपा करो रे गोमीपाश जिनेसर...	५८९
५२९	मुजरा साहिब मुजरा साहिब...	५८९
५३०	घंट वाजै घननननन...	५९०
५३१	निरंजन सांझ्यां रे ...	५९०
५३२	एसे सहर विच कोनसा दिवान हे ...	५९०
५३३	आय रहो दिलबागमें ...	५९०
५३४	रहोर रे यादव दो घमिया ...	५९०
५३५	विराजो बंगलामें ...	५९१
५३६	किण देखा हमारा स्वामी ...	५९१
५३७	अबधू सो जोगी गुरु मेरा ...	५९१
५३८	अबधू एसो ज्ञान विचारी ...	५९१
५३९	हंसा तूं मानसरोवर वासी ...	५९२
५४०	बेरश नही आवै अवसर० ...	५९२
५४१	ये जिनजोके पाये लाग रे ...	५९३
५४२	चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो ...	५९३
५४३	अबधू निरपढ़ विरला कोई ...	५९३
५४४	चलया जरूर जाकुं ताकुं केसा सोचणा ...	५९३
५४५	समऊ परी मोहे समऊ परी...	५९४
५४६	जलांजी मेरो नेम चढयो गिरनार ...	५९४
५४७	रसना सफल जई मैतो गुण० ...	५९४
५४८	राजुज पुकारे नेम पिथा ...	५९४
५४९	कोन किसीको भित्त ...	५९५
५५०	आदीसर जिनराज ...	५९५
५५१	गोमी गाईये मन रंग ...	५९५

५५२	हारे हूं तो मोह्यो रे लाल ...	५९५
५५३	प्रभुजी सैं लागो मारो नेह ...	५९६
५५४	खतरा दूर करणा ...	५९६
५५५	रे जीव जिनधर्म कीजीये ...	५९६
५५६	सोइर सारी रैन गमाई ...	५९७
५५७	चंदा प्रभुजीसैं ध्यान रे ...	५९७
५५८	ते शिवपुर गये रहे रे ...	५९७
५५९	म्हारे जले रे जगो वै द्यामो आजनो रे	५९७
५६०	धन२ ते दिवाली मारे आजनी रे ...	५९८
५६१	धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे ...	५९८
५६२	म्हारे आज आनंद वधामणा रे ...	५९८
५६३	सवालाख टकानी जाय एक धनी ...	५९८
५६४	आवोरने प्यारा नेम अम घर ...	५९९
५६५	मनमोहन पारस प्यारारे ...	५९९
५६६	मेरे मन जावनकी बवि नीकीजी ...	६००
५६७	साद्वि सुगुण सुपारससैं ...	६००
५६८	सांवरिया पासजी सुख दीजे... ...	६००
५६९	तुम जजो रुपन प्रभु प्यारा जग० ...	६०१

॥ अश्र लावण्या संग्रह ३४ घन १० ॥

५७०	अगरुदू२ वजै चौधना ...	६०२
५७१	आखातीजकी लावणी ...	६०२
५७२	दीवालीकी लावणी ...	६०२
५७३	सीमंधरजिन लावणी ...	६०६
५७४	अजीमगजमें सांवरियाजीकी लावणी	६०७
५७५	नेमनाश्र मेरी अरज सुणीजै ...	६०८

५७६	तुम जपो मंत्र नवकार ॥ जिनदाशदि कृतघन	६०९
५७७	चल चेतन अब नठकर० ... ..	६१०
५७८	तुम जजो जिनेसर देव ... ..	६११
५७९	तुं कुमति कलेसण नार लगी क्युं केहे...	६१२
५८०	तुम तजो जगतका ख्याल ... ..	६१३
५८१	दे गया दगा दिलदार ॥ नेमजीकी लावणी	६१४
५८२	मुखक बीच मगसो पारसका... ..	६१५
५८३	सुकुतकी बात तेरे हाथ रती ना रही रे...	६१६
५८४	तुम तज कर राजुल नार ... ..	६१७
५८५	आप समझका घर नहीं पाया ... ..	६१८
५८६	नमुं२ में गुरु नियंत्रकूं ... ..	६१९
५८७	करूं२ में ऐसे सदगुरु ... ..	६२०
५८८	तजूं२ में बन कुगुरुकूं ... ..	६२१
५८९	यो जिनदाश जूगो रे जूगो ... ..	६२२
५९०	जब तन दोस्ती हे इह मस्ती ... ..	६२३
५९१	अरज हमारी सुणो दीनपति... ..	६२४
५९२	मुक्ति जाणेकी निगरी ... ..	६२५
५९३	अनुभव पद निगरी... ..	६२६
५९४	नेमकी जान बणी ज्ञारी ... ..	६२७
५९५	नेमनाथजीका चोमासा ॥ ठाई घटा ग०	६२८
५९६	सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ... ..	६२९
५९७	सऊ शोले सिणगार हुई हुसियार ... ..	६३०
६००	चंदावदनी मुखसे कहती गिरनारीकुं० ... ..	६३१
६०१	कोइ देख्या रे हो सांवलिया साहिब ... ..	६३२
६००	सुणजो वातां राव सदाशिव... ..	६३३

६०१	केशरीयानाथजीकी माहात्मकी लावणी	६२९
६०२	पार्थप्रभु आरती लावणी ... ..	६३४
६०३	आदि जिनेस कीयो पारणो ... ..	६३५
६०४	अजितनाथजीकी लावणी ... ..	६३५
६०५	पिया मेरा गिरनार सिधाए ॥ ने० ला० ...	६३६
६०६	दीवाली स्तवन ॥ धन२ मंगल एह सकलदिन	६३७
६०७	मारे दीवाली थई आज प्रभु मुख जोवाने	६३७
६०८	पोढोश जी रुषन्न विहारी ... ..	६३८
६०९	कीजे मंगल ब्यार आज घर० ... ..	६३८
६१०	सिद्धाचल गिर जेटो रे जविजन ... ..	६३८
६११	जगतमें नवपद जयकारी ॥ लावणी ...	६३९
६१२	ध्यान धरो नवपदका चेतन ... ..	६४०
६१३	चलो सखी जिन मंदिरमें जग नवपद...	६४०
६१४	सांवरो लागे प्यारो प्रभु मनमोहनगारो ॥ होरी	६४१
६१५	आज सुरंग धन वरसत होरी... ..	६४२

### ॥ अथ बारे मासा ॥

६१६	मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें ... ..	६४२
६१७	नेमनाथजीका बारेमासा ... ..	६४३

### ॥ स्तोत्र बूटकर संस्कृतबंध ८ ॥

६१८	सकल मंगल केलि० शीतल० स्तोत्र ...	६४६
६१९	विशद गुण विचित्र० पार्थ० स्तोत्र ...	६४६
६२०	यस्य ज्ञान दया० शंखेश्वरपार्थ स्तोत्र...	६४७
६२१	लक्ष्मी निदानं० पार्थ० स्तोत्र ... ..	६४७
६२२	गोप्नीग्रामे० शंखेश्वरपार्थ स्तोत्र ...	६४८
६२३	विशदसद्गुण० पार्थ स्तोत्र ... ..	६४८



६७३	परकी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८५
६७४	चनुमाशी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८७
६७५	संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८७
६७६	पमिलेहण करवानी विधि ... ..	६८७
६७७	पञ्चस्काण पारवानी विधि ... ..	६८८
६७८	पुस्कलवइ विजयें जयो ॥ श्रीमंधर स्तवन	६८८
६७९	बीज तिथीनो स्तवन वमो ॥ प्रणमी शार०	६८९
६८०	पंचमी वृद्ध स्तवन ॥ सुत सिद्धारथ० ...	६९०
६८१	आठमनुं वृद्ध स्तवन ॥ मारे ठाम ध० ...	६९६
६८२	एकादशी वृद्ध स्तवन ॥ जगपतिनायक०	६९८
६८३	माहावीरस्वामीनुं हालरियुं ... ..	७०१
६८४	निंदा म करज्यो कोईनी० सिझाय ...	७०३
६८५	देववांदवानो विधि ... ..	७०४
६८६	ज्ञानविमलजी कृत चनुमाशी देववंदन...	७०४
	आदिनाथ चै० शोय स्तवन ... ..	७०४
	अजितनाथ चैत्यवंदन, शोय ... ..	७०५
	संज्ञवनाथ, अग्निनंदन चैत्यवंदन शोय...	७०६
	सुमतिनाथ, पद्मप्रज्ञ, सुपार्श्वनाथ चै० शोय	७०७
	चंद्रप्रभु, सुविधिनाथ, सितलनाथ चै० शो०	७०८
	श्रीश्रेयांस, वासुपूज्य, विमलनाथ चै० शो०	७०९
	धर्मनाथ, शांतिनाथ चै० शोय स्तवन...	७१०
	कुंशुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ चै० शोय	७११
	मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ चै० शोय	७१३
	पार्श्वनाथ चैत्यवंदन शोय स्तवन ...	७१४
	महावीरस्वामी चैत्यवंदन शोय स्तवन	७१६

	शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवन्दन श्रौय	७१७
	नीलमी रायण तरु तले ॥ सिध्वाचल स्तवन	७१०
	नेम निरंजन देव के ॥ गिरनार स्तवन...	७१०
	आवो आवोने राज अर्बुदगिरी स्तवन...	७२२
	अष्टापदगिरी जात्रा करणकुं ॥ अष्टा० स्तवन	७२२
	समेतशिखरगिरी जेटीये रे ॥ शि० गि० स्त०	७२३
६८४	सत्तरजेदी जिन पू० पर्यूषण श्रौय ...	७१४
६८८	नेमनाथजी बारेमाशो ॥ शीयाले खाटू०	७१४
६८९	अपठरा करती आरती जिन आगे ...	७२६
६९०	पहली तो समरूं हो० नेम राजेमती सिझाय	७२६
६९१	गोतमस्वामी पूढा करी ॥ मुक्ति वर्णन सिझाय	७२८
६९२	नेमनाथजीरो सिलोको ... ..	७२९

### ॥ अथ चोढालीया संग्रह ॥

६९३	विजयसेठ विजयासेठाणी चोढा० ...	७३१
६९४	इखुकार राजा नृगु प्रोहितरो चो० ...	७३३
६९५	दान शील तप ज्ञाव चोढालीयो ...	७३६

### ॥ अथ ठंद संग्रह ॥

६९६	सेवो वीरनें चित्तमां नित्य धारो० ...	७४३
६९७	नवकार ठंद ॥ वंछित पूरे विविधपर० ...	७४५
६९८	घघरनीसाणी ॥ सुख संपत्ति० ...	७४७

### ॥ दादा गुरुदेव स्तवन संग्रह ॥

६९९	विलशै रुद्धि समृद्धि० ... ..	७५१
७००	वर लाठ विलाश० श्रीजिनदत्त० ...	७५२
७०१	रिसद जिनेसर० कुशलसूरि० ...	७५३
७०२	आयो सहु श्रीसंघ ... ..	७५४

६१४	श्रीमत्पार्श्वजिनेश्व० पार्श्व स्तोत्र	६४९
६२५	आद्य श्रीरुषभ० चतुर्विंश० स्तोत्र	६४९
६२६	मंगलाष्टक स्तोत्र	६५०
६२७	परमात्मा स्तोत्र	६५१
६२८	नमस्कार स्तोत्र	६५१

### ॥ अथ तपगङ्ग सामाचारी ॥

६२९	पुण्य प्रकाश आलोचन स्तवन	६५२
६३०	नरहेसरनो सिद्धाय	६५९
६३१	मन्त्रजिणाणं सिद्धाय	६६०
६३२	सकल तीर्थ वंदना	६६०
६३३	सकलार्हस्तोत्र	६६१
६३४	शांतिकर स्तोत्र	६६३
६३५	सीमंधर चैत्यवंदन ॥ सीमंधर परमात्मा	६६४
६३६	श्रीसीमंधर जग धणी	६६५
६३७	सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ विमल केवल०	६६६
६३८	श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र	६६६
६३९	परमात्मा चैत्यवंदन० परमेश्वर परमात्मा	६६६
६४०	सुणो चंदाजी सीमं० सीमंधर स्तवन	६६६
६४१	आंखनीये में आज० सेत्रुंजा स्तवन	६६७
६४२	विमलाचल नित वंदिये ॥ स्तवन	६६७
६४३	पंचतीर्थ संस्कृतबद्ध स्तवन	६६८
६४४	नेम राजुल सिद्धाय ॥ पिनुजी२ नाम	६६८
६४५	आऊखो तूटाने सांधो० सिद्धाय	६६९
६४६	आदि देव अरिहंत नमूं ॥ पंचती० चैत्यवं०	६७०
६४७	उविध धर्म जिन न० दूज चैत्यवंदन	६७०

६४८	त्रिगुणे वैठा वीर जिन ॥ ग्यानपंचमी चैत्यवं०	६७०
६४९	महा सुदि आठमने० अष्टमी चैत्यवंदन	६७१
६५०	शाशन नायक वीरजी० इग्यारश चैत्यवंदन	६७२
६५१	सीमंधर जिनवर स्तुति० ... ..	६७२
६५२	श्रीसीमंधर देव सुहंकर ॥ श्रौय ...	६७२
६५३	दिन सकल मनोहर ॥ बीजनी श्रौय ...	६७३
६५४	श्रावण सुदि दिन पंचमी ए ॥ पांचमनी श्रौय	६७३
६५५	मंगल आठ करी० आठमनी श्रौय ...	६७४
६५६	एकादशी अति रूक्मी ॥ इग्यारश श्रौय	६७५
६५७	स्नातस्या प्रति० चवदशनी श्रौय ...	६७५
६५८	कल्याणकंदनी श्रौय... ..	६७६
६५९	श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ० श्रौय ...	६७६
६६०	महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी ॥ श्रौय	६७७
६६१	पंचेदिय संवरणो ... ..	६७७
६६२	सामाश्यवयजुत्तो ॥ सामायक पारवागाथा	६७८
६६३	सागरचंदो ॥ पोसह पारवा गाथा ...	६७८
६६४	जगचिंतामणि चैत्यवंदन ... ..	६७८
६६५	अतीचारनी ८ गाथा... ..	६७९
६६६	विशाललोचन स्तुति ... ..	६७९
६६७	सुयदेवया नगवई ॥ स्तुति ... ..	६८०
६६८	जीसे खिन्ने साहू ॥ क्षेत्रदे० स्तुति ...	६८०
६६९	सामायक लेवा विधि ... ..	६८०
६७०	सामायक पारवा विधि ... ..	६८१
६७१	दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८१
६७२	राई प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८३

७०३	सदगुरुजी ये सांजलो	७५५
७०४	दादा चिरंजीवो	७५६
७०५	गाजै जिनकुशल गमावै	७५६
७०६	सहाई मेरे श्रीजिनकुशल गुरु	७५७
७०७	आयोश जी समरंता दादो०	७५७
७०८	जाया नक्तिसूं पूर रहो रे	७५८
७०९	पूजो नवि हितसुं कुशल सूरिंद	७५८
७१०	आज करो रे नगाह श्रीजिनकुशल	७५८
७११	में निरख्या गुरु महाराज	७५९
७१२	चरणकी चरणकी वारीजा०	७५९
७१३	अब मोहि दरशण दीजै कु०	७६०
७१४	कुशल गुरु कुशल करो जरपूर	७६०
७१५	सदगुरु पूजण जावस्यां	७६०
७१६	श्रीसदगुरुजीसैं वीनती रे	७६१
७१७	सदगुरु दीनदयाल...	७६१
७१८	सुगुरु मेरी बेनिया पार०	७६२
७१९	देख्या में दरश तिहारा	७६३
७२०	सदा सहाई कुशल सूरिंद०	७६३
७२१	जिनकुशल सूरिंद गुरु सदा नमो	७६४
७२२	उत्रपती आरे पाय नमें जी	७६४
७२३	सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी...	७६४
७२४	सदगुरुके चरण चित लाय२...	७६५
७२५	होरी खेलो नविक सदगुरुके संग	७६५
७२६	गुरु पूज रचो रे सुझानी	७६५
७२७	सदगुरुजीके द्वार मची होरी...	७६६

७१८	केसैँ अक्सरमें गुरु रस्की लाज०	...	७६६
७२९	श्रीजिनकुशल सूरीसर साहिब...	...	७६६
७३०	श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिंदके	...	७६६
७३१	कुशल गुरु देखके दरशण ...	...	७६७
७३२	कुशल गुरु दरशन दीजे हो ...	...	७६७
७३३	पूजो नजो रे जाई...	...	७६७
७३४	हूंतो अरज करुं करजोरुनें ...	...	७६७
७३५	सांगानेर विराजै ...	...	७६८
७३६	सदगुरुजी म्हारा० लावणी ...	...	७६८
७३७	मोरी सखी सहेलियां० लावणी	...	७६९
७३८	कामित कामगवी ॥ श्रीजिनचंद० स्तवनं		७७०
७३९	श्रीसौजाग्य सूरी स्तवनं ...	...	७७०
	॥ देशना वधावा संग्रह ॥		
७४०	वीरजी दिये ठे देशना रे ...	...	७७१
७४१	गुणनिधि श्रीजिनचंद मुणिदा	...	७७१
७४२	श्रीजिनचंद सूरीसरू ...	...	७७२
७४३	एहवा सदगुरु वांदिये ...	...	७७३
७४४	सुखकर स्वामी श्रीतीर्थीकरू रे	...	७७३
७४५	मोतीयमे मेह वरसीयो ...	...	७७५
७४६	जिनशासन जयकारी ॥ गुंहली	...	७७५
७४७	सुणिये सदगुरु देशना ए सहियां ॥ गुंहली		७७६
७४८	सुगुरु म्हारा ज्याजनी पर तारो ...	...	७७७
७४९	वृहत् खरतर मन्त्र सुद्ध सिद्धांत सामाचारी		७७८

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

## ॥ रत्नसमुच्चय ॥



### ॥ मंगलाचरण ॥



ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायंति योगिनः ॥  
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

### ॥ कवित ॥

ॐकार उदार अगम्भ अपार । संसारमें सार पदारथनांमी ॥  
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप । भयो सबही सिर झूप सुधामी ॥  
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजांमी ॥  
पंचही इष्ट वसे परमेष्ट । सदा भ्रमसी करै ताहि सलामी ॥ १ ॥  
नमो निसदिस नमायके सोस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥  
जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥  
इंद्र नरिंद दिणिंद फुणिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥  
धोरी धरम्मको धीर धराधर । ध्यान धरे भ्रमसी गुण ध्याता ॥ २ ॥

### ॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

महिमा जिणकी महिमें १ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥  
दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥  
देतहि देतहि दूनो वधै । अरु स्वायोहि खूटत नांहि खजीनो ॥  
एसो पसाय कियो गुरुराय । तिणें भ्रमसी पदपंकज लीनो ॥ १ ॥

अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥

नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥



॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥  
 सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥  
 विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥  
 सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥  
 हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरे सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा ।  
 रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥  
 चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।  
 हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकुं गाईहे ॥  
 हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।  
 लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥  
 सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।  
 एसी माता शाता दानी धर्मसीहें ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ ई उ ऊ रु ऋ नृ ए ऐ उ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द  
 ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क । इ ॥ क  
 का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ तृ दृ ष्टृ नृ वृ सृ शृ  
 सृ ह्र ॥ क्य ख्य ग्य घ्य ञ्य व्य ज्य ट्य ठ्य ड्य ण्य एय त्य द्य ध्य  
 न्य प्य च्य म्य ञ्य ट्य ड्य ष्य स्य ह्य द्य ॥ क्र ग्र ज्ञ ल द्र प्र त्र  
 अत्र श्र स्त्र ह्र ॥ क्त्वं एव त्व द्त्वं न्वं स्त्वं श्व ष्व स्वं ॥ क्र ग्र प्र  
 त्र प्र स्र श्र ष्र क्ष ॥ कम गम धम ञम एम ञ्म न्म इम ष्म स्म  
 ह्र द्म । कं खं गं घं ॥ कृ रकृ गृ ॥ च छ ज झ ञ

ॐ ह्रूं क्लृप्ता तत्पद्मं द्वादश ॥ पप फफ व्व ज्ञ मम यय र र्क्ष  
व शशा षष स्स ॥ त्र्य त्सन्य पू ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ ।  
७ । ८ । ९ । १० । १ । १००००० ॥ १०००० ॥ १०००००  
॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्रो कृष्णवृहस्पति । ण्विन्द्राह्वास्युश्च स्वस्करा ॥  
पृथ्वीभृद्वल्गुश्रेष्ठात्म । न्रम्यास्तेहृद्यज्ञसिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥  
अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥  
विद्वत्त्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥  
स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥  
पंक्तिच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥  
तस्मात्मूर्ख सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥  
नक्षत्रभूषणं चंद्रो । नारीणां भूषणं पतिः ॥  
पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्य भूषणं ॥ ४ ॥  
माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥  
न शोभते सन्नामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥  
लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि तारयेत् ॥  
प्राप्ते तु पोरुशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥  
वरमेको गुणी पुत्रो । न च सूर्खशतान्यपि ॥  
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥ ७ ॥  
अविद्यं जीवितं शून्यं । दिशःशून्यास्त्वबांधवा ॥  
पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥  
न च विद्या समोबंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥  
न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंबलं ॥ ९ ॥  
किं तया क्रियते धेन्वा । यानसूतेन दुग्धदा ॥

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न ज्ञेयमान् ॥ १० ॥

उपदेशो हि सर्वाणां । प्रकोषाय न शान्तये ॥

पयःपानञ्जुंगानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥

मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥

आत्मवत्सर्वज्ञूतानि । विहंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना  
तेषां द्वाद्वान्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वो ह्रस्वः परो दीर्घः स्वरो वर्णः वर्जो-  
नामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनि व्यञ्जनानि ते वर्गा पञ्चपञ्च-  
वर्गाणां प्रथमद्वितियौ शपसश्च घोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ऊ-  
त्रणनमाः अनतस्थाः यरलवाः उष्माणः शपसहाः अः इति विसर्ज-  
नीयः कः इति जिह्वामूलीयः पः इत्युपमानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व-  
परयोरर्थोपलब्धौ पदम् अस्वरं व्यञ्जनं परं वर्णं नयेत् अनतिक्रम्यन्-  
विश्लेषयेत् लोकोपचारात् ग्रहणसिद्धिः इति संधौ सूत्रतः प्रथमश्चरण-  
समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अहतो भगवंतं इंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥

आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥

श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । स्तनत्रयाराधकाः ॥

पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पञ्च परमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलं कुर्वंतु )

यह जो पञ्च परमेष्ठिपदहे सो हमेसां तुम जव्य जीवोंकें मंगल करो, के-  
से कहें पञ्च परमेष्ठि (अहंतो भगवंतं इंद्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री  
अरिहंतदेव आव कर्मरूप अंतरंग वैरियोंकों हणें सो अरिहंत कहौजै,  
फेर श्री अरिहंत कैसेंहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहे फेर अरि-  
हंत साहाराज कैसेंहे जगवंतहे जगशब्दके अनेकार्थ कोपमें चौदे

अर्थहे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत जगवंतमेंहे एकता सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालकै फेर श्री अरिहंत जगवंत कैसेकहें ( इंद्रमहिता ) चौसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें बिराजमानहै सो बारे गुण ऐसेहैं प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग नर पसीना नर मैलरहित बन्ना खसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जैसी खसबो होतीहे २ लोही नर मांस गजके दुध जैसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृश्य होतीहे अर्थात् चर्म चक़ुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह च्यार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे नर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ जगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी ढाया बैठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके समूह गोमे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । बीट नीचा रहे पांखरी ऊपर रहे २ । ( दिव्यध्वनि ) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यच सब जीव अपनी २ ज्ञापामें यथावस्थित समजै ऐसा जनोंको मालम देवेके जगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहैं सोही बात सिद्धांतोंमें कहाज्नीहे ॥ गाथा ॥ एगाङ्गिराणेगे । संदेहेदेहिणंसमञ्जिता ॥ तिहुअणमणुंसासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ श्रामर ४ जगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्बर ढोलता रहै ४ ॥ आसनअ ५ जगवंतके बैठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासन रहै ५ ॥ जामंरुलं ६ जगवानके पितामी भामंरुल रहे जिस्सें जव्यजीव जगवानके तरफ देखसके जगवंतके च्यारमुख च्यारुंदिसामें दीखाइदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे नर तीन दिसामें जगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन भगवानके अतिशयसे  
 ज्यारोहीदिसामें वारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेजये दि-  
 खाइदेवे ६ ॥ डुंडुजी उ आकाशमें देव ते देवडुंडुजीवाजित्र वजावे  
 उ ॥ रातपत्रं उ जगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन ठत्र  
 रहै उ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे ऐसे अरिहंत देवाधिदेव  
 चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोजित एकहजार  
 आठ लक्षणांकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलो-  
 क्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-  
 वलज्ञान केवलदर्शनसें लोकालोकका ज्ञाव देखतेजये पृथ्वीमंजु-  
 पर जव्यजीवोंके मनोरथ पूरणथके विचरतेहैं ऐसे अनंत गुणसें  
 विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो ? ॥  
 ( सिद्धाश्रसिद्धिस्थिता ) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार  
 हुन केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप  
 अग्निसैं ज्ञस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तजये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-  
 नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक  
 जयादिकसें रहित चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकस-  
 मयमें जाणते नर देखतेअके लेकिन आत्मगुणोंमे मग्न रहेजये ऐसे  
 श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ ( आचार्या-  
 जिनशासनोन्नतिकरा ) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-  
 स्कार हुन केसेकहे श्रीआचार्यमहाराज ठत्तीसगुणोंसें विराजमान  
 मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रूकेविराधक पंचाचारपालक अबुधजीव-  
 प्रतिबोधक कृमागुणजंमार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-  
 शासनके उन्नतिके करणेवाले ऐसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-  
 राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ ( पूज्यानुपाध्यायका श्रीसि-  
 द्धांतसुपाठका ) चौथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नम-  
 स्कार हुन केसेकहे श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

एकार नयनिहैपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपढाएवाले २५ गुणोंसे विराजमान ऐसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ४ ॥ ( मुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः ) पंचम परमैष्टिपदमें सरब साधूमुनिराजजी केसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ इन तीन रत्नोंके आराधक पांचे सुमतेसमतां तीने गुते-गुप्ता ठक्कायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक ऐसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसे सोजित श्रीसंघमें सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थ ॥

## ॥ अथविंशतिजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

- |                    |                        |
|--------------------|------------------------|
| १ श्रीकैवलज्ञानीजी | २ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥   |
| ३ श्रीसागरजी       | ४ श्रीमहायसजी          |
| ५ श्रीविमलदेवजी    | ६ श्रीसर्वानुभूतिजी    |
| ७ श्रीश्रीधरजी     | ८ श्रीदत्तस्वामीजी     |
| ९ श्रीदामोदरजी     | १० श्रीसुतेजनाथजी      |
| ११ श्रीस्वामीजी    | १२ श्रीमुनिसुव्रतजी    |
| १३ श्रीसुमतिनाथजी  | १४ श्रीशिवगतिजी        |
| १५ श्रीअस्तागजी    | १६ श्रीनमिश्वरजी       |
| १७ श्रीअनिलनाथजी   | १८ श्रीअशोधरजी         |
| १९ श्रीकृतार्थजी   | २० श्रीजिनेश्वरजी      |
| २१ श्रीशुद्धमतजी   | २२ श्रीशिवकरजी         |
| २३ श्रीस्यन्दनजी   | २४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी |

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

- |                   |                   |
|-------------------|-------------------|
| १ श्रीऋषभदेवजी    | २ श्रीअजितनाथजी   |
| ३ श्रीसंज्ञवनाथजी | ४ श्रीअज्ञिनंदनजी |
| ५ श्रीसुमतिनाथजी  | ६ श्रीपद्मप्रभूजी |

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी	८ श्रीचंद्राप्रभूजी
९ श्रीसुविधनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी	१२ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी	१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी	१६ श्रीशांतिनाथजी
१७ श्रीकुंथुनाथजी	१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी	२० श्रीसुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी	२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी	२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

### अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी	४ श्रीश्वयंप्रभूजी
५ श्रीसर्वानुभूतिजी	६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभूजी	८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोटिलप्रभूजी	१० श्रीशतकीर्तिदेवजी
११ श्रीसूत्रतनाथजी	१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कपायदेवजी	१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी	१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी	१८ श्रीसंवरनाथजी
१९ श्रीयसोधरजी	२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमल्लिप्रभूजी	२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी	२४ श्रीभद्रंकरजी

### ॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी	२ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीवाहूजी	४ श्रीसुबाहूजी
५ श्रीसुजातजी	६ श्रीस्वयंप्रभूजी

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
ए श्रीसूरप्रज्ञजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहजी	१४ श्रीजुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रज्ञजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीचयरसेनजी	१८ श्रीमहान्नद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसाश्वतातीर्थकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव ज्वन्ति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनबालाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीशीताजी
ए श्रीसुन्नद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीद्वंद्वतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी २ सतियोंको त्रिकाल २ वंदना ॥



॥ ॐ परमंष्टिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो  
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवद्यायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सव्वला  
हूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच एमुकारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥  
७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ए ॥  
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण के थापनाजीकी थापना  
करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥  
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्वहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥  
२ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पातुं ॥ १ ॥ प  
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥  
२ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-  
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीठें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने  
खमा हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिजाए निसीहिआए म  
छएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा ॥

॥ इच्छाकार जगवन् सुहराड, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा  
बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोगोजी ? स्वामी शाता ठेजी ? इति ॥  
॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे दे-  
वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अष्टुष्टि  
जुमि कहे पीठें खमासमण देकें इच्छाकोरेण संदिस्सह जगवन्  
सामायिक लेवा मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेह. पीठें इच्छा  
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सईहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥  
मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल  
मुहपत्ती खोलती बिरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परि-  
हरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥  
॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान  
॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पमिले-  
हण मावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-  
विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥  
कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरुं ॥ १ ॥ वचनदंरुं ॥ २ ॥ काय-  
दंरुं ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पमिलेहण जिमणे हाथसैं करणी  
॥ यह पच्चीस बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीस पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या  
॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलामे मस्तकें परिहरुं ॥

॥ रुद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शांता गारव ॥ ३ ॥  
ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ नियाणाशब्द ॥ २ ॥ मिच्छादंसण-  
शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय मावे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे  
हाशे परिहरुं ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुर्गन्धा ॥ ३ ॥ ए तीन  
जिमणे हाशे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेज्जकाय ॥ ३ ॥ ए  
तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥  
ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुहपत्ति पमिलेहणा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठें खमा होय कें इच्छामि खमासमणका पाव कहे कें  
इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे  
संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्छं कहे कें फेर खमासमण दे कें इच्छाण ॥  
जण ॥ सामायिक ठानं ? गुरु कहे ठाण्ह ॥

॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देइ थोमो जुकी तीन नव-  
कार गणी इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् पसाज करी सामायिक  
दंरुक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें  
सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चख्वाण ॥

॥ करेमि जंतें सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चख्वामि ॥ जाव  
नियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेषं वायाए काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स ज्ञंते पन्निक्कमामि निंदामि गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठेणं खमासमण दे केणं इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्  
इरियावहियं पन्निक्कमामि ॥ गुरु कहे पन्निक्कमह. पीठेणं इच्छं कही ॥  
इच्छामि पन्निक्कमिजं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावहियं पन्निक्कमा  
मि ॥ इच्छं इच्छामि पन्निक्कमिजं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए  
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे  
॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्ठी मक्करु संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे  
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एणिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदि  
या पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अज्झिया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्ठि  
या परियाविया ॥ किलामिया उद्विया ठाणाउ ठाणं संकामिया  
जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि डुक्कं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायञ्चित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं  
॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायणठाए ॥ ठामि  
कानुस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंजाइएणं  
उरुएणं वायनिसग्गेणं जमलिए पित्तमुच्चाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचा  
लेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एव  
माइएहिं आगारेहिं ॥ अज्जग्गो अविराहिज ॥ हुज्ज मे कानुस्सग्गो  
॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं जगवन्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥  
तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इ  
ति ॥ ए ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको कानुस्सग्ग

करे. पीठें एमो अरिहंताणं कहे कें कानस्सग्ग पारकें मुखसैं प्रगट  
लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअग्गे ॥ धम्म तिठ्येरे जिणे ॥ अरिहंते  
कित्तइस्सं ॥ चन्नवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उस्सज्ज मज्झिअं च वंदे ॥  
संज्जव मज्झिणं दणं च सुमइं च ॥ पन्नमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जांस वासु  
पुज्जां च ॥ विमल सणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥  
कुंथुं अरं च मद्धिं ॥ वंदे मुणिसुवयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ  
नेभिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्झिष्णुआ ॥ वि  
हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चन्नवीसंपि जिणवरा ॥ तिठ्य  
रामे पलीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ  
त्तमा सिज्जा ॥ आरुग्ग बोहिल्लान्तं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥  
चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंजीरा  
॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीठें खमासमण देइ इच्छाण ॥ जगवन् वैसणो संदि  
स्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इत्थं कहे कें वली खमा-  
समण दे कर ॥ इच्छाण ॥ जगवन् वैसणो ठानं ? गुरु कहे  
ठाएह ॥ फेर इत्थं कहे कें खमासमण दे कर इच्छाण ॥  
जण ॥ सिज्जाय संदिस्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें  
इत्थं कहे कें वली खमासमण दे कर इच्छाण ॥ जण ॥ सिज्जाय  
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इच्छा खमे हो कर  
आठ नवकार कह कर सज्जाय करे, तथा जो शीतकालादि होवे  
तो खमासमण दे कें इच्छाण ॥ जण ॥ पांगरणो संदिस्तावुं ? गुरु  
कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इत्थं कह कर खमासमण दे कर इच्छाण ॥  
जण ॥ पांगरणो पन्निग्घानं ? गुरु कहे पन्निग्घाएह ॥ पीठें इत्थं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक  
वांटे तो “वंदामो” ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांटे तो, सि  
चाय करेह. ऐसैं कहे ॥ इति प्राज्ञातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा ॥ ज ० ॥ चैत्यवंदन  
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इच्छं कही जयउ सामि जियेउ सामि  
इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामि जयउ सामि, रिसह सेतुंजि उज्जति ॥

॥ पहु नेमिजिण, जयउ बीर सच्चनरिमंण ॥ १ ॥ जरुअछेह  
मुणिसुवय, महुरिपास डुह डुरिय खंण ॥ अवरविदेहिज तिष्ठ-  
यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडु जिण  
सवेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्त-  
रिसउ, जिणवराण विहरंत लप्पई ॥ नवकोमीहिं केवल्लिण, कोमि  
सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर बीस मुणि, विहुं कोमीहिं  
वरणाण ॥ समणह कोमी सहस्स डई, पुणिज्जइ निच्च विहाण  
॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा उप्पन्न अठ कोमीन ॥ चउ-  
सय ठायासीया, तिच्छुक्के चेइए वंटे ॥ २ ॥ वंटे नव कोमि सयं,  
पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठवीस सहस्सा, चउसय अठ-  
सिया पदिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिष्ठं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥  
जाइं जिणविंवाइं ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

ञ्गराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरि-  
 सवरपुंररीआणं, पुरिसवरगंधहवीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग-  
 नाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोगगराणं ॥ ४ ॥ अज्ज-  
 चदयाणं, चख्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं  
 ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसा-  
 रहीणं, धम्मवरचाञ्जरंतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरणाण  
 दंसण धराणं, विअट्ठ उज्जमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं  
 तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सबन्नूणं  
 सब्बदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरुक्खय मवावाह मपुणरा-  
 वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं,  
 जिअ ज्ञयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ ज्ञविस्संति  
 णागए काले ॥ संपइअवट्ठमाणा ॥ सब्बे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सवाइं  
 ताइं वंदे ॥ इहसंतो तउ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥  
 सब्बेसिं तेसिं पणुअ ॥ तिविहेण तिदंरु विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वे साधुज्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मधणमुक्कं ॥ विसह-  
 रविसनिन्नासं ॥ मंगलकद्धाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुल्लिगमंतं  
 ॥ कंठे धारेइ जौ सया मणुअ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुअ जरा  
 जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिअन दूरे मंतो ॥ तुअ पणामो वि बहु-  
 फलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुअव दोहगं ॥



॥३॥ तुह सम्मते लदे ॥ चिंत  
 अविघ्नेलं ॥ जीवा अथरामरं ठाण  
 ॥ जतिप्ररनिप्ररेण हिअएण ॥ ता दे  
 पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥ संशुन महायस  
 ॥ अथ जयवीअराय ॥ जेवे जेवे

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होन मम  
 जवनिव्वेन मग्गा, एुसारिआ इठ फलसिद्धी ॥  
 जु ॥ गुरुजणपूआ परठकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोयवं ॥  
 आज्ञव मखंका ॥ १ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन के  
 खमासमण दे केँ इत्ताण ॥ जण ॥ कुसुमिण दुसुमिण  
 चित्त विसोहणठं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीठें  
 कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायचित्त विसोहणठं करेमि  
 स्सग्गं ॥ अन्नठ नससिएलं ॥ इत्यादि पाठ कहे केँ सोले नव  
 कार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन  
 कर केँ काउस्सग्ग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर काउ  
 स्सग्ग पारीकेँ मुखसेँ एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें  
 गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागर  
 वरगंजीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पन्तिकमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम  
 ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि केँ वांदिऐं ॥ १ ॥ खमासमण  
 देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिऐ ॥ २ ॥ खमासमण देइ  
 जंगम युगप्रधान वर्त्तमान जट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले केँ वां  
 दिऐं ॥ ३ ॥ खमासमण देइ केँ सर्व साधुजीकुं वांदिऐं ॥ ४ ॥ इस  
 तरे चार खमासमणसेँ पन्तिकमणां ठावी गोमालीयेँ बैठ केँ मस्त  
 क नमाय कर दोनुं हाथे सुहपत्ती सुहमे दे कर ॥ सबस्सविराइय



संदिस्सह इत्थं इत्थं माफक

वि ॥

उप्रासिय दुच्चिठिय इत्था  
मिठामि दुक्कमं ॥ इति  
ऐसा पाठ कहे ॥

ये कें ॥ करेमि जंते सा

इत्थादिक पाठ कहे ॥ पीठें इ

जा मे राइउ ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिगामि ॥

॥ इच्छामि गामि कानुस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो क  
उ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अक  
रणिज्जो ॥ उअउ ॥ दुव्विचित्तिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअवो ॥ अ  
सावगपानग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥  
तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गु  
एव्वयाणं ॥ चउन्हं सिस्कावयाणं ॥ वारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥  
जं खंमिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिठा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ इ  
हां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १ए ॥

॥ पीठें तस्सउत्तरी ० ॥ अन्नउ उरसिएणं कह कर चारित्रिगु

दि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका कानुस्सग्ग करी  
पारि कें दर्शन गुदि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत  
चेइआणं ॥ करेमि कानुस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना  
सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स

म्माण वत्तिआए ॥ बोहिलान्न वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्वाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वद्धमाणी  
ए ठामि कान्हस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीठें अन्नन्न० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका  
कान्हस्सग्ग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुस्करवरदी० ॥  
सुयस्स जगवन्तं करेमि कान्हस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ पुस्करवरदी ॥

॥ पुस्करवरदीवद्धे, धायइसंमे अ जंबुदीवेअ ॥ जरहे रवय  
विदेहे, धम्ममाइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्धं, सणस्स  
सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजात  
स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोमयणासणस्स, कद्धाण पुख्खलवि  
सालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार  
मुवल्लभ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेत्तो पयन्तं एमो जिणमए, नंदी  
सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्पूअ ज्ञावच्चिए ॥  
लोगो जन्त पइठिन्त जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वद्धन्त सा  
सन्त विजयन्त, धम्मत्तरं वद्धन्त ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स ज  
गवन्तं करेमि कान्हस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर  
अन्नन्नूससिएणं कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका कान्ह  
स्सग्ग करे. कान्हस्सग्गके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे, सो आ  
गे लिखेंगे, पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु-  
वगयाणं, नमो सया सब्बसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं  
देवा पेजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी  
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवत्तहस्स वद्धमाणस्स ॥ सं  
सारसागरान्तं, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिनं सेल सिहरे,

दिस्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्रवट्ठिं, अरिठनेसिं न  
संतामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं  
॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्महिठि समाहिगराणं ॥  
इति ॥ करेमि कानस्सग्गं ॥ अन्नत्तण ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठें संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र  
वादणां निमित्तें मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह ॥ मुहपत्ती  
पमिलेहे, पीठें वादणां दे, तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उज्जा हुआ आधा नीचा नम कर  
इठामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए निसीहिआए अणुजा-  
णह मे भिउग्गहं, इतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता  
हुआ निसीहि कह कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा  
प्रमार्जन कर कें उक्कम वेठ के मावे हाथमें मुहपत्ती ले कें मावे  
कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निछाम पूंजी, मुहपत्ती आगे  
रख कें तिसके मध्य जागमें गुरुचरणकी कटपना कर कें ॥ अहो  
कायं इत्यादि आवर्त कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि  
कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिजो जे किलामों  
॥ इत्यादि पाठ कहे, पीठें फेर ॥ जत्ता जे ॥ इत्यादि आवर्तन कर  
कें खमा होके पीठें पगसें जूमि पूंजता हुआ अवग्रहसें बाहिर  
निकलके स्वस्थान पर आवे, जहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ  
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इठामि खमासमणो वंदिउं, जावणिजाए निसीहिआए  
॥ अणुजाणह मे भिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं,  
खमणिजो जे किलामो ॥ अप्पकिळंताणं बहु सुत्तेण जे, दिवसो

वश्कंतो जत्ता जे जबणिज्जं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देव-  
 सिअं वश्कम्मं आवसिआए, पम्किमामि खमासमणाणं ॥ देव-  
 सिआए, आसायणाए ॥ तिच्चीसन्नयराए जं किंचि मिच्चाए, मण-  
 डुक्काए, वयडुक्काए कायडुक्काए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-  
 ज्ञाए, सबकाविआए, सब मिच्चोवयाराए, सबधम्माश्कमणाए ॥  
 आसायणाए जो मे अइआरो कनु, तस्स खमासमणो पम्किमामि ॥  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें  
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइन वश्कंतो, तथा  
 चउमासीयें चउमासीनु वश्कंतो, परकीयें परको वश्कंतो, संवच्च-  
 रीयेसंवच्चरीनु वश्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्चाकारेण संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोउं इच्चं ॥ आ-  
 लोएमि, जो मेण ॥ इति ॥ १५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीठें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समद्व आलोवे, सो क-  
 हेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय  
 ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख  
 तेजकाय ॥ सात लाख वायुकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-  
 काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइं-  
 द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख  
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यच पंचेंद्रिय ॥ चउदे  
 लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,  
 माहारे जीवें जे कोइ जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणतां  
 प्रत्ये जलो जाण्यो होय, ते सबेहुं मन वचन कायामें करी मिच्चा  
 मि डुक्कं ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥  
मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया  
॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२  
॥ अज्ञाख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥  
परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द  
॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय,  
सेवता प्रत्ये जलां जाण्यां होय, ते सबे हुं मनें, वचनें, कायार्ये  
की तस्स मिच्छा मि उक्कमं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव  
करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा  
नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, ज्ञात  
कथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं  
होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायार्ये करके, दि  
वस अतिचार आलोयणे कर के पम्क्कमणामे आलोउं ॥ तस्स  
मिच्छा मि उक्कमं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रजातके पम्क्कमणेमें  
दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ पीठे सबस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां  
इच्छाकाण ॥ जण ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रा-  
यचित्त मागे ॥ गुरु कहे पम्क्कमह ॥ पीठे इच्छं तस्स मिच्छामि  
उक्कमं कह के संमासा प्रमार्जन कर के आसन पर बैठे के जि-  
मणा गोमा उंचा रख के मावा गोमा नीचे कर के ऐसें कहे कि  
जगवन्! सूत्र जणुं? तव गुरु कहे जणेह ॥ पीठे इच्छं कहि के तीन  
नवकार अरु तीन वार करेमि जंते ॥ जण के इच्छामि पम्क्क  
मिच्छं जो मे राइउं इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे, सो लिखते हैं ॥ पीठें खमा हो कें अष्टुडि  
नुमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सब सिद्धे, धम्मायरिए अ सबसाहू अ ॥ इच्छामि  
पम्भिकमिजं, सावगधम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,  
नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे  
तं च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे  
अ आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पम्भिकमे देवसियं सबं ॥ ३ ॥  
जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण  
व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं-  
कमणे अणाज्जेगे ॥ अज्जिज्जेगे अ निज्जेगे, पम्भिकमे ॥ ५ ॥ संका  
कंख विगिंछा, पसंस तह संअवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,  
पम्भिकमे ॥ ६ ॥ उक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा  
॥ अत्तठाय परठा, उज्जयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव-  
याणं, गुणवयाणं च तिएह मइयारे ॥ सिक्काणं च चउएहं, पम्भिक-  
मे ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, भूलग पाणाइवाय विरईउ ॥  
आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध उविच्छेए,  
अइ जारे जत्त पाण उच्छेए ॥ पढमं वयस्स इआरे, पम्भिकमे ॥  
१० ॥ बीए अणुवयंमि, परिशुलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आया-  
रिअमप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे,  
मोसुवएसे अ कूमलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पम्भिकमे ॥  
१२ ॥ तइए अणुवयंमि, भूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ  
मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहमप्पज्जेगे, तप्पमिरूवे  
विरुद्ध गमणे अ ॥ कूमतुल कूममाणे, पम्भिकमे ॥ १४ ॥ चउत्ते  
अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ  
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तरं, अणंग वीवाह तिव्व

अगुरागे ॥ चनठ वयस्स इआरे, पम्किमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए  
 पं, चमंमि आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्त पमायप्पसं  
 गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्तू, रूप सुवत्ते अ कुविअ परि-  
 माणे ॥ दुपए चनप्पयंमि, पम्किमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-  
 माणे, दिसासु नटं अहेअ तिरिअं च ॥ वुम्भिसइअंतरद्वा, पढमंमि  
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ  
 गंधमल्ले अ ॥ उवज्जोग परिज्जोगे, वीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते  
 पम्बिदे ॥ अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुत्तोसहि ज्ञस्सकणया,  
 पम्किमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी, ज्ञामा फोमी सुवज्जाए  
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥  
 एवं खु जंतपिल्लणं, कम्मं निल्लंठणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाव  
 सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्तग्गि मसल जंतग, तण  
 कंठे मंत मूल ज्ञेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पम्किमे० ॥ २४ ॥  
 न्हाणू वट्टण वन्नग, विलेवणे सदरूव रसगंधे ॥ वत्तासण आजरणे,  
 पम्किमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुकुइए, मोहरि अहिगरण जोग अइ-  
 रिच्छे ॥ दंमंमि अणठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे  
 दुप्पणिहाणे, अणवठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए,  
 पढमे सिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ  
 पुग्गलखेवे ॥ देसावणा सियंमि, वीए सिस्कावए निंदे ॥ २८ ॥  
 संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव ज्ञोयणाज्जोए ॥ पौसह विहि  
 विवरीए, तइए सिस्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्सिवणे, पि-  
 हिणे ववएस मच्चरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चनठे सिस्कावए  
 निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सअ डुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा  
 ॥ राणेशव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु  
 संविज्जागो, न कल्ल तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,



तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ  
 आसंस पन्ने ॥ पंचविहो अइआरो, मा मद्य हुज्ज मरणंते ॥३३॥  
 काएण काइअस्स, पम्किमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसि-  
 अस्स, सबस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्काणा,  
 रवेसु सन्ना कसायं दंसेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो  
 अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्महिठि जीवो, जइ विहुपावं समायेरे  
 किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥  
 तं पिहुसपम्किमणं, सप्परिआवं सन्नत्तरणुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ,  
 वाहिब सुप्पिस्सिन्न विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंत मल  
 विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥  
 एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्झिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो,  
 खिप्पं हणइ सुसावन्न ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ  
 निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुन्न, उहरिअ जुरुव जारवहो  
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावन्न जइवि बहुरन्न होइ ॥  
 डुक्काण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलो-  
 अणा बहुविहा, नयसंजरिआ पम्किमणकाले ॥ मूल गुण उत्तर-  
 गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि  
 पन्नत्तस्स ॥ अप्पुठिन्नमि आरा, हणाए विरन्नमि विराहणाए ॥  
 तिविहेण पम्किंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति  
 चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय  
 पाव पणासणीइ, जवसयसहस्स महणाए ॥ चउवीस जिण वि-  
 णिग्गय कहाइं, वोळंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता,  
 सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्महिठि देवा, दिंतु समाहिं च  
 बोहिं च ॥ ४७ ॥ पम्पिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पम्कि-  
 मणे ॥ असदहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ स्वा-  
 मेमि सब जीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सब नूएसु, वेरं



मङ्गलं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुग्-  
 ठिअं सम्मं ॥ तिविहेण पम्किंको, वंदामि जिणे चनवीसं ॥ ५०  
 ॥ इति ॥ ५ए ॥ इहां प्रज्ञातके पम्किमणमें देवसिके ठीकाने राइयं  
 कहना ॥

॥ पीठें दो वादणां देकर अवग्रहमांदिअकाज कहे ॥ इच्छा-  
 का० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ अप्पुठ्ठिमि अप्पिंतर ॥ राइयं स्वामेमि ?  
 गुरु कहे स्वामेह ॥ संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, बे  
 बांइ पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ  
 गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो अको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
 संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्पुठ्ठि ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सइ जगवन् अप्पुठ्ठिमि अप्पिंतर देव-  
 सिन्धु स्वामेत्तं ॥ इत्तं स्वामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं जत्ते  
 पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणें ॥ समासणें अंतर  
 ज्ञासाए उवरिज्ञासाए ॥ जं किंचि ॥ मङ्गविणय परिहीणं सुहु-  
 मंवा वायरं वा ॥ तुप्पे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि  
 डुक्कमं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि डुक्कमं कहे. पीठें बे वादणां देई  
 जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसैं अवग्रह बाहिर आय केँ आय-  
 रिय उवज्जाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्जाए ॥

॥ आयरिअ उवज्जाए, सीसे साहमीए कुलगणै अ ॥ जे  
 मे कया कसाया, सवे तिविहेण स्वामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण  
 संघस्स, जगवत्तं अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं स्वमावइत्ता, स्वमामि  
 सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीवरासिस्स, ज्ञावत्तं धम्मो निहिअ  
 निअ चित्तो ॥ सव्वं स्वमावइत्ता, स्वमामि सवस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीठें करेमि जंतें इहामि ठामि कानुस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥  
 श्रीमहावीर स्वामी ठमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि कानु-  
 स्सग्गं अन्नबू० ॥ कहि कें कानुस्सग्ग करे, कानुस्सग्गमें श्रीवीर-  
 कृत बम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा ठ  
 लोगस्सका कानुस्सग्ग करे, कानुस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह  
 ॥ मुहपत्ती पमिलेही बे वांङ्गणां देई सकल तीर्थनाम छः नम-  
 स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्वग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सङ्गत्तया देवलोके रविशशिज्जवने, व्यंतराणां निकाये,  
 नक्कत्राणां निवासे ग्रहणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्न-  
 गेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थिकराणां प्रतिदि-  
 वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे  
 कुंभले हस्तिदंते, वस्कारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥  
 शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥  
 श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके  
 वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सहाद्रौ वैजयंते विमल-  
 गिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षि-  
 तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे  
 विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च ज्ञोटे ॥ श्री०  
 ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिण्डले वा,  
 नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले  
 कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥  
 अंगे वंगे कर्लिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरंगे  
 वरतरद्रविमे उद्रियाणे च पौमे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविमकवलये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमधु-  
 रापत्तने चोङ्गयिन्यां, कौशंब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां  
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे नदिते ताम्रलिप्त्यां ॥  
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे,  
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने नूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये  
 वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री-  
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाळमलौ जंबुवृक्षे, चौङ्गान्ये चैत्यनंदे  
 रतिकररुचके कौमले मानुपांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ  
 व्यंतरे स्वर्गलाके, ज्योतिर्लोके नवंति त्रिजुवनवलये यानि चैत्या-  
 लयानि” ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः,  
 प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं नक्तिज्ञाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-  
 तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः  
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥  
 इति ॥ ३२ ॥

पीठे गुरुमुखे पञ्चस्काण करि कै ॥ इच्छामोनि सद्धियं कहि  
 कै गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीठेणमो खमासमणाणं एमोऽईत्तिद्धा ॥ कह कर.  
 परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, नवसागर वारि तरण वरतरणिं  
 ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार  
 विहारकारि, दुरन्तजावारिणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा  
 वो, नवाबहं मोहजनं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ,  
 संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-  
 रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलनरलोचनालीढलोला-  
 लिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलनविकारागार

विष्णुत्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥  
३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥  
माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-  
वावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥  
संपूरितान्निनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि  
तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूरान्निरामं, जीवाहिंसा-  
विरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,  
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल  
परिमला लीढलोलालिमाला, ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागार-  
ज्यूमीनिवासे ॥ गाथासंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहारान्निरामे, वा-  
णीसंदोहदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा ज्ञानी, शक्रस्तव कहे. पीठें स्वप्ना हो  
कर अरिहंत चेइयाणं करेमि कानुस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआएण अन्नबूण  
॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ कानुस्सग्गमाहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक  
प्रथम कानुस्सग्ग पारी नमोऽर्हस्सिद्धाए कही ॥ एक गाथा स्तुति  
कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम,  
नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंठण सेवित, पञ्चमावड धरणिंद ॥  
प्रह ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक  
जण कहे ॥ दूसरे सब कानुस्सग्गमाहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीठें  
णमो अरिहंताणं कहि कें कानुस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगे पण  
जाणणां ॥ पीठें लोगस्स कहे ॥ सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंदण-

वन्ति० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहि कैं ॥ एक नवकारका कान्जस्तग्ग करी पारि कैं दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयद्धइ, कणयाचल अन्निराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंमल सुखगाम ॥ नुवणोसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पुरो मुऊ मन काम ॥ १ ॥

॥ पीठैं पुरकरवदीवद्धे कहि कैं सुयस्स जगवन्तं वंदणं अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका कान्जस्तग्ग पारि कैं ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, वार जपंग ठ ठेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउत्तेद ॥ जिन आगम पमुद्रव्य, सत्त पदारथ जुत्त ॥ सान्जलि सईहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठैं सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ कह कैं वेयावच्चगराणं ॥ अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका कान्जस्तग्ग करी पारि कैं एमो-उईत्तिद्धाणं कह कैं चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पउमावई देवी, पार्थ यद्ध परतद्ध ॥ सहु संघनां संकट, दूर करेवा दद्ध ॥ समरो जिनज्जत्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्त कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीठैं नीचा वैठ कैं एमोन्नूणं कहि कैं ॥ तीन खमा-समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांटे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो दाथ नीचो करि, मुखें मुद्धपत्तो देई अट्ठाइजेसु कहे हैं, सो लिखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अट्ठाइजेसु ॥

॥ अट्ठाइजेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मज्जमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुत्तपग्निग्गदधारा पंचमद्वयधारा ॥ अट्ठारसहस्स सोलंगधारा ॥ अक्कवावारचरित्ता ॥ ते सव्वे सिरसा मणसा मज्जएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता हुवे तो स्वमासमण  
तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं  
जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय  
जय करुणा शांत दांत, जवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद  
चंद्र, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-  
जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥  
त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करुं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-  
चिनाम तिष्ठं ॥ नमोऽब्रूणं जावंति चेद्वा जावंत केवि साहू ॥  
॥ उर एमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुज्यः ॥ तक कहि के  
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग बालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥  
परम पुरुष परमेशरू, आत्म परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥  
केवल ज्ञान दिवाकरू, ज्ञांगे सादि अनंत लाल रे ॥ ज्ञासक लो-  
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र  
चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोरू लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,  
अणहंता इक कोरू लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर  
चसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-  
शरो, जब जब देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उद्धारण  
गो तुम्हें, दूर हरो जब दुःख लाल रे ॥ कहे जिनदर्ष मया करी,  
देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ पीठें जयवीराराय० वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नब्रू० कहि

कैं ॥ एक नवकारका कानस्सग्ग करे ॥ पारि कैं नमोऽर्हत्सिद्धा०  
कही ॥ एक शुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंरुणं पुस्ससोवन्न देहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥  
महाणंदलच्छी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तिष्ठरायं ॥ १ ॥ इम  
हीज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाजि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय  
प्रथम जिणंद चंद, जव दुःख विहंरुण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद,  
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषज्ज जिणोसर ॥  
अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुज पद पंकज  
प्रीति धर, निशिदिन नमत कट्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिष्ठं०  
॥ एमोत्तुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ एमो-  
ऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः तक कहि कैं श्री सिद्धाचल-  
जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेव्यां रे ॥ धन्य जाग्य हमारां ॥ विम-  
लाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोठो, कहेतां न आवे  
पारा ॥ रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध०  
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट  
द्रव्यसें पूजो जावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर  
देशथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धरण  
विरुद्ध तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ जाव  
जक्तिसें प्रज्जू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि  
जविजन शुज्ज जावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥  
संवत अठारे ज्यासी मास आपाढे, वदि आठम जेमवारा ॥



प्रभुके चरण परतापसिंहमें, कुमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५॥

॥ पीठें जयवीरराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नबू० ॥ कहिकें  
एक नवकारकाकाउस्सग करी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्ध० ॥ कहि कें॥

॥ शेषजगिरि नमियें, रुषजदेव पुंमरीक ॥ शुभ तपनो  
महिमा, सुणि गुरु मुख निरबीक ॥ शुद्ध मन उपवासैं, विधिगुं  
चैत्यवंदनीक ॥ करियें जिन आगत, टाली वचन अलीक ॥ ? ॥  
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पमिलेहण करे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ स्वमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ पमि-  
लेहण संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे स्वमासमणें ॥  
॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥  
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ इमहीज दोइ स्वमासमणे  
अंग पमिलेहण संदिस्सानं ॥ अंगपमिलेहण करुं, कहीके धोतियुं  
कणदोरो पमिलेहि कें ॥ स्वमासमण देई इच्छाकार जगवन् पसान  
करी पमिलेहण पमिलेहावो जी, एम कही ॥ आपनाचार्य  
पमिलेह रखे, अने जो गुर्वादिक आपनाचार्य पमिलेहे, तो  
पण स्वमासमण देई आग्या मागे, पीठें स्वमासमण देई  
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह  
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहि ॥ दोय स्वमासमणें ॥ इ-  
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पमिलेहण संदिस्सानं ॥ उही पमि-  
लेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पमिलेहे ॥ पीठें पोषध-  
शाला प्रमार्जी काजो, विधिगुं परठवी स्वमासमण देई इरियावही  
पमिकमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोप्पनी  
दृष्टिपमिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अवप्पनी प्राये एही करते दि-  
खते हैं ॥



॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायबो, पीठें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आचारो न मोत्तबो ॥ पीठें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊजो अको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी ॥ जयवं दससज्जदो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दससज्जदो ॥

॥ जयवंदससज्जदो, सुदंसणो थूलिज्जद वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया ज्ञावा ॥ फासु अदाणे निज्जार, अज्जिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ उज्जमज्जो मूढमणो, कित्ति य मित्तं पि संज्जरइ जीवो ॥ जं च न संज्जरामि अहं, मिच्छामि उक्कमं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चित्ति य, मसुहं वायाइ ज्ञासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिच्छामि उक्कमं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधबो, सेसो संसार फलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधे लीधुं विधे कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिच्छामि उक्कमं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कै, पीठें पमिलेहण करे, इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूठै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें ऐसे कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिठले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पन्डिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपन्डिलेहण करे ॥ पीठें गुरु आगें अथवा आपनाचार्यजी आगें आवी जूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पन्डिलेहुं ? गुरु कहे पन्डिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पन्डिलेहे ॥ पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक संदिस्तानं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक ठानं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत अई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार जगवन् ! पसानु करी सामायिक दंरुक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें सामाझ्यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ इरियावहियं पन्डिकमामि ? गुरु कहे पन्डिकमेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ इच्छामि पन्डिकमिजं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसैं इरियावहियं पन्डिकमी ॥ एक लोगस्सका कानस्सग करी, एमो अरिहंताणं कही, कानस्सग पारी मुखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पन्डिलेहि वांदणां देई कहे. इच्छाकार जगवन् ! पसानु करी पच्चस्काण करावोजी. पीठें गुरु, दिवस चरिम पच्चस्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावें आपनाचार्य समक्षें अथवा स्वमुखें, अथवा वेमरा साधमीं मुखें पच्चस्के ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पन्डिलेहि पच्चस्काण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चनविहार उपवास हुवे, तो पच्चस्काण करवुं ठे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नाहिं पन्डिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीठें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ॐ ॥ सिद्धाय संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही  
 वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॐ ॥ सिद्धाय करुं ?  
 गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ उज्जो अको  
 मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठें खमासमण देई  
 ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॐ ॥ बेसणुं संदिस्तानं ? गुरु० संदिस्तावेह  
 ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ॐ ॥ बेसणुं ठाठं ?  
 गुरु कहे, ठाएह ॥ पीठें इच्छं कही जो शीत काळादि हुवे तों  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॐ ॥ पांगरणुं संदिस्तानं ?  
 गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥  
 ॐ ॥ पांगरणुं पन्निघानं ? गुरु कहे पन्निघाएह ॥ पीठें इच्छं  
 कही शुद्ध ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पन्निक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॐ ॥  
 चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इच्छं कही ॥ जय तिहुअण कहे  
 ॥ जिसमें परकी तथा चउमासी तथा संवत्तरीके रोज तीस गाथा  
 कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा  
 पिठामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं.  
 अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धनं तरि, जय  
 तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविदं-  
 धियाण च्चुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंनणय  
 पुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंति ऊत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धम्म सुवन्न  
 हिरण्ण पुण्ण जणजुंजहिरज्जहि ॥ पिरकहिं मुक्क असंखसुक्क तुह  
 पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहिं कुण महजिण ॥  
 २ ॥ जरजज्जर परिजुस्स वस्सणहुठ सुकुट्ठिण, चक्कुस्कीणखण्णखुस्स

निरसद्विअसूत्रिण ॥ तह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणसव,  
 जय धसंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो नव ॥ ३ ॥ विजाजोइस  
 मंततंतसिद्धि अपयचिण, जुवणजुअ अठविह सिद्धि सिद्धि तुह  
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तनवि जण होइ पवित्तन, तं ति-  
 हुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तन ॥ ४ ॥ खुद पवत्तइ मंत  
 तंत जंताइं विसुत्तइ, चरधिरगरलगहुगखग्गरिनुवग्गविगंजइ ॥  
 डुब्बियसत्त अणत्त घत्त निष्कारइ दय करि, डुरिअई हरन सुपासदेव  
 डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाअंजेइ जीमदप्पुहर सुरवर,  
 रक्कस जक्क फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरुदखुद  
 पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ  
 ॥ ६ ॥ पब्बिअ अत्त अणत्तहित्तज्जत्तिप्रर निप्रर, रोमंचं चिअचारु-  
 काय किस्सरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल परकांलिअ  
 कलिमलु, सो जुवणत्तयसामि पास महमदन रिनुवलु ॥ ७ ॥ जय  
 जोइअमणकमलजसलजय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद  
 जुवणत्तयदिणवर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतुपिआमह,  
 अंजणयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहु विहवणुअवणु  
 सुणु वसिन् उपसहि, मुक्कधम्मुकामत्तकाम नर नियनियसत्तहि ॥  
 जं जायइ बहु दरिणत्त बहु नाम पसिद्धन, सो जोइ अमण  
 कमलजसलसुह पास पवद्ध ॥ ९ ॥ जयविअल रणऊणिरदसण  
 अरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसणुसुणुगगिरगिरकरुणय ॥  
 तइंसइसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविज्जविसज्जसइ पास  
 जय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइपासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय,  
 वाहपवाहपवूढरूढ डुहदाहसुपुलइय ॥ मणूहिंमणसज्जण पुसअ-  
 प्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचंद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥  
 तुह कल्लाणमहेसुघंटंकारवपिद्धिअ, वल्लरमल्लमहल्लजत्तिसुरवरगं-  
 जुद्धिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति नवणेहिमदूसव, इय तिहुअण

आणंदचंद जय पाससुहुप्रव ॥ १२ ॥ निम्मले केवल किरणनियं-  
 रविदुरिअ तमपहयर, दंसिअ सबलषयठविठरिअ पहाअर ॥ क-  
 लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर  
 पासनाह नुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त  
 माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमठबोह कंदलदलइरेणि ॥ जायइ-  
 फलअरअरिय हरिय डुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह  
 दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवद्धिअधूरि-  
 यडुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डुग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जंतुह-  
 जणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयन पास जय  
 जंतु पिआमह ॥ १५ ॥ नूवणारसनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,  
 जोइणिपूअणखित्तवाल खुदासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ  
 अविंसंठुलचिठहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं  
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी  
 कंदलदलतमाल निल्लुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संस-  
 ग्गअगंजिअ, जय पच्चरक्कजिणेस पास अंनणय पुरठिअ ॥ १७ ॥  
 मंहमणतरलपमाणनेय वायाविविसंठुल, नियतणुरवि अविणयसहाव  
 आलसविहिलंधलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुसपवत्तन, इयम-  
 इमाअवहीरपासपालहिविलवंतन ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिण्णेयकलु-  
 णुकिंकिंवनजंपिन, किं वनचिठिअकिठेदेवदीणयमविलंबिन ॥ का-  
 सुनकियनिप्पल्ललल्लुअहेहिंडुहत्तइं, तहविन पत्तनताण किंपि पइं  
 पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय वप्प तुहुं  
 मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु  
 ॥ इउं डुहअरअरिअवरान रानलनिअग्गन, लीणन तुह कमक-  
 मल सरणजिणपालहि चंगन ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोय-  
 लोयकिविपावियसुहसय, किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसि-  
 वपय ॥ किवि गंजिअरिनवग्गकेविजसघवल्लिअ नूअल, मइं अवही-

रहिकेणपास सरणागयवञ्चल ॥ २१ ॥ पञ्चुवयारनिरीहनाहनिपंसा  
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम,  
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुगगनविमइं पासनिरं-  
 जण ॥ २२ ॥ हनं बहुविहउहतत्तगत्तुहुं उहनासणपरु, हनं  
 सुयणहकरुणिकगण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हनंजिण पासअसामि-  
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन  
 सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विजागनाहनहुजोअणतुहसम, जव-  
 णुवयारसु दावजाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंण नएइ  
 नुविदाहुसमंतन, इय उहबंधव पासनाह मइं पाळ शुणंतन ॥  
 २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अणविकिविजुगय, जं जोइयनव-  
 याऊकरइनवयारसमुजाय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिण-  
 चत्तन, तो जुगगनअहमेव पासपाळहिमइं चंगन ॥ २५ ॥ अहअ-  
 णविकिजुगयविसेसकिविमणहि दीणह, जं पासविनवयाऊकरइ  
 तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कट्ठाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह,  
 किं अणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पण्ण नहु  
 होइ विहल जिणजाणन किं पुण, हनं डुरिक्कन निरुसत्तचत्तुक्कहु  
 नस्सुयमण ॥ तं मण्ण निमिसेण एण एणविज्जइ लप्पइ, सच्चं जं  
 नुस्सियवसेण किं नंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह  
 मइं अप्पपयासिन, किज्जन जं नियरूवसरिसुनमुणुंवहुं जंपिन ॥  
 अणु ए जिणजगतुहसमोविदस्सिहादयासन, जइअवगिणसि  
 तुंहिजअहहकिंहोइसहयासन ॥ २८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ  
 पाइणवेळंविन, तनजाणुंजिणपास तुम्ह हनंअंगीकरिअन ॥ इयम-  
 हअण्णिअ जं न होइ सातुहणहावण, रक्कंतह नियकित्तिणो य जु-  
 ज्जइअवहीरण ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसन, जं  
 अणत्तिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धन ॥ इय मइं पसि-  
 यसुपासनाहअंनणयपुरविअ, इय मुणिवरसिरि अजयदेव विस्सवइ



आणिदित्र ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंजनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्त-  
वनम् ॥

पीठे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाज्ञाग जय चिंतिय  
सुह फलय ॥ जय समष्ट परमठजाणय, जय जय गुरु गिरिम  
गुरु ॥ जय डुहत्त सत्ताण ताणय, अंजणयठिय पासजिण ॥ ज-  
वियह ज्जीम जववु, जव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्जत्ति संज  
नमोवु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठे शक्रस्तव कह के खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं०  
॥ करेमि कानुस्सगं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नवू० ॥ इत्यादि पाठ  
कह के कानुस्सगमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक कानु-  
स्सग पारी नमोऽर्हत्तुसिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो  
लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ  
नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंठन, सात हाथ तनु  
मान ॥ दिनदिन मुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब कानु-  
स्सगमें रहे अके सुने. पीठे एमो अरिहंताणं कह के कानुस्सग  
पारे. इसीतरें आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीठे लोगस्त कह कर सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंद-  
णवत्ति० ॥ अन्नवू० ॥ कहि के एक नवकारका कानुस्सग करे.  
पारि के उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित जर  
पूरण, अजिनव सुरतरु कंद ॥ जवियणने तारे, प्रवहण सम नि-

शिदीस ॥ चौबीसो जिनवर, प्रणमं विशवा वीस ॥ यह दूसरी  
गाथा कहि कै कानुस्सग पारे. पीवै पुस्करवरदी० वंदणवत्तिआए०  
अन्नबू० कहि कै, एक नवकारका कानुस्सग कर कै, पारि कै उक्त  
स्तुतिको तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथे करि आगम, ज्ञाख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने  
गूण्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न  
शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥  
यह गाथा कहि कै सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नबू० ॥  
कही कानुस्सग पारी उक्त स्तुतिकी चौथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विधन विशेष ॥ सहु संकट घूरे,  
पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोसी, सेवे सुर नर इंद्र ॥ जंपे  
गुण गण इम, श्रीजिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन  
स्तुतिः ॥ यह चौथी स्तुति कहिके बैठ कै नमोबूणं कहे, पीवै एक  
खमासमण देई कै श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. प वैं  
श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्त्तमान आ-  
चार्यजीका नाम ले कै मिश्र चौथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र  
इसो तरें कह कर गोमालीयें बैठ कै मस्तक नमावी सबस्सवि  
देवसिय० इत्यादि कह कर तस्त मिच्छामि उक्कमं कहे, परंतु 'इ-  
च्छाकारेण संदिस्सह इत्तं' ए पद न कहे ॥

॥ पीवैं खमे हो कर करेमि जंतो सामाइयं० ॥ इच्छामि ठामि  
कानुस्सगं जो मे देवसिनु० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि  
कहि कै, आठ नवकारका कानुस्सग करे, कानुस्सगमाहे आजू ता  
चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, एमो अरिहंताणं कही  
कानुस्सग पारि कै प्रगट लोगस्स कहे ॥



॥ पीठें संभासा प्रमार्जित पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेदेह. पीठें मुहपत्ती पमिलेहि कें वांदणां देवे. पीठें अवग्रहमांहिज नन्नो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोचनं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीठें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अतिचार आलोवे. पीठें सबस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांमोने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पमिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि डुक्कमं कहि कें संभासा प्रमार्जित प्रमार्जित जूमियें आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं एसा कहे. तब गुरु कहे जणेह. पीठें इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंतें जणोने इच्छामि पमिक्कमिजं जो मे देवसिज इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीठें खमा हो कर अप्पुठ्ठिमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांहिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्पुठ्ठिमि अप्पिंतर देवसियं खामेजं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीठें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयसिय नवव्याय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि जंतें सामाज्यं इच्छामि गामि कानस्सगं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि कानस्सगं अन्नहू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका कानस्सग करी पारि कें पीठें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं ॥ वंदणवत्ति० अन्नहू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका कानस्सग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुक्कवरदीवहे कहि कें सुयस्स जगवन् ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नहू०

॥ कहि कैं एक लोःस्तका कानुस्तग करे, पीठैं पारि कैं सिद्धाणं  
बुद्धाणं० कहि कैं वेधावच्चगराणं न कहे, पीठैं सुयदेवयाए  
करेमि कानुस्तगं अन्नबू० ॥ कही एक नवकारनो कानुस्तग करे,  
पीठैं गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक कानुस्तग पारिकैं एमो  
अर्हत्सिद्धा० कहि कैं श्रुत देवताकी स्तुति कहे, गुरु हुवे तो गुरु  
कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कैं कानुस्तग पारे, अब श्रुतदे  
वताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोन्नवा ॥ श्रुतदेवी  
सदा सदा, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीठैं खित्तदेवयाए, करेमि  
कानुस्तगं० ॥ अन्नबू० ॥ कहि कैं, एक नवकार चिंतवी पूर्ववी  
परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाङ्गां  
साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीठैं खमा हुवा एक नवकार कही, संमासा प्रसार्जि  
उकमूवैठ कैं ठेठे आवश्यककी मुहपत्ती पम्ल्लेहुं? गुरु कहे पम्ल्लेदेह.

॥ पीठैं मुहपत्ती पम्ल्लेही विधिगुं दो वांदणां देइ उं वर-  
कनक कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ उं वरकणय संख विद्रुम, मरणय घण सन्निहं विणय  
मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सबामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥  
उं नवणवय वाण मंतर, जोइसबासविमाण वालीय ॥ जे केवि  
उठदेवा, ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ २ ॥ पञ्चरक्काण नहिं लिया  
होय तो करे ॥ सामायिक चोइसगो पम्कमणां, वांदणां, काष्ठ-

स्सग, पञ्चस्काण, ठ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, उंगो अ  
धिको अकर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायार्थ  
करी मिच्छामि दुक्कमं ॥ इच्छामो अणुसद्धिं० ॥ कही बैठे, पीठें गुरु  
एक स्तुति कह्या पीठें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें एमो  
खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सिद्धाण ॥ कही ॥ एमोऽस्तु वर्द्धमानायण  
इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका एमो खमासमणाणं, कही सं-  
सारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा.  
समोक्ताय, परोक्ताय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या,  
ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं  
संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, क-  
रोतयो जैनमुखांबुदोजतः ॥ स शुक्रमासोजववृष्टि सान्निजो, ददातु  
तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरजिगंधा लोढनृङ्गकुश्लं,  
मुखशशिनमजस्रं विव्रती या विव्रति ॥ विकच कमलमूचैः साऽ  
स्त्वर्चित्यप्रज्ञावा, सकलमुखविधात्री प्राणज्जाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ तति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीठें एमोऽणुं० कहि कें एक  
श्रावक खमासमण देई कहे:-इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन  
जणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्त-  
वनजणुं स्तवन सांजलुं ? गुरु कहे, जणेह सांजलेह. पीठें आसन  
पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें वमो स्तवन कहे, सो लि-  
खते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ जविका श्रीजिनविंव जुहारो, आतम परम आधारो रे  
॥ ज० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

काई ॥ आगम वाणाने अनुसरें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज०  
 श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणें, ते कहियें किम जाणें  
 ॥ झूला तेह अज्ञानें जरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिठाणें रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबरु आवक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक  
 ॥ विविधपरें जिन जगति करंता, पाम्बा धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगतें जोतां, होय निश्चय उष-  
 गार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, ठे बहु जलधि  
 मऊार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्बा विरतिप्रकार रे ॥  
 ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचजा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें  
 अधिकार ॥ सूरियाज सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मऊार  
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या  
 जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोमी, करिये केम अकाज रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन  
 पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, ठेहे ज्ञाता अंगें रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी  
 चित्त पिर राखी ॥ द्रव्य जाव बिहुं जेदें कीनी, जीवाजिगम ते  
 साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें,  
 कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम  
 घखो छिन्न धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रजु  
 पास पसार्यें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनदाज सुगुरु उपदेशें,  
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंता-  
 मणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीवें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांढी,  
 अट्ठाइजेसु कहनां, फेर खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥

देवसि पाय छित्त विगुहि निमित्तं कानुस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेइ. पीठें इत्थं कहि कै देवसि पाय छित्त विगुहि निमित्तं करेमि कानु-  
स्सग्गं अन्नबू ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कानु-  
स्सग्ग करे, पारी कै लोगस्स कहे.

॥ पीठें खमासमण दे कर इत्थाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-  
डोवइव उदावणत्तं करेमि कानुस्सग्गं ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहो.  
शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कानुस्सग्ग करे, पारि कै  
प्रगट लोगस्स कहे. पीठें खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्सानं फेर  
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीठें खमा-  
समण देई कै ॥ इत्था० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥  
ऐसा कह कर अंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीशंभुनाथ पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीलेटीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-  
न्नयदेवसूरिबिबुधाधीशैः सन्धारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव  
फलं स्फूर्जत्फलापल्लवः, पार्श्वः कटपतरुः समे प्रश्रयतां नित्यं मनो-  
वाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥  
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठें नमोवृणंसे लेकें जयवीरराय सुधी कहे ॥ पीठें  
खमासमणपूर्वक मस्तक नमानी 'सिरि अंजणायद्विय पास सामिणो०'  
इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीशंभुनाथद्वियपाससामिणो ॥

॥ श्री अंजणायद्वियपाससामिणो सेस तिष्ठसामीणं ॥ तिष्ठ  
समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सधेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्तं,  
कानुस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ जतीए गुण सुद्वियस्स, संघस्स समुन्नय  
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीप्रंजना पार्थनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि कानु-  
स्सग्गे ॥ पीठें खमे हो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोम-  
स्सका कानुस्सग्ग करि कें पीठें पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥  
श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगम युगप्रधान जट्टारक दादाजी श्री  
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि  
कानुस्सग्गं ॥ अन्नवू० कहि कें, एक लोगस्सका कानुस्सग्ग करे,  
पीठें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान जट्टारक दा-  
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणिजी आराधवा निमित्तं  
करेमि कानुस्सग्गं ॥ अन्नवू० कहि कें एक लोगस्सका कानुस्सग्ग  
करे. पीठें प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें मावो गोमो नंचो करि कें  
खमासमण देई कें, इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी.  
ऐसे कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पम्पिस्सूरण, डुक्कय मयण बाण मुसुमूरण  
॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिण, जयण पास नुवणत्तय सामिण  
॥ १ ॥ जसु तणु कंति करुप्पसिणिक्कण, सोहइ फणमणि किरणा  
लिद्धण ॥ नंनव जलहर तम्पिस्सय लंठिय, सो जिणु पासु पयस्सय  
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-  
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-  
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं  
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीठें नमुबूणसैं ले कें जयवीराराय पर्थत कहि के पस्की,  
चउम्मासी अरु संवत्तरीके रोज तो बनी शांति सुणे, परंतु और

देवसि पाय छित्त विगुदि निमित्तं कानुस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेइ.  
पीठें इच्चं कहि कें देवसि पाय छित्त विगुदि निमित्तं करेमि कानु-  
स्सग्गं अन्नबू ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कानु-  
स्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे.

॥ पीठें खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-  
झोवद्वय उपावणत्तं करेमि कानुस्सग्गं ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहो.  
शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कानुस्सग्ग करे, पारि कें  
प्रगट लोगस्स कहे. पीठें खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्सानं फेर  
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीठें खमा-  
समण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥  
ऐसा कह कर थंजणा पार्थनायजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्थनायजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीलेडीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-  
जयदेवसूरिविष्णुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव  
फलं स्फूर्जत्फलापल्लवः, पार्थः कटपतरुः समे प्रणयतां नित्यं मनो-  
वाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावद्धो शिरोमणिः ॥  
पार्थनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठें नमोऽनुत्तमै लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीठें  
खमासमणपूर्वक मस्तक नम्रावी 'सिरि थंजणयडिय पास सामिणो०'  
इत्यादि दोय नाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयडियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंजणयडियपाससामिणो सेस तिठसामीणं ॥ तिठ  
समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सधेलें ॥ १ ॥ एस महं सरणत्तं,  
कानुस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ जतीए गुण सुद्धिस्स, संघस्स समुन्नय  
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥



॥ श्रीधनंजया पार्थनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि कान-  
स्सगं ॥ पीठे खेमे हो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोम-  
स्सका कानस्सग करि के पीठे पारी प्रगट लोगस्स कही के ॥  
श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगम युगप्रधान जट्टारक दादाजी श्री  
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि  
कानस्सगं ॥ अन्नबू० कहि के, एक लोगस्सका कानस्सग करे,  
पीठे प्रगट लोगस्स कह के

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगमयुग प्रधान जट्टारक दा-  
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्तं  
करेमि कानस्सगं ॥ अन्नबू० कहि के एक लोगस्सका कानस्सग  
करे, पीठे प्रगट लोगस्स कहि बैठ के मावो गोमो उंचो करि के  
खमासमण देई के, इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं जी.  
ऐसे कहि के चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पम्पिद्धूरण, डुक्कय मयण बाण मुसुमूरण  
॥ सरस पिंयंगु वन्नु गय गामिण, जयण पास जुवणत्तय सामिण  
॥ १ ॥ जसु तणु कंति करुप्पसिणिद्धन, सोहइ फणमणि किरणा  
लिद्धन ॥ नंनव जलहर तम्पिद्धय लंठिय, सो जिणु पासु पयञ्चय  
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-  
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-  
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं  
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीठे नमुबूणसें ले के जयवीराराय पर्यंत कहि के परकी,  
चउम्मासी अरु संवछरीके रोज तो बनी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः  
शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितव-  
चसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,  
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्ति-  
समन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय  
॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ नृवन-  
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघना-  
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकि-  
नीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-  
कृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम्  
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥  
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि  
च संघस्य, जद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु-  
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ ज्ञानानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि !  
सत्त्वानाम् ॥ अज्ञय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥  
९ ॥ ज्ञानां जन्तूनां, शुभावेहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-  
ष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां,  
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रोसंपत्कोर्त्ति यशो, वर्द्धिनि !  
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सखिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज  
रोगरणजघतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२  
॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदैति ॥ तुष्टिं  
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जग-  
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरु कुरु जनानाम् ॥

उ मेति नमो नमो ह्राँ, ह्रीं ह्रूं हः यः कः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,  
नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-  
विदर्शितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिजय विनाशी, शांत्यादिकरश्च  
जक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा  
यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥  
उपसर्गाः क्वयं यांति, विद्यंते विघ्नवह्नयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,  
पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण  
कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीठें चीराकका अथवा बीजलीका चांदणा पसा होय तो  
इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नबू० कहि कै, एक लोगस्सका कानु-  
स्सग्ग करे, पं.ठें प्रगट लोगस्स कहो पूर्वलो परें सामायिक पारे,  
पीठें एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसो पक्कमण  
विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥  
कमले स्थिता जगवता, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-  
दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु ज्ञुवनदेवी,  
शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः  
साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनी ॥  
३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंभान्निधं  
पार्श्वे, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवन्दनस्तुतिलिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ संकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरज्जानुः,  
कल्पवृक्षोपमानः ॥ ज्वजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स ज्वतु  
सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनादुरितध्वंसी, वंदनादिष्ठितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः  
श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम्  
॥ नरामरेन्द्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञप्त्या रूपज्ञं जिनोत्तमम् ॥  
३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन  
वरण शरीर कांपि, अतिशय अन्निरामी ॥ अचिरा अंगज विश्व-  
सेन, नरपति कुलचंद्र ॥ मृगलंठन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद  
॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंभित आण ॥ एक मने  
आरायतां, लहिये कोमि कळ्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादव-  
कुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी  
जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे  
सुखकार ॥ गढ गिरनारे जिण लहुं ए, अमृत पद अन्निराम ॥  
तास क्कमा कळ्याण मुनि, निशिदिन नमत कळ्याण ॥ ५ ॥ इति  
श्रीनेमिनाथ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण  
अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-  
सुत सार ॥ श्रीगोप्नी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिनु-  
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां  
एहनं, प्रगटे परम कढ्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा  
मरणादि रूप, जव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात,  
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिनुवन विख्यात  
॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कढ्याण  
मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदितु सूत्र पर्यंत दैवसिक पम्किमी ॥ १ ॥  
खमासमण देई देवसी आलोश्यं पम्किंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पम्किंहुं ? चउमासीए चउमासियं मुह-  
पत्ती, संवच्चरीये संवच्चरी मुहपत्ती पम्किंहुं ? एम कहे. पीळें गुरु  
कहे, पम्किंहेह ॥ पीळें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देई, मुहपत्ती  
पम्किंही, वांदणां देई, तिहां परकीमें परको वश्कंतो ॥ चउमासी  
पम्कि० ॥ चउमासीळ वश्कंतो संवच्चरीमें संवच्चरो वश्कंतो. एम  
यथायोगें कहे ॥ पीळें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-  
स्त्रिक ॥ चउमासिक सांवच्चरिक जणजो. ठीक जयणा करजो.  
मधुर स्वरें पम्किमजो, खासे सो दिवरा शुद्ध खासजो. मांरुलमें  
सावचेत रहेजो, पीळें सयलाही तहत्ति कहे ॥ पीळें ऊगी ॥  
इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अष्टुष्टुमि अष्टि-

तर पस्कियं ॥ ३ ॥ खामेजं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पीठें मस्तकें  
 अंजलि करतो अको, इच्छं खामेम पस्कियं ॥ ३ ॥ कहो, गौमादीयें  
 बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करा, मुहपत्ती  
 मुखें देई ॥ पस्किथें पनरसहुं दिवसाणं पनरसहुं राईणं जं किंचि-  
 अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चनुमासैं चनुहुं मासाणं अ-  
 ष्णुं परकाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
 कहे. संवत्तरीयें डुवालसहुं मासाणं चनुवीसहुं परकाणं तिन्निसय-  
 सविराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारे गुरु  
 पण मिच्छामि दुक्कमं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-  
 खियें तीन, चनुमासीयें पांच, संवत्तरीयें सात साधुने खमावे ॥  
 ॥ पीठें नगी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥  
 पस्कियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठें इच्छं आलोएमि, जो  
 मे पस्किउ ॥ ३ ॥ अइयारोकउ, इत्यादि मूत्र जणी ॥ संक्षेपे  
 अथवा विस्तारें पाखी चनुमासी संवत्तरी, अतिचार आलोवे, सो  
 लिखते ह ॥

॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥  
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,  
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच  
 विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर,  
 जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी  
 मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अथ तदुभए, अष्टविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-  
मांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान  
हीन उपधान होन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-  
कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव  
वांदणे पडिक्कमणे सिधाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने  
मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या,  
भणीनें बीसार्यो, तपोधन तणे धर्म काजो अण ऊधरे दांडो अण-  
पडिलेही, वसती अणसोधी, असिध्याई अणोझा कालवेलामाहि  
दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वहां पखें भण्यो  
ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणो, कवली, नवकरवाली, सांपडा  
सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई,  
पग लागो थूंक लागो ओसोसे मूक्यो कनें छतां आहार नोहार  
कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापरार्थे विणाश्यो  
विणसतो उवेख्यो, छती शक्ते सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें  
मछर व्ह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां  
प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-  
ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्वहण  
कीधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितक्यो आपणा जाणपणा  
तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषइउ जिको अतिचार  
पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते  
सहु मन वचन कायाई करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आट अतिचार ॥

॥ निस्संक्रिय निक्कंखिअ, निधितिगिच्छा अमूढदिष्टो अ ॥  
उववूह थिरीकरणे, वच्चल पभावणे अष्ट ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे  
विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नही,



सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरो नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मल-मलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणो पूजा प्रभावना देखो, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांह गुणवंततणो अनुपबृंहणा अ-स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीक-रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतुं उवेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रते तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठवको लागो, मुखतणी चाफ लागी, ठवणारिय हाथथकी पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तोहिं ॥ एस चरित्तायारो, अष्टविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भा-सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिस्केवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजलसंधाणपारिठावणोयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीये अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्म श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंख विगिन्हा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांधीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक  
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आ-  
 तंके इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी  
 भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र  
 चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र  
 शीख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजा-  
 पडिवो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछठ  
 शीलसातम धो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-  
 त्सवारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,  
 जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां घर  
 बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान  
 दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां  
 थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकिष्ठाः—धर्म-  
 संबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर  
 विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें  
 न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी,  
 कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुओ मिथ्यात्वी तणी  
 प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति माडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म  
 मान्यो ॥ श्रोसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि  
 सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन, वचन,  
 कायाई करी मिळामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह  
 बंध छविबेए, अइभारे भत्तपाण बुझेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें  
 रीशवशें गाढो धाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे  
 पोज्या, निर्लीछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्मा, अणगल पाणी वावरयुं, रूडे गल्युं नहो, गलाव्युं नहो, अणगल पाणी झीलयां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दू-खव्यां, रूडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेहो घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां, अनेरा एकें-द्रियादिक जिके जीव विणठा चाप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कोधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो ० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसा-त्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चितवो छो. इत्यादिक कळ्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाशयो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या दोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोझ्या, अधर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेना-  
हडप्पळगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी,  
दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संबल  
दीधुं, संकेत कळुं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस  
विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल  
माने माप वहोस्यां, दाणचोरो कीधो, साटे लांच लीधी, माता  
पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किणहोनें लेखे  
पलेखे भुलव्युं, पढी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत  
विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरि-  
ग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिधअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन,  
इत्तरपरिगृहितागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोक-  
तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम  
चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम मांग्या, घरघरणां कीधां,  
कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधो,  
पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधो,  
कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथें मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त  
वडू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव  
परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगे संक्षेप न कीधो,  
माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण  
लेई पळ्यो नही. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे  
परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परि-  
माणे ॥ ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आधी मोकली ॥ छठे दिग्ब्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण ब्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहूती पन्नरे, एवं वीश अतिचार॥ सच्चित पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे० सच्चित तणे नियम लीधे अधिक सच्चित लीधुं, तथा सच्चित मली वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार दुर्बौधधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी भड्यां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां ॥ सच्चित दव्व विगई, पाणह तंबोलवन्न कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, वत्तीस अनंतकायमांहे आहुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंवली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वेंगण पीलू पीचू पंपोटा पीपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टेंबरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगवगती वेलायें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लस्क वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निहंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, धाणी चणा पक्वान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या,  
कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर  
कर्मादिक समाचर्यु ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कं-  
दप्पे कुकुइए० ॥ कदर्प लगे विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग  
कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगे कुणहीने असंबद्ध वाक्य बोल्या,  
खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक  
सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अ-  
नेरो कांई पापोपदेश दीधो, अंधोल नाहण, दांतण, पगधोअण  
पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा  
भक्तकथा स्त्रीकथा पराई वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां,  
कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांड  
कूकडा, मिढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगे  
अदेखाई चिंतवो माटो मीढुं कण कपासिया काजविण चांप्या,  
तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल  
गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते  
मांहि कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोलो प्रमुख जीव विणठा, सूडा  
प्रमुख जीव कीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष  
लगे एकने रुद्धि परिवार वांछी एकने मृत्युहाणि विमासी आठमा  
अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणि-  
हाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य  
बोल्यां, काय अण पडिलेहुं हलाव्युं, छती वेलाइं सामायिक न  
लीधुं, सामायिक लई उघाडे सुख बोल्या, ऊंध आवी कीधी, बीज  
दीवा तणो उजाही लागी. कण कपासोया माटो मीढुं नील फूल



हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तोयो संघट्टी, सामायिक अण पूरुं पारिउं पारुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणें पैसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पैसवणप्पओगे सद्धानुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल रूवे ॥ नियमित भूमिकामांहिवाहिर थको कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी बाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणणणुंलुतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अण-पडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार व्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वोसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथरुं, काल वेलायें पडिकमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारोयो, पर्व तिथि आवी पोसह लोधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निरुक्कवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा



तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेज्या, मन्नरलगे दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साध-  
र्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धम्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥  
इहलोका संसप्पजगे परलोकासंसप्पजगे जीविआसंसप्पजगे मरणा संसप्पजगे कामभोगासंसप्पजगे इहलोकं मनुष्यभव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछयां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू णोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रसुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी सूठसी साढपोरसि पुरिमढ एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रसुख पञ्चरूपाण पारवां वीसार्थी. बेसतां नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायच्चितं विणओ० गुरुकनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायच्चित तप लेखा शुद्ध पुह-  
चाडयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मो प्रतें विनय साचव्यो नही; वा-  
चना, पृष्ठना परावर्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जाय

कीधी नहीं, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त  
लोगस दस वीसनोकाउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइयो ० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ,  
परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायवो वीरि-  
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक  
दान शील तप भावना प्रमुख धर्म कृत्यतणे विषे मन वचन  
कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रुडां पंचाङ्ग समासमण न दीधां,  
बेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ० ॥

॥ नाणाइ अष्ट अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु ॥  
बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं  
करणे ० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज  
भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कोधां, नित्यकृत्य देवपूजा  
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कोधां, जीवाजीवादि वि-  
चार सहहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी,  
प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह  
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,  
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अर-  
तिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अठारह  
पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें  
श्रावक धर्में श्री सम्यक्तत्व मूल बारह व्रत चौवीसां सो अतिचार  
मांहि जिफो कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जागतां  
अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करो मिठामि दु-  
च्छंड ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीठें सवस्सवि पस्सिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सह  
पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउठेण पस्सिमह, चउमासे ठठेण  
पस्सिमह. संवहरियें अठमेण पस्सिमह. इच्छं तस्स मिठामि डुक्कमं  
कही. चादशावत्तं वांदणां देवे. पीठें इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्,  
देवसियं आलोइयं पस्सिक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणें, अप्पुठिन्मि  
अप्पिंतरपस्सियं ॥ २ ॥ स्वामेज्जं? गुरु कहे स्वा० ॥ पीठें इच्छं स्वामेमि  
पस्सियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिठामि  
डुक्कमं देई खमावे, पीठें बे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोइयं  
पस्सिक्कंता पस्सियं ॥ ३ ॥ पस्सिक्कमावह? गुरु कहे सम्मं पस्सिमह. पीठें  
इच्छं कही करेमि जंते सामाइयं॥ इच्छामि ठामि कान्दस्सग्गं जो मे पस्सिन्तु  
॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नबू०॥ कही॥ कान्दस्सग्ग करे, गुरु,  
पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुयकी जूदा पस्सिक्कमता हुवे, तो  
एक आवक खमासमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे,  
जणह. एसो वचन मनमें धारी॥ इच्छं कही, उज्जो अको, हाथ जोमो  
मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें  
चिंतवतो वंदितु सूत्र गुणे. बीजा आवक करेमि जं ते० इच्छ मि  
ठामि कान्दस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नबू० कही कान्दस्सग्गमें रह्या  
सुणे. सूत्रप्रांते एमो अरिहंताणं कही. कान्दस्सग्ग पारी, उज्जा  
अका तीन नवकार गुणी बेसे. पीठें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि  
जं ते कही, इच्छामि पस्सिक्कमिजं जो मे पस्सिन्तु ॥ ३ ॥ इत्यादि  
कही, वंदितु सूत्र गुणे, पस्सिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ एहने ठिकाणें  
पस्सिक्कमे पस्सियं, चउम्मासियं संवहरियं सव्वं कहे. पीठें ऊठी, अप्पु-  
ठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी, खमासमण देई इच्छा०  
॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं,  
कान्दस्सग्ग करूं? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छं कही, करेमि जंते

सामा० इष्टामि ठामि कान्तस्सग्गं तस्सु० अन्नत्तू० इत्यादि कही,  
 पाखीयें वार लोगस्स चन्नासियें बीस लोगस्स संवत्तरीयें चालोस  
 लोगस्सनो कान्तस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, कान्तस्सग्ग करी.  
 पारी लोगस्स कहे. बेसी सुहपत्ती पमितेही, बे वांदणां देई इष्टा०  
 ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ समाप्ति स्वामणेणं ॥ अप्पुट्ठिओमि अप्पितर प-  
 रिकियं ॥ ३ ॥ स्वामेज्जं ? गुरु कहे स्वामेह. पीठें इत्थं स्वामेमि पं-  
 रिकियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कह्यो. तिम कहे, पीठें इष्टाका० ॥  
 सं०॥ज्ञ०॥पाखी॥३॥ स्वामणां स्वामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार बेर  
 स्वमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त  
 स्वामणां स्वामेह, पीठें श्रावक एक स्वमासमण देई. अस्तक नीचुं  
 नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीठें गुरु कहे  
 निच्चारग पारगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इत्थं इष्टामि अप्पुत्तुठिं कही,  
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आं-  
 धिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे  
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेटें पूरज्यो, पाखीनें स्थानके  
 दैवसिक ज्ञणजो. एम चन्नासे ए सर्व दुगुणो कहणो, संवत्तरीयें  
 त्रिगुणो कहणो. पीठें जिणें तप कीथो हुवे ते पइठियं कहे, न  
 कीथो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीठें बे वांदणां देई, अप्पुट्ठिओमि अ-  
 प्पितर देवसियं स्वामेमि इत्यादि कहे. पीठें बे वांदणा देई. आय  
 रिय नवप्राए० तीन गाथा कहे, इम आगे सर्व विधि दैवसिक  
 पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो कान्तस्सग्ग  
 करी स्तुति कहे. पीठें ज्ञवण देवयाए करेमि कान्तस्सग्गं. इत्यादि  
 विधे ज्ञवनदेवताको कान्तस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य दुःख-  
 नान्येषां, करोतु सुखमहयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वे वडा स्तवन  
अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा  
पडिक्कमणो पूरो हुवा पीठें एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सि-  
द्धाण कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बोजा सर्व सुणे, जिएनें  
रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति  
पाहिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चख्वाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरें पच्चख्वाण  
करे ॥ उग्गए सूरें नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पच्चख्वाइ चउविहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्सत्तणान्नोगेणं सहसागारेणं  
महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं विगइउ पच्चक्काइ. अस्सत्तणा-  
न्नोगेणं सहसागारेणं लेवालेवणं गिहिउसंसिठेणं उखिखत्तविवेगेणं  
पमुच्चमस्सिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्ति-  
यागारेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चक्काइ. अस्सत्तणान्नोगेणं  
सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥  
इति नवकारसी पच्चक्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका उरं  
देसावगासिकका आगार न पच्चक्के. निकेवल नवकारसी आदिकं  
पच्चक्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरें नमुक्कार सहियं पच्चक्काइ ॥ चउविहंपि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नं ॥ सहं वोसिरामि ॥ इति नव-  
कारसी पच्चक्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पच्चक्कामि, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अस्सत्तं ॥ सहसा० ॥ पच्चक्कालेणं दिसा  
मोहेणं ॥ साहुवयणेणं सब० विगइउ पच्चक्कामि. इत्यादि पूर्वकी

परें कहणां ॥ इति पोरिसी पञ्चस्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ पोरसीका पञ्चस्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चस्काइके ठिकाने इहां साढपोरसिं पञ्चस्काइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरें नग्गए पुरिमढं अवढं वा पञ्चस्काइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० ॥ सह० ॥ पढ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मढ० ॥ सव० ॥ विगइउ पञ्चस्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढपञ्चस्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, नग्गए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पढ० दिसा० साहु० सव० एकासणं विआसणं वा पञ्चस्काइ, उविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारिणं गुरुअप्पुठाणेणं पारि० मढ० सव० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण विआसण पञ्चस्काण ॥ आ० ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, नग्गए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पढ० दिसा० साहु० सव० एकासणं एगठाणं पञ्चस्काइ, उविहं तिविहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठाव० मढ० सव० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, नग्गए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस्स० सह० पढ० दिसामो० साहु० सव० आयंबिलं पञ्चस्काइ, अस्स० सह० लेवालेवेणं गिहउसंसिठेणं उरिक्खिविवेगेणं पारिठा० मढ० सव० एकासणं पञ्चस्काइ, तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह०



सागारिआगारेणं आनट्टणपसारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठा० मह०  
सव्व० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चरूकाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साळ पोरसिं वा पच्चरूखाइ. नग्गए सूरे चनव्विहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पच्च० दिसा०  
साहु० सव्व० ॥ निविगइयं पच्चरूखामि. अस्स० सह० लेवालेवेणं  
गिहत्तसंसिठेणं नखिखत्तविवेगेणं पमुच्चमखिखएणं पारि० मह० सव्व०  
एकासणं पच्चरूखाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स०  
सह० सागा० आनट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पच्चरूखामि. अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरामि  
॥ इति नीवी पच्चरूखाण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे नग्गए अप्पत्तठं पच्चरूखामि. चनव्विहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० मह० सव्व० देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पच्चरूखामि. अस्स० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥  
इति चनविहार उपवास पच्चरूखाण ॥ ए ॥

॥ सूरे नग्गए अप्पत्तठं पच्चरूखामि. तिविहंपि आहारं असणं  
खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साळ पोरसिं पुरिमळ  
अवट्ठं वा पच्चरूखाइ अस्स० सह० पच्च० दिसा० साहु० सव्व०  
देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चरूखामि. अ० स० म० सव्व० वो-  
सरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चरूखाण ॥

॥ पोरसिं साळ पोरसिं पुरिमळं अवट्ठं वा पच्चरूखामि. नग्गए  
सूरे चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह०  
पच्च० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं दत्तियं पच्चरूखामि.  
तिविहं चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह०  
सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइत्तं पच्चरूखामि. इत्यादि पूर्ववत्.  
देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चरूखाण ॥ ए ॥



॥ दिवसचरिमं पञ्चखाइ, चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं  
खाइमं साइमं अण्णं सहं महं सब्बं वोसिरइ ॥ इति दिव-  
सचरिम पञ्चखाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चखामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं  
अण्णं सहं महं सब्बं वोसिरामि, देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति  
दिवसचरिम डुविहार पञ्चखाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चखामि अन्नं सहं महं  
सब्बं वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पञ्चखाण ॥ ए ॥

॥ जवचरिमं पञ्चखाइ तिविहंपि चनव्विहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं अन्नं सहं महं सब्बं वोसिरइ ॥ आगार  
॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकान्नी होय ॥ इति जवचरिम पञ्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अ-  
ग्निग्रह पञ्चखाणकेन्नी ए चार आगार, अन्नं सहं महं सब्बं  
वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अ-  
ग्निग्रह पञ्चखाण ॥

॥ अहसां जंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पञ्चखामि  
दव्वं खित्तं कालं जावत्तं दव्वत्तं देसावगासियं खित्तत्तं उच्च  
वा असात्तवा कालत्तं मुहुत्तधारणाप्रमाणं जावनियमं पञ्चखामि  
जावत्तं जावगहेणं न गहिज्जामि ठलेणं न ठलिज्जामि असेण-  
केवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पन्निवज्जइ ता अग्निग्रह  
अण्णत्तणान्नेगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्तिया-  
गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चखाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चखाण करे, तव देसावगासी नही पञ्चस्के.  
अरु तिविहार उपवासमें आंवलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें  
पाणस्सका ठ आगार पञ्चस्के सो दिखावे हैं, पाणस्स लेबारेण वा

अलेवामेण वा अन्नेण वा बहुलेण वा ससिन्नेण वा असिन्नेण वा  
वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोधेव नमुक्कारो आगार उच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त  
पुरमिहे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्सज्ज, अठेवय आ-  
यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयज्जाठे, उप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥  
पंच चज्जरो अज्जिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावण्णे पं-  
चज्ज, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहियं पञ्चखाइ चज्जविहंपि आहारं ॥  
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाइ. शिष्य कहे पञ्चखाभि. पञ्चखाइका  
अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसैं सूरज उदय हुआ  
पीठे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते  
दो घन्टी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पाखूं नहीं तहां  
तक चज्जवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो  
च्यार प्रकारका आहार इस मुजब है. असन कहते अन्न, चावल,  
गहूं, मूंग, चूणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सातू गहूं जबकूं आदि  
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लहू वगेरे सब  
तरेका पकवांन सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब  
घाट सब पतली नर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूण सेंधवादिक  
इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आच्छण  
जबोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-  
काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखमी नालेर खजूर द्राख सेक्या  
अनाज आंबा केला काकमी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब  
जातका मेवा सब जातका फल खाइमं जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींवर हरमे बहेना आंबडा तुलसी कसेला  
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविमंग अजमा  
 अजमोद कुलिंजन कवावचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया  
 कुंनटिआ पांसुपारी पोहकरमूल जवालाकीजम वावची वांवल-  
 गाल धवगालि खेजमेकीगालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु  
 जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींवकीगालि जम  
 पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीगालि चंदन-  
 कीराख रोहिणीकीगालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया  
 चिरमी कयर बोरकीजम इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब ठो-  
 रुणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो  
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे, पञ्चखाणका अर्थ जाणे  
 विगर जो पञ्चखाण करे सो अंधा पञ्चखाणहे इस वास्ते संक्षेप  
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे, जिस पञ्चखाणमें जितना आगार  
 होय सो रखकर हमारे पञ्चखाणहे, अन्नघणान्नोगेण कहिये अना-  
 न्नोग टालके किया जो पञ्चखाण, अत्यंत झूल जाणेंसें कोइनी  
 चीज झूलके मुंमे मालती होय लेकिन जाणे बाद तत्काल उसी  
 वखत पीठा नाख देवे तो पञ्चखाणमें जंग नही, उर जाणे बाद  
 जहण करे तो पञ्चखाण निश्चे जंग होय ॥१॥ पञ्चन्नकालेण कहने  
 कालकी प्रचन्नता, आकाशमें गर्द ऊरती होय आकाशमें बदल  
 ठाये होय तेसेइ पहामकीउंट आजोवे सूरज नही दीखे तब ज-  
 रमसुं पञ्चखाणका वखत पूरा हुवा जाणकर न्नोजन करे तो व्रत  
 जंग नही ॥२॥ दिसामोहेण कहतां दिसा झूलकर पूरवकूं पछिम  
 जाणकर पञ्चखाणका काल पूरा हुये विगर न्नोजन कर लेवे तो  
 व्रत जंग नही ॥३॥ सहस्सागारेण कहतां सहसात्कार बहोत उताव  
 लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगेरेका ठीठा

मूँमें गिर जाय तो व्रत जंग नही ॥४॥ साहूवयणेणं कहतां साधूके  
 वचनसें उग्यामा पोरसीआदिक नरम संयुक्त सुणकर पञ्चस्काणका  
 काल पूरा हुवा जाणकर नोजन करे तो व्रत जंग नही ॥५॥ सब  
 समाहिवत्तियागारेणं कहतां पञ्चस्काणका काल पूरा होणेसें पहली  
 अकस्मात् शूलादिक रोग नपजे नसकरके परणामोंकी थिरता रहे  
 नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब नसका रोग मिटाणे वास्ते ओषधादिक  
 पण्य देवे वा आप लेवे तो पञ्चस्काण जंग नही ६ महत्तरागारेणं  
 कहतां पञ्चस्काणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा  
 निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे ऐसा जो चैत्य  
 संघादिकका प्रयोजन होणेसें पञ्चस्काणका काल पूरण नये विगर  
 ही नोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां  
 गृहस्थ देखतां साधू नोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा  
 हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पञ्चस्काण कर नोजन  
 करणे वेठाहे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब  
 साधू उस ठिकाणेसें ऊठकर नर ठिकाणे जाकर नोजन करे तो  
 व्रत जंग नही नर गृहस्थकूं इसमें ऐसा आगार हे जिस पुरुषकी  
 निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणेसें एकासणेवाला नठकर नर  
 ठिकाणे जाकर नोजन करेतो व्रत जंग नही ॥ ८ ॥ आनट्टणपसारेणं  
 कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें थोमासा आसन  
 चल जाय तो व्रत जंग नही ॥९॥ गुरु अप्रुढाणेणं कहतां आपका गुरु  
 आणेसें तथा आपसें कोइ वरु पुरुष आणेसें विनयके वास्ते नोजन  
 करतां एकाशनादिकमें आसन ठोरु खमा हो जावे तोनी व्रत जंग  
 नही ॥१०॥ पारिठावणियागारेणं कहतां सब पञ्चस्काणमें यह आगार  
 साधुकाहे, जिस आहारके परवणेसें बहुत जीवकी विराधना होती  
 जाणकर गुरु कहे यह आहार परवो मत सरस आहार हे तब

एकांशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आकाशैं दुसरी वखतजी आहार करे तो व्रत जंग नही ॥११॥ लेवालेवेणं कहतां भोजन करेका थाल प्रमुख भोजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका अंसलगाजयाहे उसकूं हाथ वेगेरेसैं पूठ माला उस परजी किंचित् वे मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाला भोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ॥१२॥ उरिक्तविवेगेणं कहतां आयंबिलादि पञ्चखवाणमें नही खाणे योग्यजों विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणें योग्य द्रव्यसैं हो गया होय वो चीज खाणेंमें आवे तो व्रत जंग नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सों हाथसैं उठाव सके नही ऐसे द्रव्यसैं फरस हुआ होय तो उसके खाणेंसैं व्रत जंग नही ॥१३॥ गिहत्थसंसिधेणं कहतां भोजन पुरखे जिससेती एसी कुकठी आदि देकर भोजन विगय प्रमुख द्रव्यसैं वेमालम खरमी होय प्रत्यक्ष निजरसैं कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसैं भोजन पुरखे तोजी व्रत जंग नही १४ पडुच्चमुखिखणं कहतां सर्व आ लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसैं वेमालम चोपरणमें आयाहे लेकिन घृतादिकका स्वाद नही मालम देता हे तो नीवी पञ्चखवाणमें उस द्रव्यकूं खाणेंमें आवे तो व्रत जंग नही नर जों धारविगय लेवे तो व्रत जंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरे पञ्चखवाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलपसत्तो धम्मोमंगलं १ चत्तारिलोगतमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालो गुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलपसत्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्तारिसरणं पवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धेसरणंपवज्जामि साहूसरणंपवज्जामि केवलपसत्तं धम्मंसरणंपवज्जामि ३ इहामि पणिकमिउं

पगामसिद्ध्याए निगामसिद्ध्याए संधारानवदृष्ट्याए परियदृष्ट्याए आलंठ-  
 णाए पसारणाए ठप्पइयासंघदृष्ट्याए कइए ककराईए ठोए जंजाइए  
 आमोसेससर स्कामोसे आनुलमानुलाए सोअणवत्तियाए इड्ढीविप्प-  
 रियासिद्ध्याए दिढ्ढीविप्परियासिद्ध्याए मणविप्परिआसियाए पाणा-  
 ज्ञोयणविप्परिआसिद्ध्याए जोमेदेवसिनु अइयारोकनु तस्तमिद्धामि-  
 डुककं पम्भिकमामि गोयरचरिआए जिखायरिआए उग्घामकवाम उ-  
 ग्घामणाए साणावच्चादारा संघदृष्ट्याए मंनोपाहुनिआए बलिपाहु-  
 निआए ठवणापाहुनिआए संकिएसइस्सागारे आणेतणाए पाणेत-  
 णाए आणजोयणाए पाणजोयणाए बोअजोयणाए हरियजोयणाए  
 पञ्चकम्मियाए पुराकम्मिआए अदिठहमाए दगसंसठहमाए रबसंसठ-  
 हमाए पारिसामनिआए पारिठावणिआए उडासणनिस्काए जंज-  
 ग्गमेणं उप्पायणेतणाए अपरिश्रुदं पम्भिगहिअं परिचुसंवा अनप-  
 रिठवणिअं तस्तमिद्धामिडुककं पम्भिकमामि चानकालं सिद्धायस्त  
 अकरणयाए उज्जनकालं जंनोवगरणस्त अप्पमिलेहणाए अप्पमज्झ-  
 णाए डुप्पमज्झणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मेदेव-  
 सिनु अइयारो कनु तस्त मिद्धामि डुककं पम्भिकमामि एगविहे  
 असंजमे पम्भिकमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं  
 पम्भिकमामि तिहिं दंमेहिं मणदंमेणं वयदंमेणं कायदंमेणं  
 पम्भिकमामि तिहिं गुत्तोहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए  
 पम्भिकमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिद्धादं  
 सणसल्लेणं पम्भिकमामि तिहिं गारवेहिं इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं  
 सायागारवेणं पम्भिकमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए  
 दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पम्भिकमामि चउहिं क-  
 साएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं दोहकसाएणं  
 पम्भिकमामि चउहिं सप्पाहिं आहारसप्पाए जइससप्पाए मेहुणसप्पा



ए परिग्गदससाए पन्निक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए जत्त-  
 कहाए देसकहाए रायकहाए पन्निक्कमामि चउहिं जाणेहिं अट्ठेणं  
 जाणेणं रुदेणंजाणेणं धम्मेणंजाणेणं सुक्केणंजाणेणं पन्निक्कमामि  
 पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारताव-  
 णीआए पाणायवायकिरियाए पन्निक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं  
 सदेणं रुवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पन्निक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं  
 पाणाइवायानुविरमणं मुसावायानुवेरमणं अदिन्नादाणानुवेरमणं  
 मेहुणानुवेरमणं परिग्गहानुवेरमणं पन्निक्कमामि पंचहिं समिईहिं  
 इरिआसमिईए ज्ञासासमिईए एसणासमिईए आयाणज्जरुमत्तनि  
 खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेजज्झसंघाणपारिठावणियासमि-  
 ईए पन्निक्कमामि ठहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं  
 तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पन्निक्कमामि  
 ठहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए कानुलेसाए तेउलेसाए प-  
 न्मलेसाए सुक्कलेसाए पन्निक्कमामि सत्ताहिं जयठाणेहिं अठहिं म-  
 यठाणेहिं नवहिं बंज्जचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं  
 उवालगपन्निमाहिं बारसहिं त्रिक्कुपन्निमाहिं तेरसहिं किरियाठा-  
 णेहिं चउदासहिं जूयगामेहिं पस्सरसहिं परमाइम्मिण्हिं सोलसएहिं  
 गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अवंच्जे इगुणवीसाए ना-  
 यव्वयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए  
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगरुज्जयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी  
 साए जावणाहिं ठव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्ता  
 वीसाए अणगारगुणेहिं अठवीसाए आधारपकप्पेहिं एगुणतीसाए  
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं  
 वत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय  
 णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवच्चायाणंआ-



सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० दे  
 वाणंआसाय० देवीणंआ० इदलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलपन्न-  
 तस्सधम्मस्सआ० सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० सव्वपाणजूअजी-  
 वसत्ताणंआ० कालस्सआ० सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा  
 रिअस्सआ० जंवाइइं वच्चाभेलिअं हीनरकरिअं अच्चरकरिअं पयहीणं  
 विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुहुदिन्नं डुहुपनिष्ठियं अकालेक-  
 नुसज्जानं कालेनकनुसज्जानं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-  
 इयं तस्स मिञ्चामि डुक्कमं एमो चनवीसाए तित्थयराणं नसज्जाइ-  
 माहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-  
 वलियं पन्निपुसं नेआनुयं संसुद्धं सत्त्वगत्तणं सिद्धिमगं मुत्तिमगं  
 निज्जाणमगं निव्वाणमगं अवितहमविसंधि सव्वडुक्कपहीणमगं  
 इत्थठियाजीवा सिद्धंति वुद्धंति मुच्चंति परिनिवायंति सव्वडुक्खवाण-  
 मंतंकरंति तंधम्मं सदहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अ-  
 णुपालेमि तंधम्मं सदहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-  
 पालितो तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अप्पुठ्ठिमि आराहणाए  
 विरत्तमि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि  
 अबंजं परिआणामि बंजंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं  
 उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं  
 परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिहत्तं परिआणामि सत्तमत्तं  
 उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमगं प-  
 रिआणामि मगं उवसंपज्जामि जं संज्जरामि जं च न संज्जरामि जं  
 पन्निक्कमामि जं च न पन्निक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स  
 अइयारस्स पन्निक्कमामि समणोहं संजय विरय पन्निहय पच्चख्खाय  
 पावकम्मे अनियाणो दिठिसंपन्नो मायामोसविवज्जित्ठ अट्ठाइजेसु  
 दीवसमुडेसु पन्नरसकम्मज्जमीसु ॥ जावंतिकेविसाहु, रयहरणगुब्ब

पनिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अघार सहस्स सीलंगधारा ॥  
 अस्सवयाचार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥  
 स्वामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मित्ति मे सव्व जूएसु,  
 वेरं मय्यं नेकेणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं  
 सम्मं ॥ तिविहेण पणिक्कंतो, वंदामि जिणेचलव्वीसं ॥ २ ॥ इतिश्री  
 साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

## ॥ अथ परस्वी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिबंकरे अतिवे, अतिवसिद्धेय तिबसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-  
 नेयरिसीं, महारिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर,  
 मविरातिऊणं तिन्निसंसार ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-  
 भिसुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥  
 संती गुत्ती सुत्ती, अज्जवया महव्वं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं-  
 करंति, परम रिसि देसियसुपारं ॥ अहमवि उवट्ठितं, महव्वय उ-  
 च्चारणं काळं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा  
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणच्छा तंजहा सव्वानं पाणाइ-  
 वायाओ वेरमणं सव्वानं मूसावायाओ वेरमणं सव्वानं अदिन्नादाणानं  
 वेरमणं सव्वानं मेहुणानं वेरमणं सव्वानं परिग्गहानं वेरमणं सव्वानं-  
 राइभोयणानं वेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओ-  
 वेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चत्कामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं-  
 वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा-  
 पाणे अइवायंतेवि अन्नैनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं  
 मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणु-  
 जाणामि तस्सं भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि  
 से पाणाइवायाए चउव्वहे पन्नते तंजहा दव्वनं खित्तनं कालनं  
 भावनं दव्वनं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तनं पाणा

इवाए सयल्लोए कालज्जणं पाणाइवाए दियावा राज्जवा भावज्जणं  
पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लि  
पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सच्चाहिंशियस्स विणयमूलस्स स्वती-  
पहाणस्स अहिरस्सोवप्पियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स  
अप्पयमाणस्स भिस्सावित्तियस्स क्खवीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स  
संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहिंयस्स निब्बियारस्स निब्बि-  
त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स  
संसारपारगामियस्स निब्बाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुब्बि अन्नान  
याए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-  
गदोस पंडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारब-  
गरुयाए चउक्कसान्णवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
सोक्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-  
वाज्ज कज्जवा कारिज्जवा कीरंतोवा परेहिं समणुज्जाज्ज तं निंदामि ग-  
रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-  
ड्डपन्नं संबरेमि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिज्जहिं नेव  
सयंपाणे अइवाएज्जा नेवज्जेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-  
यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं  
साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खू-  
णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राज्जवा एगोवा  
परिसागज्जवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खल्लु पाणाइवायस्सवेरमणे  
हिएसुहे स्वमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसिं पाणाणं  
सव्वेसिं भूयाणं सब्बेसिं जीवाणं सब्बेसिं सत्ताणं अदुक्कणयाए अ-  
सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
णियाए अणुद्वणयाए महत्ते महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु-  
चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्ते तं दुक्कस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्स

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिक्कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि  
 पढमे भंते महव्वए उवट्ठिअमि सव्वाअ पाणाइवायाअवेरमणं ॥ १॥  
 अहावरेदोअवेभंते महव्वए मुसावायाअवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं  
 पच्चस्कामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइअ  
 नेवअहेहिं मुसंवायाविअ मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि  
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-  
 रोमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-  
 क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोत्तिरामि से मुसावाए चउ-  
 विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वअ खित्तअ कालअ भावअ दव्वअणं मुसा-  
 वाए सव्वदव्वेसु खित्तअणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालअणं  
 मुसावाए दियावा राअवा भावओणं मुसावाए रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालक्क  
 णस्स सच्चाहिठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि  
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्का-  
 वित्तियस्स कुस्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्कालियस्स चत्तदो-  
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्कणस्स पंचमहव्व-  
 यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स  
 निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ-  
 बोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए  
 बालयाए मोहयाए मंदयाए किअयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाअवग  
 णणं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहं  
 वाअवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा  
 भासिजंतो वा पेरेहिं समणुज्जाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि  
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संबरोमि अणागयं  
 पच्चस्कामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिअहिं नेवसयंमुसंवइ

द्या नेवन्नेहिं मुसंवायाविद्या मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखिखयं साहूसखियं देवसखियं अप्पसखियं  
 एवं हवइ भिख्खुवा भिख्खुणोवा संजयविरयपडिहय पच्चख्खाय पा-  
 वकम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा  
 एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए  
 पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-  
 व्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-  
 याए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुहवणयाए महब्बे महागुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसब्बे तं दुख्खखयाए  
 कम्मखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उव-  
 संपज्जत्ताणं विहरामि दोब्बे भंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ मुसा-  
 वायाओवेरमणं १ अहावरे तब्बे भंते महव्वए अदिन्नादाणान्वेरमणं  
 सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चख्खामि सेगामेवा नगरेवा रत्तेवा अप्पंवा  
 बह्नुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं  
 गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतैवि अन्नंन-  
 समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं  
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए  
 तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से  
 अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भा-  
 वओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणद्वारणिच्चेसु दव्वेसु खित्तओणं  
 अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्तेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा  
 राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-  
 म्मस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिठियस्स वि-  
 णयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स  
 नवंबंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुरूखीसंबलस्स



निरग्निगसरणस्स संपरुत्तालियस्स चत्तदोसस्स गुणंगाहियस्स नि-  
 विवारस्स निविच्चोलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंच्चि-  
 यस्स अविस्संवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण  
 फलस्स पुर्व्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं  
 अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए  
 मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसान्वगएणं पंचेदियवसट्टेणं  
 पडिपुन्नभारियाए सायासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग  
 हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना  
 ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अ  
 इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि सब्बं अदिन्नादा  
 णं जावज्जीवाए अणिरिस्सओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं  
 अदिन्नं गिन्नाविच्चा अदिन्नं गिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसखियं सिद्धसखियं साहूसखियं देवसखियं अप्पसखियं  
 एवं हवइ भिखूवा भिखुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चस्काय पाव  
 कस्से दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा  
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ  
 णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं  
 जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुखणयाए असोयणयाय अजूरणयाय  
 अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुहवणयाय महत्ते  
 महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्ते तं  
 दुस्सकयाय कम्मस्सकयाय मोहस्सकयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय  
 त्तिकड्डु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अमुट्ठिओमि स-  
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-  
 व्वए मेहुणाओवेरमणं सब्बं भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिव्वंवा मा-  
 णुसंवा तिरिस्सजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविच्चा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविद्या मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अ-  
 न्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि ।  
 अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ  
 कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्त-  
 ओणं मेहुणे उट्ठलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-  
 हुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-  
 यमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चा-  
 हिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिस्ससोवन्नियस्स उव-  
 समप्पभवस्स नवबंभचेरयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुखावित्तियस्स  
 कुरुखीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपरुखालियस्स चत्तदोसस्स गुण-  
 गाहियस्स निव्वत्तीलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिय-  
 स्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपञ्चावसाण-  
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अ-  
 भिगमेणवा पप्पाएणं रागदोसपडिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंद-  
 याए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं  
 पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा  
 भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविच्चंतोवा परेहिं समणु-  
 न्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का-  
 एणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरोमि अणागयं पच्चरुखामि सव्वंमेहुणं  
 जावज्जीवाए अणिसिओहं नेवसयंमेहुणंसेविद्या नेवन्नेहिंमेहुणंसे-  
 वाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखि-  
 यं सिद्धसखिखयं साहुसखिखयं देवसखिखयं अप्पसखिखयं एवं हव-  
 इमिस्सूवा भिरुखुगीवा संजयविरयपडिहयपच्चस्कायपावकम्मे दि-  
 यावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा



एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पार-  
 गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं-  
 सत्ताणं अदुख्खण्याए असोयण्याए अजूरण्याए अतिप्पण्याए  
 अपीडण्याए अपरियावणियाए अणुइवण्याए महब्बे महागुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसब्बे तंदुख्खस्वयाए  
 कम्मस्वयाए मोहस्वयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टुउव-  
 संपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवडिओमि सव्वाओ-  
 मेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं  
 सव्वं भंते परिग्गहं पच्चस्खामि से अप्पंवा वडंवा अणुंवा थूलंवा चित्त-  
 मंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं  
 परिगिण्हविद्या परिग्गहंपरिगिन्नंतंवि अन्नेनसमणुजाणामि जा-  
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकार-  
 वेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपस्सत्ते  
 तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचि  
 त्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-  
 सुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे  
 अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स  
 केवलपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिठ्ठियस्स विणयमूलस्स  
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववंबभचेरगु-  
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्ख्वावित्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गि-  
 सरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स  
 निव्वित्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स अविसंबाइयस्स संसारपा-  
 र्गामियस्स निव्वाण गमण पच्चवसाणफलस्स पुविअन्नाण्याए अस-  
 वण्याए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाणं राग-

दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किन्धयाए तिगारव-  
 गरुयाए चउकसानवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
 सोस्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-  
 हिन्वा गाहाविन्वा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नान तंनिंदामि गरि-  
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-  
 न्नंसंबरोमि अणागयंपच्चस्कामि सबंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-  
 न्हि नेवसयंपरिगिण्हिजा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविद्या परिग्गहं-  
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखियं सिद्ध-  
 सखियं साहुसखियं देवसखियं अप्पसखियं एवंहवइभिख्खूवा भि-  
 ख्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा रान्वा  
 एगन्वा परिसागन्वा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-  
 वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसिं  
 पाणाणं सब्बेसिंभूयाणं सब्बेसिंजीवाणं सब्बेसिंसत्ताणं अदुरुखणयाए  
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुद्वणयाए महत्थे महायुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने  
 परमरिसिदेसियपसन्ने तंदुरक्कययाए कम्मरक्कयाए बोहिलाभाए सं-  
 सारुत्तारणाए त्तिक्कट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए  
 उवट्ठिन्मि सब्बानपरिग्गहान्वेरमणं ५ अहावरेल्लहे भंते महव्वए रा-  
 इभोयणान्वेरमणं सब्बं भंते राईभोयणं पच्चस्कामि सेअसणंवा पाणंवा  
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइभुंजिजा नेवन्नेहिंराइभुंजाविद्या राइभुं-  
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं  
 वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि  
 तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-  
 भोयणे चउविहेपस्सत्ते तंजहा दव्वन्न खित्तन्न कालन्न भावन्न दव्वन्नं  
 राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तन्नं राईभोयणे

समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभो-  
 यणे तित्तेवा कड्डएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालक्क-  
 णस्स सच्चाहिष्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-  
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्कावि-  
 त्तियस्स कुस्कीसंबलस्स निरगिगसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदोसस्स  
 गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स  
 असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-  
 गमणपञ्चवसाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अ-  
 णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए  
 मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं  
 पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा  
 भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुज्जंतंवा  
 परेहिंसमणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा-  
 याए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि  
 सव्वंराइ भोयणं जावज्जोवाए अणिसिओहं नेवसयं राईभु-  
 जिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुज्जंतेवि अन्नंसमणुजाणाभि  
 तंजहा अरिहंतसस्सिकयं सिद्धसस्सिक्खयं साहुसस्सिकयं देवसस्सिकयं  
 अप्पसस्सिकयं एवंहवइभिस्खूवा भिस्खुणीवा संजयविरय पडिहय  
 पच्चस्कायणावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा  
 सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुहेखमे-  
 निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं-  
 भूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुरक्कणयाए असोयणयाए  
 अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणु-  
 द्वणयाए महत्तेमहागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि-

देसिएपसत्थे तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिलाभाए  
 संसारुत्तारणाए तिकट्ठु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छट्ठे भंते महवए  
 उवट्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइं पंच-  
 महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइं उवसंपज्जित्ताणंविह-  
 रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे  
 एसवुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिक्करागायजाभासा तिक्कदोसातहेवय  
 मुसावायस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-  
 दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा-  
 रूवारसागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइ-  
 क्कमे ॥ ४ ॥ इच्चापुच्चायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे  
 एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-  
 णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे बोयंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 धम्मे तइयंवयमणुरख्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विर-  
 यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-  
 णधम्मे पंचमंवयमणुरख्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छट्ठंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमण-  
 धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-  
 हारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 अलियवयणउ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोयुत्तोठिउसमणधम्मे  
 तइयंवयमणुरख्खे विरियामो अदिन्नादाणउ ॥ १४ ॥ आलियविहार-  
 समिउ जुत्तोयुत्तोठिउसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विरियामोमेहु-

णाञ्च ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तो गुत्तो ठिञ्च समणधम्ममे पंच-  
 मंवयमणुरस्के विरयामो परिग्गहाञ्च ॥ १६ ॥ आलियविहारस-  
 मिञ् जुत्तो गुत्तो ठिञ्च समणधम्ममे छुट्ठंवयमणुरस्के विरयामो राईभोयणा  
 ञ्च ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तो गुत्तो ठिञ्च समणधम्ममे तिविहे-  
 णपडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिञ्चत्तं  
 एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-  
 वच्चजोगमेगं सम्मत्तं एगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वए-  
 पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइं अट्टरूद्धाइं परिवच्चंतो-  
 गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइं-  
 धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-  
 नीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊअप्पसत्ताञ्च परिवच्चंतोगुत्तो रक्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसत्ताञ्च उव-  
 संपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविऊ  
 चायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविञ्च रक्खामिमहव्वएपंच  
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसत्तातहाकसायाय परिवच्चंतो  
 गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-  
 संबरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥  
 पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवच्चंतोगुत्तो रक्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेदियसंबरणं तहेवपंचविहमेवसच्चायं उवसंप-  
 न्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायबहिं छप्पिय-  
 भासाञ्चअप्पसत्ताञ्च परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥  
 छविहमाप्पितरियं वज्जंपियछविहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविप्पंगा परिव-  
 चंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-  
 सत्तिकयामहव्वयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अष्टमयष्टाणां अष्टयकम्माइंतेसिबंधिच परिवञ्चंतोगुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अष्टयपवयणमाया दिट्ठाअव्विहनिट्ठिअठेहिं उवसं  
 पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसार-  
 ञ्चायनवविहाजीवा परिवञ्चंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न  
 वबंभचेरगुत्तो दुनवविहंभंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम  
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि  
 वज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिष्ठाणा दस  
 चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥  
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरजं तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो ति  
 विहेण पडिकंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चैयंमहव्वयउच्चारणं  
 थिरत्तं सन्नद्धरणं धिइवलंवसाजं साहणघोपावनिवारणं निकायणा  
 भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोणो प  
 सन्नद्धाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमघो उत्तमघो एसखलुत्तित्थं  
 केरेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिजं पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय  
 संजमं उवइसिजं तिच्चुक्क सक्कयंठाणं अणुवगया नमोबुते सिद्धबुद्ध  
 मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय न  
 मोबुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहजं नमोत्थुते भग  
 वजं तिक्कट्टु इच्चैसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्चामोसुत्तकित्तणं  
 काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग  
 वंतं तंजहा सामाइयं चउवोसज्जं वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पच्च  
 रक्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअब्बे  
 सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ  
 गवंतेहिं पन्नत्तावा परुवियावा तेभावे सद्धहामो पत्तियामो रोएमो  
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्धहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं



फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपखस्स अंतोचउमासीए अंतो  
 संवच्चरस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपालियं  
 तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता  
 रणाए त्तिकट्ठुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नप  
 ढियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवी  
 रिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरि  
 हामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुढेमो अहारिहं तवोकम्मं  
 पायच्चित्तं पडिवच्चामो तस्स मिच्चामिदुक्कडं नमोतेसिं खमासमणाणं जे  
 हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं  
 कप्पियाकप्पियं चुलकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं  
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद  
 थुन तंदुलवेयालियं चंदा विच्चयं पमायप्पमायं वीयरगसुयं विहार  
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चस्खाणं महापच्चस्खाणं सव्वेहिंपिए  
 यंमि अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सगगंथे सन्नि  
 जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतोहिं भगवंतेहिं प  
 न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सहहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो  
 पालेमो अणुपालेमो तेभावेसहहंतोहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं  
 अणुपालंतेणं अंतोपखस्स जंवाइयं पढियं परिअट्ठियं पुच्चियं अणु  
 पेहियं अणुपालियं तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहि  
 लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्ठु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोप  
 खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपा  
 लियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प  
 डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विमोहेमो अकरणयाए अप्पुढे  
 मो आहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिवच्चामो तस्स मिच्चामिदुक्कडं न  
 मोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं



तंजहा उत्तरघण्टाई दसानकप्पोववहारो इसिभासियाई महानिसीहं  
जंबुद्वोवपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चंदपन्नत्तो दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा  
णपविभत्तो महल्लियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया वि  
वाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए  
वेलंधरोववाए देविंदोववाए उष्ठाणसुए समुष्ठाणसुए नागपरियाव  
लियाउ निरयावलियाउ कप्पियाउ कप्पवडिंसयाउ पुप्फियाउ पुप्फचु  
लियाउ वह्लोदसान आसीविसभावणाउ दिट्ठीविसभावणाउ चारणसु  
मिणभावणाउ महासुमिणभावणाउ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयं  
मि अंगबाहिए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए  
ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवि  
यावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो  
ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं  
अंतोपरुखस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपा  
लियं तंदुरुखस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिलाभाए सं  
सारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरुखस्स जंन  
वाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते  
बले संतेषीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो  
निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहमो अकरणयाए अणुट्ठेमो अहारिहं  
तवोकम्मं पायञ्चित्तंपडिवज्जामो तस्स मिञ्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमास  
मणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो  
सूयगडो ठाणो समवानं विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहान उवासगद  
सान अंतगडदसान अणुत्तरोववाइअदसान पणहावागरणं विवाग  
सुयं दिट्ठिवान सुदिट्ठिसुहान सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे  
भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणा  
वा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्व  
 हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो  
 पखस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपालियं तं  
 दुखस्सकयाएकम्मखस्सयाए मोहखस्सयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए  
 त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नपढियं नप  
 रियट्टियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिएसंतेपुरिस  
 क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामोविउट्टेमो  
 विसोहेमो अकरणयाए अणुट्टेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिव  
 ज्जामो तस्समिच्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणंजेहिंइमंवाइयं दुवाल  
 संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्ठं  
 ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्चामिदुक्कडं ॥ सुय  
 देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसंधायं ॥ तेसिंखवैउसययं, जेसिं  
 सुयसागरेभत्ती ? इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अब्पुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाठली घमियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमैष्टि स्म-  
 रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसअकी प्रथम दिवसें पन्नि-  
 लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें थाप-  
 नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी,  
 जूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीठें ख-  
 मासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह मुहपत्ती पन्नि-  
 लेहुं ? गुरु कहे, पन्निरेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती  
 पन्निरेहे. पीठें उजो थई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पोसह संदिस्तावं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही, ख-  
 मासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह ठानं ? गुरु कहे

ठाएह, पीठें इहं कही खमासमण देई उजो अई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-  
हकार जगवन् पसान करी, पोसह दंरुक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-  
च्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें पोसहं ॥ इहांसैं ले के अप्पाणं वो-  
सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पञ्चखाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पञ्चखाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसजं सबजं वा,  
सरीरसक्कार पोसहं, सबजं बंजचेर पोसहं, सबजं अवावार पोसहं,  
सबजं चनविहे पोसहे, सांवजं जोगं पञ्चखामि, जावदिवसं अहो-  
रत्तिं वा पञ्जुवासामि, डुविहं ति विहेणं मणेणं वायाए काएणं, न  
करेमि न कारवेमि, तस्स जं तें पम्किमामि निंदामि, गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो उच्चरे ॥  
पीठें एक खमासमणें ॥ इहंकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक  
मुहपत्ती पम्किहेहुं ? गुरु कहे, पम्किहेहेह. बीजी खमासमण देई  
मुहपत्ती पम्किहेह. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्सानं ?  
सामायिक ठानं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र उजो अको  
तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंतें उच्चरी दोय खमासमणें बे-  
सणो संदिस्सानं ? बेसणो ठानं ? कही, पीठें दोय खमासमणें सि-  
धाय संदिस्सानं ? सिधाय करुं ? कही खमासमण देई उजो अको,  
आठ नवकारनो सिधाय करे. शीतादि परिसहें दोय खमासमणें,  
पांगरणुं संदिस्सानं ? पांगरणुं पम्किघानं ? कहे. ए सर्व सामायिक-  
विधि पूर्वं कह्यो ठे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष ठे. पहिलां  
इरियावही पम्किमी ठे, तेमाटें इहां सामायिक दंरुक उच्चरयां  
पीठें इरियावही नही पम्किमीजें ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीयराय

सूधी करी कुसुमिण दुस्समिण कानस्सग्ग करे, पीठें पम्भिकमण-  
वेलासीम सिञ्चाय ध्यान करे. पीठें पूर्वोक्त रीतें पम्भिकमण करे,  
पण इतरो विशेष के चारे शुईयें देव वांढ्या पीठें खमासमण देई  
कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ बहुवेलें संदिस्सानं ? गुरु कहे,  
संदिस्सावेह. पीठें इच्छं कही खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥  
सं० ॥ ज्ञ० ॥ बहुवेलें करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इच्छं कही,  
तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीनृपाध्यायजी मिश्र  
२, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम-  
स्कार ज्ञणे, जो पम्भिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं  
चैत्यवंदनादि करी, सिञ्चाय करे. हवे पम्भिलेहण वेला पम्भिलेहण  
करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो वे तो पण संक्षे-  
पें फेर लखीयें ठेबें. दोय खमासमणें, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ०  
॥ पम्भिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पम्भिलेहें. पीठें दोय खमा-  
समणें अंग पम्भिलेहण संदिस्सानं ? अंग पम्भिलेहण करुं ?  
कहे. पीठें गुरुवचनें इच्छं कही. धोतियो कणदोरो पम्भिलेही  
वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इच्छकार जगवन् ! पसान करी, प-  
म्भिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पम्भिलेही स्थापे,  
अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पम्भिलेहे, तो पण खमासमण देई  
उक्त रीतें आग्या मागे. पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं०  
॥ ज्ञ० ॥ उपधि मुहपत्ती पम्भिलेहुं ? गुरु कहे, पम्भिलेहेह.  
पीठें इच्छं कही, मुहपत्ती पम्भिलेही दोय खमासमणे ॥ इच्छाका०  
॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ नही पम्भिलेहण संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्सा  
वेह. नही पम्भिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मध्ये उच्चारें पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें  
 पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे  
 ॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पा-  
 सवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणे अहि-  
 यासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आ-  
 गाढे दूरे उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पास-  
 वणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥  
 आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उ-  
 च्चारें पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पास-  
 वणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणे अणहि-  
 यासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥  
 अणागाढे मध्ये पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पास-  
 वणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणे अ-  
 हियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ २०  
 ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे  
 आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणे अ-  
 हियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए  
 अंमिलपमिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ अंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम  
 पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवज्जेके नीतर पासें दहिणें ३,  
 वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासें पमिलेहे  
 ॥ ६ अंमिलां जिहां उच्चार प्रस्त्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ  
 पमिलेहे ॥ इति २४ अंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीठें इच्छं कही, कंबल वस्त्रादि पमिलेही पोसह शाला प्र

मार्जी काजो विधिशुं परवो, एक खमासमण देई इरियावही पम्किमे. इहां आचार दिनकरमें कह्यो ठे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्तानं ? वसती पम्किहेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे. इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, ज्ञणे, गुणे. वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण पहर दिन चढ्यां. उग्याडा पोरिसी अथवा, बहुपम्पिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पम्किमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ज० ॥ पम्किहेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पम्किहेही पान जोजन पात्र पम्किहेही राखे. पीठें सिधाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्तही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्र स्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रजुजीके दक्षिण पार्सें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पार्सें बेसे. पीठें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीठें नमोबुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पम्किमे. एक लोगस्सनो कान्जस्सग करे. मुखें लोगस्स कहे. संमासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. “जं किंचि नाम तिष्ठं” इत्यादि कही पीठें नमो बुणं कहे. उज्जो अई अरिहंत चेईयाणं करेमि कान्जस्सगं वंदणवत्ती०



अन्नबू० कही, एक नवकारनो कानुस्सग करे, पारी एक शुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नबू कही एक नव० पारी दूरी शुईकी गाथा कहे, पीठें पुक्करवरदी० सुअस्स जग० वंदण० अन्नबू कही एक नवकार० पारी तीसरी शुईकी गा० पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नबू० इत्यादि कथन पूर्वक चौथी शुईकी गाथा कह कर, बैठकें नमोबूणं कहे, फेर अरिहंतचेई० कहे, इसी तरें चार शुईयें देव वांदी बैसैं ॥ नमोबूणं कहे, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे, पीठें जयवीयराय कही, नमोबूणं सव्वे तिविहेणं चंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे, तथा चैत्यवंदन बृहज्जाप्यमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही दोय चार चार शुईसैं देव वांदे, फेर शक्रस्तव कही “ जावंति चेइयाई ” गाथा जणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे, वली नमोबूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीठें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पम्पिकमे, पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चख्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणोकूं पच्चखाण पारे ॥

॥ हवे पच्चख्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्पिकमे, फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ पच्चख्खाण पारवा मुहपत्ती पम्पिलेहुं ? गुरु कहे, पम्पिलेहेह ॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पम्पिलेहे, फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥



ज्ञ० ॥ पाणहार अमुक पञ्चख्वाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का यवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज्ञ० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तवो. पीठें तहत्ति कही, अमुक पञ्चख्वाण चउविहार कयों, एम एक नवकार गुणी पञ्चख्वाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिच्छामि उक्कमं, कही ॥ चैत्यवंदन करे, कणमात्र सिज्जाय करी यथासंज्ञवें अतिथिसंविज्ञाग करी पाणीपीवे ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पञ्चख्वाण पारी आहार करे. पीठे आसण बैठो अकोहीज दिवस चरिम पञ्चख्वे, पीठें इरियावही पम्किमी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चख्वाण पारणेका विधि ॥

॥ पीठें जो बहिर्जूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी अको, निर्जीव अंमिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजळें शुद्ध अई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही पम्किमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ गमणा गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीठें इहं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संता सा पूंजी, अंमिलो पम्किही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंमियं, जं विरा हियं, तस्स मिच्छा मि उक्कमं, एम कही बेसे. पीठें पम्किहण वेला सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठले पहुरे इरियावही पम्किमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ पम्किहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इष्टं कही दूजे खमासमणें इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीठें इष्टं कही, मुहपत्ती पन्धिलेही दोय खमासमणें अंग पन्धिलेहण संहिस्सानं ? अंग पन्धिलेहण करुं ? कहे. पीठें गुरु वचनें इष्टं कही मुहपत्ती पन्धिलेही दंमासणो पूंजणी प्रमुखत्तें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जें. पीठें काजो शुद्ध करी, नदरी एकात्तें विखरतो परठवी इरियावही पन्धिकमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इच्छकार जगवन् पसानु करी पन्धिलेहणां पन्धिलेहावोज ॥ पीठें स्थापनाचार्य पन्धिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा आपनाचार्य समीपें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पन्धिलेहुं ? गुरु कहे, पन्धिलेहेंह. पीठें इष्टं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पन्धिलेहे. पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय संहिस्सानं ? सिद्धाय करुं ? उक्त रीतें कणमात्र सिद्धाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु सार्वे पाणिहार पच्चस्के ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो चांदणां दोय देई, पच्चस्काण करे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्धिलेहण संहिस्सानं ? बोजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्धिलेहें ? गुरु वचनें इष्टं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणो संहिस्सानं बेसणो ठानं ? कही बेसे, वस्त्र कंबलादि पन्धिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पन्धिलेहे. उपवासी तो ठे तेमाटें सर्व पाठो कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पन्धिलेहे, उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो कम्पिट्यादि पन्धिलेह्यां. पीठें वस्त्र कंबलादि पन्धिलेहे. ए विशेष ठे ॥ पीठें कालवेला सीम सिद्धाय ध्यान करे. पीठें उच्चार प्रश्रवण ३४ थंमिला पन्धिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पांखी चउमासी पन्धिकमणो करे, संवच्छरीधें

संवहरी पम्किमणो करे. तिहां देवसी पम्किमणो पूर्वे लिख्यो  
ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसिय आलो  
एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीठें “ ठाणे कमणे चंकमणे ” इ  
त्यादि पाठ कहे. खुदोवदव काउस्तग किंयां पीठें दोय खमासम  
णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिधाय संदिस्तानं ? सिधाय करुं ?  
कही बैगो थको तीन नवकार प्रमुख सिधाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पम्किमणविधि आगें एही पुस्तकमें  
लिख गये हैं. वहासैं जान लेनां.

॥ हवे पम्किमणो हुवा पीठें साधुको वेयावच्च करी पोरसी  
सीम सिधाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ज  
कहेतो थको, जूमि प्रमार्जे थमिल स्थानकें जई, देहशंका निवारै  
प्रश्रवण बोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. जगवन् ! बहु पम्पुत्रा पो  
रसी एज कही खमासमण देई इरियावही पम्किमे, पीठें राई  
संधारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राई संधारा  
मुहपत्ती पम्लिहेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहंह. पीठें इच्छं कही, खमास  
मण देई मुहपत्ती पम्लिहे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ राई संधारो संदिस्तानं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०  
॥ ज० राई संधारो ठावुं ? पीठें गुरु वधनें इच्छं कही, चउकसाय  
पम्मिज्जुद्धरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूची  
चैत्यवंदन करे. जूमि प्रमार्जी, संधारो उत्तर पटो पाथरे. पांठें  
शरीर प्रमार्जी निस्तही निस्तही एम कही संधारे बेसी, तीन  
नवकार तीन करेमि जंते ऊच्चरी ॥ एमो खमासमणाणं, गोयमा  
ईणं महामुणीणं, अणुजाणह जिघिक्का अणुजाणह परम गुरु

इत्यादि राइ संथारा गाथा ज्ञानी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवानो फेर तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेर, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पम्किमे ॥ पीठें जघन्यें पण तीन गाथानी सिधाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पदोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पम्किमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्तुमिण काउस्तग्न करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पम्किमे. पीठें दोयखमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार गुणी, पम्किमण वेला सीम सिधाय करे. पम्किमण वेला हुवां पम्किमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष ठे, के राइ आलोयां पीठें संथारा नवदणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पम्किमणो करी पम्किमेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पम्किमेहण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊढरी इरियावही पम्किमे. दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. पीठें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पम्किमेह. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तवो. पीठें तदति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रे उजो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पम्किमेह, पीठें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहै हैं ॥

॥ तिहां जिले प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊचरयो है. पीबैं संध्यानी पमिलेहण करतां रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो पञ्चस्काण कियां पीबैं दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंरुक ऊचरे. तिहां जाव रत्ति पङ्जुवासामि एम पाठ ऊचरे, पीबैं सामायिक विधि पूर्व लिख्यों तिम करे पण सामायिक ऊचरयां पीबैं दोय खमासमणें सिद्धाय संदिस्तावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्तावी, पांगरणो संदिस्तावी, पीबैं दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही थंमिलां पमिलेहण संदिस्तानं उही थंमिलां पमिलेहण करुं? गुरु कहै, करेह. इच्छं कही उपधि पमिलेहे. आगें सर्व क्रिया पूर्व लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव थये, पाठले पहर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरथो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पमिलेही इरियावही पमिकमे. पीबैं चउविहार पञ्चस्काण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंरुक ऊचरे. तिहां दिवसेसरत्ति पङ्जुवासामि कहे. संध्या हुवे, तो रत्ति पङ्जुवासामि कहे. पीबैं बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पमिलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि जंते ऊचरे. दोय खमासमण देई सिद्धाय संदिस्तावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्तावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्तावे, पीबैं बे खमासमण देई, अंग

पमिलेहण संदिस्सावी, मुहपत्तो पमिलेहे. फेर बे स्वमासमण देई, नही थंमिलां पमिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्यां हुवे, तो पण था नक शून्यता टालवा जणी वली आसण पडिलेही, पडिकमण बे ला सीम सिधाय ध्यान करे. पोठें उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिका पडिलेही पडिकमणो करे. तथा पाठलो रातें वली सामायिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेक्कमणे चंकमणे आनुत्ते अणानुत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे सबस्सवि देवसिअ, डुच्चितिय डुप्पासिय डुच्चिठिय ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥ १ ॥ संधारानुवट्टणकी, आनुट्टणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, उप्पइयासंघट्टणकी, अच्चसुक्खिसयकायकी, सबस्स विराअ, डुच्चितिय, डुप्पासिय, डुच्चिठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके  
प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ मंहीमंमणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलत्ताणमेहं ॥  
महानंद लब्धी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तिष्ठरायं ॥ १ ॥  
पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सब जवाण ताया  
॥ तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दित्तु ते मे तिलोयप्पहा-  
णा ॥ २ ॥ डुरुत्तार-संसार कुंवार पोयं, कलंका वली पंकपस्काल-



तोयें ॥ मणौवेठियछे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहर्षं  
॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंजो जलीणा, कलारूव लावण सोदग्ग  
पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि जाणं, सिरी न्जारई देदि मे  
सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमदिव्य  
पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि  
तत्कारिणां, श्रीपंचाननलाठनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्  
॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच  
सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचशुषीकनिर्जयमयो प्राप्ता  
गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतजृतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥  
पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं  
पंचेपुपंचत्वदम् ॥ दीपाज्जं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी,  
पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां  
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, जक्तानां जविनां गृहेषु व-  
हुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्लो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न  
पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धायिका त्रायिका  
॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चन्नवीसे जिनवर, प्रणमं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करिये,  
चंद्रप्रज्जुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीठां  
डुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रज्जु  
जीना पाय ॥ इंद्राणी अंपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर  
दीपे मिलि सुरवरनी कौड ॥ अठाइ महोच्चव, करता झोडाझोड  
॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरे, जाणी लाज्ज अपार ॥ चन्नमासे रद्धिया,



गणधर मुनि परिवार ॥ नविषण्णे तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध  
साकरणी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणुं, क  
रिये व्रत पञ्चकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥  
आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कळयाण ॥ जिनसूखसूरि कहे,  
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मध्येर्जन्म  
व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वल्लैकादश्यां सहसि लसद्दाममहसि,  
क्षितौ कळयाणानां कृपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वद्रथेया  
गमनगमनैर्नृमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥  
जिनानामप्यापुः कृणमत्सुखं नारकसदः, क्षितौ ० ॥ २ ॥ जिना  
एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुणामिति च विदि  
तं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुन्नवेयुर्वहुमुदः, क्षि ० ॥ ३ ॥  
सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखि  
लज्जवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तुणां विदधति सुखं विस्मि  
तहृदः, क्षितौ ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ डेंडेंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ध्रलकिधर, धपंधोरवं ॥  
दोंदोंकि दों दों, दागिडि दागिडिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥  
ऊजिऊँकि ऊँऊँ, ऊणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर  
शैल शिखरे, जवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि  
श्रोंगिनि, किटति गिगुंशंधुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणगुणगण,  
रणकि ऐंऐं, गुणगुणगण, गौरवं ॥ ऊजि ऊँकि ऊँऊँ, ऊणण र  
णरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितक  
लमल, मुकलमीश, महेजनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें, ठहेंठ ठ

ह्रिक, ठह्रिपट्टा, ताड्यते ॥ तल्लोकि लोलों, त्रैषि त्रैषिनि, मैषिमैषि  
नि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल  
रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुहवे ॥ ३ ॥  
पुंदांकि पुंदां, पुषुड्दि पुंदां पुषुड्दि दोंदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट,  
रणकि ऐंऐं मणण मैमं, मंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस,  
सस ससस सुर, सेवतां ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु  
शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन ० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी  
जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ्र समता रस धामी जी ॥  
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव  
श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज  
पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाणचरण तप उत्तम,  
नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरतां लहियें, अविचल  
पद अविनाशी जी, ते सयला जिननायक नमियें, जिएं ए नीति  
प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास  
जगीशें जी ॥ नजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें  
जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरें सरो जी ॥  
इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारों जी ॥ ३ ॥  
विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्रसरि देवी जी ॥ नवपद से  
वक जविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गह ना  
यक सदगुरु, श्रीजिनज्जि मुनिंदा जी ॥ तासु पसार्ये इणपरि  
पन्नणे, श्रीजिनलाज सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गांजं जिनवर वीर, जिनपर्व पजु

सण, दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूँती दिन पंचास,  
 पन्तिकमण संवहरी करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर  
 पूजा सत्तर प्रकार, करियें जलें जावें जरियें पुण्य जंमार ॥ वलि  
 चैत्य प्रवामें फिरतां लाज्ज अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि  
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प  
 सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर  
 जस्केव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा  
 हम्मीवहल करियें वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी-  
 लधार ॥ अरुदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध  
 कहे जिनलाज्ज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूपणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअकौजितं, धन  
 सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंठन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन  
 त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर  
 वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदे श्रीआदिजिनवर  
 वीर जिन पावापुरे, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय  
 गिरिवरे ॥ समेतशिखरे चीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू,  
 चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार  
 अंग उपांग बारे दश पयत्ता जाणियें, ठ छेद अंग प्रसन्न अन्ना  
 चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन  
 मत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी जाण्य पेंतालीस आगम ध्याइयें  
 ॥ ३ ॥ डुहुं दिसें बालक दोय जेइने सदा जवियण सुखकरू,  
 डुख हरे अंबा लुंब सुंदर डुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंरुण  
 नेमि जिनवर चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुवें सदा मंगल करे  
 अंबा देवियें ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंरुण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुपष्ठतपसा पर्थकपर्यासनः, ह्रमापालप्र  
 शुद्धस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे  
 तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र  
 भुम् ॥ १ ॥ यज्ञर्त्तागमनोद्भव व्रतवरज्ञानाक्षरासिद्धिणे, संभूयाशु  
 सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् कृणात् ॥ श्रीमन्नाज्जिन्नादिवोरच  
 रमांस्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानवचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने  
 नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाज्जिध,  
 स्तत्पश्चाज्जणनायका विरचन्नाचक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमन्तीर्थसमर्थनै  
 कसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयांनावुककारकप्रवचनं चेतश्चम  
 त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्ञावनपरा सिद्धाधिका देव  
 ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन  
 चंडगीस्मुमतिनो ज्ञव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने  
 शार्दूलविक्रीमितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेद्विपे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण-  
 कमल तसु नामूं सीस । अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पं  
 च मेरुपासे ऊलकंता । सोदे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर ठे  
 जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ २ ॥ गणहर कहिय  
 डुवालस अंग । आनक वीस ज्ञण्या तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे  
 आणे रंग । ते नर पाभे सुख अजंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी च  
 उवीस । पूरे मुऊ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे ।  
 तिहुअण जे मन वंठिय सारे ॥ ४ ॥

## ॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ न  
 गरजेसलमेरविभूषणं । जजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरे  
 श्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहजंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुख  
 कारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जि  
 नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका ।  
 फलति तस्य मनोरथमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।  
 जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु  
 सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तिष्ठहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधरणं ॥ पंकज  
 वप्पयदेवगणं । सिरिअव्वय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसि  
 यपायजुआ धणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया ।  
 मम हुंति जिनागमसुखसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । क  
 द्धाणपथोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जि  
 नागममन्हिकरं ॥ ३ ॥ सिरिंदसमुज्जलगायलया । सुहज्जाणविणम्मि  
 यएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुस  
 या ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

## ॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमात्मपदधारीजी । प्रथम  
 जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन  
 राज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिने  
 सर, आत्मसंपद भूषोजी ॥ १ ॥ पांच जगत वलि पांचे एरवत,  
 पंच विदेह मज्जारोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्यासिव  
 पद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, आस्थे इणही प्रका

रोजी । संप्रति काळे वीस विदेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥  
 अरथे श्रीजिनराज चखाएया, गूण्यां श्रोगणधारोजी । अंग डवाखत  
 अतिते उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अंग  
 प्रमाणे, जिहां षट्पञ्च विचारोजी । ते आगम मन श्रुद्ध आराध्यां,  
 सूट्टे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरिंदे  
 वाजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वंढित नित सेवीजी  
 ॥ कंठपाण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजि  
 नचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र  
 णामे देव अने देविंद ॥ ज्वलहरी गहरी सब मन धरी अमंद ।  
 श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति  
 वाय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतोस ॥ अगणि  
 त कडिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंडुजिन चोवी  
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनूपम जिन ज्ञापित सिद्धांत । स्पाद्वादन  
 पादिक हेतुशुक्ति नवि अंत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह  
 भाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी  
 साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥  
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो  
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञारी ॥

॥ यदं हि नमता देव । देहि नः संति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु  
 वीरस्य ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नान्ते  
 यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःस्के  
 च्चः ॥ २ ॥ वदंति वृंदाकृष्णामृतो जिनाः । सदर्थतो यद्वचयंति



सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुसुक्तवे ॥  
३॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः । सर्वज्ञाशासनसुखायसमुद्यता  
भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञानान् जनान्नयसु नित्य  
ममङ्गलेज्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोजारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैनाः पादा युष्मान् पांतु २ जैवं  
वाक्यं जूयाद्भूतै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी  
स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूर्ति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन  
त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक छंदन सात हाथ तनु मान, दि  
नश्च सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर जरवर किन्नर वं  
दित पद अरविंद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जज्ञि  
यणने तारे प्रवहणसम निसदीप्त, चौबीसे जिनवर प्रणामु विसवा  
वीस ॥ २ ॥ अरण्ये करि आगम ज्ञाख्या श्रीजगवंत, गणधर ते  
गूंछ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके  
एकांत, समरुं सुखदायक मन सुख सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धाखि  
का देवी वारे विघ्न विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥  
अहनिसि कर जोम्मी सेवे सुरनर इंद, जंघे गुणगण इम श्रीजिन  
लाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनेनां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाजियं संचर्य तं, अजियसुविद्वयं, नंदनं सुवयवा ॥ सु  
प्पासं पञ्चमनाहं, सुविधशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयसं च  
मेशातिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुण्डं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,  
नमिमविनमिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गण्डे हाणेषु जम्मे,



जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मज्जार ॥ जिनवरनी पद्मिमा  
जिन सरखी सुखकार । शुभ ज्ञावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥  
दुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । जवच्छेद कृपाणी मीठी  
अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिवूजो जवि प्राणी । सुय  
देवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजगिरि नमिये ऋषज्जदेव पुंरुरीक । शुभ तपनी म  
हिमा सुण गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवास विधिसुं चैत्य  
बंदनीक । करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र  
स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अकृत गिणतीसे चढता तिम  
चालीस ॥ पंचासनी पूजा ज्ञावइ इम जगदीस । तेहिज नित प्र  
णमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनी पूनम चैत्र मास  
शुभ वार । विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले  
वरसलग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे जवनो पार  
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्रेसरीदेवी से  
विय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंफे  
गणनायक श्रीजिनलाजसूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद  
महिमा ज्ञापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमंथी नव  
दीस । नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि  
हंत बलि सिद्ध आचारज उवज्जाय । मुनि दरसन तिम बलि नाण  
चरण तव आय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हज्जार । सहु  
जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वारस अरुवत्तीस पण वी  
स संग वीस सार । समसठ इक्कावन सितर पञ्चास प्रकार ॥ इण

संख्या कान्तग परदक्षा परिणाम । आगम ज्ञाषित विधि इम  
कीजे अन्निराम ॥ ३ ॥ चक्रेसरिदेवी तिम विमलेसर जस्क । श्री  
पालतणीपर पूरे वंछित सुस्क ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र ज्ञवि  
प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अन्निनव कामी  
जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदधन धामीजी ॥ आनक  
वीसे आगम ज्ञाणिया वीतराग गुण जुक्ताजी । जे नर अंतर आ  
तम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन  
सूरी शिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र  
ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत  
तिष्ठ जूपोजी । ए पद निज ज्ञवि ज्ञावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो  
जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी  
। इव्यज्ञावसें विधि परकासे तीर्थंकर पद स्वासोजी ॥ तीजे ज्ञव  
वर वीस आनकनी सेव करे ज्ञव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे  
निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल  
हे मोटो श्रीसुरदेवि सहाईजी । खरतर गच्छ जिन आज्ञाधारी पा  
ठोदर वरदाईजी ॥ जिन सौजाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण  
गावेजी । संघ सकलकं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥  
४ ॥ इति श्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध षवयण आचारज शिवराण । उवजाय साहू  
नाण दंसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम  
जिनज्ञाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उ  
त्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । बलि काल जघन्ये जिनवर

वीस गंजीर ॥ जिन आय अमंत अतीत अनागत काल । ए वीसे  
 आनक आराधी गुणमाल ॥ १ ॥ आवश्यक वे वेला जिनवंदन  
 त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ कान्तसग  
 गुण स्तवना पूजा प्रज्ञावना सार । इम शासन वञ्चल करतां ज  
 वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जस्क  
 जस्कणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ आनकतप विधसुं जे सेवे  
 मन रंग । देवचंड आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥  
 नवपदमांहे सुख्य वखाण्या रुपज्ञादिक जिनचंदाजी ॥ ज्ञाव धरी  
 ने जे ज्ञवि वंदे वेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो  
 पावो सुख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवद्याया सकल  
 मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं  
 नारीजी ॥ नवमें नवज्ञवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी ।  
 वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे ज्ञाखीजी ॥ २ ॥ द्वादस आठ ठत्तीसे  
 गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । सरसठ इक्कावन वलि जैती  
 सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम  
 छी नव दिहसैंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंबिल नव  
 विहसैंजी ॥ ३ ॥ विमलयक्ष चक्रेसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता  
 जी । नली नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर  
 गह्व जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद नुक्ताजी । जिन सौजाग्यसूरिंद  
 पलाये हंससूरिंद गुण नुक्ताजी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंमन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही  
 केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

रिसिखरे समवसरया सुखकंद ॥ १ ॥ इण चञ्चवीसीमां रुषज्जादिकं  
 जिनराय । वलि काल अर्ताते अनंत चोवीसी आय ॥ ते सवि इण  
 गरवर आवी फरसी जाय । इम ज्ञावी काले आवस्ये सवि मुनि-  
 राय ॥ २ ॥ श्रीरुषज्जना गणधर पूंरुकीक गुणवंत । द्वादस अंग  
 रचना कीधी जेण महंत ॥ सब आगममांहे सेत्रुंज महिम महंत  
 । ज्ञाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुह  
 कवरु पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण आपे इंड उदार ॥ देवचंड-  
 गणि ज्ञाखे ज्ञविजनने आधार । सब तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार  
 ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर अचेरा उदर अवतरियाजी  
 । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथणापुर सुख करियाजी ॥ इत  
 उपड्व मारि विकारी शांति करी संचरियाजी । जे ज्ञवि मंगल  
 कारण ध्यावे ते हुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्तमान जिन सब  
 सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । बारे चक्री नव नारायण नव  
 प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सलाका वंदत पाप निकं-  
 दोजी । डव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे जवज्जय वंदोजी ॥ २  
 ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी ज्ञाखीजी । डव्य  
 ज्ञाव बिहुं जेदे पूजा महानिसीषे साखीजी ॥ विषय निवृत्ती सत्  
 आरंजे विनय तपी ते जाणोजी । गुज्जयोगे नहि आरंजकारी जग  
 वड अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ आपना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने  
 सुखकारीजी । कारणथी सब कारज सीजे जिनवर आज्ञा धारीजी  
 ॥ श्रीजिनकीर्त्ति सूरेश्वर गच्छपति पाठक श्रीरुदिसारीजी । सम-  
 कितधारी देव सहाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांति-  
 नाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुख वंदो ज्ञावे ज्ञविषण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसें  
धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति  
सत्यकि नंदन वृषजलंठन सुखदायाजी । विजय जलो पुखलावड  
विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ  
होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस वि-  
ख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी ।  
ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥  
अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिश्यात  
तिमिरजर नासन अजिनव सूर समाणीजी ॥ ज्ञबोदधि तरणी  
भोक्क निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय  
समाणी आराधो ज्ञविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी  
श्रीपंचागुली माईजी । विघन विचारण संपत्तिकारण सेवकजन  
सुखदाईजी ॥ त्रिजुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति स-  
वाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनदर्प सदाईजी ॥ ४  
॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम  
पंचम तपविधि वायक ज्ञायक ज्ञाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांठन  
लांठित वंठित दान सुदह । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो  
ज्ञविजन पद ॥ १ ॥ पुरण पंच महाश्रव रोधक बोधक ज्ञव्य उदार  
। पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंडिय  
दम सिव पहुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर ज्ञविषण  
उपर सुश्रिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार थुरंधर जुगवर पंचम  
गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित ज्ञाजत मद पंच वाण

॥ पंचम काल तिमरजरमांहे दीपकसम सोजंत । पांचम तपफल  
मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-  
वाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह ज्ञानी  
सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री  
जिनलान्न सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-  
पंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमद्वि जन्म  
व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार ।  
ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक  
अधिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डगुणा  
दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥  
२ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । बलि गुणनो गुणिये  
विधिसेती सुविदास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान ।  
इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर जुवण  
वण सम्यग् दरसनवंत । जिनचंड सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ  
सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कल्याण  
॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादसीस्तुति ॥

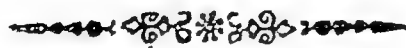
॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल  
जाख्यो श्रीजगवंत ॥ नरनारी ज्ञावे आराधो तप एह । सुख संपत ली-  
ला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ ऋषज्जादिक जिनवर रोहिणी तप सुविचार ।  
जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो  
उपवास । मन वंठित लीला सुंदर जोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो  
बोळ्यो लान्न अनंत । विधसुं परमारश्च साधे सुधो संत । सुखदो

हग तेहनो नासि जाय सब दूर । बलि दिन९ अंगे बाधे अधिको  
नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौजाग्य  
सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर९ महोत्सव नित नवला  
सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पख्खी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गच्छ  
चोरासी जेहने आप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस  
कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम९ संशय  
जाय ॥ १ ॥ चउबीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, क  
ढपसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर ठाम९  
तुम देखो चउदस पखी होय, नूला कांड जमो तुम प्राणी लावो  
जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चउदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख,  
जविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी ज्ञाख ॥ आवश्यक  
सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर  
बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो  
मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन ह  
रेय ॥ सेवक इणपर करे चीनती सूधो समकित पाय, खरतरगच्छ  
मंरुण कुमति विहंरुण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पखी  
चोदस शुद्ध संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यन्ते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवज्जयं, संतिं च पसंतसवगयपावं ॥ जंअ  
गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणउरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥



ववगय मंगुल जावे, तेहं विजलतवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्प  
 जावे, थोसामि सुदिठ सप्पावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सब दुक्कप्पसंतीणं,  
 सब पावप्पसंतीणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतीणं ॥ २ ॥  
 सिलोणो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं  
 ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥  
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संघिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अ  
 जिअं निचिअं च गुणेहिं महासुणि सिद्धियं ॥ अजिअस्स य संति  
 महा सुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निवुइ कारणयं च नमं  
 सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुक्कवारणं, जइअ विम  
 ग्गह सुक्ककारणं ॥ अजिअं संतिं च ज्ञावन्, अन्नयकरे सरणं पव  
 ज्झहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय ज  
 रमरणं, सुर असुर गरुड ज्ञुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिअ म  
 हम्मविअ, सुनय नय निज्झणमन्नयकरं, सरणमुवसरिअ ज्ञुवि दिवि  
 ज, महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम  
 नित्तम सत्तधरं, अज्झव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संति  
 अरं पणमामि दमुत्तम तिठयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं  
 दित्तव ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावन्निपुवपन्निवं च वरहन्नि मत्तय प  
 सत्त विन्निन्न संघिअं थिर सरिह चहं मयगत लीलायमाण वर गंध  
 हन्नि पन्नाण पन्थियं संघवारिहं हन्निहन्नि बाहुं धंतकणग रुअग नि  
 रुवहय पिंजरं पवर लक्कणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहम  
 णान्निराम परम रमणिज्ज वरदेव उंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं  
 ॥ ९ ॥ वेढुव ॥ अजिअं जिआरिणं, जिअ सव्वज्जयं ज्ञवो हरिणं ॥  
 पणमामि अहं पयवन्, पावं पसमेव मे ज्ञयवं ॥ १० ॥ रासालुद्ध  
 व ॥ कुरु जणवय हन्निणावर नरीसरो पढमंतव महाचक्कव  
 द्विजोए महप्पजावो जो ब्राह्मतरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

धुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणोहिं, तो देव बहुहिं पथन पणमिअ  
 स्सा ॥ जस्त जगुत्तमसासणयस्सा, जत्तिवसागयपिंमिअआहिं ॥  
 देव वरचरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंमिअआहिं ॥ ३० ॥  
 ज्ञासुरयं ॥ वंस सद तंति ताल मेलिए तिउक्कराजिराम सद मी  
 सएकए अ, सुइसमाणेअ सुइ सज्ज गीअ पाय जालघंठिअहिं ॥  
 वलय मेहला कलावनेउराजिराम सद मीसए कए अ देवनट्टिआहिं  
 ॥ हाव ज्ञाव विअमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय  
 जस्तते सुविक्रमाकमा ॥ तयं तिलोअ सब सत्त संतिकारयं पसंत  
 सब पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥  
 तज चामर पणागज्जुअ जव संमिआ, ऊयवर मगर तुरय सिरिवच्च  
 सुलंठणा ॥ दीव समुद मंदरदिसागयसोहिआ, सच्चिअ वसह सी  
 हसिरिवच्चसुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा,  
 अदोस डुवागुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहीं इठा  
 रिसीहीं जुठा ॥ ३३ ॥ चाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,  
 सवलोअहिअ मूल पावया ॥ संशुआ अजिअ संति पावया, हुंतु  
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि  
 जलं, शुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,  
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु  
 रं सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउं मे विसायं, कुणअ परि  
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं सोएउ अनेदिं, पावेउअ नं  
 दिसेणमज्जिनेदिं ॥ परिताडवि सुहनंदिं, सम य विसन संजमे  
 नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चान्मसासिय, संवचरिए अवस्त  
 ज्जिअवो ॥ सोअवो संवहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥  
 जो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जलं कालंपि अजिअ संतिअयं ॥ न हु  
 हुंति तस्त रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छइ परम

पयं, अहवा किरिं सुविचमां जुवणे ॥ ता तेलुकुद्धरणे, जिणव  
यणे आथरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्त  
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उद्धासिक मनस्क निगयपहा दंरुल्लेणंगिणं, वंदारुण  
दिसंत इव पयं निवाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंडुल्लव दंतकंति मिसन  
नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इल्ल सोलस जिणे ओसामि खेमंकरे  
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो  
जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म  
हव संतिं सो समञ्जो णणेनं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासजत्ति  
प्रेरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता  
एंतासामञ्जुसिं, फलहइ लहु सव्वं वंठिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सय  
लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरइ लहु डुवा निठदोषट्ठणं  
॥ नमिरसुर किरीडू गिठ पायारविंदे, समय अजिअ संती ते जि  
णिंदे जिंवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्ठए देहदित्ती, विलसइ  
जुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारठित्ती,  
जिणजुअ पयजत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं जू  
रिदिवंगहारं, फुरुगणरसज्जावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज  
इंसणत्ते अज्जीया, इव पुणमणि बंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥  
थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा ठज्जए जा  
णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिरंज्जा रंजनिवाणलत्ती, घणअणघुसि णिक्कु  
प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयजंगं वठ्ठणिच्चं अणिच्चं, सदसद  
णज्जिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं,  
वयण मवय णिज्जं ते जिणे संज्जहामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए  
ताव मोहंययारं, जमइजय मससं तावमिच्छतवसं ॥ फुरइ फुरुप

धुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणोहिं, तो देव वहुहिं पयन पणमिअ  
 स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, जत्तिवसागयपिंदिअआहिं ॥  
 देव वरचरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंदिअआहिं ॥ ३० ॥  
 ज्ञासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिगस्कराजिराम सद्द मी  
 सएकए अ, सुइसमाणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालवंटिअहिं ॥  
 वलय मेहला कलावनेनराजिराम सद्द मीसए कए अ देवनट्ठिआहिं  
 ॥ हाव ज्ञाव विप्लमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय  
 जस्सते सुविक्रमाकमा ॥ तयं तिलोअ सब सत्त संतिकारयं पसंत  
 सब पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥  
 वज्र चामर पद्मागज्जुअ जव संदिआ, ऊयवर मगर तुरय सिरिवच्च  
 सुलंठणा ॥ दीव समुद्ध मंदरदिसागयसोहिआ, सच्चिअ वसह सी  
 हसिरिवच्चसुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा,  
 अदोस डुठागुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहीं इठा  
 रिसीहीं जुठा ॥ ३३ ॥ चाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,  
 सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संशुआ अजिअ संति पावया, हुंतु  
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि  
 जलं, शुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,  
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु  
 रक्क सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेलं मे विसायं, कुलानअ परि  
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएण अनंदिं, पावेनअ नं  
 दिसेणमज्जनंदिं ॥ परिताडवि सुहनंदिं, मम य विसन संजमे  
 नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चान्दम्मासिय, संवच्चरिए अवस्स  
 ज्जिअवो ॥ सोअवो संवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥  
 ज्ञो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जलं कालंपि अजिअ संतिअयं ॥ न हु  
 हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छ परम

पयं, अहवा कितिं सुविहमां जुवणे ॥ ता तेलुकुद्धरणे, जिणव  
यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्त  
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उद्धासिक मनस्क निगयपहा दंरुहलेणंगिणं, वंदारूण  
दिसंत इव पयमं निवाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंउज्जल दंतकंति मिसन  
नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इज्ज सोलस जिणे ओसामि खेमंकरे  
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो  
जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म  
हव संतिं सो समञ्जो ण्णेजं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु छासज्जत्ति  
अरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता  
एंतसामञ्जसिं, फलहइ लहु सव्वं वंठिअं णि. णेअं मे ॥ ३ ॥ सय  
लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरइ लहु डुवा निठदोघट्ठणं  
॥ नमिरसुर किरीडू गिठ पायारविंदे, समय अजिअ संती ते जि  
णिंदे निवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्ठए देहदित्ती, विलसइ  
जुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारठित्ती,  
जिणजुअ पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ल. लियपयपयारं जू  
रिदिवंगहारं, फुरुणरसज्जावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज  
दंसणठे अज्जीया, इव पुणमणि वंधा कास नट्टोवचारं ॥ ६ ॥  
अणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा ठज्जए जा  
णिमुत्ती ॥ सरज्जत परिंज्जा रंजनिवाणलब्धी, घणअणघुसि णिकु  
प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयज्जंगं वठ्ठणिच्चं अणिच्चं, सदसद  
एज्जिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं,  
वयण मेवय णिज्जं ते जिणे संज्जरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए  
ताव मोहंयचारं, जमइजय मससं तावमिठत्तवसं ॥ फुरइ फुरुप

थुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणोहिं, तो देव बहुहिं पयन पणमिअ  
 स्सा ॥ जस्स जगुत्तयसासणयस्सा, जत्तिवसागयपिंमिअआहिं ॥  
 देव वरञ्जरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंमिअआहिं ॥ ३० ॥  
 ज्ञासुरयं ॥ वंस सह तंति ताल मेखिए तिञ्जकराजिराम सह मी  
 सएकए अ, सुइसमाणेअ सुइ सज्ज गीअ पाय जालवंटिअहिं ॥  
 वलय मेहला कलावनेजरान्निराम सह मीसएकए अ देवनट्ठिआहिं  
 ॥ हाव ज्ञाव विअमप्पगारएहिं नच्चिअण अंग हारएहिं वंदिआय  
 जस्सते सुविक्रमाकमा ॥ तयं तिलोअ सब सत्त संतिकारयं पसंत  
 सब पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥  
 तज चामर पमागज्जअ जव मंमिआ, ऊयवर मगर तुरय तिरिवच्च  
 जुलंठणा ॥ दीव समुह मंदरदिसागयसोहिआ, सच्चिअ वसह सी  
 हसिरिवच्चजुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा,  
 अदोस डुठागुणोहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, तिरिहीं इठा  
 रिसीहीं जुठा ॥ ३३ ॥ चाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,  
 सवलोअहिअ मूल पावया ॥ संशुआ अजिअ संति पायया, हुंतु  
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिआ ॥ एवं तव बल वि  
 जलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,  
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु  
 र्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेलं मे विसायं, कुलअपरि  
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएण अनंदिं, पावेणअ नं  
 दिसेणमज्जनंदिं ॥ परिताइवि सुहनंदिं, मम य विसन संजमे  
 नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पस्किअ चान्मसासिय, संवञ्जरिए अवस्स  
 ज्ञिअवो ॥ सोअवो संवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥  
 जो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जन कालंपि अजिअ संतिअयं ॥ न हु  
 हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छइ परम



पयं, अहवा कितिं सुविच्छमां ज्ञुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणव  
यणे आथरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहदजितशांतिस्त  
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उद्धासिक्क मनस्स निग्गयपहा दंमञ्जलेणंगिणं, वंदारूण  
दिसंत इव पयमं निवाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंउज्जल दंतकंति मिसंन  
नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इज्ज सोलस जिणे ओसामि खेमंकरे  
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो  
जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म  
हव संतिं सो समञ्चो ढणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु छासज्जत्ति  
अरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता  
एंतसामञ्जलिं, फलहइ लहु सव्वं वंविअं णिञ्चिअं मे ॥ ३ ॥ सय  
लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरइ लहु डुठा निठदोषट्ठणं  
॥ नमिरसुर किरीडू गिठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जि  
णिंदे निवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्ठए देहदित्ती, विलसइ  
ज्जुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारवित्ती,  
जिणजुअ पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं चू  
रिदिवंगहारं, फुरुगणरत्तज्जावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज  
हंसणञ्चे अज्जीया, इव पुणमणि वंधा कास नटोवचारं ॥ ६ ॥  
शुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा ठज्जए जा  
णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिरंजा रंजनिवाणलब्धी, घणअणघुसि णिक्कु  
प्पंकपिंणीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयज्जंगं वट्ठणिच्चं अणिच्चं, सइसद  
णत्तिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं,  
चयण मवय णिज्जं ते जिणे संज्जसामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए  
ताव मोहंधयारं, जमइजय मससं तावमिच्छत्तवसं ॥ फुरइ फुरुप



न्न करि कल, ह मुक्क सिकार पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर  
 रिन्न, नरिंद निवहा ज्ञना जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण,  
 पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,  
 चोरारि मइंद गय रण ज्ञथाइं ॥ पास जिणनाम संकि, तणेण  
 पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा ज्ञयहरं, पास जिणिंदस्स संघ  
 वमुत्थारं ॥ ज्ञविय जणानंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥  
 राय ज्ञय जस्स रस्स, कुसुमिण डुस्सज्जण रिक्क पीमासु ॥ सं  
 जासु दोसु पंथे, जवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो  
 अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिण,  
 सयल जुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृ  
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयन्त जय तिष्ठं, जमिष्ठ तिष्ठाहि वेण वीरेण ॥  
 सम्मं पवत्तिअंज, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय  
 लकिलेसा, निहय कुलेसा पसन्न सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिष्ठ,  
 स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निदद्धकम्म वीआ, वीआपरमि  
 णिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुब्बाणि तिष्ठ  
 स्स ॥ ३ ॥ आचार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंतां ॥ आय  
 रिआ तह तिष्ठं, निहय कुतिष्ठं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय  
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पणिणीय कए,  
 वणिंतु सबस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ  
 सब साहज्जा ॥ तिष्ठप्पन्नायगाते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥  
 जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणरुलं च चरणमविहवइ ॥ तिष्ठस्स दंसणं  
 तं, मंगलमुवणेन सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निष्ठनमो सुअधम्मो, समग्ग  
 ज्ञवंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणमुठ्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

ह दिसन ॥ ८ ॥ रम्मो चरित धम्मो, संपाविअ जवसत्त सिवस  
 म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवन् सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥  
 गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिठस्स ॥  
 सिरिवद्धमाण पढुपय, मिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥  
 जियपनिवस्काजस्का, गोमुह मायंग गयमुह पमुस्का ॥ सिरि  
 वंज संति सहिआ, कय मयस्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा  
 पमिहयमिंबा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्ठा,  
 संति सुरा दिसन सुक्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदितु  
 संघस्स मंगलं विज्जलं ॥ अहुत्ता सहिआन, विस्सुअ सुयदेवयान  
 समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रस्का, जस्का चउवीस सासण  
 सुरावि ॥ सुहज्जावा संतावं, तिठस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि  
 णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहान सव हासवे ॥ वेयावच्च गरा  
 विअ, तिठस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग,  
 विहिअ जवण जणिअ साहज्जो ॥ गीवरई गीयजसो, सपरिवारो  
 सुहं दिसन ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलअल, वण पवय वासि  
 देव देवीन ॥ जिण सासण छिआणं, उहाणि सव्वाणि निहणंतु  
 ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासक्कि, तवालयया नवग्गहा सनस्कत्ता ॥  
 जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअइ पदरेहिं ॥ १८ ॥ सहका  
 ल कंटएहिं, सविठ्ठिवठेहिं कालवेलाहिं ॥ सवे सव्वन्न सुहं, दिसंतु  
 सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ जवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ  
 य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु उरिआइं तिठस्स ॥ २०  
 ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ तंतिठस्स ज  
 गवन्, नमो नमो वद्धमाअस्स ॥ २१ ॥ सो जयज जिणो वीरो,  
 जस्स ज्जविस्तालणं जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासणं कुप, ह नासणं  
 सव जय महणं ॥ २२ ॥ सिरि नसन्नसेण पमुहा, हयजय नि

वैयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्य संघा, हवंतु ते संघ संति  
 करा ॥ ३ ॥ सिरि अंजणय छिअ पा, सलामि पयपन्नम पणय पा  
 णीणं ॥ निदलिअ छुरिअ विंदो, धरणिंदो हरन्न छुरिआइं ॥ ४ ॥  
 गोमुहपमुख जस्का, पमिहय पमिवस्का पस्का लस्का ते ॥ कयसुगु  
 ण संघ रस्का, हवंतु संपत्त सिवसुस्का ॥ ५ ॥ अप्पमिचक्का पमुहा,  
 जिण सासण देवयान जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु  
 संघस्स विग्यहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासच्चउर, पुरठिन्न वद्धमाण  
 जिण ज्ञत्तो ॥ सिरि बंज संति जस्को, रक्कन्न संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥  
 खित्तगिह गुत्त संता, ए देस देवाहि देवया तात्त ॥ निबुद्ध पुर प  
 हियाणं, ज्ञवाण कुणंतु सुस्काणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विद्धि  
 पहरि उट्ठिस्स कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सब्बहा ह  
 रन्न विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिब्बवइ वद्धमाणो, जणोसरो संगन्न सुसंघेण  
 ॥ जिणचंदो ज्ञयदेवो, रक्कन्न जिणवद्धहो पढुमं ॥ १० ॥ सो  
 जयन्न वद्धमाणो, जिणोसरो णेस रुद्ध हयतिमिरो ॥ जिणचंदा ज्ञय  
 देवा, पढुणो जिणवद्धहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवद्धह पाए,  
 ज्ञयदेव पढुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणोसरव, ढमाण तिब्बस्स  
 बुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥  
 मणसा वयसा वजसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त  
 गणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए,  
 नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति पष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसह  
 रविसनिष्सासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ ज्ञवेज्जवे  
 पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त  
 वनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा, मुद्योतकं दलितपापत  
मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले  
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, उ  
द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तौत्रैर्द्वैतचित्तहैरुदारैः, स्तो  
त्र्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रे ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विना  
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिविंगतत्रयोऽहम् ॥ बा  
लं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा  
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद् शशांककांतान्, कस्ते क  
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कलपांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को  
वा तरोतुमलमंबुनिधिं जुजायाम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ  
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मधी  
र्यमविचार्य मृगोमृगैर्दं, नाच्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्  
॥ ५ ॥ अष्टपश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वन्नक्तिरेव मुखरीकुरुते  
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाग्रक  
लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जवसंततिसंनिबद्धं,  
पापं कृणात्कथमुपैति शरीरज्जाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी  
लमशेषमाशु, सूर्याशुजिन्नमिव शार्वरभंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति  
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥  
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदभिर्दुः  
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि  
जगतां दुरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव,  
पद्माकरेषु जलजानि विकाशज्जाजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं जुवन  
जूषणजूत नाथ, जूतैर्गुणैर्जुवि ज्वंतमज्जिजुवंतः ॥ तुलया ज्वन्ति  
ज्वतो ननु तेन किं वा, जूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वन्तमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति  
जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं  
जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिज्जिः परमाणु  
जिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिजुवनैकललामञ्जुत ॥ तावन्त एव खलु तेष्य  
एवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क  
ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ॥ विवं  
कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यद्वासरे ज्वति पांडुपलाशकण्डपम्  
॥ १३ ॥ संपूर्णमंरुलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिजुवनं तव  
लंघयन्ति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति  
संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाजि,  
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कण्डपांतकालमरुता चलि  
ताचलेन, किं मंदराडिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव  
र्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगन्नयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गन्धो न  
जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः  
॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगन्धः, स्पष्टीकरोषि सहसा  
युगपज्जागृति ॥ नांनोधरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्यातिशायिमहि  
मासि मुनीन्! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,  
गन्धं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखान्जमन  
द्वपकांति, विद्योतयज्जागदपूर्वशशांकविंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु  
शशिनाहि दिवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ नि  
ष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जज्ञन्नारनम्रैः  
॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिह  
रादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु  
काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव  
दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन ज्वता नु

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्ञवांतरेपि ॥ ११ ॥ स्त्री  
 णां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी  
 प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन  
 यति स्फुरदंशुजालम् ॥ १२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,  
 मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलज्य जयन्ति  
 मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींश्पन्थाः ॥ १३ ॥ त्वामव्ययं त्रि  
 ज्जुमर्चित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगेश्वरं  
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः ॥ १४ ॥  
 बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि ज्ञुवनत्रयशंक  
 रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जग  
 वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥ तुज्यं नमस्त्रिजुवनार्तिहराय नाथ,  
 तुज्यं नमः क्लितितलामलज्जूषणाय ॥ तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व  
 राय, तुज्यं नमोजिनज्जवोदधिशोषणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयो  
 ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥  
 दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो  
 ऽसि ॥ १७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्जाति रूपममलं  
 ज्ञवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोद्धसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव  
 पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ १८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि  
 भ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलताविता  
 नं, तुंगोदयाद्दिशि रसीव सहस्ररश्मेः ॥ १९ ॥ कुंदावदातचलचाम  
 रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छांकशु  
 चिर्निर्जरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंजम् ॥ २० ॥ उत्र  
 त्वयं तव विज्ञातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता  
 पम् ॥ मुक्ताकलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयन्निजगतः परमेश्वर  
 त्वम् ॥ २१ ॥ उन्निष्हेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युद्धसन्नखमयूख



शिखाजिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेऽधत्तः, प्रधानि त  
 त्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिने  
 ऽ, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रज्ञा दिनकृतः प्रह  
 तांधकारा, तादृकुतोयहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्रयोत  
 न्मदाविलविलोककपोलमूल, मत्तध्रमध्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ  
 रावताजमिजमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा जयं जवति नो जवदाश्रिता  
 नाम् ॥ ३४ ॥ जिन्नेजकुंजगलज्ज्वलशोणितारु, मुक्ताफलप्रकर  
 नूषितनूमिजागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति  
 क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कटपांतकालपवनोद्धतवह्निकट्यं,  
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु  
 खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं  
 समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्क्षणमापतंतम् ॥ आक्राम  
 ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः  
 ॥ ३७ ॥ वटगचुरंगगजगर्जितजीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि नू  
 पतीनाम् ॥ बभ्रुदेवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु  
 निदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रजिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावता  
 रतरणातुरयोधजीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पाद  
 पंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अञ्जोनिधौ कुञ्जितजीषणन  
 क्रचक्र, पाठेनपीठजयदोष्टवणवारुवाशौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितया  
 नपात्रा, स्त्रासं विहाय जवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उज्ज्वलजी  
 षणजलोदरनारजुग्धाः, शोच्यां दशामुपगताच्युतजीविताशाः ॥  
 त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या जवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः  
 ॥ ४१ ॥ आपादकंठसुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगमकोटिनिघृ  
 ष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विग  
 तबंधजया जवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्तध्रिपेऽमृगराजदवानलाहि, संग्राम



वारिधिमहोदरबंधनोत्तम ॥ तस्याशु नाशमुपयाति ज्ञयं ज्ञियेव,  
 यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र  
 गुणैर्निबद्धां, ज्ञक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो  
 य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४  
 ॥ इति ज्ञक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ ज्ञो ज्ञो ज्ञव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वं मेतत्, ये या  
 त्रायां त्रिभुवनगुरोर्गर्हतां ज्ञक्तिज्ञाजः ॥ तेषां शांतिर्नवतु ज्ञवताम  
 र्हदादिप्रज्ञावा, दारोग्यश्रोष्टृ तेमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥  
 ज्ञो ज्ञो ज्ञव्यलोका इह हि ज्ञरतैरावतविदेहसंज्ञवानां, समस्तती  
 र्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः  
 सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरैर्दैः सह समागत्य सविन  
 यमर्हजद्वारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, बिहितजन्मान्निषेकः,  
 शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन  
 गतस्स पंथाः ॥ इति ज्ञव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं वि  
 धाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं  
 इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं १, प्रीयं  
 तां २, ज्ञगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रै  
 लोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥  
 ॐ श्रोकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विम  
 ल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०,  
 स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग  
 १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जि  
 नेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४,  
 एते अतीत.

## ॥ चतुर्विंशतित्थिकराः ॥

॥ ॐ श्रीरूपज्ञ १, अजित २, संज्ञव ३, अग्निनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रज्ञ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रज्ञ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांसि ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंभ १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नैमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रज्ञ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोष्टिल ९, शंत कीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कपाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, जङ्कर २४,

॥ एते ज्ञावितीर्थिकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा ज्ञ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्जिह्वकान्तरेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भ्रानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंज १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्थ ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रज्ञावती १९, पद्मा

१०, वप्रा ११, शिवा १२, वामा १३, त्रिशला १४ ॥ इति वर्त्तमानं जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंगुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, जूकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, जूकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंदा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणा १६, बला १७, धारिणी १८, धरणाप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धाधिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्री धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंतिते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंगला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोद्या १३, अष्टुता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्विंसूर्यगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनिश्वरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाःसोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

यश्चैव तं स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रव्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबन्धिबन्धु  
 वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो ज्ञवन्तु ॥ अस्मिंश्च ज्ञूमं  
 रुले आयेतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस  
 र्गव्याधिदुःखदौर्भनस्योपशमनाय शान्तिर्ज्ञवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिरू  
 द्विवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः ज्ञवन्तु ॥ सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा  
 नि शाम्यन्तु शत्रवः पराङ्मुखा ज्ञवन्तु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना  
 आय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाञ्च  
 र्चिताम्बुजे ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे  
 गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहेष्टहे ॥ २ ॥ ॐ न  
 न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःखप्रदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्,  
 नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा  
 जसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेष्ठांतिम् ॥ ४ ॥  
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्ज्ञवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्ज्ञवतु, श्रीराज  
 सन्निवेशानां शान्तिर्ज्ञवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्ज्ञवतु, ॐ स्वाहा  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शान्तिः प्रतिष्ठा  
 यात्रास्नात्रावसानेषु, शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू  
 पवासकुंसुमांजलिसमेतः, स्नात्रर्पाठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि  
 वपुः पुष्पवस्त्रश्रंदनाभरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां  
 कंठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति  
 ॥ नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि ॥ स्तो  
 त्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्याणज्ञाजोहि जिनाग्निषेके ॥ १  
 ॥ अहं तिष्ठयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह  
 शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं ज्ञवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु  
 सर्वजगतः, परहितनिरता ज्ञवन्तु ज्ञूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं,  
 सर्वत्र सुखी ज्ञवन्तु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः कथं यान्ति, विद्यन्ते वि

प्रवृत्तयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति  
श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हज्यो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं  
अर्हं सिद्धेज्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येज्यो नमो  
नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेज्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ  
र्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुज्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच  
नमस्कारः, सर्व पापहयंकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं जवति  
मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ क  
मलप्रज्ञसूरींशे, ज्ञाषते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकजक्तोपवासेन, त्रिकालं  
यः पठेदिदं ॥ मनोज्ञलषितं सर्वं, फलं स लज्जते ध्रुवं ॥ ४ ॥ नू  
शय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविर्वर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, य  
एमासैर्लज्जते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चकुर्ललाटके  
॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं  
मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वा  
र्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनक्षेत्री, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अं  
गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे,  
दक्षिणीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवि  
त् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थ  
कृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं जगवानर्ह,  
नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥  
११ ॥ शूषको मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संज्ञ  
वः कर्णयुगलं, नासिकां चाग्निनंदनः ॥ १२ ॥ नष्टौ श्रीसुमती र  
क्षेत्, दंतान्पद्मप्रज्ञो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रज्ञो  
विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रे

चांसौ बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते,  
 दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽपुदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नान्निमंरुलं  
 ॥ १५ ॥ श्रीकुंशुर्गुह्यकं रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूपृष्ठिवं  
 शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्तेत्, श्रीनेमि  
 श्ररणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥  
 पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्तेदशेषपापेभ्यो, वी  
 तरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंक  
 टे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे  
 प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपी  
 णिते ॥ २० ॥ साकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहणादिते ॥ नद्युक्ता  
 रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुवाच, यः  
 स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लज्जते सुखसंपदं ॥ २२ ॥  
 जिनपंजरनाभेदं, यः स्मरंत्यनुवासरं ॥ कमलप्रन्नराजेंड, श्रियं स  
 लज्जते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुवाच पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेत  
 ज्जिनपंजरारख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रन्नारख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछित  
 पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपत्नीयवरेण्यगच्छे, देवप्रन्नाचार्यपदाब्जहं  
 सः ॥ वादींश्चूनामणिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रन्नारख्यः  
 ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

## ॥ अथ स्तोत्रोर्मैस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पत्तरुं अयाण चिंतनं मणजितरिं, किं चिंतामणि  
 कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली कांज किसे देसांतर लंघन,  
 रयणरासि कारण किसे सायर नल्लंघन ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धन  
 ए नवकार, सयल काज महियल सरे उत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ के

बलि आसिय रीत जिके नवकार आराहै, जोगवि सुख अणंत  
 अंत परम प्यसाहै ॥ इण जाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु  
 परि, इण जाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो  
 जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि  
 नियगेह ॥ १ ॥ निय सिर ऊपर जाण मझ चिंतवै कमल नर,  
 कंचणमय अठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अ  
 रिहंतदेव पनुमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरैवि पढम पय  
 चिंते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुख,  
 अरिहंत जाणे तुम लहो जिम अजरामर मुख ॥ ३ ॥ पनर जे  
 य तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विडुमतणे वन्ननिय सो  
 हग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धहिं पुढे दिसि, सयल लोय  
 तिह नरहि होइ ततखिणसेवसि ॥ मूलमंत्र वशोकरण अवर स  
 हू जगधंद, मणमूली नुबध करे बुद्धि हीणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिण  
 दिसि पंखनी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित  
 उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाज ऊपर जे ध्यावे, पहरै  
 पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावै ॥ इण जाणे नव निधि हुवेए  
 रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर उत्त सिर  
 जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवजाय सीस पाढंता पञ्चिम, आराहिजे  
 अंग पुव धारंत मणोरम ॥ पञ्चिम दिसि पंखनीय कमल ऊपर सु  
 हजाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्के  
 विडुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल  
 सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विज्ञाग सामला वइठा, जि  
 ण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिं  
 जपे जे एके जाणै, पंचवन्न तिहां नाण जाण गुण एह पमाणे ॥  
 अनंत चौवीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे



नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दिसिअ  
 गणोहिं, सब पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि जाएह  
 मंगलाणं च सवेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दि  
 सि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु  
 जानी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रनाव धरणिंद हुन  
 पायालह सामी, समलीकुप्र उपन्न निद्ध सुर लोयह गामी ॥  
 संबल कंबल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव अयो  
 नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंठिय करे जोगी लियो मसा  
 ण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठीके बैठो  
 चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह  
 नामी ॥ वाठरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही  
 उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सबे सरे इरत परत  
 विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर  
 धाम संकट टले राजा बसि होवे, तिठंकर सो होइ लाख गुण वि  
 धिसुं जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि  
 व्याधि अहतणी पीरते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे  
 नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय जाण करंत ॥  
 ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण  
 ठउमठ एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सत्तुंजय तिठराज महिमा  
 उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिठंकर  
 गणहर पणिय चवदह पूरव सार, इण गुण अंत न को कहे गुण  
 गिरुन नवकार ॥ १२ ॥ अरु संपय नव पय सहित इणसठ लहु  
 अस्कर, गुरु अस्कर सत्तैव इह जाणो परमस्कर ॥ गुरु जिण बल्लह  
 सूरि जणे सिव सुखह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु डरक  
 निवारण ॥ जल अल महियल वनगहण समरण हुवैइक चित्त, पंच

परमेष्ठि मंत्रह तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्ठि  
महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शसति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासं । अठ महापामिहेर जुत्ताणं ॥ सम  
य खित्त धियाणं । सरेमि चक्कं जिणं दाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय असिआ ।  
पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नालेउ सयल डुरियं । नवियाणं  
ज्जत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिं  
दा ॥ गहज्जूअ रक्क साइणि । धोरुवसग्गं पणासेइ ॥ ३ ॥ सत्तरि पण  
तीसा विय । सठी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि  
। चौरारि महाज्जयं हरण ॥ ४ ॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नठी तहय  
चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५  
॥ नुं हरहुंहः सरसूंस । हरहुंहः तहय चेव सरसूंसः ॥ आलिहिंय  
नाम गप्पं । चक्कं किर सवणं जइं ॥ ६ ॥ नुं रोहिणी पन्नसी । व  
ज्जसंखला तहय वज्जअंकुसिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता । कालि महाका  
लि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुद्ध तहय  
अबुद्धा ॥ माणसि महमाणसिआ । विज्जा देवीउ रक्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस  
कम्मजूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविह रयणाणवन्नो ।  
वसोहिअं हरण डुरिआइं ॥ ९ ॥ चजंतीस अइसय जुआ । अठ  
महापामिहेर कयसोहा ॥ तिजयर गयसोहा । जाए अवा पयत्तेण  
॥ १० ॥ नुं वर कणय संख विहुम । मरगय घण सन्निहं विगय  
मोहं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सवामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥  
नुं जुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि  
डुठ देवा । ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं  
। फल हेलिहिज्जणखालिअंपीयं ॥ एगंतरगहमुग्गय । साइणि ज्ञयं  
पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं डुवार पणि

क्ति करणी माला पूर्वोक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये नुर  
जावे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवयजेदि, जीताजयप्रदमनिंदितमंहि  
पद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमज्जिनस्य जिने  
श्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गणेशांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत  
मतिर्न विजुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्या  
हमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव  
वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश ज्वंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि  
कौशिकशिशुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥  
३ ॥ मोहकयादनुजवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न  
तव क्षमेत ॥ कलपांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन ज  
लधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अज्युद्यतोस्मि तव नाथ जराशयोऽपि,  
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं  
वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिना  
मपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं जवति तेषु समावकाशः ॥  
जातातदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणो  
ऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामर्चित्यग्रहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति  
ज्वतो ज्वतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाधे, प्रीणाति  
पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विन्नो शिषि  
लोज्वंति, जंतोः क्षणेन निविष्टा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो जुजंगम  
मया इव मध्यज्जाग, मज्ज्यागते वनशिखंरिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मु  
च्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेऽ, रौडैरुपड्वशतैस्त्वयिवीक्षितैपि  
॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपत्ता  
यमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारकोजिन कथं जविनां त एव, त्वामुद्धंति ह

दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्गतस्य म  
 रुतः स किलानुज्ञावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रज्ञाव  
 वाः, सोऽपि त्वयारतिपतिः कृपितः कृणेन ॥ विध्यापिता हुतभुजः  
 पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्ध्वानवेन ॥ ११ ॥ स्वामि  
 न्नतुल्यगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथकहो हृदये दधानाः  
 ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा  
 प्रज्ञावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता  
 स्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरा  
 पिलोके, नीलडुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो  
 गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृदयांभुजकोशदेशे ॥  
 पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संज्ञवि पदं ननु कर्णिकायाः  
 ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश जवतो जविनः कृणेन, देहं विहाय परमा  
 त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलाहुपलज्ञावमपास्य लोके, चामीकरत्व  
 मचिरादिव धातुज्जेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्य विज्ञाव्यसे  
 त्वं, ज्ञयैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि  
 वर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुज्ञावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म  
 नीषिज्जिरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेऽ जवतीह जवत्प्रज्ञावः ॥  
 पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरो  
 ति ॥ १७ ॥ त्वामेव दीततमसं परवादिनोपि, नूनं विज्ञो हरिहरा  
 दिधिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिज्जिरीश सितोपि शंखो, नो गृ  
 ह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुज्ञा  
 वा, दास्तां जनो जवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अन्युज्जते दिनपतौ  
 स महोरुहोपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥  
 चित्रं विज्ञो कथमवाङ्मुखवृतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृ  
 ष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश, गच्छंति नूनमथएव हि

बंधनानि ॥ १० ॥ स्थाने गङ्गीरहृदयोदधिसंज्ञवायाः, पीयूषतां  
 तव गिरः समुदीरयन्ति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगन्नाजो, ज्ञव्या  
 ब्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ ११ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमु  
 त्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विदधते  
 मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धजावाः ॥ १२ ॥ श्यामं  
 गङ्गीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह ज्ञव्यशिखंमिनस्त्वाम्  
 ॥ आलोकयन्ति रत्नसेन नदन्तमुच्चैः, श्यामीकराङ्गिशिरसीव नवांबुवा  
 इम् ॥ १३ ॥ उद्गच्छता तव शितियुतिमंरुलेन, लुप्तदृष्टविरगो  
 कतरुब्रज्यूष ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां  
 ब्रजति कोन सचेतनोपि ॥ १४ ॥ ज्ञोन्नोः प्रमादवधूय ज्ञजध्वमे  
 न, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगन्न  
 याय, मन्ये नदन्नजिनन्नःसुरडुंडुजिस्ते ॥ १५ ॥ उद्योतितेषु ज्ञ  
 वता ज्ञवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताक  
 लापकलितोच्चसितातपत्र, व्याजान्निधा धृततनुर्ध्रुवमञ्जुपेतः ॥  
 ॥ १६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिर्मितेन, कांतिप्रतापयशसामिव सं  
 चयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालश्रेण्या जगवन्नजि  
 तोविज्ञासि ॥ १७ ॥ दिव्यसृजोजिन नमस्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य  
 रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयन्ति ज्ञवतो यदि वा परत्र,  
 त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्तएव ॥ १८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विप  
 राड्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिव  
 निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विज्ञो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ १९ ॥  
 विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्करप्रकृतिरप्यलिपिस्त्व  
 मीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति वि  
 श्वविकाशहेतुः ॥ २० ॥ प्राग्ज्ञारसंभृतनज्ञासि रजांसि रोषा, दुष्ठा  
 पितानि क्रमठेन शठेन यानि ॥ वायापि तैस्तव न नाथ हताह

ताशो, ग्रस्तस्त्वमीजिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यज्जर्जुर्जितं  
 घनौघमदब्रज्जीमं, ब्रश्यत्तन्मिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त  
 मथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥  
 ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंरु, प्रालंबन्नृन्नयदवक्रविनिर्यदग्निः ॥  
 प्रेतव्रजः प्रतिज्जवंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽज्जवत्प्रतिज्जवं ज्वदुःखहे  
 तुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव जुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयन्ति वि  
 धिवद्भिधुतान्यकृत्याः ॥ ज्ञक्तयोत्त्रसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः, पादद्व  
 यं तव विज्ञो जुवि जन्मज्ञाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारज्जववारिनि  
 धौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु  
 तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्भिश्चरि सविधं समेति ॥ ३५ ॥  
 जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदह  
 म् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराज्जवानां, जातो निकेतनमहं मग्नि  
 ताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं वि  
 ज्ञो सकृदादि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामन  
 र्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महि  
 तोऽपि निरीकितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि ज्ञक्तया ॥  
 जातोऽस्मि तेन जनबांधवदुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न  
 ज्ञावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाश्र दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारु  
 ण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ ज्ञक्तया नते मयि महेश दयां विधाय,  
 दुःखाकुरोद्वलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं श  
 रण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्र  
 णिधानबंध्यो, वध्योऽस्मि चेज्जुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥  
 देवेऽवंध्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विज्ञो जुवनाधिनाथं  
 ॥ त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीहि, सीदंतमद्य ज्ञयदव्यसनांबु  
 राशोः ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाश ज्वदंहिसरोरुहाणां, ज्ञक्तेः फलं कि



मपि संततिसंक्षितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्यं नूयाः,  
स्वामी त्वमेव नूवनेऽत्र नवांतरेऽपि ॥ ४१ ॥ इत्थं समाहितधियो  
विधिवज्जितेऽ, सांज्ञोद्धसत्पुलककंचुकितांगजागाः ॥ त्वद्विंबनिर्मल  
मुखांबुजवद्वलक्ष्या, ये संस्तवं तव विज्ञो रचयन्ति नव्याः ॥ ४३ ॥  
जननयन कुसुदचं, प्रज्ञास्वराः स्वर्गसंपदो नूत्वा ॥ ते विग  
लितमलनिचया, अचिरान्मोहं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥ इति श्रीक  
ल्याणमंदिरस्तोत्रं ॥

॥ अथ रुषिमंडल स्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्यं, मक्षरं व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वा  
लासमं नाद, विंदुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं, म  
नोमलविसोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥  
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, स  
र्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो न  
मोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः  
सर्वसाधूभ्यः ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ नमः त्वदृष्टिभ्यः । चा  
रित्रेभ्यो नमोनमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्हदाद्यष्टकं शुभं ॥  
स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां  
रक्ते, त्परं रक्तेषु सस्तकं ॥ तृतीयं रक्तेन्नेत्रेद्वे, तुर्थं रक्तेच नासिकां  
॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रक्ते, षष्ठं रक्तेच घंटिकां ॥ नाभ्यंतं सप्त  
मं रक्ते, इक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः, सरेफोद्यब्धि  
पंचपान् ॥ सप्ताष्टदशसूर्याकान्, श्रितोविंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥  
पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये  
॥ ह्रीं सांतहसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं हूः हं हें ह्रैं ह्रौं  
ह्रः असिआनुसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः । जंबुवृक्षधरो घीपः,  
कारोदधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्टः, काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ ११ ॥



तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-  
 मंमलमंमितः ॥ १३ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥  
 नमामि विंशमाहृत्यं, ललाटस्यं निरंजनं ॥ १४ ॥ अक्षयं निर्मलं  
 शांतं, बहुलं जाड्यतोऽजितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतर-  
 घनं ॥ १५ ॥ अबुद्धं शुभ्रं स्फीतं, सात्त्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-  
 चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १६ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं  
 विरसं परं ॥ परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १७ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च,  
 त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १८ ॥  
 सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं अतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं  
 वीतसंश्रयं ॥ १९ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥  
 ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ २० ॥ अर्हदाख्यस्तु-  
 वर्णांतः, सरेफो विंदुमंमितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-  
 मालितः ॥ २१ ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषज्जायां जिनो-  
 त्तमाः ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २२ ॥  
 नादश्चंद्रसमाकारो, बिंदुतीक्ष्णसमप्रज्ञः ॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाग्निः  
 सर्वतो मुखः ॥ २३ ॥ शिरसंलीनईश्वरो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥  
 वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंमलं स्तुमः ॥ २४ ॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतौ,  
 नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ विंदुमध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ  
 ॥ २५ ॥ पद्मप्रज्ञवासुपुंज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिई स्थिति-  
 संलीनौ, पार्श्वमध्वीजिनेश्वरौ ॥ २६ ॥ शेषांस्तीर्थकृतः सर्वे, हर-  
 स्थाने नियोजिताः ॥ मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्रुतुर्विंशतिरर्हतां ॥ २७ ॥  
 गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेऽपि, ते ज्ञवंतु  
 जिनोत्तमाः ॥ २८ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विज्ञा ॥  
 तयाच्चादितसर्वाङ्ग, मामांहीनस्तुलाकिनी ॥ २९ ॥ देवदेवस्य य०  
 मामांहीनस्तुराकिनी ॥ ३० ॥ देवदे० मामांहीनस्तुलाकिनी ॥ ३० ॥

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु-  
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०  
 मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपद्मगा ॥ ३५ ॥  
 देवदे० मामांहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षसा  
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं-  
 तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुडुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०  
 मामांहिसंतुभूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या  
 भुविलब्धयः ॥ तान्निरन्युद्यतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥  
 पातालवासिनो देवा, देवाभूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे  
 रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥  
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ डुर्जनाभूत-  
 वेत्तालाः, पिशाचामुद्रलास्तथा ॥ ते सर्वेऽप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रज्ञा-  
 वंतः ॥ ४५ ॥ नैर्ही श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंमी सरस्वती,  
 जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदङ्वा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-  
 बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौडी, कला  
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-  
 त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कातिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो  
 गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-  
 त्राणकृतेनयः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले बन्धौ, जले दुर्गे गजे हरौ  
 ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यत्र-  
 ष्टा निजं राज्यं, पदत्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीत्रष्टा निजां लक्ष्मीं,  
 प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्थार्थी लज्जते ज्ञार्थी, पुत्रार्थी लज्जते  
 सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे  
 रूपे पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,  
 गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ नूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुग्धि वा

जुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वज्जीतिविनाशकं ॥५४॥ जूतैः प्रे  
 तैर्ग्रहैर्धकैः, पिशाचैर्मुज्जलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्वैरै, मुच्यते नात्र  
 संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥  
 तैःस्तुतैर्वदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्पं महा  
 स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या  
 पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥  
 अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं  
 प्रातः, र्ये पठन्ति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रज्जवंति न चापदः ॥  
 ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे  
 तन्महातेजो, जिनविंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते विंबे,  
 ज्ञवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥  
 ६१ ॥ विश्ववंद्यो ज्ञवेध्याता, कढ्याणानि च सोश्रुते ॥ गत्वा  
 स्थानं परं सोपि, जूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा  
 स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लज्जते पदमु-  
 त्तमं ॥ ६३ ॥ इति रुषि मंरुल स्तोत्रं ॥ केपकश्लोकनिराकृत्य  
 मूलयंत्रकढ्यानुसारेण लिखितं गणि । श्रोक्त्वा कढ्याणोपाध्यायै  
 तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्त्रे तस्यैव ना  
 मानि । मौक्तसौहाज्जिलाप्रया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्वि  
 कलपो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥  
 २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्जयो निरहं  
 कारो । निर्विकारोऽथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । नि  
 ज्ञयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मा निष्कलप्र  
 जुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशब्द

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु-  
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०  
 मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपल्लगा ॥ ३५ ॥  
 देवदे० मामांहिनस्तुहस्तनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षसा  
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं-  
 तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुडुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०  
 मामांहिसंतुभूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या  
 भुविलब्धयः ॥ तान्निरञ्ज्युद्यतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥  
 पातालवासिनो देवा, देवाभूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे  
 रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥  
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ डुर्जनान्नूत-  
 वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेऽप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रज्ञा-  
 वंतः ॥ ४५ ॥ नैर्ही श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंमी सरस्वती,  
 जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदङ्वा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-  
 बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौडी, कला  
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-  
 त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कातिं कीर्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो  
 गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-  
 त्राणकृतेनयः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले बन्हौ, जले डुर्गे गजे हरौ  
 ॥ श्मशाने विपिने घेरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यत्र-  
 ष्टा निजं राज्यं, पदत्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीत्रष्टा निजां लक्ष्मीं,  
 प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्यार्थी लज्जते ज्ञार्यी, पुत्रार्थी लज्जते  
 सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे  
 रूपे पटे कांस्थे, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,  
 गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ नूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुग्धि वा

जुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वज्जीतिविनाशकं ॥५४॥ जूतैः प्रे  
 तैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुजलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्वैहै, मुच्यते नात्र  
 संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥  
 तैःस्तुतैर्वदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा  
 स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या  
 पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥  
 अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं  
 प्रातः, र्ये पठन्ति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रज्जवंति न चापदः ॥  
 ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे  
 तन्महातेजो, जिनविंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते विंबे,  
 ज्ञवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥  
 ६१ ॥ विश्ववन्द्यो ज्ञवेध्याता, कल्याणानि च सोश्रुते ॥ गत्वा  
 स्थानं परं सोपि, ज्ञूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा  
 स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लज्जते पदमु-  
 त्तमं ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मन्त्रस्तोत्रं ॥ केपकश्लोकनिराकृत्य  
 मूलयंत्रकल्याणानुसारेण लिखितं गणि । श्रीकृष्णकल्याणोपाध्यायै  
 तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्षे तस्यैव ना-  
 मानि । मौक्तसौक्ताज्जिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्वि-  
 कल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥  
 २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्जयो निरहं-  
 कारो । निर्विकारोऽथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शान्तः । नि-  
 ज्ञयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्म्मो निष्कलप्र-  
 च्युः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशङ्क

प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो ।  
 नैष्ठिकः शब्दवर्जितः ॥ अनिंद्यो महपूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः ॥ ६ ॥  
 निःशब्दो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोऽपि योगात् शुभ्रं  
 प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अर्चितः अ-  
 कृत्यो विभुः ॥ अमुक्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८ ॥  
 अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो ज्ञवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः,  
 बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान  
 लोचनः ॥ अवेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवर्जितः ॥ १० ॥  
 अजेयसर्वतो ज्ञः । निष्कपायो ज्ञवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥  
 वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंद । अवाङ्मानस  
 गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत  
 विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्म्मार्जितो महात्मानः ।  
 लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अस्यावाधो वरः शंभुः । विश्ववेदी  
 पितामहः ॥ सर्वज्ञूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं-  
 दरूपचैतन्यो । जगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य-  
 क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥  
 गौरवादित्रयाहूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अज्ञयः प्राप्तकैव-  
 ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र-  
 दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स-  
 र्वेशः सतसुखावासः । जिनेन्द्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम  
 ज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोजगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुण्य-  
 कारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो  
 ज्ञुवनाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं ।  
 विसुक्तो मुक्तिवद्वज्रः ॥ योगीन्द्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोच-  
 रः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्त्रः । सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः



ब्रजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्ठमूर्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः ॥  
 सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वज्ञूतहितंकरः ॥ २३ ॥  
 स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानन्द ।  
 चैतन्यश्चैत्यवैज्रवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह  
 तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा  
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म  
 हामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा  
 स्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महान्तिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा  
 पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुण्यो ।  
 महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोधः । एकानेकवि  
 निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महासूरो  
 महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह  
 द्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविद्वंसो । निष्कामो विषयाच्यु  
 तः ॥ जगवंतामहाभ्रांतो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा  
 परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानन्द । परंपरमभ्रा  
 त्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिराणसंयुतः ॥ ना  
 कृतिं नाहरो वर्णी । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त  
 जसंबोधः । संसारवेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्मजित्  
 धर्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसत्सु जगद्वन्द्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥  
 स्वयंज्ञूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विज्रवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो  
 महातीतः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपूर्णो । देवदेवेश  
 नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो ज्ञवविध्वंसी । योगिनी ज्ञानगोचरः ॥  
 जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् ज्ञव्यसं  
 बन्धः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र  
 काशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्जो जगत्स्वामी । इन्द्रवंद्यः सुरर्चितः ॥ नि



प्रपंचो निरातङ्गो ॥ निःशेषकेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक  
संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र  
शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः ॥  
ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यन्ते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीन  
व्याहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्णं ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारन्ते परमविदुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम्  
पि गुणगुरौर्गंतुमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिहनयैस्सर्वकलनं  
। नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोतुं  
किल निरवकाशोप्यहमिहो । अतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनधोऽवच  
वचः । गृणीयां सह्यं तत्तनुजुव इवेष्टार्थप्रतिज्ञूपदोपास्ते पार्श्वान्न  
यजनयिष्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकां वामासूनोधुतनिधनमूनोयवसु  
ना । सुनामन्नोऽनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोऽज्ञानो नु  
वनन्नवने नो वृषन्नरं । व्यधांमोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥ ३ ॥  
सुबोधं देया मे धनधनघटामेचकतनु । जगन्नय्यारामैरमरकुरुहवामे  
यजिनपाः ॥ हतोऽग्राक्षग्रामे शितरसमकामेषुविजयी । त्वमर्काक्षी  
ज्ञामे दुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चितरमपारे  
नुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ ध्रुतारेकेतारे  
क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे द्विद्वारे नवदहनवारे कुरुकृपां  
॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान  
हिमिन्धुनमाराव्ययविज्ञो ॥ ज्वलन्त्यस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता  
। मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसन्नवान् ॥ ६ ॥ दिशश्चीमान्दे  
वव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥  
तनालान्नोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानंदकेवद्वयचलपदमेवस्तु  
तिष्ठते ॥ ७ ॥ कजन्माहंकायंकिरवगणहंकीर्तिधवलं, कुबेरेज्यं

कूहाव्रततिपरशुंकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं  
 ददानं कंकहोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं  
 जवकुशकदात्रंसुहृदयै रहोरात्रंघात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रज्ञो पवित्रं  
 सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्मित्रंस्तुतपुरुषवित्रंसरणकम्  
 ॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंदृगुदकजवैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः स  
 फलजनुषस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला ज  
 वारणयेटन्तकथमपिजवत्वंनददृसुः ॥ १० ॥ नजानेहंनेतः कुमततिमर  
 प्रावृतदृशां गतिर्माहृक्षाणादरहरजवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य  
 ज्जिमतफलोत्सर्जनपरां त्वदाख्यांनोर्चितामणिमिवजजन्तेस्तविधयः  
 ॥ ११ ॥ त्वमेवेशोदानींमयिवितनुतात्कामपिकृपां जवास्ताघोदत्व  
 त्तलनिपतितं प्रोद्धस्तराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर  
 णः शरण्योसिश्रेयान्प्रज्जुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वा  
 धरितकनकाहार्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिजटगज्जीरत्ववि  
 दितः दितःप्रत्यूहालिः शुज्जमत जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः  
 कुमतिवसुधासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविज्रद्वेधंपरमपुरुषः सिद्धिर्न  
 गरीं गरीयः साम्राज्यंगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्तुंकर्माष्टकरि  
 पुबलंघ्नज्जयमहा माहतीर्थेशश्रीजरमतुलमाप्तः पृथुमहाः ॥ १४ ॥  
 महाराज स्तुत्योडुरिततरुसिन्दुरतिलको लकोनः पालाकः सकलज  
 विनांमोहशमनः मनस्यश्रान्तं मेवरसरसिकादम्बइवसन् वसज्जी  
 यात्पार्श्वप्रज्जुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीजोलोकोत्तरपद  
 मुपेतःसकलवि । ह्रवित्रंदोषालोयवसलवनेप्राप्तविज्रवः जवध्वस्त्यै  
 नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुण  
 गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकबंधुरम् ॥ जवन्तंसद्योग प्रशि  
 तपदवीचारिनिवहा अजस्रंविश्रामंप्रणिदधति विश्वेश्वरसमे इदंस्थाने  
 यन्तिप्रसृमरसितोस्त्रंखलुखगाः कलावन्तंकिंनश्रुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकञ्जरप्रकाशोधतमसं हरद्वौकंकुर्व  
 न्नमलकमलोद्वासमयकम् प्रबोधं व्यातन्वनिततः करतः पंकदलनो ज  
 गच्चक्रुः पार्श्वोदिशतुकुशलं मे समयन्तुः ॥ १८ ॥ नितान्तं सन्तापं स  
 मतनुमतांश्च नमृतगुः कलान्निःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो  
 षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरश्चा वताद्यामापुत्रः सपदिविपदस्तार  
 कपतिः १ ए स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति महीजन्मातं ह्वा  
 त्ययप्रनृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिं दददविरतराजतनयो ह  
 यांतीतो लोके तनुजवनमाप्नोति बलवान् ॥ २० ॥ धरादित्येशानः शु  
 न्नञ्जुस्त्रिजगैरकरणः सदापायाद्यैसासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः स्थिरः  
 स्फारश्लोकस्तुतिसमुचितो ज्ञानुतनय स्तंभो विघ्नध्वंसी नकुशलकरः  
 केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽयं न्यस्त्रिदसविसरेऽयं वरतया सि  
 लोकेशो नूनं त्रिजगदवनात्वं कमलनृः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज  
 न्माधिवसना चतुर्ध्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योऽस्थुपदिशन् ॥ २२ ॥  
 प्रंतीतो दैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्परार्ध्यश्रीयोगात्कमलनिलये सो  
 सिन्नगवन् ननाकश्चिद्भिवातिशयन्नरवित्तंस्त्रिभुवने जगद्वाट्कौगीतः  
 परमपुरुषो तोहरिद्वयैः ॥ २३ ॥ मद्देशानां सित्वं त्रिभुवनजनैकाधि  
 पतया शिवः शश्वन् नृणां परमपददानैकसुविधेः असित्वं सर्वज्ञः सकल  
 जगदग्रौघकलना न्नगूलीनोचोद्यो नचपशुपतिर्नो विपमदृक् ॥ २४ ॥  
 अवाप्तः श्रेयः श्रीप्रवितरणलोलाविदलिता दितेयाग्रहोर्णारुहमहि  
 मसारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसन्नः कृतकुमतज्जन्मः सुमनसां हिताया  
 शेषाणां सुकृतपदवीत्वं ककथयन् ॥ २५ ॥ जिनेन्द्रादोरात्रं बहु विपदम  
 त्रं धृतमरं कलत्रं येनात्र कसद्विरहिरादिः सुरगणः सकर्षानाकर्ष्यामित  
 चरितताधूर्त्तनिबद्ध प्रतारीसदोषः मित्तसत्तरोपः स्थितिदत्तः ॥ २६ ॥  
 समग्रामग्रामप्रजवज्रयदो बोधरहितः सरुग्न्नाव्यष्टेऽपुरुडुरितकृत्मा  
 नकलितः पुरामोहान्नुतश्चिरमिदमज्ञाहीनमहि ॥ २७ ॥ गोश्रायत्वं कथ

भपिसमासादिमयकाः ॥ २४ ॥ प्रज्ञोर्किंवामेतैरन्निमतविधानैलसतैरै  
 रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेण्योनवरतम् मनोविभर्मेत्वत्यद्वनजयुगले  
 सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २५ ॥ अदब्रंद  
 म्नांसिन् इविणन्नरमडीसदृशं विहायेनाप्रतन्धरसिकिलरत्नत्रयमहो  
 दधत्सौवर्णानामुपरिखलिनानाक्रमयुगं पुनर्निर्लोञ्जानांधुरिसमतिमद्भि  
 स्त्वमुदितः ॥ २६ ॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्र्यंसुवरण त्रयी  
 मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोष्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल  
 द्दमांणिदधत कुतस्तैरैराग्येशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ २७ ॥ चलं  
 प्राज्यंराज्यंविदितविज्ञवापास्यलषतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व  
 रतरम् कृतेनिर्गण्यत्वंप्रशमरसवाद्देस्त्यसुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित  
 वेदंतुचरितं ॥ २८ ॥ निकामार्थोत्सृष्ट्या ततवनददृष्ट्यातिशयितं जगद्वा  
 रिश्याग्निं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणयु  
 ग्मं सुद्धादया नतर्षं स्वेष्टात्तैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ २९ ॥ जग  
 त्येकाधाराहितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि  
 ल तवत्रातर्ज्जन्माजनिजननमुख्याकगणहृत् नवेवेशस्तोर्थोपिचनिरु  
 पमानन्दरसिकः ॥ ३० ॥ अहीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना  
 मनाक्वस्येद्रकोयदिधदनुगंमद्यसनितं नितम्बिन्यान्वोत्तिः सपदिकुरु  
 तैतंस्वपसमं समाङ्गल्यंवाथप्रज्ञवतिनकः स्वामिरूपया ॥ ३१ ॥ प्र  
 लापायाबुद्धास्तवगुणगणान्तान्तिविशदा खिलोकीञ्जुजानेसुरपयमणे  
 ज्ञानवश्व रसज्ञानांकोट्याप्यमलधिषणोनव्यधिषणो नतानीष्टेसख्या  
 तुमदरपरावर्धंतुसरदां ॥ ३२ ॥ नमस्तुभ्यंसंसृत्यतनुतटिनीतारणातरे  
 नमस्तुभ्यंन्नीमामयसमददन्तावलहरे नमस्तुभ्यंसूक्तातिमधुरिमदासी  
 कृतसुधा समुद्रायामुद्भूयुदवासिततुभ्यंजिननमः ॥ ३३ ॥ पादेयाद्  
 महिमालयायसुमनः सन्दोहशुश्रूषितां ह्रिद्वन्दायकलिच्छेदेजगवते  
 नव्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायविश्वत्रयी मित्राय

क्षणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुन्यनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीर्णितं  
 ठन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्रमा न्नरनिर्जिततारकराजगणः कृतल  
 क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवहे ॥ ३८ ॥ तोटकठन्द ॥  
 नवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये  
 हम् वितरविततबोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्य  
 स्वरूपम् ॥ ३९ ॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा  
 दप्रसादसन्नुपेयुनाथदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती  
 प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भैवसंततिलका  
 वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रनुस्तवः ॥ अहाय्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन  
 यरे नन्नोमासकृष्णोगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु  
 नाथाहामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदन्नरतः ॥ १ ॥  
 इतिश्री पार्श्वप्रन्नोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

## ॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्ञाश्चक्री नमि विनमि ॥ मुणी पुंमरीच सु  
 निंदो । वाली पञ्जुन्न संबो न्नरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो  
 कोमी पंच इविड नरवर्ष नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणोणे विम  
 लगिरिमहं तिष्ठमेयं नमामि ॥ १ ॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिवं ॥

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, अंजणपुर ठाम ॥ सुरतरु सम  
 सिरि पास सांम, राजे अन्निरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अन्नय  
 देव संठवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वण, फण पल्लव मं  
 मिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥  
 आराहन्त जदि एग मण, पावो पद कळयांण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमाण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला  
कात दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति  
वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥  
पूर्व विदेह विराजता ए, पुंरुरीकनी ज्ञाण ॥ प्रभु द्यो दरसन सं  
पदा, कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरबो गिरवर निच । तीरथ सिख  
र समेतको । चाहूं दरसन चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु ।  
बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सु  
जगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥  
जविजन जेटो जगतसुं । तीरथ करण कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेश्वर पदमनाभ । समरुं सुखकारी ॥ ज्ञावी  
जिनवर जरहखित्त । मंरुण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह  
मांन । श्रिति आयु प्रमाण ॥ परमेश्वर सिरि वर्द्धमांन । जिनराज  
समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक ज्ञाण ॥  
ज्ञावी जिनवर जेटिये । कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामादे सकलमुज्जयः कालघटना । द्विधा जूतं  
रूपं जगदधिधेयं जवतिय ॥ तदंतर्मंत्रं मे स्मरहरमयं सेंडुममलं  
निराकारं शस्वज्जप नरपते सिव्यतु सते ॥ १ ॥ अविरलशब्दधनोधा  
। प्रह्लादितसकलजूतलकलंकाः ॥ मुनिनिरुपासितचरणा । सर  
स्वती हरतु मे डुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥



॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं  
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनैशाणां । साधूनां वंदनेन  
च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । विद्महेस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रका  
शितं गात्रं । नेत्रे च सफली कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनैश्च  
तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर  
पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो,  
सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनैसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥  
॥ २ ॥ जीवमा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा  
नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे वागमें,  
वेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंडमा, त्यूं सोजे महाराज ॥ ४ ॥  
जगमें तीरथ दो वमा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि रुषन्न समो  
सरथा, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो  
मन रही लोनाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाली लखी न जाय  
॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज  
हु न वावरे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां,  
वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच जेरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार  
॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ रुद्रि बुद्धि  
मोहे दीजिये, दिन २ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेशरियानाथके,  
केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाम्बू ॥ चैत्य जामा बीच ॥ १० ॥  
इस रागको नाम कल्याण हे, प्रभु नामागार गंम कल्याण ॥ सकल  
सज्जा कल्याण हे, जब प्रगटी राग ॥ ११ ॥ सोरठ राग  
सुहामणी, मुखां न मेळी जाय ॥ ज्यूं ज्यूं गत गलंतमी, त्यूं त्यूं  
मीठी आय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोमियो, लाखां ऊपर कोम ॥  
अरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोम ॥ १३ ॥



दया गुणारी बेलनी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव  
मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु बेलनी, रोपी  
आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंरुन नई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत नदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत  
संत आतम गुण नूप ॥ आचारज नवप्राय साधु समतारस धाम,  
जिन ज्ञाखित सिद्धांत सुद्ध अनुज्ञव अजिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज  
गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद  
अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परज्ञव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि  
सम जास जोग बहु पुन्ये लखो ॥ तिहुअण सार अपार एह महि  
मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संनारो ॥ ३ ॥ सिद्ध  
चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कळ्याणनिधि  
प्रगटे चेतन नूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिथीका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक  
जगगुरु मुऊ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय नली पुष्कला  
वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥  
धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण  
धरे जिहां जिनवर ज्ञाण ॥ धन ते नविजन जे रहे प्रभु ताहरे  
परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु  
मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांजल कान, मितवाने नलसे मन मा  
हरुं धरुं एक ध्यान ॥ जगति जुगति करवानी ठे मुऊ सघली  
जोम, पण प्रभु लग पहूंचीजें तेह नहि पंग दोम ॥ ३ ॥ आमा  
रूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुऊथी अवराये प्रभुजी  
एटली दूर ॥ आंखमली नलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं  
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनैशाणां । साधूनां वंदनेन  
च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । बिड्ढस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रका-  
शितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनैश्च  
तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर  
पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो,  
सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥  
॥ २ ॥ जीवमा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा  
नमे परजा नमे, आण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें,  
बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंडमा, त्यूं सोन्ने महाराज ॥ ४ ॥  
जगमें तीरथ दो वमा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ जण गिरि रुषज समो  
सरथा, जण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो  
मन रही लोनाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाली लखी न जाय  
॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज  
हु न वावरे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांझ पंखियां,  
वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच जरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार  
॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ रुद्धि बुद्धि  
मोहे दीजिये, दिन २ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेशरियानाथके,  
केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाम्, <sup>अ</sup>चैत्य जामा बीच ॥ १० ॥  
इस रागको नाम कल्याण हे, प्रभु <sup>वामदेवर ठाम</sup>कल्याण ॥ सकल  
सज्जा कल्याण हे, जब प्रगटी राग <sup>नवविबुधे</sup> ११ ॥ सोरठ राग  
सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं <sup>जुलूस</sup> गलंतमी, त्यूं त्यूं  
मीठी आय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोमियो, लाखां ऊपर कोम ॥  
सरती बेला मानवी, लियो कंदोरो तोरु ॥ १३ ॥

दया गुणारी बेलमी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव  
मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु बेलमी, रोपी  
आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंमन जई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत नुदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत  
संत आतम गुण नूप ॥ आचारज नवप्राय साधु समतारस धाम,  
जिन ज्ञाखित सिद्धांत सुद्ध अनुभव अन्निरांम ॥ १ ॥ बोधबीज  
गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद  
अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परभव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि  
सम जास जोग बहु पुन्ये लक्षो ॥ तिहुअण सार अपार एह महि  
मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संनारो ॥ ३ ॥ सिद्ध  
चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि  
प्रगटे चेतन नूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिथीका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक  
जगगुरु मुऊ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय जली पुष्कला  
वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥  
धन ते लोक सुणो जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण  
धरे जिहां जिनवर ज्ञाण ॥ धन ते नविजन जे रहे प्रभु ताहरे  
परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु  
मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांजल कान, मिलवाने जलसे मन मा  
हरुं धरुं एक ध्यान ॥ जगति जुगति करवानी ठे मुऊ सघली  
जोम, पण प्रभु लग पहुंचीजें तेह नहि पग दोम ॥ ३ ॥ आमा  
सूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुऊथी अवराये प्रभुजी  
एटली दूर ॥ आंखमली जलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

रुली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटरुली वहतो  
 कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ  
 ॥ जाणूं शशहर साथें कहूं संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि  
 वामे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय,  
 तो इण जरतना वाली जविजन पावन आय ॥ साहिबनी तो सुन  
 जर सधले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय  
 ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं सार्ची प्रीत, गुण गुणवंतना  
 आवे हियमे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं ठे माहरो आत  
 मराम, नहिय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरूं नाम ॥ ७ ॥ साचे  
 दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि  
 महिर अठेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टालो दीन दयाल, पालो  
 विरुद संजालो निज सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग  
 थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर ठतां नवि आय  
 निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें  
 सकलने जाणे हजूर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वा  
 मि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजे  
 एक पलक जो आये प्रभु तुज संग, लाज नदयजिन चंड लहे नित  
 प्रेम अन्नंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह्य  
 जगते जणुं ॥ जेटवा पायकमल जाव हियमे घणो, करिय सुप  
 साय जे वोनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्यशुं कूरु अरिहंत शुं राखियें,  
 जिस्यो अठे तिस्यो कर जोमि करि जांखियें ॥ अति सबल मुऊ  
 हिये मोह माया घणी, एक मन जगति किम करूं त्रिजवन धणी  
 ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगमे, रीश चटको चढे

लोभ वयरी नमे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम  
 अरिहंत तूं हीयमे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियमे  
 अनेरो धरूं, मूढ मन रीऊवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत  
 जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥  
 कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहूं, मन तणी वात अरिहंत कि  
 एने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुख  
 करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं,  
 धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो  
 नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय  
 पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो  
 जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तूह्म समोवरु नहिं अवर वी  
 छेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांजलुं, बारवर  
 परषदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय नललुं,  
 किम करूं ठाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ जौलिमा जगति तूं चित्त  
 हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन  
 वयण तन उल्लसे, दूरशी दूकना जेम हियमे वसे ॥ ९ ॥ जल  
 जलो एणि संसार सहू ए अठे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पठे  
 ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त  
 आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं  
 नेह जे वात तुह्म जी कहे ॥ तुह्म पय जेटवा अति छणो टलवलुं,  
 पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी  
 आज्ञ कागल करूं, हीरसागर तणां दूध खनिया जरूं ॥ तुह्म मि  
 लवा तणा सामि संदेशमा, इंड पण लखिय न शके अठे एवमा ॥  
 १२ ॥ आपणे रंग जरि वात मुख जेटली, उपजे सामि न कहाय  
 मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, लाम ने कोरु प्रभु

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुढ ज़वि मोह वश नैह हुवे जेहने,  
 समरिये एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल ज़म  
 रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं  
 ध्यान दियमे वस्युं, बापडुं पाप हिव रहिय करशे कियुं ॥ गाम  
 जिम गरुमवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके  
 रही ॥ १५ ॥ पाप में कज़ सावज़ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा  
 तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख ज़ं  
 मार संसार ज़य टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही,  
 एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवमी मारी ज़गति जाणी  
 करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एम रुद्धिवृद्धि,  
 समृद्धि कारण, डुरित वारण, सुख करो ॥ उवजाय वर श्री, ज़क्ति  
 लाजें, घुणयो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी  
 सामि, मया घणी ॥ कर जोमि वलि वलि, वीनवुं प्रभु, पूर आ  
 शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप  
 ज़णुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चन्वीसमो जिनचंद, केवल  
 न्यान दिणंद ॥ त्रिगमे गहगह्यो ए, ज़वियणने कह्यो ए ॥ २ ॥  
 न्यान वडूं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए,  
 साचो सदेह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्र  
 काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे कियुं ए ॥ ४ ॥ अधिक  
 आराधक जाण, ज़गवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया  
 देशतु ए ॥ न्यानी श्वासोच्चास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही  
 ए, कोरु बरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोड्या



सूत्र मऊर ॥ किरिया ठे सही ए, पण पाठे कही ए ॥ ७ ॥  
किरिया सहित जो न्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरु  
ए, संख दूधें जस्यो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मऊर, पांचमि अकर  
सार ॥ जगवैत ज्ञांखियो ए, गणधर सांखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो जवपारो रे ॥  
श्रीअरिहंत इम उपदिशे, जविषणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥  
मिगसर माह फागुण जला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षट  
मासैं लीजियें, शुक्लदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जु  
हारी देहरे, गीतारण गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति  
हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बे कर जोमी ज्ञावशुं, गुरु मुख  
करो उपवासी रे ॥ पांचमि पन्निकमणो करो, पढो पंमित गुरु  
पासो रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन  
आरंज टालो रे ॥ पांचमि स्तवन सुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पा  
लो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी  
रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुक्ल दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उलालानी देशी ॥

॥ हिव जविषण रे पांचमी जजमणो सुणो, घर सारु रे  
वारु धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य  
जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन  
पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी  
कीजियें कानस्सगरली ॥ जण ज्ञान हरिसण चरण टीकी देइ  
पुस्तक पूजियें, आपना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥  
१ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे  
मुखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच



मजीसणा, वासकूपा रे कांची वारू वतरणां ॥ उच्चालो ॥  
 वतरणां वारू वलीह कमली पांच जिलमिल अति जली, स्थाप  
 नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पम्पाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच  
 कोथल पंच नवकरवाल्यां, इण परें श्रावक करे पांचम ऊजमणुं  
 उजवाल्यां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजि  
 ये, घर सारू रे दान वली तिहा दीजिये ॥ प्रतिमानी रे आगल  
 ढोवणुं ढोइये, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइये ॥ उच्चालो ॥  
 जोइये उपगरण देवपूजा काज कलश जृंगार ए, आरति मङ्गलथा  
 ल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखम अंगदू  
 हणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए  
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाभ्मी सर्व जिमामिये रात्रि जोगे  
 रे गीत रसाल गवामीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधिये,  
 ज्ञान दरिस्णारे उत्तम मारग साधिये ॥ उच्चालो ॥ साधिये मारग  
 एह करणी ज्ञान लहिये निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मंदि ज्ञान  
 वंत ते आगलो ॥ अनुक्रमे केवलज्ञान पासी सासतां सुख जे  
 लहे, जे करे पांचमी तप अखंभित दीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥  
 कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणसरो ॥ में  
 शुण्यो श्री अरिहंत जगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री  
 जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय  
 सुंदर, जगति जाव, प्रशंसियो ॥ २५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्त  
 वन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पासो ज्ञान रे ॥

पहिलुं ज्ञान ने पठे किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥

॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान बखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २॥  
 मति अगवीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे ॥  
 दोय जेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥  
 चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान  
 समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ  
 प्रसाद करीने, महारी पूरो नमोद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण  
 पामुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोमी पास ॥  
 सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोजागी  
 साहिब मेरा बे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा बे ॥ ए आंकणी ॥  
 सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें  
 पेखतां मानुं, नव नवि ठबिय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥  
 जव दुःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी  
 गुण ताहरा माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिने  
 नहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु  
 मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे  
 रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें  
 तुं वसे साहिब, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा  
 ता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणा  
 रसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत  
 रेशें बावीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन जले जावशुं,  
 मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परजपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी स  
फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फल्यो जी, कवण कनक फल खाय  
॥ गयवर बांध्यो वारणो जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल  
जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिढ्या जी, हियमुं  
हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खम  
खावा जाय ॥ आदर साहिवनो लही जी, कुण लये रांक मनाय  
॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न ठते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥  
कुण सुरतरुथी जठिनें जी, वावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव  
अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज जवो  
जवे जी, तुंदिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा जगवंत, धरम प्रकाशें श्रीअरिहंत ॥  
वारे परषदा बैठी जुमी, मागशिर शुदि इग्यारश वमी ॥ १ ॥ म  
द्धिनाथना तीन कळ्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर  
दीक्षा लीधी रूवमी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने जपनुं केवलज्ञान,  
पांच कळ्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवमी ॥ मा०  
॥ ३ ॥ पांच जगत ऐरवत इमहीज, पांच कळ्याणिक हुवे तिम  
हीज, पंचासनी संख्या परगमी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत  
गणतां एम, दोढशें कळ्याणक आये तेम ॥ कुण तिथ ठे ए तिथि  
जेवमी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाज अ  
नंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखमी ॥ मा० ॥  
६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमद्धि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ  
॥ मौन तणी परि व्रत इम पमी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

लीजिये, चोविहार विधिशुं कीजिये ॥ पण परमाद न कीजें, धर्मी  
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक  
 नेढहास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावमी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं  
 कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काजसंग  
 गुरु पाये पमी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी  
 पूजीजें मन रली ॥ सुगतिपुरी कीजें दूकमी ॥ मा० ॥ ११ ॥  
 मौन इग्यारस महोदुं पर्व, आराध्यां सुख लहिये सर्व ॥ व्रत पञ्च  
 रक्षा करो आखमी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशो समे,  
 कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो व्याहमी ॥ मा०  
 ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

### ॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारदे मात नमूं सिरनामी, हुं गांनं त्रिजुवनके स्वामी  
 ॥ संतहि संत जपै सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥  
 सांत जपाने कीजै कांमा, सोइ कांम हुवै अन्निरामा ॥ शांति ज  
 पी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्जशकी  
 प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति  
 तणा गुण गावै, रुद्धि अचिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु  
 शांति सुहाई, ता नरकूं कुठ आरति नांही ॥ जो कबु वंगै सोही  
 पूरै, दालिइ दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति  
 प्रकासी, धटर के जीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि संरूप कहा नवि  
 जावै, कहितां मो मन अचरज आवै ॥ ५ ॥ मार दिया सबही ह  
 पियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारितजी शिवसुं रंग राचै,  
 राज तज्या पिए साहिव साचै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहोजै देवा,  
 कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ रुद्धि सहू प्रभु पास लहीजै, निहा  
 हारी नाम कहोजै ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे सम ज्ञायक, पिए

सेवकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह ज्ञेय जग नायक, नाम  
 अतीत सबै विध लायक ॥ ८ ॥ सन्नु मित्र सम चित्त गिणीजै,  
 नाम देव अरिहंत ज्ञणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहीजै, सेवक  
 जाण महा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय मंत्रीरा, दूषण  
 नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण  
 न रहै प्रभु एकण ठांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखै,  
 पिण सुपनो कबहु नवि पखै ॥ रीस विना बावीस परीसह, सै-या  
 जीती तैं जगदीसह ॥ ११ ॥ मान विना जग आंश मनावै, मा-  
 या विना सबसुं मन लावै ॥ लोभ विना गुणरास ग्रहीजै, निहु  
 ज्ये त्रिगुणो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रंथपणै सिर बत्र धरावै, नाम  
 जनी पिण चमर ठुलावै ॥ अन्नय दांन दाता सुखकारण, आगै  
 चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल ज्ञणीजै, कर्म  
 सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ आपै, लख घणी  
 देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कहावै, ना किसही  
 कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद धरावै, पिण सोवन पंकज  
 पगडावै ॥ १५ ॥ तजि आरंज निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं  
 साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा  
 संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अदभुत कहिये, तेरे गुणांको पार  
 न लहिये ॥ तूं प्रभु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक  
 तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकनणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन  
 दयाला ॥ तूं सरणागत राखण धीरा, तूं प्रभु तारक बै वरुवीरा  
 ॥ १८ ॥ तुम जेसैं वरुजागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स-  
 वायो ॥ कर जोमो प्रभु वीनबुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं  
 ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, जवसाधरथी पार उतारो  
 ॥ श्रीहयणापुर मंरुण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसावै, श्रीगुणसागरके मन जावै ॥  
जे ज्वर नारी इक चित गावै, मन दंढित फल निश्चै पावै ॥ २१ ॥  
इति श्रीशक्तिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोजा ताहरी संसार  
सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण  
तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पमे जंजालै, उपयोगसुं वैसै जिन आलै  
॥ आसातना चनरासी ढालै, साश्वता सुख तेहिज संजालै ॥ २ ॥  
जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि  
कला सीखण ठूकै, कुरलो तंबोल नखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वमी  
लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रु  
धिर क्रिया, चांदीनी नाखै चांमनियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये  
कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसाभण विसरावै, अज  
गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखै,  
नख गाल वपुषना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विह  
चन अपणो कर धन धरणो ॥ ६ ॥ वैसै पग ऊपर पग चढिया, आपै  
ठाणा ठमै हुंढणियां ॥ सूकवै कप्पम पप्पम वनियां, नासीय ठिपै  
नृप जय पनियां ॥ ७ ॥ शोके रौवै विकथा ज कहै, इहां संख्या  
वैतालीस लहै ॥ हथियार घमे ने पशु बांधै, तापै नांणो परखै रां  
धै ॥ ८ ॥ ज्ञांजी निस्सही जिनगृह पेसे, धरै ठत्र ने मंरुपमें  
वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अनें पनहो, चामर वींजै मन ठांम नही ॥ ९ ॥  
तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, नूषण तज आप कुरूप धियै ॥  
दरसनथी सिर अंजली न धरै, इगसामै उत्तरासंग न करे ॥ १० ॥



जाण, लाख तीस पूरब परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब  
 बीस, दस लाख पूरब चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लाख पूरब दोय,  
 एक लाख पूरब शीतल धित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी  
 लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो,  
 वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लाख साठ वरीस,  
 वरस अनंत तणो लाख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद,  
 लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस्र धिति पच्याणवै,  
 श्री कुंथुनाथ तणी संजवै ॥ सहस्र चोरासी अर जिनतणी, मल्लि  
 सहस्र पचावन जणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिसु  
 ब्रत परमाज उदार ॥ बीस सहस्र नमिजिन धित जणी, वरस स  
 हस्र नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस  
 बहुत्तर वीरजिणंद ॥ रुषजतणा तेरे अवतार, सात चंड शंती-  
 सर बार ॥ ९ ॥ सुब्रत जव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्ता-  
 बीस ॥ त्रिहुंश जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अमतीस  
 ॥ १० ॥ सिद्ध लही सह्रुने धन धन, गणधर चवदेसै बावन्न ॥  
 सह्रुने मुनि लाख अठावीस, सहस्र ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ लाख  
 चमाल ठ्याल हजार, परुधिक सह्रु साधवी सो व्यार ॥ श्रावक  
 लाख पचावन धुरै, अमतालीस सहस्र ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोमि  
 श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस्र अमतीस ॥ ए संघ चतुर्विध  
 सह्रु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री  
 चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं,  
 पञ्चणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लिखै निसतारं, आपण सफल



हुवै अवतारं, पामीजै जव पारं ॥ १ ॥ कर्षेन अजित संजव अ-  
जिनंदन, सुमति पदमप्रभु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंड-  
प्रभू ने सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि,  
विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-  
शुनाथ अर महि सुहंकर, सुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए  
जिन चोवीस ॥ जग वल्लभ जगगुरु जगदीश, प्रणामीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपनगज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम जगत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो  
उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्रोस, ठठो  
कुंशु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संजूमि सनाथ ॥  
५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय  
तांम, बारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र जगत  
सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरंग मऊार ॥ ७ ॥ स-  
जूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ अया सिवगामी, ते  
प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जाण, द्विपृष्टि दूसरो, तीजो स्वयंप्रभु जा-  
णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमाणिये  
ए ॥ ९ ॥ ठठो पुरुष पुंररीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे  
आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए  
पिण नमुं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वसुदेव, नारकी सातमी, अगला  
पांच ठठो गया ए ॥ सातमो पंचमी नैर, चोथी आठमो, नवमो  
तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें जइ, सुप्रभु सुदर्शन,  
आनंद नंदन शुभ्र मती ए ॥ रामचंड बलजइ, बलदेव ए नव,  
आठ अया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलजइ ब्रह्म देवलोक,

काल उसप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक  
नाम, तीर्थकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत ज्ञणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरणे प्रभु रहतां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंज वलय  
प्रह्लाद, रावण जरासिंधु जिता ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक  
गति गामिया ए, ते पिण ज्ञादि जिनेस कैई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नें कुंथु अरि एह जव एकही, चक्रधर तीर्थकर दोय  
पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत जव जूजूआ, देह तिणसाव  
पिण जीव गुणसठ अया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय बलदेव केरा  
पिता, एकहिज आय नव एण लेखै ठता ॥ तीन चक्रधर तणा  
मिलिय बारै टढ्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिढ्या ॥ १६ ॥  
तीन चक्रवर्तणी ढाल दीजे इसै, माय सहुनी अई साठ लेखे इसै  
॥ एह नररयणनो ध्यान नित जे घरे, तेह सुरपद लही मोह  
पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम शुण्या तीर्थकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासु-  
देव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम  
जगत जयवंतों सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो  
मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ शलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला  
धर्म निवारणो, जय जंजण जगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुऊ मन ऊ  
लट अति घणो, सो दिन सफल गिणोस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरू,  
जब नयणो निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरब निनाणूं वार ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥  
 इण गिरचनमासे रह्या, शिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पांमे  
 शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंरुरीक ॥ पुंरुरगिरि तिण कारणें,  
 जगति करो निरज्जीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू,  
 विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखर समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥  
 श्री० ॥ ६ ॥ थावच्चा मुनिवर सुक, सहस्र परिवार ॥ पंथग  
 वथणे जागियो, सो सेलंग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांरुव पांच  
 महाबलो, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सोधा सिद्धाचलै, सुर नर  
 कैरे वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण रूंगरै, मुनिवर कोमा-  
 कोमि ॥ पाज चढंता सांज्जरै, ते प्रणमूं करजोमि ॥ श्री० ॥ ९ ॥  
 जे वाघण प्रतिबूजवो, ते दरबाजै जोय ॥ गोमुख यक्ष कवरू मिली,  
 सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर  
 सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील बिलास  
 श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरवानी ॥

श्री सिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजांमी  
 रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीमा यात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥  
 श्रीरुषज्ज जिनेसर राया रे, जिहां पूरब निनाणूं आया रे, प्रभु  
 समवसरया सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चेत्री पूनम दिन वखाणो रे,  
 पांच कोमिसुं पुंरुरीक जांणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या०  
 ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, बे बे कोमिसुं साधु संघाते  
 रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने  
 तोमी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोमी रे, ते वंदो बे कर जोमी

॥ या ० ॥ ५ ॥ इम ज़रतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु थिर  
 आटे रे, पांम्बा मुगति तयो ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस  
 मुनी परवारे रे, आवच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलंग अणगार  
 ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे रे,  
 ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांम्ब इण गिर  
 आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वलो संव प्रजून कदाय  
 ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावते रे, जिहां सीधा साधु अनंते  
 रे, इम ज्ञाण्यो श्रीजगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ उज्जल गिर सम नही  
 कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या०  
 ॥ ११ ॥ एकादारी ने सचित्त पहारी रे, पदचारो ने जूमि संधारी  
 रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम ठहरी जे नर  
 पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण जय टाले  
 ॥ या० ॥ १३ ॥ धनइ ते नर ने नारी रे, जेटे विमलाचल इक  
 तारी रे, जइये तेहतणी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंड  
 सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण  
 गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिव, बीनतनी अवधारो रे ॥  
 जगना तारू ॥ मुऊ तारो जी कृपानिध स्वांमी, जग जसवाद  
 प्रगट वै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥  
 निज गुण जोक्ता पर गुण लोभा, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥  
 अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज०  
 ॥ २ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयोरे ॥  
 ज० ॥ तुम रीजावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥  
 मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेइ, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता बलि विकलेंडी, वेष धरया दुख धामी रे ॥ ज०  
 ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेडीपणो  
 धारयो रे ॥ ज० ॥ चौबीसे दंरुक मांहि जमियो, अब तो हूं पिण  
 हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ जव नाटक नित करतो नव नव,  
 हूं तुज आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो,  
 निरखी तुजने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुज नाटक  
 देखी रीज्या, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीज्या  
 तो मुज ज्ञाखो, बलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥  
 लालच धरि हूं सेवा सारूं, तूं दुखमा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता  
 सेती सुंम जलैरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥  
 तुज सरिषा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥  
 तो मुज करमतणी गति अवली, दोस न कोइ तुमारो रे ॥ ज० ॥ ९ ॥  
 मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥  
 ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥  
 ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अठारै गुणतालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥  
 ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन जेटया, वीकानेर मजारो रे ॥ ज०  
 ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन रुषजदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरो वीनती, करजोमी हो कहूं मननी बात  
 ॥ बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिजुवन तात ॥ वी०  
 ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं जम्यो, जव मांहे हो स्वामीसमुझ म  
 जार ॥ दुख अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥  
 वी० ॥ २ ॥ पर जपगारी तूं प्रज्जू, दुख जंजे हो जग दीनदयाल  
 ॥ तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुजने हो निज नयण निहाल  
 ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वांम ॥ हुंतो परम ज्ञक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो  
 कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूखपाण प्रनिबूज्या, जिण कीधा हो तुज्ज  
 ने उपसर्ग ॥ रुंक दियो चंमकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग  
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण धणो, जिण बौढ्या हो तोरा  
 अवरणदाद ॥ ते बलतो तें राखियो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र  
 साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण वै इंडजालियो, इम कहतो हो आ  
 यो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजी  
 र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उग्राप्या ताहरा, ते ऊगज्यो हो तुज्ज साथ  
 जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे जवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल  
 ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिप. जेरस्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी  
 पाल ॥ तिरती मूकी काठलो ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥  
 वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुपि दूहव्यो, चित चूको हो चारितथो  
 अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ वी०  
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो जार ॥  
 नंदिवेण पिण ऊयरयो, सुर पदवी हो दीधो अति सार ॥ वी० ॥  
 ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, अहवासे हो वस्यो वरस चौवीस ॥ ते  
 पिण आङ्कुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥  
 १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह  
 ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी०  
 ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखरी, नही पोसो हो नही आदर दीख  
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी०  
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊयरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥  
 सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरनी वात ॥ वी०  
 ॥ १५ ॥ सूयो संजम नहि पलैं, नही तेहवो हो मुज्ज दरसण  
 ज्ञान ॥ पिण आधार वै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यांत

धी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी  
 ग्राम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंठित  
 काम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख  
 जायै दूर ॥ तुम नांमे वंठित फलै, तुम नांमे हो मुऊ आनंद पूर  
 ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंमन, तीर्थकर  
 चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंठन, सेवतां सुरतरु समो ॥  
 जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज  
 समयसुंदर ॥ संश्रुण्यो त्रिजुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा  
 वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनसर, एह करुं अरदास जी ॥ ता  
 रण तरण विरुद तुऊ सांझलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥  
 इण संसार समुद्र अथागै, जमियो जवजल मांहिजी ॥ गिल गिचिया  
 जिम आयो गिरतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं  
 ज्ञानी तोपिण तुऊ आगै, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंम  
 क हूं जमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न  
 रकतणो इक दंमक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच आवर नें  
 तीन विकलेंडी ॥ जुगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचे  
 डी तिर्यच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषो  
 नें वैमाणिक, इम दंमक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेडी तिर्यच  
 अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए चोविह देवांमें ऊपजै, इम देवां  
 गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात अऊखै नर तिरि, निहचै  
 देव ज थाय जी ॥ निज आऊखै सम के लुबै, पिण अधिके नवि  
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर ताई, समूर्तिम तिर्यच



जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरज्जज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥  
 ॥ ८ ॥ आन संख्यातै जे गरज्जज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर  
 पृथ्वी नैं वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ए ॥ पर्याप्ता  
 इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण  
 आगै, अधिकांई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी  
 मांही सुर, एकेंडी नवि आय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला,  
 मानवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव जमै संसार॥दोय गति  
 नैं दोय आगत जांणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-  
 ख्याते आयु परजापता, पंचेंडी तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-  
 ज वे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग  
 जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम वीय ॥ गृध्र प्रमुख पंखी त्रीजी  
 लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सीमा सा  
 पणी, ठठि लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के मावलो ॥ ऊप  
 जै गरज्जज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे विहुं दंभकै,  
 तिरयंच के नर आय ॥ तेपिण गरज्जज ने परयापता ॥ संख्याती  
 जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरथा, जे  
 फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्टे जांगे करते कहूं, पिण निश्चै नही को  
 य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्ति हुवै, बीजी हरि  
 बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थकरपद लहै ॥ चोथीकेवल एव ॥ न० ॥  
 ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरबविरति लहै, ठठि देसविरत्त ॥ सातमी  
 नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए देसी ॥

॥ मानव गति विन सुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आन संख्यातै नर सहु दंरुके रे, आवी लहै अवतार॥मा०॥१०॥  
 तेह बाहु दंरुक बे तजी रे, बीजा जे बाबोस ॥ तिहांथी आया थापै  
 भानवी रे, सुख दुख कर्म सतीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच अतं  
 खी आउवै रे, सातमी नरकना तेन ॥ तिहांजी मरने मनुष्य दुवे  
 नही रे, अरिहंत जारुयो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव  
 तथा वली रे, चक्रवर्त्त ने अरिहंत ॥ सग लगना आया ए हुवै रे,  
 नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चोविह देव थकी चवि ऊप  
 जै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थकर ए हुवै रे, वैमानिकथी  
 वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमे  
 इण पर जव मांहे करम विशेष ॥ आन संख्यातो जे नर तिर्यंच  
 विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण  
 तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं  
 हेव ॥ पंचेंडी तीर्थंच संख्यातै आऊखै जेह, ते मरी चिहुंगतिमां  
 जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ आवर पांच तीने विकलेंडी आठ  
 कहावे, तिहांथी आन संख्याता नर तिरयंचमें आवे ॥ विकल चवी  
 लहै सरबविरति पिण मुगति न पावै, तेन वाजथी आयो तेहने  
 समकित नावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार,  
 पृथ्वी आन वनस्पतीमांहि लहै अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि  
 आवै दसे ठामे, आवर विकल तिरि नरमांहे उतपत पामै ॥ २८ ॥  
 पृथ्वीकाय आद देई दस दंरुके एह, तेन बाहु मांहे आवी ऊपजै  
 तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेन वाज बे जावै, विकलेंडी ते  
 दसमांहि जावै पूठाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितणो सिध्यात्वी  
 जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी

पाणी अग्नि अनै चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ  
जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंड़ी तेइंड़ी अने चौरिंदी मजारै, संख्याता  
बरसां लगै जमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ जव लगि तां नर  
तिरयंचमें रहियो, हिव मानवजव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो  
॥ ३१ ॥ राग द्वेष बूटे नही किम हुवै बूटकवार, पिण बै माहरै  
मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धै अ-  
रिहत लाधो, हिव संसार थणो जमियोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥  
तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो में  
नवनिध सिद्ध पांमो ॥ अवर न कांइ इच्छू इण जव तूंहिज देव,  
सूधै मन इक होज्यो जव२ ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥  
संवत सतर जगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद  
समान वाचक, विजय हरष सुतीस ए ॥ श्री पासना गुण एम  
गावै, धरमसो सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंभक स्तवनं ॥

॥ अथ इरियावही मिठामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणामी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि  
मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पम्किमी जिम इरियावही, श्री  
वीरनी रे वाणी तहत कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वांणो  
मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिठामिदुक्कड तणी संख्या,  
कहिसुं जिम कहे केवली ॥ जू दग जलण तिम वाज, वणसइ  
विगल पण इंडी तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, डुर ते क-  
रिवा जणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुरुवि दग रे वाज तेज वणसइ, पण  
आवर रे वादर सुहम दसे अई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

अथा, बावीसे रे पञ्चतन्त्र अपञ्चतन्त्रया ॥ उद्धालो ॥ पञ्चतन्त्र अपञ्च-  
तन्त्र वखाण्या, विगल तिय बह ज्ञाल ए ॥ जल अल खचर जुयंग  
डुइ, पण इंडिय तिरि अरुयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुरुवी,  
नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद जेदे करी जाणो, पञ्चतन्त्र अ-  
पञ्चतन्त्र जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया,  
किलविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंजिय दस रे नव  
लोगंतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥ उद्धालो ॥  
वखाणियै दस विध जुवनपतिना, तार रवि सशि रिसिगहा ॥ चर  
अरि दसै विध जोइसी सुर, वखाण्या जिनवर जिहां ॥ वारह  
विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवके नव ज्ञाया ॥ पञ्चतन्त्र अपञ्चतन्त्र  
अठाणूं, अधिक सत संख्या गिएयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचनरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर जूमिका ए ॥ खेत्र  
ए पनरह करम जूमि जाणोयै असि कसि मसिहि आजीविकाए ॥  
हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरणवत सहीए ॥ मेरुपिण  
पाखती चारि ९ खेत्र दस कुरु अकरम जूमिकहीए ॥ ४ ॥ हिम-  
गिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांहि विस्तरि ए ॥ सात  
२ अंतर दोय पासै दीप ठप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै जेद डुइ  
आगला जांणी मणुय पञ्चतन्त्र अपञ्चतन्त्रयाए ॥ एक सौ एक समुर्द्धिम  
जेद तीनसै तीनमणुआ अयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसविध जीवसहू ठे एह अजिहय आदिक दस  
गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस ठसै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥  
ते रागै दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ हुइ सहस इग्यारह डुइ-  
सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितनर आण ॥ मन-

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजै ॥ ए देसी ॥

हिव उद्यमवादी जणो ए, ए ज्यारै असमठ तो ॥ सकल  
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरठ तो ॥ ४० ॥ उद्यम  
करतां मानवी ए, स्युं नवि सीजै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी  
ए, लीधो लंकाराज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां  
सत्त्व न होय तो ॥ देवल बाघमुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय  
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥  
उद्यमथी नंची चढै ए, जोवो एकेंडिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम  
करतां इक समें ए, जेह न सीजै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी  
हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि ऊरयां विना  
ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पमै कोलियो ए, मुखमां केषे  
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म  
तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र  
हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंज तो ॥ उद्यमथी खट मासमां  
ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपैश सरवर जरै ए, कां  
करे ३ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल  
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलविंडुउ ए, करे पाहाणमां गम तो ॥  
उद्यमथी विद्या जणै ए, उद्यम जोमै दांम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणो आवै ॥ अमिय  
रसै जिन वयण सुणीनै, आणंद अंग न मावै रे ॥ ५० ॥ प्राणी  
समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥  
॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए  
पाचे समवाय मिथ्यां विन, कोइ काज न सीजै ॥ अंगुल जोगै

कवल तणी पर, जे बूजै ते रंजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आसह आणी  
 कोइ एकनें, एहमां दिवै वमाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणंगण,  
 जीते सुजट लमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै,  
 काल क्रमें वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विधल  
 घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय नयम जोकादिक, जाग्य सबल  
 सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी  
 रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म अईनें, निगोदथकी नीक-  
 लियो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे  
 प्रा० ॥ ५५ ॥ जवधितनो परपाक अयो तब, पंमित वोर्य नल्ल-  
 सियो ॥ जव्य स्वजावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे  
 ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्धमांन जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गा  
 वो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्दाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संशुण्यो  
 ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय  
 देव सुरिंद पटधर, विजयप्रज्ञ मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक  
 सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च स  
 मवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ थंवनपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुप्रति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार,  
 आणी ज्ञाव अपार ॥ चवदै गुण आनक सुविचार, कहिस्थुं सूत्र  
 अरथ मन धार, पांमे जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिश्रयात कह्यो  
 गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आणो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चो  
 थो अविरत नाम कहाणो, देशविरति पंचम परमाणो, ठठो प्रमत्त

पिठाणू ॥ १ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अढम अपुरव करण  
कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम्म ॥ सुखम लोभ दसम सुविचार,  
उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम  
सयोगी गुणधाम, चवदम अयो अजोगी नाम, वरणू प्रथम  
विचार ॥ कुगुरु कुदेव कुधम्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणवाणै,  
तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष आपी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती  
ते कहै ॥ जैत शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय  
मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प धणें, संस  
थी नाम मिथ्यात चोथो ज्ञणै ॥ ६ ॥ समज नही काय निज  
धंद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ  
नंत अज्ञव्यनें, करिय अनादि अति अंतसुज्ञव्यनें ॥ ७ ॥ जेस  
नर खीर घृत खंरु जिमनें वमै, सरस रस पाय बलि स्वाद केहवो  
गमै ॥ चौथ पंचम ठहै ठाण चढने पमे, क्णिणहि कषाय वस आय  
पहलै अमै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि पट आवली, सहोय  
सासादनें अित इसी सांजली ॥ हिव इहां मिश्र गुणठाण तीजो  
कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वे कर जोडी तांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि  
मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर  
दहणां बेजं ठती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि, मरणा लहै  
नही, आउ बंधनपमै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकि-  
त लहै, मति सरखी गति परजवैए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान,  
उदय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत



गुणगण, तेत्रीस सागर, साधिक धिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥  
 दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥  
 सहु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी, अधिक १ उन्नत करै  
 ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा जव  
 में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद  
 लहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या  
 मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप  
 शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते कय कीध, ते नर  
 कायकी, तिणहिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ,  
 ताते तिहां थकी, तीजै चोथे जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंवल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचमदेसविरति गुणगण, प्रगटै चोकमी प्रत्याख्यान ॥ जेण  
 तजैवा बीस अजहू, पांम्यो आवकपणो प्रत्यह ॥ १७ ॥ गुण  
 इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संजारै ॥ पूजादिक षट्  
 कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्त्त रौड ध्यान ह्वै  
 मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस ऊणी पुवकोरु, पंचम  
 गुणगणो श्रित जोरु ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुणग्यान, इक १  
 अंतरमहुरत मान ॥ पंच प्रमाद वसै जिण ठाम, तेण प्रमत्त ठढो  
 गुणधाम ॥ २० ॥ शिवरकलप जिनकलप आचार, साधै षट् आव-  
 स्यक सार ॥ उद्यत चोथा च्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणगण  
 कहाय ॥ २१ ॥ रुधो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान एकांत  
 आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विधे नासै, अपरमत्त सत्तम  
 गुण जासै ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंखिया ॥ ए देशी ॥

पहिले अंसे अठम गुणगणान्तणें, आरंजे दोय श्रेण संख्येपै

ते गएँ ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, कृपकश्रेणि  
 कायक प्रकृति दस कय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम  
 अपूरब गुण लहै, अठम नाम अपूरब करण तिणें कहै ॥ सुकल  
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अमिग ध्याने  
 धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जाणियै, जिहां जाव  
 थिररूप निवृत्ति न जाणियै ॥ क्रोध मान ने माया संजलणा हणें,  
 उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम  
 लोचन कांइक शिव अजिलखै, तें सुखम संपराय दसम पंक्ति अखै ॥  
 संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण ठाम  
 सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किणही  
 परै, तो आयै अहमिंद अवर गति नादरै ॥ चार वार समश्रेणि  
 करै संसारमें, एक जेवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥  
 चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पदै, मोह नदय उत्कृष्ट अरध  
 पुदगल रमै ॥ कृपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही, दशमश्रेणी  
 वारम्भ चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागथ आयो पुरंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो वारम जाण, मोह खपायो नेमो  
 आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात,  
 हिव आगे तेरम गुणथान तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकनी  
 कय गई रहीअ अघातीय एम, प्रकृति पिब्यासी जेहने जूना कप्पर  
 जेम ॥ दरसन ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान  
 प्रगट अयो विचरै श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी गानी  
 परगट वात, महिमावंत अढरै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे  
 ऊणी कही इक पूरबकोमि, उत्कृष्ट तेरम गुणठाणें ए थिति जोमि  
 ॥ ३१ ॥ कर सेवेसी करण निरुध्या मन दच काय, तेष अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊचरता जेहनो  
मांन, पंचम गति पांमैं सिवपद चउदम गुणग्रान ॥ ३२ ॥ त्रोजे  
बारमें तेरमें मांहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चोथो परजव साथे  
होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लज्जै पहिला च्यार, धुरला पांच  
तिरी मांहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहरु मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसानलै ॥  
गुणठाण चवद विचार वरण्यो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतरैसै  
ठत्तौसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजयश्री हरष सानिध,  
कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु  
सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव  
तत्वनी, गाथा ज्ञासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कहिस्युं  
सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संबर निज्जर  
बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि बायाल,  
सत्तावन बारै चौ नव क्रम जेदनी माल ॥ १ ॥ इग डु ति चौविह  
पणविह ठव्हिह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदै गई करणे  
काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय ठाण, सन्नि असन्नि  
पणिंदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जता अपज्जता चवदै  
होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्पा सोय ॥ नाण दंसण  
चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए वरु लक्षण लकत जीव इय  
इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जती तीन, सासोसास

ज्ञाया मन वर ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार ऐगेंडी पंच पञ्जती  
 विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें वर पञ्जती होय ॥ ४ ॥ इंद्रिय  
 पांच नसास आऊ वल ए दस प्राणि, च्यार ठे सात आठ एगिंदी  
 त्रिगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंडी नें नव दस क्रम आय, प्राणाश्री  
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूना  
 त्रिण २ जेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विठेद ॥ खंधा देस  
 पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नत्त काल ए पांच  
 न जीव ॥ ६ ॥ चलण सहाई धम्में थिर संठाण अधम्म, अवगाहें पूरण  
 गलणें नत्त पुग्गल धम्म ॥ समयवलि य महुत्त दोह पख मास नें  
 साल पळयोपम सागर नसप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ वर इग दो सग  
 सग सग वर इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र  
 कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन ऊनासें माण, केवलनाणी  
 जणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर हुग  
 पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर उवंग कहाय ॥ आदि  
 संघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ नसास तेम वलि आ  
 तप ने उज्जोय ॥ ९ ॥ सुजखगइ निम्माणत सादि दगु नीमाल,  
 सुर नर तिरि आऊ तिठंकर पुण्य वयाल ॥ तस वादर पञ्जत प  
 तेय थिरं सुज सोय ॥ सुजग सुसर आइऊ जसैं त्रस दसको होय  
 ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव बीजा नीचअसाय, मिथ्य आवर  
 दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च हुग ऐकेंडी वि ति  
 चौरिंदी तेय, कूखगई नपघा अपसत्त्य वस चौ जेय ॥ ११ ॥ पढ  
 म संघयण विना संघेण तेम संठाण, एम वयासी प्रकृति पाप तें  
 तनी ए जाण ॥ आवर सुहम अपऊ साहारण अथिरे गेय, असुज  
 हुजग दू सरणा इऊ अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय  
 इंदि कसाय अवय तिम जोग वायालीस सेव पचीस क्रिया संजो

ण ॥ कौश्य अहिगरेणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं  
 भकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिहादंसण वसी  
 तेम, अपञ्चखाणकी दिठ पुठ पादुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि  
 य ने सत्थि सहत्थे जेह, आझापनकी वेयारण अणजोगा तेह ॥  
 १४ ॥ अणव कंख पञ्चयना ज्वनंगी समुदाय, प्रेम देष इरियाव  
 ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म जाव  
 ण चारित्त, पणतिग बावीस दसे बारै पण संवर तत्त ॥ १५ ॥ इ  
 रिया ज्ञाषा एषणा सुमतीना जेद होय, आदान जम उच्चर नि  
 क्खिण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कार्यगुत्ती त्रिण जाण, हि  
 व आगे बावीस परिसह कहू हित आण ॥ १६ ॥ जूख पिपासा  
 सीत जसेन मांसा निरवत्थ, अरति जोषा चरिआ नैबिद्या सिज्जा  
 संत्त ॥ अक्रोसवहजायण अलाज रोग त्रिण फास, मलं सक्कार य  
 ज्ञा अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मदव अज्जव मुत्ती तव  
 संजम सम्म, सत्यं सौच अकिंचन वंजचेरजं इ धम्म ॥ पढम अ  
 नित्य असरण संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संवर निर्जर ज  
 वि जावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाव बोध डुरलज्ज इग्यारमगाम,  
 धरम साधक अरिहत ए बारै जावना जाव ॥ सापायक छेदोप  
 ल्यापन बीजो सोय, परिहार विश्रुद्ध सूखम संपराय चनत्थो जोय  
 ॥ १९ ॥ तिम अहक्काय चरित्त संख जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु  
 विधि आचरणे के जिय पांम्या सिद्ध ॥ बारै बिध निर्जर तत्व बंध  
 ना ज्यार प्रकार, प्रकृति विई अनुज्जाग प्रदेस जेदे निरधार ॥ २० ॥  
 अणसण जलोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सद्धीनता  
 बाहिर तप पम ज्ञाग ॥ पायडित्त विनय वेयावच्च तेम सिज्जाय,  
 ध्यान कानुसग अच्यंतर तप पम विध आय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु  
 जाव काल अवधारण अित निरवंच, अनुज्जागे रस तेम प्रसेदे वल

नौ संव ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मय्य वलि तेम, निगम-विप्र  
 कर कुंजकार जंजारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना ज्ञाप्ता  
 जे जे ज्ञाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सज्ञाव ॥ इम संसेपे  
 विवरण कीना आछे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं द्वि मोख  
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपण इव्य नै खेत्र प्रमाण, फरसन काव  
 पांचमो ठछो अंतर जाण ॥ ज्ञाग सातमो ज्ञाव आठ तिम अवप  
 बहुत्त ॥ ए नव जेदें ज्ञावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक  
 पदवी छै जे पदेअविनाज्ञाव, व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जिम  
 नहीय अज्ञाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवरण  
 कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै कायक सत्री  
 असत्री येसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न इव्य प्रमाणे सिद्ध  
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम ज्ञाग एग सिद्ध होय अणंत ॥  
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती  
 थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां ज्ञावै नहि सिद्धां अं  
 तर जोय, सरव जीवथी ज्ञाग अनंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥  
 दंशण नाण जेहने बे ते कायक ज्ञाव, जीवत जेहने वलि परणाम  
 क ज्ञाव समाव ॥ सहूथी थोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी  
 थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक  
 नव तत्त तस सम्मत्त, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव  
 जिनेसर सुखथी ज्ञाप्ता वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत  
 निच्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अ  
 र्द्ध पुगल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंतै इम  
 पुगल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तद्गुण वयण प्रगट्ट ॥ ३०  
 ॥ इम नव तत्त जेद पमिजेदै विवरण कीध, आवक आग्रह कीन  
 सदाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गुण सुज्ज सदन प्रकास नदी उपमान,



श्रीजिनलान्नचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक  
करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वरसाखानी पनिसाख ॥  
ग्यानसार ते पनिसाखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणे  
विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवत्तर निश्चय नय विगई प्रवचन  
माय, परम सिद्धि पद वाम गर्ते ए अंक गिलाय ॥ माय किसन  
ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा ज्ञज  
नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व ज्ञाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ रुषजादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥  
दंमक रचनायें तबुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंमक  
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें  
अणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ बि  
ति चौरिंदी गप्पधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस  
वेमाणिया, ए दंमक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं द्विवै, गणनायें  
ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर जुगाहया संघयणेंतणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो  
समुग्घाय प्रमाण ॥ दिढी दंसण नाण जोग तिम बलि उवयोग,  
उपपात वलि चवण ठिई पज्जति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार  
सन्नि गई आगयवेच, द्वार गाहा डुगनो ए अरथ कह्यो संकेव ॥  
द्विव तेवीस द्वारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहयो  
कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गप्पय तिरि वाऊ कार्ये च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच  
दंमक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ आवर च्यारनें जयन्य उकोसे देइ



बाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति  
मणुआ सहुमें जाय, तेउ बाऊग्री मरीने जीव मनुज नवि थाय  
॥ २० ॥ श्रीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, आवर विगल  
नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पऊता मणु बादर अगन वेमाणिक  
तेम जवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम ॥ २१ ॥ बेइंडी तेइंडी  
पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥  
हे जिन ए सहु ज्ञावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां  
किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंरुगमें ते गति  
संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण  
दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत  
प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी  
तुह दरसनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक  
दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥  
खरतर गच्छ जटारक श्रीजिनलाज सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना  
प्रद अरविंद ॥ रज मकरंदे लोनो ग्यानसार तमु सीस, तेण तव्या  
तेवीस दार दंरुग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम  
चंद निरधार, पोस मास पख जऊल सातमनें सोमवार ॥ आवक  
आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अवम चौमासो कर जैपुर नगर  
मजार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ डुहा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥  
कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव डु जेद, सत्ता जिनै सिद्ध अनं-  
तै रूप अजेद ॥ संसारी आवर इग तिम ब्रस दोय प्रकार, जु अप वाव

तेन वणस्सइ आविर धारा ॥ १ ॥ फिटक रयण मणि विड्म हिंगुल वलि  
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी  
 अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ जोमल तूरी नस जूमि पाहण जे खाण  
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विडेद ॥ जूमि आकास  
 नस हिम करग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं  
 अर तेम ॥ होय वणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥  
 अंगारा जाला जोजर तिम नलकापात, असणि कणग विद्युतादिक  
 अगनि जीव विहात ॥ उष्णामगनकलिका मंमल वलि मुख वात,  
 सुद्ध गुंज तिम वण तणु धाऊ जेदे हात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय  
 वणस्सई जीव डु जेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं  
 दा अंकुर कूपल फूलण बलि जंझाल, जूफोमा अदत्तिय सरवे जे फ  
 ल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वायलो थेग पालंको साग, गुपत  
 सिरा सांधा गांठा जांजे सम जाग ॥ काटी माल जूमिमें रोण्यां पद्ध  
 व आय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरी रे  
 एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल ठाल फल मूल काठ बीजै जिय एक ॥  
 वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु  
 दुत्तै आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिढी निजर न होय, लोका  
 लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय ॥ कवनी संख गंमोला लहिगा  
 लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विहात ॥ ८ ॥ माय बा  
 हाक्रम पौरादिक बेइंडी होय, गोमी माकण जूआ कीमा कीमी दोय  
 ॥ दीपक ईली धीवेली गोमीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर  
 कम नतपात ॥ ९ ॥ धनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेह, ईली  
 कंथुक इंडगोप तेइंडी एह ॥ वीठू ठंकण जमरा जमरी इंडी च्यार,  
 तीमा माखी मांस मञ्जर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवरमोला मांक  
 मिय पतंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचेइ च्यार बिडेदा ॥

धम्मा वेसा सेला अंजन रिठा कात, मधा माधवेई नारंग ऐ नामें  
 सात ॥ ११ ॥ जलचारी अलचारी नंजचारी तिरयंच, मंठ कठे सुस-  
 मार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय नरंपरि जुंजपरि साप जुंचारी  
 तेय, तिविहा गायं साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥ १२ ॥ खेचरं चरम  
 रोम पंखी चमचेरु कपोत, भनुजलोकथी बाहिर समुग विगय पंख  
 होत ॥ सरखे जल थल खेचर समुष्ठम गंध्रय दोय, कम्म अकम्म जूमि  
 अंतर दीवा मणु जोय ॥ १३ ॥ असुरादिक दस होय बाण व्यंतरिया अठ,  
 जोइस पंच वेमाणियं डुविहासु ते दिठ ॥ पनरे जेदे सिद्ध कह्या ऐ  
 जीव प्रकार, तनु मानादिक दिव एहनो कहिसु अधिकार ॥ १४ ॥ देह  
 आनखो एक सरीरे थितनो मानं, प्राण जेहने जेता तिम वलि योन  
 प्रमाण ॥ अंगुलं ज्ञागं असंखसंदू एगिंदी काय, जोयणं सहस साधिक  
 पत्तेय वणस्सई काय ॥ १५ ॥ वि ति चउरेई अनुक्रम उक्किं देह ऊंचास,  
 बोर जोयण तीन गांठ इगं जोयण ज्ञास ॥ सत्तमना नेरइया धणु  
 संय पंच प्रमाण, तेहयी अरधर ऊंणा अनुक्रम रयणाण ॥ १६ ॥ जो  
 धण सहस गंध्रधर मंठ नरगनो देह, गांठ धणुअ पुहत्त जूचारी पं  
 खी जेह खेचर नव धणु नरंग जुयंग जोयण नव होय, नव गांठ  
 परिमाण समुष्ठम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरु गांठ ऊंचास चउण्य  
 य गंध्रय माण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ जुवन  
 व्यंतर जेइत वेमाणिय ईसायंत, सात हाथ उक्कोसै ऊंचपणै तणु  
 हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार मोहेंई पर ब्रह्म लांत ७ पांच, थुके स  
 हत्तारे उक्कोस चार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथ  
 तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणु तर इग लीन ॥ १९ ॥ बावीस सान तीन  
 दस वरस सहस्ते आय जू आऊ बाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ वार  
 वरस गुणचास दिवस तिम वलि उम्मास, अनुक्रम वेइंडी तेइंडी  
 चौरिंडी रास ॥ २० ॥ मु नारंग तेतीस अयर उक्कोसै आय, चौपय

तिरिथ मनुजनौ तीन पढ्योपमं थाव ॥ जलचरं नरपरं नृजपरं  
उक्तासे पुर्वकोमि, पंखीनै इगं ज्ञागं असंख्य पढ्यनो जोम ॥ २१ ॥  
सरबं सूखम साधारण समूहम मणुं जेह, जहन्न उक्तासे अंतमुहुत्त  
निधम श्रिति तेह, इम उगाहण आख्यो संखेपै अधिकार, जे वलि  
इत्थ विसेस विसेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य नसपिणी सहु  
एगिंडी आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥  
संख्याता संवन्हर विगल आपणी देह, सात आठ जव पंचेडी तिरि  
मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी नंदवरती जीव नरक नवि जाय,  
देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंडिय सासोसास आठ  
बल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ इग डु ति चौरिंडोय जाण  
॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेडी दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथका  
जेवे प्रयोग जिय मरणें होय ॥ ज्ञोम सायर संसार अपार अनंती  
वार, ज्ञमियो जीव धरम विन जोण असीनें च्यार ॥ २५ ॥ सग सग  
सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद  
लख सूत्रें साख ॥ जू अप तेन वाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चौ  
पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आथ न  
पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत ज्ञंग जिन आगम श्रित  
विद्वात ॥ रोग न सोग न ज्ञोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपु-  
सक पुरसतणा नही अंग नपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज  
ए च्यार अनंत, सिद्ध अथा तेहथी सिद्धतै सिद्ध कहंत ॥ इम ए  
जीवविचार गाथाथी ज्ञाषारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम  
सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गछ जद्वारक श्री जिनलान्न सूरिस,  
रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रत्न  
चारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर  
मज्जार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्षित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥  
प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थकर आवे  
तिहां, त्रिगमो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहूं  
अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकित, भिछ्यात्वी होवे मूरु ॥  
सूर्य देखे हरखे सहू, जिम अंधारे धूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपठरह गंधर्व ॥  
समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥  
जुवनपति वीस इंदै मिछ्या जी, सौलह व्यंतर सार ॥ जोइस ड  
दस वेमाणिय जुमया जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥  
पवन सुर पूंज परमारजै जी, जूमि योजन सम जान ॥ मेघकुमर  
रचै मेघने जी, करिय सुगंध तिमकाव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर  
सुज धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर हिव वेगसूं  
जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण  
नरध मुखै जी, वरषए जाणु प्रमाण ॥ जवणवइ देव त्रिगमो जलो  
जी, करय ते सुणन सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-  
तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी,  
कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरै जी,  
रचय वेमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ जितरे जी, जिहां विराजै  
जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ जति नंची धणुं पांचसै जी, सवा-  
तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास  
धणु न्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावनी  
वोस हजार ॥ आके अम नहिय चढतां अकां जी, एक कर उच्च  
विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीयकी जी, उच्च

रहे त्रिगढ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर  
आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी,  
नीलमणि मोर निरमाण ॥ दुसय धनु मध्य मणि पीठका जी,  
उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां  
चिहुं दिसै जी, मोतीयें ऊकऊमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें  
जी, देवछंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवडुंडुनि नाद उपदिसै  
जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्म जिम आइ सिर ऊपरे जी  
गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुव दिसि आसणे आय वेसे पहू, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू  
॥ दीपै असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम  
मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण ठत्र सुविसाल ए, रूप चि  
हुं २ दिसैं चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वाण श्री जिनतणी,  
जगवंत उपदिसै बार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग  
निकूणै करी, गणधर साधची तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषी जु  
वणनी वितरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवाण ऊनी सुणे ॥ त्रिहूंत  
णा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए  
॥ बारह परखदा मद मञ्जर ठोरु ए, नूख तिस विसरै सुणै कर जोरु  
ए ॥ १९ ॥ पूठ जामंरुल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज उं  
च आकास ए, ऊलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहू  
वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ चाहण वहिल सहू धरिय पहिले  
गढै, होय पगचार नर नार उंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि  
जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥  
पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अव  
तारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांहिलो प्रौल



माहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणियै, विदिसि  
चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए,  
स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप  
राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खटंग अ  
र्चि माल ए, रजतगढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो  
त्रिगमो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्दिक रचै तिण ठाम ए ॥  
करण बारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही  
होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी रुद्रि दीठी जियै, तेह ध  
धन धन अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंजित पूरज्यो,  
हिव मुऊ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै रुद्रि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सर-  
बहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिद्धांत  
गुरु परंपर सुणी सहू अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म  
वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री कृष्णभेदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाठियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं  
तो अरज करूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, नवसायर  
पार उतारो, निज सेवक वान वधारो ॥ क० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति  
मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जानं वारी हुं वार हजारी  
क० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै, मुऊ ऊपर महिर धरीजै,  
दिल रंजन दरसन दीजै ॥ क० ॥ ३ ॥ आज सचल मनोरथ फलिया,  
नवरेता पातिक टलिया, प्रभु जो मुऊसै मुख मिलिया ॥ क० ॥  
॥ ४ ॥ समरथा मंकट टलि जावै, नव नव नित संगल आवै, मुऊ



आतम पुन्य जरावै ॥ क० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केसर  
चंदन चरचीजै, दिन धन २ तेह गिणीजै ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस  
सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीठा चंद  
चकोरो ॥ क० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, बीस माहा जय  
संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि  
सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर काई, बाधै संपत शोचन सवाई ॥  
॥ क० ॥ ९ ॥ नाजिराय कुलंबर चंदा, जव जन मन नयण आनंदा,  
जलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ क० ॥ १० ॥ जयकारी रिषज जिनंदा,  
प्रह सम धर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति सूरिंदा ॥ क० ॥ ११ ॥  
इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका बडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ बाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवनीपुर मंरुण गुण निलो  
ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥  
नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी  
ठै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु  
घर नार ए तसु गुणहि न लपै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए,  
तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए,  
अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूवै जूपतिनें कह्या ए,  
करजोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ बाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै  
वृषज उदार, घरणी जिण धरयो जार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान,  
जसु बल कोय न माना ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी  
॥ ६ ॥ पांचमै पुष्पनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ ठै दीवो

ए चंद, ग्रहगण करौ ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो  
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥  
 नवमें पूरण कूँज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,  
 मनह अयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि  
 इण नामें ॥ बारस देव विमान, बाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥  
 तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें  
 ए दीधो, पातिक धूमथी नीधो ॥ ११ ॥ सुपन कहा सुविचार, हरख्यो  
 भूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, आस्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवण सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत  
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,  
 आवी मंदिर ऊत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ  
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर  
 पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरुजगत्र अयो जयकार, खिण इक नारकिये  
 पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध,  
 कर आनक पोहती बंभित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ  
 इंड मिली तिहां आवै, लेइ निज नक्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क  
 री जनम महोन्नव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल छी  
 प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार,  
 घर १ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,  
 तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन २ कला  
 करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजितरूप जिसो देविंद ॥ गुणकला  
 विचक्षण विद्यातणो निधान, जोवनवय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदै प्रभु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग  
संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणवै अवसरू ए, देस  
संवहरी दांन याचक जैन सुखकरू ए ॥ १० ॥ स्वामी संजम लेय  
इंद्रादिक सब मिट्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदल्या  
ए, पांमीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, आपीय चौविह संघ  
मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गौमीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह  
परलोग सुवंचित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवामीपुर जावै,  
चोर धाम संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरणराय  
पञ्चमावइ जास वहे सिर आण, सांमल वरण सुसोजित नव कर  
काय प्रमाण ॥ कलपवृक्ष चिंतामणि कामगवी सम तोलै, श्री गुण-  
शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्व-  
जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु  
अजित जिएंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर  
प्रणमैव ए, बिहुं गुण गाइस संखैव ए ॥ पुण्यजंमार जरेसु ए,  
मानव जव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कौरुहि लाख पचास ए, सागर  
जिनसासण ज्ञास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, उवझाय सरोवर  
हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां  
गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, बिहुं रमयति पासा सार ए  
॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ जयर  
वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण

मन आणंदियो ए, सुत नाम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण  
 सयल उछाह ए, क्रम २ बाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस  
 तणी ए, गति सुखलित निज नति निरजणी ए ॥ मलपति चालै  
 गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समौ सं  
 सार ए, बलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए,  
 लंठन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो  
 ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साथै सब काज ए, प्रभु  
 पालै पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ हिव हयणापुर ठाम ए, विश्व  
 सेन नरेश्वर नाम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे बेव  
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवश्यो ए, अचिरा उयरें सुत अवत  
 र्यो ए ॥ मानव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जाणियो  
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिस नाम दियो श्रीशान्त ए  
 ॥ जिन गुण कुण जाणै कही ए, त्रिहुं जुवणे तसु उपम नही ए  
 ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरणलो ए, बन सिंहे बाहै एकलो ए ॥  
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी  
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नणै लोक कुरंग ए ॥ तो उलग्यो स  
 सि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग  
 अति खलज्जयो ए, जय जंजण सांमि सांज्जयो ए ॥ आणंदियो  
 मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंठन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति  
 परणे धणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल बल आ  
 यण जोगवे ए, पीय राज जल्लो पर जोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर त  
 णें मंमल समें ए, पंचास सहस वरसां गमे ए ॥ तो तेजै दिणय  
 र जिसो ए, ऊपन्नो चक्रयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साथी जरद ठ  
 खंरु ए, वरतावी आण अखंरु ए ॥ चवद रयण नव निहि सही  
 ए, वसु सोल सहस जखै अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुतर पुर

वरा ए, बत्तीस मौमबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोम ए, ठिन्न  
 वे नमै बे कर जोम ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख  
 चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमै ए, बत्तीस  
 सहस नाटिक रमै ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला  
 वण लीला जरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, ऐसी चौसठ सह  
 स अंतैजरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र  
 यण जंझार ए ॥ ते कहिवा कुण जाण ए, वपुवपु रे पुण्य प्रमाण  
 ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चौथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस  
 सहस पचवीस ए, सब पूरी जनह जगीस ए ॥ २३ ॥ इण पर बिहुं  
 तीर्थकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए  
 सार ए, बिहुं लीधो संजम जार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर  
 ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन ज्ञाण  
 समाण ए, बिहुं पांथ्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोम-  
 हिमहि ए, बिहुं चौतीसै अतिलय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण  
 ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेजरी ए,  
 बिहुं आगलि इंद अंतैजरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि  
 गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर ठत्र चमर विमल, बिहुं  
 पग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग  
 न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं नवयार नुवन जरी ए, बिहुं  
 सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं जंजी नव फंद ए, बिहुं नदयो  
 परमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जाणो चिंतामण सुर  
 तरु समो ए ॥ शुणि अति संज विहाण ए, तिहां इह परजव नवि  
 हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं नवव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय  
 हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज नुवण  
 रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते जोलिमतणी ए, श्रीअजिय शान्ति

जिण थुयं जणि ए ॥ सरणं विहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमैरुनंदन  
उवञ्जाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित ज्ञांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान  
क्रिया जिण उपदिसी जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन  
धर श्रीजिन उपदेस, ठूटे कर्म कलेस ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ पमिलेहण  
मुहपत्ती तणी जी, ज्ञाखी ठै पचवीस ॥ तिहां ए ज्ञाय विचारिये  
जी, इम ज्ञाखै जगदीस ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये  
जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पमिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी  
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रणी जी, मोहनी तीननो  
त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥  
ज० ॥ सीष वधू टक गुरुश्रीकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव  
अखोमा आदरो जी, नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व  
गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुशुरु कुदेव कुधर्मनो जी,  
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरसन चारित्रना जी,  
संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-  
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे  
शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, तीने दंभ विशुद्ध ॥ ज० ॥ ८ ॥  
पमिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी सार ॥ हिव पमिलेहण  
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ हास्य अरति  
रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांस वाह ॥ तज जय शोक डुगंठना  
जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ ज० ॥ धुरली लेस्या तीन  
ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि  
मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काढ सट्ठ्य तीन नरथी जी, मा

या नियाण मिछ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करी  
 घात ॥ १२ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण विन्हे सुद्ध  
 होय ॥ ए पमिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ ज० ॥  
 इम पमिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै  
 करै जी, पांमैं सुख अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-  
 वरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहा-  
 णी, सुणो जवियण मन रली ॥ उवझाय वर श्रीलङ्घिकीरत, मुख-  
 थकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पमिलेहण तणी विध, लङ्घिकीरत गणि  
 कही ॥ इति श्रीमुहपती पमिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार  
 थायै घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित  
 अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप स्वप  
 करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागे जिके गुरुमुख  
 आलोइयै, जीव निमलै हुवै बख जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे  
 तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ किणही  
 कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै ॥ ३ ॥  
 कीजिये जेह कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी ॥  
 कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां, दर्प इण नांम करि दोष तीजो  
 तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथौ आकु-  
 द्विया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी,  
 दोष धर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ ५ ॥



॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगण-  
तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमठ एकासणो आंबिल  
उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥ ६ ॥ ए  
जो खंमिंत आयै अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां  
दोष सहू मिट जाय ॥ आपना अणपमिलेह्यां परिमठनो तपधार,  
गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार  
तिहां पुरमठ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं जेदं मन्न ॥  
आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी  
आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज विणास्यां चोथ  
प्रसिद्ध, वि ति चनुरेंडी असायां एकासणथी वृद्ध ॥ बहु वि ति चौरें-  
डिय हण्यां वि ति चन उपवास, संकष्टपादि चिहुं विधि डगुणा  
डगुण प्रकास ॥ ९ ॥ उदेही कुलियावरु कीनी नगरा जंग, बहुत  
जलोयां सूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन  
आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥  
संकष्टादिक एक पंचेंडी उपडव होय, दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै  
आलोयण जोइ, बहु पंचेंडी उपडव ठठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं  
प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकमी  
प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें ठठ विचार ॥ साथ  
समकें लोक समकें राज समक, कुमा आल दियां डइ चौथरु ठठ  
प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंभायां तेम मरायां वीस, इक लख  
असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग  
इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नदि तास  
॥ १३ ॥ सूआवरुना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन  
कीधां बहु अस्तर्ति पोस ॥ करीय डवालस बार हजार गुणो नव-

कार, मिच्छाडुक्करु देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणा, पम्किमणा विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै जणया, इ क२ आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निबी आंबिल, ज्ञां जै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास जंग उपवास, आंबिल ऊप रां, अधिको दंरु वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, जंग कियां वलो, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूले घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी बुरी, आंबिल चढतां आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री जोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परडोह चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमांदान, नियम करी जंग, मद्य मांस माखण जरूया ए ॥ आलोयण उ पवास, संकप्पादिक, चिहुं जेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोढ्या मिरखावाद, अदत्तां दानं त्युं, जघन्य एकासण जाणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जाण आलोयण, उपवास दस२आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत जागे अतीचार, जघन्य ठठ आलोयण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे जंग ॥ च्यार सिक्का व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी नववांमि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने आवक पोसोध, एकैडी सच्चित्त संघट्टे कीध ॥ बीसर ज्ञोले सच्चित्त जल पी

ध, दंरु एकासन आंखिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोधां विण लूह्यां  
पात्रै, एकासन तिम पुरिमद्ध सात्रै ॥ गइ सुइपत्ती आंखिल सारो,  
तिम नुवै अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार ठीमो राखै, व्रत  
पच्चखांण करै षट् साखै ॥ दोषे मिष्ठामिडुकरु दाखै, आलोयण  
लेतां अज्जिलाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता  
नावै पार ॥ तोपिण संक्षेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि  
स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने  
विधि पांमी ॥ जीतकट्पठाणांगे आदि, वली परंपरगुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयने ॥ ए  
कांत पूवै गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयने ॥ विध एह करसी  
तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीधरमसिंह कीधो, चौ  
पने फल वधी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोसुख सोहे रे ॥ रूप  
ज्ञानन चंझानन वारिषेण, वर्द्धमान मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥  
आठमो द्वीप नंदीसर अदन्नुत, बलयाकार विराजै रे ॥ तेहनेमध्य  
चिहुं दिस सोजित, अंजन गिरिवर ठाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण  
सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अन्निरामा रे ॥ मूलै प्रश्रुल सहस  
दस जोयण, उवरि सहस कर ॥ ३ ॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद  
प्रज्ञूना, अति उत्तंग उदारा रे ॥ माधू जंवा विद्याचारण, वांदे वि  
विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यै ९ इकसो चोवीस, बिंब संख्या  
सत्र दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो जविजन जगते, सुध आगम कर सा  
खी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणे सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण  
आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रज्ञूप्रासाद सुगामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रजुनी, विविध रत्नमई काया  
 रे ॥ जिन कल्याणक उज्जव करवा, सुरपति जेके आया रे ॥ नं०  
 ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं नवरै, चोमुख च्यार विसाला रे ॥  
 वाव९ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चो  
 सठ सहस जोयण उज्जै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दि  
 सि सोल सहस दधिसुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥  
 ए॥ वाव२ नें अंतर विदसैं, रतिकर परवत रूमारै ॥ दोय२ संख्या  
 जगदीसै, कहा नही ए कूमा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मान दस  
 जुंवा, दस२ सहस विस्तारारे ॥ ऊल्लरिसम संठाण जगत गुरु, नि  
 श्रय ए निरधारवा रे ॥ नं० ॥ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण,  
 अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपद्मिनी संख्या तेहिज, श्रीजिन  
 राज वखाणै रे ॥ नं० ॥ १२ ॥ इम प्रासाद प्रजुना धावन, नंदीसर  
 वर दीपे रे ॥ इय जाव विधि पूजा करतां, मोह महा जम जापै  
 रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जीवाज्जिगमें जा  
 णो रे ॥ इम अधिकार बै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥  
 नं० ॥ १४ ॥ जिन सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुजव इहा  
 ल्यावो रे ॥ ध्यावो जिन पावो परमात्म, जैनचंड गुण गावो  
 रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाई द्वोपै बीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंडु मनसुध विहरमाण जिणसर बीस, द्वीप अढीमें विचरै  
 जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै कर उपगार, किण २ ठामे  
 कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पैतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र  
 प्रमाण, बलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुझै सोहं  
 द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमाज्जुमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥  
 पहिलो जंबूद्वीप समै विच आल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणने विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नामें मेर, तिणथी  
 दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षण दिसि  
 एह नरत सुज क्षेत्र, पांचसे ठवीस जोयण ठ कला तेहनो क्षेत्र ॥  
 उत्तरखंममें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण चिहु करमांजूमी ठए  
 अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस ठसे चोरासी जोयण जाण,  
 च्यार कला ए महाविदेह विखंन वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण  
 एक विजय पहुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने ठाण ॥  
 ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरव पश्चिम दोय विजाग, सोलै २ विजय  
 तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारै श्रीअरिहंत,  
 एहवे महाविदेह करमजूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेह विजय  
 पुष्कलावती आठमी ठाम, पुंमरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंधर-  
 स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नाम, पछिम विदेह  
 बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वछविजय  
 वलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥  
 नलिनावर्त चोवीसमी पछिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी  
 तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप  
 मऊार, महाविदेह सुदरसन मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा  
 गढ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन२ धातकी खंम ॥ पिहुलो चिहुं  
 लख जोयणे, मंमल रूपे मंम ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय नरत दोय  
 एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमजूमि खट ठै जिहां, उण-  
 हिज नामें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरव पश्चिम धातकी, खंम गिणीजै  
 दोय, विजयमेरु पूरव दिसै, पछिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥  
 इक २ मेरुने अंतरे, करमजूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांमिने,

लेखो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो,  
 ठो स्वयंप्रभु ईस ॥ ऋषजानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस  
 ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥  
 पूरब धातकी खंरुमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली  
 बिहुं जिननी घरे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें,  
 विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो  
 देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥  
 दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंडानन जिन, पञ्चमी धातकी मांहि ॥ विचरै  
 च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उछाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी  
 खंरु ए, परदहणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-  
 दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींठ्यो चूमी जेम विचाल ए ॥  
 सोलह लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥  
 उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनै आधै पंगै ॥ विच पड्यो  
 परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहा लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख  
 योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमजूमी ठ ए कहीजै, धात-  
 की खंरु जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करनें पूरब दिसै, मंदिर  
 नांमे मेरु तिहां बसै ॥ पञ्चिम विजुमाली मेर ए, इहां किण इतरो  
 नांमे फेर ए ॥ २० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥  
 एक २ मेरे तीन तीने, करमजूमि तिहां कहो ॥ इम जरत एरवत  
 माहाविदेहे, नांम सरखो हेत ए ॥ तिणहोज नांमे विजय सगली,  
 सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंरु तिम पुष्कर  
 सही, इहां क्षेत्रानी रचना विध कहो ॥ बार २ कहनां ए विसतार ए,  
 पहिला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ २० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,



नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पष्ठिम जेहनी ते, तेह तिमहीज  
 अनुक्रमें ॥ श्रीचंडबाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर  
 अरध माहे, सरब जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन  
 सत्तरमो, श्रीमहाज्ज अठारम नित नमो ॥ देवजसा उगणीसम  
 देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ २० ॥ जिण च्यार पुष्कर  
 अरध माहे, कहा पष्ठिम जाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमात्रि चिहुं  
 दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरब लाख बरसां, आज इक  
 २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरण सुहामणो  
 ॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए ॥ दिव उत्कृष्ट  
 जेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहै, पांचे  
 जरते जिम पांचे लहै ॥ ३० ॥ जिण लहै पांचे तेस पांचे,  
 एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे बत्तीस विजया,  
 तिहा पिण ठे जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोमि  
 नवसय केवली, नव सहस कोमी अवर मुनिवर, वंदियै नित ते  
 वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां जरते एरवतें आज ए, पंचम आरै  
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, बिचरे वीसै जिन  
 गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अठार वरजित, अतिसयां चोतीस  
 ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आज  
 तारण तरण विचरै, केवली दोय कोम ए ॥ दोय सहस कोमी सुसाधु  
 बीजा, नमुं बेकर जोम ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी छीपे पनर करमा  
 जूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह जारुया वीस विहरमाण  
 ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसै समै, सुखविजय हरख  
 जिनंद सानिध नेह धरि ध्रमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी छीप  
 स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंम ३ आधोपुष्करद्वीप एवं  
 ४ छीपमें ५ जरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मजूमामें विच-



रता साश्वता २० बिहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाझाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र ज्ञानी ऊ  
महेज्यो, तुम्हे नरजव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथी  
मांहे ठाजै, आबू मारूमै देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे ला  
गो, नुंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास  
कहावै, निरखंता त्रिपति न आवे रे ॥ जा० ॥ एतो मुंगरियानो राजा,  
एदनी ठै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ ठह रुतु वास वणाथो,  
एतो चंपदा अंबदा ठायो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा जाजा, जिहां  
तिहां वनवेढ्या आजा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ नार अठारे वणराई,  
एतो इहांदिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू  
लमानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर नूमि विसाला, देवल  
दीठा रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरदाई, चक्रेसरि देवी सहा  
ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाम वंस वदीतो, जिणदलपति साहि जी  
तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण कराथो, पाहण आरास मंमाथो रे ॥ जा०  
॥ ६ ॥ जीणी२ कोरणी ऊरयो, दल माखण जेम नुकरयो रे जा०  
॥ नवी२ जांति वणराई, जिहां तिहां कोरणिया जिणराई रे ॥ जा०  
॥ ७ ॥ उत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥  
आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥  
उगणिस कोम सोनइया, इव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा०  
॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥  
पुवै चढिया हाथी, मंमाणा पति साह साथीरे ॥ जा० ॥ इणदेवल  
समवम कोई, नूमंमल मांहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ बलि ति  
ण वंस विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी  
रुहि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

द्वो जिणहर पासै, बार क्रोमनी लागति ज्ञासै रे ॥ जा० ॥ देरा  
 णी जेगणी, आलानी अजब कहाणी रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ इहां देव  
 ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस  
 वट पाइण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल  
 वामो दीगो, ते तो लागै नयणै मीगोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल  
 पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गान्ध आ  
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा  
 ज्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते  
 घातो, जिगमिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्मा  
 लौ, जिण विंवनो ज्ञाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली  
 ज्ञोम सोज्जागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६  
 ॥ एहनी करणी वाइवाइो, इहां लीधो लखमी लाइो रे ॥ जा०  
 ॥ १७ ॥ इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन ज्ञावी रे ॥  
 जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥  
 ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥  
 जा० ॥ साइमी वज्जल कीज्यो, जातमलीनो जसलीजो रे ॥ जा०  
 ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥  
 जा० ॥ सुणिये ठै जे कोई, अहिनाणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥  
 ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥  
 जा० ॥ ए तीरथ समतोलै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥  
 २१ ॥ इति आवृत्ती स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिपज्ञानन ब्रधमान, चंडानन जिन, वारिपेण नामे जि  
 णा ए॥१॥ तेइ तणा प्रासाद, त्रिजुवन सासता, प्रणमुं विंव सोडा-  
 मणा ए ॥ २ ॥ चेइहर सग कोमि, लाख बहुत्तर, चेइय प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर,  
 जुवनपती मांदि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद,  
 चौरासी लाख, सहस ठिन्नू ने सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

दिवै नवग्रीवैकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा  
 सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अरुत्रीस सह  
 स सत साठ अठै गुण पाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक  
 वखाण, चउ१ चेईहर साठ सबे त्रिहुं गंण ॥ इकसो चोवीसै गुण  
 प्रतिमा चिहुं नाम, ब्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥  
 नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरु वन अस्सी दस कु  
 रु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत ब्यार२ इखुकार, असो अति  
 सुंदर वक्क सकार मऊार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी इह सुजगीस ॥ कंचन गिर  
 वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ वैताढय, वीस सत  
 रसो आढय ॥ सतर मदानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥  
 जंबू प्रमुख दस रुक्क, इग्यारैसै सत्तर सुक्क ॥ कुंम त्रणसय असी  
 ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं,  
 वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थंकर प्रतिमा शुणियै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख  
 सहस वलि व्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरबालै सब  
 मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन  
 लरका रे, दोयसै निव्यासी कयरुक्का ॥ दिव प्रतिमा ग्यान कहीजै

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोमी रे,  
अम्वन लख अधिके जोमी ॥ ठत्तीस सदस अधिक कहीवै रे,  
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ६ मी ॥

जोइस बिंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥  
पायकमल तेहना नित प्रणमियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥  
विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्र-  
तिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥  
जिनप्रतिमा बोली जिन सारथी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥  
जवियणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥  
जीवाजिगम प्रमुख मांदि ज्ञाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥  
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुण्या जिनवर तणा, चिहुं  
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज  
समयसुंदर गुण जणै अनिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो  
सदा मुज परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब  
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥  
प्रज्जूजी विराजै रे सूरत बिंदै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥  
जगदितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीद्वरथ नृप गेह ॥ श्रीवृ-  
सोहे रे लांगन सुंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रज्जु देह ॥ २ ॥ ज० ॥  
विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घना-  
घन जिम धम वरसता रे, विचरया त्रिजुवन ज्ञाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

बदनी प्रमुख जे शैष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर  
 निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्थुं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥  
 संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन  
 लहियै रे प्रभु सुप्रसादधी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥  
 श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, डुकृत दूर पुलाय ॥ इंडिय निग्रह  
 सुग्रह संपजै रे, समक्षित पिण दृढ आय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसङ्ग-  
 रुना मुखधी सांजदया रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे  
 निज बिसमें धरया रे, नेमी सुत जाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य  
 कशाव्युं रे सुंदर सोजतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो  
 रे बिंब जराबिषो रे, सहस्रफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस  
 अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मजार ॥ उज्जल द्वादशी दि-  
 वसे आबिषो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी  
 सहु मेले अया रे, बिंबाधिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-  
 हसी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाज सूरि-  
 श्वर दीपता रे, श्रीखरतर गच्छ जाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन  
 थुण्या रे, विबुध हमा कढ्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल  
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारे हूं तो भरवा गइयां तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हारे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवरलो  
 ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारे मुंने आस्यै कोइयक  
 समे प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुली तव आस्यै महारी सबि वगे रे  
 लो ॥ १ ॥ हारे कोइ दुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथ जो, उल-  
 वस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारे मारे स्वामी सरि-  
 खो कुण ठै डुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या

करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे लस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध  
जो, ठाली रे सी करवी तेहथी गोठमी रे लो ॥ हारे कांइ जूवूं खाई  
ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परस्यारथनी मही प्रीतमी रे लो  
॥ ३ ॥ हारे प्रभु अंतरजांसी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि  
जाण्यो कलियुग वायशे रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत  
बल्लल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥  
हारे प्रभु लागी मुऊने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी  
होइ नजोगलो रे लो ॥ हारे कुण जाणें अंतर गतिनी विण माहा-  
राज जो, हेजे रे इसी बोलो ठंमी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे  
मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखरुली अणियाली का-  
मणगारीयूंरे लो ॥ हारे मारे नयणा लंपट जोवे स्त्रिया २ तुऊ जो,  
राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा  
ते पिण जाणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाअं  
वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो,  
गिरुआ थइ मन आंणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवन ॥

राणपुरै रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोह्युं  
रे ॥ उत्तंग तोरण देहरूं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥  
रा० ॥ १ ॥ चौबीस मंरुप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा  
च्यार ॥ म० ॥ त्रिजुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नही  
संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल,  
मांरुयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जौयरा रे लाल, सूतां  
ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो  
देस मेवाम ॥ म० ॥ लख नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धनो  
पोरवाम ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

खंता सुख आय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल,  
 जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतार्थ हुं थयो  
 रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे  
 लाल, दूर गयूं दुख दुंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल ठियं-  
 तरे रे लाल, मिगसिर मास मऊार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करी रे  
 लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री  
 राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित छार गुंनारै पैसतां जी, पाप परल गयां दूर रे ॥  
 मोहन मारूदेवीनो लामलो जी, दोठो मीठो आनंद पूर रे ॥ स० ॥  
 ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोमाकोमी हीण  
 रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, बीरज अपूरबनो घर  
 लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ जुंगल ज्ञांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात  
 मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार ऊघामा सम संबेगना जी, अनुजव  
 जवनें बैठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं  
 जी, साधियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना  
 जी, द्विगुण मंगल आव अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग  
 पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण रुची  
 भृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधान रे ॥ ५ ॥ स० ॥  
 ज्ञावपूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥  
 कारण जोगें कारज नीपजै जी, कामा विजय जिन आगम रीत रे  
 ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजै, मोहन सहिर धरीजै रे ॥  
 दिवरंजन प्रभु दरसन दीजै, महारो मनमो रीजै रे ॥ आ० ॥ १ ॥



करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे लस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध  
जो, ठाली रे सी करवी तेहथी गोठनी रे लो ॥ हारे कांइ जूवूं खाई  
ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी मही प्रीतनी रे लो  
॥ ३ ॥ हारे प्रभु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि  
जाएयो कलियुग वायशे रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत  
वञ्जल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥  
हारे प्रभु लागी मुऊने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी  
होइ उजोगलो रे लो ॥ हारे कुण जांणें अंतर गतिनी विण माहा-  
राज जो, हेजे रे दसी बोलो ठंकी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे  
मुखने मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखरुली अणियाली का-  
मणगारीयूं रे लो ॥ हारे मारे नयणा लंपट जोवे खिण २ तुऊ जो,  
राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा  
ते पिण जांणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाऊं  
वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो,  
गिरुआ अइ मन आंणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरै रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोह्युं  
रे ॥ उत्तंग तोरण देहरूं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥  
रा० ॥ १ ॥ चौबीस मंरुप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा  
च्यार ॥ म० ॥ त्रिजुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नही  
संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोराती दीपती रे लाल,  
मांरुयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जौयरा रे लाल, सूतां  
ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो  
देस मेवारु ॥ म० ॥ लस्क नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धनो  
पोरवारु ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

खंता सुख आय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल,  
 जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतार्थ हुं श्रयो  
 रे लाल, आज श्रयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे  
 लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल विंश-  
 तरे रे लाल, मिगसिर मास मऊर ॥ म० ॥ राणपुरै यात्रा करी रे  
 लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री  
 राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित छार गुंनारै पैसतां जी, पाप पमल गयां दूर रे ॥  
 मोहन मारूदेवीनो लामलो जी, देवो मीठो आनंद पूर रे ॥ स० ॥  
 ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोमाकोमी हीण  
 रे ॥ स्थिती पढम करणै करी जीवनें जी, बीरज अपूरबनो घर  
 लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ जुंगल झांगी आदि कषायनी जी, मिश्र्यात  
 मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार ऊघामा सम संबैगना जी, अनुजव  
 जवनें बैठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं  
 जी, साधियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना  
 जी, द्विगुण मंगल आव अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग  
 परवालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण रुची  
 भृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधान रे ॥ ५ ॥ स० ॥  
 जावपूजाने पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥  
 कारण जोगे कारज नीपजै जी, कामा विजय जिन आगम रीत रे  
 ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजै, मोहन सहिर धरीजै रे ॥  
 दिलरंजन प्रभु दरसन दीजै, म्हारो मनमो रीजै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग डुरलज, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥  
 जे दरसन विन किरिया पावै, ते नहि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥  
 नय एकांते दरसन आपै, पिंन जरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति  
 आलापै, ते झूला जव आपे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्या-  
 द्वादनै संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगै,  
 सिद्धमरणे रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जव कोमाकोमीमें जमतां, तुज  
 दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज जलै  
 हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटकौ, जो  
 जगगुरु हुं पाजं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण  
 उपजाजं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, स्वामी दर-  
 सण दीजै रे ॥ लाजनुदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजै  
 रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं ॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते सांजलतां  
 ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥  
 तारज्यो दीनदयाल, अ० ॥ ता० ॥ ०१ ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जे-  
 हनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्ता तनय  
 प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्ता वसु रे, लहि का-  
 रण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्या रे, होय निमित्तम जोग  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ३ ॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंद नि-  
 हाल ॥ तिम प्रभु जेते जवि लहे रे, आतम शक्ति संजाल ॥  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापणै रे, करि आरोप अजेद ॥ निज  
 पद अर्थी प्रभुअकी रे, करै अनेक जमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥  
 अहवा परमात्म प्रभू रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

अमल अखंन अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख त्रम  
 टल्यो रे, ज्ञास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अजिलाखीपणो रे, कर्ता  
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे,  
 व्यापक ज्ञोक्ता ज्ञाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्यं निज  
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा ज्ञासन रमणता रे, दानादिक परिणा  
 म ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०  
 ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंड  
 सुख सागरू रे, ज्ञावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री  
 अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोमी वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूम  
 कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मु  
 ञ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिजुवन धणी जी,  
 मुऊने उत्तर तार ॥ क० ॥ २ ॥ जवसायर जमतां थकां जी,  
 दीठां दुख अनंत ॥ ज्ञागसंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत  
 ॥ क० ॥ ३ ॥ जे दुःख ज्ञांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुख ॥  
 परदुख जंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने द्यो सुख ॥ क० ॥ ४ ॥ आलोयण  
 लीधां पखै जी, जीव रुले संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एइ  
 सुण्यो अधिकार ॥ क० ॥ ५ ॥ दूषमकालै दोहिलो जी, सूयो मुन  
 संयोग ॥ परमारथ पीवै नही जी, गरुप्रवाही लोक ॥ क० ॥ ६ ॥  
 तिण तुऊ आगल आपणा जी, पाप आलोचं आज ॥ ७ ॥  
 बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ क० ॥ ८ ॥ जि  
 न धमर सहू कहै जी, आपै अपणी जी वात ॥ ९ ॥ ज्ञाचार  
 जुइ जुइ जी, शंसय परयां मिछ्यात ॥ क० ॥ १० ॥ जाण  
 अजाणपणे करी जी, बोड्या उत्सूत्र ॥ ११ ॥ स्तने काग

जन्मावता जी, हारयो जनम निटौल ॥ क० ॥ ए ॥ जग-  
 वंत ज्ञाण्यो ते किहा जी, किहां मुज करणी एह ॥ गज पाखर  
 खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ क० ॥ १० ॥ आप  
 परंपुं आकरो जी, जाणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो  
 जी, मासाहस दृष्टांत ॥ क० ॥ ११ ॥ काल अनंत मै लह्या जी,  
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पामिया जी, किहां जइ करूं  
 पुकार ॥ क० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-  
 विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ क० ॥ १३ ॥  
 सहज पड्यो मुज आकरो जी, न गमें झूमी बात ॥ परनिंथा क-  
 रता अकांजी, जायै दिन न रात ॥ क० ॥ १४ ॥ किरिया करतां  
 दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम परै धंदे पड्यो जी,  
 नरकै करसी रीव ॥ क० ॥ १५ ॥ अणहंता गुण को कहे जी, तो  
 हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख जली दियै जी, तो मन आणूं  
 रीस ॥ क० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, पररंजण उपदेश  
 ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ क० ॥ १७ ॥  
 सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक  
 मनमाहे जपै जी, मुज मरकट वैराग ॥ क० ॥ १८ ॥ त्रिविध  
 २ कर जचरूं जी, जगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ ज्ञाजू वली जी,  
 टूटकवारो दूर ॥ क० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा  
 आरंज कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर भेस  
 ॥ क० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंस ॥  
 कूरु कपट बहु केलवी जी, व्रत काधा सत खंस ॥ क० ॥ २१ ॥  
 अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लागी घणी  
 जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ क० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं  
 जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जाणे

सहंप ॥ क० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको  
 लोभ ॥ परिग्रह मेंढ्यो कारंमो जी, न चढी संजम सोभ ॥ क० ॥  
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीनोजन दोष ॥ में मन  
 मूक्यो माहरो जी, न धर्यो धरम संतोष ॥ क० ॥ २५ ॥ इण जेव  
 परजव दूह्यो जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिहामिडुकमं  
 जी, जेगवंत तोरी साख ॥ क० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या  
 जी, प्रगट अठारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगस २ माइ  
 बाप ॥ क० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार बै एतलो जी, सरदहणा बै शुद्ध ॥  
 जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ क० ॥ २८ ॥  
 रिषजदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया  
 आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ क० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-  
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिहामिडुकमं जी, देतां  
 दूर पुलाय ॥ क० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब  
 तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, जेव २ ताहरी सेव ॥ क० ॥ ३१ ॥  
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सैत्रुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,  
 करजोमि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य  
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद  
 सुसीस वांचक समथसुंदर गणि जणें ॥ ३२ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदधनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रुषज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए चाल ॥

रुषज जिनेसर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहूं रे कंत ॥  
 रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, जांगे सादि अनंत ॥ क० ॥ १ ॥  
 प्रीत सगई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ३० ॥ १ ॥  
 कोइ कंत कारण काष्ट जहण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए  
 मेलो नवि कहियै संजवे रे, मेलो दाम न ढांय ॥ ३० ॥ ३ ॥ कोइ  
 पति रंजन अति धणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति  
 रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ४ ॥  
 कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥  
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ३० ॥ ५ ॥  
 चित प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंमित एह ॥ कपट रहित  
 अई आतम अरपणा रे, आनंदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

## ॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मारुं मन मोहुं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥  
 जे तैं जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, पुरुष किंसुं मुऊ नांम ॥ पं० ॥  
 ॥१॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, झूलो सयल संसार ॥ जेणें  
 नयण करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥  
 पुरुष परंपर अनुजव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे  
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क  
 विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते  
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य  
 नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,  
 वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं  
 रे, ए आस्या अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे,  
 आनंदधन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥



॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रभू जेद ॥ सेवन

सेवन कारण पहली भूमिका रे, अन्नथ अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥

जय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक ज्ञाव ॥ खेद

प्रवृत्ति हो करंतां आकिये रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥

चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, जव परणति परिपाक ॥ दोष टले

वली दृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन वाक ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय

पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यातम श्र

वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण

जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण

कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सु

गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित् से

वक याचना रे, आनंदधन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसन दुर्लभ देव ॥

॥ मतर जेदे रे जो जइ पूढिये ॥ सहु आपै अहमेव ॥ अ० ॥

॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिस्सण दोहलूं, निरणय सकल विशेष ॥

मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥

२ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥

आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥

३ ॥ घाती डूंगर आमा अतिघणा, तुज दरिस्सण जगनाथ ॥ धो

ठाइ करी मारग संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिस्स

ण रटतो जो फिरूं, तो रणरोज समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पानेनी, किम ज्ञाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवै  
हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरसन आज ॥ दरसन दुर्ल  
भ सुलभ कृपाश्रकी, आनंदधन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि  
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणिये, परि सरपण सु  
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत  
मा, बहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर  
मातम अविबेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक य  
ह्यो, बहिरातम अध रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर र  
ह्यो, अंतर आतम रूप ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण  
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिंजिय गुण गण मणि  
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा  
तमतज अंतरआतमा, रूप सुग्यानी अइ थिर ज्ञाव ॥ परमातमनू हो  
आतम ज्ञाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ  
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम  
पदारथ संपति संपजै, आनंदधन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो  
हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी०  
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥  
हानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्ष्ण रे ॥ शी० ॥ २  
॥ परदुःख वेदन इच्छा करुणा, तीक्ष्ण परदुःख रीजे रे ॥ उदासी

नता उन्नय विलक्षण, एक ठामे केम सीऊ रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ  
 न्नयदांन ते मल कय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावे रे ॥ प्रेरण  
 विगु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥  
 शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निग्रंथता संयोगे रे ॥ योगी जोगी वक्ता  
 मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु ज्ञ  
 ग त्रिजंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,  
 आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज  
 त्तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज  
 नी वासर वसती ऊजम, गयण पायाले जाया ॥ सांप खायने मुखमुं  
 थोथुं, ए नखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा  
 अजिलाषी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अज्यासे ॥ वयरीमुं कांइ एहवुं  
 चित्ते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम  
 धरनें हाथे, नावे किण विध आं० ॥ किहां कणे जो हठ करी हटकूं,  
 तो व्यालतणी पर बांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो ठग कहूं तो  
 ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांइ ने सहुश्री अ  
 लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते  
 कान न धारे, आप मेते रहे कालो ॥ सुरनर पंरित जन समजावै,  
 समजै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाणुं ए  
 लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वार्ते समरथ ठै नर,  
 एहने कोई न जेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स  
 गलूं सध्युं, एह बात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,  
 ए कहि बात ठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनडुं डुराराध्य ते

मृत पानेनी, किम ज्ञाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवै  
हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरसन आज ॥ दरसन डुल  
न सुलन कृपायकी, आनंदधन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि  
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणिये, परि सरपण सु  
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत  
मा, बहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर  
मातम अविच्छेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक य  
ह्यो, बहिरातम अथ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर र  
ह्यो, अंतर आतम रूप ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण  
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिंजिय गुण गण मणि  
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा  
तमतज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी अइ थिर ज्ञावा ॥ परमातमनू हो  
आतम ज्ञाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ  
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम  
प्रदारथ संपति संपजै, आनंदधन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो  
हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी०  
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥  
दानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २  
॥ परदुःख वेदन इच्छा करुणा, तीक्ष्ण परदुःख रीजे रे ॥ उदासी

नता उज्जय विलक्षण, एक गंमे केम सीऊ रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ  
 जयदांन ते मल हय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावे रे ॥ प्रेरण  
 विणु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥  
 शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, नियंत्रता संयोगे रे ॥ योगी जोगी वक्ता  
 मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु ज्ञ  
 ग त्रिजंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,  
 आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुजरी ॥

॥ मनसो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिमर ज  
 तन करीनें राखूं, तिमर अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज  
 नी वासर वसती ऊजम, गयण पायाले जाय ॥ सांप स्वायने सुखमुं  
 थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा  
 अजिलाषी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अज्यासे ॥ वयरीमुं कांड एहवुं  
 चितै, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम  
 धरनें हाथे, नावै किण विध आंभू ॥ किहां कणे जो हठ करी हटकूं,  
 तो व्यालतणी पर बांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो ठग कहूं तो  
 ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांह ने सहुग्री अ  
 लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते  
 कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंथित जन समजावै,  
 समजै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए  
 लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वार्ते समरथ ठै नर,  
 एहने कोई न जेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स  
 गलूं सध्युं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,  
 ए कहि वात ठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं डुराराध्य ते

धस आणुं, ते आगमंथी मति आणुं ॥ आनंदधन प्रभु माहरो आणी,  
तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिकमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ जुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै, जवना संखित पाप परा सब  
मेटियै ॥ मन धर जाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहुंते एक  
कोमि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरूं प्रभु दूरधकी में ताहरो,  
जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ जव २ तुमहीज देव  
चरण हूं सिर धरूं, जवसायस्थी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥  
जुख त्रिषा तप लीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम जार त  
णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नांमतणी आसत घणी,  
एहिज ठै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम  
जवोदधि हूं फिरयो, सहोया डुक्क अनेक न कारज को सरथो ॥  
मिलिया हिव प्रभु मुज सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत  
जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्या  
कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रखण जिम दीपतो,  
जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ जुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन जुवन सिरताज ॥ आठेलाख,  
नगर ब्रह्मानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल  
सुगुण निधान ॥ आठेलाख, वामासुत वरुजागीयाजी ॥ २ ॥ सेव-  
कनी संजाल, करिय खरी ततकाल ॥ आठेलाख, संकट सह प्रभु  
परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रयव्यो आनंद पूर ॥  
आठेलाख, वाट विदमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आठेलाल, मन वंठित मुज सहु फट्या जी  
॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी आप, मिलिया गो प्रभु आप ॥ आठेलाल,  
देज्यो दरिसण बलि सदा जी ॥ ६ ॥ असृतधर्म सुजाण, सीस कमान  
कट्याण ॥ आठेलाल, वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामासुत वरदाय,  
निरमल नाणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रभु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥  
तीन कमल मुज संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख,  
चंद लजाणू रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आंणू रे ॥ ३ ॥  
सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविलास,  
आल ज्युं ठाजै रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे ॥  
ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार,  
श्रीजिन राया रे ॥ साचै पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रभु-  
गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाढ्यो पातिक पंक, आतम संगे रे  
॥ ७ ॥ वरस अठार चोतीस, बदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम दोस,  
सहु संघ साखै रे ॥ नगर महेवा मांदि, पास जुहारया रे ॥ श्री-  
जिनचंद मुणिंद, वांठित सारया रे ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुज वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमी  
चाराय ॥ प्रगट अई पातालबी गोमीचा, सेवक जिन साधार हो  
गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख अई ऊतावली, गो० ॥ दरसन देखण  
काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ दो दरसन महा-  
राज हो ॥ गो० ॥ वाण ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो  
वै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति क-  
रवां सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवमो, गो० ॥ सगली



प्राति सदीव हो, गो० ॥ छंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो  
जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीठां ते  
न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां  
ऊढ्हाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कालै वाढ्हे माहरे, गो० ॥  
कीधी खरी सजीम हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥  
प्राणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ ते कीधी तिम तूं  
करै, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर  
संभारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ५ सुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वामी रे ॥ अश्व-  
सेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण  
गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जव अ-  
टवी वन धन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥  
दीनंदयाल दया कर दीजै, अनुभव गुण अजिरांमी रे ॥ चरणकमल  
सेवा चित चाहत, सुगुण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वसेन  
वामाजीके नंदन, देख्यां विल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें  
महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन-  
मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगुण सेव-  
गकी येही अरज हे, जवहुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७ सुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजव सुरंग अनूप ॥ सवाइ प्रभू  
जी, घांरी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन  
वांदवा, चित्तमांमे लागी वै चूप ॥ सवाइ प्रभूजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रभू आंखनी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां०  
 ॥ नयण सलूण जी निरखतां, ऊपजै अधिक नुबहास ॥  
 स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा  
 निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीयो, दिल  
 रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो  
 य धनी सुप्रमाण ॥ स० ॥ जगतवञ्जल जल जेटियै, जिनवर चतुरसु-  
 जाण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसल गढ जयो, श्रीचिं  
 तामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंडनी, अविचल पुरो जी  
 आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम  
 विन देख्यां एक धनी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे  
 अमारा हीयमलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास ठियै निर  
 धार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि०  
 ॥ चंद चकोरा जलधर नै जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण  
 तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधोजिम तिम करि  
 नै चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥  
 आपो जव२ चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरी-  
 नै आवे जे तुझ पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास  
 म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी आबै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणि-  
 ने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो मुऊ ऊ  
 पर निवम सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी ठिटक न देख्यो बेह ॥  
 म्हारा जि० ॥ खरतर गद्यपति श्रीजिनलाज सूरिंद रे, जि० ॥ तासु  
 पसार्ये पज्जणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ सुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने  
मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं वै प्रभुजी म्हारो अंतर  
जामी, पूरव पून्यै थारी सेवा में पांमी राज ॥ साहिव में तो तु-  
ज्जनें जाण्यो वै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज  
॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलमुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभु  
जीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी ताह-  
रो दिलमांहे वसियो, रात दिवस थारा गुणनो वूं रसियो राज ॥  
सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर वूं खासो, कदिय न मेळूं  
प्रभुजी पलनर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरें राज मोटा क-  
हीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहीजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥  
पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे  
रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं  
प्रभुजी दरसण ठाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलिर हूं तुम पाये  
जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजि-  
नचंड सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे जवजल तारो राज ॥ सु०  
॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १० सुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीठा  
आवे दाय, मो० ॥ जिमर सूरत देखियै प्रभु, तिमर वाधे प्रीत ॥  
तन मन माराजलसै कांइ, रूमी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण  
कमलदल पांखनी प्रभु, मुखनो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका  
कांइ, दीठां परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ काने कुंमल जिगमिगे प्रभु,  
कंठे नवसर हार ॥ चंपकली सोहे जली कांइ, मुखनै ज्योत अपार  
॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं वै जगनो वालहो प्रभु, थारे सेवग कोरु ॥ म्हारे

सूहिज साहिबो कांइ, बंदू बे कर जोरु, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज  
मनोरथ सब फट्या, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा  
कांइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसन वहिलो दीजै ॥ दीजै  
२ जी माहाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंरणी ॥ मुज मन  
जमरतणी पर मोह्यो, बोरायो नवि बूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण,  
ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने,  
नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन बरतै, जाणूं जइ  
मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरब पुन्यथकी में पायो, ए अवसर  
आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिव सहज सबूणो  
॥ जि० ॥ ३ ॥ आरे तो सेवग ठै बहुला, मो सरिषा लख ग्याने,  
माहरे तो इण जगमे जोतां, आरे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥  
आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही ज्ञाखूं ॥ अमृत जेम  
लही तुज गुणरस, खाखे जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन  
ए मुझानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालानें  
गिणतां, कहो कुण मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपणै किंचित  
गुण ज्ञाखूं, हूं म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुज गुण  
लायक, त्रिजुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अठार बली  
इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे,  
यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं,  
मेलो तिहां मंमायो ॥ लान्न उदय जिनचंदने प्रभुजी, वांध्यो प्रेम  
सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पदमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं ठिनमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ का  
हूको मन तरुणीसैं राख्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु  
तुमहीसे राख्यो, ज्युं चात्रक चित्त धनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर  
तेरी गति जांणै, अलख निरंजन ठिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर  
तूही, साहिब तीन ज़ुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ ज्ञाव  
दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध  
अया, संघ सकल आधारो रे, हिवंशज रतमां ॥ कुण करशे उप-  
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे  
संघ ॥ साथे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥  
मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अथमाय ॥ वीर विहूणा  
जीवमा रे, आकुल व्याकुल आयो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय  
वेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे,  
ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुझनो रे,  
जव अटवी सठवाह ॥ ते परमेसरविण मिळ्यां रे, किम बाधे उत्साहो  
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥  
हमणां श्रुत आधार ठे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥  
इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि-  
जना रे, जिनपनिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचा-  
रिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव-  
चंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रूपज समोसरया, जला गुण जरया रे ॥ सिद्धा  
साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां अयां, मुग्तें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,  
 गिरिसेहरो रे ॥ नरतै नराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति  
 नलो, त्रिभुवन तिहो रे ॥ विमल वसई वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥  
 समेतशिखर सोहामणो, रत्नियामणो रे ॥ सिद्ध तीर्थकर वीश  
 ॥ ती० ॥ नयरो चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा-  
 सुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, रुद्धे नरी रे ॥ मुक्ति  
 गया महाबोर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥  
 अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें  
 रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोस्सरो संखेसरो, पंचासरो  
 रे ॥ फलोधी अंजना पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ-  
 भीऊरो रे ॥ जीसवलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,  
 जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनामुलाई जादवो,  
 गोप्ती स्तवो रे ॥ आवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां,  
 बावन नलां रे ॥ रुचक कुंमल चारु चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती-  
 अशाश्वती, प्रतिमा उती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ  
 जात्रा फल तिहां, होजो मुक्त इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपे चालो लहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धा-  
 चलगिरि जईए बहेनी, विमलाचलगिरि जईहं रे ॥ आ० ॥ सुण  
 बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंद इम जांखी ॥ नरतादिक  
 नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इण गि-  
 रिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख  
 गोप्तीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-  
 न्मुख पगलां नरतां, आतम शुद्ध सुजायें ॥ कोमि नवांरां पातक  
 कीधां, एक पल हमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेरुं

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन जुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोई  
न दीगो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगें नलग क-  
रस्यां ॥ अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥  
॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ पं  
हिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥  
गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती  
जमती विच जमतां, जवसायर निसतरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव  
नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रुंखे आया ॥ ए तीरथ शुज जावें  
फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लान नदे ए गिरि  
वर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल,  
प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥  
मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनु  
मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ आवक अच्युय गति लहे, नवयैवेका  
हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम दस ॥ वेशा  
लापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इ  
ग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या  
श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिलालानंदन जी, जले में जेव्या श्री  
जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे जाग्य अनोपम माय  
॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो ठे देहरो जी, तिहां प्रभु कानसग्य ली  
थ ॥ पञ्चस्काण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीय ॥ ज० ॥ ३ ॥  
जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले आवकधर्म ॥ आकारे तिण नल  
ख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवा  
सीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,



से हथ देख्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, हो  
 सी सकल मुज आस ॥ पद आस गिणतां थकां जी, पूरी थइ चो  
 मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामथी आहारनी जी, जीरण कीधी तइ  
 यार ॥ प्रजुनो मारण देखतो जी, बेगो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥  
 घर आवे ठे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण बार ॥ प्रजुजी कां न  
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीठे करस्युं  
 पारणो जी, हूं प्रजूनै पमिलान्न ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय  
 विन वरसे आज्ञ ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतर ऊक्या गोचरी जी, श्री  
 सिद्धारथपुत ॥ वेसाळापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत ॥ ज० ॥  
 १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेन्नी प्रते  
 इम कहे जी, कांइक निका देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू जरने वा  
 कला जी, प्रजूनै आंणी दीध ॥ नीरागी तेही लिया जी, तिहां प्र  
 जू पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुनि जी, जै बो  
 खे कर जोमि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढोबारे कोमि ॥  
 ज० ॥ १३ ॥ कहो सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥  
 लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा  
 दिक् सहूए कहे जी, धनए पूरणसेठ ॥ उंची करणी तेंकरी जी,  
 अवर सहू तुज देठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तबे जी, वा  
 जित डुंडुनिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रजु पारणो जी, मनमें थयो  
 विषयाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अज्ञागियो जी, मेरे न आया  
 सांम ॥ कटपवृक्ष किम पांमोये जी, मारूमंमल ठांम ॥ ज० ॥  
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ निर  
 धन जिमर चिंतवे जी, तिमर निरफल आय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा  
 मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पाल  
 संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशाळापुर

राजियो जी, लोकांस्थुं आणंद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्यो जी, सुगुरु  
चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठें जी, जीव पु  
न्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥  
२१ ॥ राय कहे किण कारणो जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो  
जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे  
केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न  
कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण बारमें जी, जीरण  
घाल्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०  
॥ २४ ॥ घग्गी एक सुर डुंडुनि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-  
तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठांम ॥ ज० ॥ २५ ॥  
राजा जीरणने दियो जी, अधिक मान सनमान ॥ मुकुनगरमें आ  
पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियो सु-  
पात्रने जी, ते निष्फल नहि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,  
जीरण जिम फल आय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना  
जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मु  
नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीविरासि स्वभावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिव राणी पद्मावती, जीविरास स्वभावे ॥ जाणपणो ज  
ग दोहिलो, इण बेला आवे ॥ ते मुऊ मिहामिडुक्कन ॥ १ ॥ अ-  
रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु०  
॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणां, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते  
ऊकायनां, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव-  
दे लाख साधार ॥ वि ति चउरेंडी जीवनां, वे वे लाख विचार ॥  
ते० ॥ ४ ॥ देवता तीर्थच नारकी, च्यारइ प्रकाशी ॥ चवदे लाख  
मनुष्यना, प लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणजव परजव से

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध करवोलरुं, दुःखतिं दातार ॥ ते०  
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोड्या सृषावाद ॥ दोष अदत्तादां  
 नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेढयो कारमो, की  
 धो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, वलि राग ने द्वेष  
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहंझ्या, दीधा कूमा कलंक ॥ निं  
 द्या कीधी पारकी, रति अरति निस्तंक ॥ ते० ॥ ए ॥ चामी की  
 धी चोतरे, कीधो थांपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, जलो आं  
 र्णयो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकोने जव जे किया, जीवना  
 वध घात ॥ चिमीमार जव चिमकला, मारया दिन ने रात ॥ ते०  
 ॥ ११ ॥ माढीगर जव माठला, जाड्या जलवाला ॥ धीवर जली कोली  
 जवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुझाने जवे, पंढी  
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥  
 १३ ॥ कोटवालजवमें किया, आकाराकर दंरु ॥ वंदीवान मराविया,  
 कोरमा ठमी दंरु ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार  
 की डुस्क ॥ वेदन जेदन वेदना, तामना, अति तिरक ॥ ते० ॥ १५  
 ॥ कुंजारने जव में किया, निवाह पचारा ॥ तेलीजव तिल पि  
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख  
 रुया, फाड्या पृथ्वी पेट ॥ सूमाने दान किया घणा, दीधा बलध  
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल  
 पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही  
 आंगमी, जरया अधिका जार ॥ पोठी जंट कीमा पड्या, दया ना  
 वी लिंगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छीपाने जव ठेतरयो, कीधा रांगणपास  
 ॥ अग्नि आरंभ किया घणा, धातुरवाद अज्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर  
 पणे रणजूंऊतां, मारया माणस बृंद ॥ मदिरा मांस माखण जरण्यां,  
 खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणार्ई धातुनी, पाणी

संलंघ्या ॥ आरंज कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संख्या ॥ ते० ॥ २२ ॥  
 अंगारकर्म किया वली, धरने दव दीधा ॥ सूत लेइ वोतरागना,  
 कूना कोलज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिछी जव ऊंर गिळ्या, गि  
 लोइ हत्यारी ॥ मूढ गिसारतणे जवे, में जूं लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥  
 जामजूजातणे जवे, ऐकेंडी जीव, ज्वार विणाग हुंसे किया, पामंता  
 रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण गारना, आरंज अनेक ॥ रांयण  
 इंधण अगतिना, कीया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार  
 कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमानिया, रोदनवि  
 खवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने आवकतणा, व्रत लेइने जागा,  
 मूल अने उत्तरतणा, मुऊ दूयल लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विबु  
 सिंह चितरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे जवे, हिंसा  
 कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूत्रावमे दूयल घणा, वलि गरज  
 गलाया ॥ जीवाणी ढोळ्या घणा, शीलव्रत जंजाया ॥ ते० ॥ ३० ॥  
 जव अनंत जवतां अकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध ९ कर वो-  
 सरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणजव परजव इण परे,  
 कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध ९ कर वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥  
 ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरामी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर  
 कहे पापया, वूटे तनकाल ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इति आलोयण सिंहाय सं० ॥

॥ अथ गोडीपार्थनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विक्तात ॥ पासतणा गुण  
 गावतां, मुऊ मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अह  
 मदावो पास ॥ गोमी गे धणी जागतो, सहूनी पूरे आस ॥ २ ॥  
 शुज वेला शुज दिन घमी, महुरत एक मंराण ॥ प्रतिमा तीने  
 पासनी, अई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, दामानो सुत साचो जी ॥  
 धण कण कंचण मणि माणक दे, गोमीनो धणी जाचो जी ॥ गु० ॥  
 ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमै प्रतिमा, तुरकतणे घर हूँती जी ॥  
 अश्वनी जूमे अश्वनी पीमा, अश्वनी वाल विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥  
 जागंतो जक जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जि  
 नेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुऊ संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रहज  
 ठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे उगो  
 मले जे, टक्का पांचसे लेजे जी ॥ ७ ॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मा  
 रीस मुरमिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्रधन हय गय हाथी,  
 लाठ घणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुऊने मिल  
 स्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढया, वस्तु  
 वहे तस पोठी जी ॥ ९ ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं बिहतो तुरकमो, मांने वचन प्रमाण ॥ बीबीने सुह  
 णातणो, संजलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वमा  
 देव हे कोइ ॥ अब सताब परगट करो, नहितर मोरे सोय ॥ ११ ॥  
 पाठलीरात परोमिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणामांहे सेठने, संज  
 लावे यहराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ॥

एम कही यक आयो राते, सारथवाहूने सुहणो जी ॥ पास  
 तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणो जी ॥ ए० ॥ १३ ॥  
 पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी  
 पहुंचाडे आंनक, प्रतिमा गुण संजारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुऊने  
 होसी बहु फलदायक, ज्ञाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना  
 पाया, प्रहजगीने सुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ सुहणो देइने सुर चाढ्यो,

आपणे आनक पहुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाहू, दींमे तुरकने  
जोतो जो ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीगो गोठी, चोखा तिल  
क निलामे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लामे  
जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुऊ घर प्रतिमा तुऊने आपूं, श्रीपास जिने  
सर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुऊ आपे, तो मोल न मांगू फेरी  
जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, आनक पहुतो रंगे जी,  
केशर चंदन मृगसद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी  
रुनी रुनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या  
पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उन्नव दिन  
अधिका आवे, सत्तर जेइ सन्नात्रो जी ॥ ठांमरना दरसन करवा,  
आवे लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दहा ॥

इक दिन देखे अविधसुं, पारकरपुरनो जंग ॥ जतन करूं  
प्रतिमातणो, तीरथ अठे अजंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेवने, थल,  
अटवी ऊजाम ॥ महिमा आस्ये अतिवणी, प्रतिमा तिहां पहुचाम ॥  
॥ २३ ॥ कुशल केम तिहां अठे, तुऊने मुऊने जाण, संका गोमी  
काम कर, करतो म करीस काण ॥ २४ ॥

॥ बाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वर्षेन जोतरे ॥ पार  
करणी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ वारे कोश  
आयां जेतले, प्रतिमानवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ,  
पास जवन मंदाबूं लही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम कळं प्रयाण, कुट  
को कोइ न दीले वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंदाबूं कि  
म घरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटो  
किम आवे इहां ॥ चिंतातुर ययो निज लहे, यकराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूँहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ धणो जाणीज तिहा ॥  
 स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी नलटस्ये खांण ॥ २९ ॥  
 श्रीफल सजल तिहां किण जुन, अमृत जल निसरिस्ये कूज ॥ खा  
 राकूआनो इह सहनांण, जूमि पड्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सि  
 लावटो सीरोही वसे, कोढ पराज्जवियो किसमिसे ॥ तिहांयकी तूं  
 इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन  
 थिर थापियो, शिलाचटाने सुहणो दियो ॥ रोग गमानं ने पूरुं आस,  
 पासतणो मंजे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मान्यो ते वेण, हेम  
 वरण देखाड्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया  
 तेमवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरसो, जीमे खीरखांन घृत चूरमो ॥  
 धमे घाट करे कोरणी, लगन जले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज २  
 कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंरुप रलियामणो  
 रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग  
 समो मंजे आवास ॥ दिवस विचारी इमो घड्यो, ततखिण देवल  
 ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुज लगन शुज वेला वास, पद्मासण वेठा  
 श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समान, एकलमल वगमे रहे वान ॥  
 ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांजली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥  
 गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विधन विमारण जहू जग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे  
 श्रीसंघने, देखामे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरज गौमीपास जिन ॥ आपे  
 अरथ जंमार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥  
 नील पलाणे नील हय, नीलो अइ असवार, मारग चूकां मानवी,  
 वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥



॥ बाल ४ ॥

धरण अढारतणो लहे जोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ ४१ ॥  
 वित्र अइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निर  
 धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरपणो  
 धरे, पार उतारे लछी बरे ॥ ४३ ॥ दोज्जाणीने दे सोज्जाग ॥ पग  
 विहूणाने आपे पाग ॥ ठांस नही तेहने थे ठांस ॥ मन वंछित पूरे  
 अजिरांस ॥ ४४ ॥ निरधाराने थे आधार, जवसायर ऊतारे पार ॥  
 आरतियानी आरत जंग, धरे ध्यांस ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरचां  
 साद दिये जकराज, जेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि  
 प्रकाश ॥ गूंगाने थे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दां  
 तार, जयजंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेसीतणा, श्रीपार्श्व  
 नाम अकर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अकर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध  
 दूरे टले, दुखर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चौरतणा जय चूकवे, विष  
 अमृत उमकार ॥ विषधरना विष ऊतारे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥  
 रोग शोग दालिङ्ग दुख, दोहग दूर पूलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-  
 हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ बाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

जैजततू २ जंज उपशम धरी, जै ह्रीं श्री श्रीपार्श्व अकर ज  
 पेंते ॥ जूतने प्रेत जोटिंग विंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते  
 ॥ ५१ ॥ जै ० ॥ दुखरा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा दु  
 तपेंते ॥ गर्जबंधन व्रणं सर्प विठू विषं, चालिका बाल मेवाऊखंते  
 ॥ ५२ ॥ जै ० ॥ साइणी माइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका  
 दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ नै० ॥ धरणेइ पद्मावती समर सोजावती, वाट  
 आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लौंदो मिले सुजस वेला वले ॥  
 सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ नै० ॥ अष्ट महाजय हरे  
 कानपीमा टले ॥ उत्तरे शूल शीसग जणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं  
 प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नांम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति  
 श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं  
 संति, जस्स धम्मो सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्स पुप्फेसु, जमरो  
 आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥  
 एव मेए समसा बुद्धा, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु,  
 दाणज्जे सणेरया ॥ ३ ॥ वयं ष वि त्तिं लप्पामो ॥ नहि कोइ उव  
 हम्मइ ॥ अहागमे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार  
 समा बुद्धा, जे जवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंर रयादिंता, तेण वुच्चं  
 ति साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगळ्यं, सर्व कट्याण  
 कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मंगलं जगवान्वी  
 रो, मंगलं गौतम प्रभु ॥ मंगलं स्थलज्जज्ञाया, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ नमो परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म  
 रक्षा करं वज्र, पंजरा जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ नै नमो अरिहंताणं ॥  
 शिरस्कशिर संस्थितं, नै नमो सब सिद्धाणं, मुखे मुखपटंबरं ॥ २ ॥  
 ॥ नै नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ नै नमो उव  
 ज्ञायाणं, आयुधं हस्तयोद्धदं ॥ ३ ॥ नै नमो लोए सब साहुणं,  
 मोक्षो गदयो सुजे ॥ एसो पंच नमोक्कारो, शिखा वज्रमई तले  
 ॥ ४ ॥ सब पावप्पणासणो, वप्पो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाअं ष स-

बैसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं  
हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्जमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा  
प्रज्ञावात् रक्षेयं, कुडोपइव नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता  
पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य  
नस्यान्नयं व्याधि, राधि आपि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा०  
स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ सुखकारण ज्ञवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन  
आगम चवदे पूरब सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं  
पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव  
मानव सेव करे कर जोरु, ज्ञयमंरुल विचरे तारे ज्ञवियण कोरि  
॥ सुरठंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं  
जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत, पंचमि  
गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक  
जेह ॥ सिद्धना पांय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गज्जहार  
धुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण ठत्तीसे थोम  
॥ श्रुत जाण शिरोमण सागर जेम गंज्जीर, तीजे पद नमिये आ  
चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र जणावे सार,  
तप विध संयोगे ज्ञाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुक्ता ते क  
हिये भवज्ञाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पं  
चाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार  
॥ त्रस आवर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमुं परमा  
रथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि सोइण माइख जूत वेताल,  
सव पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर ट  
ले ततकाल, जेपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ शेवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमूं नाथ निश्चे करी एक  
बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गो, अहो ज्ञव्य लोको ज्ञुला  
कां ज्ञमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गो, पञ्चा पाश  
मे ज्ञूतमाने ज्ञजो गो ॥ सुराधेनु ठंमी अजाने अजो गो, महापंथ  
मूंकी कुपंथे ब्रजो गो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे,  
अहे कोण राशजने हस्ति साटे ॥ सुरडुम ऊपामने आक वावे,  
महामूढ ते आकुला अंत पाषे ॥ ३ ॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु  
श्रृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य  
देवा, करो एक चित्ते प्रज्नु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रज्ञावती  
प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा  
जेह ध्यावे, तेहना डुस्क दालिड दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पांमी मानुषोने  
वृथा क्यु गमो गो, कुशीले करी देहने कां दमो गो, नहि मुक्ति  
वासं विना वितरागं ॥ ज्ञजो ज्ञगवंतं तजो दृष्टिदरागं ॥ ६ ॥ उदय  
स्त्वं ज्ञाखे सदा हेत आणी, दयाज्ञाव कीजे मोहि दास जांणी  
॥ मोरे आज मोतीअमे मेह बूठा, प्रज्नु पास संखेसरो आप तूठा  
॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश  
॥ जो कीजे गौतमनो ध्यान, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥  
गौतम नांमे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नांमे  
नावे रोग, गौतम नांमे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंक  
मा, तसनांमे नावे ढूंकमा ॥ ज्ञूत प्रेत नवि संमे प्राण, ते गौतम  
ना कंरुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नांमे निरमल काय, गौतम नांमे  
बाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिसागार, गौतम नांमे जयकार

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा धृत धोल, मनवन्धित कप्पन तंबोल ॥  
 घरे सुधरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ  
 तम नृदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा  
 मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल  
 घोमानी जोरु, वारू विलसे वन्धित कोरु ॥ महियल माने मोटा  
 राय जो तूवे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम  
 सरसी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान  
 ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे बहू ॥ कहे ला  
 वण्य समय कर जोरु, गौतम तूवा संपत कोरु ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये  
 ए ॥ प्रजात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥  
 बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी नरतनी बहिननी ए ॥ घट २  
 व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांदि जे वनी ए ॥ २ ॥ बाहुवल  
 जगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे रुषन सुता ए ॥ अंग स्व  
 रूपी त्रिभुवनमांदि, जेइ अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला  
 बालपणेशी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उरुदना बाकला वीर प्रति  
 लाज्या, केवल लहि व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी  
 नंदन राजेमती नेम वल्लजा ए, योवन वेशे कामने जीती, शंजम  
 लेइ देव डुल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच नरतारी पांरुव नारी, हुपदा नाम  
 वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणि  
 ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंडिका ए,  
 शीयल सलूणी राम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौश  
 विक ठामे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घ  
 रणी मृगावती नामे सुरभुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साँची शील न काँची राची नही विषयारसैं ए, सुखमो जोतां पाप  
 पुढाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनी का  
 मण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जाणो धीज करंता अनल  
 शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणो बांधी कू  
 वायकी जल काढियो ए, कलंक ऊतारवा शतिय सुज्जझा चंपा बार  
 उधारियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद  
 गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नांमनी ए  
 ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांरुवरायनी कूता नामे कामनी ए, पांरुव  
 माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील  
 वती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जप  
 ता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधामगरी  
 नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पमियां शीलज राख्यो,  
 त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता,  
 पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विह्वाता कामित दाता, शोलमी  
 शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरें दाखी शास्त्र ठे साखी, उदयरत्न  
 ज्ञाषे मुदा ए ॥ प्रह ऊर्गने जे नर जणसे, ते लहिस्ये सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ षष्ठ्वीकूख  
 रत्नहीर, विश्वजूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अ  
 वतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जइ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥  
 करत धरत ठात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत  
 प्रभु आये चंग, वाणी गुण सप्त जंग ॥ वर्द्धमान जित अनंग, शंशय  
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंडजाल संक रेखा ॥  
 वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय  
 अंग बार, स्वना कृत अति अपार, बोधन जग जीव सार, जये गुरु

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीने, मुक्ति लक्ष्मी धरम  
लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुंदन युतिसारी ॥ ज० ॥ ६ ॥  
सिद्धयोग नंद चंद, कार्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प  
कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इन्द्रजुति  
जगधणी ॥ कुशल निधान सुख जणी, पाठक रुद्विसारी ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे ठे जी मुनिवर जेस ॥ म्हांने० हाथ  
लकन्या कांधे कंबलिया, शिर शोजित तनु केश म्हां० ॥ १ ॥  
चोलपट्ट चादर पांगरणी, नज्जव रहत हमेश ॥ म्हां० ॥ २ ॥ ज  
यणा कर सुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३ ॥ थि  
वरकलप जिनमुझधारी ॥ कांटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥  
दे उपदेश जविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥ ५ ॥  
करत रामरुद्विसार वंदना, निरखत एसो जेस ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा शुद्ध जई, मन अरिहंत २ ध्याते हे ॥ अरि  
हंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय  
२ जय २ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत  
नुधारण, सुरनर चरण लुजाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ़ स्वाते,  
अपठर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवडुंडुजि नाद बजाते हे, धर्म के  
ते हे सुख देते हे ॥ जविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें  
लाते हे ॥ रामजुद्धार कहे रुद्विसार, तूं आधार प्रजु मोहे तार ॥ ज०

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सझाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तुं ऊठे परजानत, चार घन्टी ले पाठली  
रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे जव सायर पार ॥ १ ॥





त शुद्ध हैमे राखजे, बोल विचारीने ज्ञाखजे ॥ पांच तिथि में करो  
 आरंज, पालो शीयल तजो मन दंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध  
 ने दहिं, ऊघामां मत मेलें सही ॥ उत्तम ठामें खरचा वित्त, पर  
 उपगार करो शुद्धवित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार;  
 घोर आहार तणो परिहर । दिवस तणां आलोए पाप, जिम ज्ञां  
 जे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर च  
 रण शरण जव जवें ॥ चरे शरण करी दृढ होय, सागारी अण  
 सण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जा  
 यवा ॥ समेतशिखर आवू गिरजार, जेटीश हु धन धन अवतार ॥  
 ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, । हथी थाये जवनो ठेह ॥ आठे  
 कर्म पमे पातलां, पाय तणा ठुठे आला ॥ २१ ॥ वारु लहियें  
 अमर विमान, अनुक्रमे पमे शिवरधाम ॥ कहे जिनहरे घणतस  
 नेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि प  
 ज्ञासुं सामी साल गायम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणो एकंद कर  
 वि निसुणहु ज्ञां ज्ञविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह  
 गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिन्नरहस्वित्त खोणी तल संमण, मगहदे  
 स सेणियनेरेस रिद्धल बलखंमण ॥ धणवर गुवर गाम नाम जि  
 हां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुज्जू तच्च तसु पुहवी जज्जा ॥ २ ॥  
 ताणपुत्त सिरिइंद ज्ञूय ज्ञूवलपसिद्धो, चवद्ध विज्जा विवहरूव ना  
 री रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सा  
 त हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण  
 जणवि पंकजजपाणिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास जयाणिय  
 ॥ रूवहि मयण अनंग करवि मेढयो निरधाणिय, धीरम मेरु गंजी

र सिंधु चंगम चयचाहिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण  
 जंपे किंचिय, एकाकी किल ज्ञीत इव गुण मेढया संचिय ॥ अइ  
 वा निचयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पउमा गवरि गंम  
 रतिहां विधि वंचय ॥ ५ ॥ नय बुध नय र कविण कोय जसु  
 आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र ठात्र हींमे परवरियो ॥ करय  
 निरंतर यइ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल हासे चरमनाण,  
 दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदोव जंबूदोव जतरह वासमि  
 खोणीतल मंरुण, मगह देस सेणिय नरेसर, वसुध्वरगाम तिहां,  
 विष्ण वसे वमन्नूइ, सुर तसु पुहवि ज्ञा, सयलगुणगणरूवनिहा  
 ण, ताणपुत्त विज्ञानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ ज्ञास ॥ चर  
 म जिनेसर केवलनाणी, चौविहसंघ पइवा जाणी ॥ पावा पुर सामी  
 संपत्तो, चउविह देव निकायाहें जुत्ता ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण  
 तिहां किजें, जिण दोठे मिथ्यामत ठीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहास  
 सन बेठा, ततखिण माह दिगंत पइवा ॥ ९ ॥ क्रोध मानमाया म  
 दपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डंडुनि आगसैं वाजी,  
 धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरुचे तिहां देवा,  
 चउसठ इंडज मागे सेवा ॥ चामर ठत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जि  
 लवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसज्जर वरवरसंता, जोज  
 नवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर  
 किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण  
 विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंडन्नूइ मन चिंते, सुर आवे अम  
 यइ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंकुज जिम तेवहिता, समवसरण पुहता  
 गहगहिता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु  
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ  
 बोले ॥ मो आवल कोइ जाण ज्ञणीजें, मेरुं अवर किम उपम दी

जे ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विरजिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर  
 महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण  
 बहु सुख कारण ॥ जिणवर जंग उज्जोय करे, तेजहि कर दिन  
 कार सिंहासन सामी ठव्यो, हुंउ तो जयजयकार ॥ १६ ॥ ज्ञास  
 ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंद्रज्यूय ज्यूयदेव तो ॥ हुंकारो करसं  
 चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजने जूमि समोसरण, पे  
 खवि प्रथमारंज ॥ तो दहदिस देखे विबुधबधू, आवंती सुररंज तो ॥  
 १७ ॥ मणिमय तोरणदंरु ध्वज, कोलीसे नवघाट तो ॥ वयरवि  
 वर्जितजंगुण, प्रांतीहारिज आव तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर,  
 इंड इंडाणी राय तो ॥ चित्त चमकिय चितव ए, सेवतां प्रभु पाय  
 तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल  
 तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंड जाल तो ॥ तो दोला  
 वइ त्रिजंग गुरु, इंडजूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे,  
 फेर वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, जगतहिं ना  
 म्यो सीस तो ॥ पंच संयासूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो  
 ॥ बंधव संजम सुणविकरे, अगनिजूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आज्ञासं  
 करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररण, आप्याधीर  
 इग्यार तो ॥ तो उपदेसे ज्ञुवन गुरु, संयमंशु व्रत वार तो ॥ बिहुं उपवा  
 सें पोरणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय  
 कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंडजूइ इंडजूइ चढियो बहुमान  
 हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पढुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि स  
 वे, चरमनाह फेर फुरंततो ॥ बोधबीज सज्जायमने, गोयम नवहि  
 विरत ॥ दिस्क लेई सिंका सही, गणहरणसंपत्त ॥ २२ ॥ ज्ञाम  
 ॥ आज हुंउ सुविहाण, आज पंचेलिमां पुणवजरो ॥ दीठा गोमय  
 सामि, जो नियनयणें अमिय ऊरो ॥ समवसरण मजार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥  
 जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कर्ने अणहुंत, गो  
 यम दीजें दान इस ॥ गुरु उपर गुरु जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय  
 ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अण  
 पद सेल, चंदे चढ चन्वीस जिण ॥ आत्म लब्धि वसेण, चरम  
 सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर  
 संचरि ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीगो आवतो ए ॥ २५ ॥ त  
 पसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ  
 काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुन ए अन्निमान, तापस  
 जो मन चित्तवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर कि  
 रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निपन्न, दंरु कलस ध्वज वरु सहिय ॥  
 पेखवि परमाणंद, जिणहर ज़रतेसर महिय ॥ निय निय काय प्र  
 माण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि मन उच्चास, गो  
 यम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजुं  
 जकदेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंररीक, कंररीक अध्ययन जणी ॥  
 चलेता गोयम सामि, सधि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ,  
 चाले जिम जूयाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांर घृत आण, अमीय  
 वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचस  
 यां शुभ्र जाव, उज्जल जस्थि खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, क  
 वल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण  
 प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उपपन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे ज  
 णवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी  
 हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण  
 पन्नरेसें, उपन्न परिवरिय, हरिहरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग  
 गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजितेसर इस जणे,

गोयम म करिस खेव, ठेह जाय आपण सही, होस्यां तुछा बेव  
 ॥ ३१ ॥ ज्ञास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उछ  
 सिय ॥ विहरियो ए नरहवासंमि, वरस बहुतर संवसिय ॥ ठव  
 तो ए कणय पनमेण, पायकमल संघे सहिय ॥ आवियो ए नय  
 णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,  
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर  
 मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥  
 तो मुनि ए मनबिखवाद, नादजेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण  
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु  
 अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो  
 सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा  
 केमें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोलें  
 जोलव्यो ए ॥ आपणो ए जंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥  
 साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजे टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो  
 यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो, उछट्ट,  
 रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण ऊपन्न, गोयम सहिज  
 उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे  
 ए ॥ गणवरु ए करय वखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥  
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पञ्चास, गिहवासें सं  
 वसिय तीसवरससंजम विजूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस  
 तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसान, सामी  
 गोयम गुणनिजो, होसे सिवपुर ठान ॥ ३७ ॥ ज्ञास ॥ जिम सह  
 कारें कोयल ठहुके, जिन कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो  
 गंधनिधि ॥ जिनगंगाजल लहिरयां लहके, जिन कणयाचल ते जें ऊ  
 लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हैसा, जिम सुरतरुवर कणयय तंसा, जिम मेहुयर राजीववने ॥ जिम  
 रयणायर रयणं विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गु  
 रु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम लसियर सोहे, सुरतरु महि  
 मा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गि  
 रिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन सुनि प  
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम  
 उत्तम मुख मधुरी ज्ञाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जू  
 मीपती जुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधे  
 गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ धितामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे  
 वंढिय काज, कामकुंज सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन  
 कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥  
 ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहिलो पन्नणी जे, माया बीजो श्रवण सुणीजे ॥  
 श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजे, विनय पहु  
 जवजाय अणीजे, इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां  
 काय करीजे, देस देसांतर काय जमी जे, कवण काज आयास क  
 रो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समगल ततखिण सीजे,  
 नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें,  
 गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं  
 भंगल ए पन्नणीजे, परव महोन्नव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि क  
 ढयाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य  
 पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीस्कियो ए ॥  
 विनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुहवी न लप्पइ पार, बरु जिम  
 साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास ज्ञणीजे, चनविह संघ  
 रलियायत कीजे, रिद्धिवृद्धि कढयाण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन  
 ठमो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस



णो ए ॥ तिहां ठेठी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काज सरेसी,  
नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो  
रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रज्ञाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ चूरव्यां जोजन  
संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा जं  
मार ॥ जे गुरु गौतम समरियें, मनवंठित दातार ॥ २ ॥ पुं  
ररीक गोयम पमुहा, गलाधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊगीनें प्रणमता,  
चवदसे वावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सबलदि सं  
पक्षं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसाभि ॥ ४ ॥ सर्वा  
रिष्टप्रणाशाय, सर्वान्निष्ठार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वा  
मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीरिसहेतर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास ज  
णूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सत्तोतरे, हु  
आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज मादातस कियो, शिअदैत्य दजूर  
॥ २ ॥ वीर जिगंद समवसरया, सेत्रुंज ऊपर जेस ॥ उंझादिक आ  
गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एस ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो,  
नही ठे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताळमें, तोरथ सगला जोय  
॥ ४ ॥ नांझे नव निध संपजे, दीठा दुग्नि पुलाय ॥ जेटेंता जय  
जय टजे, सेवंता सुख आय ॥ ५ ॥ जंबू नांझे दीप ए, दक्षिण  
जरत मजार ॥ सोरठ देल लुझामणो, तिहां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ हाल पंडित्यी ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजे ने श्रीपुंररीक, निदकेत्र कहूं नदतीक ॥ विम  
लाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजेना इकबील नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इन्द्रकांस ॥ महातीरथ पूर्व  
सुखकांस ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो  
तिण कीजे नक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगंम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृ  
थ्वीपीठ सुजड केलास, पातलिमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम  
कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बे  
ठा अपने गंम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर जगवंत  
इस कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमाण ॥ पिहुलो  
मूल नंचपण, ठवीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जाणवो, बीजे  
अरे विसांल ॥ वीस जोयण नंचो कह्यो, सुज वंदना त्रिकाल ॥  
२ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण  
नंचो सही, ध्यान धरुं चित्त लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण,  
चोथे अरे मजार, नंचो दस जोयण अचल, नित प्रणामे नर नार ॥  
४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणै विसतार ॥ दो जोयण नंचो  
अठे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठेठे अरे, पिहुलो पर  
बत एह ॥ नंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा इण गंम रे ॥  
अनंत वली सिजस्ये इण ठामे, तिण करुं नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुं  
जसाधू अनंता सीधा, सीजसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज ती  
रथ नही जेव्यो, तेगरजावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि  
आठमने दिवसे, रुषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरुख समोसरया  
स्वामी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ जरतपुत्र चैत्री पुनम  
दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोसीसुं पुरुरीक सीधा, ति

ए पुँररीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमिराजा विद्याधर,  
 वे वे कोमी संघात रे ॥ फांगुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण  
 प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चेत्रमांस वदि चौदसने दिन, न  
 मीपुत्री चञ्चसंठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी  
 धा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, झावरु ने  
 वारिस्विल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी  
 मुनिसुं निसछ रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिर सी  
 धा, नव नारद रुपिराय रे ॥ संव प्रऊन्न गया इहां मुगते, आवू क  
 र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विनो तेविस तीर्थकर, समवस  
 रया गिरिश्रुंगरे ॥ अजित शांति तीर्थकर बेहूं, रया चोमासे सुरंग  
 रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, आवच्चासुत साथ  
 रे ॥ पांचसें साधुसुं सेखग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाधरे ॥ से०  
 ॥ १० ॥ असंख्याता मुनिसैत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाठ रे ॥ रा  
 म अने जरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥  
 जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अन  
 ता सैत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ दाल वीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सैत्रुंजना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार  
 ॥ सुणतो आणंद अंग न माय, जनमरना पातिक जाय ॥ १ ॥ रु  
 पजदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ जरत गयो  
 वंदएने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमाहि मोटा  
 अरिहत देव, चोसठ इंड करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय,  
 जेहने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, जर  
 त सुणीने मन गहगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पांमिये, प्रजु कहे से  
 त्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवीपद मुऊ, ये आपो

हूं अंगज तुझ ॥ इंदे आणया अकतवास, प्रभु आपे संघवीपद ता  
 स ॥ ५ ॥ इंदे तिण वेला ततकाल, जरत सुजडा बिहुने आल ॥  
 पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष  
 जदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ जरते गणधर  
 घर तेनिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू  
 की सहु देस, जरत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,  
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिघणी, सं  
 घ चलायो सेत्रुंज जणी ॥ गणधर बाहुबल केवली, मुनिवर कोम  
 साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रुद्धि, जरते साथे ली  
 धीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार  
 ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कइवाय, मारग चैत्य ऊपरतो जाय ॥  
 संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे  
 निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठामे  
 रही महोन्नव कियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ  
 सेत्रुंजा ऊपर चढ्यो, फरसंता पातिक ऊम पज्यो ॥ केवलग्यानी  
 पगला तिहा, प्रणम्यां रायणरुख ठे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी  
 स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी,  
 जरतें दीवी कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव लणे उपदेश, इंदे  
 बलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, जरत कसयो गुरि  
 सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रत्नतणी प्रतिमा मन  
 रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा आपी सोहामणी ॥ १६ ॥  
 मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम आपी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि  
 प्रमुख प्राशाद, जरते आप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक  
 प्रतिमा प्राशाद, जरतें कराया गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो  
 चंदार, सगलोदी जाणे संसार ॥ १८ ॥

हाल चोथी ॥ राग सिंधुडो आसाउरी ॥

॥ ज़रततणे पाट आवमे, दंरुवीरज थयो रायो जी ॥ ज़र-  
ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज  
उद्धार सांजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा  
वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपात-  
णो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब जंमारीयो, पश्चिमदि-  
सि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल  
कियो अवतारो जी ॥ दंरुवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥  
से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंरुवीरजथी जिवारो जी,  
इशानेइ करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा  
देवलोकनो धणी, मादेइ नाम उद्धारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करा  
वियो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी,  
ब्रह्मेइ समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो  
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इइनो कियो, ए षष्ठो उद्धारो  
जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥  
अन्ननंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइइ करा  
वियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंडप्रभु स्वामीनो  
पोतरो, चंडशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चंड्यशराय करावियो, ए  
नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,  
शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रवरराय करावियो, ए दशमो  
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वा  
मी वारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥  
से० ॥ १२ ॥ पांरुव कदे अमे पापिया, किंम वूटां मोरी मायो  
जी ॥ कदे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से०  
॥ १३ ॥ पांचे पांरुव संघ करी, सेत्रुंज जेव्यो अपारो जी, काष्ट चै

त्य ब्रिंब लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी  
 पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी,  
 थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अठोतर सो वरसां गया,  
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवारु जावरु करावियो, ए तेरमो  
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत बार तिमोतरे, श्रीमाली सुविचा  
 रो जी, वाहरुदे मुहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥  
 से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह  
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स  
 स्यासिये, वैसाख बदि शुभ वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,  
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए  
 वरते ठे उद्धारो जी ॥ नित२कीजे वंदना, पांमीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दूहा ॥

॥ बलि सेत्रुंज महातम कहूं, सांजलो जिम ठे तेम ॥ सूरि  
 धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-  
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेष मानता, लाज हुवे तह-  
 तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण  
 समो लहे, पढ्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो  
 नीपावे कोथ ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होथ ॥ ४ ॥  
 सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई,  
 शिवसुख पांमे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप  
 वास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमतो नास ॥ ६ ॥ काती  
 परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक ह  
 त्या, पापथी नाखे ठोर ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक जणी, जो  
 जन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पमिलानां, अधिको तेहथी देख ८



॥ दाल पांचमी ॥

॥ सेतुंज गया पाप वूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप  
 जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जि  
 ण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुं  
 ज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी  
 करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुंज चढी, एक करे  
 उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी  
 कीधी जेणो जी ॥ सात दिवस पुरिमठ करे, तो वूटे गिरि एणो  
 जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो  
 जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥  
 से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते जेढे सिद्धदेवो जी ॥ सेतुंज  
 तलहटी साधुने, पमिलाने सुध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राञ्जरण  
 जिणे हरया, ते वूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह  
 ऊठी बहू वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुध्य  
 थाये एमो जी ॥ अधिको डूब्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो  
 जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय त्रैलोक्य घोसा मही, गज ग्रह चोरणहारो  
 जी ॥ ये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥  
 पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नामो जी ॥ वूटे ब्रह्मासी  
 तप कियां, सामायक तिण ठामो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परि  
 ब्राजका, सथव अथव गुरुनारो जी ॥ व्रत ज्ञाजे तेहने कह्यो, ब  
 र्हमासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक रुषि,  
 एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, वूटे तप कर  
 तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ दाल छठी ॥

॥ संप्रति काले सोलहो ए, ए वरते वे उद्धार ॥ सेतुंज यात्रा



करुं ए, सफल करुं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ ठहरी पालतां चालिये  
 ए, सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मि  
 ळ्या बहु थाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्ता  
 नी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, वरुने चोंतरे आवि ॥ ३ ॥  
 से० ॥ पालीताणे पाजमी ए, चढिये ऊठ परजात ॥ सेत्रुंजनदिय  
 सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिंगलाजने हमे  
 ए, कलिकुंरु जमिये पास ॥ बारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग  
 उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी  
 माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥  
 ॥ ६ ॥ वंस पोरवामे परगमो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ  
 ची करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा  
 चरचिये ए, जमतीमांहे जला बिंब ॥ पांचे पांरुव पूजिये ए, अदञ्जुत  
 आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं  
 अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९ ॥  
 धरमडुवारमांहि नीसरूं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आनं आदिनाथ  
 देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमूं मुदां  
 ए, आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, जमतीमांहे जमंत  
 ॥ ११ ॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कल  
 श अठोतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥  
 प्रथम आदीसर आगले ए, पुंरुरीक गणधार ॥ रायण तल पग  
 ला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायण तल प  
 गला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी चूमि बिं  
 बावली ए, पुंरुरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंरु नि  
 हालिये ए, अति जली उलकाजोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध  
 शिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पा

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा  
 ण, जेहने सुत श्रीसंज्ञव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण  
 सरीर मनोहर प्रभुनो जाण, लंठन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधा  
 न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्च  
 पणै प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर  
 होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख  
 श्रमणी बली ऊपर सहस ठत्तीस, जूमंमल विचरे प्रभु श्रीसंज्ञव  
 जगदीस ॥३॥ तीन लाख बलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट  
 लख सहस ठत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु ड  
 रितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जयशकार ॥४॥  
 सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण  
 कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवाण,  
 तीरथ महिमा महियल मोटी अइय सुजाण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अजिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवाण ॥ शिखरस-  
 मेत सोहामणो, जेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम जली, संबर राजा सोहे  
 मन रली ॥ सिद्धार्थ राणी प्रभु तसु नंद ए, अजिनंदन जिन प्रग  
 ट्या चंद ए ॥ उल्लाखो ॥ चंद ए सौवन वरण सोहे, धनुष साढी  
 तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंठन ते नित वसे ॥  
 पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि  
 ठलाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ए, ॥१॥ बाल ॥ सहस अक्यासी  
 दो लख श्राद्धनी, संख्या चौलख सत्तावीसनी ॥ श्रावकस्यारी संख्या  
 जाण ए, नाचकयक्ष कालिका ठाण ए ॥ उल्लाखो ॥ ठाण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेखणा, इक सहस साधू परवरया प्रभु  
मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमं  
गला, श्रीसुमति जिनवर ज्ञानंदन सदा होत सुमंगला ॥३॥ चाल ॥  
सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंठन क्रोंच सोहै सुजगे हसै ॥  
पूरब लाख पच्यासी आन ए, इकसौ गणधर गुणगण ज्ञान ए ॥  
उल्लाखो ॥ ज्ञान ए मुनि त्रिण लाख सोहै सहस वीस प्रमणां  
ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥  
संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावक इम आणिये, पण लाख  
सोले सहस तुंबरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात  
संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रभु मुक्ति  
पुहता चंग ए ॥३॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात  
सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंठन कमलतं  
णो सुज हाथ ए ॥ उल्लाखो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई  
सै त, कहौ, तीन लाख पूरब श्रित कहावै एकसो गणधर लहो ॥  
लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी  
दोय खल सहस बिहतर श्रावक संख्या सार ए ॥४॥ चाल ॥ पांच  
लाख बलि पांच हजार ए, श्रावकएयारी संख्या सार ए ॥ कुसम  
देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लाखो  
॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास सं  
लेखन प्रभूनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रभुजी मुक्ति पहुता,  
गिर शिखर महिमा जई, ॥ तसु चरण पंकज बालबंदे हृदय आनं  
द गहजही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ जविजन ब्रह्म  
रसु सेवतां, पांमे वंदित काम ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ श्रीसीमंथर साहिवा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सौजनता, राजा तात प्रतिष्ठ लालरे ॥ दे  
वी पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंठन सिष्ठ लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व  
जिनंद जी, वीस पूरब लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसै देहनो, कं  
चनवरण सुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कहा, सा  
धू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपर, सहस सा  
धवियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्षनी, श्रावक  
संख्या आय लालरे ॥ च्यार लाख बली त्रेणवै, सहस श्रावकणी  
जाय लालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक शांतासुरी, पांचसे मुनि पर  
वर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार ला  
ले ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥  
देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंडाप्रभु वेस लालरे ॥ ६ ॥ श्रीचंडाप्रभु  
बंदिये, चंडवरण तनु जेह लालरे ॥ लंठन चंडतणो जलो, धनुष  
दोढसे देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ जविककमल प्रतिबोधता, सेवे  
मुर नर यक लालरे ॥ दस लाख पूरब आनखो, तेणवे गणधर  
दक लालरे ॥ श्रीचं० ॥ ८ ॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्र  
मणी तीन लक लालरे ॥ असी सहस संका कही, श्रावक बलि  
दोय लक लालरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर बली, श्रा  
विका चन लक धार लालरे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजी  
नो परिवार लालरे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव नृकुटीसुरी, स  
हस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता  
मुक्ति मजार लालरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जय श्रीमुविद्ध जिनेसरु, जगपति दिनदयाल ॥ समे  
हशिखर मुगते गया, नविजनके प्रतिपाल ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा  
माता सुत, जए सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु  
सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु  
सुजाण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ ल  
ख दो मुनि विंशति सहस, इक लाख श्रमणी जाण ॥ ३ ॥ दोय  
लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकतर चौ लाख सहस,  
श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा  
निधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥  
मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा म  
हियलै, प्रगटी च्यारुं नर ॥ ६ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, हिव सु  
एज्यो अधिकार ॥ जदिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥  
७ ॥ लंगन सुज श्रीवन्नो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ  
धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु  
प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजाण ॥ ९ ॥  
एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या नर ॥ सहस तथासी  
दोय लाख, श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्ष चौ,  
श्रावकणी सुविचार ॥ देवो असोका ब्रह्म यक्ष, सह संघ सानि  
धकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति  
गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

॥ ढाल छठी ॥ धनर संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कं  
चनवरण श्रेयांस प्रभूजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो  
रे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, स्वर्ग लंगन प्रभु पायजी ॥ धनुष असी

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर  
 बहुतर सहस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सह  
 स वलि सहस गुण्यासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥  
 अरुतालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ ज  
 क अमर सुरी मांनवी जाणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥  
 न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मा  
 स संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥  
 ५ ॥ द्वि कंपिलपुर तात नृपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्या  
 मादेवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सू  
 कर लंठन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख व  
 चरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस  
 मुनि अरु सय इक लख, श्रमणी श्रावक जाण जी ॥ आठ सहस  
 दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ प  
 णमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ पट हजार  
 साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी नाम  
 अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत  
 जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंठन श्येन सो  
 वन सम काया, धनुष पञ्चास प्रमाण जी ॥ तीस लाख वचरनो  
 आयु, गणधर पचवीस आण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ वासठ सहस  
 मुनीसर सोदे, वासठ श्रमणी हजार जी ॥ ठ हजार लाख दोय  
 श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख व  
 लि चवट हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके  
 सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनि  
 वरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि  
 ऊपर, पुहता पद निरवाण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दूहा ॥

॥ असे धर्म जिनेसरू, पुहता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत  
गिरिंद पर, नमोश् जमज्जाण ॥१॥

॥ ढाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, जानुराय सुजाण ॥ राणी  
सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिने  
सर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंगन सुखकार  
॥२॥ ज० ॥ चौतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सहस्र प्रमां  
ण ॥ श्रमणी वासठ सहस्रस्युं जी, श्रावक दोय लक्ष मान ॥ ३ ॥  
ज० ॥ च्यार सहस्र वलि ऊपरां जी, चौ लाख एक हजार ॥  
श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥  
किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सहस्र परिवार ॥ समेतसिखर मुं  
गते गया जी, वांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हथणापुर विश्वसेनना  
जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन  
जयशकार ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ मृग लांगन सोवन  
समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, ठ  
त्तीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ वासठ सहस्र मूनि ठसै जी, इगसठ  
श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार  
॥ ८ ॥ ज० ॥ सहस्र त्रयाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥  
गरुडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ ९ ॥ नवसै मु  
नि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमणकर मुगतिमें  
जी, पुहता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ असें हथणापुर जलो  
जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंभुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन त  
नु श्रीमात ॥ जगतपति कुंभु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ गग  
लंगन पैतीसनो जी, धनुष देहनो मान ॥ सहस्र पंच्याणव वरस



नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैतीस गणधर दीपता  
जी, साठ सहस मुनि जान ॥ उसै साठ सहस वली जी, श्रमणी  
संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लहानो जो, आव  
क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, आविका सं  
ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी ब  
ला गंधर्व॥कुंभुनाथ मुगते गया जी, माख संलेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५

॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिख्युं अब अधिकार ॥ श्रो  
ता सुणज्यो प्रेम धर, आस्यै लाज अपार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ देसी विछियानी ॥ हारै लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू॥ए देशी ॥

॥ हारै लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या  
चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला  
॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंठन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुषदेहीनो मान रे  
लाला॥कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला॥  
॥ २ ॥ श्री अ० ॥ इक लाख आवक ऊपरै, वलि संख्या अधकी जाण रे  
लाला ॥ सहस बहुतर ताननी लह आविका संख्या आंखरे लाला ॥  
श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार  
रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संलेखण सा  
ररे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रजावती, मात पिता श्री  
कुंज राय रे लाला ॥ लंठन कलस पचीमनो, वधु धनुष सोवन  
सम कायेरे लाला ॥ श्रीमल्लिनथ जिनेसरू ॥ ५ ॥ सहस पचा  
वन वर्षनी, शित गणधर अठावीस रे लाला ॥ जविक कमल प्रति  
बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ चा  
लीस सहस मूनैसरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस  
त्रयासी लहानी, आवकनी संख्या सार रे लाला ॥ ८ ॥ श्री म० ॥

श्राविका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सहस  
मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ १० ॥  
राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ इयामव  
रण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत  
स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष बीस देहीतणो, आयु चर तीस हजार  
रे लाला ॥ अष्टादश गणधर अथा, तीस सहस मुनिसर सार रे  
लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या ब  
हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प  
चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी जली,  
नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति  
महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा  
मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन  
कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने  
सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे  
लाला ॥ बीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण  
रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल  
क्ष सहस बलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम  
करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता जूमंमले,  
आया सिखर समेत मजार रे लाला ॥ जूकुटी यक्ष गंधारी सुरी,  
इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमैसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि  
रोमणि सहसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जय१ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥

साँवरिया साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥  
 जय१ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसाँवरिया पास जी ॥ ध्यावे  
 सेवे जे नर तेहनी, पूरै वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी दे  
 स वणारसी नगरी, श्रीअश्वत्तेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्या  
 ता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंबत नील  
 वरण ठवि, देहि शुभ्र नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे,  
 गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर  
 अरु श्रमणी, कही अमृतीस हजार जी ॥ चूमंरुल विचरे नवि  
 जनक, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चौसठ सहस लाख इ  
 क श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी सं  
 ख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनेसर मुगते  
 पुहता, महिमा अइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगच्छो जग  
 में, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ ठहरी पाले जे नर  
 जावै, जेठे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सु  
 रतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करै नक्ति, सं  
 घपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेदनो  
 सुजस संवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पांमे, जा  
 आ करे गहगाट जी ॥ साधर्मी वछल मुनिनक्ति, पूजा नछव आ  
 ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो नविज  
 न जाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक न  
 छाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां  
 नवनिध आय जी ॥ तिण ए नविजन ज्ञान धरीने, सुखज्यो म  
 न थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमाधारी,  
 कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौजाय सूरेश्वर, अमृत  
 वचन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए, अ

मृतसमुद्गे सीत जी ॥ वालचंड निज मति अनुसारे, सोधो विष्णु  
ध जगीत जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत जगणोसै सितमोत्तर, सुदि  
वैशाख सुढाळ जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगळ  
माळ जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

रुषज्ञ प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह  
उच्चास ॥ पुंमरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल वि  
कास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमुं नित, ज्ञावै श्रमणा सुगुरु  
जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसं  
त ॥ २ ॥ प्र० ॥ ज्ञरत महासुनि प्रथम चक्रीसर, बाहूबल उप  
शम जंमार ॥ सूर्यसादिक आठ मुनिसर, पांम्यो विमलाचल ज  
वंपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुषज्ञवंस जे अमुक्रम हुवा, मुनिवर कोमी  
लाख असंख, श्रीतेत्रुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कं  
ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महा  
बल संजम सींह ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुषीसर न  
वन अवीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ठ वसुंदर, श्रीमद्धि  
नाथ पूरवज्जव मित्र ॥ पडुंता परम रुषीसर शिवपुर, पाली श्रीजि  
न आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लबधि निधि, खं  
दक सूरिना सीत लय पंच ॥ कार्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रम  
ण सुतोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडवंस अहोज्ञसु सा  
गर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव,  
निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने  
जेवयाली, पुरससेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संव अने अनिरुद्ध रुषीसर,  
सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक  
षट् मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाळ ॥ ढंढण रुषि श्रीयावच्चा

सुत, सहस साधु संजतसु कृपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ दाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनि  
धरो ॥ सिद्ध अया श्रीपुंमरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥  
उल्लाखो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोद ए, अं  
तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोद ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुद्ध  
नारद मुनि प्रमुख पेंताल ए, दमदंत महाशुषि कुंजवारे साधु नमुं  
त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषजदत्त रतनत्रय मुणी, स,  
मरुं देवानंदा सादूणी ॥ पांचे पांरुव प्रणमुं मुनिपती, केसपंएसी  
बोधक जिनमती ॥ उल्लाखो ॥ जिनमती बालक पूत्र मेदल धिवर  
आसंद रस्कियो, अणगार कासव धर्म जारुयो सोधि सिवपुर स  
स्कियो ॥ कादासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुं  
रुरीक महामुनीसर प्रणमिये शुभ संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंड  
बलकलची राकेवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू  
हुमह नमि तिभाया, निज देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लाखो ॥ श्री  
जुवा ए वृपजादि देखी अया वरु वइरागिया, संजमसिरि जज मो  
दनिडा तजिय जोमे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्ध च्यार सिद्धा सिद्ध अया  
एकण समे, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३  
॥ चाल ॥ खंतै कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोहच्चा मुनि चरणे लय ला  
इये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुद जयंतो सादूणी  
॥ उल्लाखो ॥ सादूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया  
॥ श्रीश्रमणजइ सुजइ सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठ  
सीस सुवत, साधुसुवत सैहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत गोजइ गरुड गरि  
मा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ तिरि सिवराय रूपीसर वंदिये, दसारण  
जइ नमुं दुख उंदिये ॥ अर्जुननाली सुख संजमधरो, मुददप्रदा

री सिवरमणी वरो ॥ उद्धालो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरुगमू कर्मावन्त  
 प्रसिद्धन, कोमिन्न दिन्न अनै सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गो  
 तम प्रबोधत सिद्ध पुद्गता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥  
 गुरुआ श्रीगुणसागर गार्ह्ये, प्रश्रवीचंड प्रणम्यां सुख पाइयै ॥ खं  
 दकुमार सदा अन्ननिंदिये, नमिह नरह मित्र मन आणंदिये ॥  
 उद्धालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुष इ  
 लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीयै धरी ॥ श्रीइंड नाम निर्ग्रथ निर्मम  
 धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी  
 सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतणो, श्रमण सु  
 दंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आडकुमार ए, चित्त चतुर  
 नर चित्त चमकार ए ॥ उद्धालो ॥ चमकार सार सुजात रुषिवर  
 देवसांनिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै सुजिन पालत हि  
 त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥  
 श्रीकपिल रुषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७ ॥  
 ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषै जुन, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुन ॥ श्री  
 इखुकार नृपति कमलावती, रांणी नृगुसुं प्रेहित सुजमती ॥ उद्धा-  
 लो ॥ सुजमती जेहनी जसान्नार्या पुत्र दोय वखाणिये, ए बहूं  
 लेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ कत्रिय मुनिसर साधु  
 संजम धर्मरुचि महाव्रती, नियंअनाथ अनाथ वंदू समुडपाल सुसं  
 यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कळपो, विधसुं शीतल  
 सिवकमला मिळ्यौ ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं  
 स्यो तप गुण वीर ए ॥ १९ ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहुजइ नं  
 दकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥  
 श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंदग कर्मानिधि कहिये इण कले, कुरुदत्त सुत  
 तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र



मुख रिप न्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अज्ञैकुमार  
मुनि अज्ञयंकरो, दह्म विहहसु आतम हितकरो ॥ उल्लाखो ॥  
हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिपेण आराधिये, मुनह्वर  
नै सर्वानुज्जति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने  
जदायेन चरम राजरूपीसरो, श्रीसातजइ सुधन मुनिवर समरता  
मंगलकरी ॥ १० ॥

॥ दाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वसुवेरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रजव सिध्यंजव  
परगमो, सुजस जसोन्नद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी,  
नामे घर नवनिध्वं वावै रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ ११ ॥ जग संज  
तिविजय जयौ, जेद्रवाहु कतजद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर  
श्रीधूलजद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ जेद्रवाहु स्वामीतेणा, च्यार शिष्य  
मुनीराय ॥ सीत परीपह जिणसह्या, सारथार आतम काज ॥ म० ॥  
॥ १४ ॥ अऊमहागिरि जांगिये, अऊसुद्धि विसाल ॥ संप्रति नृप  
पनिबोहियो, श्रीअयवंतीनुंकमाल ॥ म० ॥ १५ ॥ आरिजसांमि  
यसंसियो, अऊसुजद मुनीस ॥ अऊमंगु महिमा निलो, सींहगि  
रो समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि शिवरं महामनी, श्रीवयर  
स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, जेद्रगुपति निरमाय  
॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरू, श्रीरक्त गुरु दह ॥ पुस  
मित्र गुण गहगह्यो, प्रजु डरवलका पद ॥ म० ॥ २८ ॥ विज सा  
धु सुविघड जरयो, श्रीठंनिल सुविहह ॥ सूत्रअरथ रतने जरयो,  
क्षमाश्रमण देवद्वै ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री  
डुपसै सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल  
॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मजूमि जिके, दुआ होखै अणंत  
॥ वर्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रय गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी



सुंदरि रायने, साधुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीतवती सती, त्रिक  
रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल ठत्तीस ए, श्री  
विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्का कळवाणक दिने, गूंथी श्रीमुनिमाल  
॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रल्लिथामणौ, श्रीशीतल जिनचंद ॥  
सूरि विजय सजै सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री  
मतिज्ज सुगुरुल्ले, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणीयै,  
सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग  
ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख नरपूर ॥ म० ॥  
३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम  
हासिद्ध घरे फले, सदा२ कळवाण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल  
का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नू जिन स्तव लि० ॥

॥ दो० ॥ वस्तमान चौवीसी वंदू, मन सूधै नित मेव री माई ॥  
रुषज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई ॥  
॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंड प्रभु प्रणमूं, सुविध शीतल श्रेयांस री  
माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसेसर री  
माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी  
पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा  
नंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ डाल २ ॥ प्रह सम-सूषा साधु नमूं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमियै, जेहना नांम प्रगट ए जांण ॥  
केवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥  
॥ नि० ॥ सर्वानुभूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वां  
मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम  
॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति सुजगीस, सिक्कर स्यंदन संप्रति नामे, वंदीजे जिनवर चौवी  
स ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सफलें संसारनी ॥

जे जविस्संतिअणाए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिंहु  
काल ए प्रथम भाहाराज श्रेणिकतरो जीव ए श्रीपदमनाज प्रण  
मीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुंसी  
जिन वीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उवाइ नरिव ए,  
तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो  
साध ए, चौथो स्वयंप्रभू नाम आराधि ए ॥ दृढायुष जीव सिद्धां  
तमें जाणियै, पंचम सर्वानुभूति प्रमाणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण नाम  
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते ठगो स्वांमि सलहीजियै ॥ संख  
आवक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन  
आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोहल जिणं, सतक आवक  
शतकीर्त्ति दसमो जण ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्य  
कीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकषाय  
जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निर  
मम देव सुलसा कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥  
समाध जिन सतरमो आवका रेवती, अठारमो शदालजीव संवर  
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीव  
ते विजय जिन बीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इठवीसमो जीव नारदतणो,  
देव बावीसमो अंबन आवक जण ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत  
वीरज नमो, स्वातबुधजीव ते जइ चौवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम  
चौवीस जिन जाणिया, प्रवचन नारउदारथी आणिया ॥ केइ पर-  
सिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कह्या, साख अनुसारथी साचकर सरदह्या ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहालो ए देशी ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर  
शुगमंधिर बाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु  
रुषजानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंडानन  
चंडबाहुजी, जुजंग ईश्वर नेमि जाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा  
जड नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीदीपमे विचरे आज ए, नांम  
लिवां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

ब्यार तीर्थकर सासता, इणहिज अजिधान ॥ रुषजानन चं-  
जानन वारिषेण वर्द्धमांन ॥ ब्यार० ॥ ए ॥ अठ कोमि छप्पन्न  
लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे ठयासी देहरा, त्रिहुं लोक मज्जार  
॥ ब्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोमिया, बिंब भ्रेपन लाख ॥  
सहस्र अठावीस ब्यारसै, अठयासी जाल ॥ ब्यार० ॥ ११ ॥ विज्जू  
जिणवर नांम ए, समरया सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम  
कित सुद्ध आय ॥ ब्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम भ्रिण चोवीसी वीस विहरमाण चक्र जिणवर सासता,  
संयुत्ता सतरैसै वयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता  
मणितणी पर प्रबल वंठित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण श्रुद्ध प्रणमै  
सदा जिनचंड सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री ठिन्नूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिधाय लि० ॥

जग चूमामणिज्जुन, नसजो वीरो तिलोय सिरि तिलउ ॥  
एगो लोगाइच्चो, एगो चस्कू तिहुअणस्त ॥ १ ॥ संवच्चरमुसज्ज जिणो,  
बम्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जए ऊए नव  
माणेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोयताहो, विसइइ बहुचाई असरिसज

एतस्स ॥ इयं जीयेतकराई, एतं स्वमा सबसाद्वृणं ॥ ३ ॥ न चइ  
 ऊइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं  
 वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणउ, पढम  
 गणदरो समत्त सुवनाणी ॥ जाणंतो वि तमउं, विम्बिय हियउ  
 सुणइ सबं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इहंति ॥  
 इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउमेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ जइ  
 सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जइ चंदो ॥ जइय पयाण  
 नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति मदीपालो, न  
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउं काउं, विहरंति मुणी  
 तदा सोवि ॥ ८ ॥ पमिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को  
 ॥ गंजीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्तावी  
 सोमो, संगहसीलो अज्जिगहमई य ॥ अविकल्लणो अचवलो, पसं  
 तहियउ गुरु दोई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं  
 पइं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयत्तं ॥ ११ ॥  
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयक्का सहस्स वंदेहिं ॥ तइवि न करे इ  
 माणं, परिय उइ तं तदा नूणं १२ ॥ दिण दिस्सियस्स वमग, स्स  
 अज्जिमुहा अऊचंदणा अऊ ॥ नेउइ आसणगइणं, सो विणउं सब  
 अऊाणं ॥ १३ ॥ वरसत्तय दिस्सियाए, अऊाए अऊदिस्सिउं साहू ॥  
 अज्जिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो  
 पुरिसप्पज्जवो, पुरिसव रदेसिउं पुरिसजिओ ॥ लोएवि पइ पुरिसो,  
 किंपुण लोशुत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाइणस्ससरस्सो, तइया वाणा-  
 रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥  
 तइ वि य सारायसिरी, उल्लट्ठंती न ताइया ताहिं ॥ उयरडिण  
 इके, ए ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म  
 ऊउं इइ समत्त घरसारो ॥ रायपुरित्तेहिं निऊइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नहिं ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सस्किर्यं  
 सुकयं ॥ इह जरहचक्रवट्टी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वैसो वि  
 अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं  
 न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कइ वेसो, संकइ वेसेण दिस्सिअ  
 मिअइ ॥ उम्मग्गेण पसंतं, रक्कइ राया जणवत्तं य ॥ २१ ॥ अप्पा  
 जाणइ अप्पा, जहहिअ अप्पसस्किअ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तइ,  
 जइ अप्पसुहावइ होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ  
 जेण जेण ज्ञावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुइ बंधए कम्मं ॥  
 ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविअमिअ ॥ संव  
 च्चरमणसीअ, बाहुबली तइ किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग  
 प्पिय चिं, तिएण सच्चंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइ गुरु  
 अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणीअ गविअ निरवणा  
 मो ॥ साहुजणस्स गरहिअ, जणेवि वयणिज्जयं लइइ ॥ २६ ॥  
 ओवणा वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु वकेइ बुझंति ॥ देइ खणपरिहाणी,  
 जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण  
 वासीवि परिवसंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥  
 ॥ २८ ॥ कहंतं जन्नइ सुक्कं, सुचिरेण वि जस्स उक्कमद्धिहियेण ॥  
 जं च मरणा वसाणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह  
 स्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुअई कोई ॥ जइ बंजदत्तराया, उदाइनिव  
 मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिचत्ताइ रायलब्धीए ॥  
 जीवासक्कम्म कलिमल, जरिय जरातो पसंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तू  
 णवि जीवाणं, सउक्करा इति पावचरियाइ ॥ जयवंजा सा सासा,  
 पच्चाएसो हु इशमो ते ॥ ३२ ॥ पन्निवज्जिअण दोसे, नियए सम्मं  
 च पायवनियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥  
 इति पोसइ सिखा० ॥

॥ अथ राईसंधारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिद्दी निस्सिद्दी नमो खमासमणानं, गोयमाईणं ॥  
 महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिन्नंतं ३, कदियें. अणुजाणह जि  
 ठिजा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं, मंमिअसरोरा ॥ बहु  
 पणिपुन्ना पोरिसि, राईसंधाराए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधारं,  
 बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुकुरु पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जाए  
 जूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवटंतेय काय पमिलेहा ॥ दवाई  
 उवन्नं, कसासनिरुत्तणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमानं, इमस्स  
 देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सबं तिविहेण वोरिरियं  
 ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा जस्काण परपरीवानं ॥ अरइ  
 रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्चत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंसु, स्कम  
 ग्ग संसग्ग विग्घ जूआइं ॥ डुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावघाणाइं  
 ॥ ६ ॥ एगो हं नच्चिमे कोइ, नाइमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण  
 मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासन्न अप्पा, नाण  
 वंसणसंजुन्नं ॥ सेसा मे बाहिरा ज्ञावा, सव्वे संजोगलस्सणा ॥  
 ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुक्कपरंपरा ॥ तम्हा संजोग  
 संबंधं, सबं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावजीवं  
 सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयस्सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥  
 चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि  
 पन्नतो धम्मो मंगलं; चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा  
 लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ च  
 त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव  
 ज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥  
 अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मच्च देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ता  
 णं, वोसिरामिति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ



देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥ आ  
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,  
 वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवद्याया मंगलं मझ, उवद्याया मझ  
 देवया ॥ उवद्यायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ४ ॥ सा  
 हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,  
 वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किं सत्त  
 जोणि लस्कान ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लस्कान ॥  
 ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ ति  
 रिएसु हुंति चउरो, चउदस लस्का यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व  
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वज्जुएसु, वेरं मझं न  
 केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंठिअं सम्मं ॥  
 तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा  
 विअ मझ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणह,  
 मझह वेर न जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज  
 जमंतु ॥ ते मझ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति  
 संधारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सधाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोलियां महा  
 पाप रे ॥ वयर विरोध बाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय  
 बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुस्हे रे, पगमा बलती  
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगमां रे, कहो केम ऊ  
 जला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,  
 निंदानी मूको परी टेव रे ॥ ओमे घणे अवगुणें सहु जरचां रे,  
 केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 आये नारकी रे, तप जप कीयुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो



आपणी रे, जेम नुटकवारो आय रे, ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण प्रदजो  
सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो  
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली जाल अपार रे ॥ सु  
जाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैरअझार रे  
॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परि  
माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो  
राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक  
पासैं आय रे ॥ सु० ॥ ऊनी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप  
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊजा  
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम  
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बांढयो हुवे रे लाल,  
सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजालजो रे  
लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेढी आग  
में रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलगुं  
जरयो रे लाल, जीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम  
वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊ  
तरी रे लाल, साख जरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत स  
हुको थयां रे लाल, सघले थया जठरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम  
खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग  
मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ क  
हे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥  
॥ ९ ॥ इति सीतासती सिधाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिधाय ॥

॥ श्रेणिक रघवानी चढ्यो, पेखियो मुनी ए केत ॥ वर ह  
पकाते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं  
रे अनाथी निर्ग्रेय ॥ तिलमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए  
आंकणी ॥ इण कोसंबी नगर वसे, मुऊ पिता परि गल धन ॥  
परवार परे परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ  
क दिवस मुऊ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु  
जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी  
गुण मन नरमी, नरमी अबला नार ॥ कोरमी पीमा में सही,  
नहिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवद बुझाझ्या,  
काधला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह  
नबि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेउं सं  
जमजार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥  
॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांदे को केहनो नहिं, ते जणी हुं रे अनाथ ॥  
वीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे सुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥  
॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे  
णिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥  
॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि समय  
सुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिधाय ॥

॥ कर पक्रिमणो जावसुं, दोय धनी शुन जाण ॥ लाल  
रे ॥ परजव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥  
कर पक्रिमणु जावसुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे  
णिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंमी सोना तणी, दीये दिन  
प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते बली, एम

दीये इव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लंगार  
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसब्बो, जलुं वंदन दोय  
 दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संजारी रे आपशां, ते जव कर्म नि  
 वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर कानुसग्ग शुजध्यानथी, पच्च  
 स्काण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सद्या ये ते वज्जो, टालो टालो  
 अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीये  
 अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, सुगति तणुं ए  
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिधाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठेने समरिजे हो ॥ जवियण मंगलिक सरणा चार  
 ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियमे रा  
 खिजे हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ ज० ॥  
 केवलि ज्ञाख्यो धर्म ॥ ए चारु जपतां अकां हो ॥ ज० ॥ टूटे  
 आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारुं सुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए चारु  
 मङ्गलिक ॥ ए चारुं उत्तम कह्यां हो ॥ ज० ॥ ए चारुं तदतीक  
 हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ ज० ॥ समरुं वरुं  
 वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघन निवारणहार ॥  
 ॥ हि० ॥ ४ ॥ साकण साकण जूतमां हो ॥ ज० ॥ सिंह चित्ताने  
 सूर ॥ वैरी दुसन चोरटा हो ॥ ज० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥  
 ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर  
 जव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ रा  
 खो सरणाकी आसता हो ॥ ज० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ वरते  
 आनंद सुख सही हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥  
 निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी  
 नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोम कल्याण ॥ शुद्ध  
 मन करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चै पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥  
 ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर  
 णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मऊार ॥ हि० ॥  
 ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥  
 चोथमछ्छ इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥  
 ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

## ॥ अथ सिंहाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुषीनी सङ्गाय ॥

॥ ढंढण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूं वा  
 री लाल, अजिग्रह लीधो एहवो हूं० ॥ लेख्युं शुद्ध आहार रे ॥ हूं०  
 ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हूं० ॥ न मिलै शुद्ध आहार  
 रे ॥ हूं वा० मूल नलै अणसूऊतो हूं० ॥ पंजर कीधो गात रे हूं०  
 ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूवै श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सहस्र अढार रे ॥ हूं  
 वा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हूं० ॥ मुऊनें कहो विचार रे ॥ हूं वा०  
 ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हूं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद  
 रे हूं वा० ॥ कृष्ण ऊमाह्यो वांदवा हूं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हूं  
 वा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिढ्या हूं०, बांधा कृष्ण  
 नरेस रे हूं वा० ॥ किणही मिछ्यात्वी देखने हूं०, आयो जाव वि  
 सेसरे हूं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुऊ घर आवो साधजी हूं०, द्यो मोदक ठै  
 शुद्धरे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरथा हूं०, आया प्रजुजीने पास रे  
 हूं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुऊ लवधै मोदक मिढ्या हूं०, कहोने तुम्हे  
 किरपाल रे हूं० ॥ लवध नही बह्व ताहरी हूं०, श्रीपति लवधि  
 निधान रे हूं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ एलेवा जुगतो नही हूं०, च्याढ्या परठ-

न काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे आयने हूं० बूरे करम समाज रे  
 हूं० ॥ ७ ॥ ढं०॥ आंणी चढती जावता हूं०, पांभ्यो केवल नाश रे  
 हूं० ॥ ढंढण रुषि सुगते गया हूं०, कहे जिनदर्ष सुजाण रे हूं०  
 ॥ ए० ॥ ढं० ॥ इति ढंढण रुषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नारुषी सिझाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अभिय समाणी मोरा नंदन,  
 मनमै तो मांनी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना,  
 धरमनो रागी मोरा नंदन, मादरो तो मनमो रे किम परचाबसुं  
 ॥ २ ॥ दस दिस्ती दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनु  
 मति देतां रे जीन वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तासै नारी हो धन्ना,  
 अतहि पियारी मो० ॥ वाली तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥  
 बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले  
 रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर संदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो० ॥  
 कोम बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय  
 पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेख्यो रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ ब्रत  
 अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही ठे रे साधु क  
 हावणो ॥ ८ ॥ घर ९ जिहा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥ कदाणी  
 रे रहणी नही ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आ  
 गम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग ठे ॥ १० ॥  
 वनवासै रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ कोमल  
 केसा रे लोच कसावणो ॥ ११ ॥ तावो तें जारख्यो हे अम्मा,  
 जूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥  
 सुख अजिलाषी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग  
 जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमार  
 थि मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो परखदा सहु सुण्यो ॥ १४ ॥

मे इम जाण्यो हे अम्मा, वीर वखाण्यो मोरी अम्मा, ए धन जो-  
वन आयु थिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढोल न कीजे  
मोरी अम्मा, जो खिल आवे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-  
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो  
रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ ठठर पारणे हे अम्मा, विगय निवा-  
रण मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-  
जम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ  
रुना जणै ॥ १९ ॥ संजम पाढ्यो हे अम्मा, नव पखवामे मोरी  
अम्मा, मास संधारे सरबारथसिद्ध लेह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना  
कृषि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिंहाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सबला ॥ कर्म  
तणे वस सुख दुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म  
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने कर्म अटारया, वरस दिव  
स रह्या जूखा ॥ वीरने बारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे  
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सदस सुत मारया एकण दिन, जोष  
जुवान नर जैसा ॥ सगर हुआ महा पूत्रनो डुखियो, कर्मतणा फल  
एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सदस देसारे साहिब, चक्री  
सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म कीयो तनु ठार रे  
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म इवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा राणी ॥  
बारे वरस लग माथे आयो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥  
॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्युं  
चहुटामे वेची, कर्मतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे  
आठमो चक्री, कर्म सायर नाख्यो ॥ सोले सदस जह उजा देखे,  
पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे



बारमो चक्री, कर्म कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो जविप्राणी,  
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न कोइ जा  
 दवरो साहिब, कृष्ण महाबल जाणी ॥ अटवी मांदि मूँठ एकलमो,  
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांरुव पांच महा  
 जूझारा, हारी डोपदा नारी ॥ वारे वरस लग वन रमवनिया, ज  
 मिया जेम जिख्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस जुजा दस  
 मस्तक हूँता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलमै जग सहु नर जीत्या,  
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम  
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख डुख पांम्या,  
 वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी  
 श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ दरणी नरने कर्म धकाया ॥  
 करमसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ तत्तिव तिरिमणी डौ  
 पदि कहियै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी,  
 पूरव कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे  
 स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकमो, कर्म नाख्यो  
 ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, क  
 रता पुरुष कहावै ॥ अहनिस महिल मसांणमे वालो, जिहा जो  
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी,  
 रात दिवस रहे अटतो, सोल कलाससीधर जग चावो, दिन २ जाये  
 घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंम्या नर कर्म,  
 ज्ञाज्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिहरष कर जोमीने विनवै, नमो २  
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंहाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिंहाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार वि  
 चेकी ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै डुक्क अपार विवेकी ॥



॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पमयांथकां, पामव पांच  
 प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पज्यो, खोइ सहू रा  
 जरि० वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस जकण अवगुण घणा, करै  
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गइ  
 निरधार ववेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तांजे मदिरा पांन विसन  
 तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ द्वीपायण रिषि दहव्यो जा  
 दवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वे  
 स्याधर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो  
 कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेमे  
 कुविसन साचवै, प्राणी हणिये प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे  
 णिक नृप गयो पहली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ ठेठे  
 चोरीने विसने करी, जीव लहे डुक्क जोर वि० ॥ मुंजदेव रा  
 जाये माखियो, चावो हुंमक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय  
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो  
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥  
 इम जाणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण  
 जव परजव आणंद अतिघणा, कहे धम्मसी सुखकार ॥ वि० ॥  
 ॥ सा० ॥ ए ॥ इति सात विसनकी सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिझाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथा॥ राति वन  
 मांहि कानुसग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखा  
 णी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जाण ॥ चेमाराजानी  
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत  
 ंठार सबलो पमे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे  
 वस्यो जी ॥ सौमि बाहर रह्यो दाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ जबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो दुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण  
 वस्यो जो ॥ श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेजर परो  
 जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ जगवंत सांसो जाजियो  
 जी, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां  
 जी, पैसतां नगर मजार ॥ धुआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे  
 अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तांतनो वचन पाली करी जी, व्रत  
 लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो जवत  
 णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिझाय ॥

॥ जूखो मनजमरा कांइ जमै, जमियो दिवस ते रात ॥  
 मायारो लोत्री प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुं  
 ज कांखो काया कारमी, जेदना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे  
 नही, निरमल राखो रे मन ॥ २ ॥ जू० ॥ केहना ठोरु केहना  
 वाढरु, केहना माथे नै बाप ॥ उं जीव जासी एकलो, साथे पुन्य  
 नै पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्था तो मूंगर जेवनी, मरवो पगला रे  
 देठ ॥ धने संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू०  
 ॥ लखपति ठत्रपती सब गए, गए लाखों के लाख ॥ गरब करी  
 गोखै बैठता, जंए जल बल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजल  
 डुख जरयो, तिरबो ठे रे जेह ॥ बीचमें बीह सबलो अठै, करमें  
 वाय ने मेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो  
 पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वांणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार  
 ॥ ७ ॥ जू० ॥ मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो इतो न आय ॥  
 वस्त्र विना जाय पोदवो, लखपति लाकम माय ॥ ८ ॥ जू० ॥ मह  
 मंद कहे वस्त वीरीयै, जे कुठ आवे रे साथ ॥ अपणो लाज उवा  
 रियै, लेखो साहिव हाथ ॥ जू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिंहाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, जरत बाहूबल फूजे रे ॥ मूंठ  
उपामी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूजे रे ॥ १ ॥ वीरा म्दारा गजध  
की ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी ज्ञासै रे ॥ रुपन जिनेसर मोकली, बा  
हूबलने पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढयां केवल न होई रे ॥  
वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, बलि आयो अजिमांनो रे  
॥ लघु बांधव बांदू नही, कानसग रह्यो शुच ध्यानो रे ॥ ३ ॥  
वी० ॥ वरस दिवस काससग रह्यो, बेलनियां बीटाणो रे ॥ पंखी  
माला मांनिबा, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी व  
चन सुण्या इसा, चमक्यो चित्त मजारो रे ॥ हय गय रथ में प  
रिहरया, पिण नवि मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन  
चालियो, मूक्यो निज अजिमांनो रे ॥ पांव उपामी बांदिवा, ऊप  
नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखवा, बाह  
बल रुषिरावा रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंदे  
पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिंहाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाड्या गोवरी, तमके दाजे सीसो जी ॥  
पाय उवराणा रे बेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर०  
१ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊन्नो गोखने हेगो  
जी ॥ खरै डुपहरै रे दीगो एकलो, मोही माननी मीगो जी ॥ २  
॥ अ० ॥ वयण रंगिले रे नयणे वेधियो, रुषि ग्रंथयो तिण वारो  
जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, उरिषि तेनी आंणो जी ॥  
३ ॥ अ० पावन कीजे रुषि घर आंगणो, बहिरो मोदक सारो जी  
॥ नवजोवन रस काया कांड दहो, सफल करो अवतारो जी ॥  
४ ॥ अ० ॥ चंडावदनी रे चारित चूक्यो, सुख बिलसै दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगवै, तव दीगो निज मातो जी ॥  
 ५ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियै२ मजारो जी ॥ क  
 हि किए दीगो रे माहरो अरणलो, पूवै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥  
 अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिया  
 रो जी ॥ धिग्२ पापी रे माहारा जीवने, एह में अकारंज धारयो  
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिद्धा उपैरे, अरणक अणस  
 ण कीधो जी ॥ सनयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल  
 सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिंज्ञाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापूत्र सिंज्ञाय लिख्यते ॥

नांम इलापुत्र जांणियै, धनदत्तसेवनो पूत॥नटवी देखी रे मो  
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न बूटे रे प्राणिया, पूरव नेह  
 विकार ॥ निज कुल ठंकी रे नट अघो, नाणी सरम लिगार ॥  
 ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आघो रे नाचवा, उंचो वंस विवेक ॥ तिहां  
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय  
 पग पहरी रे पावनी, बस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतौ,  
 खेले नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजाये रे नाटकी, गांवे किन्नर  
 साद ॥ पायतल घूघर घसघसै, गालै अंवर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥  
 तिहां राय चिते रे राजियौ, लुरधो नटवी रे स.प्र ॥ जो पैसै नट  
 वो रे नाचतौ, तो नटवी मुऊ दाय ॥ क० ॥ ६ ॥ दान न आपै  
 रे झूपती, नट जाणै नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछै  
 मुऊ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियौ, धन२ साधु  
 नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवना, मन आययो वैराग ॥ क० ॥  
 ॥ ८ ॥ संवरजावै रे केवली, ततखिण कर्म खपाय ॥ केवलि मदि  
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिद्धाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै  
 रागीयौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो मुऊं आज ॥  
 संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वढ तूं केणे ज्ञोले  
 व्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ज्ञणौ किए दूहव्यो रे, हूं नवि  
 धुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस ज्ञार रे  
 जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदें हूं रुढ्यो जी, सहिया डस्क  
 अणंत ॥ सासोश्वासैं जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥  
 ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अठै जी, जोवन जरयो  
 रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुख अपार रे  
 जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डस्क न  
 सहणौ जाय ॥ वीरजिनंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कांन हे  
 मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वढ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस  
 आहार ॥ जुंइ पाला नित हीमणो जी, जाणसि तुऊ कुमार रे जाया ॥  
 हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत जन्म्यो जी, धर्म डहेलो होय ॥  
 जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायमी ॥  
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो  
 वनजर ठोरु नही जी, कांइ मूको निरंधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सैजमी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि  
 सुंहाली देहमी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरअ पखे सहु कोय ॥ विषय  
 विषम महुरा कह्या जी, किम जोगविये सोय हे मायमी ॥ अ० ॥  
 १० ॥ खमिश् मान्न पसाय करी जी, में दीधुं तुऊ डस्क ॥ दिन आदेस  
 जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें ड्युं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥  
 तन फाटे लोयण ऊरे जी, डख न सहणा जांइ ॥ वढ सुखी हुवो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगवै, तव दीगो निज मातो जी ॥  
 ५ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियै२ मजारो जी ॥ क  
 हि किण दीगो रे माहरो अरणलो, पूवै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥  
 अ० ॥ उतर तिहांशी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवा  
 रो जी ॥ धिग्२ पापी रे माह्रा जीवने, एह में अकारज धारयो  
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिद्धा नपरै, अरणक अणस  
 ण कीधो जी ॥ सज्जसुंवर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल  
 सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिंज्ञाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिंज्ञाय लिख्यते ॥

नांम इलापुत्र जांणियै, धनदससेवनो पूत ॥ नटवी देखी रे मो  
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न बूटे रे प्राणिया, पूरव नेह  
 विकार ॥ निज कुल वंसी रे नट अयो, नाणी सरम लिगार ॥  
 ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आया रे नाचवा, उंचो वंस विवेक ॥ तिहां  
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय  
 पग पहरी रे पावनी, वस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतो,  
 खेले नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजाये रे नाटको, गांवे किन्नर  
 साद ॥ पायतल घूबर घमघमै, गांजै अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥  
 तिहां राय चिंते रे राजियौ, लुखधो नटवी रे स. अ ॥ जो पमै नट  
 वो रे नाचतो, तो नटवी मुज हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दान न आपै  
 रे झूपती, नट जाणै नृप बात ॥ हूं धन वंतू रे रायनो, राय वंठै  
 मुज घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांशी मुनिवर पेखियौ, धन२ साधु  
 नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवना, मन आयो वैराग ॥ क० ॥  
 ॥ ८ ॥ संवरजावै रे केवली, ततखिण कर्म खपाय ॥ केवलि मदि  
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥



॥ अथ मेघकुमार मुनि सिद्धाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै  
 रागीयौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो मुज आंज ॥  
 संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वढ तूं केणे ज्ञोव  
 व्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौ किए दूहव्यो रे, हूं नवि  
 दुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस जार रे  
 जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुढ्यो जी, सहिया डस्क  
 अणंत ॥ सासोश्वासैं जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥  
 ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ दिवणां तूं बालक अठै जी, जोवन जरयो  
 रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुख अपार रे  
 जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डस्क न  
 सहणौ जाय ॥ वीरजिनंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कांन हे  
 मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वढ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस  
 आहार ॥ जुंइ पाला नित हीमणो जी, जाणसि तुज कुमार रे जाया ॥  
 हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत जन्मो जी, धर्म डहेलो होय ॥  
 जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायमी ॥  
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो  
 वनजर ठोरु नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजमी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि  
 सुंहाली देहमी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहू कोय ॥ विषय  
 विषम महुरा कहा जी, किम जोगविये सोय हे मायमी ॥ अ० ॥  
 १० ॥ खमिश् मान पसाय करी जी, में दीधुं तुज डस्क ॥ दिन आदेस  
 जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें द्युं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥  
 तन फाटे लोयण ऊरे जी, डख न सहणा जाइ ॥ वढ सुखी हुवो



तिम करो जी, में दीधो आवेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १९ ॥  
 मणि मांणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी  
 आठै रमे जी, दिव अह्न कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ २३ ॥  
 कुमर जणै सुकुली थिया जी, बहु डुख ए संसार ॥ नेह तुमारो  
 जांणियो जी, जो ल्यो संयमजार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ  
 सिविका तब सजी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उ  
 छव करै जी, चारित्र ल्यो रिविराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम  
 जांणी वैरागियौ जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोनी पूनो जणे जी,  
 ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाई निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती भिगसर मास, पडिती परुवा तीन विमास ॥  
 चौथी परुवा वदि वैसाख, ब्यार पुहर असिझाई ज्ञाख ॥ १ ॥ जां  
 लगि होली जूमे वार, धुंवर परुती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो  
 जय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने  
 केस पाखांण, वरसै तां लग असिझाई जांण ॥ जूजै मद्ध मांहोमांहि  
 जांम, तां लग असिझाई तिण ठांम ॥ ३ ॥ जूपति परजव पोहतो  
 होय, जां लग पाट न वैसै कोइ ॥ तां लग बोली बै असिझाई, स  
 हुको सरदहज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक  
 पोहर असिझाई आय ॥ निवल मेह तिम जांणो सही, आठ पहर  
 सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पडिवा लग  
 असिझाई वकी ॥ पडिवा बीज तीज चांदणी, समीतांज असिझाई  
 गिणी ॥ ६ ॥ आझ नक्षत्र न लागै जांम, गाज बीज असिझाई ताम ॥  
 गाज बीज जो हुवे अकाल, असिझाई बे पुहर संजाल ॥ ७ ॥ चंद्रमहण  
 असिझाई जणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारै आठ वि  
 चार, सूर्यमहण पोहर जघन्यै बार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखै जविषण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ,  
 आठ पुहर असिजाई होय ॥ ९॥ वसतीथकी सातां घर मांहि, नर  
 विहमै अहोरति असिजाई ॥ पुरुष पज्यो होय मृतकअनाथ, तां  
 असिजाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, बेटी  
 आठ दिवस विहात ॥ सो कर मांहि कही असिजाई, नारी रूतु दिन  
 तीन कहाइ ॥ ११ ॥ इमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पमै तिन  
 गाइ ॥ असिजाइ सो कर मांहि, त्रिएह पोहर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥  
 असाढै चौमासै दिने, पन्तिकमणा ठायांथी गिएँ ॥ बार पोहर  
 असिजाई कही, काती चौमासै इण पर सही ॥ १३ ॥ इण पर  
 असिजाई बै बहू, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कही  
 संखेवि, हरखै पय प्रभू कीजै देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकर जेह,  
 च्यार मावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अकरै, तब कवि नांम  
 कहियो इण परै ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जि शासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व  
 ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सहि पालो  
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित  
 शुद्ध पालौ, टालो दोषदया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,  
 च्यार सिक्काव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो जवि  
 थण खरली ॥ दाखविए गुण परह केरा, दोष सम काढौ बली ॥  
 ॥ २ ॥ मन काढो रे लोन्नी नर कूमौ करौ, जांणी सावद्य रे अ  
 नक बावीसे परिहरौ ॥ वरु पीपल रे पिलखण नैं कठुंबरो,  
 ऊंवरफल रे रखे तुमें जकण करो ॥ ३ ॥ उछालो ॥ रखे  
 तुमें जकण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम  
 करदा ठंमि परहा, दोष मूल साटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र

यणीजोजन, प्रथम दुरगति वारणौ ॥ मम करौ व्यालू अति अ  
 सूरौ, रविन्दय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब  
 नाम ए, काचागोरस रे मांदि कबोल न जिमिये ॥ एह बैंगण  
 रे तुष्ट फला सवि वाम ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविखंम  
 ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंमए व्रत नियम लेइ, बेइ फल  
 व्रत जंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज जोजन, चलित रस होय  
 जेहनो ॥ संवर आणी अन्नक ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥  
 गुरु वयण विगतैं वली पूव्यौ, अनंतकाय वत्तीस ए ॥ ६ ॥  
 अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु जहण रे पातिक बोड्या  
 वै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आहुं वली ॥ वजचूरण रे कंद  
 बहूं कुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै  
 चतुर नर आंखिली ॥ रतालू पिंमालू अंग थोहर, सतावरी लसण  
 कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली ॥ टुकवट्टलौ, पड्यंक  
 सूरण वाल बीली मौथ नीली सांजलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे  
 कूपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी  
 रे जमरवृक्षनी ठालमी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलमी ॥ ९ ॥  
 वेलमी तानु ताजा खिलोमा ने खरसुआ, जूय जूंफोमा उत्रा  
 कार जाणौ नील फल सेवे जूआ ॥ वत्तीस बोल प्रसिद्ध बोड्या  
 लक्ष्मीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी  
 ते सवि सुख लहे ॥ २० ॥ इति बावीस अन्नक सिंजाय सं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सिंजाय ॥

॥ संवेगरसमे जीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग  
 टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धनं गजसुक  
 माल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रज्ज  
 पास संयम आदर्यौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा  
 यवा अलजयो, परुषैन दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो,  
 पिण दिन जावे रे तो ठेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय  
 कानसग्ग रह्यो, तिण सांजि प्रचुने पूठ ॥ मुनिवर अवर इम चिं  
 तवै, एहनै साची रे ठै मुंह मूंठ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुज सुता विन  
 अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगमी रचि सिर ऊपरै,  
 चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ  
 धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमै गुणगारें चढ्यो, मु  
 निवर पांसी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने अई,  
 ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समै, पिण नवि देखे रे  
 प्राणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूठतां प्रचु मांमी करी, रातिनी वी  
 तग वात ॥ हरि देखी हियनो फूटसी, तेणें कीधो रे रुषिजीनो  
 वात ॥ या० ॥ ८ ॥ नयसम सुधारस सेवतां, पांमियो अवेचलरा  
 ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रणचंद्र सिधाय ॥

॥ राज ठंमी रलियामणो रे, जांणी अशिर संसार ॥ वैरागै  
 मन वालियो, कांइ लीधो संजम जार ॥ प्रणचंद्र प्रणमूं तुमारा  
 पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे कानसग्ग रह्यो  
 रे, पग ऊपर पग ढाय ॥ बांह बेजं जंची करी, सूरज सांमी इष्टी  
 लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन  
 जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध२ खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डुरमु  
 ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां  
 मियो, जीव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रभू पूठियो रे,  
 एहनी सी गति आय ॥ जगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नर-  
 के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूठियो रे, सरबारथसिद्धि वि

मांन ॥ वाजी देवनी डुंडुनी, मुनि पांश्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥  
 ॥ ६ ॥ प्रणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावारना शिष्य ॥ रिद्ध  
 रष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उत्पत्ति सिधाय ॥

॥ उत्पत्त जोय जीव आपणी, मनमांदि विमास ॥ गरजा  
 वासे जीवमो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाजी  
 तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नामी ठे  
 दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥  
 आंवतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर  
 श्रवे तिण मांसग्री, रूतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,  
 तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अघान पवने करी, वासित  
 डुरगंध ॥ तिण आनक तूं ऊपनो, हिव हूड अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥  
 नामी वांसतणी जरिये घणी, रूघाल ॥ ताती लोह सदाकतैं, जाले  
 ततकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, ठे नव लख जीव  
 ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी  
 मिढ्यां, पांचेडी जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥  
 उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टी वार ॥ जीव ज  
 घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव अघन्य  
 तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ वार वरसनी श्रिति तिहां, उत्कृष्टी  
 जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरजे कोइ जीवमो, जंपै जग  
 दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥  
 महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां  
 पठै, आयै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै,  
 तिम वांमे नारि ॥ बीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥  
 १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणौ इहां, आयो गरजावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ उ० ॥ १४ ॥ आठ व  
 रस तिर्यच रहे, उत्कृष्ट काल ॥ गरजावासै जोगव्या, इम बहु  
 जंजाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ कर्मण काये कर लियो, पहिलो आहार  
 ॥ शुक्र अने स्त्रोणिततणो, नही ऊठ लिगार ॥ उ० ॥ १६ ॥ पर-  
 जापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा-  
 रिक मीस ॥ उ० ॥ १७ ॥ पवन अठै उदरै तिको, उपजायै अंग  
 ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ उ० ॥ कठन  
 पणै पृथ्वी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचभूत सरीरमें, इम करै प्र-  
 कास ॥ १९ ॥ उ० ॥ बारै मधुरत तां पठै, विलसै नर नारि ॥ गर-  
 जतणी नतपति तिहां, नही अवर प्रकार ॥ २० ॥ उ० ॥ कलल हु-  
 वै दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदथी पेसी वधै, घन मांस  
 कहात ॥ २१ ॥ उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमतालीस टांक  
 ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सु-  
 थिर मास बीजे हुवै, द्विज तीजे मास ॥ कर्मतणै वसि ऊपजे, मा-  
 ता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चौथे मासै मातना, प्रणमै सहु अं-  
 ग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ उ० ॥ पि-  
 त्त रुधिर ठठे पमै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे-  
 सी सय पंच ॥ २५ ॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोमि  
 ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोमि ॥ २६ ॥ उ० ॥ आठमें मा-  
 सें नीपनो, इम सकल सरीर ॥ उंधै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥  
 २७ ॥ उ० ॥ सोणित शुक्र सलेशमा, लघु ने वरुनीत ॥  
 वात पित्त कफ गरजथी, आयै नर नीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ मात-  
 तणी सूँटि लगै, बालकनो नाल ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल  
 ॥ उ० ॥ २९ ॥ जननी ढ्ये आहारते, जाय नामोनाम ॥ रोम इंडी नख  
 चख वधै, तिम मीजी ने हाथ ॥ उ० ॥ ३० ॥ सबहु अंगे ऊल



स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार को नही, गरजै सुविचार ॥  
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किय जीवने, आये ज्ञान विजं  
 ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिय ज्ञान प्रसंग ॥ ३० ॥ ३२ ॥  
 कटक करे वैक्रियपणें, जूझी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी  
 करी, मरी सुर पिय आय ॥ ३० ॥ ३३ ॥ जंघै मुख गोमां  
 हिये, सहितो बहु पीर ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी  
 जीव ॥ ३० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिकै, ऊपजै आ  
 धान ॥ अथवा विहुं नारी मिल्ह्यां, कह्यो गरजविधान ॥ ३० ॥  
 ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी दुखावास ॥ पुन्य करी तिम  
 नीकलूं, नाउं गरजावास ॥ ३० ॥ ३६ ॥ जंठ कोमि चांपे सुई, कोइ  
 समकाल ॥ तिणथी गरजै अठ गुणौ, सहे वेदन बाल ॥ ३० ॥  
 ॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख आय ॥ माता सूती  
 ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ ३० ॥ ३८ ॥ गरजथकी दुख लख  
 गुणौ, जांमैं जिण वार ॥ जन्म थयां दुख बीसरै, धिग्श मोह वि  
 कार ॥ ३० ॥ ३९ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥  
 पिंम अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ ३० ॥ ४० ॥ तु  
 रत रुदन करतो अको, जांमैं जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवै,  
 पीयै दूध तिवार ॥ ३० ॥ ४१ ॥ दिनश दीसे दीपतो, करै रंग अपा  
 र ॥ ब्राम कोरु माता पिता, पूरै सुविचार ॥ ३० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र  
 इग्यारे नारिनें, नव नरने जांण ॥ रात दिवस बहिता रहै, चैतो चतुर  
 सुजाण ॥ ४३ ॥ ३० ॥ सात धातु साते त्वचा, वै सातसै ना  
 मि ॥ नवसे नामी पिंममें, तिम तीनले हारु ॥ ४४ ॥ ३० ॥ संधि  
 एकसो साठ ठै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै,  
 ढांको ठै चरम ॥ ३० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाव  
 सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोष सेर पुरीष ॥ ३० ॥



॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अठै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्ती  
 स सुलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणथकी  
 यदा, जुंठो अधिको आय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥  
 ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान  
 पान नूषण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै  
 दसके जणयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसकै तेहने, जाग्यो  
 काम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण आनक तूं ऊपनो, तिणमें  
 मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोम ऊपाय ॥ ५१ ॥  
 उ० ॥ पहुंचतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटा पोतरा,  
 परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ ठठे दसके प्राणियो, बले परवस  
 आय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥  
 उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल ज्ञागो बूढो  
 अयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो,  
 खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिर धुलै, करे फोगट वात ॥  
 ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ सालै  
 वचन बहुआंतणो, दिन जुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपज्यो  
 खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल हुकम हाले नही, दीयो परिजन  
 ठेह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुरु मिले, पैसै मुंहमे लाल ॥  
 बेटा बेटा ने बहू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा  
 ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो  
 जिम जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निर  
 मल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥  
 उ० ॥ कोमि रतन कवनी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै  
 पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया  
 कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संज्ञार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमाण ए, ठै लोक महंत ॥  
 जनम मरण कर फरसियो, ते बार अणंत ॥ ६३ ॥ उ० ॥ आप  
 सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचै,  
 सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां  
 लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगे, होय साहसधीर ॥  
 ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाधो गुरु संयोग ॥  
 अंगथकी आलस तजो, करो सुरुत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० श्रीनमि  
 रायतणी परै, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ  
 किरारो नांहि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ जोग संयोग तजी सहू, थया जे  
 अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥  
 सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति  
 वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलबेयाली अठै, एह  
 नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनें कह्यो, नही जूठ लिगार ॥ ७० ॥  
 उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांजलि लिये संजमज्ञार ए,  
 परि सिंह केरा सदा पालै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख  
 सकल जोगवि ते लहे जव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीस रंगै इम  
 कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति उत्तपति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिद्या लिख्यतै ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें  
 प्रवृत्ति, यह रसगृहीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोष घनी  
 मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें,  
 कज्जी तूं मिश्रमोहनीमें, कज्जी तूं कामरागमें, कज्जी तो स्ने  
 हरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कज्जी तूं कुगुरुमें, कज्जी तूं कु  
 देवमें, कज्जी तूं कुधर्ममें, कज्जी ज्ञान विराधनामें, कज्जी दर्शन  
 विराधनामें, कज्जी चारित्रविराधनामें, कज्जी मनोदंभमें, कज्जी व

चनदंभमें, कज्जी कायदंभमें, कज्जी हास्यमें, कज्जी रतिमें, कज्जी  
 अरतिमें, कज्जी ज्ञयमें, कज्जी सोकमें, कज्जी दुःखमें, कज्जी  
 कृष्णलेस्यामें, कज्जी नीललेस्यामें, कज्जी कापोतलेस्यामें, कज्जी तुं  
 रुद्धिगारबमें, कज्जी तुं रसगारबमें, कज्जी तुं सातागारबमें, कज्जी तुं मा  
 यासद्वयमें, कज्जी तुं नियाणासद्वयमें, कज्जी तुं मिथ्यादर्शनसद्वयमें,  
 कज्जी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता है, कज्जी तेरे बाहिर कर अ  
 ठारे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा दुष्टी, महा  
 दुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं  
 हीणदृष्टी, अरे तूं अयोद्धा कामका करणहार, रे तूं दुष्ट पापिष्ट जीव,  
 प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामान, अनंतानु  
 बंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोन्नरी चोकनी, विचारा तेरे स्वपी  
 नहीं, गुणगणा तेरा पलटा नहीं, धैर्यगुण तेरे आया नहीं, तृष्णा  
 दाह तेरे मिटी नहीं, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नहीं, दरियाव  
 जेसा कल्लोल तेरे उठल रहा है, तैं जो धर्मक्रिया करता है सो शून्य  
 मनसें करता है, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें  
 करी जो क्रिया सो राख पर लीपणे जेसा है, अरे चेतन ! सोगन  
 नहीं लेवे सो पापी, उर लेकर जांगे सो महापापी, तैं अनंतकाय,  
 अन्नक्ष, शीलव्रत, जरदा, जांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन  
 लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगा, रे चेतन ! तैं पुजलरे  
 वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर,  
 मेरे नवनिधान, मेरे रसकूपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अ  
 मृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाऊं, राजा हो  
 जाऊं, प्रधान हाकम सेनापती हो जाऊं, किसी तरे धन उपार्जन  
 करूं, ये बातें तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणगणवालेकेही लोन्नका  
 त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो कैसें सरै, हे चेतन ! तूं मनमें विचारता

हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुत्र  
 ल, अरे चेतन ! चोरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा,  
 संसारमें न किसीका तूं हे, नहि कोइ तेरा हे, रे चेतन ! तूं  
 तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणो, केइ वखत पूत्र  
 पणो, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसैं ठगकी बेटी  
 नें अपनी मांसे पूठा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण ज्ञो  
 नेगा ? मा बोली-बेटी, करेगा सो जोगेगा, तबतो उसने कहा धिक्  
 हे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,  
 आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका  
 धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, उर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसैं क  
 नएकूं उभाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसैं तें चिंतामणि  
 रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-  
 मंदरी कुगुरुनके उपदेससैं चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म  
 आज्ञाप्रमाण जो था सो तेने खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसैं  
 होय, विष्टामें कमिपणें तें अनंती वार पेदा जया, मानरूपी गज  
 पर बाहुबल चढ़ा उर संज्वलनमान था, उर बाह्मी सुंदरी बहिना  
 जैसी समझाणेवाली थी जब समझै, उर तेरे सो ऐसा मान, अरे  
 चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं जरतमाहाराजा जिणोके  
 केसीक राजरुद्धि सो केसीक ज्ञावना ज्ञावतां, धिःकार राज्यनें, धिः  
 कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोकूं,  
 धन्य श्रीतार्थिकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते हे, धन्य  
 जो सर्वविरती धर्म पालते हैं, धन्य जो दान देते हे, धन्य जो  
 सील पालते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो ज्ञावना ज्ञाते  
 हैं, एसैं ज्ञावना ज्ञावतें जरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन  
 पाया, इस तरें रे जीव तूं उनोही बरावरी मतकर, वहनो तेसठ

सलाका पुरुष चौथै आरेका जीव तें पंचम कालका ज़रतोत्र-  
 का कोरा उनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-  
 ववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों  
 करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गि  
 राया, इग्यारमें गुणठाणोका जीव ज़ुवनजानु केवलीजी, कमलप्र  
 ज्ञाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकुं मिगाय दिया तो तेरी तो  
 विसायतही क्या, आठ करम अछावनही प्रकृती हे प्रज्जु केसें जीता  
 जाय, मोहकर्म पीठै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-  
 की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आझामें रह सदागमसुं परि-  
 चय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकुं पीठी मार, जेसेंतें तिर  
 जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तोने गुप्ते गुप्ता,  
 ठक्कायका पीयर, सात महाज्जयका टालणहार, आठ मदका ज.प-  
 क, नवविध ब्रह्मचर्यको वामका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका  
 उजवालक, इग्यारे अंगका ज़णणेवाला, बारे उपांगका ज़णणेवाला,  
 कुरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि  
 प्रज्जुकी आझा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुजै कब नदै आवेगा, रे  
 चेतन तेरे उदय कहांसैं आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसत्र-  
 ती पाले जिके प्रज्जुजीकी आझा पाले, जिके प्रज्ञात उठ सामायक  
 करे, पम्कमणो करे, देवदर्शन करै, प्रज्जुजीकी द्वादसांगी वाणी  
 सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी  
 पोसा, संध्याकुं देवसी पम्कमणा जिनाझा प्रमाणै प्रभावश्यक कर,  
 मुजेजी कजी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा  
 हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती उदय आयगी, सा-  
 मायक मनसुद्धे करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वां  
 चनेकी खप करो, जेसें जवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण है, नर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप है, तुझे पढ़ने गुणनेकी लगन नहीं, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नहो किया, जो श्रुतज्ञानकी जक्ति करते है उनोको ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती है, केवलज्ञान नर केवलदर्शन पाता है वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका जर्त्तार होता है. दिवस प्रते दै कोई सुजाण सोना खंती लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीया तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन तूं इस जरोसे मत झूल, यह तेरी सामायक वो नहीं, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंडावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो ऐसी है काम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रहै, आरत रौडध्यान मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण ऐसे है अपना पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवम धरै, साचो ओमो आगम जणे, ते सामायक शुद्धे करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपना जला चाहता, वो पराया बुरा या नहीं चाह्या वो तेनें अपने आत्माकाही बुरा चाह्या, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे छाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृपावाद बोल रहा है, तूं अपने आत्माका गुण विचारे तो अवेदी है, अफरसी है, अघाती है, अलेसी है, अविनासी है, तें दिलमें विचारता है यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन है, कोण तेरा सज्जन नर कोण तेरा दुस्मन है, आठ कर्मरूपिया सत्रु है जिनोंको तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल जस्म कर जिस्से तेरी गरज सरे, अहोहो में जव्य हूं अजव्यहूं अथवा डुरजव्यहूं, मेरे संसार पोते वहोत दिखता है, प्रायेतो में अजव्यही दिखताहूं पीछे तो ज्ञानीयोंने जाव देखा सो सही, हे रे जाइ तें तो एसी सामायक करता है, खुणे खाज मोमे



करमका, संघतणा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सि-  
कारेगा जब लेखे लगेगा, डुहा—आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मु-  
नि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥  
इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववंदनभाष्यादिकमें मंदिर  
जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी-विधि श्रीमहा-  
निसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्पसूत्रमें ऐसा लिखा हे ठी शक्ति साधू जिनमंदि-  
रमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका मंम नर श्रावककूं बेलैका  
मंम ॥ प्रथम श्रावक दो चार घन्टी रात रहे पिठली तब ऊठके  
नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या  
मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासें दिलको  
सावचेत करे, पीठे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके  
सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदेरासरकी पूजा करे,  
पीठे यथाशक्ति अन्ना वस्त्र आज्ञापण पहरेके घोडा हाथी रथ पाल-  
खी सिपाइ नोकर चाकर ज्ञाई बंधु परिवार समेत पूजाके लायक  
फल फूल प्रमुख संगमे लेकर ज्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता  
हुआ जिनशासनकी प्रज्ञावना करता थका जिनमंदिरमें जावे.  
जिन मंदिरमें प्रवेश करके डोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार  
१० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ बेर निस्तही कहणेका, जिसमें १ निस्तही  
जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीठे संसार घर संबंधी कुठनी  
कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्तही प्रदक्षणा तीन दियां पीठे  
कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार शंजाल  
रक्कीथी सोनी ठोमे २; (इसमें ड्यपूजा करणी मोकली रही)



तीसरी निस्सही कहे पीठे निकेवल ज्ञावपूजाही करे, लेकिन इय पूजा नही करे, यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक-ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक-मूलनायकजीके बिंबको पंचांग मिलाके तीन बेर नमस्कार करे. ३.

चौथा त्रिक-प्रभूकी अंग १ अग्र २ नर ज्ञाव ३ ऐसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे. अब निस्सही किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसे लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, नर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इन्द्रियोकूं वसमे रखे, चलणे नर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दूसरोंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुठजी देवकार्यकों ठोमके, नर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथा दिक ४ हो सो विकथाको ठोमे, जन्म नर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया जया खोटे कार्य कों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्सही किये पीठे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसने मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपनी आत्मासे किया हे उस जीवके ज्ञावसे निस्सही होय, नर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र इयनिस्सही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके आठ तहका उज्जल वस्त्रसे मुखकोस बांधे, धूपादिकसे अंग अपना शुद्ध करे, ज्ञावसे दूसरा निस्सही कहते मूलगुंजारमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, नि केवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे, प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमल अम्बा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसें जगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसें विलेपन करे, शुभ्रवर्ण शुभ्रगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोष गुलाब चंपा चंपेली केवला जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्ज्वल अक्षतोसें प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लोखे—दर्पण १ जडासन २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मङ्कयुग ५ कलश ६ स्वस्ति क ७ नंद्यावर्त ८ ऐसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसे अष्टमंगलीककूं पूजे, अष्ट केशर चंदनके हवा देवे, उत्तम नैवद्य चढावे, अष्ट खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी झाताधर्मकथा जीवाग्निगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे. पीछे अंतरंग नृत्तिसें प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जैसें देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाशराजाकी राणी प्रजावती द्रौपदी रावण प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टा-पदादि तीर्थोंपर तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया तेसें शंकारहित ज्योतिष नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नैवद्यादिक चढायाजावे सो अग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो ज्ञावपूजा ३. इव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक—तीन अवस्था विचारणी. पिंसस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंसस्थ अवस्थाके तीन जेद हे. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, नर केवल अवस्था कों विचारणा सो पदस्थ अवस्था. निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब ठहा त्रिक—तीन दिशा ओरुके प्रभूके सामने नजर रखे.

उर्द्ध १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३४ वांइ पिठामी निजर नही करे. ६.

अब सातमा त्रिक—तीन बेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोंके अर्थपर आलंबन रखे सो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ७.

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोंकी अंगुली मिलाएली सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, काजसग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, नर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रखे सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीरराय कहे. ८.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चे इयाई इह संतो तबसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविसाहू तिविहेण तिरुं विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीररायसे लेके आज्ञवमखंता तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३. ऐसे दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अजिगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं, स चित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपने जोगमें होय उसकुं दूर धरदेणा १, नर राजचिन्ह मुगट उत्र खरग चमर पाडुका अश्वितवस्तुनकाजी ठोरणा आज्ञापण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनविंवकुं देखतेही नमोज्ञवणबंधुणों ऐसे नमस्कार करणा ५, यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बैठके जगवंतकुं वांड़े, स्त्री वांइ तरफ बैठके जगवंतकुं वांड़े.

अब चौथा द्वार तीत अग्निग्रहका. अग्निग्रह देववांदणामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसे उपरांत बैठके देव वांदे १, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बैठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन जेद हे. एमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसे नमोबूणसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचदंभक समेत शुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहौजे. पांच शक्रस्तवसे आठ शुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहौजे.

अब ठठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे, दो गोमे. दो हाथ, नर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासे लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसे प्रज्जुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सञ्चित्त १, द्रव २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंज ११ दिशि १२, न्हाण १३, जत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संज्ञाले दिनमें जो चीज अपने अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सञ्चित्त वस्तुका प्रमाण इस तरेसे करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका ठेदन जेदन, तरकारी फल परबल जींमी तोरी केला मतीरा ककमी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा ड्रव्य प्रमाण, तहां धातु वस्तुकी शली तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुंमें मालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण तीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणेसे ड्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे. जैसें गहूं एक ड्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी धेढवारोटी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कह लाता हे. इस तरे ज्ञात दाल रोटी कढ़ी मांझिया कट्ट तरकारी सब जात पापम खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब ड्रव्यमेंसे जो चढ़िये सो रक्के वाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक ड्रव्यका नाम लेकर रक्के सो एकही द्रव्य कहलावे. जैसेके मेवेकी खीचनी तो वह अनेक ड्रव्यसे बणी जई हे तोजी एक ड्रव्यही कहिये. इति ड्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमाण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसे आवककुं चार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ नर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमाण रक्के. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खमान मोजा अपना इतना विराणा ऐसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रक्के. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांचवीमा सुपारी लोंग इलायची ठोटी नर बनी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारणा प्रमाण रक्के. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ छठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ ठूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रक्के, पोसाख १ में पघनी १ जामा १ कमरबंधा ३ धोती ४ एक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहीजे. ऐसेइ स्त्रीके स्त्री मुजब. जो ऐसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपमा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र जूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवमा केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ अथ गामी वहली इक्का बग्घी कोच पालखी घोडा हाथी जुंटा तामजांम म्याना इत्यादिक सब अलवाहन, पाणीमें चलनेवाले मोरपंखी वतक घुमदोर लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी ढालका चममेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोमे परमलम प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाया सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०.

अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातकों तथा दिनकों सूइ मोरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरव १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४  
अग्निकूण ५ नैऋतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदि  
शि ९ उर्ध्वदिशि १० यह दश दिशिका अपने जाणे आणेका  
प्रमाण करें, चिठि लिखणी आदमी ज्ञेजणा देशांतरकी चिठी  
वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आज दिनमें स्नान २ बेर  
अथवा ४ बेर मोकला लेकिन पाणीका तोल रक्के, घने प्रमुख  
का प्रमाण करें, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा  
नही गिराऊं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा ज्ञात नियम. दिनमें ज्ञात १ सेर तथा २  
बेर जीमूंगा अथवा चार बेर उपरांत डुविहार या चोविहार  
धारणा प्रमाणे रक्के. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका  
प्रमाण रक्के तोलसे या मापसे. इति चवदे नियमविचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने शुद्ध सपेद वस्त्र  
पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीठे अखंड  
तंडुल मुठ ३ थालमें रक्के उस पर नारेल रुपया या मोहर  
धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पन्तिकमे इच्छाका० सम्य  
क्त सामाश्चाराहणार्थं चेइयाइ वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवं  
वण करे. वाये पासे चावलांको साग्रियो करे श्रीफल धरे पीठे  
गुरु वर्द्धमान विद्यासें मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप  
करे, वर्द्धमान स्तुतिसें देववंदन करवावे पीठे सतरे शुईमें नवकार १  
एकेकका कानसग्न करे पीठे शासनदेवता निमित्त चार लोगस्त  
का कानसग्न करे, पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ नवकार  
गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्हत् ० कहके वमा स्तवन कहे पीठे जय



चीयराय कहे इति नंदी विधिः । पीठे स्वमासमण देइ श्रुतसा  
 मायक सम्यक्तसामायक आराहणार्थ कानुसंगं करावेह, गुरु कहे  
 करावेमो सम्यक्तसामायक आरोपनार्थ करेमिसानुसंगं. ४ लोग  
 स्सका कानुसगा करे पारके प्रगट लोगस्स कहे पीठे ३ वेर नव  
 कार गुणकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंभक उच्चरे गुरु पाठ  
 बोले उसकी मनने धारणा रखे. सूत्रं अहन्नंजंते तुक्षाणं समवे  
 मिन्नतानु पक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पज्जिइ  
 अन्नतिष्ठिएवा अन्नतिष्ठिदेवयाणिवा अन्नतीष्ठिपरिग्गहिय अरिहंतं  
 चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुर्विअणालित्तएणं आलवित्त  
 एवा तेसिअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दानंवा अणप्पाणंवा  
 तेसिगंधमल्लाइं पेसिणंवा नन्नञ्जरायान्नियोगेणं गणान्नि योगेणं बला  
 न्नियोगेणं देवान्नियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचलुद्धिहं तंजहा  
 दवउं खित्तउं कालउं जावउं तद्धदवउं दंसण दवाइं अहिगिच्च खित्तउं  
 जाव जरहमज्झिमखंमे कालउं जावजीवाए जावउं जावउल्लेणं नठ  
 लिज्जामि जावसन्निवाएणं नन्नविज्जामि जावकेशइ, उम्माइवसेणं  
 एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवरुइ तावमे एसो दंसणाज्जिग्ग  
 हो अन्नञ्जणान्नियोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्ति  
 यागारेणं वोसिरइ. पीठे नुं ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एते अक्षर श्रीगुरूके  
 पाससें हाथमें लिखोके जिन प्रतिमाकूं वासद्धेप चढ़ावे, नवकार  
 पढतोथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वांदि, पीठे श्रुतसामायक  
 थिरि करणार्थ सत्तावीस उत्सास प्रमाणे एक लोगस्सका कानुस  
 ग्ग करे पीठे प्रगटलोगस्स कहे पीठे सम्यक्तरूप कळपवृक्ष पायके  
 अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावजीवं सुसा  
 हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएग्गहियं. १. पीठे गुरु  
 धर्मदेशना देवे, मिश्रपात्वरूप सम्यक्त्ते पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवन्दन इतनी बेर कछंगा, इतना नवकार निरख गुणूंगा, फल  
केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाऊंगा, ज्ञान दर्शन चा  
रित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वनिधिमें पा  
लूंगा, नित्य पञ्चखाण इस मुजब कछंगा, दिनकी नवकारसी आ  
दिक रात्रिकों डुविहार तिविहार चनुविहार छर बावीस अन्नह  
वत्तीस अनंतकाय विदल वगेरे ठोडूंगा इत्यादिक अपनी धारणा  
प्रमाण सब चस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप  
सुणे अतीचार नहि लगे ऐसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंरुक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं स  
मीधेवेथूलगपाणाइवायं संकप्पित्तं निरवराहं पच्चस्कामि जावज्जीवाए  
एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काणं  
नकरेमि नकारवेमि तस्संजंते पक्कमामि निंदामि गरिहामि अ  
प्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंरुक तीन बेर उच्चरावे ॥ १ ॥  
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाइवायं जीहाहेयाइहेअं  
कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं आपणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं  
पच्चस्कामि दस्किन्नाए अविसए दवुत्तं खित्तुत्तं कालत्तं जावत्तं सबुत्तं  
मुसावायं खित्तुत्तं इत्तवा अणत्तवा कालत्तं जावज्जीवाए जाव  
त्तं जावगहेणं नगहेज्जामि जावठलेणं नठलज्जामि अन्नेणकेणवि  
रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ तावअज्जिग्गह डुविहं तिविहेणं  
अन्नत्थणाज्जोगेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥  
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं  
रायनिग्गहकारयं सचित्ताचित्तं वहुविसयं पच्चस्कामि ववुत्तं खित्तुत्तं  
कालत्तं जावत्तं दवुत्तं अदिन्नादाणं खित्तुत्तं इत्तवा अन्नत्तवा का  
लत्तं जावज्जीवं जावत्तं जावगहेणं नगहेज्जामि जावठलेणं नठ  
लज्जामि अण्णकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ ताव अ

जिग्मह डुविहं तिविहेणं अन्नत्थं सहस्सां महत्तं सव्वं वोसि  
 रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंजंतुम्हाणंसमीवे तुंदासिय वेक्किय ज्ञेयं थूलमेहुणं  
 पच्चस्कामि अहागहियजंगएणं दिवंतिरिठं माणसियं एगविहं एग  
 विहेणं पच्चस्कामि दव्वं खित्तं कालं जावत्तं दव्वं मेहुणं खि  
 त्तं इत्थं अन्नत्थं कालं जावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं  
 नगहिज्जामि अन्नं सहं महं सव्वं वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं  
 जंतं तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पमुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चस्कामि  
 धणधन्नाइ नवविहवत्तु विसयं इत्थापरिमाणं नवसंपज्जामि अहाग  
 हियजंगएणं तंजहा दव्वं खित्तं कालं जावत्तं दव्वं नवविह  
 परिग्गहं खित्तं इत्थं अन्नत्थं कालं जावत्तं जावत्तं जावत्तं  
 जावत्तं नगहिज्जामि अन्नं सहं महं सव्वं वोसिरइ ॥ ५ ॥  
 अहन्नंजंतं तुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चस्कामि तंजहा दव्वं  
 खित्तं कालं जावत्तं दव्वं दिसिपरिमाणं खित्तं धारणाप  
 माणं कालं जावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नगहिज्जामि जाव  
 त्तं तावअजिग्मह अन्नं सहं महं वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंजं  
 ते तुम्हाणं समीवे जोगोवजोगेजोयणं अनंतकायबहुवीया राइ  
 जोयणां परिहरामि कम्मत्तं पन्नरसकम्मदाणां इंगालकम्माइया  
 इ बहुसावज्जाइ खरकम्माइयं रायाजियोगं च परिहरामि तंजहा दव्वं  
 खित्तं कालं जावत्तं दव्वं जोगाव जोगवयं खित्तं इत्थं अन्न  
 त्थं कालं जावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नगहिज्जामि अन्नं  
 सहं महं सव्वं वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंजंते तुम्हाणंसमीवे  
 अन्नत्थदं पच्चस्कामि अववज्जाण पापोपदेश हिंसोपकरण  
 दां पमायचरितं चण्विहं अन्नत्थदं जहासत्तीए परिहरामि तंज  
 हा दव्वं खित्तं कालं जावत्तं दव्वं अन्नत्थदं खित्तं इत्थं  
 वा अन्नत्थं कालं जावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नगहि०

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंजते तुम्हाणंसमीवे  
 सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिश्रिसंविजागवयं जइ स  
 तीए पमिवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवयं सत्तसिस्कावयं उवा  
 लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह०  
 सबस० वोसिरइ ॥ ९ ॥ षट् साख व ठंमी ज्यार आगार संयुक्त  
 पालं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप वारे व्रत उच्चरावणं विधि ॥

॥ अथ वीसथांनकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करो, वीस थांनक रे  
 गणवुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थांनक रे नमो अरिहंताणं  
 गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी शुणउ ॥ ब्रूटक० ॥ शुणउ  
 जविआं बीजइ थांनकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी  
 स जिननी, पुंमुरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थांनक नमो पवयण  
 स्स, प्रजावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थांनकि,  
 आचारज जगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ शिवर  
 पूजा करो, नमो उवझायाणं रे ठठइ थांनक उचरउ ॥ वस्त्र कंबल  
 र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ  
 पूजिए ॥ ब्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी जगति  
 करउ, नमो दंसणस्स नवमें थांनक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते  
 नमो विनयकारीणं विनय वरुनो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया  
 कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थांनक रे नमो वंज  
 धारीणं सदा, वृत्तधारी रे मन वच क्रम पूजउ सुदा ॥ मूल वय  
 धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिघरणं रे रात्रइ गीत गान  
 वरचिये ॥ ब्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दान ते  
 पनरमे, नमो वायगस्स विगयनउ त्याग करो थांनक सोलमें ॥  
 सतरमे नमो वेयावच्चकारीणं, उपध गुरुनइ आपिये ॥ अठारमे

नमो नाण धराणं, नवूं जणवूं आपिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्जतीणं  
 रे जगणीसमे जविया मुण्णं, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं  
 सुणो ॥ वीसमे आनक रे नमो पञ्चावगाणं कही, संघजगती रे  
 यथासक्ति कीजे सही ॥ तू० ॥ सही कीजे वीस उली एक षठ  
 मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पणिकमणे  
 लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाहण धोअण टालिये,  
 आरंज वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु  
 साधवी रे आवक आविकाये सेविआं, तीर्थकर रे तेणे नामकर्म  
 बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणां रे  
 सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ तू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा  
 सुपास उदाई नृप वलि, पोटिल मुनिवर अने दृढायुष शंख  
 शतक आवक रुली ॥ सुलसा रेवती आविकाये एह आनक  
 फरसिआं, सेवकजन कट्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥  
 इति वीसआनक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥  
 वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥  
 ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कै, जेठे सहु जवि चित्त सुख  
 पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके  
 मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रभु  
 पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखनिया, मुख सुंदर जास ॥  
 मे० ॥ १ ॥ कानें कुंमल दोय ऊलके, शशि सूरज सम जास ॥  
 मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिभुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद  
अरज सुनीजें, पुरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ ठुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हारे में  
खम्ही पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में  
पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन  
अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें मारो ॥ सुजा० ॥  
॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं जव जवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेम जिणंदजीसैं आंखमली, मोरी रेन  
दिवस नित लग रहीरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय उन  
दोस्ती कीनी, ले पीठें बिठकाय दर्ई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया  
करीने, सिवरमणी तें वर लेई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई  
जविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥  
आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन जयो मेरे, आनंद चित्त अव  
जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन नर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभु  
वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम  
प्रभु जव जव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोये  
जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घम्ही तरुको अब रहियो, ऊठ धरममें  
लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी नरबीच धार ले, नर नरम  
सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए  
सूयो शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥



॥ अथ पदं ॥

॥ राग नैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर  
ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ ब्रमत फिर्यो संसार जगतमें, मेटो जव  
दी फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ जव जवके प्रभु तुम जगनायक, राखो  
शरणे तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ नदय आशरो पकड़्यो तेरो, सरण  
ग्रही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कमखानी देशी ॥ जाव धरि धन्य दिन आज सफलो  
गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर जरि विमल  
गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ १ ॥  
पग पग नमंग धर पेश नित पूठतां, धन्य दोष चरण तिहां चलत  
आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह  
गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं  
करी, पुण्यजंमार पोतें जरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि  
शिखर, रुषज्जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥  
परमात्म परमेशरू, आत्म परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥  
केवलज्ञान दिवाकरू, जांगे सादि अनंत लाल रे ॥ जासक लोकालो  
कको, हायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंड चंड चक्रा  
सरू, सुर नर रहे कर जोर लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणदूते  
एक कोर लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुऊ  
मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहे आसरो, जवजव  
देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उध्वारण ठो तुमें, दूर  
हरो जवहुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल  
सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधर जिन स्तवनम् ॥



॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनसो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरे जी, पावन शाखा आठ जी ॥ आठ जोजन नंचुं देहरूं जी, दुःख दोहण जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ नरतें नरायां नलां देहरां जी, सो नौरां थूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने ऊज जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली ज्ञागीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे ऊज जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुऊने पांखमी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि नदासा अपणा दासा, दीजें कबुक दिलासा राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चासी चटकी जवमांहि नटकी, नाच्यो में विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी, लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत संजाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हयाली वाजे ताली, वात अचंजा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परजपगारी पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी मन शुद्ध धारी, श्रीधर्मसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांजलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे ठे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

कोनीं मनवा ठेत पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह विरुद ठे राज तु  
 मारुं, किम राखो ठो दूरो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी,  
 मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार  
 न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही ठे, परतक  
 दरिसण दीजै ॥ धूंवासे धीजुं नही साहिब, पेट पड्या पतीजै ॥  
 ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंरुण साहिब, वीनतमी अवधारो ॥  
 कहे जिनहर्ष मया करी मुऊने, जवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥  
 ॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥  
 जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मऊ ॥  
 ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आमो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु  
 मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लामला, कागल दुं किण  
 हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें  
 दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलतां  
 घणो मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलणो जीहो  
 अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण कण कण  
 जीहो सांजरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥  
 मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रली, फलशे ते दिन आश ॥  
 ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥  
 ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥ जिनराज, वधाई वाजे ठे ॥  
 नगर अयोध्यामाहे, मेघ घर आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ५  
 मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति नर  
 सहु देशमें रे, प्रगढ़ जयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इन्द्रादिक सहु

सुर मढ्यारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मऊन पूजन बहुविधे रे,  
धिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग बधामणा रे,  
घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख  
कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोदय रंग रत्नी री ॥ ए टंक ॥ जायो सुत  
त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥  
सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥  
आवत सिद्धार्थजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥  
आ० ॥ २ ॥ इंझणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी  
री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, वेना बिन मोचंग वली री ॥  
आ० ॥ ३ ॥ इंझ हुकुम कर धरणीं पगयो, सब वसुधा धन,  
धान्य जरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत  
गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार ज्यो जिनशासना  
व्याधि व्याधा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो,  
मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुन, वचनातिशयें जुत ॥ सो परमेसर  
देख जवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेग जग  
जाण, देखी जविजन गुणमणि खाग ॥ जे दीठे तुज निम्मल  
जाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आ  
दिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोजागी चो  
वीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥  
(इतना कह कुसुमांजलि चढाईजे चरणोके टीकी दाजे) ॥ गाथा ॥  
जोनिअगुणपङ्कज रम्यो, तसुअनुभवएगत्त ॥ सुहृपुगलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु-  
 गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो-  
 न्नव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० ( एसा कह  
 गोमे टीकी दीजे ) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु-  
 णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पहधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 लोकालोक प्रकाशक नांणी, ज्ञविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर-  
 मानंदतणी नीसाणी, तसु जगते मुऊ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कु-  
 सुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ ( एसा कह हाथे टीकी दीजे )  
 ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन  
 ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह  
 त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा-  
 ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा  
 तोरा च० ॥ ( एसा कह खांद्योके टीकी दीजे ) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म  
 दिट्ठिदेसजय, साहूसुहाणीसार ॥ आधारजनवझायमण, जोनिम्मल  
 आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धारयो, मोक्षतणो  
 कारण निरधारयो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रण-  
 मंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ ( एसा कह  
 मस्तक टीकी दीजे ) ५ ॥ ( पोठे स्नात्रिया चमर ले के प्रभुजीकूं  
 दुखावे ) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर १ नमिय मनरंग, कट्ठाणक वि-  
 हि संठविय, करिस धम्म सुयवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर,  
 इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥  
 जम्म समय इगवीस, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज-  
 गीस ॥ ढाल ॥ जव तीजे समकित गुण रम्या, जिनजत्ती प्रमुख  
 पुण परिणम्या ॥ तजि इंडिय सुख आसंसना, कर आनक वीसनी  
 सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रज्ञावता, मन जावना एइवी

सुर मढ्यारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मऊन पूजन बहुविधे रे,  
थिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ १ ॥ घर घर रंग बधामणा रे,  
घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख  
कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोदय रंग रत्नी री ॥ ए टंक ॥ जायो सुत  
त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥  
सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥  
आवत सिद्धार्थजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥  
आ० ॥ २ ॥ इंडाणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी  
री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, बेना वीन मोचंग वली री ॥  
आ० ॥ ३ ॥ इंड हुकुम कर धरणीइ पगयो, सब वसुधा धन,  
धान्य जरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम बिखेरत  
गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार जयो जिनशासना  
व्याधि व्याधा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो,  
मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुन, वचनातिशय जुन ॥ सो परमेसर  
देख जवि, सिंहासन संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासन बेग जग  
जाण, देखी जविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुऊ निम्मल  
जाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आ  
दिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोजागी चो  
वीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥  
( इतना कह कुसुमांजलि चढाईजे चरणोके टीकी दाजे ) ॥ गाथा ॥  
जोनिअगुणपङ्कज रम्यो, तसुअनुजवएगत्त ॥ सुहृपुगलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु-  
 गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो-  
 न्नव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० ( एसा कह  
 गोमे टीकी दीजे ) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु-  
 णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पहधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 लोकालोक प्रकाशक नांणी, ज्ञविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर-  
 मानंदतणी नीसाणी, तसु जगते मुऊ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कु-  
 सुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ ( एसा कह हाथे टीकी दीजे )  
 ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन  
 ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह  
 त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा-  
 ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा  
 तोरा च० ॥ ( एसा कह खांदोके टीकी दीजे ) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म-  
 दिठिदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजनवझायमण, जोनिम्मल  
 आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघै जे मन धारयो, मोहतणो  
 कारण निरधारयो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रण-  
 मंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ ( एसा कह  
 मस्तक टीकी दीजे ) ५ ॥ ( पोढे स्नात्रिया चमर ले के प्रभुजीकूं  
 दुलावे ) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर १ नमिय मनरंग, कल्लाणक वि-  
 हि संठविय, करिस धम्म सुयवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर,  
 इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥  
 जम्म समय इगवीस, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज-  
 गीस ॥ ढाल ॥ जव तीजे समकित गुण रम्या, जिनजत्ती प्रमुख  
 गुण परिणम्या ॥ तजि इंडिय सुख आसंसना, कर आनक बीसनी  
 सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रज्ञावता, मन जावना एइवी

ज्ञावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, ऐसी ज्ञाविदया मन उल्ल  
 सी ॥ १ ॥ लही परिणांम एहवूं जलूं, निपजावी जिनपद निरम  
 लूं ॥ आनबंध विचे इक जव करी, श्रद्धा संवेग ते शिर धरी ॥ ३ ॥  
 तिहांथी चवि लहे नरजव उदार, जरते तिम एरवतेंज सार ॥ म  
 हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंने अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥  
 ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेखे ॥ गजवर  
 उज्जल सुंदर, निरमल वृपज मनोहर ॥ निरजय केसरिलिंह, लख  
 मी अतिह अभीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शसि सुकमा  
 ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलेश  
 पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण  
 सायर ॥ बारमें जनुवन विंमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि  
 खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने ज्ञासे, राजा  
 अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥  
 इंजादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य  
 उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तव रयणी समे, देख सुपन  
 हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांजले  
 सो ज्ञागी ॥ त्रिजनुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधान इंजा  
 दिक जसु पाय नप्री, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 चंडानलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधे मन आ-  
 णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, जवजल तारण  
 प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ जवअरुविय पारग सववाह, केवलना  
 णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल-  
 ट्यो आसाह मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय, बलयादिकमां  
 निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन  
 आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुहा आवि तव, कर अंजलि



प्रणमिय मन्त्र सत्त्व ॥ मुख ज्ञाषे ए कृष्ण आज सार, तिय लोय  
 पहु दीगो नदर ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल  
 तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या  
 विष चूरण गरुमवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समन्त्र, प्रगट्यो  
 तसु प्रणमी हुन्न सनत्त्व ॥ इम जंपी सकृन्नव करेवि, तब देव  
 देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तब रंजा गीत गांन, सुरलोक हुन्न मंग  
 लनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस ठांम, जिनराज वधे सुर हर्ष धांम ॥  
 ॥ ७ ॥ पिता माता धरे उन्नव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष ॥  
 सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥  
 शुन्न वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख  
 पांम्या त्रिजुवन सर्व जीव, वधाइइ अई अतीव ॥ ९ ॥ (एसा पढ  
 चैत्यवंदन करणा पीठे हाथमें साधिया करणा पीठे कलस पंचामृत  
 का लेकर खडा रहे ॥ ) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख  
 कार, नरखित्त मंमण डुह विहंमण ज्ञविक मन आधार ॥ तिहां  
 राव राणा हरख उन्नव अयो जग जयकार, दिसिकुमर अबधि वि  
 शेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु  
 मरी गावती गुण ठंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आ  
 णंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म  
 निम्मल करण कारण करिस सूर्यकम्म ॥ २ ॥ तिहां त्रूमिसोधन  
 दीप दर्पण वाय वींजणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर ज  
 ननि मज्जनकार ॥ वर राखमी जिन पांण बांधी दिये इम आसी  
 स, जुग कोमिकोमी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल नला  
 लानी ॥ जिन रयणीजी दस दिसि उज्जलता धरे, मुन्न लगनेजी  
 ज्योतिलचक्र ते संचरे ॥ जिन जजम्यांजी तिण अवसर माताधरे,  
 तिण अवसरजी इंद्रासण पिण अरहरे ॥ त्रूटक ॥ अरहरे आसन इंद्र

चिंते कोन अवसर ए बन्यो, जिन जन्म उन्नावकाल जांणी अतहि  
 आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जाण जगते ऊ  
 मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥  
 ॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुगलोकेजी घोषणा एह  
 दिराव ए ॥ नरकेत्रेजी जिनवर जन्म हुन्न अठे, तसु जगतेजी सुरप  
 ति मंदिरगिर गठे ॥ त्रूट० ॥ गठे मंदिर शिखर ऊपर जुवन जीवन  
 जिनतणो, जिन जन्मउन्नाव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥  
 तुम शुद्ध समकित आस्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पां  
 तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांज  
 लजी सुरवर कोमि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांहमी  
 चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी  
 स्वामि वधाविया ॥ त्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं क  
 तपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीगो मुऊ समो कुण अन्य ए ॥ हे  
 जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उन्नंग तुमचे वलिय  
 आपिस आतमा पुन्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज  
 करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक  
 विधिजी तब वत्तीस आगलि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊ  
 महे ॥ त्रूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा  
 वती, अठपरा कोमी हाथ जोमी हाव जाव दिखावती ॥ जय जयो  
 २ तूं जिनराज जगगुरु एम थे आसीस ए, अम त्राण सरण आ  
 धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां  
 रुकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥  
 तिहां आणीजी शेके निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति  
 आवी रह्या ॥ त्रूट० आविया सुरपति सर्व जगते कलश श्रेणि व  
 णाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्यु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर  
 ड्यावो सबे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव  
 कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पनुमदह आदि  
 दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाज्जणी ते गई ॥ १ ॥ जाति  
 अम कलश कर सहस अठोत्तरा, उत्त चामर सिंहासणे सुजतरा ॥  
 उपगरण पुष्प चंगेरी पमुहा सबै, आगमे ज्ञासिया तेम आणी ठवे  
 ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता ज्ञावता  
 धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम  
 सगति शुचि जगति इम ज्ञावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म  
 आरोपता, कलश पाणी भिसे ज्ञक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे  
 सर्व आव्या वही, शक्र उडंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥  
 हंहोदेवा अणाइकालो अदिठपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥  
 मिच्चत्तमोहविद्धंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवाहिदेवोदिठवो २ हिं  
 यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पज्जणंति वण ज्ञवण जोईसरा, देव  
 वेमाणिया ज्ञत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पठिया केविमिच्चाणुगा, केवि  
 वररमणे वयणेण अइउडगा ॥ १ ॥ वस्तु ॥ तत्थअच्चुयइ इंड आ  
 देस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदञ्जुत  
 रूप सरूप जुय कवण एह पुडंति सामिय, इंड कहे जगतारणो पा  
 रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अज्जिषेस ॥  
 ॥ २ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे  
 न्हामे ॥ आतम निरमल ज्ञाव करंता, वधते सुज परिणामे ॥ अ  
 च्युत्तादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंडाणी  
 पमुहा, इम अज्जिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाथा ॥ तबईसा  
 णसुरिंदो, सकंपज्जणेइकरिसुपसानं ॥ तुम्हअंकेमहतानं, खिणमि  
 त्तंअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासकिंदोपज्जणइ, साहमीयवडलम्भिबहुला

हे ॥ आणाएवंतेणं विह्वल होउकयत्थाज्जो ॥ १ ॥ (कलस ढाले)  
 सोहम सुरपति वृषत्र रूप करि, न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ करिय वि  
 लेपन पुष्पमाल ठवि, वर आत्तरण अजंग ॥ २ ॥ तब सुरवर बहु जय  
 रव कर, नच्चे धरि आणंद ॥ मोहमारग सारथपति पांभ्यो, जांज  
 सु हिव जवफंद ॥ ३ ॥ कोरु वत्तीस सोवन उवारी, वाजंते वर  
 नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ४ ॥  
 आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्यारो  
 धणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ५ ॥ मात जतन कर राख  
 ज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति जगते सहित नंदीस  
 र, करे जिन जक्ति उदार ॥ ६ ॥ नियं कप्प गया सब निर्जर,  
 कहता प्रभु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कळ्याणक, इच्छा चित  
 मजार ॥ ७ ॥ खरतर गच्छ जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥  
 ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ८ ॥ देवचंद  
 जिन जगते गायो, जनम महोत्तव ठंद ॥ बोधबीज अंकूरो उल  
 स्यो, संघ सकल आणंद ॥ ९ ॥ ढाल ॥ इम पूजा जगते करो,  
 आतम हित काज ॥ तजिय विज्ञाव निज ज्ञावमा, रमता सिव  
 राज ॥ १० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥  
 संपइ सीमंधर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ १० ॥ २ ॥ जन्ममहोत्तव  
 इण परे, आवक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन  
 खंत ॥ १० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिन  
 प्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मजार ॥ १० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महो  
 दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलोघतः, शुचि मनाः स्नपयामि वि  
 सुदये ॥ नै ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजं चं-  
 दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल ज्ञाव युतं  
 जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शनं चंदनैः, सहज तत्त्व विकास कृतेर्जयेः ॥  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं केसरचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रींजी पुष्प पूजा ॥ विक-  
 च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन ज्ञाव समुज्ज्वलेः ॥ सुपरणा  
 म प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्त्व मयं हिय जाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं  
 प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चौथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म  
 महोधन दाहनं, विमल संवर ज्ञावसु धूपनं ॥ अशुभ पु-  
 ञ्जल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥  
 ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ नविक नि-  
 र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि-  
 मुक्त समन्वितं, दधतु ज्ञाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प०  
 दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ षष्ठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल नि-  
 केतनं, परम मंगल ज्ञाव मयं जिनं ॥ अथति नव्यजना इति दर्श-  
 यन्, दधति नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं  
 यजामहे ॥ सातमी नैवेद्य पूजा ॥ सकल पुञ्जल संग विवर्जनं, स-  
 हज चेतन ज्ञाव विलासकं ॥ सरस जोजन नव्य निवेदनात्, पर-  
 म निर्वृत्ति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी  
 फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफलव्रज ढोकनं ॥  
 विहत मोक्ष फलस्य प्रज्ञो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥  
 ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्थ) इति जिनवर वृंदं नमस्कृतः पूजयं-  
 ति, सकल गुणनिधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्त्व  
 मुद्गावयंति, परम सहजरूपं मोक्षं सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 प० अर्थं यजामहे ॥ ( वस्त्र ) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला,  
 सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यह्नते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वाञ्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ नै ह्रीं श्रीं प० वस्त्र  
यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सत्तरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछै अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेवीमें कुंकुम तथा  
केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलममें  
ढालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन बेर नमस्कार कर हाथ  
के धूप देकर रकेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खड़ा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ ज्ञाव ज्ञवै जगवंतनी, पूजा सत्तर प्रकार ॥ पर  
सिद्ध कीधी झोपदी, अंग ठठै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति  
सकल जग जागती, हारै अइयो जा० सरसति समरि सुजिंद ॥ सत्तर  
सुविध पूजातणी, पञ्चणिमु परमानंद ॥ १ ॥ गाहा ॥ न्हवण १ विलेवण  
२ वत्थयुगं ३, गंधारुहणं च ४ पुष्फरोहणयं ५ ॥ मालारोहण ६ व  
न्नयं ७ चुन्न ८, पमागय ९ आज्ञरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुव  
वंसुधरं ११, पुष्फं पगरं च १२ अठमंगलयं १३ ॥ धूव उखेवो १४  
गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तथा ज्ञणियं ॥ ३ ॥ सत्तर सुविध  
पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मऊार ॥ दुपदसुता झोपदि परै, करियै विधि  
विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी उचि  
त मानी रे, अइयोउ० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुनृत  
मणिकलस कर विविध बांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगदं,  
लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअया बारिवारि ॥ अ० ॥ ज्ञणिय कुस  
मांजली, कलस विधि मन रखी, नवति जिन इंड जिम तिम अ  
गारी ॥ अ० ॥ २ ॥ दुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण सुगति  
सोपान ॥ धरमरूप तरु सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद



ली पूजा साचवै, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु  
 तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र  
 कारी, सुणै जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण ठळ्योरी सुधारस, तप-  
 त बुजिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रजूकुं विलोक नमि जतन  
 प्रमारजित, करत पखाल सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-  
 म निज वृजन पुलावत, पंककु चरण जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि  
 तरणि जेवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥  
 शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, धूमरि आपदेवेल मरदनकी ॥ पू० ॥  
 ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिळ्योरी सुमति संग, जागी सुदिसा शुभ  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सौरंगजरकरतां, आत फली  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पढ पंचामृतसुं न्हवण कीज । डावे पांवके अंगुठे जलधार दीजै ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणें अंग जिनबिंवका प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहै)  
 रामगिरोमें राग ॥ गात्र लूहै जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर  
 सु धूपित वाससुं ॥ वाससुं हारे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलियै  
 ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ मांहे मृग-  
 मद कुंकुम जेलिये, कर लीये हारे दे० क०, रयण पिंगणि कचो-  
 लियै ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंवै सिरै रे देवा, जाल कंठ जर  
 उदरंत रै ॥ दुख हरै हारे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजोयै ॥  
 गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम  
 सुरगिरै, तिम करै हारे देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥  
 ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन,  
 श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहै जेवोदधि तीर  
 ॥ १ ॥ भिटे ताप तसु देहको, परम शशिरता संग ॥ चित्त खेद सम  
 उपसमें, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउत्र ॥ विलेपन कीजै



जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद  
 यक्ष कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर  
 खंधै सिर जाल कंठ, नर नदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर  
 त विलेपन, तपति बुझित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव  
 ९ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि  
 करो सुललित पूजा, जैसै गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय  
 विलेपन पूजा ॥ १ ॥ ऐसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल नज्जल विमल, आरोपे जिन अंग ॥  
 लाज ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गौमी ॥  
 कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हारै  
 अइयो ॥ कनक मंमिह हय लाल पद्मव शुचि, वसन युग कंति  
 अधिवासिया ए ॥ हारै अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्रो  
 यथा, करिय पहरावणी ठोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो दे-  
 वनें, वस्त्रयुग पूज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैरामी ॥  
 देवदुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥  
 तूही हे सबहि हितु तूही है सुगति दाता, तिण नमि प्रभुजी के  
 चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहै साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण,  
 देवदुष्य मिस देहु उत्तम वागूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत  
 पीतां, सब राम दुख संसय घुरम जांगूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृति-  
 य वस्त्रयुगल पूजा ॥ ( ऐसा कह प्रभुजाकुं वस्त्र चढावे ॥ )

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासक्षेपपूजा ॥

॥ गोमी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण  
 वास ॥ कुमति कुगति दूरै हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग  
 सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणों  
अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजै जिन अंग  
उवगू ए ॥ हा० लाठि जवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अन्न  
गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौमी ॥ भैरै प्रभुजीको पूजा आ-  
नंदमेले, पू० ॥ वासजवन मोह्यो सबलो ए, संपदा जेले ॥ पू० ॥  
॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्तायेइ ॥ अप्रमित्तगुण  
तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन  
राज तत्तायेइ, चतुर गति डुख गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥  
इति चतुर्थी वासकेप पूजा ॥ ( एसा कह चूर्णवास चढावे )

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगै पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार ॥  
प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥  
चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई  
जूहिका, वज्रसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए,  
अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसैं वर वरे, विधि जिन  
पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कान्हो ॥ सोहे री माई व  
रणें, मन मोहे री माई वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसम जिनच  
रणें ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रभु हम सर  
णै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी, कु० ॥ पंच  
विषै हां० पं० दुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जग  
वंतकी, जविक नरां हारे ज० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठी पूजाए छती, महा सुरजि पुष्पमाल ॥ गुण  
गूंथी आपे गलै, जेम टलै दुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज  
रा ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासो ग पारिध कली

ए ॥ जला पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल  
 गुलाल पारुल जिली ए ॥ जलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-  
 गरा वेजला मालती, पंचवरणै गुंथी मालती ए ॥ जलां गुं० ॥ हे  
 माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालती ए ॥  
 जलां स० ॥ २ ॥ इति ॥ राग आसाउरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक  
 एधतिनंदै, चकोरकूं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि  
 वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमंदै ॥ दे० ॥  
 ॥ २ ॥ ठढी रे तोरुपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरियण हारे स०  
 होइ तिम वंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्था सुख,  
 जविक जगत हारे ज० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति ठढी  
 तोरु पूजा ॥ ६ ॥ ( ऐसा कह फूलमाला प्रभुकूं पहिरावे ॥ )

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगै फूल केसरसैं अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवला, सोनै तेम सुगात ॥ चाढे  
 जिम चढतां हुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौरी ॥  
 कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हारे अ० ॥ कुंद  
 गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी  
 अलंकीयै, अंग अलंक मिस माननी सुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥  
 ॥ इति ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं० ॥  
 कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ दमणक मरुक पारुल अरविंदो, अंस जुई वेजलवाती ॥  
 पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी ज्ञांती ॥ पं० ॥  
 ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, जैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥  
 पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा धूप लेकर खड़ा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेव्हारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु जावसैं ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥  
 कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥  
 सुरजि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥  
 ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुन करम चूरीजै जी ॥  
 अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तब कुमतीजन खीजै जी ॥ तब  
 सुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री  
 माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र  
 तीर्थकर बांधइ ॥ जलां १ गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-  
 व्हारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर जाव घन वरषत, सामेरी  
 मति जागै ॥ जलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूहव गीत समूख ॥ दीजै  
 तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौमी ॥ वस्तु ॥  
 सहसजोयण १, हेममय दंम ॥ युतपताक पंचे वरण, धुमधुमत  
 युग्धरीय बाजै ॥ मृडु समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद  
 ख सयल जाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न  
 वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥  
 आपै दांन अन्नंग ॥ आप ॥ १ ॥ राग नटनारायण ॥ जिनराज  
 को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन  
 सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधवधू  
 सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ जांति वसन पंचवरण बन्यो री,  
 विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू जणत नवमी पूजा नव, पाप  
 नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

( ॥ ए कही ध्वजा चढाईजै ॥ पहली वाजित्र वाजतां सधवल्ली चांदीके थालमें  
 धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु  
 पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारै ॥ )

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

( एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खड़ा रहे ॥ )

॥ दूहा राग केदारमै ॥ दसमी पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे जिनवरतणै, रयण मुगट ऊलकंता ॥ तिलक जाल अंगद जुजा, श्रवण कुंमल अति जंति ॥ २ ॥ राग अधजास गुंमलहार ॥ आसावरी ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणक लाल रसणिया, हीरा सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुजग अंक अंजना, मनमोहे रे ॥ ३ ॥ मौलि मुगट रयणै जज्यो, काने कुंमल हारे अति जुगतै जुज्यो नर हारू रे, मन वारू रे ॥ जाल तिलक वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, डुखहारू रे ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ प्रभु सिर सोहै मुगट मणि रयण जज्यो, रय० ॥ अंगद बाहु तिलक जालस्थल, यहुनीको कवण घज्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंमल शशि तरुण मंमल जीपे, सुरतरुसैं अलंकरयो ॥ डुखकेदार चमर सिंहासन, उत्र सिर नवरि धर्यो, अलंकृत उचित वर्यो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ शोक ड्याभरणदि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोजतो, फूंदै लहकै फूल ॥ महके परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ कोज अंकोल राय बेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध पामलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिजुवनकूं रुचै, कुश मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हारे अ० ॥ गुह्र चंझेदयं जूवकाउन्नयं, जालिका गोख चित्तचोरणूं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो मन मोह्यो माईरी फूलघर आणंद जिलै, फू० ॥ असत उसत दांम वधरी मनोहर, देखत तवही सब डुरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसम मंरुष अंज गुष्ठ चंडोदय, कोरणी चारु चिनाण सजै ॥ इग्या  
रमी पूजा वणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसें तिपुरि नजै ॥  
॥ १ ॥ फूलमे० ॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खडा रहे ॥  
॥ दूहा ॥ वरषै बारमी पूजमें, कुसम बादलिया फूल ॥ हर  
ण ताप दुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग नीम  
मलहार कमखेकी जाति ॥ मेघ वरसै नरी पुष्प वादल करी, जानु  
परिमाण कर कुसम पगरं ॥ पंचवरणें वण्यो विकच अनुक्रम चिण्यो,  
अधोवृंत नही पीर पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास महके मिलै नमर  
नमरी निलै, सरस रसरंग तिण दुख निचारी ॥ जिणप आगै करै  
सुरप जिम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥  
राग नीममलहार ॥ पुष्प वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-  
जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥  
गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥  
गुंजतर मधुकर इम पन्नयै, गुं० ॥ मधुरवचन जिनगुण गुणइ ॥ पु०  
॥ २ ॥ कुसमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीर नही सुमणें, पु० ॥  
समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥  
॥ ३ ॥ बारमी पूज नविक तिम करै, कुसम विकस हस नचरै ॥  
तसु नीमबंधन अधरा हुवै, जे करहिजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥  
इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खडा रहे ॥  
॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै  
सुमति सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल  
मिल्या, अखंर गुणै निल्या, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्लेषण  
समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥  
अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अरै, जिनप आगै सुशानक



धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्ध  
करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वली ते रसमें,  
रसमें ३ हां हो ते० ॥ दर्पण जडासन नंदावर्त पुर्णकुंज, मन्त्रयुग  
श्रीवत्स तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण  
सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेढहारस घनसार ॥ कर  
प्रज्ञ आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलाजल ॥  
कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्क सेढहारस सार, गंध  
वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस जेलियै,  
श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरजि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरलिय दंरु  
कनक भंमिit धूपधांणो कर धरै, जववृत्ति धूप करंति जोग रोग  
साग अशुज हरे ॥ १ ॥ राग मालवी गोमो ॥ सब अरति मयन  
मुदार धूपं, करति गंध रसांल रे, देवाक० ॥ धामधूमावलिय धूसर,  
कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत जविकुं, म  
यमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै स्थण विसाल रे ॥  
आरती मंगल माल रे, मालवीगोमो ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति  
चवदमी धूप पूजा ॥ ( एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ जलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥  
जावो अधकी जावना, पनरमी पूजां प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें  
आर्या ॥ यद्ददंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण  
वली तान वाद्यै, मात्रा ज्ञाषालयैर्युक्त ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः,  
स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारीचारी गीतं गानं सुपीयूषं  
॥ १ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गानं श्रुत अमृतं, तार मंझादि अ  
नाहत तानं, केवल जिन तिस फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध



कुमार कुमरी आलापै, मुरज नपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र  
बध धूयो प्रतिमानं, आयति नंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबद  
समान रुच्यो त्रिजुवनकुं. सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर  
मान शिव श्रीगीतं, पनरमी पूज हरै डुरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ( कुमार कुमरी नाटिक करै ॥ )

॥ दूहा ॥ करजोमी नाटिक करै, सऊ सुंदर सिणगार ॥  
जवनाटिक ते नहि जमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट  
काव्यं ॥ ज्ञावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा  
सम रुव वेल वयसो मत्तेज कुंनत्थणा ॥ लावणा सगुणा पिकस्स  
रवई रागाईआ लावणा, कुम्भारी कुमरावी जैन पुरन नच्चंति सिं  
गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अठसयं कुमारिकुमरोन सूरियाजे  
एंदेवेणं संदिठा रंगमंवेपविठा जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति  
॥ २ ॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, झगरुदि तत्ताथेइ  
॥ अ० ॥ झगरुदि २८ औगिशन, मुखेतत्ताथेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे  
णु वीणा मुरज बाजै, सोलही सिणगार साजै ॥ तनन्नन्नेईय ॥  
अईयो० ॥ व्रणण व्रणण व्रणणण घुग्घरु धमके, रणससससेईय ॥  
॥ अईयो० ॥ २ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी जेंकार क  
रणी ॥ सोजंती कुमरीय ॥ अईयो० हस्तकं हावादिजावै, ददन्ती  
जमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटिकतणी, सूरियाजे  
रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगते जविक  
लोणा, आणंद तत्तेथेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततथन सुखिरै आनधै, वाजित्र चौविध वाय ॥  
जगत जली जगवंतनी, सतरमियै सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर  
मदल कंसालो, महुवर मदल सुवङ्गाए पणवो ॥ सुरनारि नंद तूरो,  
पुअणइ तूं नंद जिणनाह ॥ २ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिआ

न्द बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्म  
ल वावन मुखेवेदी, तिवल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥  
जेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैणावंती ॥ जैन  
शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ परपरिघ वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥  
सेव जविक मधुमाधव फेरी, जवनी फेरी नप्पजणंती ॥ कहै  
साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥  
तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ जवि तूं जण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै  
॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, शुभ रंगे हम गाजै  
॥ जवि० ॥ १ ॥ अणहलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सि  
छ आबाजै ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, जणी में जगति हि  
त काजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंड सूरि खरतर पति, धरम  
वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अठार श्रावण धुर, पंचमि दिवस  
समाजै ॥ ज० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु  
पसायै सुविध हुय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब  
लीला सुख साजै ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति सतर जेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उत्तरासण करकै तिलक करके रंकेवीमें  
स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणादर्चसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा  
चरणकमलकी में जानं बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी  
केनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष  
सोवनमें काया, मृग लंठन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ च  
क्रवर्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै०  
॥ ४ ॥ मंगल आरती जोरहिं कीजै, जन्म२ को लाहो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद  
पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदको पूजामें जो अवस्य चीज चाहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली  
छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रुवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद  
नव प्रकारका नैवद्य नवतरका फल नव प्रकारकी पक्काखजली मिश्री पतासा  
ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे  
नवनालीकेकलस ॥ ९ रकेबी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप  
नामें रोकनाणा रु१) ज्ञानपूजा नारेल समेंत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसैं जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी बड़ी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करो, तास धरी नर ध्यान ॥  
अरिहंतपद पूजा करो, निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ काव्य ॥ ७ पपन्न  
सन्नाण महोमयाणं, सप्पामि हेरा सणसंठियाणं ॥ सदेसणाणं  
दिव सज्जणाणं, नमो१ होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत  
प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ अथा जेहना  
ध्यानथो सौख्यज्ञाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ क  
र्या कर्म डुममर्म चक्रचूर जेणें, जला ज्ञव्य नवपद ध्यानेन तेणें  
॥ करी पूजना ज्ञव्य ज्ञावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण  
कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म नदये करीनै, दिये देसना ज्ञव्य  
ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाणिहारे समेता, सुरेसैं नरेसैं स्त  
व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, ज्ञवोप  
ग्रही च्यार बै जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकड्याणके सुख पामै, नमो  
तेह तीर्थकरा मोक्षकामै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं,  
धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वर  
वीरो जी ॥ तो० ॥ उल्लाखो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व  
ज्ञाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म ज्ञावे चरण थिरता वास

ता ॥ जिन नांमकर्म प्रज्ञाव अतिसयं प्रातिहारजे सोज्जता, जगजंतु  
 करुणावंत जगवंत जविकजनने ओज्जता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सी  
 मंधर साहिब आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे जव वर आनक तप कर, जि  
 न बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंदै पूजित जे जिन, कीजे तास प्र  
 णाम रे जविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ ज० ॥ जिम चिरकालै नं  
 दो रे ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ रत्नत्रयीतो वंदो रे  
 ॥ ज० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जे  
 हने होय कड्याणक दिवसे, नरके पिण भजवालूं ॥ सकल अधि  
 क गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग ऊपन्ना, जोग करम खिण जांणी ॥ लेइ  
 दीक्षा सिद्धा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्प्रवाह ॥ उप  
 मा एहवी जेहने ठाजै, ते जिन नमिये उच्चाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु ठाजै, पेंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबो  
 धि करे जगजनने, ते जिन नमिये उच्चाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥  
 ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो अको, दव्हह गुण पर्यायै रे ॥ जेदं छेद  
 करी आतमा, अरिहंतरूपी आयै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सां  
 जलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आतमा, रुद्धि मिले सब  
 आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ उँ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान  
 शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टद्वयं  
 यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अ  
 शुभ करम दूरै टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण  
 माणंद रमालयाणं, नमोऽर्पणं चउक्याणं ॥ सम्मग्ग कम्मस्सकयका

रगाणं, जन्मजरा दुष्क निवारणां ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय  
 पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि जय जेण वाम्या ॥ निरावरण  
 जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रि  
 ज्ञागोनदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानंत  
 सौख्यांश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्नवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥  
 ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अ  
 व्याबाध प्रजुतामई, आतम संपत जूपो जी ॥ उद्धालो ॥ जे जूप  
 आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपर्यें करी ॥ स्वद्व्यक्षेत्र स्वका  
 लज्ञावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वज्ञाव गुणपर्याय परणति, सि  
 द्धसाधन परजणी, मुनिराज मानसरहंस समवरु, नमो सिद्ध महा  
 गुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिज्ञाग  
 विलेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे  
 ॥ १८ ॥ ज० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग  
 ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणामो रंग रे ॥ ज० ॥  
 ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लो  
 कंत ॥ सादि अनंत तिहां अति जेहनी, ते सिद्ध प्रणामो संत रे ॥  
 ॥ २० ॥ ज० ॥ सि० ॥ जाणै पिण न सकै कहो पुर गुण, प्राकृत तिम  
 गुण जास ॥ उपमा विण नांणी जवसांहे, ते सिद्ध दिनु उद्धास  
 रे ॥ ज० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम,  
 विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध स  
 हज समाधि रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वज्ञाव  
 जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गु  
 ण खाणी रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ नै ॥ ह्रीं ॥ इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव आचारज पदनणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

इतिमर दूरै हरै, सूरै ज्ञाव असेष ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरिणदूरीकय  
 कुग्गदाणं, नमो२सरिसमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अ  
 स्कंरुवत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंझग  
 में प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ षट्त्वर्गवर्गित गुणै शोन्नमाना, पंचाचारने पा  
 लवे सावधाना ॥ २ ॥ ज्ञविप्राणिनें देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा  
 सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकळपा, जगत्ते चिरंजीवज्यो  
 शुद्धजळपा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणवत्तीसे  
 धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परज्ञावे निक्कामो जी उल्लालो  
 ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदधन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर  
 ज्ञान दरसन चरण बोरज, साधना व्यापारथी ॥ ज्ञविजीवबोधक  
 तत्त्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, उ  
 विधत्त पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै,  
 मारग ज्ञाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या  
 चो रे ॥ ज्ञ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर वत्तीसगुणैकरि सोजै, युगप्रधान  
 जगबोद्धै ॥ जगमोद्धे न रहे खिण कोद्धे, सूरि नमूं ते जोद्धे रे ॥  
 ज्ञ० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उवएसे, नहि विकथा  
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे  
 ज्ञ० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पमिचो  
 यण वलि जनने ॥ पटधारी गह्वरुंज आचारज, ते मान्या मुनिम  
 नने रे ॥ ज्ञ० ॥ २९ ॥ सि० ॥ अत्यमिये जिन सूरज केवल, वंदी  
 जे जगदीवो ॥ ज्ञुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो  
 रे ॥ ज्ञ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज ज्ञला, महामं  
 त्र शुभ्र ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे  
 ॥ वी० ॥ ३१ ॥ ते ह्रीं आचार्यपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोन्नित गात्र ॥



उवझायापद अरचियै, अनुत्तवरसमो पात्र ॥ १ ॥ काठ्य ॥ सुतश्च  
 वित्थारणतप्पराणं, नमोश्वायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायरा  
 णं, सच्चप्पणावज्झियमञ्जराणं ॥ १ ॥ नदी सूरि पिण सूरिगुणने सु  
 हाया, नमूं वाचकात्यक्तमदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादिसूत्रार्थदा  
 ने, जिके सावधाने निरुद्धान्निधाने ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्गवर्गितगु  
 णौघा, प्रवादित्तिपोच्छेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंजपूता,  
 उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रज्ञूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ,  
 अज्जव महवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥  
 उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता शुभधरा ॥ स्या  
 द्वादवादं तत्त्वसाधक, आत्मपरविभंजनकरा ॥ जवज्जीरुसाधनधी  
 रसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदांसमरश्च, नमोपाठ  
 कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिंझाय करे जे, पारगधारण  
 तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥  
 ज्ञ० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांसविज्ञागे, आचारज उवझाय ॥  
 जवत्रिएहै जे लहै शिवसंपद, नमियै ते सुपसायरे ॥ ज्ञ० ॥ ३५ ॥ सि०  
 ॥ मुखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पाहणने पल्लवआणै ॥ ते उवझाय स  
 कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजांणे रे ॥ ज्ञ० ॥ ३६ ॥ सि० ॥ रा  
 जकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, ते उवझाय सदा ते  
 नमतां, नावै जवज्जय सोग रे ॥ ज्ञ० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनाचंद  
 नरस समवयणै, अहितताप सवि टालै ॥ ते उवझाय नमिजे जे  
 वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ ज्ञ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥  
 तपसिंझायै रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते  
 आतमा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ नै ह्रीं श्रीपा  
 ठकपदे अष्ट इव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमारग साधनज्ञणी, सावधान अया जेह ॥



ते मुनिवरपद वंदता, निरमल आये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूण सं  
 साहियसंजमाणं, नमो २ शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं,  
 मुणीणमाणं पयठिआणं ॥ करेजेवनामूरिवायगगणीनी, करूंवर्णना  
 तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुतैनहाकाम  
 जोगेषुलिता ॥ ४१ ॥ वलोबाह्यअज्यंतैरग्रंघटाली, हुईमुक्तिनेयो  
 गचारित्रपाली शुजष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा  
 प टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनै, निक्का  
 मी निस्संगी जी ॥ जवदव ताप समावता, आत्म साधन रंगी  
 जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रम्येणें देह निर्मम निर्मदा,  
 कानसगमुडा धीर आसन ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै  
 कर्म जीपै नैव ठीपै परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन प्र  
 णमौ हितजणी ॥ ४३ ॥ ढाल ॥ जिम तरुफूले जमरो बेसे, पीमा  
 तमु न नुपाय ॥ लेई रस आत्म संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय  
 रे ॥ ज० ॥ ४४ ॥ सि० ॥ पांचंडीनै जे नित जीपे, षट्काया बंधु  
 प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ ज० ॥  
 ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च  
 रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ज०  
 सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुत जे पाले, बारे बिध तपसूरा ॥ ए  
 हवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ ज० ॥ ४७ ॥  
 सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन २ चढतै वानै ॥ संजम  
 खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानै रे ॥ ज० ॥ ४८ ॥ सि०  
 ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरषै नवि सोचै रे ॥ साधु सु  
 धा ते आत्मा, स्युं मुंमै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं ॥  
 साधुपदं अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर जपित शुद्ध नर, तत्त्वदृष्टी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु-  
 ततत्तेरुइलक्षणस्स, नमो२ निम्मलदंसणस्स ॥ मिच्चतनासाइसमु-  
 ग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहाउमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिथ्या,  
 टलेजेअनादीअवैजेकुपय्या ॥ जिनोकैहुइंसहजयीशुद्धध्यानं, कहि-  
 बैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि-  
 चित्रंजवारणयकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैकयतेहहोवै, तिहांआपरूपैस-  
 दाआपजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसन गुण नमो, तत्व प्रतीत सरू-  
 पी जी॥जसु निरधार स्वज्ञाव वै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥  
 जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सबल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता ज्ञाव प्रग-  
 टै अनुजव करुणा उठलै॥बहु मांन परणित वस्तु तत्वे अहव सुख कारण-  
 पणै, निज साध्य दृष्टै सरब करणी तत्त्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध-  
 देव गुरु धर्म परीक्षा, सदहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजै,  
 सम्यग्दर्शन नाम रे॥ ज्ञ० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम कय उ-  
 पशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अजंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,  
 जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज्ञ० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश-  
 म लहीजै, कयउपसमीव असंख ॥ एक वार कायक ते सम्यक्,  
 दर्शन नमीइ असंख रे ॥ ज्ञ० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र-  
 माण न होवै, चरित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जे-  
 विण लहिये, समकित दरसन बलिउ रे ॥ ज्ञ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥  
 समसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श-  
 न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज्ञ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥  
 ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे॥ दर्शन ते-  
 हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ नै ह्री-  
 प० दर्शनपदे अष्ट इयं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञानतो, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आ

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल आये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूण स  
 साहियसंजमाणं, नमो शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं,  
 मुणीणमाणं षषडिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूवर्णना  
 तेहनीसीमुणीनी ॥ समंतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुसैनहाकाम  
 जोगेषुलिता ॥ ४१ ॥ बलोवाह्यअन्यंतैरग्रंथटाली, हइंमुक्तिनेयो  
 गचारित्रपाली शुजष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा  
 प टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनै, निक्का  
 मी निस्संगी जी ॥ जवदव ताप समावता, आत्म साधन रंगी  
 जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,  
 कानसगमुडा धीर आसन ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै  
 कर्म जीपै नैव ठीपै परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन प्र  
 णमौ हितजणी ॥ ४३ ॥ ढाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो बेस, पीमा  
 तमु न उपाय ॥ लेई रस आत्म संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय  
 रे ॥ ज० ॥ ४४ ॥ सि० ॥ पांचंडीनै जे नित जीपे, षट्काया बंधु  
 प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, बंदू दीनदयाल रे ॥ ज० ॥  
 ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अठारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च  
 रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ज०  
 सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुत जे पाले, वारे विध तपसूरा ॥ ए  
 हवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ ज० ॥ ४७ ॥  
 सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढतै वानै ॥ संजम  
 खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानै रे ॥ ज० ॥ ४८ ॥ सि०  
 ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरषै नवि सोचै रे ॥ साधु सु  
 धा ते आत्मा, स्युं मुंनै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं  
 साधुपदं अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर जपित शुद्ध नर, तत्त्वदानी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शनं सदा, आदरिष्यै शुभं रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु-  
 त्तत्तेरुइलक्कणस्स, नमो२ निम्मलदंसणस्स ॥ मिच्चत्तनासाइत्तमु-  
 ग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहाडुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिच्छया,  
 टलेजेअनादीअवैजेकुपय्या ॥ जिनोत्तैहुइंसहजयीशुद्धध्यानं, कहि-  
 बैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहयीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि-  
 चित्रंजवारणयकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैक्यतेहहोवे, तिहांआपरूपैस  
 दाआपजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दर्सण गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरू-  
 पी जी॥जसु निरधार स्वप्नाव वै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥  
 जे अनूप अद्धा धर्म प्रगटै सबल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता ज्ञाय प्रग-  
 टै अनुजव करुणा नञ्जलै॥बहु मांन परणित वस्तु तत्त्वे अहव सुख कारण  
 पणै, निज साध्य दृष्टै सरब करणी तत्त्वता संपति गिलै॥५२॥ढाल॥शुद्ध  
 देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्वहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजै,  
 सम्यग्दर्शनं तांम रे॥ ज्ञ० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम कय उ-  
 पशम जेहयी, जे होइ त्रिविध अजंग ॥ सम्यग्दर्शनं तेह नमीजै,  
 जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज्ञ० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश-  
 म लहीजै, कयउपसमीय असंख ॥ एक वार कायक ते सम्यक्,  
 दर्शन नमीइं असंख रे ॥ ज्ञ० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र-  
 माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे  
 विण लहिये, समकित दरसन बलिउ रे ॥ ज्ञ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥  
 समसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श-  
 न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज्ञ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥  
 ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते  
 हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ नै ह्री  
 प० दर्शनपदे अष्ट ड्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पंद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आ

ते मुनिवरपद वंदेता, निरमल आये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूण सं  
 साहियसंजमाणं, नमोऽशुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं,  
 मुणीणमाणं पयठिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूंवर्णना  
 तेहनीसीमुणीनी ॥ समंतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुतैनहकाम  
 जोगेषुलिता ॥ ४१ ॥ वलोबाह्यअज्यंतैरग्रंशटाली, हइंमुक्तिनेयो  
 गचारित्रपाली शुजष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा  
 प टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनैं, निक्का  
 मी निस्संगी जी ॥ जवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी  
 जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रम्यणें देह निर्मम निर्मदा,  
 कान्तसगमुडा धीर आसन ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै  
 कर्म जीपै नैव ठीपै परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन प्र  
 णमौ हितजणी ॥ ४३ ॥ ढाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो बेसे, पीमा  
 तमु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय  
 रे ॥ ज० ॥ ४४ ॥ सि० ॥ पांचंडीनैं जे नित जीपे, षट्काया बंधु  
 प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ ज० ॥  
 ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अठारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च  
 रित्र ॥ मुनिमहंत जगणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ज०  
 सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुत जे पाले, बारे बिध तपसूरा ॥ ए  
 हवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ ज० ॥ ४७ ॥  
 सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढतै वानै ॥ संजम  
 खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानै रे ॥ ज० ॥ ४८ ॥ सि०  
 ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरबै नवि सोचै रे ॥ साधु सु  
 धा ते आतमा, स्युं मुंनै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं ॥  
 साधुपदं अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर जपित शुद्ध नर, तत्त्वदृष्टी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शनं सदा, आदरिष्यै शुभ्र रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणुः  
 ततत्तेरुल्लक्षणस्स, नमोऽ निम्नलदंसणस्स ॥ मिच्चतनासाइत्तमुः  
 गमस्स, मूलस्ससधम्ममहाडुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिच्छया,  
 टलेजेअनादीअवैजेकुपय्या ॥ जिनोक्कैहुइंसहजयीशुद्धध्यानं, कहि  
 वैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहयीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि  
 चित्रंनवारण्यकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैक्यतेहहोवे, तिहांआपरूपैस  
 दाआपजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दर्सण गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरू  
 पी जी॥जसु निरधार स्वज्ञाव वै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥  
 जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सबल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता ज्ञाव प्रग  
 टै अनुज्ञव करुणा उड्डलै॥बहु मांन परणित वस्तु तत्त्वे अहव सुख कारण  
 पणै, निज साध्य दृष्टै सरब करणी तत्त्वता संपत्ति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध  
 देव गुरु धर्म परीक्षा, सदहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजै,  
 सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ ज्ञ० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम कय उ  
 पशम जेहयी, जे होइ त्रिविध अजंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,  
 जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज्ञ० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश  
 म लहीजै, कयउपसमीब असंख ॥ एक वार कायक ते सम्यक्,  
 दर्शन नमीइ असंख रे ॥ ज्ञ० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र  
 माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे  
 विण लहिये, समकित दरसन बलिउ रे ॥ ज्ञ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥  
 समसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श  
 न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज्ञ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥  
 ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते  
 हिज आत्मा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ नै ह्री  
 प० दर्शनपदे अष्ट ड्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञानतो, सिद्धचक्र तत्प्रमाद ॥ आ



राधीजै गुप्त मनै, दिन२ अधिक उगाह ॥ १ ॥ काव्य ॥ अत्राण  
 सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगा  
 रगस्स, सत्ताणसवत्थपयासगस्स ॥ होइजेहथीज्ञानगुहप्रबोधै, यथा  
 वर्णनासैविचित्राविबोधै ॥ तिणेंजाणीयेवस्तुपट्ठव्यज्ञावा, नहोवै  
 विकञ्चानिजेह्वास्वज्ञावा ॥ एए ॥ होइपंचमत्यादिसुग्यानजेदै, गुरु  
 पासथीयोग्यतातेहवेदइं ॥ वलीज्ञेयहेयानुपादेयरूपै, लहैचिचमांजे  
 मध्यानेंप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ ज्ञव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपरप्र  
 काशक ज्ञावै जी ॥ परयाय धरम अनंतता, जेदाजेद स्वज्ञावै जी  
 ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधवास विलासता,  
 मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंठना ॥ स्याद्वादसं  
 गी तत्त्वरंगी प्रथम जेद अजेदता, सवि कळप ने अविकळप वस्तु  
 सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ ज्ञक अज्ञक न जे विण ल  
 हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान  
 ते सकल आधार रे ॥ ज० ॥ ६२ ॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान ने पीठे अहिंसा,  
 श्रीसिद्धांतै ज्ञारख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञानम निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चा  
 ख्युं रे ॥ ज० ॥ ६३ ॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते अध्या, तेहनं मूल  
 जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित२ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये  
 रे ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सि० ॥ पांचज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाश  
 क तेह ॥ दीपकपर त्रिजुवन उपगारी, बलि जिम रवि शशि मेह  
 रे ॥ ज० ॥ ६५ ॥ सि० ॥ लोक ऊरध अथ तिर्यग्ज्योतिष, वैमानि  
 क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुऊ गुळी  
 रे ॥ ज० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म ठै, कय  
 उपशम तसु आये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता  
 जायै रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ नुं ह्नीं प० ज्ञानपदे अष्ट डव्यं यज्ञा  
 महे स्वाहा ॥ इति ॥



॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊमेद ॥ पूजत  
अनुजवरस मिले, पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिय  
खं मिअसकियस्स, नमो२संजमवीरिअस्स ॥ सप्रावणासंगविवट्टिअ  
स्स, निघाणदाणाइसमुज्झवस्स ॥ बलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निरा  
संसताद्वाररोधेप्रसंगै ॥ जवांजोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरुंतेहचारित्र  
अप्राप्तमल्यं ॥ ६७ ॥ होइजासमहिमाअकीरंकराजा, बलिछादशां  
गीजणीहोइताजा ॥ बलिपापरूपोपिनिप्पापथायै, अईसिद्धतेकर्मने  
पारजायै ॥ ६८ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण बलि२ नमो, तत्त्वरमण  
जंसु मूलोजी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकलसिद्धिअनुकूलो जी ॥  
उल्लाखो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचि  
परम खंति सुनीद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक जे  
द धरमैं यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्ज्वल काम  
कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही  
यतिने अजिरांम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजै तास प्रणाम  
रे ॥ ज० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे षट्खंम सुख ठंमी, चक्र  
वर्त पिण वरिनु, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहे धरि  
नु रे ॥ ज० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद  
नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिनु ज्ञान आनंद रे ॥  
ज० ॥ ७३ ॥ सि० ॥ बारमासपर्यायै तेहनें, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥  
शुक्ल अजिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ ज० ॥ ७४  
॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र  
नांम निरुक्ते जाख्युं, ते बंदू गुणगेह रे ॥ ज० ॥ ७५ ॥ सि० ॥  
॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निजस्वप्नावमांहि रमतो रे  
॥ लेस्या शुद्ध अलंकरयो, मोहवने नवि जमतो रे ॥ वी० ॥ ७६  
॥ नै ह्रीं प० चारित्रपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन  
 ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म  
 हुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽतिव्रतवोवरस्स ॥ अण्णगलदीणनिबंधण  
 स्स, दुसङ्गअत्थाणयसाहणस्स ॥ ७७ ॥ इयनवययसिद्धिलद्धि, विज्जास  
 मिद्धं, पयमियसरवग्गंहीतिरेहसमग्गं ॥ दिसिवइसुरसारंखोणिपीढाव  
 यारं, तिजयविजयचक्कंसिद्धचक्कनमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालिकपणें कर्म  
 कषाय टालै, निकाचितपणें बाधिया तेह बालै ॥ कह्यो तेह तप  
 बाह्य अन्न्यंतर दु जेदे, कमायुक्ति निर्हेत दुध्वान तेदे ॥ ७९ ॥ होइ  
 जांस महिमाशकी लब्धि सिद्धि, अवांठकपणे कर्म आवरण शुद्धि  
 ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतै, होइ सिद्ध सीमंतनी जिम संके  
 ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवज्जव सिव  
 जावै देव नर जवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रज्ञा  
 वै, सवि दुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इहा  
 रोधन तप नमो, बाह्य अन्न्यंतर जेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व  
 ता, पर परणति उठेदे जी ॥ १ ॥ उच्चालो ॥ उठेद कर्म अनादि  
 संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुज योग संग आहार टालो ज्ञाव अ  
 क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधै सर्व संवरता करी, निज आ  
 त्मसत्ता प्रगट ज्ञावै करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न  
 वपद गुणमंरुलं, चउ निक्केप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स  
 म्यग्ज्ञानें जाणो जी ॥ उच्चालो ॥ निरधारसेती गुणे गुणनो करइजे  
 बहुमांन ए, जसु करण ईहा तत्त्वरमणें आयै निरमल ध्यान ए ॥  
 इम शुद्धसत्ता जलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अकृय अनंत म  
 हंत चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ८३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख  
 कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लब्धिविज्जा सिद्धि मंदिर न  
 विक पूजो मन रली ॥ नवज्ञाय वर श्रीरजसारह ज्ञानप्रमसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोभता ॥ ८४ ॥ ढाल ॥  
जाणता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म  
खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि  
काचित पिण दाय जायै, दामासहित जे करतां, ते तप नमियै ते  
ह दीपावै, जिनशाशन नजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही  
पसुहा बहु लद्धि, होवै जास प्रजावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र  
गटै, नमियै ते तप जावै रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव  
सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो  
वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां  
हि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न  
मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद  
अणतो तिहांलीनो, हुनं तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोप्रे  
खंमै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ  
हाराधन संबरी, परणित समता योगै रे ॥ तप ते एहिज आतमा,  
वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो,  
जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावै थिर हून, परजावै मत  
राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे रुद्धि दा  
खी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणज्यो, आतमराम बै साखी रे ॥  
वी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य बै जिन कहा, नवपद मुख्यते जाणो रे  
॥ ए हतणै अविलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ ९४ ॥ ढाल  
वारमी एहवी, चोथै खंमै पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय  
न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ नुँ ह्नीं प० तपपदे अष्ट इव्यं  
यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव स्नात्रिया केसरसैं तिलक करे, हांथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साधिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढ़ावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढ़ावै ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढ़ावे, आचार्यपदमें चिणोकी ढाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, बाकी च्यारपदमें चावल चंदनलेपित गोटा चढ़ावे, श्वेतधजा चेत्रीपूनम आसोजीपूनम वगेरोंमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदो के न्यारेर कह के चढ़ावे, गटे मुजव पटे पर नव साधिया कर बीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजव यथाक्रम चढ़ावै ॥

॥ ओली करणवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा तथा उल्लाहे तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेपं यजामहे कहणा. एसें नवपदो की चाल ओर उल्लाहा पद वासक्षेप चढ़वाणा ॥

॥ अथ दार्दागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल डुष्कृत दाय निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरेश्वरणां यजे ॥ १ ॥ नै ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसरवारिण, निखल जाड्यरुजातं पहारिणा ॥ सकल ० ॥ नै ह्रीं श्री श्रीजिनकु ० ॥ २ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत् पट्टपद चंदकै ॥ सकल मं ० ॥ नै ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्मलै, प्रवर मौक्तिक पूंज वडुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल ० ॥ नै ह्रीं श्री ० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहुविधैश्चरुजिर्वटकेयकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखर्जकै ॥ सकल मं ० ॥ नै ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कंचनज्ञाजन संस्थितै ॥ सकल मं ० ॥ नै ह्रीं श्री श्रीजि ० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरिताखिल दिक्षुसुधूम्रकः ॥ सकल मं ० नै ह्रीं श्री ० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटै, सुसुखदैः

किल श्रीफल चिर्जटै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री० फलं यजामहे  
स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्वरुप्रदीप  
क धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० अर्घं यजा  
महे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरी  
जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहण सब  
दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पमंती धारा, जयवारण तूही सुख  
कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरौ सब दुर्म  
ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चौथी मुगलपूत जियदायक, सुरवर हुक  
म धरै ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ स  
कलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ छठी थांजोवज विदारी, विद्या  
पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी,  
सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती  
कीजै, मनवंडित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलाज खर  
तर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ९ ॥  
इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसे दिन १० इस सूतक ॥ पुत्री जन्म हो  
नेसे दिन १२ बार सूतक ॥ नर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके  
एक मासको सूतक ॥ पुत्र होके मरण पाये, तो दिन १ एक सूतक ॥  
परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, जैष, घोमी,  
सांढ, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कले  
वर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी  
नेष्टायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ नर जितना महिनाको गर्ज गिरे, तितने दिन सूतक ॥  
 अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १९ बार  
 दिन देवपूजा न करे. नर मृतकके सूतक में घरका जो  
 मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥  
 नर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. नर जो मृत  
 कको बुवा होवे, सो ९४ चोवीस प्रहर पश्चिमण न करे ॥ जो  
 सदाका अखंड नियम होवे, तो समताजाव रख कें संवरपणामें  
 रहे. परंतु मुखसे नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं. स्थापना  
 जीके हाथ लगावे नहिं. नर जो मृतकको बुवा न हो तो मात्र  
 आठ प्रहर पश्चिमण न करे ॥

जैसेके जब बच्चा होय, तब १५ पहर दिन पीठें दूध पीणो  
 कट्ये. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीठें दूध पीणो कट्ये.  
 बकरीको दूध ८ आठ दिन पीठें पीणो कट्ये ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन ज्ञांकादिकको न बुवे. प्रचार दिन  
 प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक का  
 रणें तिन दिवस उपरांत कोई स्त्रीको रक्त चलता दीसे, जिसका  
 विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध दिवसमें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीठें  
 स्थापना पुस्तक बुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा  
 न करे, साधुको पस्विजाते. ऋतुवती तपस्या करे, सो तो सफल  
 होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न  
 होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सू  
 तक होवे, उहां १९ बार दिन तक साधु आहार पाणी न बढ़ेरे.  
 सूतकवालेका घरका जलसे तथा अग्निसे १२ बारा दिन तक देव  
 पूजा न करे. निशीयमूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत  
 कवालेका घर दुर्गन्धनिक कहा है.





- ११ अकालें बीज नडकापात होय तो प्रहर ? असञ्चाय.
- १२ अजवालीये पक्षें समी सांज, पन्वो, बीज, त्रीज, इयारी असञ्चाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.
- १३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर ? एक असञ्चाय.
- १४ जूमिकेंपें प्रहर ॥ आठ असञ्चाय.
- १५ चंद्रग्रहणें प्रहर ? १ वार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असञ्चाय.
- १६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ वार असञ्चाय.
- १७ आलाढ चउमासा पम्किमण वाथाहूती प्रहर ? ३ वार असञ्जाय.
- १८ कार्तिक चउमासे पण प्रतिक्रम्या पीठें पम्किवा लगें प्रहर वार असञ्जाय.
- १९ मांडोमांडे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असञ्जाय.
- २० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असञ्जाय.
- २१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यांपर्यंत असञ्जाय.
- २२ फागण चउमासे रजपर्वी ज्यां लगें रज नमे, अने उपशमे नहिं, तां लगें असञ्जाय.
- २३ दंभको मार पळते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असञ्जाय.
- २४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥
- २५ नगरमांडे प्रधान पुरुष विहने, तो अहोरात्र असञ्जाय.
- २६ उपाश्रयथी सात घरमांडे जो कोइ पुरुष विहने, तो अहोरात्र असञ्जाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणउद्धरे एढले ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असव्वाय.

२८ तिर्यचना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो माहे अहो-  
रात्र असव्वाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो माहे अहो-  
रात्र असव्वाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पमे हाथ १०० सो माहे  
सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे अके दिन ३ त्रश असउजाय.

३२ आर्झ नक्षत्र आव्वा पीठें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे,  
बीजे, मेह वरसे, तो असउजाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ स्नात असव्वाय. अने दीकरीने प्रस  
वे दिन ८ आठ असउजाय.

३४ कालग्रहण विषकी जखवो गुणवो नहिं. ग्रहर १२ बार  
असउजाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्तिकवदि १, मागशि  
रवदि १. ए चार दिवसें सदैव असउजाय अने सूत्रनी असउजाय  
तो ग्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने ग्रहर ॥

॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल ग्रहर ८, राव ग्रहर १२, बीस ग्रहर २०, गढी  
ग्रहर २४, दहिं ग्रहर १६, दूध ग्रहर ४, कांजीबमां ग्रहर २४,  
घोरुवमां ग्रहर ४, तट्यां वमा ग्रहर ४, पूमी ग्रहर ८, रोटी ग्रहर  
४, तथा ६. बाजरा कुण्ण ग्रहर १२, जवार कुण्ण ग्रहर १२, बा  
जरीकी खीचमी ग्रहर ८, जवारकी खीचमी ग्रहर ८, चावलकी

खीचनी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्कान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्कान्न दिन १५, वरसाले पक्कान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हप्तेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी त्रीजोइ प्रहर ८, पाणीकी नसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४, वस्ती प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६, रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु एकीये परिमाण उपरांत चखितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन और पूजन विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते ॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली नुर कांकणमोरा मंत्राय के बांधै ॥ (नमो परमेष्ठि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसैं गुरु आत्मरक्षा करावै, पीठै एक आलीमें १०, एक आलीमें ९, फेर एक आलीमें फेर ९, एसैं १८ नागरवेलका पान रखै, जिसपर पुष्प अकृत नैवेद्य फल रोकड्य यथाशक्ति धरै नुरनी पंचामृत फूल पुष्पमाला अकृत नैवेद्य तरे२ के गीले नुर सूकेफल अतर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखै, फेर स्नात्रपूजा की आपना रखै, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीठै दसदिग्पाल के पट्टे ऊपर जलका गींटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढ़ाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेलका पान चढ़ावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पढ़ेकी पूजाविधि ॥

॥ नैऋत्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इहअस्मिन्जं  
 बूद्धीपे दक्षिणक्षरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो  
 ह्वे आगच्छ १ वलिगृहाण १ उदयमज्युदयं कुरुस्वाहाः नैऋत्याय न  
 मः इति इन्द्राह्वानपूजा ॥ ( पूर्वदिशि जल चंदनादि अष्ट इव्य च  
 ढावै ) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायुधाय सवा  
 हनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबूद्धीपे दक्षिणक्षरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे  
 अमुकचैत्ये अमुकपूजामहोह्वे आगच्छ १ वलिगृहाण १ उदयमज्यु  
 दयं कुरुस्वाहाः नैऋत्याय नमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ नैऋ  
 त्याय सायु० सवा० सपरिहृदा अस्मिन्जंबु० दक्षिण० अमुकन०  
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजा० आग० बलिगृ० उदयम० स्वाहा नैऋ  
 त्याय नमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय  
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहोह्वे  
 आग० बलि० उदय० स्वाहा नैऋत्याय नमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दि  
 ग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू०  
 आ० बलि० उदय० स्वाहा नैऋत्याय नमः ॥ पश्चिम० ॥ ५ ॥ अथ वा  
 यव दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द०  
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजामहोह्वे० आ० बलि० उदयम० स्वाहा  
 नैऋत्याय नमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ नैऋतेरा  
 य सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमु  
 कपूजामहोह्वे आ० बलिगृ० उदय० स्वाहा नैऋतेराय नमः उत्तर  
 दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु०  
 सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० बलि० उद० स्वाहा  
 नैऋत्याय नमः ॥ ईशानकूण ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥  
 नैऋते सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्ये

णा सन्निहिषाय तेसवेविलेवण ध्रुवपुष्पफलवश्वसणाहिं वलिपद्मि  
 छंता तुष्टिकराज्वंतु पुष्टिकरा संतिकराज्वंतु सवज्जणंकुर्वंतु सवजि  
 णाणं संहणप्पज्जावज्ज पसन्नज्जावतणे सवत्थरस्कंतुकुर्वंतु सवदुरिधाणी  
 नासंतु सव्वाशिवमुवसमंतु संतितुष्टिपुष्टिसिवसत्थयणकारिणोज्ज्वंतु  
 स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासुदेवकूं मंत्रके बलबाकुलमें  
 मालके सुद्ध करे ॥ पीछे आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके  
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखडोमे. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर  
 इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाल खो  
 लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खमा रहे, २ दूसरा केसरकी  
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चौथा अ्रेता, ५ पांचमा धूप  
 धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा  
 जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी आली, ११ इग्यारमा मंग  
 लवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकैक दिशाकी तरफ खमा रहे.  
 जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूकै तब क्रमसें जल चंदन फूल बा  
 कुलादिक चढावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो  
 स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ ( ऐसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ  
 बलबाकुल चढावै ) ( अश्विकूशके सामने ) ॥ सदावह्निदिशो  
 नेता पावकोमेपवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥  
 ( ऐसा कह बाकुलादिद्रव्य चढावै ) ( दक्षिणदिशाकी तरफ ) ॥  
 दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहियवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥  
 ( बलबाकुल चढावै वाजित्र बजावै ) ( नैऋतकूणकी तरफ ) ॥  
 यमापरांतरालोको नैऋतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥  
 ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ ( अथ वायव्यकूण ) ॥ हरिणोयाहनयस्य  
 वायव्याधिपतिर्मस्तु संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तर दिशि )  
 ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥  
 ( ईशान कूण ) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य०  
 वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशि ) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म  
 वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ उर्ध्वदिशि ) ब्रह्मलोकवि  
 ज्ञोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि  
 ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ ओर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ नूनमोइंझाय पूर्वदिग्अधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र  
 नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्धे अमुं न  
 गरे अमुकचैत्ये अमुं रुमहोहवे सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥  
 पूर्वदिशाकी तरफ नूनमोइंझायनमः ॥ १ ॥ ( अग्नि कूण ) ॥ नूनमोअ  
 ग्निमूर्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०  
 सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ इति ॥ ( दक्षिणदिशि ) नून  
 मोयमाय दक्षिणदिग्अधिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण  
 मुर्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वा  
 हा ॥ ३ ॥ इति ॥ ( नेरुतकूणे ) ॥ नूनमोनेरुताय खरुगहस्ताय  
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष २ गच्छ २  
 स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशि ) ॥ नूनमोवरुणाय पश्चिम  
 दिग्अधिष्ठायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०  
 सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ ( वायवकूणे ) ॥  
 नूनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०  
 सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

( उत्तरदिशि ) ॥ नैनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्टायकाय नरवाहनाय  
 गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाद्दलि० गच्छ१ स्वा  
 हा ॥ ७ ॥ इति ॥ ( ईशाणकूणे ) नैनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय  
 ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्द  
 लि० गच्छ१ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( उर्ध्वलोके ) नैनमोव्रह्मणे रा  
 जहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०  
 अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ए ॥ इति ॥ ( अधोलोके )  
 नैनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०  
 अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि१ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ ( इस  
 तरे पढे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढै ॥ यथा ॥ शक्राद्या  
 लोकपालादिशिविदिसिगता शुद्धसद्धर्मशक्ताः, आयातास्त्रात्रकाले क  
 लुषहृतिकृते तीर्थनाथस्यज्जक्त्या, न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसु  
 खाः स्वास्पदंसांप्रतंतं, स्त्रात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदीयांतुकड्याण  
 ज्ञाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्षम  
 तंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि  
 पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीठै यथाश  
 क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश  
 दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्त्रात्रिया मंत्रितजलसे स्नान  
 करे ( जलमंत्र ) नै ह्रीं अमृतेअमृतोज्जवे अमृतवर्षणी अमृतंश्राव  
 य१ स्वाहा ( इस मंत्रसे जलमंत्रे, पीठे ) नै ह्रीं अमलेविमले वि  
 मलोज्जवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिज्जवाभिस्वाहा (इस  
 मंत्रको सातवेर पढता हुवा स्नान करे, पीठे ॥ नै ह्रीं आँ क्राँः॥ (सा  
 त वेर इस मंत्रसे वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीठे ॥ नै आँ ह्रीं क्राँ अर्हते



नमः ) इस मंत्रसे सात वेर गुरु पाससे केसर मंत्रायके तिलक करै. ( पीठै ) ऊँ ह्रीं अवतर२ सोमे२ कुरु२ वटगु२ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे ऊँकवलीकः कः स्वाहा ॥ ( इस मंत्रसे मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके बांधै नर जब मंमलजीके च्यारुं तरफ मौलीमेंढल बांधे सोत्ती इसी मंत्रसे मंत्रायके बांधे. इस तरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सामने हाथ जोमके बैठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससे तीन वेर पढेके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन वेर नवकारमंत्रसे मंत्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंमलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्थ कराणी चाहियें. पीठै मंमलजीमें अधिष्ठायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टद्रव्य चढावै. पीठै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावै, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकद्रव्य इत्यादि सर्वद्रव्य (ऊँक्षेत्रपालाय नमः ) ऐसा बोलता हुवा चढावै. पीठै मंमलजीके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी आपना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढेके जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढेके ऊपर लालवस्त्र मोलीसे बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीठै बायें तरफ नवग्रहके पट्टेकी आपना कर पूर्वोक्त काव्य पढेके इसी मुजब पूजा करै. ) पीठै सर्व स्नात्रिया कूं १७ स्तुतीसे देववंदावै.

अदारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पहली इरियावही पन्क्तिमें च्यार नवकारका कानसगग कर लोगेस्स कहे. नीचे बैठके दहिणागोमा धरतीपर रख के मावागोमा नमीजूत करके चैत्यवंदनकरै,

नमोऽष्टुणं० कहके अरिहंतचेऽयाणं० वंदणवत्ति० अन्नत्तु० १  
 एक नवकारका कानसगग करै. नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंहिन  
 मनादेव शुईकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्नत्तु० एक  
 नवकारका कानसगग इस शुईकी दूसरी गाथा कहे. पुस्क  
 रवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका कानसगग० शुईकी तीसरी  
 गाथा कहे. सिद्धाणं बुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका  
 कानसगग शुईकी ४थी गाथा कहे. पीठै बैठके नमोऽष्टुणं कहके स्वमा  
 हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकानसगगं वंदण  
 व० अन्नत्तु० १ नवकारका कानसगग कर० ॥ रोगशोगादिनिर्दोषै रं  
 जितायजितारथे नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ ( ततः  
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तं करेमिकानसगगं० १ नवकारका कानसगग )  
 ॥ श्रीशांतिजिनज्ञाया ज्ञायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांति  
 मपनीयते ६ ( ततः श्रीशुतदेवतानिमित्तं० ) सुवर्णशालनीदेयात्  
 द्वादशांगीजिनोद्भवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं ॥ ७ ॥ ( ततः श्री  
 शुवनदेवताआराधनार्थं० ) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ ( ततः  
 क्षेत्रदेवतानिमित्तं० ) यासां क्षेत्रगतास्सन्ति १ गाथा कहे ॥ ए ॥  
 ( ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं० ) अंबानिहितमिंवामे सिद्धबुद्धसम  
 न्विता सितोसिंहेस्थितागौरी वितनोत्तुलसीहितं ॥ १० ॥ ( ततः श्री  
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं० ) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुडो  
 पद्मतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ ( ततः श्रीचक्रेश्वरीदे  
 वतानि० ) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निष्ठा चिरंचक्रेश्वरीदेवी  
 नंदतानिवज्राच्चमां ॥ १२ ॥ ( ततः श्रीअक्षुतादेवतानि० ) स्वर्णखे  
 टककोदंरु बाणपाणिस्तमित्युतिः तुरंगगमनाक्षुता कट्याणानिकरो  
 तुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुवेरदेवतानि० ) मथुरापुरीसुपार्श्व श्री  
 पार्श्वस्तूपरहका श्रीकुवेरानगरारूढा सुतांकावतुवोज्ञवात् ॥ १४ ॥

( ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि ) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया  
 द्वीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥  
 ( ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि० ) यागोत्रंपालयत्येव सकलाषायतःस-  
 दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ ( ततः श्रीशक्रा  
 दिसमस्तदेवतानिमि० ) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः  
 देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षत्वपायतः ॥ १७ ॥ ( ततः श्रीसिद्धाधि  
 का श्रीशासनदेवतानि० व्याख्योलोगस्सको कानुस्सग्गकर स्तुति  
 कहे ) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धाधिकापातु  
 चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके बैठै चैत्यवं० नमोतु०  
 जयवीरराय पर्यंत कहै ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठाविधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दी  
 पक करै. इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै ( पीठै ) सो  
 ने चांदी बगेरे के कलसमें अबोटजल जरके सोनवाणी करै, हाथमें  
 कलस लेके सात नवकार गुणै॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु  
 स्वाहा॥ इस मंत्रसे सात बेर जलको मंत्रके मंजुलजीके चारों तर  
 फ धारा देवे, ऊपर जरा ठींटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीठै)  
 नवतारी मौलीसूत्रका साढ़ातीन आंटा मंजुलजीके बाहर करदेवे,  
 पूर्वोक्त मंत्रसे मंत्रके मौली तथा मंडल मरोमाफली चारुं तरफ  
 बांधे (पीठै) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ ॐ आं ह्रीं श्री अर्हतेनमः॥  
 इस मंत्रसे मंत्रके मंजुलके ऊपर केसरका ठींटा देवे ( ऊपर ) चा  
 वलोंको साधियो करै, टीकीदेवे, मंजुलके अगामी साधिया चाव  
 लोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर जेट धरै. ( पीठै )  
 केशरचंदन लेकर मंजुलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क  
 रै ॥ (पीठै) बालकेप पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ नमोस्तीनूतधात्रीविश्वा

धारैनमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंमलजूमि तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरुवासक्षेप हाथमें लेके ॥ नै ह्रीं श्री अर्हत्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंमलपीठकी पूजा करे (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन बेर मंमल कों वधावे. नीचे चावलोंका सात्रिया करके रुपिया नालेर आपना कों धरे ( पीठै ) स्नात्रिया मंदरके ज़ीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगमेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ नैमोअर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्ठिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय चतुषष्टिसुरासुरेण्डसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति षष्ठ्य स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ बेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंमलप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सुरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्कैतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै ( यथा ) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायांजिनेश्वरान् आविर्भूतोद्धसद्बोधा नाव्रतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजैसमस्तातिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ नै ह्रीं श्री अर्हज्योनमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै, अपने २ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीठै रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ८ मांणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान् सम्यक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान् निदधेन्नक्तिनिर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेयतितःप्रणष्टः दुष्टाष्टकर्मामधिगम्यशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्यजेशांतिकरान्नराणां ॥ ४ ॥ नै ह्रीं श्री सिद्धेज्योनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रकेबीमें पीला गोटा,  
 पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि  
 सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै ( यथा ) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण  
 स्मिन्इलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंशत्पुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू-  
 रीसदाचारविचारसारा नाचार्यतः स्वपरान्यथेष्टं नमोपसर्गैकनिवा-  
 रणार्थं मन्त्र्यर्चयाम्यक्तगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीभ्योनमः स्वा-  
 हा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य आपना पूजा करै इति ॥ पीठै)  
 हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालहु, ४ इंद्रनील, १५ मरकतप-  
 न्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे. उपाध्याय पद पूजा पढै ( यथा )  
 द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान्  
 पवित्रेष्विमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशान्त्यै पठन्तिथेन्या-  
 न्यपिपाठयन्ति अध्यापकस्तांनपराब्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूज-  
 यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा ( पश्चिमदि-  
 शाकी तरफ उपाध्यायपदकी आपना पूजा करै इति ॥ पीठै )  
 स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्वामधजा, उरुदकालहु, ५ राजपट्ट, २७  
 अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै ( यथा )  
 व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुद्धध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्वारान्  
 साधुवासीससुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा-  
 दशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्प-  
 रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥  
 ( उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी आपना पूजा करै इति ॥  
 पीठै ) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य  
 हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढै ( यथा ) जिनेशोक्तमनश्रद्धा, ल-  
 क्णेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमग्रनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसदले ॥ ११ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः ( ईशानकूणमें दर्शनपदकी

आपना पूजा करै इति ॥ पीठै ) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा,  
 श्वेतवस्त्र, चावलोकालक्षु, आदि सर्व द्रव्य ले खम्हा रहै ॥ काव्य  
 पढै ( यथा ) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाग्नेयप  
 त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानायनमः  
 स्वाहा ॥ ७ ॥ ( अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी आपना पूजा करै ॥  
 इति ॥ ) फेर ) रकेबीमें ७० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वे  
 तवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खम्हा रहे. काव्य पढै ( यथा ) सामायि  
 कादिभिर्नेदै, श्रारित्रं चारुपंचधा ॥ संस्थापयामि पूजार्थं, पत्रैर्हनेरु  
 ते क्रमात् ॥ १३ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा ( नैरु  
 त्कूणकी तरफ चारित्रपदकी आपना पूजा करै इति ॥ ८ ॥ )  
 पीठै ) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व  
 द्रव्य लेके काव्य पढै ( यथा ) द्विधा द्वादशधा निन्नं, पूतेपत्रतपस्व  
 चं ॥ निधाययामि नक्तयात्र, वायव्यां दिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ नै ह्रीं  
 श्री सम्यगुत्तपसेनमः स्वाहाः ( वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी आ  
 पना पूजा करै इति ॥ अथ अर्थ ) निःस्वेदत्वादि दिव्यातिशयम  
 यतनन् श्रीजिनेन्द्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टकगुणजृदाचार  
 साराश्वसूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणि रक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञं,  
 स्तत्सिद्धयै पाठकानां यतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं  
 अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्हदादिभिः ॥ स्वाहांतैः प्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्त  
 ये ॥ १६ ॥ नै ह्रीं श्री अर्ह असिञ्जसा सम्यग्दर्शन ज्ञानं चा  
 रित्र तपसेभ्यो ह्रीं श्री अर्ह परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव  
 परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुभ्यं नमः ( इति मूलमंत्र )  
 इति सिद्धचक्र प्रथम बलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय बलय पूजा ॥

पहिले बलयमें एक तो बीचमें चार दिशिमें चार विदि



सामे एतें अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंदलके मध्य जाग  
में होय ननोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै ( पीठै ) दूसरे वलयमें  
चूनीके आकार १६ कोठा होय ( जिसमें ) एकेक कोठाके अर्न  
तर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे ( ओर ) एकेक  
कोठा बीचमें खाली रहा हे नसमें अनाहतपद नै ह्रीं एमो अरि  
हंताणं ) ऐसा पद स्थापन करै ( पीठै ) एक रकेबीमें मिश्री ल-  
वंग ( तथा ) एक रकेबीमें मोटी दाखां ले के खमा रहे. अनाहन  
पदमें मिश्री लवंग चढावै ओर आठ वर्गमें दाखां चढावै ( तथा )  
( नै ह्रीं एमो अरिहंताणं ) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई  
उ ऊ रु ऋ नृ ए ऐ न औ अं अः ( नै ह्रीं स्वर वर्गायनमः )  
( इहां ) १६ दाख चढावै २ ( नै ह्रीं एमोअरिहंताणं ) मिश्री  
लोंग ३ क ख ग घ ङ ( नै ह्रीं व्यंजनकवर्गायनमः ) १६ दाख  
चढावै ४ ( नै ह्रीं एमोअरिहंताणं ) ५ च ठ ज ञ झ ( नै ह्रीं  
चवर्गायनमः ॥ ६ ( नै ह्रीं एमोअरिहंताणं ) ७ ट ठ ड ढ ण  
( नै ह्रीं टवर्गायनमः ) ८ ( नै ह्रीं एमोअरिहंताणं ) ९ त थ द  
ध न ( नै ह्रीं तवर्गायनमः ) १० ( नै ह्रीं एमोअरिहंताणं ) ११  
प फ ब ज म ( नै ह्रीं पवर्गायनमः ) १२ ( नै ह्रीं एमोअरिहंता  
णं ) १३ य र ल व ( नै ह्रीं यवर्गायनमः ) १४ ( नै ह्रीं एमो  
अरिहंताणं ) १५ श ष स ह (नै ह्रीं शवर्गायनमः ) १६ पहिले  
अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोलेश दाख चढावै सब ९६  
( नै ह्रीं ) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोंमें ६४ चौसठ  
दाख चढावै इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ ( अब तीसरा वलयमें ) चार दिश चार विदिशिमें आठ  
परमेष्ठिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके  
बीचमें वलाका तीन २ देवे तीनु वलाकामे २४ खाना होय एके



क खानेमें ९ दोय ९ दोय लब्धिपद स्थापन करणें चोबीस घरों  
में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें ( नुँ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा ) एसा  
८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावै, नर लब्धिपदका नाम बोलके खा  
रका ४८ चढावै ( यथा ) नुँ ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ नुँ ह्रीं  
अर्हणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोपरमोहिजिणाणं ॥  
॥ ३ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोसबोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोअ  
णंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोकुब्बुदीणं ॥ ६ ॥ नुँ ह्रीं  
अर्हणमोवायबुद्धीणं ॥ ७ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोदिठिविसाणं ॥  
॥ १० ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोस  
यंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ नुँ ह्रीं अ-  
र्हणमोबोहिवुद्धीणं ॥ १४ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोविउलमईणं ॥ १६ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोदसपूवीणं ॥ १७ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोचउदसपूवीणं ॥ १८ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोअठंगनिमत्तकु  
सलाणं ॥ १९ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोविउवणइट्ठिपत्ताणं ॥ २० ॥ नुँ ह्रीं  
अर्हणमोविज्जादराणं ॥ २१ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोचारणलदीणं ॥ २२ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोपप्पासमणाणं ॥ २३ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोआगासगामी  
णं ॥ २४ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोस-  
प्पियासवाणं ॥ २६ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ नुँ ह्रीं अ-  
र्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोसिद्धायणाणं ॥ २९ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोज्ञयवयामहाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोउगातवाणं ॥ ३१ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोअस्कीणमहाण-  
सियाणं ॥ ३२ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ नुँ ह्रीं अर्हण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोत्तततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ-ह्रीं अ  
 र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ-  
 ह्रीं अर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरपरिक्लमाणं ॥ ३९ ॥  
 ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरबंजयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोआमोसहि  
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ-ह्रीं अ  
 र्हणमोजलोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोविप्पोसहिपत्ताणं ॥  
 ४४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोसवोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोम  
 णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ-ह्रीं अर्ह  
 णमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्ह अरुयाललब्धिपेदज्योनमः ॥ इस  
 तरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका  
 चढ़ावै ॥ ( पीठे ) मंरुलजीके गलेमें ह्रींकारजी स्थापन किया है  
 ( जहांसे ) साढातीन नवलाका मंरुलजीके चोतरफ देके नीचे  
 ( क्रों ) ऐसा अक्षर लिखा है ( जिसके ) प्रथम वलयमें आठ दि-  
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दामिमफल चढ़ाव  
 ( यथा ) ॐ-ह्रीं अर्हत्पाडुकाज्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढ़ावै ॥ ॐ-ह्रीं सि  
 द्धपाडुकाज्योनमः ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं आचार्यपाडुकाज्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ-  
 ह्रीं गुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं परमगुरुपाडुकाज्योनमः ॥  
 ५ ॥ ॐ-ह्रीं अदृष्टगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतगुरुपाडु  
 काज्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतानंतगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ-  
 ह्रीं अष्टगुरुपाडुकाज्योनमः स्वाहा ॥ इस तरे ठे वलयमें ८ दामिम  
 चढ़ावै ( पीठे ) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८  
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढ़ावै ( यथा ) ॐ-ह्रीं जयायै नमः  
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ-ह्रीं जंजायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं विजयायै नमः  
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ-ह्रीं शंजायै नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं जयंत्यै नमः  
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अपराजिता

कहके चढ़ावै ॥ फेर कोहलाफल हाथमें ले के वांयेनेत्रके पास बंगलीमें ( नैऋतपालायनमः ) ऐसा बोलके चढ़ावै २ ॥ पीठे तीसरा कोहलाफल ) हाथमें ले के नीचे पींहिके दक्षिणे तरफ बंगलीमें ( नैऋतेश्वर्येनमः ) ऐसा बोलके चढ़ावै ॥ ३ ॥ ( पीठे ) चौथा कोहलाफल हाथमें ले के नीचे पींहिके वांये तरफ बंगलीमें ( नैऋतसिद्धचक्राधिष्ठायायनमः ) ऐसा बोलके चढ़ावै ॥ ४ ॥ ( पीठे ) दसूं दिशामें इंडादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै, बणसकेतो अथवा १२ वर्ण मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि इव्य चढ़ावै अथवा सर्वको एक इव्य सर्व समान चढ़ावै ( यथा ) नैऋतयनमः ॥ १ ॥ कनक वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकइव्य आदि सर्व इव्य चढ़ावै ॥ १ ॥ ( अग्निकूले ) नैऋतयनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्ण का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ ( दक्षिणदिसि ) नैऋतयनमः ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि इव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ ( नैऋतकूले ) नैऋतयनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ( पश्चिमदिश ) नैऋतयनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व इव्य चढ़ावै ५ ( वायव्यकूले ) नैऋतयनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ६ ॥ ( उत्तरदिसि ) नैऋतयनमः ॥ ७ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ ( ईशानकूले ) नैऋतयनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ ( अघोदिसि ) नैऋतयनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ९ ॥ ( उर्ध्वदिशि ) नैऋतयनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्थापन पूजन करै ॥ ( पीठे यंत्रके पींढीके स्थानक नव कोठा किया जया हे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै ( यथा ) नैऋतयनमः लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १ ॥ नैऋतयनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्यं चढ़ावै ॥ २ ॥ उँजोमायनमः ॥ ३ ॥ लो  
 खरंगवस्त्रादिक द्रव्यं चढ़ावै ॥ ३ ॥ उँबुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगेरंग  
 का वस्त्रादि द्रव्यं चढ़ावै ॥ ४ ॥ उँबृंहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण  
 वस्त्रादिक द्रव्यं चढ़ावै ॥ ५ ॥ उँशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ सपेदवर्णनंशोल  
 वस्त्रादिक द्रव्यं चढ़ावै ॥ ६ ॥ उँशनेश्वरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग  
 का वस्त्रादिक द्रव्यं चढ़ावै ॥ ७ ॥ उँराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग  
 का वस्त्रादि द्रव्यं चढ़ावै ॥ ८ ॥ उँकेतवेनमः ॥ ९ ॥ ठीटरंग व  
 स्त्रादि द्रव्यं चढ़ावै ॥ ९ ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा  
 करै. पीठै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढ़ावै चैत्यवंदन कर शुद्ध क  
 र्कर नवपद स्तवन कहे ॥ पीठै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर  
 वासकेश लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठै यथाशक्ति साध  
 र्मी वात्सल्य करै ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये  
 ( जब ) कोइ श्रीमंत जलकी तपस्या करै तब तो ठहै महीने मं  
 रल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण  
 जये बाद जेष्ठ के साथ मंगलपूजा कराके नव२ उपगणोंसे उ  
 द्यापन करै. जलजात्रादि अर्घाईमहोत्सव कर धर्मशालासिणगरै  
 ( फेर ) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च  
 ढावै. रुद्रिहित जावसें यथाशक्ति शोकद्रव्य चढ़ावै ( उँर ) पंचा  
 यती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा  
 अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इति उद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणजस्वामीसर्वज्ञाय  
 नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥  
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥  
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥  
 श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री  
 अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥  
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ स्तम्भेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥  
 श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेन्द्र  
 प्रज्ञसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त  
 सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ रुक्मनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिन्नद्रसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥  
 अजितन्नद्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजे  
 श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति  
 सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पूंजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुक्मिकसर्वज्ञायनमः ॥  
 ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ सृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमू  
 र्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ आगमिकसर्वज्ञा०  
 ॥ १० ॥ दुक्तितनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥  
 महत्सुनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ वलंमृत  
 सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमैंद्रसर्व  
 ज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीकटपशाकसर्वज्ञा०  
 ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥ ०  
 २१ ॥ श्रीसुपार्थनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीज्ञानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५ ॥  
 श्रीजलप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥  
 श्रीरुषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुम्भगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री  
 वज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीनूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीती  
 र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ धातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीनूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥

श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीनेल

नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व

ज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा०

॥ ९ ॥ श्रीनूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥ ११

॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥

श्रीतीर्थनूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंडसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसमा

धिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथ

सर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर

सर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा०

॥ २२ ॥ श्रीउद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा०

॥ २४ ॥ श्रीकषिणनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥

२६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥

॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥

॥ ३० ॥ श्रीसहस्रान्नसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजगद्विरुषिकसर्वज्ञा० ॥

॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीपापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥

श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीज

गत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम



हेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरचूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार  
 चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरषेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ  
 सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलनद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०  
 ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय  
 नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय०  
 ॥ २१ ॥ श्रीचंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥  
 श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा  
 यशसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीउमोकनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना  
 थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ श्रीपुष्पकेतु  
 सर्वज्ञायनमः ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसमतकेतुस  
 र्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितीयेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंदसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र  
 नाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥  
 ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्री  
 वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजी  
 मनाथसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुनरसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीनरगुप्तसर्व  
 ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुदधसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व  
 ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा०  
 ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मचूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥  
 २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥



नागेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र  
ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध  
मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

( जंबुद्वीपेऽनरतक्षेत्रे जिननामानि ) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा०  
॥ १ ॥ ( धातकीखंमेप्रथमचरते० ) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥  
( धातकीखंमे द्वितीयचरतेजिननांम ) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥  
॥ ३ ॥ ( पुष्करार्धेप्रथमचरतेजिननांम ) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४  
॥ ( पुष्करार्धेद्वितीयचरतेजिननांमः ) प्रज्ञावकनाथसर्व० ॥ ५ ॥ ( जं-  
बूद्वीपेऽनरतक्षेत्रेजिननांम ) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ ( धात  
कीखंमेप्रथमएरवतेजि० ) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ७ ॥ ( धातकीखंमे  
द्वितीयएरवते ) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ ( पुष्करार्धेप्रथमएरव  
तेजिनना० ) आग्राहिकसर्वज्ञाय० ॥ ९ ॥ ( पुष्करार्धेद्वितीयएरवतेजि० )  
श्रीबलिनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका  
गुणना संपूर्ण ॥ १६ स्थांस, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५०  
श्वेत. सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैलोक्य जिनचंद ॥ त-  
त्पद नाम्नी कंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥ १ ॥ वाङ्मयकासरदातणो,  
बुर धरि समरणा शक्ति ॥ सद्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु  
चि जक्ति ॥ २ ॥ ठे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाज ॥  
पूर्वापर जवि तेहने, विजय नामको लाज ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु  
प्रतिदिशा, कथनामे युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि  
श्वावील ॥ ४ ॥ खंरु धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन  
गिरि युग ठे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां

एषिये, द्वीप सकल गुणखांख ॥ अर्ध ज्ञाग जसु उत्तमें, गिरि युग  
 जलद समांन ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरौ वत्तीस  
 ॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्ठ्युत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एह अढाई  
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, ज्ञाष्यो  
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थीकर वारके, विचर्या जे जिनरा  
 य ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञाणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (ढाल  
 पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थीकर महाराज ॥ अ  
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ ज्ञविकजन ध  
 रज्यो धर्म सनेह ॥ ढेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां  
 णी गुण पैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नरसुर ईस ॥  
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि  
 चर्या महियल बोधता जी, विजय मजार सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥  
 पंच२ ज्ञरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता  
 रता जी, समर्यां संपति आय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन  
 वरू जी, अतुल सकल गुणखांन ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी,  
 अकल कला द्युतिवांन ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी,  
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊललह ज्ञाधरू जी, कनकवर  
 ण वत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित  
 विमल प्रकाश ॥ ज्ञविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पचा  
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासश्री जी, वीस प्रमित  
 जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुजातमां जी, धरिये ज्ञाव विशाल ॥  
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण दुयां जी, नजमणे निज शक्ति ॥  
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त  
 पविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ  
 नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत् मूनि सर लोक नारद चंद्र ज्येष्ठ पशुर ए, वदि सप्तमी रवि  
दिने हितवद्वज्र कथनधर जूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-  
ज जैनचंद्र सनूर ए, ए तवन कीधो जीमंगजे श्रमणचंद्र कपूर ए  
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्री  
सिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधि  
ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसि  
द्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, ( दर्शनावरणकर्मकी नव  
प्रकृती ए )—चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण  
र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ए, निष्कर्म  
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच  
ला० १३, श्रीणद्धी० १४ ॥ ( वेदनीकर्म की प्रकृति २ )—सातावे  
दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, ( मोहनी  
कर्म की प्रकृती १८ )—सम्यक्तमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय  
१८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु  
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोन्नर०  
२३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या  
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोन्नर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो  
धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,  
प्रत्याख्यानीलोन्नर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलनमानर०  
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोन्नर० ३५, हास्यमोह  
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह  
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुर्गममोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०  
४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ ( आयुर्कर्मकी प्रकृति ।

४ )-देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ ( नामकर्मकी प्रकृति १०३ )-देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, ऐकेंद्रीजातिर० ५३, बेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीरर० ५८, वैक्रियशरीरर० ५९, आहारकशरीरर० ६०, तेजसशरीरर० ६१, कर्मणशरीरर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदास्कबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककर्मणबंधनर० ६८, वैक्रियबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकर्मणबंधनर० ७०, आहारकबंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककर्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकर्मणबंधनर० ७५, वैक्रियतेजसकर्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकार्पणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कर्मणकर्मणबंधनर० ७९, तेजसकर्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कर्मणसंघातनर० ८५, वज्ररुषज्ञनाराचसंघयणर० ८६, रुषज्ञनाराचसंघ० ८७, नाराच० ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्त्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुञ्जसंस्थानर० ९६, हुंमकसंस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, तीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरज्जिगंधर० १०३, डुरज्जिगंधर० १०४, तिकरसर० १०५, कटुकसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुररसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उश्नफरसर० १११, जारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुक-  
 मालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया०  
 ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्येचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वी  
 र० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुजविहायोगति १२२, अशुज-  
 विहायोगतिर० १२३, पराघातनामकर्मर० १२४, ऊसासनामकर्म  
 र० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अ  
 गुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनाम  
 कर्म १३०, उपघातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, बाद्  
 रनामकर्मर० १३३, पर्यासिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म  
 १३५, धिरनामकर्म १३६, शुजनामकर्म १३७, सौजाग्यनाम  
 कर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०,  
 यशनामकर्म १४१, आवरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनामकर्म १४३,  
 अपर्यासिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अधिर  
 नामकर्मर० १४६, अशुह्यनामकर्मर० १४७, दौर्जाग्यनामकर्मर०  
 १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयश  
 नामकर्मर० १५१, ( गोत्रकर्मकी प्रकृति २ ) उच्चैर्गोत्र १५२, नी  
 चैर्गोत्र १५३, ॥ ( अंतरायकर्मकी प्रकृति ५ ) दानांतरायकर्मर०  
 १५४, लाजांतरायकर्मर० १५५, जोगांतरायकर्मर० १५६, उप  
 जोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥  
 ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयमीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंज्ञव जिनराज ॥  
 मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकुं  
 दय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदा  
 नंद विदधन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयनि विस्ता

रं ॥ वरणं ज्ञविजन हितज्ञणी, प्रवचनने अनुसार ॥ ३ ॥ ( ढाल ॥  
 ॥ रामचंदके बाग ए देशी ) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नामे जिन कह्या  
 री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आत्मगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंशण  
 आवण, वेदनी मोह बूरो री ॥ आबखो नाम कर्म, कर्मांतराय चूरो  
 री ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय,  
 तीस कोमाकोमि जणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, बीस को-  
 माकोमि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, हिव मोहनीय शुवे री ॥  
 ॥ ४ ॥ सत्तर कोमाकोमि सागर मान जण्यो री ॥ ए उत्कृष्ट  
 थिति जोम, केवली काल गण्यो री ॥ ५ ॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म,  
 अंतरमुहुर्त्तपणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ मुहुर्त्त गणो री ॥  
 ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनी कर्म वदे री ॥ बारे महूरत  
 मान, शास्त्रानुसार मुदै री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंचश जेद  
 जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो जेद जुदारी ॥ ८ ॥ दर्शना  
 वरण नव जेद, आयु व्यांर विधे री ॥ मोह कर्म अमवीस, सौ त्रिक  
 नाम सधे री ॥ ९ ॥ एकसो अठावन्न, उत्तर प्रकृति कही री ॥  
 अष्ट करमना जाण, सर्व विकल्प सही री ॥ १० ॥ ढाल ॥ नण  
 दल चुमले जोवन जिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण  
 ठे, दर्शनावरण प्रतीहार, ज्ञवियण कर्म विवेचन कीजये ॥ मधु  
 लिता असिधारानी परे, वेदनी कर्म सुदार ॥ ज्ञविय० ॥ १ ॥ म  
 दिराठाक समान ठे, मोह सुन्नट महराण, ज्ञवि० ॥ खोमै बंदीखान  
 सारखो, आयुकर्म प्रमाण ॥ ज० क० ॥ २ ॥ चीतारे सम नाम कहीजे,  
 गोत्र कुंजार समान, ज० ॥ श्रीधर जंकारी सम दाख्यो, अंतराय  
 कुंध्यान ॥ ज्ञवि० क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए ज्ञावना, वीर वदे व्या  
 ख्यान, ज० ॥ कर्म संसार स्वरूप ठे, अकरम सिद्धि सुधान ॥ ज  
 वि० क० ॥ ४ ॥ मिठ सासादन मिश्रा रिति, देसदिरिति प्रमत्त,



ज्ञ० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सबीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज्ञ० क०  
 ॥५॥ अपूर्व अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सप्त बंध, ज्ञ० ॥ सुदुर्म  
 संपराय दशम ठाणें, विन मोहायु षट खंध ॥ ज्ञवि० क० ॥ ६ ॥  
 उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, ज्ञ० ॥ अयोगी गुण  
 चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ ज्ञ० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु  
 कह्या, मिथ्यात अविरत जोय, ज्ञ० ॥ क्रोध प्रमुख कषायशी, यो  
 ग युगत व्यार होय ॥ ज्ञ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म  
 स्थिति पद लेय; ज्ञ० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद ज्ञेय  
 ॥ ज्ञवि० क० ॥ ९ ॥ कम्मपयसी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार,  
 ज्ञ० ॥ बंध सत्ता उद्दीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ ज्ञवि० ॥ क०  
 ॥ १० ॥ इकसो अठावन अया, चतुर्थजत तप सार, ज्ञवि० ॥ त  
 प उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ज्ञवि० ॥ क० ॥ ११ ॥  
 अष्ट ज्ञानोपगरेण जला, अष्टगंगल वृद्ध आल, ज्ञवि० ॥ वात्सल्य  
 चतुर्विह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज्ञ० ॥ क० ॥ १० ॥ इच्छा  
 रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज्ञ० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम  
 लही, शिवरमणी नरतार ॥ ज्ञ० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिन-  
 चंद सूरि मुणिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचने  
 स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वर्षे विशद  
 फाळगुन द्वादशी, उवजाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित  
 नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयसी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चौबीसे जिनवर ममी, पंच परमेष्टि सार ॥ परम  
 मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल ? ॥ मुनिवर  
 आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरवतणो,  
 नव निधि सिधि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट सब



टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमसठ वरण विख्यात,  
 सात गुरु अक्षर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप,  
 जाये अक्षरे, संपूरण पांचसैं सुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर द्वीपार्द्ध,  
 सिद्धावट गांम, पासे परबत कंदरा ए ॥ चोमासी पञ्चक्रांण, करने  
 तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ ज्नील ज्नीलणी बेअ,  
 मन सुध ज्ञावसुं, नवकार मुनि पासे ज्ञणी ए, बीजे ज्ञव राज-  
 सिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रत  
 नपुरी यसोज्ञड, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति  
 आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुणबहु ज्ञणूं ए ॥ ५ ॥  
 एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धर्यो ए ॥  
 नवकारने परज्ञाव, सबल संकट टढ्यो, सोनापुरसो तिण कर्यो ए ॥  
 ॥ ६ ॥ ढाल १ ॥ चरणकरणधर सुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री  
 नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुज ठामो जी ॥ सेठ सु-  
 ज्ञद्र तणी सुता श्रीमती, आंविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥  
 मिश्र्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम  
 न मुंके हणिये मन धरी, कलसमें मूंक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥  
 साप फीटीने फूलमाला अई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने  
 कुटंब सहू प्रतिबूझव्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
 क्षितिप्रतिष्ठित बलराजा तिहां, इक दिन बूगो मेहो जी ॥ नदीपूर  
 बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद  
 लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर ज्ञक करे  
 नरने तिहां, ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी  
 जिनदाससेठनी, आंवक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार ज्ञण बीजोरो  
 ग्रह्यो, बूझव्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी  
 खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

ज्ञा नांमे नारि सुहाया ॥ चंरुपिंगल चोरयो नृप हारा, गणिक  
 ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूली  
 दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पठतावे, चोर समीपे  
 ठानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रजावे वंठित  
 सीधो, नृपने घर सुत अइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥  
 ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिणदाससेठ, तिहां किण हुंमक पापनी डेठ ॥  
 एकदा चोरी करतां जाळ्यो, राजा हुकमें सूली घाड्यो ॥ ४ ॥  
 हुंमक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार  
 दीधो उपगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणी ॥ ५ ॥  
 चंपानगरीमें जे कीधूं, सुज्ज्ञा सती निकलंक प्रसीधूं ॥ श्रीनवकार  
 प्रसाद ते जांणों, मनमें एहनी आसति आंणों ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥  
 ज्ञरतनृप ज्ञावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, बीजली  
 वांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपानी चलावियो ए,  
 अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाठरूया एक चारतो ए,  
 नदिय प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो  
 ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ इत्या चार करी हवे ए, वली करया पाप  
 अनेक, न० ॥ बुटकरबारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥  
 ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ ती  
 र्थकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन २  
 अधिकी संपदा ए, मनवंठित सुख आय, न० ॥ दयाकुसल वाचक  
 वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका  
 चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुद्धदिन गुरुके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका  
 जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ॥ २०००॥

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ एमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥  
 २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा-  
 वास ७ ॥ ४ । एमोउवझायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । एमोलोए  
 सबसाहूणं ॥ उपवास ५ ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास ७ ॥  
 ७ । सबपावप्पणासेणो ॥ उपवास ७ ॥ ८ । मंगलाणंचसवेसिं ॥  
 उपवास ७ ॥ ९ । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ५ ॥ ऐसे नवकार  
 मंत्रका ६७ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वरानवकार अथवा ऊपर  
 लिखा सो स्तवन सुणे. तप पूर्ण होणेंसें यथाशक्ति नवपदका  
 उच्चार करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रज्ञावसें अनेक  
 सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुज्जवाव सवि जिनंतणा, पंच कंद्याण  
 दिण ज्ञणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणै पस्सि पंचमि दिणै,  
 नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण  
 सुरज्जवणथी वारसै, पनुमपह जम्म वलि दिस्स तसु तेरसै ॥ वीर  
 सिवमां वसै पस्सि हिव ऊजलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज वार  
 सि मिले ॥ २ ॥ ज्ञास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि  
 थो, सोइ ठेइ रे संयमथर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं-  
 यम आदरथौ, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वरथौ ॥ सिर वरथौ  
 मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति  
 पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसै वलि  
 मल्लिजिणने जम्म दिस्स सुनाणीया, वलि मल्लि दिस्सा नाण ठेइ  
 अंग पोसि वखाणिआ ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संज्ञा  
 विथै, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण ज्ञाविथै ॥ ते परि सन्धि रे गीता-  
 रथ सहगुरु लहे, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सदहे ॥ सदहे

सहूयै ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कळ्याणक  
 चउदसि जनम संजवनों शुणौ ॥ पूनिमें संजव दिस्क पांमी दया  
 धरि जगजोवनी, हिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिस्का  
 पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेर  
 सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशीतल थयो के-  
 वली, पोसह सुदि रे ठठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ  
 नवमि संती अजितनाथ इग्यारसैं, चवदसैं अजिनंदनैं केवल पूनि  
 मै धम्मैं वसैं ॥ माहाइ ठठे पउम चवियो बारसैं शीतल थयौ,  
 वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥  
 अम्मावसि रे दिवसैं नाण इग्यारमैं, जिन पांमी रे माहसुदें हिव  
 अनुक्रमैं ॥ सित बीजे रे अजिनंदन वासुपूजनौ, कळ्याणकरे ज  
 नम ठाण अनुक्रम मनौ ॥ अनुक्रमैं मानौ बिहू बीजे विमल धरम  
 सुजामिया, श्रीविमल दिस्का चउथि अठमि अजित उत्तपति पांमि  
 या ॥ नवमियें दिस्का अजित पांमी बारसैं अजिनंदनैं, श्रीधर्मनाथें  
 सार संयमसिर वरि तेरसिदिनैं ॥ ६ ॥ ज्ञास ॥ फागुण वदि ठठें सुपास  
 केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंडप्रभु नाणें जुत्तो ॥  
 नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुवय नाण  
 जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिङ्गस तणो चवदस वसु  
 पुज्ज, जम्म दुत्त अम्मावसैं ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकल बीज चउथि  
 अठमियें अर मल्लि संजव, चवण सुवारसि मल्लि मुगति सुवय वय  
 उहव ॥ ८ ॥ ( ढाल फागनी ) चैत्र पढम पक्कि चउथि नाण च  
 वण पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥  
 वलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव  
 कुंशुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने सं  
 जवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नाण वलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना  
ह केवलसिरि पायो ॥ १० ॥ ज्ञास ॥ हिव वैसाख वंदेपमिवा दिन,  
कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ ठठे, श्रीशी  
तल अवतरियो, दशमें नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम  
अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतह, जनम हुन श्रीकुंथु  
जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अजिनंदन उत्तम, ध  
रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम  
तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सांमे पायो, गायो धरि आ  
णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा  
मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पस्कि  
ठठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि सुगति  
सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुन ए ॥ धरमनाथ  
सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास  
जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥  
ज्ञास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि सिरि  
विमल ॥ मुक्क नवमि नमि वय गहण, सेय ठठे चवण ॥ वीरनो  
अठमि नेमि मुक्क चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, ठ सय वर साधु  
कर परवरयो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमहणि सुग  
ति रमणी वर्यौ ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ आवण वदि हिव तीज मु  
गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविन अणंतनाह अठमि नमि जा  
मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुन अह निम्मल बीजै, सुमति  
चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म ज्ञणीजै ॥ १६ ॥ ठठे मुनिवर ने  
मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुवय पूनिमरयणि, चविन गु  
णमणि वास ॥ १७ ॥ ज्ञाड्व वदि सत्तमें संति ससि चवण जव  
रकय, अठमि चविय सुपास नवमि सुदि सुविध सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गप्प ॥ हरण अम्मावसी  
 ए, नांणी नेमीसर ॥ १७ ॥ पूनिम नमि जिणवर चविय, इण  
 पर बारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कळयाणक रासि  
 ॥ १८ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दि  
 ने, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मने ॥ कळयाण नीते  
 कोन्नि पांमी अनुक्रमे सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी  
 एह कळयाणक कहे ॥ १९ ॥ इम पांच जरते ऐरवत करि एक  
 दिन जिनवरतणा, दस कळयाणक हुवे इण दिन सुर करे उज्जव  
 घणा ॥ जिम हुआ ते तिम वली होस्से पंच कळयाणक सदा, श्री  
 पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २० ॥ इति श्रीपंच  
 कळयाणक स्तवनं ॥

॥ अथ रुषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताकर संलक्ष० यह रुषिमंडल स्तोत्र धूप  
 दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रज्ञात समय सुणें. रुषिमं  
 दलमें जो मूल मंत्र हे सो शुद्ध दिन शुद्ध घटी हाथमें फल  
 फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके वि-  
 नय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसकां ७००० आठ हजार जाप  
 आठ महीनेमें करै. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो  
 आठम चौदस दो आंबिल जरूर करै. आठ महीने बाद ऊजमणा  
 करै. ऊजमणके दिन एकसो आठ वेर सुणै. पीठै शक्ति होय तो  
 विधि संयुक्त रुषिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष जक्ति  
 करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुजत्ती करै, साहमी वज्जल करै.  
 विशेष विधि गुरुगमसें जाननी ॥ रुषिमंडल सुणणेवाले पूजणेवा  
 ले जयजीवके घरमें कच्ची उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उछाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट यंत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥



रूपन चरण अंगूठमौ, दायक नवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का  
 नसग रह्या, विचर्या देस विदेस ॥ खमां२ केवल लह्यौ, पूजो  
 जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥  
 कर कंमे प्रभु पूजना, पूजो नवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय  
 अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, नुजावले नवजल तरया, पूजो खंध म  
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ ना  
 निकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल  
 उपशम बले, बाढ्यो राग ने द्वेष ॥ हेम दहे वनखंरने, हृदयक  
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देस देसना, कंठ विवर वरतूल,  
 मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तथैकर पद  
 पून्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत, त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, जाल  
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक नगवंत ॥ व  
 सिया तिण कारण विभू, शिरशिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव  
 तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध जावथी, कहे शुभ  
 वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन उहा ॥

### ॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें  
 परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे,  
 जल विन कुंज न होय ॥ झार्ने बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न  
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे  
 गुरुवाणी वेगला, रमवमिया संसार ॥ ३ ॥ जावे जिनवर पूजिये,  
 जावे दीजे दान ॥ जावे जावना जाविये, जावे केवलज्ञान ॥ ४ ॥  
 पांच कोमीने फूलने, पांम्या देश अहार ॥ राजा कुमारपालने, व  
 रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥



॥ अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुई ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत ज्ञानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक  
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥ १ ॥ समुद्धात शुभ्र केवलै, कय  
कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसैं, जयो वर अविन्यासी ॥  
॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद  
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिंताम-  
तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाव ॥ श्री  
तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥  
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥  
बादरकायें मन वच जोग, तनुरसें फुन दढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुक  
मकायतें मन वच शोक, निज वीर्य ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥  
संडी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि  
समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥  
॥ ३ ॥ एषां योगथी समवे एक, होना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥  
समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥  
वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें  
गुणमें गुण समै देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥  
इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल  
ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ तोजै जव  
थानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अ-  
रिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत जागी ॥ पुव पन्थपसंग  
सैं, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण  
निरागी ॥ चेतनभूषे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल  
दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वजाव ॥ सिद्ध जये तसु हीरधर्म,  
वंदे धरि शुभ्र जाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थारै महिलां ऊपर मेह बरोखै बीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हा० लाल ही० ॥  
उत्कृष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै  
जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलैं गुण श्रेणिता,  
म्हा० दलैं० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा०  
र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे  
नगरऊसैं अक्रिय होयने, म्हा० अ० ॥ पुव पयोग असंग स्वजाव  
अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इहु गुण नव परमाण योजन लहैं  
कही, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाज्ञास निरालंबन सही, म्हा०  
नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मही प-  
क्षथी हीन जणी सिद्धांतमें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपप्रारा नाम  
सिलासैं जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें जाग अलोककुं स्प-  
र्शने, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा०  
प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासैं हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥  
मिलिया एकमेंनंत अबाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि  
रम्य सिरिद्धो जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म  
नगेहमें, म्हा० ध० ॥ कुशल जये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा०  
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद थुई ॥

अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिदरासी जी ॥ परमात्मपद पूर-  
ण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव  
पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद शुद्ध ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद चैत्यबंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥  
प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥१॥ रुज्वादिक जि  
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ जवकूपें पापें परत, जगजन  
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं  
वंदे हीरधर्म, अठोतर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वींदली ये ॥ ए चाल ॥

स्वंती खरुगथी जेणे, हृष्यो क्रोध सुन्नट सम देणे हो, गण  
पति गुणपेखी ॥८॥ मान महा गिरि वयेरे, अति शोन्नन मदव वयेरे  
हो ॥ ग० ॥१॥ इन्द्ररूप विसवेली, वर अज्जवकीलै ठेली हो ॥ ग० ॥  
मुर्छावेलथी जरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥२॥ मदन  
नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा  
मल्ल ताड्यो, पुण वैराग मुगरे पाड्यो हो ॥ ग० ॥३॥ दोस गवंद  
वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेद्या,  
सुरवर पिण जिण शिषेद्या हो ॥ ग० ॥४॥ रस कृति गुणथी लीणो,  
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी  
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद शुद्ध ॥

॥ पंचाचारकुं पालै नजवालै दोष रहित गुणधारी जी, गु  
ण उत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन  
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, कृमा सहित जे संज  
म पालै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति शुद्ध ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

॥ धन धन श्री उवज्जाय रांय । सठता धन जंजन । जिन  
वर दिसत डुवाले संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण जं  
जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयणें ।  
जत्थय सुय मंजण ॥ १ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसे पद  
तुर्य । तिनपे अहनिश हीर धर्म । वंदै पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगां रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने ३ दूरी हुयने, चेतन ज्ञापै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं  
मुऊ पास क्युं आवै, दू० ॥ तुऊनें कुण वतलावै, दू० ॥ ए आंकणी  
॥ तो संगै निज पंचेडीनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी  
खयउपसमसे, ज्ञाविडी मंजाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इयै ते परजाते  
कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किल क  
में उपदेश ॥ दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं संका, तेरे संगे ला  
गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में ज्ञयो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥  
उप कहिये हणियो ज्ञवियानो, अधियां लाजत आय ॥ आधीनांमन  
पीमानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर  
आगम, सूत्रसे ते उवझाय ॥ तत् सेवाते हणि सठताकुं, चेतन  
कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद थुइ ॥

॥ अंग इग्यारै चवदै पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र  
अरथधर पाठक कहिये योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूर  
आगम पूरा नय निहोपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी  
पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद थुइ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवन्दनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्र  
शुचि चक्रलें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्तते,

जये अंतरजामी ॥ मानस इन्द्रिय दमनचूत, समदम अजिरामी  
॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण जरयो ए, पंचम पद मुनिराज ॥  
तत्पदपंकज नमत हे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मालनर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकषाया जगजन कहे, धारै चनुगति वसनसें रोस हो,  
मुनिंदजी ॥ राग हीण जय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो  
मुनिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० ठठै पूरब कोम हो  
मु० ॥ शत लोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो  
मु० ॥ २ ॥ स्त्यानहीनिद्रा नदैं, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच  
लानिझमें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि  
ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो  
पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥  
॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथें, सा० साधन पर वर जीव हो मु०  
॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु जवतु जगतीव हो मु०  
॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद शुद्ध ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बयालीस टालै जी,  
षट् काया गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच म  
हाव्रत सूधा पालै धर्म शुक्ल नजवालै जी, कृपकश्रेणि कर कर्म  
खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुगल परियट्ट, अट्ट परमित संसार ॥ गंढिजेद  
तव करि लहै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्लायक वेदक शशि असं  
ख, नवसम पण बार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव  
दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लब्धन अजिराम ॥  
दरसलकु गणि हीरधर्म, अहनि स करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंद्रके वाग आंवो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध ज्ञायो री ॥ धर्म जिने  
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितयो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज सप्तम  
नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥ २ ॥  
मिथ्या तापे तप्त, बोधही बांह लहेरी ॥ उपशम कायक वेद, ई  
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुल अस्ताव क  
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद  
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें  
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपण्णत्तत्त सूधा सरधै समकित गुण उजवाळै जी,  
जेद वेद करि आतम निरखो पशु टाळी सुर पावै जी ॥ प्रत्या-  
ख्याने सम तुल्य ज्ञाख्यो गणधर अरिहंत मूरा जी, ए दरशनपद  
नित २ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि  
लापसैं जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पङ्कवि  
उहि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप जाण, इक के  
वल जाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम  
पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर जाषित आगम ज्ञाणिया, तत्व यथास्थित गमिया  
जी ॥ म्हारे जगजन तारु ॥ ते उत्तम वर नाण कहायै, जविजन  
अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ ज्ञाज्ञाज्ञ कुपंथा सुपंथा, पे-  
यापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें  
जेण विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय वै इंडी सारु,

तेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ जुही मण केवल हे वारू, जीव  
प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्स बलें जग जाणें,  
लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजै जासु पसायें,  
धारी शुभ्र अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम  
कयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें जवि  
जन हरखे, निसदिम कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद थुई ॥

मति श्रुति इंडी जन्नित कहियै लहियै गुण गंजरीरो जी,  
आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि म  
नपर्यव केवल बलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकुं वंदो  
पूजो जविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुभ्र  
ज्ञाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि  
कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इखु  
कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकुं हीर  
धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाज्ञास निरसंग ॥ सुग्यानी  
साजलो ॥ टेर ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०  
॥ १ ॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण ज्ञाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जो  
गसुधामता, लब्धा संख स्वज्ञाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो  
गमें, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समयें लहे, अंते द्वौते  
जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥  
सु० ॥ प्राप्ता यस्त्र प्रकारता, सप्त पृथृतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तझे  
धन रूपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर धन मिल पद



धर्ममें, कुशल जवतु अनिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद शुद्धि ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, वारे  
जावना सूधी जावै सागर पार ऊतारै जी ॥ खट खंम राजकूं दूर  
तजीनें चक्रा संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम  
गुण हितकारै जो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीरुषजादिक तीर्थनाथ, तजव सिव जाण ॥ बिहि अं  
तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स  
ही, आदिक लब्धि निदान ॥ जेदे समता युत खिणें, दृग्धन कर्म  
विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद जलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसें  
नित हीरधर्म, दूर जवतु जवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ वारस जेद जण्या जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजें  
रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण जव सिद्धितणा  
वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्त्तारें ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स  
मता सहितें जिनतें ज्ञारी, जली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे  
शिवपदश्रे० ॥ जीवकनकसें कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा  
रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हे रुद्धि, देव नरनी  
फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप  
जानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्त पसायें लहियें  
वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति डुकर फुन  
साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इच्छा  
रोधन रूपी कहिये, तपपदही चैतन वहिये रे ॥ म्हा० ॥ पाठक  
आहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसलाकूं जासे रे ॥ म्हारे शि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ तप पदं थुई ॥

इन्द्रारोधन तप ते ज्ञाख्यो आगम तेहनो साखी जी, इव्य  
जावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण  
परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लवधि सकलनो कारण  
देखी ईश्वर सें मुख ज्ञाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ श्रुतिर्विशति जिन स्तुति ॥

श्रीमद्वृषभ सर्वज्ञ, वृषभांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाहा,  
नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ युगस्यादौ त्वयाधेन, ज्ञानत्रय युते न  
यत् ॥ जनन्या मरुदेवायाः, बाधनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति वृषभ  
स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांछन शालिना ॥ जितसत्रु  
महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवं-  
स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोधेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥  
इत्यजित स्तुति ॥ जितारि नृपतेर्वर्यात्, संजयः संजवान्निधः ॥  
सेनाया नंदनो हेम, बर्णो गंधर्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य,  
ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पूंगवो देवो, नित्यं दिसतु मां जिनः ॥  
॥ ६ ॥ इति शंजय स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्धं, वीतरागं जग-  
त्पतिं ॥ श्रीसंबर समुत्पन्नं, प्लवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन  
नामानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ अस्तौति परया ज्ञत्तया, सनालोकेज्जि  
नंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेवाज्निध धरि त्रिस, तन  
यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण नृदेम, मरीचिर्मगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं  
सुमतिनाथेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग  
सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र  
सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराज्जिव नृपोद्भूतः, पद्म लक्षण  
धारकः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव संकीर्णै, दुस्तरे पततां नृणां ॥  
जाणाय सततं देव, पद्मप्रज्ज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज्ज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वान्निधोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकनृत् ॥  
 प्रतिष्ठ नृप संजात, श्रामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र  
 इव गंजीरः, कर्माणां हृदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं  
 नौमि सदा विभू ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंडप्रज्ञ प्र  
 ज्ञोकांत, चंड लक्षण संयुतः ॥ तमापतिष्ठ विज्ञान, तमोव्यूह वि  
 नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोन्नव ॥ लक्ष्मणा  
 पुत्रमां स्वामि, नव केवल बोधनृत् ॥ १६ ॥ इति चंडप्रज्ञ स्तुति ॥  
 ( अत्रायश्चत्रबंधः श्लोकः ) ॥ संस्तुतोवोदवत्वाश्रु, सुरासुरनरेश्वरैः  
 ॥ सुविधिर्वाणितशर्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननीरा  
 मा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांघिनः  
 ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ( चामरबंधाविमौ ) ॥ श्री  
 मन्नीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांघां  
 कधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांजोज, सेवकानांविपुर्जतां ॥ प्राक्क  
 तंवृजनव्यूहं ॥ छष्टंशंजोददेविजौ ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु  
 तिः ॥ विष्णुर्वैशार्कवदेवो, विष्णुपुत्रोहिरण्यजः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोज  
 सं, खड्गलांघिननृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्व, श्रेयांसश्रे  
 यसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदंपरं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां  
 स स्तुतिः ॥ २२ ॥ वरोवार्त्तिरामीहा, जवतांश्चदि ॥ ऊटितिष्ठे  
 दितुंचित्ते, ज्ञोन्नव्याः प्राप्तुमकरं ॥ २३ ॥ तदाज्ञजध्वमेनंदि, वासु  
 पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तजं ॥ २४ ॥ इ  
 ति वासपूज्य स्तुतिः ॥ २४ ॥ श्रीमद्विमलनाथेऽ, कृतवर्मसमुन्नवः  
 ॥ शूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चंडवद्विमलज्ञान,  
 त्वदांयस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६  
 ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ २६ ॥ हेमवर्णस्यपूत्रस्य, सुयशःसिंह  
 सेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्यानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इडाद

योपियस्यांतं, गुणानांलेज्जिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, कसोवक्तुं  
 नरः कथं ॥ २७ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक,  
 आनुवंशार्कसन्निजः ॥ कनकप्रज्ञसर्वज्ञ, धर्मनाथान्निधेश्वरः ॥ २८ ॥  
 तवागोपिपुश्चारी, नृतलेयात्यशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सतां  
 संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी  
 सं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥  
 ॥ ३१ ॥ तंश्रीमच्छांतिनाथानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां  
 वृष्टिं, विबुद्धाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्री  
 युतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यज ॥ सूरिज्ञूपतिसंजात, छागल  
 क्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंशुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं  
 पापसंदोहं, ज्ञवांतरकृतंघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंशुनाथ स्तुतिः ॥  
 सुदर्शननृपोद्भूतं, नंदावर्त्तकिसंयुतं ॥ अंजोजवन्निरालेपं, देवोपुत्रसु  
 वर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यप्रभुतयाजिनं ॥ चरी  
 कर्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १७  
 ॥ कुंजप्रज्ञावतीपूत्रौ, नीलवर्णौघटांकनृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्तं,  
 नासनाद्भिदितःसदा ॥ ३७ ॥ ऋत्रप्रययुतोज्ञाति, देवयोविष्टपत्त्रये  
 ॥ तस्यश्रीमद्विनाथस्य, स्मरणेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिना  
 थ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्ररुत् ॥ कुर्मल  
 क्षणनृधर्म, दायकस्यामलहृये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक  
 र्मारिमंरुल ॥ देहित्वंमेव्ययीज्ञावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ  
 ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयनृपाल, कुलोत्तंसहिर  
 ण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकनृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते  
 पंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वरं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र  
 संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव  
 र्य्ये, समुद्रविजयोद्भवे ॥ हरिवंसहरौशंज्ञौ, शंखांकैकमलप्रज्ञे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्र  
त्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ अश्वसेना  
कञ्जपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनदितायेन, कस्यठस्यान्निमान  
ता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास  
नचिन्हाय, नीलवर्णायसंज्ञवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥  
श्रीमत्सिद्धार्थवंशर्क, त्रिशलेयजगत्पणे ॥ महानादध्वजार्हत, क  
ल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थकृद्दीर, मोहेज्जहननेमृगात् ॥  
त्वन्नक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः  
॥ २४ ॥ इति श्रीकृमाकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः ॥

अथ नवपदजके नुलीके देववन्दनमें कहणोका चैत्यवन्दन प  
हली लिखा है ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नवपद अन्निरामी रे लोय ॥  
अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥  
अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी  
रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी  
रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्य करी, अया सिद्ध  
मरूपी रे लोय ॥ अहो अ० ॥ सिद्ध नमो ज्ञवि ज्ञावथी, जे आगम  
अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण वृत्तीसे सोजता, सुंदर  
सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजै पदै, वंदू अविकारी  
रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप डु विध  
आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग  
समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा,  
पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमं  
वन्दनागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें नलखै,  
श्रुत श्रद्धा आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ ठेठे गुण दरसन नमो, आ-

तम शुभ्र ज्ञावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ४ ॥ ग्यान नमो गुण  
 सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक  
 दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ५ ॥ आठमें चां  
 रित्रपद नमो, परज्ञाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्यादिक  
 दस धर्मनो, जेह ठे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ६ ॥ नवमे  
 वलि तपपद नमो, बाह्याज्यंतर जेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या  
 काल अनंतना, जे कर्म उच्छेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए  
 नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुभ्र ज्ञावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप  
 श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥  
 आसू चैत्रुक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥  
 नव उली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥  
 ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० ॥  
 व० ॥ श्रीजिनलान्न कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० ॥  
 अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध  
 अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ जविक मन धारज्यो रे ॥  
 धारज्यो नवपद ध्यान ॥ ज० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण  
 धरू रे, गुण ठत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर सुनिवरू जी, श्रुत दा  
 यक सुविलास ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोभता जी,  
 साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥  
 ज० ॥ ३ ॥ संबर साधना चरण ठै रे, तप उत्तम विधि दोय ॥  
 ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ ज० ॥ ४ ॥  
 अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनु  
 जव कारणो जी, नितप्रति नमत कळयाण ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, जविका न० ॥ मन वच काया कर  
एकंते, विकसा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणे  
रा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जं  
मार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अरुसिद्ध नवनिधि मंगलमाला, संपति  
सहज वरो रे ॥ लालचंद याकीबलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद  
महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो  
अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम  
निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन  
को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद आय रे ॥ जी० ॥ इय  
जिन ज्ञे आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत  
सिद्ध नर आचारज, जवजाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व  
साधू मंगल ए पांचू, याहीसैं दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान  
चरण तप उत्तम, याहीसैं दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज  
जज नवपदकुं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार  
जगतमें, नर द्वार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज्ज ज्ञाव, दिव कारज सि  
द्धिनो लाधो एह ऊपाय ॥ तुज नाम पसार्ये आरति व्याधि पुलाय,  
इग तुज अनुग्रहथी सुख संपति मुज आय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न  
मिथै सिद्ध सूरि जवज्ञाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥



हुग विधि चारिन्हें बुध विष तप मन ज्ञाय, ये नवपद ध्यावता नि  
रुपम शिवसुख आय ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री  
गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे ज्ञाण्यो एह विचा  
र, जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अ  
नुरागी चक्रेसरि सुखकार, सेवकनें आपे सुख संपति परिवार ॥  
हिव निहि नदब करि चारित्रनंदी मम ज्ञाय, जिनचंद सूरिसर  
स्वरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति शुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

( प्रथम ) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ सें उली सरू  
करे, कजी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वढी होय तो ८ सें  
सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध  
करके मांमणादिकसें चित्रित करे, पीठे पट्टे पर सिद्धचक्र आपके त्रि  
काल पूजा करै. प्रज्ञातसमें राईपमिक्कमणा करके पीठे वस्त्रोंकी  
पमिलेहणा करै. जहां सिद्धचक्रकी आपना हे उहां आयके पांचे  
शक्रस्तवे देव वांटे, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव  
चैत्यवंदन करै, वासकूप पूजा करे, पीठे केसरचंदनसें पूजा करै.  
गुरु पास आयके अष्टुठिन्मिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका प  
ञ्चस्क्राण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसें  
उर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु  
णोंको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोमे इच्छा  
मिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

६ ज्ञानमंजुल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

७ कुंडुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

८ वज्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

१० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥ इति द्वादश अ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नबूतसिधेयं कहिके १२ लोगस्तका काउसग्न करै. एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पञ्चखाण पार के आंवल करै. पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीठै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. गुणनो ( १००० ) ॥ नै ह्रीं एमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै. श्रीपालचरित्र सुणे. पूरा पहर दिन रहणैसँ तीसरी बेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. पीठै फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पञ्चस्काण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रति क्रमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीठै पम्किसणा करै. ( सोणे के वखत ) पहले श्रियावही पम्कमके चैत्यवंदन करै, फेर राइ संभारा गाथा सुणें ॥ मित्र नही आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रज्ञात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग हे इस वास्ते गेहूंकी रो-

टीसैं आबिल करै ॥ नुँ हँी एमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हज़ार गुणना करै. सिद्धपदका ८ गुण हे. ८ नमस्कार गुरु करावै सो लि० ॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

- १ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
- २ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
- ३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नब्रूसलि० कहेके आठ लोगस्सका काउंसग करै, एक लोगस्स प्रगट कहे. फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसैं प्रज्ञात कर्तव्य करै. आचार्यपद पीले वर्ण हे इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करै ॥ नुँ हँी एमो आयरि आणं ॥ इस पदका दो हज़ार जाप करै, आचार्यके ३६ गुण हे. उत्तीस नमस्कार गुरु करावै सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

- १ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
- ४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ५ गान्धीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

- ४ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
ए सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१५ कृमागुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१६ मृडगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१९ द्वादश विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२५ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
२६ असरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
२७ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ०  
२८ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
२९ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
३० अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
३१ आश्रव ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंशत् आ०

॥ यह षत्तीस नमस्कार करके अन्नब्रूसंसि० कहके षत्तीस

३६ लोगस्सका कानसंग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पूर्वोक्त करणी क्रमसें करै. इति तृतीय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं एमो नवज्ञायानं ॥ इस पदका २ हज़ार जाप करै. हरेमंगका आंबिल करै. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २६ गुण लिख्यते ॥

- १ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
- २ श्रीसुयगमांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ३ श्रीगणेशसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ५ श्रीज्ञगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ८ श्रीअंतगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- १० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- १२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

- १३ आश्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 १४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥  
 १५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 १६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 १७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 १८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 १९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 २० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०  
 २१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 २२ अविध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 २३ प्राणायामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 २४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥  
 २५ लोकविंदुसार पठनगुण यु० ॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः ॥

इस तरे २५ नमस्कार करै, खम्हा हो के अन्नतू ० कहके २५ लोगस्तका काउसग करै, प्रगट लोगस्त कहके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

नै ह्रीं एमो लोए सब साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै, साधुपद काले वर्ण हे इस वास्ते नमद के बाकलोसैं आं-विल करै, सर्व साधुपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै ॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

- १ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
- २ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

- ५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥  
 ६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥  
 ७ पृथ्वीकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 ८ अप्पकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 ९ तेजकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 १० वाज्रकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 ११ वनस्पतिकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 १२ त्रसकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 १३ ऐकेंडीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 १४ बेइंडीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 १५ तेइंडीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 १६ चोइंडीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 १७ पंचेंडीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥  
 १८ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥  
 १९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २० शुभ्रज्ञावना ज्ञावकाय श्रीसा० ॥  
 २१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥  
 २२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥  
 २७ मरणांतनपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥

इस वजे २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्सका कानसग करै,  
 प्रगट लोगस्स कहिके पारे. पीठै पूर्वोक्त करणी करै. यह पंच पर



मेष्टि पदके सब गुण मिलानेसे १०८ होता है, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हैं ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं एमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै, दर्शनपद सपेद वर्ण है इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, सम्यक्तके समस्त गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसदर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थ ज्ञानसेवनारूप सह० ॥
- ३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सह० ॥
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सह० ॥
- ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
- ६ धर्मरागरूप सह० ॥
- ७ वैयावृत्तरूप सह० ॥
- ८ अर्हद्विनयरूप सह० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
- १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
- १३ साधूवर्ग विनयरूप सह० ॥
- १४ आचार्य विनयरूप सह० ॥
- १५ उपाध्याय विनयरूप सह० ॥
- १६ प्रवचन विनयरूप सह० ॥
- १७ दर्शन विनयरूप सह० ॥
- १८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सह० ॥
- १९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूप सह० ॥

१० संसारे जिनमते स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥

२१ शंकादूषण रहिताय सह० ॥

२२ कांक्षादूषण रहिताय सह० ॥

२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सह० ॥

२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सह० ॥

२५ तत्परिचय दूषण रहिताय सह० ॥

२६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सह० ॥

२७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सह० ॥

२८ वादीप्रज्ञावकरूप सह० ॥

२९ नैमित्तिकप्रज्ञावकरूप सह० ॥

३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सह० ॥

३१ प्रज्ञायादिक विद्यानृत्प्रज्ञावक सह० ॥

३२ चूर्णग्रंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सह० ॥

३३ कविप्रज्ञावकरूप सह० ॥

३४ जिनसासने कौसलता नूषण सह० ॥

३५ प्रज्ञावतानूषणरूप सह० ॥

३६ तीर्थसेवानूषणरूप सह० ॥

३७ स्थैर्यतानूषणरूप सह० ॥

३८ जिनसासने नक्तिनूषणरूप सह० ॥

३९ उपशम गुणरूप सह० ॥

४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥

४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥

४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥

४३ आस्तिका गुणरूप सह० ॥

४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सह० ॥

- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद० ॥  
 ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद० ॥  
 ४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥  
 ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥  
 ४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥  
 ५० राजान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥  
 ५१ गणान्नियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५२ बलान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥  
 ५३ सुरान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥  
 ५४ कांतारवृत्त्याकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सद० ॥  
 ५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसद० ॥  
 ५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद० ॥  
 ५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद० ॥  
 ६० चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद० ॥  
 ६१ चारित्रधर्मस्य ज्ञानमिति चिंतनरूप स० ॥  
 ६२ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतनरूप स० ॥  
 ६३ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद० ॥  
 ६४ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद० ॥  
 ६५ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥  
 ६६ सचजीव कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥  
 ६७ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥  
 ६८ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥  
 ॥ इस वजे समस्त नमस्कार कर खमा होके अन्नबू कहके

६७ लोगस्सका काजसंग करै. एक लोगस्स प्रगट कहैके पारे. पीठे  
पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ठ दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै.  
ज्ञानपद अश्वत्थ वर्ण, तंडुलका आंबिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद  
के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रेंड़ी व्यंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
- ११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
- १२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
- १३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
- १५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
- १६ मनेकरीईहामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंड़ीअपाय मति० ॥
- १८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

- २० चक्षुरिन्द्रियपाय मति० ॥  
 २१ श्रोतेन्द्रियपाय मति० ॥  
 २२ मनैनापाय मति० ॥  
 २३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २४ रसनेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २५ घ्राणेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २६ चक्षुरिन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २७ श्रोतेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २८ मनोधारणा मति० ॥  
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३२ असंज्ञी श्रुत० ॥  
 ३३ सम्यक् श्रुत० ॥  
 ३४ मिथ्या श्रुत० ॥  
 ३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥  
 ३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥  
 ३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥  
 ४० अगमिक श्रुत० ॥  
 ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥  
 ४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वद्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ रुजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥ इति पं० ज्ञा० ॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खना होके अन्नबू० कहके एका वन लोगस्सका काजसग्न करै, एक लोगस्स प्रगट कहके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करे, इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ जुँ हूँ नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे, चारित्र पदका उज्ज्वल वर्ण हे, इसीसे तंडुलका आंबिल करे, सत्तर जेद चारित्रपदके चित्तवके नमस्कार करे,

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्लृमाधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः ॥

७ आर्यवधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृडुताधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

- ११ संयमधर्मरूप चारि० ॥
- १२ सत्यधर्मरूप चारि० ॥
- १३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
- १४ अकिंचनधर्मरूप चा०
- १५ ब्रजधर्मरूप चारि० ॥
- १६ प्रण्वीरकासंयम चारि० ॥
- १७ नदगरकासंयम चारि०
- १८ तेजसरकासंयम चा० ॥
- १९ वाजरकासंयम चारि० ॥
- २० वनस्पतिरकासंयम चारि० ॥
- २१ वेइंद्रीरकासंयम चारि०
- २२ तेइंद्रीरकासंयम चारि० ॥
- २३ चौइंद्रीरकासंयम चारि० ॥
- २४ पंचेइंद्रीरकासंयम चारि० ॥
- २५ अजीवरकासंयम चारि० ॥
- २६ प्रेकासंयम चारि० ॥
- २७ उपेकासंयम चारि० ॥
- २८ अतिरक्तवस्त्रजक्तादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
- २९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
- ३० मनसंयम चारि० ॥
- ३१ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ कायासंयम चारि०
- ३३ आचार्य वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ उपाध्याय वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३५ तपस्वी वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥



- ३६ लघुशिष्यादि वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३७ गिलाणसाधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३८ साधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३९ श्रमणोपासक वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ४० संघवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४१ कुलवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४२ गणवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४३ पशुपंरुगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरूप चारि० ॥  
 ४७ कुमयंतरसहित स्त्रीहावज्जाव सुणन वर्जन ब्र०  
 ४८ पूर्वस्त्रीसंज्ञोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०  
 ४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५१ अंगविज्ञूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५२ अणसण तपोरूप चा०  
 ५३ उणोदरी तपोरूप चा० ॥  
 ५४ वित्तसंखेवरूप चा० ॥  
 ५५ रसत्याग तपोरूप चा० ॥  
 ५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ॥  
 ५७ संलेखणा तपोरूप चा० ॥  
 ५८ प्रायश्चित्त तपोरूप चा० ॥  
 ५९ विनय तपोरूप चा० ॥  
 ६० वेपावच्च तपोरूप चा० ॥

६१ सिञ्जाय तपोरुप चा० ॥

६२ ध्यान तपोरुप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रज्ञेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै. खरुा हो के अन्नबूससि०  
७० लोगससका कानसगग करै. एक लोगसस प्रगट कहे. पूर्वोक्त क  
रणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ उँ ह्रीं एमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै.  
तपपदका उज्ज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै. पञ्चास  
ज्ञेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपज्ञेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यज्जणोदरी तपज्ञेद तपसे नमः ॥

४ अन्त्यंतरज्जणोदरी तपज्ञेद त० ॥

५ इव्यतपवृत्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

८ ज्ञावतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

ए कायकिलेस तपजेद तप० ॥

१० रसत्याग तपजेद तप० ॥

११ इंद्रिकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥

१२ स्त्री पशु पंरुकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त० ॥

१३ आलोयण प्रायश्चित्त तप० ॥

१४ पम्क्कमण प्रायश्चित्त तप० ॥

१५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ॥

१६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥

१७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥

१८ तप प्रायश्चित्त त० ॥

१९ जेद प्रायश्चित्त त० ॥

२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥

२१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥

२२ पारंचिय प्रायश्चित्त त० ॥

२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥

२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥

२५ चारित्र विनयरूप त० ॥

२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥

२७ वचन विनयरूप त० ॥

२८ काय विनयरूप त० ॥

२९ उपचारक विनयरूप तप० ॥

३० आचार्य वेयावच्च त० ॥

३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥

३२ साधू वेयावच्च त० ॥

३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥

३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥

३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥

३७ संघ वेयावच्च तप० ॥

३८ कुल वेयावच्च त० ॥

३९ गण वेयावच्च तप० ॥

४० वायणा तपसेनमः ॥

४१ पृच्छना तपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥

४४ धर्मकथा तपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त तपः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥

४७ धर्मध्यान चिंतन त० ॥

४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥

४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥

५० अन्त्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद ज्ञेयाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै. खम्भा होके अन्नबूससि० इत्यादि कहके ५० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुद्ध घनी देखेके अच्छा वस्त्र आज्ञूषण पहरेके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधेके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकड़्य लेके नवकार गुणता जया गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

धीरे प्रमोदवन्त होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखी है ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि बुलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंमल करै. सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे. पहिले गढ़में अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद९ के रंग मुजब गुण प्रमाणसें रत्न चढ़ावे. नर पंचवर्णके फूल, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणेश रंग मुजब धीतुरेसे नरके चढ़ावे. पंचरंगी ए धजा चढ़ावे, दूसरे बलयमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढ़ावे. तीसरे बलयमें ४८ बूझा चढ़ावे, नव निधानोंकी जगे नव वने फल चढ़ावे, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्वान्न रंगरंगे चढ़ावे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. नर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ५ ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करै. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करै, नवपद जीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजि त्र बजावै, महा महोष्ठव मुदार चित्तसें करै, मंगलदीप आरती प्र मुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब इसमें दिन गुरु पास आथके बुलीके तपकों पारै. तप पारणकी विधि आगे लिखी है तथा बुधापनमें ग्यानज्ञातिके कारण ए धूग ए धोटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव जिल मिल ए रुमाळ ए मोरा ए मिजासणा ए आपना ए चंद्रआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नवर चीज बणवावे, शक्ति नही होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढ़ावे. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुद्धक्षेत्रमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ से लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे. उत्तमताका कारण ऐसा हे—बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोत्सव आते हैं जिसमें चैत्र आसोजकी अठाइ तो सास्वती हे. आठमसें पूनम तक इन दोनों महीनोंमें च्यारुं निकायके देवता नर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर छीपमें जाते हे, (पुन्याहं२) कहते जये अष्ट ड्यसें पूजन करै, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें जक्ति करै, पीठै नवमें दिन अपणे२ जन्मकूं स फल मानते जये अपणे२ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अठाइ आसाठ चोमासेकी ( १४ ) पीठै ( ४९ ) दिन जाणेसें संवच्छरी पर्व साचवणेकूं ( ७ ) दिन तक अठाइ महोत्सव करै. लेकिन यह अठाइ सास्वती नहीं कही, कोइ वखत च्यारुं निकायके देवता एकठे होकर नहीज्नी जावै, पहली पीठैज्नी करलेवै ॥ यह नवपदजी की जुली शाश्वती अठाइमेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधि कार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उधार करै ज्यजीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जद्रबाहूस्वामीनें इसको प्र सिद्ध करा, इस वास्ते ज्यजीवोंको यह तप प्रमाण हे, नर जो अज्नी अपनी अपनी कुयुक्तिये लगाकर खंमन करते हैं सो तीर्थ-करका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें जमेंगे, सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हैं नर उन सूत्रोंमेंसें एक हरफकेज्नी यथार्थ अर्थकूं तोमके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा ( सूत्रनाम किसका हे ) ॥ सुत्तंगणहररश्यं, तद्देवपत्तेयबुद्धरश्यंच ॥ सुयकेवलिनारश्यं, अग्निन्नदसपूद्विणारश्यं ॥ १ ॥ ( अर्थ ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियो का रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा जयेकूं जगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम जगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थ वाचक हे इस वास्ते जइबाहु नमास्वातिवाचकादिकोके बनाये निर्युक्त छेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोम पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अग्नी जंमारोमे मौजूद है ॥

॥ अथ अष्टापद नली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि ( ८ ) सें लेकर पूर्णमासी तक ( केइयक ज्यजीव ) अष्टापदजीकी नली करते हैं ( जिसमें ) पम्किमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी नली तुल्य करै. ( इतना विशेष है ) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः ( इस पदका ) २००० गुणना ( वा ) बीस जाप करै. अरिहंत पदके १२ गुणका नमस्कार करै, १९ लोगस्सका कानसग्ग करै, आं बिल ( वा ) एकासणेका पच्चस्काण करै, पीठे पूर्णमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी आपना करै, मंरुल रचै, सो विधि लिख्यते हैं ॥

जन्म	१५११६११७११८११९१२०१२१२२१२३१२४	पूर्व १ । २ ।	( चत्तारि दक्षिणाए, पश्चिम अठन्नतरा ॥ दस पुवाए दो अठ, वंयमि वंदे चउवीसं ॥ १ ॥ पुवा इं उसज्जमजियं ॥ दक्षिणं सं जवाइ चत्तारि, पश्चिम सुपासमा इ, धम्मइ दसन्नरत्तं ॥ २ ॥ ) इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम यथाक्रमसैं चोवीस कोठे मंरुल में बणाणा. इहां कांकणमोरे मो ली आत्तरकापूर्वक नवपदजीके मंरुलवत् जाणना. नवग्रह दश दग्पाल आपना करे. पीठे एक काव्य पढ २ के एकेक कोठेमें एक
		त्रिवेदिकमध्य	
		असोकवृक्ष	
		नर्द्धः	

पश्चिम



जिनेश्वरके नामके चिठी नुस पर वरक चढा सुपारी चढावे.  
 एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाम्नेयजिनेशत्वं, नंदायत  
 सितांशुकः ॥ यथाकुसुम्वतीनेता, नंदायतसितांशुकः ॥ १ ॥ नै ह्रीं  
 श्री अर्ह ऐं श्रीरूपज्ञदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ २ स्वाहा ॥ १ ॥  
 नपाध्वमजितंजक्तया, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्योधितंज्ञान, कंद  
 धानामनेकपं ॥ २ ॥ नै ह्रीं श्री अर्ह ऐं श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥  
 श्रीशंजवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंसारवनान्मुक्ति, समयं  
 तेसदादरात् ॥ ३ ॥ नै ह्रीं श्री अर्ह ऐं श्रीसंजवस्वामी० ॥ ३ ॥  
 येजिनंदनतेतीर्थ, राजपादसज्जाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा  
 दसज्जाजनाः ॥ ४ ॥ नै ह्रीं श्री अर्ह ऐं श्रीअजि० ॥ ४ ॥ पूजि  
 तांह्रीद्वयीमुक्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनाहः, कांतारा  
 जीवमालया ॥ ५ ॥ नै ह्रीं श्री ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ज  
 सुदृष्टीनां, नूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूषेव, नूरिशोभात  
 पोदयाः ॥ ६ ॥ नै ह्रीं श्री अर्ह ऐं श्रीपद्मप्रज्ज० ॥ ६ ॥ सुपार्श्व  
 तत्श्रुतंश्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्पकोप  
 क्रमानलां ॥ ७ ॥ नै ह्रीं श्री अर्ह ऐं श्रीसुपार्श्व० ॥ ७ ॥ जवांश्वंद्र  
 प्रजेण, यैरज्जाजिसमुन्नतः ॥ यैरज्जाजिसमुन्नतः॥८॥  
 नै ह्रीं श्री अर्ह ऐं श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेत्वद्विधिंप्राप्य, प्रमाद्यंत  
 समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रुत, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ नै  
 ह्रीं श्री अर्ह ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वांये, देवसंपन्न  
 केवलं ॥ अपिमुक्तिर्नवेत्तेपां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ नै ह्रीं श्री  
 अर्ह ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूज्जाजां, परमोक्षगतिर्नवा  
 न् ॥ अनंतानसत्त्वविश्रांतं, परमोक्षगतिर्नवान् ॥ ११ ॥ नै ह्रीं श्री  
 अर्ह ऐं श्रेयांस० ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्णी, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर  
 त्वंदिरहंमोहं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ नै ह्रीं श्री अर्ह ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वये, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ अपि  
 दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीवि  
 मल० ॥ १३ ॥ जगिमांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र  
 योलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअनं  
 त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजि  
 नद्वर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥  
 १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनां देहि, सारंगविदधेधृतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक,  
 सारंगविदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥  
 कुंभुनाशस्तुपंथानं, विधुतारोवृषादृतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि  
 धुतारोवृषादृतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंभु० ॥ १७ ॥  
 येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोअरनाशकुधीर्जव्या, व  
 नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअर० ॥ १८ ॥ नां  
 हिपद्मसुतःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेजिद्यतेमहत्ते, प्रतिपन्न  
 सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमह्निस्वामी० ॥ १९ ॥  
 श्रीसुव्रतजिनाधीश, महामालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवह, मह  
 मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥  
 देव्योपित्वहुणोज्ञाना, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्जत्तया,  
 सहामंदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि० ॥  
 २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्ष, शमितादानवारणा ॥ श्रीने-  
 मेजनतांराध्य, शमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं  
 ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकृत, महाहारतरंगिताः ॥  
 नाट्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री  
 पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ वि  
 ब्रन्नमेषुनिस्सीमां, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं  
 ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठस्वाहाः ॥ २४ ॥ पोवै

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीठै बलबाकुल देके दिग्पाली  
को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक  
जया हे, इस वास्ते सब जगै धर्मरागीपुरष गुरुमुखसैं समझके जल  
जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एसैंही रुद्रिंवंत  
श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवंतके कल्याणक जो जो  
होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधि-  
श्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसैं लेकर नि-  
र्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महो-  
त्सव पूजन करणा चाहिये, इससैं धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें  
परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रोपूनमपर्वाधिकार सामाचारो सतकानुसारसे लिखते हे॥

प्रथम चावलके धूँजसैं सेतुंजयपर्वतको स्थापन करै ( तिस  
पर ) पट्टा रखके श्रीपुंरुरीक गणधर ( वा ) श्रीरुषभदेवस्वामीका  
विंघ स्थापन करै, अक्षत मोतियोसैं पर्वतको बधावै, केसरचंदनसैं  
पर्वतको पूजै, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रद  
क्षिणा देवे (पीठै) पूजन सुरू करै (यथा) दश (१०) बीस (२०)  
तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुष्पदामेणलहई॥चउठठठअठम,  
दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसैं पूजनका  
अधिकार लिखते हैं, एकाग्र चित्तसैं अष्टमंगलीक आगे रखके  
श्रुद्धोदकसैं मूलप्रतिमाको न्दवण करावै, पीठै श्रीसंघ खम्हा होके  
( १० ) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला  
चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि  
सब चीज उत्कृष्टसैं दस९ जघन्ये नारेल १ सुपारी १० नर फल

फूल यथासंभव चढावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध  
गिरी गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदै, १० ख  
मासमण देके ( श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः ) इस पदका  
१० वेर नमस्कार करै, पीठै ( श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक आराधनार्थ करै  
मि कान्तसगं अन्नहूसलि० ) कहके १० लोगससका कान्तसग करे  
(इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उन्नव होय वखत कम रहे तब  
एक लोगससका कान्तसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका  
स्तवन कहे ) पीठै अनेक प्रकारका वाजित्र बजावै ॥ इति प्रथम  
पूजा विधि ॥ अब इसी तरै ( बीस । तीस । चालीस । पच्चास ।  
यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा ( इतनाही विशेष हे ) दूसरी  
पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०  
की जगें ३० की विधि करै, चौथी पूजामें १० की जगे ४० की  
विधि करै, पांचवी पूजामें सब विधि ५० की करै, तथा ( सिद्ध  
क्षेत्र श्रीपुंमरीकाय नमः ) इस पदका दो हजार गुणानो करै, उ-  
त्कृष्टसे पांचूं पूजामें जुदीर धजा चढावै, जघन्यसे पाखूं पूजा किये  
पीठै १ धजा चढावै । यह तप गुरूके सुखसे लेके जघन्य १ वर-  
स, ज्यादा हो सके तो ४ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त  
तपस्या करै, गुरूके सुखसे उपदेस सुखे, संपूर्ण तप हुयां पीठै  
सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुभक्ती करै, सा-  
हमीबहुल करै ( यह ) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरुषभदेवस्वामी  
के प्रथम गणधर श्रीपुंमरीकजी पांच कोमी साधू साथ अक्षय  
सुखको प्राप्त जये, ( इसवास्ते ) भरत प्रथम चक्रवर्तीने चैत्री  
पूनमको आराधन करके ( यह ) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि-  
या, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसे इस जवमें अनेक सुख  
संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर

आधिष्याधि सोग संताप सब दूर होय, परजन्ममें देवादिक रुद्धि प्राप्त होय, क्षीणकर्मी होलेंसे अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

( ढाल ) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसानलै, पुंमरगिर रे गाईस हूं सुज्ज ज्ञानलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीज जो मुखहु वै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ ( उल्लाखो ) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां सुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण वै अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण ज्ञाप्रियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरैराखियै ॥ १ ॥ ( चाल ) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति जरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंमरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ ( उल्लाखो ) गुण जलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरो, पुंमरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुप्तै संचरी ॥ पण कोमि साथे विमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंमरीक कहाव ए ॥ २ ॥ ( चाल ) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै आनक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ ( उल्लाखो ) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म ध्यान मने थरै, बहु ज्ञाव ज्ञतै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ ज्ञावना ज्ञावै तेण दिवसै पंचकोमि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ ( चाल ) दस बीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे आवक निरती सरदही ॥ चउथउठे रे अठम दसम डुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम एसुज्ज मन वसै ॥ ( उल्लाखो ) मन वसै पूजकपूरधूपै सासखमण फले बली, सामन्न

धूपै परकनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जेम  
 गुरुमुख सुणीअठै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंणी सुणी जवि  
 यण सादरा ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तंडुलरासि विमलगिरि आपी, तसुं  
 ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी  
 आपी निवेशी ॥ ५ ॥ सेतुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल  
 दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा  
 वौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध हूरे करि आठ ॥  
 प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥  
 ऊजा अई नवकार गुणंता, दसर जैती तिलक करंता ॥ माला  
 पुष्प पूंगीफल होवा, मेरु जरण वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ ( ढाल )  
 शक्रस्तय पांचे देव वांदै, जघन्यना वंदण पाप बँदे ॥ दसे नमस्का  
 र करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेइ सेती ॥ ९ ॥ आराधिया  
 काजे क्राउसग, जिणे किये जाजै कर्मवृग्ग ॥ लोगस्सज्जोय दसे  
 वखाणु, वेला प्रमाणे अहिण्ण आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज  
 एह, इसी परै बीजा व्याप तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै,  
 एक चित्त सूधै शुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करी  
 जै, एकेरू पूठै अथवा गिणिजै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पठा  
 प्रज्जु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ ( कलश ) इम करिय पूजा यथा  
 योगै संघपूजा आदरो, साहसोवहल करो जविका जवसमुइ ल  
 लावरो ॥ संप्रदा सोहग तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहू लहै, आअमर  
 भाणिक सीस सुपरै साधुकोरति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त० ॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यतै ॥

स्तवन पहली वरे स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुज  
 घंटी शुजदिन गुरूके पास नंदीश्वरतपग्रहण करे. नंदीश्वरद्वीपके व्यास  
 दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें अमावस २ ( ५२ ) बावन उपवास



करै, जिस दिन जो माहाराज के नामका उपवास होय उसही नामकी १००० गुणना करै, सो लिखते हैं ॥ १ श्रीरूपज्ञाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) च्यार नामकूं ४ बेर जुलटा, ४ बेर सुलटा गिणो ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणसें एक जुली होय, ४ जुली करणसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब जुजमणा करै, नंदीश्वरद्वीपका मंरुल वणावै, पूजा करावै, इत्यादि महोत्सव करके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवहल करै, मंरुलकी विधि एकेक दीसीमें ( १३ ) तेरे २ पहामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमें १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे, इनकी पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे, क्रमसें एकेक काव्य पढ़के जल चंदनादि अष्ट इन्द्रियसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैशाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मित्ती वैशाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे, इस दिन श्रीरूपज्ञदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीठे बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती ज्ञया, उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साहीदारे कोमि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान २ ऐसी नदघोषणा ४, देवहुंउज्जी वाजित्र ५, ऐसे पांच इन्द्रिय प्रगट किये, श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण



हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालम नई. इस दानके प्रज्ञावसे श्रेयांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त नया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणेसे वस्त्र आजूषण पहरके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पीछे गुरुके सुखसे एकासणादिकेक पञ्चक्राण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, नर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वको जो जव्यजीव सेवन करते रहेंगे उनोका तपतेज हमेसां बढ़ता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतीय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ ज्येष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें ढांटे. इस शांतिपूजाके कराणेसे मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कन्नी श्रीसंघमें प्राप्त न होय ( अग्रवा ) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. ( इससे ) आधि व्याधि अहादिककी पीना सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविक्षेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्चतुर्मासकमंरुनानि ॥ १ ॥ ( अर्थ ) ज्ञानआएतानि सामायकादि, धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंलानि अलंकारभूतानि विद्यन्ते ॥ अदो नव्य प्राणी जीवो यद्  
 सामायकको आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंलण हे, अ  
 र्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यद् चोमासेपर्वमें कोइ जीव  
 सामायक पक्कमणा पोसा करै, कोइ जगवानके मंदिरमें नाना-  
 प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पालै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ  
 नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसँ वण  
 आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईजी प्रकारसँ धर्मका  
 उद्योत करणा चाहिये. जिससँ सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट  
 होय, नर चोमासी ( १४ ) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेको  
 जाणा, पांच शक्रस्तवसँ देववाँदै, पीछे गुरुके पास जाके चोमासे  
 पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके नश्रांतका सोगन  
 लेवै, सांजकूं चोमासी पक्कमणा करे. इस मुजब काती चोमासे  
 फागुण चोमासे कोंजी सेवत करै ॥ इति चतुर्मासपर्वार्थाधिकार,

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ नव्यजीव मम्मार्इ आदि क्षेत्रोंमें तरे  
 की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते  
 हैं, इस मासक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. नर देस  
 देसमें श्रावणमास इस महीनेमें केइ२ तरेकी तपस्यायें कर्त्ती हैं.  
 जिसमें उत्तमफलको देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसे  
 उद्धरण करके संक्षेपविधिसँ इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ वुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमट्ट १, एकाक्षण १, नीवी १, आंवल १, उपवास १,  
 ( यह १ उज्जी ) इस तरे पांच उज्जी करै. तपोदिन २५. उज्जमणें  
 २५ लाडू चढ़ावै ॥ इति इंद्रिजयतप ॥ १ ॥

एकाक्षण १, नीवी १, आंवल १, उपवास १, इस तरे

जुली चार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लडू चढावै ॥ इति  
कंधायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे जुली ३ करै. तपो  
दिन ए. ऊजमणें ए लडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३. ऊजमणें झा  
नपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें  
स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतपः ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें  
गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, ठठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलगाणो १, इति  
१, नीवी १, आंबिल १, यह एक जुली. इसी तरे जुली आठ करै.  
तपोदिन ८८. ऊजमणें रूपेका वृद्ध, सोनेका कुहामा करायके ग्यान  
खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूरतपः ॥ ७ ॥

जाडवा वदि चउअसैं लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकास  
णा अथवा बिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकारें  
कलस स्थापन करै, एक सुछी चावल सदा कलसमे जरै, संवत्सरीके  
दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदिरमें जाके देव  
आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अक्षयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा  
नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै ( श्रीवासुपूज्यस्वामी  
सर्वज्ञायनमः ) इस पढ़का २००० गुणना करै, गुरू के पास स्त  
वन सुणे. ( सो स्तवन आगे लिखेगें ) ऊजमणें ज्ञानके उपगणसैं  
ज्ञानजक्ति गुरुजक्ति करै. इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुदिपदके पांचमेके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करै, अंबिकादेवीकूं वेस चढ़ावै ॥ इति अंबिकातपः ॥

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै, इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दिन १६. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, इति सर्वोर्गसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमणें सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौ-  
जाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पनिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसैं पूनम पर्यंत (१५) उप-  
वास करै, जो तिथि झूले सो तिथि उर करै, ऊजमणें एकसो बीस  
लक्ष मंदिर चढ़ावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः ॥ १४ ॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह पट मास टा-  
लेके ठोटी पांचमतप सरू करै, अंधारी उजवाली पांचम मास ५  
लग एकासणादि तप करै, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति ठोटी  
पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै, उपवास  
के दिन देव वांदणादिक क्रिया करै, ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोप-  
गरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढ़ावै, सत्तरजेदी पूजा  
करावै, साहमी बचल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आपाठ सुदि पनिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाश-  
णादि तप करै, अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै, इस  
तरै वरस १ तप करै, ऊजमणें चावलसैं अशोगवृक्ष लिखके पूजा  
करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आपाठ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण  
वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीआ-

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलौसे लोकनाल वणाके सा ते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धहेत्र ( उसकों ) सोनेरत्न का मुंगट चढावै ॥ इति मुंगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तकै एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इ स तरे आठे वरसे आठ पावनी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय, ऊजमणें अष्टापदपूजा करावै, पकवान फल सर्व चौबीस चढावै ॥ इति अष्टापदपावनीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै, ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लक्ष्म देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा बीस एकाशणा करै, ऊजमणें अखंभित घी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंभितदशमीतपः ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै, ऊजमणें ११ अंशकी पूजा करै ॥ इति श्रीङ्ग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकाशणादि १४ तप करै, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै ( प्रथम तेले ) सिखरणसे पारणा ( दूसरे तेले ) सारेका पारणा ( तीसरे तेले ) लापशीका पारणा ( चौथे तेले ) लक्ष्मले पारणा ( पांचमें तेले ) खीरसे पारणा, पारणे प्रथम साधुकों बहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १,  
एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके कुजमणें रूपाका चक्र मंदर चढ़ावै तो  
सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाभ होय जंगममें जीत होय॥  
इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥  
उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १. उपवास  
१, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १.

एवं दिन १० पूनमसें सुरू करै. पारणै साधु पमिलानै, ग्यानपूजा  
करै ॥ इति दालिङ्हरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंद्रिये उपवास १, बेइंद्रिये ठठ १, तेंद्रिये अठम १,  
चौरेंद्रिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, ठक्कायें चतुर्दसम १, तप करै.  
कुजमणें सुखमीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति ठक्कायआलोचणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

ठठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अठम पांच करै ॥ इति पूत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति जर्तारसुखतपः ॥ ३४ ॥

॥ नीवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६ ॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणकी थावक  
एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उद्घा  
र करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा  
साहसीवृत्त तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुद्धकेत्रोंमें अपना धन

स्वरच करै, धर्मका उद्योत करै ॥ इस तपस्याके प्रज्ञावसें इस जन्ममें संसारसंबंधी दुःखदालिङ्ग दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परजन्ममें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय. ( किंबहुना ) इति गुट कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ ज्ञात्वा महिमेमें मिति ज्ञात्वा सुद ४ तथा केइ मतकी अपेक्षासे ५ तिथिओं संवत्सरी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे ( प्रथम इस संवत्सरी पर्वकी महिमा कहते हे ) जैसे जगत्रमें अनेक मंत्र हे पर नवकार समाप्त कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ तीर्थ नही २, पांचदानमें अन्नयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही ३, गुणमांहे विश्वगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममे संतोष नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा जल ९, अलंकारमांहे चूनामाली १०, उद्योतषोमें चंद्रमा ११, ते अवंतमांहे सूर्य १२, गजमें एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तु रंगमें पंखबल्लजकिशोर १५, वृत्त्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे मंदन १७, काष्ठमांहे चंडन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९, न्यायधर्ममें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२, शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, बाजित्रमें जंजा २६, स्त्रीमांहे रंजा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता रमें कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृद्धमें कल्पवृद्ध ३१, जलमें अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक १ चीज उत्तम होती है. इस तरे सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संवत्सरी ( दूसरा नाम ) श्रीपर्यूपण पर्वकों जगवंत श्रीमाहावीर स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूपणपर्वके आणेसें प्रथम श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण



करै १, दोब करायै २, तेलैका तण करै ३, सर्व मंदिरोंमें जगवंत की जावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघमें खमावै ५, यह पांच कामण के वास्ते श्रीतीर्थकर गणपरीने पशुपतापर्व प्रवर्तन किया ॥ अथ शुद्धश्रावक संवहरी पर्व आराधन करणोकुं आठ दिने अठाइ सही छव करै सो कल्पदत्ता शास्त्रोंमें लिखते है ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी ज्ञप्ति करै, कल्पमूत्रजीकुं विधिसंयुक्त अंगों कर देजाके रात्राजागरण करावै, प्रजातासमय नगरके सर्व श्रीसंघकुं निमंत्रण कर चण्डा योग्य सत्कार लम्बान करै, पीछे पुस्तकग्रहण पुरुष ० में छतम वस्त्र आञ्जुषण पहरेके मुगट वत्र चामर इत्यादिक संयैत साक्षात् ईश्वर हाराजका रूप बनाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीकरचित्त आलमें पुस्तक धरके अथवा दोनुं हाथोंमें आल धरके दोनुं तरफ पुरुष अथवा वस्त्र आञ्जुषण पहरेके चमर डालै, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके तुल्य वर्णन करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै, गुरु पिता स्वभा होके विनयसंयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आगै रखै, श्रीसंघके आज्ञासैं वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपंक्तह वजावै, दूसरा वचनसैं तथा द्रव्यसैं कलाइ घोषी जगज्जुंजा इत्यादिक सबका आरंभ गोमावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाल सुपारी नालेरादिक की प्रजावना करै ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार शक्तिसैं पूजा करै, चौदसके दिन संवहरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे हो कर सर्व मंदिर दरसन करणैको जावै ५, सचित्तगा परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउठ, ठठ, अठमादिक तण करै ८, अपने वित्तके अनुसार जन्मकल्याणकका उछव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवहरी प्रतिक्रमण करै ११, निसक्य होके सर्व श्रीसंघ सैं खमावै १२, पारणके दिन पोसह ० निकपणैवाले साधगीजाइ-

पौकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संवहरी दान देवै, साहसी  
 वल्लभ करै १५. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुगमनेन  
 आराधन करलेसैं आठ जवले भोक्तव्यानकू प्राप्त होता है ( उर )  
 केहयक जव्यजीव अत्यंत शुद्ध जाव भरतेजये अठमादि तप कर  
 के युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते है उर सुगमनेवाले प्रसाद निजा वि  
 कथा होरके अठमादि तप करके एक चित्तसैं शुद्धजाव रखके इक  
 बीस बेर सुगते है, सो जव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे जव लि  
 द्विस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्युषणपर्वका महोत्सव जो जव्य  
 जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रजावीक है, अपनी लक्ष्मीसैं  
 धर्मका उद्योत करते है. उस पुण्यआत्माकों देव सहायता करते है उर  
 नमस्कार करते है ॥ ( अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह  
 कल्पसूत्र नवमेपूर्वसैं उद्धार कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा  
 अध्याय है. सर्व श्रीसंघके संगलेके कारण श्रुतकेवली श्रीजगद्बाहु  
 स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंत विषय है. जैसे  
 सर्व नदीके बालू के कण होय उसले जो एक सूत्रके अनंत विषय है.  
 इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीज करके कहे  
 तोजी महात्मका एक अंश जी कह सकता नही. एसा इस पर्वका  
 महात्म जाण जो जव्यजीव शुद्ध जावले सेवन करेंगे सो अनेक तरे  
 सैं रुद्धि वृद्धी सुख सौभाग्य कां आप होंगे. उर परजवले देवादिक  
 रुद्धि पावके सुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्युषणपर्वधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आश्विन महीनेमें मित्ती आश्विन सुदि ७ से लेके आश्वि  
 ज सुदि १५ तक नवपदजी की बुली तथा अष्टापदजीकी बुली  
 विधिसंयुक्त करै. सो सत्र विधि पहली लिख है बुली माफक करै ॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मित्ती कार्तिक बुदि अभावस है सो बी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कवसें ज्ञया सो लिखते है. चौबीसमें तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते थेके अंतकी चौमासी मध्यमपावापुरीमें आयके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व बात ज्ञयजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपना अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्रशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देख के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं ज्ञेजा. पि ठानी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते ज्ञये बहुतर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि ठली दो घन्टी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त ज्ञये. जिस समय जगवंतका निर्वाणकल्याणक ज्ञया उस समय चौसठ इंद्र देवतागणके आणे जाणेसें वरदा उद्योत ज्ञया, नर जो राजा पोषधमें बैठे ज्ञयेथे सो ज्ञावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके इव्य-उद्योत किया. एकमके प्रज्ञात समें देवतोका आणा जाणा नर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न ज्ञया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपने ज्ञाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें ज्ञाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व वरदा उत्तम है. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक २ पदको १००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागरण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाणकल्याणकका अधिकार सुणै । गौतमरास सुणै. इत्यादिक उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उद्भव करणा चाहियै ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा है सो पढ़ै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व ज्ञव्यजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करना चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ ज्ञी नहीं है. सर्व तत्त्वमें ज्ञानके समान कोई तत्व नहीं. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोई उपाय नहीं. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, ओर कोढ़ादिक रोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्म के क्षय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जैसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण ज्ञये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चौकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साधिया करै, फल फूल प्रसुख चढ़ावै, पांच बत्ती का दीपक चढ़ावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढेके दासक्षेप कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढ़ावै तथा पूजा विटांगणादि चढ़ावै. ( ज्ञानपूजा लिखते है ) नमंतिसानंतनहीवनाहं, देवाय पूयंसुविहेयपूर्विं ॥ ज्ञतीयचित्तमणिदासएहिं, झंझारपुष्पंपसवेहिनाणं ॥ १ ॥ तहेवसद्धामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुष्पेहिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सलाजायन्नवस्कयाय ॥ २ ॥ यह गाथा पढेके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीठै ज्ञावपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के । इरियावही पम्किमें । लोगस्स कहे । बेठके । मुंहपत्ती पम्लिहे । अणूजाणह मेमिजग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीठै पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञास ज्ञानु

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कबसें ज्ञया सो लिखते है. चौबीसमें तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते थेके अंतकी चोमासी मध्यमपाकापुरीमें आयके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व बात ज्ञयजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपना अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्लशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देख के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं जेजा, पि ठानी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते जेथे बहुतर वरसका आयु पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि उली दो घन्टी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्रात जेथे. जिस समय अगवंतका निर्वाणकल्याणक ज्ञया उस समय चौसठ इंद्र देवतागणके आणे जाणेसें वना उद्योत ज्ञया, नर जो राजा पोषधमें बैठे जेथेथे सो ज्ञावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके इत्य-उद्योत किया. एकमके प्रजात समें देवतोका आणा जाणा नर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न ज्ञया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपने ज्ञाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें ज्ञाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व वना उत्तम है. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको ३००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागरण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन पढ़ै । निर्वाणकल्याणकका अधिकार सुणै । गौतमरास सुणै. इत्यादिक उदारचित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उन्नव करणा चाहियै ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा है सो पढ़ै ॥

दिगाद्यापहके ) पीठै ॥ आज्ञाशिखेहियनाणं । सुयनाणंचैवतुहिना  
 एंच ॥ तहमणपल्लवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा  
 कंदके । इहामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा  
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,  
 समस्त लोकालोकजास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरे पांच  
 नमस्कार करै, धिरता होय तो ( ५१ ) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार  
 करै, सो धूर्व नवपदजीके गुणनेसे लिख्या है ॥ उस माफक करै  
 ॥ पीठै ( उँ ह्रीं लामेमाणस्त ) इस पदका २००० गुणना करै, कम  
 धिरता होय तो इहारे अंगकी सिझायों पढै वा सुणों, सो लिखते है ॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ हाल हठीलानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ  
 चरांग रे ॥ सुगणनरा ॥ वीर जिनंदे ज्ञापियो रे लाल, उववाई जास  
 उवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगतीरे, हुं जाउं वारंवार रे ॥ सु० ॥  
 विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०  
 ब० ॥ १ ॥ सुदखंध दोष ठै जेइना रे, प्रवर अव्ययन पचवीस रे ॥ सु०  
 ॥ उदेशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगोस रे ॥ सु० ब० ३ ॥  
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अठार हज्जार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप  
 हने ठेहने रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० ब० ४ ॥ गमा अनंता  
 जेहमां रे, बलिाल अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परितो ठै इहां  
 रे लाल, आवर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबड निकाचित  
 सासता रे, जिनप्रणीत ए ज्ञाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आत्म उलसे  
 रे लाल, प्रगटे सहज स्वज्ञाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण आवक  
 वारू आविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥ सु० ॥ विधिपूर्वक तुमे सां  
 जलो रे लाल, गीनारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिजंत  
 सहिमानिलो रे, उतारे जव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे मादरे



निरमल मुखकारण, समरगुहनीन पुष्टदेतु जवजलनिधि तारण ॥ सं-  
 यमतप आनंदकंद अक्षय निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापि  
 त जिन तारण ॥ १ ॥ इत्यादि परिणाम धर्म परणति पदिकोद्देश,  
 साहु नादृश। संय सय आराधन सोद्देश ॥ ओह तिमर विव्वंतसूर  
 मिश्रयात्व पयासण, आनमशक्ति अर्बंत शुद्ध प्रचुता परगामण ॥  
 ॥ २ ॥ सनि श्रुति अक्षय विशुद्ध नाण मणपक्कव केवल, जैद प-  
 चास हायोपसमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहां  
 उग परतक दीसत, सकल प्रतक अकाश ज्ञान भुव केवल अपर  
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलयो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञात्री, बाहिर  
 अंग प्रधान खंघ मणधर सुप्रकाशी ॥ शाखा श्रीमिर्युक्ति ज्ञाप्य पदि  
 शाखा दीपै, चूरा टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचां-  
 गो सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदी अनुयोगद्वार शाख मा-  
 नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजव उपगारी, अज्यातो आग-  
 म अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोहपंक दर नीर सम सिद्धांत  
 शब्दो, देवबंद आणा सहित दयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोदा  
 मणो सकल मोह गुणकंद, जगते सेवो जयिकजन पामो परमा  
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहेके । एमो  
 त्पुण्यं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविस्तारू० नमोर्हत् सिद्ध० । कद-  
 के ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोले, जयवी  
 चराय० कहै, वंशाय० अन्नवृ० कहेके एक नवकारका काठमग्न  
 करै, शुद्ध कहै ॥ ॥ अग्र शुद्ध लिखयते ॥ देविंदेवदियपएहिंपरुनि  
 याणि, नाण लिंकवदमणोहिमईमुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपं  
 चमोइ, पूयातवेलुपायगणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहेके  
 ( ज्ञान आराधना निमित्त कोमि काठमग्न ) नरगुत्तरी० अन्नवृ०  
 कहेके ? लोगस्तका कठमग्न करै, ( पारके ) बोधाभायं० ( इत्या-



दिगाआपदके ) पीठै ॥ आज्ञासिद्धोदियनाणं । सुयनाराचवेवहिनो  
 एच ॥ तहमणपल्लवनाणं । केदलनाणचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा  
 कहके । इत्यामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा  
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,  
 समस्त लोकालोकजाह्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इत तरे पांच  
 नमस्कार करै, अरता होय तो ( ५१ ) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार  
 करै, सो पूर्व नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै  
 ॥ पीठै ( छँ ह्रीं णमोनाएस्त ) इत पदका २००० गुणना करै, कम  
 अरता होय तो इग्यारे अंगकी सिझायों पढै वा सुणै, सो लिखते है ॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ठाल हंतीतानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ  
 चरांग रे ॥ सुगणनरा ॥ वीर जिनंदे ज्ञापियो रे लाल, अववाई जाल  
 अवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगतीरे, हुं जाडं वारंवार रे ॥ सु० ॥  
 विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०  
 ब० ॥ १ ॥ सुयखंध दोष छै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०  
 ॥ उद्देशादिक जालिये रे लाल, पिच्यासी सुजगोस रे ॥ सु० ब० ३ ॥  
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अठार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप  
 इने ठेहने रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० ब० ४ ॥ गमा अनंत  
 जेहमां रे, बलिजि अनंत पर्याज रे ॥ सु० ॥ तस परितो छै इहां  
 रे लाल, आवर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबद्ध निकाचित  
 सासता रे, जिनप्रणीत ए ज्ञाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आत्म डलसे  
 रे लाल, जगटे सहज स्वज्ञाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण आवक  
 वारु आविका रे, अंगे धरिय बल्लास रे ॥ सु० ॥ निधिपूर्वक तुमै सां  
 जलो रे लाल, गीनारथ गुरु पाल रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए निजंत  
 बहिमानिलो रे, जतारे जव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे मादरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० व० ८ ॥ इति आचाराम सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रक्षियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांजलो, मनोहर  
श्रीसुगडांग ॥ मोरालाजन ॥ त्रिणसे तेसठ पाखंतीतणो, मत खंज्यो  
धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे  
हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माली माहरै, मानु सुधा रे  
समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग ठे जेहनो, ए तो सूत्र  
गंजीर ॥ मो० ॥ बहुश्रुत अरथ जाणे सहू, कीर नीर धनु तीर ॥  
मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुखखंय दोष ठै, बलि अध्ययन तेवीस  
॥ मो० ॥ उहेला समुदेला जिहां जला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो०  
मी० ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण जख्या, पद ठसीस हजार ॥ मो० ॥  
संख्याता अकर पदमांहे, कुल लहे तेहमो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ ग  
मा अनंता पर्याय बली, जेद अनंत जिला मांहि ॥ मो० ॥ गुण  
अनंत त्रस परित्त कहा, आवर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥  
निबद्ध निकाचित्त जे सासय कमा, जिम पणत्ता रे जाव ॥ मो० ॥  
जापी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मी०  
मी० ७ ॥ करिये जगत जुगत ए सूत्रनी, निथै लहिये रे मुक्ति ॥  
मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमधुणानी रे शक्ति ॥  
मो० मी० ८ ॥ इति सूयगडांग सिद्धाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ वाणांगसूत्रसिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी ॥ ए चाल ॥ बीजो अंग  
जलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीवाणांग ॥ मोरो मन मगन थयो ॥  
हारे देखी २ जाव, हारि जीवाजीव स्वजाव ॥ मो० ॥ सबल जगत  
करी वाजतो रे जि०, जीवाजिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह  
अंग मुऊ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंव ॥ मो० ॥

गुहिर ज्ञाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २  
 ॥ कूट शैल सिखरी शिवा रे जि०, काननमें बलि कुंम ॥ मो० ॥  
 गह्वर आगर उह नदी रे जि०, जेहमें अठे रे नंदन ॥ मो० ॥ ३ ॥  
 दस ठाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त  
 जेहनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सि  
 लोक निजुत्तुं रे जि०, संगहणी पन्निचित्त ॥ मो० ॥ ए सहु सं-  
 ख्यातां जिहां रे जि०, सुगतां नलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय  
 खंध इक राजतारे जि०, दश अध्ययन नडार ॥ मो० ॥ उद्देशादिक  
 चीस ठै रे जि०, पद बहुतर हज्जार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशा  
 सन तणो रे जि०, सुणे सिद्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंड कहै  
 ते हुवे रे जि०, परमारअरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्र सिज्ञाय ॥

॥ ढाल ॥ आरा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे बीजली ॥ एचाल ॥  
 चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा  
 नपांग करी सोजा वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागधो ज्ञावा  
 साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित ज्ञाव कुसुम परि-  
 मल व्यापो घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव  
 समासग्री, हो लाल जी०, लहीयै एहथी ज्ञाव विरोध कांइ नथी,  
 हो लाल वि० ॥ ज्ञांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल  
 यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥  
 एकथकी ठै सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्र  
 माणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकत  
 णो संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि ठै एहना  
 सही, हो लाल ठै० ॥ ३ ॥ सुयखंध अध्ययन उद्देशादिके जला, हो  
 लाल न०, संख्यायें एक एक प्रत्येके गुण निजा, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाल सहस तेजतरा, हो० स०, पदनै अग्रउदग्र सं-  
ख्याता अकरा, हो० सं० ॥४॥ ज्ञाप्य चूर्ण निर्युक्ती करी सोहे सदा,  
हो० करी०, सुणतां जेद गंजीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥  
जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर  
कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं  
मांहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिच्छ्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो०  
सू० ॥ जिम मालती लहे जूंग करीनेन विरहे, हो० क०, इश्वर  
शिर सुरगंग तज्जी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-  
ग्रंथतणो जुगते वसो, हो० त०, साकर सेलमी डाख अकी पिण  
मीठमो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो,  
वि०, एहना सुणने ज्ञाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिंज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंथोमानी ॥ पंचम अंग जगवती जाणिये रे, जिहा जिन  
वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकट्या रे, मानुं पर  
तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगमी रे, जेहनी  
बै न्हाम नवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहिला  
अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंय एक अति  
जलो रे, एकसो एक अध्ययन नदार रे ॥ दश हज्जार नदेसा जेह  
ना रे, जिहां किण प्रश्न ठत्तीस हज्जार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय  
लाख अरथे जर्या रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकावो  
क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥  
करिये पूजा अने परजावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥  
सुणिये सूत्र जगवती रागसूं रे, तो होय जवसागरनो त्याग रे ॥ पं०  
५ ॥ गोतम नामे इय चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम  
रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, जगति युगति मन आणो



॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विठियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांजलो, उपासकदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो जव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक ठै, अध्ययन नदस विचार रे ॥ दस संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, ओताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोना आगल तो वांचतां, गीतारथ पामे रीऊ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां ज्ञापिया, पिण सूत्र जणयो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध श्रावक जणी, एक अरथ नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्रहृषियै, निस्संकपणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंद्र कहै स्युं अयो, जो कुमती करस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिंहायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड के वली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां ज्ञासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप नय जंगथी जी, अंगना जाव अजंग ॥ सहिज सुख रंगनी तळिपका जी, कळिपका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग ठै आठ अजिराम ॥ आठ नदसा ठै वली जी, संख्याता सदस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ ठे रे मीठास ॥ सरस अनुजव रस  
ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे  
हुवे जी, निरविषयी सुण्यां आय, जिम माहा विष विषयरतणो  
जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ असृतवचन मुख वरसती  
जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंड इण सुत्रना जी,  
तुरत लहै अजिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगरुदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग  
अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ श्रावक सूत्र सुणो  
॥ सूत्र सुणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥  
आ० १ ॥ जसु कट्याणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥  
आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥  
आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिमर अंतरगति नीजै  
हो ॥ आ० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी नलसे मोरी देहा हो ॥  
॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया  
हो ॥ आ० ॥ नगरादिक ज्ञाव वखाण्या, ते तौ ठढै अंगे आण्या  
हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू  
रे ॥ आ० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥  
आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनै, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥  
आ० ॥ श्रोतार्थी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगानं हो ॥ आ० ॥  
६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही प्रिण ढोर हो ॥  
आ० ॥ कवि विनयचंड कहे साचो, श्रुत रंगै सहुको राचो हो ॥  
आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिज्ञायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रणव्याकरण सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग



सुरंग सुहावै, प्रणव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि  
दानंद फल पामे ॥ आवो१ गुणना जाग तुमने सूत्र सुणानं ॥  
पुष्पकली ज्युं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग  
पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगु  
ष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रण्णादिक अति रूना ॥ ते वै अष्टोत्तर सत  
ए तो, सूत्र मध्य मणिचूना ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां  
आएया, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लवधि जेद  
सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुयखंध एक वै दसमे अंगै, पणयालीस  
अज्ञयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा  
॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥  
माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥  
सूत्र मांहि तो मारग दोयवै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै  
ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कमखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो,  
तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूलि  
का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुभ किंपाक सम  
डुकृतफल जोगवी, नरकमें गरक अया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जोग  
वी स्वर्गमांजे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० २ ॥ दोयश्रुत  
खंधने वीश अध्ययन बलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजै ॥ सहस  
संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल अमर चित्त गुंजै ॥  
सु० ॥ ३ ॥ सरस चंपकलता सुरजि सहने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि  
माटै ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-  
चल खाटै ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेजं कारणअवै, डुकृतने  
सुकृत जोवो विचारी ॥ डुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारियै गुण संजारी ॥ सु० ५ ॥ म कर रे म कर निंघा नि-  
गुण पारकी, नारकी तणी गति कांई बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज  
सहज संतोष नज, लाग श्रुत सांजली धरमबंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख  
ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागै ॥ चिरजयो  
वीर शासन जिहांसूत्रा, कवि विनयचंद्र गुण ज्योति जगै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में शुण्या, सहेली ए ॥  
आज अथा रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनौ, स० ॥  
जाव्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-  
णी ॥ पसरि अंग इग्यारनी, स० ॥ मुऊ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू  
तैं हरखे करी, स० ॥ अनुन्नव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी  
जे सांजलै, स० ॥ कुश बूढा कुण बाल कि ॥ तो ते फल लहे फू  
टरा, स० ॥ स्वादे अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी  
हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मजार कि ॥ जास करी ए अंगनी,  
स० ॥ वरत्या जय२कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पंचावनें,  
स० ॥ वरषारुतु नजजास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥  
पूरण अई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,  
स० ॥ श्रीजिनचंद्र सूरीस कि ॥ खरतरगछना राजिया, स० ॥  
तंसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रहखनिधान जो, स० ॥  
ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग  
इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप  
गारी सुगुरु वतारै, पांचु जेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन  
पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूस दंसनकी,

करमैधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतासुं मिल, सिद्धि रसान-  
धरी ॥ मे० २॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी,  
बाल कहै अब विसरत नांही, पल दिन एक घरी ॥ मे० ३॥ इति पद ॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो  
॥ आंकणी ॥ अरथें श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रें श्रीगणेशरगुरु  
ज्ञाण्यो, तडुजयथी जे सुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग  
जाव सकल जाणे, नय एकांत सुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार  
ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपंग वै अति रूमा, ठ छेद  
पयन्ना नहि कूमा, सूत्रसुत्र नंदी अनुयोग चूमा ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां  
निरयुक्ती सूत्रे संगी, वलि ज्ञाप्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे  
कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै,  
संवेगपखी वलि सरदहियै, ए त्रिण विन जवमारग कहियै ॥ श्रु०  
५ ॥ जेहनी अनुपेहा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै,  
आराध्यां निज अनुजव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे  
गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते कृमाकड्याण सदा पावै ॥  
श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महानेमें भिति कार्तिक सुदि १४ के दिन सब  
मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक  
धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजब  
जाणना ॥ इति कार्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सैं सेतुंजरास सुणें, निवी वा  
एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पम्किमणा करै, देववंद-

नादि करै, ( नै हँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनंतसिद्धाय नमः ॥ ) इस मंत्रका जाप करे १०८ बेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको जावै. कातिपूनमेके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अठाई महोन्नव करै, विस्तारसें देववंदनादिक विधि करै, ( २१ ) बेर सेत्रुजरास सुणे ( नै हँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः ) इस पदसें २१ जेती देवै. ( कदास ) सिद्धिगिरी जाणेकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंसा होय उहां महोन्नव संयुक्त दर्शन करणेंको जावै, पूजादिक सब विधि करै, ठठन्न कर के वा चउत्थन्न करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुन्नक्ति करै, सा हमीवन्न करे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेंसें सर्व अशुन्नकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्रावम वारखिन्न प्रमुख दस कोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त ज्ञए, जिससें इस दिन जो धर्मकृत्य करणेंमें आता हे उसका निश्चे दशकोमि गुणा फल होता है ॥ इस नरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही. संवत १९३२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था. उहांसें कार्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंबोके दरसन करके गिणती देखणेमें आई सो बारे हजार तीनसें अठानकी संख्या मिली, नर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अनन्त साधू अणसन लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत जय्यी जीव होंगे सो शुद्धज्ञावसें इस तीर्थको सेवेंगे, जो सेवते हे सो धन्य हे. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तीर्थआसातनाकारी देवद्रव्यजहक जतीसाधू जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके छेबी एसी वक वृत्तिसें जीणोंद्वार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसें अन्य देसांतरी जात्रार्थी नव्यजीवोंका धन उगणेकी वृत्तिसें तीर्थ सेवन अनंत संसारका नवन्नपण समझके वर्जना, एसें उरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपञ्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगतीन  
करणा. शुद्धजावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी  
॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं  
हे, जो रे बहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते  
दि० १ ॥ अदञ्जुत ऊंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनाथक आ  
दिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ जोली जगत जली परे हे, जो रे ब०  
॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० १ ॥ नाही निरमल नीरसुं  
हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर जरिय कचा-  
लमी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रुमी  
रायणवांहमी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां  
जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरब निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥  
इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥  
चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० ॥ अजित जिनेसर शांती  
॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदञ्जुत  
जलकाजोल, मो० ॥ सिद्धवर्म सेत्रुंजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये  
नित रंगरोल ॥ मो० ६ ॥ इण कुंगर दीठा अकां हे, जो रे० ॥  
ऊपजै परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर वांहमी हे, जो रे० ॥ कहे  
नित जिएचंद ॥ मो० ते० ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंझप्रभु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो से  
त्रुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै टलै रे, तू  
करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरब निनाणू समोसरया रे, प्रथ  
जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसर

तेवीस रे ॥ नमो० २ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए-  
 हिज ठोम रे । काल अनंत बलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोमि  
 ॥ नमो० ३ ॥ अनंत कटवाणक जूमिका रे, महिमावंत महंत  
 सास्वतो तीरथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो०  
 कोमि जवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ से-  
 सनमुख चालतां रे, पगर ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥  
 दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्थुं सेत्रुंजे केरी वाट रे ॥ ठहरी  
 विध पालस्थुं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पगर  
 अतिघणा रे ॥ पगर याचकदान रे ॥ प्रेम जगत साहमीतणी  
 ीणीद्वार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-  
 मंगलमाल रे ॥ मणि मोतीयमे वधावस्थुं रे, रजत सोवन जर  
 रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्थुं रे, करस्थुं पाव-  
 ीरी काय रे, जगति जुगति जुहारस्थुं रे, नाजिनंदन जिनराय  
 ॥ नमो० ९ ॥ द्रव्य जाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥  
 जावना जावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥  
 ी जमती जली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ जवजव जमण  
 रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन  
 माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो  
 उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नाथ धूलेवा सुपसा-  
 ी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो-  
 ी मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धाचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीमानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिघणो, जेटवा  
 मलगिरिंद रे पंथीमा ॥ नाजिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु-  
 वानंद रे पंथीमा ॥ वहिलुं बोले रे पंथी म्हारा वहिलुं बोले रे ॥

सेत्रुंजो वै कितनी दूर रे पंथीमा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर  
 सोहामणो, रुमी ललतासरनी पाल रे पंथीमा ॥ जिहां अंबला रे  
 वरुला घणा, फुक रही चंपलारी माल रे पंथीमा ॥ वहि० २ ॥  
 धन ते पंखी पारेवमा, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीमा ॥ ऊमा  
 हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीमा ॥ वहि० ॥  
 ३ ॥ सेत्रुंज वाटे जी चालतां, जीणीर ऊमे खेह रे पंथीमा ॥  
 मैला आवे संघना कापमा, निरमल आयै देह रे पंथीमा ॥ वहि०  
 ४ ॥ नंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीमा ॥  
 जिहां मिल२ घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीमा ॥ वहि०  
 ५ ॥ घस केसर नर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीमा ॥  
 फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अन्नंग रे पंथी-  
 मा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीगं माहरै, ऊपजै परम आनंद रे  
 पंथीमा ॥ मोने जेटणरो जी कोम वै, प्रेम घणे जिनचंद रे पंथी-  
 मा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरब निना  
 णूं वार सेत्रुंज गिर, रुषन्न जिनंद समोसरियै, सेत्रुंजगिर यात्रा०॥  
 कोमिसहस जव पातक तूटै, सैत्रुंज सामे मग नरिये ॥ विम०  
 जात्रा० १ ॥ चोथ ठठ दोय अठम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥  
 विम० जा० ॥ पूंमरीक पद जपियै हरषै, अध्ववसाय शुभ धरियै ॥  
 वि० जा० २ ॥ पापी अन्नवी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरि  
 यै ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परह-  
 रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे  
 पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पम्किमणा दोय विधसुं कीजै, पापम-  
 ल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकालै ए तीरथ मोटो, प्रवहण



सम ज्ञवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवता, पदम कहै  
ज्ञव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरो स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ ज्ञाव धर धन्य दिन आज सफत्रो गिणयो,  
आज में सजन आनंदपायो ॥ ज्ञा० ॥ हर्ष धर निजर जर विम-  
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ ज्ञा०  
॥ १ ॥ पगर नमंग धर पंथ नित पूढतां, धन्य दोय चरण जिहां  
चलत आयो ॥ ज्ञा० ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज  
धन दीह में सुजस गायो ॥ ज्ञा० २ ॥ डुर डुरगते टरी जात्र  
विधसुं करी, पुन्यजंकार पोते जरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सु-  
रगिरतिस्वर, रुबज जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ ज्ञा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशोर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-  
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन मेढसें कढयाणक ज्ञये हैं सो  
लिखते है. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कढयाणक श्रीमल्लि-  
नाथस्वामी के ज्ञये, श्री अरथनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री  
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान ज्ञया. ऐसें इस जरतक्षेत्रमें वर्तमान  
चोवीसीके पांचकढयाणक ज्ञये. इस तरे पांच जरत, पांच एरवत  
में, चोवीसीके पांच२ कढयाणक मिलाएसें पञ्चास कढयाणक ज्ञये.  
अतीत, अनागत, वर्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसे कढयाणक ज्ञये.  
इस वास्ते यह दिन वरुा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास  
करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह  
की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे, ऐसे  
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे  
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत २४जिन

पंचकल्याणक ॥१३॥

- ४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४

जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

- २१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीविपरीतअर्हतेनमः
- १ए श्रीवीपरीतनाथायनमः
- १ए श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत

२४जिनपंचकल्याणक ॥१५॥

- ४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीत्रमणेंडअर्हतेनमः
- ६ श्रीत्रमणेंद्रनाथायनमः
- ६ श्रीत्रमणेंडसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरिपज्ञचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअतीत २४जिन

पंचकल्याणकनाम ॥१६॥

- ४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअतीत २४

जि०पंचक० ॥१६॥

- ४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीअजिनंदनअर्हतेनमः
- ६ श्रीअजिनंदननाथायनमः
- ६ श्रीअजिनंदनसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेवर्त्त० २४

जिनपंचक० नाम ॥१७॥

- २१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीमरुदेवअर्हतेनमः
- १ए श्रीमरुदेवनाथायनमः
- १ए श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥ जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअना० २४जि

नपंचकल्याणकनाम ॥१८॥

- ४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः
- ६ श्रीव्रतधरनाथायनमः
- ६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअतीत २४

जिनपंचक० नाम ॥२२॥

- ४ श्रीअष्टाहिकसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीवणिकअर्हतेनमः

- ६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
- ६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४  
जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

- २१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
- १ए श्रीसंतोषितनाथायनमः
- १ए श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअनागत२४  
जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

- ४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीचंद्रदाहअर्हतेनमः
- ६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
- ६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएरवतेअतीत२४  
जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

- ४ श्रीपुरुषसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः
- ६ श्रीअवबोधनाथायनमः
- ६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीविक्रमेष्टनाथायनमः

- ६ श्रीवणिकूनाथायनमः
- ६ श्रीवणिकसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४  
जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥

- २१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीसायकाहअर्हतेनमः
- १ए श्रीसायकाहनाथायनमः
- १ए श्रीसायकाहसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअना० २४  
जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

- ४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
- ६ श्रीरविराजनाथायनमः
- ६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४  
जिनपं०क०ना०॥२८॥

- ४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
- ६ श्रीकुटिलनाथायनमः
- ६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥

११ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीहरअर्हतेनमः

१९ श्रीहरनाथायनमः

१९ श्रीहरसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः

६ श्रीअसौचितनाथायनमः

६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः

७ श्रीधर्मेन्द्रनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएरवतेवर्त्त०

२४जिनपंचक०ना०२९

११ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः

१९ श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएर०अना०

२४जिनपंच०क०॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः

६ श्रीविसोमअर्हतेनमः

६ श्रीविसोमनाथायनमः

६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें मेढसें माला होती है. जो नव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे सो योमे नवोंमें अनंतसुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशोष मास मध्ये प० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिति पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्थनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्थनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकाक्षणादिकका पञ्चक्राण करै, जहां श्रीपार्थनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय उहां जात्रा करणेंको जावै, जो कच्ची यात्रा करणेंको नही जा सकै तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय जहां महोत्सव संयुक्त दरसन करणों जावै, जलयात्रादि महोत्सव करै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसँ अनेक तरैके उत्सव करै, और (पास जिणेसर जगतिलो ए ) वा ( वाणी ब्रह्मा वादिनी० आदिक ) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणै. इस पर्वका सेवन करणोंसँ आधिभ्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरैसँ रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ ( स्तवन पासजिनेसर जगतिलो ) सुणै वा पढ़ै सो नर (वाणी ब्रह्मा०) पहली लिखाहे ॥ इति ॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिति माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सँ पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषभदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक हे, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगे चढ़ावै, बीचमें १ वना मेरु, ब्यारुंदिस ठोटा च्यार मेरु, एसँ पांच मेरु चढ़ावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढ़ावै । आगे ब्यारुं दिश तरफ च्यार नंथावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहजेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढ़ावै. पीठै श्रीरुषभदेवस्वामी ( पारंगतायनमः ) इस पदका दो हजार गुणना करै, नर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणोंके दिन करै. अतिथिसंविज्ञाग करै पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीठै शक्ति मुजब उत्सवसँ ऊजमला करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवञ्चल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसँ अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पूत्र पिंगलरायकुमार गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणकै

तपस्या करी. तपस्याके कारणसे पांगलापणोका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण ज्ञयां पीछै तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संवसमेत तीर्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मी वात्सल्य किया, बहोत तरेसें ज्ञान ज्ञक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढ़के सर्व कर्मोंका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त ज्ञया, जो ज्ञव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस जव नर पर जवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ फाल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहानेमें मित्ती फाल्गुन सुद १४, सो तीसरे चोमासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामी बारे महीनोंमें ६ वने पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, १ नली, १ पर्यूपण. जिसमें नली २ का नर पर्यूपण का एवं ३ अठाईका महोत्सव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जिसमें जी जेसा वीकानेरमें खरतर गज्जवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उत्सव हाथीके होदे वने आरंवरसें होता हे वा वरघोमा पुस्तकका सुंव-इमें जी होता हे. लेकिन हस्त्यारूढ नहीं. नर कार्तिक महोत्सव अन्यत्र जी बहोत जगे होता हे लेकिन कलकत्ते जेसा महोत्सव स्वमतमें तथा परमतमें कहाइ जी नारतवर्षमें हमने देखा नहीं. दक्षिणमें मछे-वार तक हम गये, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा कासी पटना तक में नहीं देखा. उगणीसें वावनके वर्षमें हमने यह उत्सव कलकत्तेमें देखा था, नर फाल्गुणमहोत्सव मकसूदावादका बहोत अछा होता

हे, जगणीससैं सुमतालीसमें देखा था, दुसरी जगें नही कहाँ नही देखा, लेकिन किसीनी धर्ममहोत्सवमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अज्ञा नही. एक तो जगवंतके समवसरणके संग आजकलके ज्ञाग्यवानलोक धूपके मरसैं रेंतीक मरसैं आप तो जाते नही फक-त बेसमज अदम्योंको जेजदेतेहैं, वो लोक कूड़ते नाचते जागते समवसरणकों उन्हालादेते लेजातेहैं उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्बन्धीजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसैं धर्मकाममें उद्योग करतेहैं उनका दोनु जव सफल हे. वोही महोत्सव लायकतारीफके हे इस वास्ते आ-त्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष हे सो शेरका चोमासापर्वजाणके सर्व जगें जगवंतके धर्मका उद्योग करतेजये शुद्धध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्म-रूपी काष्ठको जलाके होली करते हैं, पीछे सुबोधजलसें स्नान करके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हैं. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हैं. इव्यें उर जावै. सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥

॥ इस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमासी के दिन केइयक अज्ञा-नीजीव विवेकविकल जयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त जये थके लकड़ ठाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमा-सा धर्मपर्वका विराधना करते हैं. दूसरे दिन मलमूत्र रेंतीसें क्रीडा करते हैं, खोटे वचन बोलते हैं, गधे पर चढ़ते हे, अनेक जीवोंकों दुःख देते हैं, ऐसे जीव वीतरागकी आज्ञा ठोमके ज्ञान जरमोंकी कुलमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हैं, दूध ठोम पेसाब पीते हैं. ऐसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करकै दुर्गतिकों उपार्जन करते हैं, अनर्थदंमसें अनंत जव संसारकी स्थिती बांधते हैं. इसवास्ते आत्मार्थी जव्यजीवोंकों ज्ञावहोली करणा चाहियै. सो इस मुजब-प्रभुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोलै, रात्रीजागर-



ए करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोत्सव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवहल करै, साधर्मीजाई आपसमें नाना-तरेकी क्रीमा करै ॥ आगे राजालोक ज्ञी वसंतरुतु आणेसें मदन महोत्सव करणेंकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गु-लालसे सहरके लोक बगीचोंमें क्रीमा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोंमें वहीत जगे वांचणेमें आया हे, लेकिन मलमूत्र राख धूमसें खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, जंम चेष्टा करणी, कुल मर्याद ठोरणा, वनेरोकी लज्या ठोरणी, ऐसा कृत्य उत्तम पुरु-षोंके करणे लायक नही. यह क्रीमा वाममार्गीयोकी चलाइ जई हे. इसकों प्रवृत्त जयें प्राये दो हज़ार वर्ष करीब जया. पीछे स्वामी शंकराचार्यकूं यह बात सम्मत जई तबसें धीरे-धू अज्ञानी जीव ए-ककी देखादेख बहीत लोक करणे लगगये, लेकिन ऐसी कर्त्तव्यता किसी ज्ञी शास्त्रमें नहीं देखणेमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी बात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोत्सवका काम होता हे उस वख-त तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, नर होलीके दिनोंमें मा-तापिता जाई वहिन सबोंकी लज्या ठोरके वहीत दिलमें खुसव-खती मानताजया पागलके माफक जानोंकी तरे दकते फिरता हे. कोइ वैस्थानका नाच होता होय उहां तो हज़ारूं रुपये खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हैं हमने वना नाम किया. तत्व नजरसें देखे नर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुजगतीके पाये पूरे-मजबूत बंध करणेमें आये. ऐसी लज्याठोरके जिनमंदिरका महो-त्सव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, ऐसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये नर जावे होलीका स्वरूप वांचके आत्माश्ची धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, नर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगें नर

सच्ची वातकूँ कुयुक्तियोंसें जूठी ठहरावेंगे, नर मध्यस्थ विचारवंत तो ऐसा कहेंगे यह वात सच्च है. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल इसमें अनर्थ दंभ लगता है, लेकिन हम इकेला क्या करें, ज्ञाइबं-धोंको ऐसा करते देख हमज़ी करते हैं, हमसें रहा जाता नहीं. परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अच्छा है. इस वास्ते हे ज्ञव्यजी-वो इसमें समुदाणी कर्म बंधता है. ठोमे सो धन्य है. नरकके जाते का संग नहीं करना, जैसे सरकारकी एनके जाणकार चोरी करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत नर वात तक नहीं करते उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख दुसरेको बचना चाहिये. काम वो करना जिस्में दोनों ज्ञवमें लाभ होय. इस ड्यहोलीके खेलमें वमीर लमाइयां होजाती है. मेरुता सहर हालीके ख्या-लसें पुष्करणे नर जोजकोंकी लमाइमें तमाम नजाम होगया. नर परजवमें अेरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा है. इस बाबत जो जो कठोर लबज लिखा है उसकूं वांच विवेकी मेरे पर गुस्सा नहीं लावेंगे. जो कुछ लिखा है सो पूर्वाचार्योंके वचना-नुसार लिखा है. हितोपदेस समजके ठोमणेका प्रयत्न करेंगे. मेरे तो नवकारमंत्रके अरुसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु है. जि-समें जी सर्व जीवायोनिसें मित्रता है. कम या ज्यादा जो कुछ अपशब्द लिखा होय तो मिहामिडुक्कं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर बहुरन एसो दाव  
॥ हो० ॥ दयामिठाई अति जली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-  
थाणो अति जलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मा-  
दल ज्ञाव रुफ रे, क्रोध मान दोय ताल ॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी  
नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २॥ सुमताकेसर घोलिये रे, दमवाको

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी  
 ॥ ने० १ ॥ व्याहन आए भेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥  
 तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी जुरी—मदन महा रिपु  
 तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं बरस विन देखे, रहि है मुख  
 कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमतीसखियनसें, विनती करै करजोरी-  
 लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे जविक मन धिर करकै, हो०  
 ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अवीर जमावो जोली जरकै ॥  
 हो० १ ॥ ग्यान ध्यान रुफ ताल बजावो, गुण गावो प्रजु हित धरके  
 ॥ हो० २ ॥ अनुजव अतर फूलैल मंगावो, वास दिसोदिस महम  
 हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रजधूम जमावो, ज्युं तेरा पाप सब-  
 ल थरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रजु जज विलं-  
 ब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संजारी जर पिचकारी, हारै तूं  
 तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल जर  
 जोरी, हारै तूं तो खेल वसंत धरै रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग  
 आनूषण अंगै, हारै तूं तो जावना वाग पहरि रे ॥ हो० ४ ॥ नी-  
 रंजन प्रजुना गुण गावो, हारै तूं तो आतम अनुजव वर रे ॥  
 हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हारै तूं तो गूँजत मन  
 मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हारै तूं तो ज-  
 गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रोजिनलाज कहै प्रजु संगै,  
 हारै तूं तो अनुपम जव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूम मचाई, आज सुमता संग  
 खेलेंगे होरी ॥ वा० ॥ जिनशासन ब्रतरंगमहिलमें, दीपक बोध बनाई  
 ॥ आ० वा० १ ॥ सरधासखी कमा मृडना मिल, रजुता मुक्ति सुहाई ॥

नर अनेक सुमति सखी ब्रजमें, अनुभव रंग रंगई ॥ आ० वा० १ ॥  
 जाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सहाई ॥ जिन गुण  
 गान संगीत निरत धुनि, जक्ति जिणंद वढाई ॥ आ० वा० ३ ॥  
 खेलत संजम फाग मिलै सब, बाख आणंद बधाई ॥ अब कुमता  
 संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ समकित विन जीव जगत जटक्यो, स० ॥ चनरा  
 सी जव जमतां २, नरजव बायो सो दिख खटक्यो ॥ स० १ ॥ गर  
 जावास नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥  
 पुन्य संजोग मिट्यौ कुल आवक, ग्यान प्रकाश जयो घटको ॥  
 स० ३ ॥ विषय विकार रच्यो तरुणी संग, मायासैं तेरो मन अट  
 क्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूयो शिवपु  
 रकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रभु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें  
 नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ विसरे मत नाम प्रभूजीको, वि० ॥ प्रभुजीको ना  
 म चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १ ॥ ना-  
 ज कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन जुवन सिर हें टीको ॥ वि० २  
 ॥ चतुर कुशल चित घोलसुं राख्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको  
 वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने० ॥  
 बहुत हठासुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥ व० ने० १ ॥  
 सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने०  
 २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोमै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व०  
 ने० ३ ॥ जनधरभूषण कहै जविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे  
 व० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेलै ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल जर्यौ, दिशि दूजी गिर  
 वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोजतो, तिण मांहे खेले नेमकु  
 मार ॥ ग० १ ॥ फूट्या केवना केतकी, विच फूट्या मरुआमचकुंद  
 ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहे खेले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥  
 आंवा मोरचा बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै  
 पवन दक्षिणतणी, स्यामजमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३ ॥ आं  
 व पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमार अजू  
 नहीँ, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हलधर गोपि मिली,  
 विच धेर्यो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलजरी, मुख ऊपर ठां  
 टे यडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समजायो जोरें य-  
 डुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहै, वात मांजलो शिवादेवी मात ॥ ग० ६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो ज्ञाग री, नेमनाथ वर  
 पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजू रुषज्जिणंदा, जिण  
 मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको ठत्र धर्यो सिर ऊपर,  
 गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ,  
 फूल चढाजं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख  
 बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि वीनती, जवर  
 दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंयालगरमें, फा-  
 गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंरुपमें, होय रही  
 हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी जरिय कचोरी, प्रभुजीके अं-  
 गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल  
 बनाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध जांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित  
 लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, व० ॥

निबिम्ब डुरित नर शिखर नि डुरकी, नवसागर तारण तरकी ॥  
 व० १ ॥ तीन जुवन तीरथ तारागण, सोना लहिय निशाकरकी  
 ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी  
 ॥ व० २ ॥ परमात्म पद प्रतिबिम्ब तनको, बंढित पूरण सुरतरु-  
 की ॥ व० ॥ वर सोरठ मंमल मंमनकी, सकल करम रज जल-  
 धरकी ॥ व० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाजेय जिनेसर-  
 की ॥ व० ३ ॥ ए गिरि बुद्ध्याचल परि जिनकी, डुति दीपै जेम  
 दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-  
 रुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन जु-  
 वन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषज  
 लंठन सोनाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रजुकी मोहनमूरति, देखत  
 परमानंद नरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रजुकी निरंतर, पदतल  
 नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, नवश  
 एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रजु नेमनाथ, मेरे दिल बसिया ॥ ऐ०॥  
 त्रिगढमें विराजमान, डुंडुजि सुणत कान ॥ अथठर मिल करत  
 गान, तान मान बसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासन विराजै साम, जीत  
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वास नाम बसिया ॥  
 ऐ० २ ॥ तीन ठत्र चमर सार, पंच वर्ष पुष्प धार ॥ गहिर अ-  
 सोक सार, जामंमल बसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग,  
 द्वादश बखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त बसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संनवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥  
 हारे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला  
 ॥ सं० ॥ बाता तीन जुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता  
 दीजै साहिब मोकू, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात नयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज  
 खंठन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लावा ॥ सं० २ ॥ साठ  
 पूरव लख आयु अवगाहन, अनुष रथारसे धारी ॥ सोवन वरण  
 सेवे डुरितारी, सावन्नी नगरी सारी हो लावा ॥ सं० ३ ॥ समेत  
 सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल  
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लावा ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण  
 सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होष्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा  
 चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलावा ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया,  
 सा० ॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥  
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिखवा ग्यानेकेवल रसि  
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमोसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि  
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं  
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर  
 सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाज्जनंदनकूं करुं जुहारा,  
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया  
 ॥ सा० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे जव हारो रे ॥  
 जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त  
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या०  
 १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरज्जव सफल जमारो ॥ जवि  
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चितधारो ॥ जि० २ ॥  
 जवडुख जंजननाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज सम  
 ता संग जेली, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें  
 रंग वधाई, घर ९ मंगलाचारो ॥ रथ मद्दोछव रचना रची हद, मुख



जयर सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी,  
सेवक सुगुण संजारो ॥ प्रभु पंकजकी दिव सरणा ग्रही, जवसा  
यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली  
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वषाय सखी सब, शिखर  
सैल जैसे चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो,  
मोसें प्रीत लगाइ जामनी ॥ आ० ॥ तौरण आय चले मोहि ठोनी,  
कोन चूक भोपै काढी जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजूंगी  
नव जव केरी, प्रीत वली जेसी इंडु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-  
जुल पहली प्रीतमसेती, बाज कहै नई मुक्ति गामिनी ॥ आ०  
म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो सुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥  
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥  
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥  
हिल मिल आप परम रस खाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०  
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदभुत वान ॥ हो०  
रं० ४ ॥ सुमति अधीर बुराय जगतमै, वैठै शिवपुर आन ॥ हो०  
रं० ५ ॥ अनुभव राग भगन गुण गावै, तप जप सुंदर आन ॥  
हो० रं० ६ ॥ ऐसा खेल जविकजन धारै, वंछित पावैदान ॥ हो०  
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥  
मनमृदंग वजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान  
गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित  
केसर चीर रंगानु, पहिरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-  
मत ठांणी, व्यास गतिसें जाग ॥ हो० ॥ अविचल मुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ ऐसा खेल जविकजन  
धारै, पावै जवजल आग ॥ हो० ॥ चेतनता सुख होय जगतमें,  
समकृतके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय२, डुरजनकी लाज  
मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर उमावो, कमा  
करो रंग लाय २ ॥ डु० हो० १ ॥ शील संजमव्रत पान मिठाई,  
ध्यान धरुंगी में गाय गाय२ ॥ डु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह  
उमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ डु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अ-  
रज वीनती, सरण गही में तेरी जाय२ ॥ डु० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे जरि, शिवपुरकी  
वात पूठूं कवकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर,  
परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रंग जरयो रंग शी-  
वपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रूपज बेठै अलवेलर, मारो गुलाल  
मुठी जरकै ॥ बावो० ॥ मुठी जरकै पसली जरकै, बावो० ॥ चू-  
आ२ चंदन लुर अगरजा, केलरका मटका जरके ॥ बावो० १ ॥  
रतनजसित शिर ठत्र विराजै, अंगी जसाव जसी जरकै ॥ बावो०  
२ ॥ बांहै बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा०  
३ ॥ नागिराय मरुदेवीको नंदन, रमिये जवि आदीसरसैं ॥ बा०  
४ ॥ आदिखान हेदास तुमारो, तार लीओ अपणो करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुनः होरी राग टण्डो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे,  
जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ जवःडुख वारण शिवसुख कारण,  
देखत जवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नागिराय मरुदेवीको नंद-  
न, प्रणामं रूपज जिवंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान  
तुमारो, जिम चातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कदै

शरण तुमारी, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥  
देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे ठै अति नीको ॥ द० १ ॥ बी-  
स कोसथा दरसन दीगो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥  
बीसे टूके बीस गोमटनी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब  
जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ ६०

॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-  
घयात्रा करणसैं पाप कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि  
सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रुषन जिनेश्वरजीको  
दर्शन, शुद्ध आत्म पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै  
नाथ निरंजन, जयका डख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि  
जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूही रंग रे ज तूही है, संजम रंग  
मोहि रंगदै ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अना-  
दिको, सो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-  
द्धि तेरी में देखी, सो अब मुजुकुं सज्जदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥  
ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो० ४ ॥  
जुधरदास कहे समकितदे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो० ५ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रभुजीके रंगमंरुपमें, खेलत संत  
वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥  
॥ मे० १ ॥ प्रभुगुण प्रेम पिचरकी बूटत, समता सखिय मिलंत  
॥ आगम लहर फूली फुलवानी, मुनिवर अमर गुंजंत ॥ मे० २  
अंग आनूषण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना ग-  
हिर कसूंबा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदभूत पंच माहा  
व्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद प्रभुकी कृपासैं, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग मन्व्यो जिन द्वार चालो खेलिये होरी,  
रं० ॥ पास प्रभु दरवार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन ज्यार रे, चा०  
कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥  
कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अषार रे ॥ चा० २ ॥  
लाल गुलाल अवीर नुमावत, पासजीकै दरवार रे ॥ चा० ३ ॥  
जर पिचकारी गुलाबकी ठिठको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥  
ताल मृदंग बीण रुफ वाजै, जेरी जुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥  
सब सखियन मिल नाटक करैकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥  
॥ रत्नसागर प्रभु ज्ञावना ज्ञावै, सुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेमजीसैं कहियो मोरी, सामरेसैं कहियो  
मोरी ॥ तोरण आए किरण जरमाए, ठोरु चलै अग्निमानी ॥ हां  
रे लाला ठो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी-  
दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीसो सुंहसैं कहियो,  
ना करिये सोधाणी ॥ आठ जवोकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं  
ज्यानी—इयाम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें  
बेह लागी, राजुल गुलकी वामी ॥ वीनती सुणकै अमर पद दीजै,  
रंग विजय सुख दानी—आवा नर गमन ठिठानी ॥ सा० ३ ॥ इ० ॥

॥ पुनः होरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन०  
॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अवीर अरगजा,  
सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फु-  
लवामी, दिन२ बढ़ते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा  
अंग अनोपम, शुद्ध ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद्र  
चिंतामणि चित धर, तुझसुं अविह्वल रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ ॥ इ० ॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वर्णी हे सुंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रज्ञूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी ज्ञाव  
 अज्ञंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी ज्ञांत ज्ञानी हे, वुंढिया  
 मव९ रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवना  
 संग ॥ श्रीचिं० १ ॥ सहक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध  
 सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोजत है, सौरंग वास  
 सुगंध ॥ श्रीचिं० ३ ॥ त्रिजुवन साहब तखत विराजै, महिरबान मनरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥  
 श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ ज्ञावना ज्ञावो जिनगुण गावो, अमर धरौ नवरंग  
 ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंठित फल पा-  
 वो ॥ चिं० ॥ सकल जविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण  
 गावो रे ॥ वंठित० १ ॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो, जर२ सु-  
 ठियां नुमावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं ठिककावो, ज्ञा-  
 व शुक्ल जल ज्ञावो रे ॥ वंठित० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुहप ब-  
 नावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ दरस सरस  
 करके सुख पावो, पुण्य जंसार जरावो रे ॥ वंठित० चिं० ३ ॥ वा-  
 जित्र वाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंठित० चिं०  
 ॥ अमरसिंधुर आनंद बधावो, जिनजीसैं लय लावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत रारो पिचकारी रे, में तो सगरी जीज  
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांहि, गावत आगम राग ॥  
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति  
 सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगानं, पहिरूं मन  
 वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत ठोरुं, च्यारों गति  
 सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ ऐसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै,  
इण विध खेले फाग ॥ पिया में ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-  
जी, नेम ० ॥ मे हूं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥  
हो ० ने ० १ ॥ हम हे केतकी तुम हो २ जमरा, फिर वासना लीजीये  
॥ हो ० ने ० २ ॥ मैं हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना  
कीजीये ॥ हो ० ने ० ३ ॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद  
दीजीये ॥ हो ० ने ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ आत्म तत्त्व विचारो ज्ञानसें, करम कटै ज्युं शुक्ल  
ध्यानसें ॥ आ ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिठाएयो, समता मिट  
गई सारी जानसें ॥ कर्म क ० आ ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार  
सम, नास ज्यो सब ज्ञानज्ञानसें ॥ कर्म क ० आ ० २ ॥ परमात्म  
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल आनसें ॥ कर्म ० आ ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-  
मरसकी क्यारी ॥ लाल ते ० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,  
नयन जये अविकारी ॥ निझ सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण  
निवारी ॥ लाल ते ० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत  
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे हुसिया-  
रो ॥ लाल ते ० २ ॥ ऐसा लहन हे नयनोंमें, क्युं पामे जव पारी,  
योही विचार करो दिल अपनै, होत कर्मसें जारी ॥ लाल ते ० ३ ॥  
धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै  
प्रभु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार जम्यो, द ० ॥ चो-  
रासी लख योनिमें जटकत, लहि मानवजव युंही गम्यो ॥ द ०  
१ ॥ पुन्य नदय श्रावक कुल पायो, यटमें ज्ञान उद्योत जयो ॥ द ०

॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥  
 द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो  
 ॥ द० ४ ॥ कहत कृष्णकल्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप  
 शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत गोमो मोने गूँही रे, कोइ चूक बतावो  
 ॥ म० । अबीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे  
 ॥ कोइ० म० १ ॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये, चढ़िया गढ़ गिरनारी  
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया  
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊनी अरज करत हे, एक बार  
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं सुगत सिधाए,  
 पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें  
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो  
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, टढरअ नृपको प्या-  
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवृद्ध लंछन जनम जहिलपुर, कुल  
 इहवाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुसोजित,  
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु  
 कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत  
 प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके  
 साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है  
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥  
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥  
 ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनिनायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३  
 ॥ जय२ स्वैमकुसल गुरु जंपै, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥



॥ इम भास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासैं संयही, अति सुगम ज्ञाष प्रकाश करतां ज्ञव्यजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंद्र विक्रम भाष सुदि पूजम सही, श्रीवृद्धत्वरतर गह पाठक रामगणि विधि हम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंत के कल्याणक के हे सो सर्व ज्ञव्यजीवों के सेवन करणे योग्य हे, लेकिन कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही ( ओर विशेषमें ) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले ज्ञव्यजीवों के अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासैं पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

५ श्रीसंज्ञवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

१५ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः

१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनेमनाथजीपरमेश्विनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०

पौषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१४ श्रीसंज्ञवनाथजीअर्हतेनमः

१० श्रीपार्थनाथजीअर्हतेनमः

१५ श्रीसंज्ञवनाथजीनाथायन०

११ श्रीपार्श्वनाथजी नाथायनमः

१२ श्रीचंद्राप्रभुजी अर्हतेनमः

१३ श्रीचंद्राप्रभुजी नाथायनमः

१४ श्रीशीतलनाथजी सर्वज्ञाय०

माघकृष्णपक्षे ॥ ५ ।

६ श्रीपद्मप्रभुजी परमेष्ठिने०

१२ श्रीशीतलनाथजी अर्ह०

१२ श्रीशीतलनाथजी ना० नमः

१३ श्रीरुषभदेवजी पारंगता०

३० श्रीश्रेयांसजी सर्वज्ञायन०

फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १०

६ श्रीसुपार्श्वनाथजी सर्वज्ञाय०

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी पारंगता०

७ श्री चंद्राप्रभुजी सर्वज्ञायन०

ए श्रीसुविधनाथजी परमेष्ठिने०

११ श्रीरुषभदेवजी सर्वज्ञायनमः

१२ श्रीश्रेयांसजी अर्हतेनमः

१२ श्रीसुमिसुव्रतसर्वज्ञायनमः

१३ श्रीश्रेयांसजी नाथायनमः

१४ श्रीवासुपूज्यजी अर्हतेनमः

३० श्रीवासुपूज्यजी नाथायनमः

चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५

४ श्रीसुपार्श्वनाथजी परमेष्ठिने०

४ श्रीपार्श्वनाथजी सर्वज्ञाय०

५ श्रीचंद्राप्रभुजी परमेष्ठिने०

पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीविमलनाथजी सर्वज्ञाय०

ए श्रीशान्तिनाथजी सर्वज्ञा०

११ श्रीअजितनाथजी सर्व०

१४ श्रीअजिनंदनजी सर्वज्ञा०

१५ श्रीधर्मनाथजी सर्वज्ञा०

माघशुक्लपक्षे ॥ ए

२ श्रीअजिनंदनजी अर्ह०

२ श्रीवासुपूज्यजी सर्वज्ञा०

३ श्रीविमलनाथजी अर्ह०

३ श्रीधर्मनाथजी अर्हतेनमः

४ श्रीविमलनाथजी ना० न०

७ श्रीअजितनाथजी अर्ह०

ए श्रीअजितनाथजी नाथा०

११ श्रीअजिनंदनजी नाथा०

१३ श्रीधर्मनाथजी नाथाय०

फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५

२ श्रीअरुनाथजी परमेष्ठिने०

४ श्रीमह्विनाथजी परमेष्ठि०

७ श्रीसंनवनाथजी परमेष्ठि०

१२ श्रीमह्विनाथजी पारंग०

१२ श्रीसुनिसुव्रतजी नाथाय०

चैत्रशुक्लपक्षे । ७

३ श्रीकुंथुनाथजी सर्वज्ञा०

५ श्रीअजितनाथजी पारंग०

- ८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः  
 ८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०  
 वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९  
 १ श्रीकुंभुनाथपारंगतायनमः  
 २ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०  
 ५ श्रीकुंभुनाथजीनाथायनमः  
 ६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०  
 १० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०  
 १३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०  
 १४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०  
 १४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०  
 १४ श्री कुंभुनाथजीअर्हतेन०  
 ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥  
 ८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०  
 ९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०  
 १३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०  
 १३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०  
 १४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०  
 आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥  
 ४ श्रीआदिनाथजीपरमे०  
 ७ श्रीविमलनाथजीपार०  
 ९ श्रीनमिनाथजीनाथा०  
 श्रावणकृष्णपक्षे । ४  
 ३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०  
 ७ श्री अनंतनाथजीपर०
- ५ श्रीसंज्ञवनाथजीपारंग०  
 ५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०  
 ९ श्रीसुमतिनाथजीपारंग०  
 ११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०  
 १३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः  
 १५ श्रीषड्भ्रमजीसर्वज्ञाय०  
 वैशाखशुक्लपक्षे ८  
 ४ श्रीअज्जिनंदनजीपरमे०  
 ७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०  
 ८ श्रीअज्जिनंदनजीपारंग०  
 ८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०  
 १० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०  
 १२ श्रीविमलनाथजीपारंग०  
 ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥  
 ५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०  
 ९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०  
 १२ श्रीसुषार्धनाथजीअर्ह०  
 १३ श्रीसुषार्धनाथजीनाथा०  
 आषाढशुक्लपक्षे ३  
 ६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्टि०  
 ८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०  
 १४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०  
 श्रावणशुक्लपक्षे ५  
 २ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०  
 ५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

८ श्रीनिमिनाथजीअर्ह०

ए श्रीकुंथुनाथजीपरमे०

भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

७ श्रीचंडाप्रभूजीपारंग०

७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०

८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०

आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २

१३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०

३० श्रीनैमनाथजीसर्वज्ञा०

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमपस्थिति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घन्टी गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पञ्चक्राण करै, तीन टंक देववंदन करै, पम्पिक्रमणा करै, जिस दिन जो मा-  
हाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै, नर पहली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुणै या पढ़ै, जहां ज-  
गवंतकी कल्याणक भूमि होय उहां वने महोदधसे संघ समेत यात्रा करणैकों जावै, उहां विधी संयुक्त सर्व जगवंतोके पंच क-  
ल्याणकका उद्वव करै, जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीम-  
हावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उद्वव करै ॥ अब २३ जगवंतकी अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उद्वव विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणकको (परमेष्ठिनेनमः) कहियै, इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायकै च्यवन कल्याणादिकका उद्वव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं ( अर्हतेनमः ) कहणा, इस दिन जलजात्रादिकका महोद्वव करके अष्टो-

तरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कल्याणकर्कों  
 ( नाथायनमः ) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृ-  
 द्धादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उद्भव करै, घृत गुरु वस्त्रा-  
 दिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कल्याण-  
 कर्कों ( सर्वज्ञायनमः ) कहणा. इस दिन समोसरणमें जगवंतर्कों  
 विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उद्भव करै,  
 वस्त्र आभूषण चढावै, सुषेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ नि-  
 र्वाण कल्याणकर्कों ( पारंगतायनमः ) कहियै. इस दिन निर्वाण  
 कल्याणकके ज्ञावगर्भित उद्भव करै, लहू चढावै ॥ ५ ॥ और ठठा  
 गर्भापहार कल्याणकका उद्भव करणा होय तो ज्यवनकल्याणकके  
 उद्भव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कल्याणकका उद्भव करै.  
 तपस्या पूर्ण होएसें पंच कल्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुभक्ति  
 करै, साहमीबन्धन करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो  
 ज्यजीव करेंगे सो अनंत सुखको प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक  
 तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप सोहामणो,  
 दक्षिणतूरत उदार ॥ राजग्रही नगरी जली, अलिकापुर  
 अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख आय  
 ॥ मनवंठित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राजकरै  
 तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, शील-  
 गुणें अजिराम ॥ श्री० ३ ॥ श्रावण उज्ज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश  
 ॥ माताकुक्षि सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पढम  
 पक्ष अठमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोद्भव सुर करै, त्रिजुवन  
 हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंठन काढवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री०  
 ६ ॥ परणी नार प्रज्ञावती, जोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख  
 जोगवै, पूरै वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आ-  
 वि जंपै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम नार  
 ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधर निरमल ध्यान ॥  
 व्यास करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ए॥ (हाल १ ॥  
 सुख कारण नवियण ॥ एदेशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया च-  
 लिया सुरनर कोमि, प्रभुना पदपंकज प्रणमै बेकर जोमि ॥ बेकर  
 जोमी मन्तर गोमी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रि-  
 गमो ठत्रत्रय ऊलकंत ॥ सिंहासन बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म  
 प्रकासै, बारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन उड्हासै ॥ १० ॥ त-  
 पने अधिकारै परखवासो तप सार, पदवाधी कीजै पनरह तिथी  
 ऊदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उप-  
 शम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उद्धास ॥ तप ऊजमणै  
 रजत पालणो सोवन पूतली चंग, मोदकथाल देहरै सूंकी जिन  
 वर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अहुरव दर्शनी जेम, म-  
 नवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति व-  
 छन्न नरतार, जस कीरत सोजाग ब्रह्माई महियल महिमा जाण  
 ॥ परजव मुगति फल लहियै, ए तपने प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी  
 चतुर्विध संघतणो अधिकार, नखवठ प्रमुख नगरादिक करिया वि-  
 हार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्तिक-  
 सेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सहस वरष आ-  
 ऊखो पालै जग दया सार, श्रीसम्भेतशिखर परमेसर पुहता मुग-  
 ति मजार ॥ १३ ॥ इम पंच कढ्याणक शुणिया त्रिभुवन ताय,  
 मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय





४ तिम धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतम ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥  
 नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम  
 वस ते सही, ऊपजै तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ ठेदन जेदन  
 तामना, जूख तृषा वलि त्रास, रोस २ पीमा करै, परमाहम्मी  
 तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल जर नहीं जिहां  
 सुख ॥ किया करम जे जोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥  
 इक दिनरी नवकारसी, जे करै ज्ञाव विगुह ॥ सो वरस नरकनो  
 आनखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी,  
 ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवै  
 जी काय ॥ श्री० ११ ॥ ( ढाल १ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो  
 ॥ ए चाल ) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥  
 ज्ञावसुं जे पोरसी करै, डुरगति ठेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि  
 जै नारकी, वरसें एक हज्जार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहु-  
 त पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥  
 करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४ ॥ डुरगति  
 मांहि नारकी, दस हज्जार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, सा-  
 दपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमद्व करै नित जीव जे, नरके  
 ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमद्व करम खपाय ॥  
 ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा  
 करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोमि वरसां  
 लगे, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां ज्ञावसुं, डुरगति हणे  
 सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोमि जीव नरकमें, जितरो करै करम  
 दूर ॥ तीतरो एकलठाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात  
 करंता प्राणियो, सो कोमि परिमाण ॥ इतरा वरस डुरगति तणा,  
 ठेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोमि

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, ज्ञाव आंबिल अधिकार ॥ सु०  
 २१ ॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मज्जार ॥ उपवास  
 करै इक ज्ञावसुं, तो पामे मुगति मज्जार ॥ सु० २२ ॥ (ढाल ३ ॥  
 केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके क-  
 रता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ ठढम तप करतां अकां, सही  
 नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही,  
 जीव लहै तिहां डुक्क रे ॥ ते डुख अढम तपहुंती, दूर करी पामे  
 सुक्क रे ॥ गो० २४ ॥ ठेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ  
 रे ॥ कुगति कुमतिनैं परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो०  
 २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर  
 करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय वि-  
 शेषे फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे ज्ञा,  
 करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं  
 करै, चवदह पूरव होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां  
 वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै  
 जे नर नार रे ॥ इग्योरे वरस एकादशी, करतां लहै ज्ञव पार रे ॥  
 गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनं  
 त ज्ञवाना पापघ्नी, ठूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती  
 पापी तरया, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें,  
 शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपना फल सूत्रे कहा,  
 पञ्चस्काणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिण बै घणा, करतां ठेदे  
 त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पञ्चस्काण दस विथ फल  
 परुष्या महावीर जिणदेवए, जे करै ज्ञविअण तप अखंमित तासु  
 सुर पथ सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि  
 दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंड तप विधि

ज्ञेय ॥ ३३ ॥ इति दस पञ्चस्काण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पञ्चस्काण तप विधिः ॥

॥ यह दस पञ्चस्काणके स्तवनमें खुलासा दस पञ्चस्काणके जेद नर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब उत्तम पुरुषोंने रचना करीहै. इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनकों पढ़के तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, नर किसीके दश पञ्चस्काण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पञ्चस्काण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढ़ै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञावसें डुरगतिबंध दूर करके अच्छी गती पावे, महा ऐश्वर्यवंत होय, ज्ञाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल जेठियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवियै, धर कर शुद्ध परिणाम लाल रे ॥ तीजै जव सेव्यो अको, बांधे तीर्थकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मज्जार लाल रे ॥ सुणजो जवि तुमे ज्ञावसुं, चित्तसें करिय उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुद्ध महुरते, उचरीजै ससनेह लाल रे ॥ वी० ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ शिवर ५ जव-ज्ञाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ए अरु, विनय १० नमूं जलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंज १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञातने १८ श्रुत जणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसां लगै, बीसै पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥  
 एक जुली षट् मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर  
 नवी करणी पमै, पिठली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥  
 ठठ अठम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर  
 आराधियै, देव वांदै निज जक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-  
 रण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदै  
 सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर  
 पाठक पदै, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदै सही,  
 सात ध्यानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-  
 दा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पन्निकमणो दोय टंकही, करियै  
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक जुली करो  
 बीस लाल रे ॥ बीसाबीसी व्याससै, तप संख्या कही एम लाल  
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित्त  
 धार लाल रे ॥ कान्तसगने परदहणा, मुख जणियै नवकारलाल  
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद जक्ति  
 लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे  
 ॥ वी० १३ ॥ मृतक जनम रतुकालमें, कवि धार्यो उपवास लाल  
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०  
 १४ ॥ सावझ त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील  
 आचूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १५ ॥ जेठ  
 आसाठ वैशाखमें, मिंगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे  
 मांहिमें, व्रत ग्रहिये वरुजाण लाल रे ॥ वी० १६ ॥ तप पूरण  
 हुवां अकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारिनें,  
 उठव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १७ ॥ बीस१ गिणती तणा,  
 पुस्तक पूरा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवाड

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी आविका, कीधी विध चित  
लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा जणी, नहिज मोह नपाय  
लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इस वीर जिनवरतणी आर्जा धार  
चित्त मऊार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार  
ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंड वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी  
शशि गढ खरतर जणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ महुर्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि  
हित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक जुली दो  
महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदास ठ महीनेमें पूरी नहीं कर  
सके तो वो जुली गिणतीमें नहीं. उर फेर नइ करणी पमती है.  
एक जुलीके वीस पद हे ( तहां ) कोइ वीस दिनमें वीस पद  
जुदा२ गिणते हे, कोइयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरै  
वीशों दिनमें दूसरा पद, ऐसे वीशों पदकी वीश जुली करै. तिहां  
पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधै. वीश  
अठमसे एक जुली होय ( ऐसे ) वीस जुली ४०० से अठमसे आ  
राधै. और उससे कम शक्ति होय तो ठसे आराधै. उससे कम  
शक्ति होय तो चोविहार उपवास करके आराधै. उससे हीन शक्ति  
होय तो तिविहार उपवास करके आराधै. उससे हीनशक्ति आंबिल  
( तथा ) तिविहार एकाशना करके आराधै. उसमें जो शक्तिवान  
होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति  
दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति  
सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, शिवर  
पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपद-  
में ७, यह सात धानक पद तो पोसह करकेही आराधै. जो इतनी

जी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार  
 बामै, सो शक्ति जी नही होय तो यथाशक्ति तप करै आराधै,  
 अपनी हीणता जावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप  
 नही गिणै जावै, स्त्रियां जी रतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके  
 दिन पोसह सहित करै तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो  
 सके तो तपके दिन उज्जय टंक पम्पिक्रमण करै, तीन टंक देववन्दन  
 करै, दो हज़ार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, जूमि शयन  
 करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोले,  
 सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे  
 तो पारणके दिन जिनजक्ति करै पारणा करै, जो तपके दिन पो-  
 सह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनजक्ति करै करावै, जावना  
 जावै तथा तपके दिन तप पदके गुण जेद प्रमाण संख्यासँ कान-  
 सग्न करै, इतनाही तज्जुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै,  
 उस पदका गुण याद करै उदात्त स्वरसँ स्तवना करै, हर्षित रहै॥  
 ॥ अथ बीस स्थानक गुणना और कानसग्नका प्रमाण लिखते है॥

( एमो अरिहंताण ) २००० गुणना लोगस्स १२ का कान-  
 सग्न ॥ १ ॥ ( एमोसिद्धाणं ) २००० गुणना लोगस्स १५ का का-  
 नसग्न ॥ २ ॥ ( एमो पवयणस्स ) २००० गुणना लोगस्स ७  
 का कानसग्न ॥ ३ ॥ ( एमो आयरिआणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्स ३६ का कानसग्न ( एमो थेराणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्स १५ का कानसग्न ॥ ५ ॥ ( एमो उवझायाणं ) दो ह-  
 ज़ार गुणना लोगस्स २५ का कानसग्न ॥ ६ ॥ ( एमो लोए सब्ब  
 साहूणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्स २७ का कानसग्न ॥ ७ ॥  
 ( एमो नाणस्स ) दो हज़ार गुणना लोगस्स ५ का कानसग्न ॥  
 ॥ ८ ॥ ( एमो दंसणस्स ) दो हज़ार गुणना लोगस्स १७ का



कान्तसग्न ॥ ए ॥ ( एमो विणयसंपत्ताणं ) दो हजार गुणना  
 लोगस्स १० का कान्तसग्न ॥ १० ॥ ( एमो चारित्तस्स ) दो ह-  
 ज्जार गुणना लोगस्स ६ का कान्तसग्न ॥ ११ ॥ ( एमो बंजवय  
 धारीणं ) दो हजार गुणना लोगस्स ए का कान्तसग्न ॥ १२ ॥  
 ( एमो किरिआणं ) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का कान्तसग्न  
 ॥ १३ ॥ ( एमो तवस्सीणं ) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का  
 कान्तसग्न ॥ १४ ॥ ( एमो गोयमस्स ) दो हजार गुणना लोगस्स  
 १७ का कान्तसग्न ॥ १५ ॥ ( एमो जिणाणं ) दो हजार गुणना  
 लोगस्स १० का कान्तसग्न ॥ १६ ॥ ( एमो चरणस्स ) दो हजार  
 गुणना लोगस्स १२ का कान्तसग्न ॥ १७ ॥ ( एमो नाणस्स ) दो  
 हजार गुणना लोगस्स ५ का कान्तसग्न ॥ १८ ॥ ( एमो सुअना-  
 णस्स ) दो हजार गुणना लोगस्स १० का कान्तसग्न ॥ १९ ॥  
 ( एमो तिब्बस्स ) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का कान्तसग्न करै  
 ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों नलीमें सर्व पदके उच्चव महो-  
 च्छव प्रज्ञावना ऊजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते  
 इतनी शक्ति नहीं होय तो एक नली तो विशेष उच्चवादिक संयुक्त  
 करणी चाहियै. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसैं वीश स्थानक सेवनविधि  
 संक्षेप मात्रसैं लिखी हे. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसैं  
 वीशों पदकी जुदीर विधि गुरुके मुखसैं समझके करै. जो गुरुका  
 संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखकै वीस स्था-  
 नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़ै, वीस  
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अपणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोप-  
 करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते  
 लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,



साहमी वञ्चल कैर, इत्यादिक इवै नर जावै विधि संयुक्त शुद्ध  
जावसैं जो ज्ञयजीव यह बीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो  
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकै तीसरै जव अनंत सुखकों प्राप्त  
होंगें. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति बीस स्थानक तप जुलौ विधि सं० ॥

॥ अथ बीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोएंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥  
जवज्जोविन्नयणेवारणाणं, एमोबोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हज्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनैडपूजा ॥ अथ  
सिद्धपूजा ॥ लोगगज्जागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणि-  
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मस्सकयकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥  
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥  
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुक्कंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-  
णदयागिहस्स, एमो२ संघचज्जविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः  
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूंसिंधुराणं, सुरीसराणं-  
सुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं ॥  
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-  
त्तसंयमपतितज्जविजन अतिहधिरकरताज्जला ॥ अवगुणअडुषित  
गुणविज्जुषित चंडकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरअ  
रुचिरधाराधरा, जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोधिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ षष्ठा पद ॥ सबोहिवोजंकुरुकार-  
णाणं, एमोश्वायगावारणाणं ॥ कुबोहिदंतीहरिणोसराणं ॥ विग्घो-  
घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ  
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-  
णं ॥ सन्नाण पक्कायतरूवणाणं, एमो२दोउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ  
ह्रीं श्रीं सम्यग्साधुज्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ उदवपक्का

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिञ्चत्तअन्नाणतमोहरस्स,  
 णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ७ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥  
 ७ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारवि  
 दारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥  
 ८ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ८ ॥ अथ दशम विनय-  
 पद ॥ आणंदियासेसजगज्जाणस्स, कुंदिंडुपादामलताचणस्स ॥ सुध-  
 म्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ नै ह्रीं  
 श्री सम्यग्विनयै नमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-  
 म्मोधकंतरदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुह  
 कारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्चा-  
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-  
 सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्ववयानूषणनूषणस्स,  
 नमोहिशीलस्सअदूसणस्स ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्ब्रह्मचर्यै नमः ॥ १२ ॥  
 अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्वाणविनूषणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसु  
 पोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥  
 १३ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥  
 लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुखवसंतग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानो  
 कुहडुदवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्तव-  
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकर  
 स्स, डुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमोग  
 णाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ नै ह्रीं श्री गौतमाय नमः ॥ अथ  
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्ससव्वातिसयासयाणं, सुराधी सर-  
 वंदियाणं ॥ रवींडुर्विबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं  
 ॥ १६ ॥ नै ह्रीं श्री जिनेन्द्र्यो नमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद  
 ॥ सव्विंदियापारविकारदारी, अकारणासेसजणविगारी ॥ महान्न-

साहमी वञ्चल कैर, इत्यादिक इवै नर ज्ञावै विधि संयुक्त शुद्ध  
ज्ञावसैं जो ज्ञम्यजीव यह बीस स्थानक पदकों सेवन करेंगे सो  
जिन नाम कर्माकों उपार्जन करकै तीसरै ज्ञव अनंत सुखकों प्राप्त  
होंगे. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति बीस स्थानक तप उलो विधि सं० ॥

॥ अथ बीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोणंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥  
ज्जवत्तोजविज्जयणेवारणाणं, एमोवोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हज्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनैडपूजा ॥ अथ  
सिद्धपूजा ॥ लोगगज्जागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणि-  
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मस्कयकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥  
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥  
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुस्कंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-  
णदयागिहस्स, एमो२ संघचनविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः  
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरुसिंधुराणं, सुरीसराणं-  
मुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं ॥  
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-  
त्तसंयमपतितज्जविजन अतिहधिरकरताज्जला ॥ अवगुणअडुषित  
गुणविज्जुषित चंडकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरअ  
रुचिरधाराधरा, ज्जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोशिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ षष्ठा पद ॥ सवोहिवीजंकुरुकार-  
णाणं, एमोश्वायगावारणाणं ॥ कुवोहिदंतीहरिणोसराणं ॥ विग्घो-  
घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ  
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-  
णं ॥ सन्नाण पक्कायतरुवणाणं, एमो२ होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ  
ह्रीं श्रीं सम्मग्गसाधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ उदवपक्का

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिञ्चत्तअन्नाणतमोहरस्स,  
 णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥  
 ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारवि-  
 दारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥  
 ९ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-  
 पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंडुपादामलताचणस्स ॥ सुध-  
 म्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ नै ह्रीं  
 श्री सम्यग्विनयै नमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-  
 म्मोघकंतरदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुह-  
 कारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्चा-  
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-  
 सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्ववयान्नूषणन्नूषणस्स,  
 नमोहिशीलस्सअदूसणस्स ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्ब्रह्मचर्यै नमः ॥ १२ ॥  
 अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धानविन्नूषणस्स, सुलद्धिसंपत्ति-  
 पोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥  
 १३ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥  
 लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानो-  
 कुहडुदवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्तप-  
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविच्चाकर-  
 स्स, डुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमो-  
 गणाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ नै ह्रीं श्री गौतमाय नमः ॥ अथ  
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्ससव्वातिसयासयाणं, सुरा२धी सर-  
 वंदियाणं ॥ रवींडुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं  
 ॥ १६ ॥ नै ह्रीं श्री जिनेज्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद  
 ॥ सव्विंदियापारविकारदारी, अकारणासेसजणावेगारी ॥ महान्त-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारमें ज्ञानपदपूजा  
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमंरुणस्स, संदेहसंदोहविखंरुणस्स ॥ मुत्तीउपादा  
 नसुकारणस्स, नमोहिनाणस्सजसोधणस्स ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव  
 ल्लीवनवारणस्स, सुबोहिवीजांकुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्धगुणाल-  
 यस्स, नमोदयामंदिरसठयस्स ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्श्रुतयै  
 नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुज्यंनमःसकलविश्ववशं  
 कराय, तुज्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुज्यंनमःत्रुवनमंरुल  
 मंरुनाय, तुज्यंनमोस्तुजिनपंकविखंरुनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स  
 म्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥ २० ॥ ध्वजासमेत अष्ट इव्य चढावै (पीठै)  
 ६४ इंडपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधमेंझायनमः १ ॥ ॐ इशाणें  
 झायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंझायनमः ३ ॥ ॐमाहेंझायनमः ४ ॥  
 ॐब्रह्मेंझायनमः ५ ॥ ॐलांतकेंझायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंझायनमः ७  
 ॥ ॐसहस्रारेंझायनमः ८ ॥ ॐप्राणतेंझायनमः ९ ॥ ॐअ-  
 च्युतेंझायनमः १० ॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ११ ॥ ॐसूर्येंद्रायनमः १२ ॥  
 ॐचमरेंद्रायनमः १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः १४ ॥ ॐधरेंद्राय  
 नमः १५ ॥ ॐभूतानेंद्रायनमः १६ ॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः १७ ॥  
 ॐवेणुदालींद्रायनमः १८ ॥ ॐहरिकांतेंद्रायनमः १९ ॥ ॐहरिस्त  
 हेंद्रायनमः २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः २१ ॥ ॐअग्निमाण  
 वेंद्रायनमः २२ ॥ ॐपूरुणेंद्रायनमः २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः  
 २४ ॥ ॐजलकांतेंद्रायनमः २५ ॥ ॐजलप्रज्ञेंद्रायनमः २६  
 ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः २८ ॥  
 ॐवेलवेंद्रायनमः २९ ॥ ॐप्रज्ञजनेंद्रायनमः ३० ॥ ॐघोषें  
 झायनमः ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ नमो महाकालेन्द्राय नमः ॥ ३४ ॥ नमो सरूपेन्द्राय नमः ॥ ३५ ॥  
 नमो प्रतिरूपेन्द्राय नमः ॥ ३६ ॥ नमो पूर्णज्येष्ठाय नमः ॥ ३७ ॥ नमो माणज्येष्ठाय  
 नमः ॥ ३८ ॥ नमो ज्योतिर्ज्येष्ठाय नमः ॥ ३९ ॥ नमो महाज्योतिर्ज्येष्ठाय नमः ॥  
 ४० ॥ नमो किन्नरेंद्राय नमः ॥ ४१ ॥ नमो किंपुरुषेन्द्राय नमः ॥ ४२ ॥ नमो सत्पुरुषे  
 न्द्राय नमः ॥ ४३ ॥ नमो महापुरुषेन्द्राय नमः ॥ ४४ ॥ नमो अमितकार्येन्द्राय नमः ॥  
 ४५ ॥ नमो महाकार्येन्द्राय नमः ॥ ४६ ॥ नमो गीतरतीन्द्राय नमः ॥ ४७ ॥ नमो गीत-  
 यज्ञेन्द्राय नमः ॥ ४८ ॥ नमो सन्निहितेन्द्राय नमः ॥ ४९ ॥ नमो सामानि-  
 केन्द्राय नमः ॥ ५० ॥ नमो धात्रेन्द्राय नमः ॥ ५१ ॥ नमो विधात्रेन्द्राय नमः  
 ॥ ५२ ॥ नमो रुषिन्द्राय नमः ॥ ५३ ॥ नमो रुषिपालतेन्द्राय नमः ॥ ५४ ॥  
 नमो इश्वरेन्द्राय नमः ॥ ५५ ॥ नमो महेश्वरेन्द्राय नमः ॥ ५६ ॥ नमो वत्सेन्द्रा-  
 य नमः ॥ ५७ ॥ नमो विसालेन्द्राय नमः ॥ ५८ ॥ नमो हास्येन्द्राय नमः ॥  
 ५९ ॥ नमो श्रेयसेन्द्राय नमः ॥ ६० ॥ नमो हास्यस्तेन्द्राय नमः ॥ ६१ ॥  
 नमो पदगेन्द्राय नमः ॥ ६२ ॥ नमो पदगपतेन्द्राय नमः ॥ ६३ ॥ नमो महाश्रे-  
 येन्द्राय नमः ॥ ६४ ॥ इति चोत्तम इन्द्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-  
 देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ नमो रोहिण्यै नमः ॥ १ ॥ नमो  
 प्रज्ञप्त्यै नमः ॥ २ ॥ नमो वज्रशृङ्गलायै नमः ॥ ३ ॥ नमो वज्राकुशायै नमः  
 ॥ ४ ॥ नमो चक्रेश्वर्यै नमः ॥ ५ ॥ नमो पुरुषदत्रायै नमः ॥ ६ ॥ नमो का-  
 ल्यै नमः ॥ ७ ॥ नमो महाकाल्यै नमः ॥ ८ ॥ नमो गौर्यै नमः ॥ ९ ॥ नमो  
 गंधार्यै नमः ॥ १० ॥ नमो महाज्वालायै नमः ॥ ११ ॥ नमो मानव्यै-  
 नमः ॥ १२ ॥ नमो वैरोक्ष्याय नमः ॥ १३ ॥ नमो अबुधायै नमः ॥ १४  
 ॥ नमो मानस्यै नमः ॥ १५ ॥ नमो महामानस्यै नमः ॥ १६ ॥ इति षो-  
 ढश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-  
 पारी चढावै ॥ ॥ नमो ब्रह्मशान्त्यै नमः ॥ २४ ॥ नमो पा-  
 र्श्वयक्षाय नमः ॥ २३ ॥ नमो गोमेधाय नमः ॥ २२ ॥ नमो नृकुट्यै नमः  
 ॥ २१ ॥ नमो वरुणाय नमः ॥ २० ॥ नमो कुबेराय नमः ॥ १९ ॥ नमो



कैलायनमः ॥ १८ ॥ नैर्गधर्वायनमः ॥ १७ ॥ नैर्गह्मायनमः ॥  
 १६ ॥ नैकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ नैपातालायनमः ॥ १४ ॥ नैप-  
 एमुखायनमः ॥ १३ ॥ नैकुमारायनमः ॥ १२ ॥ नैयक्षराजाय-  
 नमः ॥ ११ ॥ नैब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ नैअजितायनमः ॥ ९ ॥  
 नैविजयायनमः ॥ ८ ॥ नैमातंगायनमः ॥ ७ ॥ नैकुसमायनमः ॥  
 ६ ॥ नैतुंगुरैयनमः ॥ ५ ॥ नैरुक्तायकायनमः ॥ ४ ॥ नैत्रिमुखा-  
 यनमः ॥ ३ ॥ नैमहायकायनमः ॥ २ ॥ नैगोमुखायनमः ॥ १ ॥  
 इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥  
 नैचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ नैअजितवलायैनमः ॥ २ ॥ नैडुरितार्यैनमः  
 ॥ ३ ॥ नैकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ नैमहाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ नैश्या-  
 मायैनमः ॥ ६ ॥ नैशांतयैनमः ॥ ७ ॥ नैनृकुट्यैनमः ॥ ८ ॥  
 नैसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ नैअशोकायनमः ॥ १० ॥ नैमानव्यैनमः  
 ॥ ११ ॥ नैचंदायनमः ॥ १२ ॥ नैविदितायैनमः ॥ १३ ॥ नैअंकु-  
 शायैनमः ॥ १४ ॥ नैकंदपार्यनमः ॥ १५ ॥ नैनिर्वाण्यैनमः ॥  
 १६ ॥ नैवलायैनमः ॥ १७ ॥ नैवारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ नैधरणप्रियायैनमः  
 ॥ १९ ॥ नैनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ नैगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ नैअं-  
 विकायैनमः ॥ २२ ॥ नैपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ नैसिद्धायकायै-  
 नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ नैनैसर्पका-  
 यनमः १ ॥ नैपांडुकायनमः २ ॥ नैपिंगलायनमः ३ ॥ नैसर्वरत्नायनमः  
 ४ ॥ नैमहापद्मायनमः ५ ॥ नैकालायनमः ६ ॥ नैमहाकालायनमः  
 ७ ॥ नैमाणवायनमः ८ ॥ नैशंखायनमः ९ ॥ इति नव  
 निधान पदे ए कलश चढावै ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥  
 नैविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ नैक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ नैचक्रेश्व-  
 र्यैनमः ॥ ३ ॥ नैधरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ नैपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥  
 नैइंद्रायनमः ॥ ६ ॥ नैअन्नयेनमः ॥ ७ ॥ नैयमायनमः ॥ ८ ॥



ॐ नैऋताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ वायव्यै नमः ॥ ६ ॥  
 ॐ कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ नागाय नमः ॥ ९ ॥  
 ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥ १ ॥  
 ॐ चंद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्योत्स्नाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ बुधाय नमः ॥ ४ ॥  
 ॐ शुक्रे नमः ॥ ५ ॥ ॐ शुक्राय नमः ॥ ६ ॥ ॐ शनैश्चराय नमः  
 ॥ ७ ॥ ॐ राहवै नमः ॥ ८ ॥ ॐ केतवै नमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह  
 नाम ॥ इहां बीस स्थानक मंत्रल पूजनकी विधि विशेष लिखी  
 है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंत्रल प्रतिष्ठा  
 बलबाकुलादिककी संपूर्ण विधि नवपद मंत्रल पूजामें लिख आए  
 हे उस मुजबही करणी । फेर विशेष विधि कराणी होय तो वि-  
 द्वाजान गुरुकों पूढे करणी ॥ इति बीसस्थानक मंत्रल पूजा वि० सं० ॥  
 ॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शशिका देवत सामणी ए मुऊ सानिध कीजै, जुलो  
 अक्षर जगति जणी समझाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणो ए  
 जिएरा गुण गांठ, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पांठ ॥  
 १ ॥ दक्षिण जरते अंगदेस ठै चंपानयरी, मधवा राजा राज्य करै  
 तिण जीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूवनी ए लखमी इण नामै,  
 आठ पूत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे  
 कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठों पूत्रों ऊपरां ए तिण लागै प्यारी  
 ॥ बाधै चंडतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी धाय  
 माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवनी ए घर अंगण वैठी,  
 दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विच एहवी  
 ए नही दूजी नारी, रंजा पनुमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥  
 ॥ पुरुष न दीषै कोइ इसो जिणनें परणानं, आख्या आगल साद  
 वधै तिण चयन न पांठ ॥ देशरना राजवी ए ततखिण तेमाया,

सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक  
 राजातणो ए वै कुमर सोजांगी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेती  
 लागी ॥ ऊजा देखै सकल लोक चढिया केइ पावो, चित्रसेनरे कंठ  
 ठवी कुमरी वरमावा ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार,  
 रलियायत अयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व  
 खत कन्यारो जानो, वीतशोकनो कुमर अयो सिर ऊपर  
 लावो ॥ ७ ॥ इम विवाह अयो जलो ए दीया दान अपार ॥  
 घर आया परणी करी ए हरखयो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र  
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस  
 लीधो ॥ ८ ॥ ( ढाल-प्रभु प्रणसुं रे पास जिणोसर अंजणो ॥ ए  
 देशी ) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा अयो, सुख मांही रे  
 केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा जला,  
 चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ ( उछालो ) चढती कला  
 हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी नूमी कंतसेती करै क्री  
 मा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,  
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ ( चाल )  
 इक कामण रे गोख चढी इष्टे प्रमी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे  
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण  
 अधिकरो डुख हुनु ॥ ( उछालो ) डुख हुवो देखी रोहिणी हिव  
 कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा  
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देख्यो नही, मुऊने त-  
 मासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ ( चाल ) इण वचनै  
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए  
 डुखणी रे पूत्र मुअे तरुपन करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥  
 ( उछालो ) जाणै तरै तूं वात डुखनी गरवगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ जाटयो तेहना बालकजणी ॥ सातमा जूयथी  
 तलै नारथ्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र  
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै  
 करी, थयो मुरबित रे रोवै अति आंख्या जरि ॥ परतो सुत रे  
 सासणदेवत जादियो, कंचनमयरे सिंहासन वैसारियो ॥ ( उल्लाखो )  
 वैसारियो कर जोरु आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केश  
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो जूयतने अचंनो देख ए कारण  
 किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूजियै सांसो इसो ॥ १३ ॥  
 ( चाल ) चिंतवतां रे चारतिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो  
 वंदणने तिसै ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी  
 रे पूरवज्जव बालकतणो ॥ ( उल्लाखो ) बालकतणो जव जूय पूछै  
 कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो वली  
 ॥ श्रीगुरु पासै पाठलै जव रोहणी तप आदर्यो, तपतणो सगते  
 साधुजगते तुम्ह जवसाधर तर्यो ॥ १३ ॥ ( चाल ) कहै राजा रे  
 रोहणितप किम कीजियै, विधि ज्ञाखो रे जिम तुम पासै लीजियै  
 ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन  
 राजाजणी ॥ ( उल्लाखो ) राजाजणी विधि एह जंपै चंड रोहणतप  
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा-  
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे  
 कीजै तंजी आलस अंगसुं ॥ १४ ॥ ( ढाल-वीर सुणो मोरी वीनती  
 ॥ ए देशी ) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो  
 एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥  
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृद्ध अशोक ॥  
 गुणनो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त०  
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आवे मंगलीक ॥

सबल सजाई साथ करी नरपति पिए आया ॥ ९ ॥ वीतशोक  
 राजातणो ए वै कुमर सोजागी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेती  
 लागी ॥ ऊजा देखै सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ  
 ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार,  
 रलियायत थयो देखने ए सारे संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व  
 खत कन्यारो जानो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर  
 लामो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥  
 घर आया परणी करी ए हरखयो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र  
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस  
 लीधो ॥ ८ ॥ ( ढाल-प्रभु प्रणसुं रे पास जिणोसर थंजणो ॥ ए  
 देशी ) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुख मांही रे  
 केतलो काल बही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा जला,  
 चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ ( उछालो ) चढती कला  
 हिव शय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै क्री  
 मा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,  
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ ( चाल )  
 इक कामण रे गोख चढी इष्टे प्रमी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे  
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूथो, हुं एकज रे तिण  
 अधिकरो डुख हुन ॥ ( उछालो ) डुख हुवो देखी रोहिणी हिव  
 कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा  
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देखयो नही, मुऊने त-  
 मासो अने दासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ ( चाल ) इण वचनै  
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए  
 डुखणी रे पूत्र मुथे तरुपरु करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥  
 ( उछालो ) जाणै तरै तूं वात डुखनी गरवगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ जाल्यो तेहना बालकजणी ॥ सातमा जूयथी  
 तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र  
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै  
 करी, थयो मुरठित रे रोवै अति आंख्या जरि ॥ परुतो सुत रे  
 सासणदेवत जालियो, कंचनमयरे सिंहासन वैसारियो ॥ ( उल्लाखो )  
 वैसारियो कर जोम आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केश  
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो जूपतने अचंजो देख ए कारण  
 कियो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूठियै सांसो इसो ॥ १३ ॥  
 ( चाल ) चिंतवतां रे चारतिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो  
 वंदणने तिसै ॥ सुण देशना रे पूढे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी  
 रे पूरवज्जव बालकतणो ॥ ( उल्लाखो ) बालकतणो जव जूप पूढै  
 कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो बली  
 ॥ श्रीगुरु पासै पाठलै जव रोहणी तप आदर्शो, तपतणो सगते  
 साधुजगते तुम्ह जवसायर तरथो ॥ १३ ॥ ( चाल ) कहै राजा रे  
 रोहणितप किम कीजियै, विधि जाखो रे जिम तुम पासै लीजियै  
 ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन  
 राजाजणी ॥ ( उल्लाखो ) राजाजणी विधि एह जंपै चंड रोहणतप  
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा-  
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे  
 कीजै तजी आलस अंगसुं ॥ १४ ॥ ( ढाल-वीर सुणो मोरी वीनती  
 ॥ ए देशी ) ॥ तप करियै रोहणितणो, बलि करिये हो ऊजमणो  
 एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥  
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृद्ध अशोक ॥  
 गुणनो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त०  
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥

विधसुं पुस्तक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ ॥  
 सेवा कीजै साधूनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोपीजै  
 साहमी, मनरंगे हो करण पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूं-  
 ठना, भिस लेखण हो जिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वीटणा,  
 गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण  
 दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणी आदरै,  
 ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल-धरम करो जिनवर  
 तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे  
 रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थकर पासे रे ॥ ५० ११ ॥  
 इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने  
 रोहणी, मन सूधै संजम लीधो रे ॥ ५० २२ ॥ आठै पूत्रे आदरी,  
 दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै, धरमतणी  
 मति जागे रे ॥ ५० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल  
 शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित  
 लाया रे ॥ ५० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिव-  
 पुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिवतणी, हिव पुन्यें सेवा पामी रे  
 ॥ ५० २५ (कलश) ॥ इम गगन डुगमुनि चंद्र वरसे ( १७२० )  
 चोथ श्रावण सुदि जली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगुरु सु  
 ख जिम सांजली ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रशन चित्तनी चिंता  
 टली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्था फली ॥  
 २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी न-  
 ऋत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन  
 करै, अगि अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढ़ावै, देव वंदना-



दिक करकै धर्मोपदेश सुणै ( श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः )  
इसका दो हजार गुणना करै. एसे सात वरस तप करणेंसें सुख  
शोभाग्य बधेगा, पूत्रादिकका शोक संताप न होगा. विशेष अधि-  
कार स्तवनसें जाणना ॥ इति रोहण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्माशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय  
॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ वलि १  
वांडु वीरजी सुहामणा ॥ १ ॥ जावठ जंजण सेव्यां सुख करै,  
गातां नव निधि आय ॥ बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै  
सहु पाप ॥ व० २ ॥ बे कर जोम्नी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनशासन  
राय ॥ नाम लियांथी नव निधि संपजै, दरिशाण डुरित पुलाय ॥  
व० ३ ॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणियै, एक कीयो छम्माश ॥  
पांचे ऊणा ठ वलि जाणियै, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुत्तर  
माशखमण जग जीपता, ठ दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो  
दो कीया, दो दोठ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ जइ महाजइ शि  
वगति जाणिये, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि  
कियो, नहि कीयो चोथो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रति  
मा वारमी, कीधा बारे जी माश ॥ दोयेंसें वेला जिनजीरा जा  
णियै, इण गुणतीस विलास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिन  
जीरा जाणियै, तीन गुणतीस पचास ॥ एहमें स्वामी केवल पा  
मिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इम वीर जि  
नवर सयल सुखकर अतहि डुकर तप करी, संयमसु पाली कर्म  
टाली स्वामी शिव रमणी वरी ॥ सेवक पज्जणें वीर जिनवर चरण  
वंदित तुमतणा, संसार कूप पमंत राखो आपो स्वामी सुख घणा  
॥ ९ ॥ इति छम्मासी स्तवन ॥



॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसैं उत्कृष्ट छम्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संघयण बल पराक्रम के हीनपणोंसैं इकसार छम्मासी तप नहिं कर सकतेहैं तोनी छम्मासीके १०० उपवास करणोंसैं जघन्य छम्मासी तपके फलकों जीव प्राप्त होता हे. उर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन छम्मासीतपका सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रज्ञूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है. ( श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः ) इसका २००० गुणना करै. वीर प्रज्ञूके नामका तीर्थ होय जहां यात्रा करणोंकों जावै, शुद्ध जावना जावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञाव लघुकर्मी जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति छम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बरेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उल्लट धरी दीजियै ॥ ए देशी ॥ त्रिभुवन नाय क तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुज पदपंकज सेव रे ॥ त्रिभु० १ ॥ प्रथम जूपाल प्रभु तूं अयो, इस अवसरपणी काल रे ॥ तुज सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल र ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥ धर्म प्रज्ञापक प्रथमतूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि धिति जेह रे ॥ ते तप शक्तिर्यें तें दहया, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ द्वादश माशनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणयो, आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सेरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसैं साठ उपवास ते, ते इस पंचम काल रे ॥ अवसर आदरै क्रम विना, ते पिण जवि सुविसाल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणो अनुसार रे ॥ पणिक  
मणादिक ज्ञावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त स  
माधि शुभ ज्ञावथी, धरे ताहरो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै,  
कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ९ ॥ काल अनादि संसारमें, ज  
न्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया बिना, तप बिना किम  
हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरन्नव पुन्यथी, बलि ल  
ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्वनी रुचि अइ हे मुँह, हिव मिठ्यो म  
नतणो जर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ जव२ एक जिनराजनो, सरण हो  
ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवै परिहार  
रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमार्ग सुविशाल रे  
॥ जव२ जे मुँह संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥  
श्रीजिनशासन तप कह्यो, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ धन२ जे नर  
आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना  
जिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में सुण्यो धन दिन  
आजनो मुँह मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि  
नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौजाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय वि-  
मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारै माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बारै माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर श्रीरुषभदेवस्वामी उत्कृष्ट बारै माशी तप  
स्या करी. इस वास्तै जठ्यजीव बारै माशी तपस्याका ज्ञाव लायकै  
( ३६० ) तीनसे साठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन  
देववंदनादि क्रिया करै, बारै माशी तपका स्तवन सुणै ॥ ( श्री  
रुषभदेवस्वामीनाथायनमः ॥ ) इसका १००० गुणना करै.  
तपस्या पूर्ण होनेसे सिद्धगिरी यात्रा करणको जावै. शक्ति माफक  
उद्यापन उच्चव करै. इस तपस्याके प्रशान्त जठ्यजीवोके कभी दुख

दौर्ज्ञाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज बढ़ता रहै ॥ इति बारैमा  
शी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ डहा ॥ प्रणमं प्रथम जिनेसरु, श्रुद्ध मने सुखकार ॥  
लवधि अठवीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्रव्याक  
रणें प्रगट, जगवतीसूत्र मज्जार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारु लवधि  
विचार ॥ २ ॥ आंखिल तप कर ऊपजै, लवधां अठवीस ॥ ए  
हिव परगट अरथसुं, सांजलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल  
संसारनी ॥ ) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणे, लवधिना नाम  
परिणाम सरिपा जणे ॥ रोग सह जाय जसु अंग फरस्यां सही,  
प्रथम ते लवधि वै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र नुषध  
समा जाणियै, बीय वप्पोसही लवधि वखाणियै ॥ श्लेष्म नुषध  
सारिखो जेहनो, तीजी खेद्धोसही नाम वै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना  
मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथी जद्धोसही नाम तेहनो ठवै ॥ केश  
नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहैनही रोग सब्बोसही ते कही  
॥ ६ ॥ एक इंडिय करी पांच इंडियतणा, जेद जाणे तिका नाम  
संजिस्सना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लवधि  
ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए  
चाल ॥ ) हिव आंगुल अडियै ऊणो मानुषकेत्र, संज्ञा पंचेडि तिहां  
जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंनित जाणे थूल प्रकार, ते रुज्जु  
मति नामे अठल लवधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषकेत्रे संज्ञा  
वंत, पंचेडिय जे वै तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें जाणे  
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुन्न नाम ॥ ९ ॥  
जिण लवधि प्रज्ञावें ऊमी जाय आकाश ॥ ते जंघाविज्ञाचारण  
लवधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिलमें खेह आय, ए लवधि

धारमी आसी विस कहिवाय ॥ १० ॥ सहू सुखम बादर देखै  
 कोकालोक, ते केवल लबधी बारमियै सहू आक ॥ गणधर पद ल  
 यै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरब जाण  
 ॥ ११ ॥ तीर्थकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र  
 र्त्तेपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अठ्ठारमी आखा  
 सुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृतहीरै मेढया जेह सवाद, एहवी  
 है वाणी नगणीशम परसाद ॥ जणियो नवि जलै सूत्र अरथ सुविचा  
 ते कुष्ट कंबुद्धी बीसम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एक पद जणियां आ  
 पद लख कोम, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोम ॥ एकै  
 ये करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक  
 ॥ १४ ॥ ( ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥ ) सो  
 देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीस  
 रे, तेजोलेख्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥  
 मने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ ए आंकणी  
 ॥ चवद पूरबधर मुनिवरू रे, उपजना संदेह ॥ रूप नवो रचि  
 ले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेख्या अगननी  
 उपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले  
 सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगति सुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै  
 ॥ सदगुरु कहै ठावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८  
 कण पात्रे आदमी रे, जीजौ केइ लाख ॥ तेह अस्कीणम  
 सी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्कीसनी  
 म्हादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीशमी  
 ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेख्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार  
 गवतीसूत्रमें जाणियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥  
 णा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीनश इकर मिली रे,  
 ६८

दौर्भाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज बढ़ता रहै ॥ इति बौद्ध  
शी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ डहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, श्रुद्ध मने सुखको  
लब्धि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रभवा  
रणें प्रगट, जगवतीसूत्र मज्जार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वाह  
विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै, लब्ध्यां अठावीस ॥  
द्विव परगट अरघसुं, सांजलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ स  
संसारनी ॥ ) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणे, लब्धिना  
परिणाम सरिषा जणे ॥ रोग सह जाय जसु अंग फरस्यां स  
प्रथम ते लब्धि है नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र ज  
समा जाणियै, वीय वप्पोसही लब्धि वखाणियै ॥ श्लेष्म  
सारिखो जेहनो, तीजी खेत्तोसही नाम है तेहनो ॥ ५ ॥  
मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथी जेत्तोसही नाम तेहनो ठवै ॥  
नाख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सव्वोसही ते  
॥ ६ ॥ एक इंडिय करी पांच इंडियतणा, जेद जाणे तिका  
संजिणना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी ल  
ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर  
घाल ॥ ) द्विव आंगुल अढियै ऊणो मानुषकेत्र, संज्ञा पंचेडि  
जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंनित जाणे थूल प्रकार, ते  
मति नामे अठल लब्धि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषकेत्र  
वंत, पंचेडिय जे है तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजाय  
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुज नाम ॥  
जिण लब्धि प्रज्ञावें ऊनी जाय आकाश ॥ ते जंघा  
लब्धि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिलमें खेहू आय, ए

३  
वे  
रु  
प्र  
सु  
(  
प्र  
ज  
ज

क  
पद  
अव  
र ।  
धर्म  
अरि  
इए  
कह  
अपा  
आग  
सरे ।  
काल

॥रमी आसी विस कहिवाय ॥ १० ॥ सहू सुखम बादर देखै  
 तालोक, ते कैवल लबधी बारमियै सहू आक ॥ गणधर पद ल  
 रै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरब जाण  
 १॥ तीर्थकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र  
 पद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अठ्ठारमी आखा  
 बुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृतकीरै मेढ्या जेह सवाद, एहवी  
 वाणी जगणीशम परसाद ॥ ज्ञणियो नवि जूलै सूत्र अरथ सुविचा  
 ते कुष्ट कबुद्धी बीसम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एक पद ज्ञणियां आ  
 द लेख कोम, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोम ॥ एक  
 प्रे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक  
 १४ ॥ ( ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥ ) सो  
 देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीस-  
 रे, तेजोलेख्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥  
 मने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ ए आंकणी  
 १॥ चवद पूरबधर मुनिवरू रे, उपजंगा संदेह ॥ रूप नवो रचि  
 ले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेख्या अगननी  
 पशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले  
 सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगति सुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै  
 ॥ सदगुरु कहै ढावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८  
 कण पात्रे आदमी रे, जीजामै केह लाख ॥ तेह अस्कीणम  
 नी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चकोसनी  
 घादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीसमी  
 ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेख्या त्रिहुं रे, तेम पुलाक विचार  
 ती गवतीसूत्रमें जाणियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥  
 ॥ एण आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीनश इकर मिली रे,

दौनाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज वढता रहै ॥ इति शौच  
शी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमं प्रथम जिनेसरु, श्रुद मने सुखका ।  
लवधि अठवीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रथम  
रणें प्रगट, जगवतीसूत्र मऊार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारु लकी  
विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै, लवधां अठवीस ॥  
हिव परगट अरथसुं, सांजलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सप्त  
संसारनी ॥ ) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणो, लवधिनाम  
परिणाम सरिषा जणो ॥ रोग सह जाय जसु अंग फरस्यां सही  
प्रथम ते लवधि है नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र क  
समा जाणियै, वीय वप्पोसही लवधि वखाणियै ॥ श्लेष्म क  
सारिखो जेहनो, तीजी खेल्होसही नाम है तेहनो ॥ ५ ॥  
मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथी जल्होसही नाम तेहनो ठवै ॥  
नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सब्बोसही ते  
॥ ६ ॥ एक इंडिय करी पांच इंडियतणा, जेद जाणे तिका  
संजिझना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी  
ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहा  
चाल ॥ ) हिव आंगुल अडियै ऊणो मानुषकेत्र, संज्ञा पंचेदि  
जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंनित जाणे थूल प्रकार, त  
मति नामे अठन लवधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषकेत्रे  
वंत, पंचेडिय जे है तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजाय  
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुज नाम ॥  
जिण लवधि प्रज्ञावें ऊमी जाय आकाश ॥ ते जंधा  
लवधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिलमैं खेह आय, ए



इग्यारमी आसी विस कहिवाय ॥ १० ॥ संहू सुखम बादर देखै  
 लोकालोक, ते केवल लबधी बारमियै सहु आक ॥ गणधर पद ल  
 हियै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरब जाण  
 ॥ ११ ॥ तीर्थकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र  
 वर्त्तिपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अठ्ठारमी आखा  
 वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृतकीरै मेढया जेह सवाद, एहवी  
 लहै वाणी नगणीशम परसाद ॥ जणियो नवि जूलै सूत्र अरथ सुविचा  
 र, ते कुंष्ट कबुद्धी बीसम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एकै पद जणियां आ  
 वै पद लेख कोरु, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोरु ॥ एकै  
 अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक  
 ॥ १४ ॥ ( ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥ ) सो  
 लह देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीस-  
 मी रे, तेजोलेखा जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥  
 आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ ए आंकणी  
 ॥ १५ ॥ चवद पूरबधर मुनिवरू रे, उपजंता संदेह ॥ रूप नवो रचि  
 मोकले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेखा अगननी  
 रे, उपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतले  
 खा सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगति सुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै  
 रूप ॥ सदगुरु कहै ठावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८  
 ॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीजौ केह लाख ॥ तेह अस्कीणम  
 हानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्रीसनी  
 रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीशमी  
 नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेखा त्रिहुं रे, तेम पुलाक विचार  
 ॥ जगवतीसूत्रमें ज्ञापियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥  
 पन्नवणा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीनश इकर मित्ती रे,

वारू आठ विचार ॥ च० १२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, बाकी ल  
बधां बीश ॥ साजलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीस ॥  
च० १३ ॥ ( कलश ) संवत सत्तरैसे ठवीसे मेरुतेरस दिन जलै,  
श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसानलै ॥ वाचना  
चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन  
जलतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ १४ ॥ इति १८ लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अठ्ठाईस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै, अन  
क्रमसे २८ उपवास करै, स्तवन सुणै, जिस दिन जो लब्धिका उ  
पवास होय उसही नामका गुणना करै, तप पूर्ण होणैसे शक्ति  
मुजब न्यापन करै, इस तपस्यासे निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा  
आनंद रहै, इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोनी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री  
वर्द्धमान, चरम तीर्थकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री  
गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदै पूर  
व नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे जापिया ए ॥ ते हिव सुगुरु पसा  
य, वरणविस्थुं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व  
उत्पाद १, दूजो अयायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति  
नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥  
॥ ३ ॥ ठठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अठम गिणो  
ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ए, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो  
कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कळयाण ११, प्राणायु वारमो  
१२, क्रियाविशाल तेरम जणो ए १३ ॥ विंडुसार १४ इण नाम,  
चवदे ए कह्या, साख अकी में संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ॥ श्री

વિમલાચલ શિર તિલો ॥ એ દેશી ॥ ) નૃત્પાદ પૂર્વ સૌહાર્મણો,  
 કોટી પદ પરિમાણ ॥ ષટ જ્ઞાવ પ્રગટ થૈ તે જિહાં, ત્રિપદી જ્ઞાવ  
 વિનાણ ॥ ૧ ॥ સર્વ દ્વ્યપર્યયતણો, જીવ વિશેષ પ્રમાણ ॥ દૂજો  
 પૂર્વ અગ્રાયણી, ઠિન્નું લખ પદ જાણ ॥ ૨ ॥ પદ લખ સત્તર જેહની,  
 સંખ્યા પરગટ એહ ॥ વીર્ય પ્રબલતા જીવની, જ્ઞાષી તીજૈ તેહ ॥ ૩ ॥  
 ચોથે પૂર્વે જે કહ્યો, અસ્તિ નાસ્તિ પ્રવાદ ॥ પદ સંખ્યા સાઠ લાખ-  
 ની, સત્તજંગી સ્યાદ્વાદ ॥ ૪ ॥ ગ્યાન પ્રવાદ પદ પંચમો, સૂત્રે આણ્યો  
 જોમ ॥ મત્યાદિક પણ જેદસું, પદ સંખ્યા ઇક કોમિ ॥ ૫ ॥ સત્ય-  
 પ્રવાદ ઢઠો કહું, જ્ઞાષું સત્ય સ્વરૂપ ॥ સંખ્યા પદ ઇક કોમની,  
 જ્ઞાષી અગમ અનૂપ ॥ ૬ ॥ નિત્યાનિત્યપણો રહ્યાં, આતમ દ્વ્ય  
 સુજ્ઞાવ ॥ ઠવીસ પદ કોમ જેહના, સૂત્રે આણ્યા જ્ઞાવ ॥ ૭ ॥ કર્મ  
 પ્રવાદતણો હિવૈ, પ્રગટવણે અધિકાર ॥ લાખ અસી પદ જેહના,  
 કોમી રંગ નિરધાર ॥ ૮ ॥ નવમો પૂર્વ કહું હિવૈ, નામે પ્રત્યાખ્યા-  
 ન ॥ લાખ ચોરાસી જેહના, પદ સંખ્યા ચિત આન ॥ ૯ ॥ અતિ-  
 શય ગુણ સંયુત જ્ઞણી, સાધન સાધ્ય નિદાન ॥ વિદ્યા અનુપમ  
 સાતસૈ, કોમી વરસ લખ જાન ॥ ૧૦ ॥ કલ્યાણ નામ રંગ્યારમો,  
 ઠવીસ કોમ પ્રમાણ ॥ જ્યોતિષશાસ્ત્ર વિચારણા, ચોવિહ દેવ ક-  
 લ્યાણ ॥ ૧૧ ॥ પ્રાણાયુ પદ બારમો, ઠપ્પન્ન લખ રંગ કોમિ, પ્રાણ  
 નિરોધન જે ક્રિયા, શાસ્ત્રે આણ્યો જોમ ॥ ૧૨ ॥ રૂપાયિક્યાદિક  
 જે ક્રિયા, ઢંદ ક્રિયા સુવિસાલ ॥ પદ સંખ્યા નવ કોમની, તેરમી  
 ક્રિયા વિશાલ ॥ ૧૩ ॥ લોકસારવિંડુ ચવદમો, નામે અરથ નિ-  
 હાલ ॥ પદ સંખ્યા રંગ કોમની, લાખ પચવીસ સંજાલ ॥ ૧૪ ॥  
 લોકપ્રત્યય દેખણ જ્ઞણી, સંખ્યા ગજ પરિમાણ ॥ સોલે સદસ અરુ  
 તીનસૈ, નર તયાસી જાણ ॥ ૧૫ ॥ પૂરબ સંખ્યા એ કહી, ગુણ-  
 માલાથી દેખ ॥ આગે બુધજન સોધજ્યો, વાકી દેશ વિશેષ ॥ ૧૬ ॥

( दाल ॥ वीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल ) सूत्रे गुंथे गणधरा,  
 अरथै अरिदंत ज्ञाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिम  
 नासै रे ॥ १ ॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, तत्त्व  
 रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय  
 तजी करी, ग्यान जगत नर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरै,  
 प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी,  
 श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजोग  
 प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अकत लेइ ऊजला, गुंहली सुंदर कीजै रे ॥  
 नाण दंसण चारित्रनी, दिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद  
 पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेइ रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै,  
 चित अति आदर देइ रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण अयां, ऊज-  
 मणो हिव कीजै रे ॥ घर सारु धन खरचने, नरजव लाहो लीजै  
 रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरव नाम प्रमाणो रे ॥ नव-  
 करवाली कोथली, लेखण ठवली जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव  
 जुहारने, आरती मंगल कीजै रे ॥ सनात्रपूजा बलि सांचवी, तत्त्व  
 सुधारस पीजै रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, दुरगति का-  
 रण ठेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिंगेमणी, जीव अकयगति वेदे रे ॥  
 ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि ज्ञानी, आगम वचने जोइ रे ॥  
 ज्ञवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं जवन्नमण न होइ रे ॥ वा० ११ ॥  
 ( कलश ) इम सयल सुखकर गच्छ खरतर तपै रवि जिम क्रांत ए,  
 सौजाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृत्तंत ए ॥ संवत अठारै  
 वरस ठिन्नूं नयर श्रीबालूचरै, ए स्तवन ज्ञणतां श्रवण सुणतां स-  
 थल मनवंवित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १२ पूरव तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके १४ उपवास करे, जिस दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे ( २००० ) गुणना करै, स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम ओर विधि सर्व लिखी है इस मुजब विवेकी जीव गुरुतें समझकें करै, यह तपस्याके कर-णेसँ ज्ञानावरणादि कर्मका कथोपशम होय, शुद्ध ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेल ॥ बाल-  
क हित ज्ञानी बगसियै, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन  
पूजतां, मन लहि शुद्ध परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये,  
द्वदंती गुणधाम ॥ २ ॥ ( दाल ॥ वीर जिणेसर उपदिसै ॥  
ए देशी ) कमला जिम कुंरुणपुरै, जुजबल नरपति नीमो रे ॥  
पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम०  
१ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना, असवी सुता पूरै माशै रे ॥ द्वदंती  
नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशै रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ  
कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रंजना रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती,  
व्रतधारी दृढ बंजना रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिभा पूजै शांतनी, देवे दीधी  
त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥  
नवजायाधिप श्रीनिषदनो, नल लिखियो निलामै रे ॥ आनंदसु  
पंथ आवतां, पूरब पुन्य उघामै रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम  
जरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि जाले तेज दिनमणी, जा  
ग्रत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै,  
पूठियै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसह जीत  
मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालता, दालता दुस्सह स-  
बला रे ॥ संजम शुद्ध संजालतां, नयम शिवसुख कमला रे ॥ प०  
८ ॥ दुहा ॥ मणि तेजै मुनि तख्ये, रथ अकी स्त्री जरतार ॥

देवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पां-  
वन श्रया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परजव तिलक है, कहि  
यै श्रीमुनिराय ॥ १० ( ढाल-जगत नृप ज्ञावसुं ए ॥ ए देशी ) ॥  
मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना  
ए ॥ कर्म शुजाशुज परजवै ए, इह जव फल निपजाय, करम  
गति बंकमी ए ॥ ११ ॥ उहिनाण जव प्रागनो ए, नृप सुणे निर  
मल ज्ञाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जा  
एयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२ ॥ चोथ प्रमुख  
नृप चूँपसुं ए, किरिया शुद्ध करी एह, जलै चित ज्ञावसुं ए ॥  
॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवीस, रयण कंवर ज  
ह्या ए ॥ १३ ॥ तिलकसें पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम  
सफलो गिणे ए ॥ जगवन तप विधि ज्ञापियै ए, नल कहै बोध  
वरीस, पीहर पट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए,  
पट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारखुं ए ॥ चोथ दोय जिन वीरना  
ए, अजितादिक बावीस, आणा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषध  
त्रीस तीने श्रया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥  
उयापन संघ ज्ञावसुं ए, जन्म सफल नरराय, सुखै मन साधियै  
ए ॥ १६ ॥ सुण वाणी समकित ग्रहै ए, पय प्रणामी गुरु वीर, चित  
जमाहीयो ए ॥ इण पर जे जवि आदरै ए, आयै चरम शरीर, मूल  
सुख शासतो ए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता जविक  
ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो  
शिवधरां ॥ आगमे आखै सूरिय साखै सुगुरु ज्ञापै सुण श्रया, शुद्ध  
ध्यवै जविक ज्ञावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुज दिन गुरुके पास तिलकतपस्या ग्रहण करकै तीस



उपवास करै. प्रथम श्रीरुषभदेवस्वामीके ४ उपवास करै, जब ( श्री रुषभदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब ( श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना करै. और श्री अजितनाथस्वामीकों आद लेकै ( २२ ) बाईस जगवंतोंका बाईस उपवास करे. जब उन २ जगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना करे, नर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर ज्ञाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, जवि प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥ ज० वी० १ ॥ कोरु वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावै फल तास ॥ ज० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें न सुहाय ॥ ज० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मल्लिनाथ ॥ ज० ॥ रूप पराव्रत कीया घणा रे लाल, आषाढजूति गणिका साथ ॥ ज० वी० ३ ॥ च्यार कषाय ठे मूलगा रे लाल, उत्तम सोले जेद ॥ ज० ॥ इम जव २ जमतो अको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ ज० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ ज० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ ज० वी० ५ ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ ज० ॥ उपवास करतां ज्ञा वसुं रे लाल, पामे जवनो पार ॥ ज० वी० ६ ॥ इम दिन शोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए आय ॥ ज० ॥ देव गुरु पूजा करै रे लाल, मन वंछित फल आय ॥ ज० ॥ नर सुर रिद्धि पिण जोगवे रे लाल, निश्चै मुगति जाय ॥ ज० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, यह च्यार कषायमें



अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलन ४, इस मुजब एकेक कपायके च्यार ष्ठेद करणोंसे १६ होते है, इनोको दूर कर एको प्रथम एकाशना १, निवि २, आंबिल ३, उपवास ४, इस अनुक्रमसे १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणसे यथा शक्ति उद्यापन करै ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरुके पास शुद्ध दिन पैतालीस आगमतप ग्रहण करै, २ दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रमसे उपवास वा एकाशना करै, जिस दिन जो आगमका तप होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणे, पढ़नेवालोंको साहाय करै, अपनी शक्ति मुजब सर्व ठिकाणे ज्ञानकी वृद्धि करै ( प्रणमुं श्रीगुरु पाय ) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणे, सो आगे लिखा है, ऐसे तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणसे पैतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगण चढ़ावै. इस तपस्याके करणसे मुखपणा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञानकी प्राप्ति होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

- |                             |                               |
|-----------------------------|-------------------------------|
| १ श्रीआचारांगजीसूत्रायनमः   | २ श्रीसुयगमांगजीसूत्रायनमः    |
| ३ श्रीवाणांगजीसूत्रायनमः    | ४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय०      |
| ५ श्रीजगवतीजीसूत्रायनमः     | ६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा०  |
| ७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा०     | ८ श्रीअंतगदशाजीसूत्रा०        |
| ९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा० | १० श्रीप्रश्नव्याकरणजीसूत्रा० |
| ११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥   |                               |

॥ अथ बारै उपांग नाम ॥

- |                         |                           |
|-------------------------|---------------------------|
| १ श्रीउववाइजीसूत्रायनमः | २ श्रीरायपसेणीजीसूत्रायन० |
|-------------------------|---------------------------|

- ३ श्रीजीवाग्निगमजीसूत्राय०      ४ श्रीपन्नवणाजीसूत्रायनमः  
 ५ श्रीजंबूद्वीपपन्नतीसूत्राय०      ६ श्रीचंदपन्नतीसूत्रायनमः  
 ७ श्रीसूरपन्नतीजीसूत्राय०      ८ श्रीकप्पियाजीसूत्रायनमः  
 ९ श्रीरूप्यवर्तिसियाजीसूत्राय०      १० श्रीपुष्पियाजीसूत्रायनमः  
 ११ श्रीपूष्पचूलियाजीसूत्राय०      १२ श्रीवन्दिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

- १ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः      २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः  
 ३ श्रीदसाश्रुतस्कंधजीसूत्राय०      ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः  
 ५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय०      ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयन्ना नाम गुणनो ॥

- १ चोसरणपयन्नाजीसूत्रायन०      २ संसारपयन्नाजीसूत्रायनमः  
 ३ श्रीतंडुलपयन्नाजीसूत्रायन०      ४ श्रीचंदाविज्ञियासूत्रायनमः  
 ५ श्रीगणविज्ञियासूत्रायनम०      ६ श्रीदैवविज्ञियासूत्रायनमः  
 ७ श्रीवीरशुबोजीसूत्रायनमः      ८ श्रीगन्धाचारजीसूत्रायनमः  
 ९ श्रीज्योतिष्करंजीसूत्राय०      १० श्रीमहापञ्चकाणजीसूत्राय०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

- १ श्रीआवश्यकजीसूत्रायनमः      २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०  
 ३ श्रीनुघनिर्युक्तीजीसूत्रायन०      ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्राय०  
 १ श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय०      २ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पैतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थपति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ  
 प्रकाशै गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति  
 रचै, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥  
 ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करै गणधार ॥ पंचांगी युत वि-  
 स्तारै, नय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ दुषम काल दुर्जिहसें, नूले धा-  
 रम अंग ॥ कंठ पाठसें लिखत कर, रचना रची अर्जंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आगम  
 लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषसैं अब मिलै, आगम  
 पैतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥  
 ( ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी ) ॥ आचारांग पहि-  
 लो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगमांग दूजोअठै जी,  
 पापंमी निरधार ॥ जगतगुरु ज्ञाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाणा  
 ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस ठत्तीस जल प्रश्नो  
 जी, जगवई अंग विद्वात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता ज्ञानी जी,  
 दस आवक व्रतधार ॥ दसानुपासक सातमो जी, अंग कह्यो निर-  
 धार ॥ ज० ३ ॥ अंतगरु केवली जे अया जी, वरणन अष्टम  
 अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अशुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥  
 अंगुष्ठादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल  
 ज्ञापिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अठार सहस आ-  
 चारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ण संख्याते पद हुवे जी,  
 ठाण डुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ नववाई उपांगमे जी, कोणिक  
 अंगरु रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांजल जविजन चूप ॥  
 ज० ७ ॥ सूरियांज पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ इय  
 ज्ञाव विहुं जेदसूं जी, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो  
 अजिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाजिगम तीजो कह्यो  
 जी, सुर कृत बहु विध ज्ञाव ॥ ज० ९ ॥ पन्नवणामें जाणज्यो  
 जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम अकी गुण  
 धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नत्तो विहुं जाण ॥ कप्पिवा  
 कप्पवमिसियाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया  
 जाणीये जी, वन्हिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिठाणज्यो  
 जी, सांजलता सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ ख्याली लाल

अणवट रंग लागो ॥ ए देशी ) ॥ वेदतणा प्रायश्चित्तनी जी, वेद ठए ए  
 जाण ॥ वृहत्कल्प विवहारमें जी, ज्ञाष्यो जगवंत ज्ञान ॥ सुज्ञा  
 नी लाल इणसुं नित राचो ॥ राचो२ रे ज्ञविक दिलदार, इणसुं  
 नित राचो ॥ सुज्ञा० १ ॥ महानिशीथे ज्ञाषियो जी, जिनपूजा  
 बिहुं जेद ॥ श्रावक इय्ये ज्ञावसूं जी, मुनिवर ज्ञाव जेमेद ॥ सु  
 ज्ञा० २ ॥ जीतकल्प वलि निसीत ठे जी, उर दशाश्रुतस्कंध ॥  
 दश पयज्ञा जाणिये जी, चौसरण संशार प्रबंध ॥ सु० ३ ॥ तंडु  
 लवयाली चंदाविज्जया, गणविद्या अज्जिधान ॥ देवविज्जया वीरभुवो  
 जी, गह्वाचार निधान ॥ सु० ४ ॥ ज्योतिकरंम, महा पञ्चस्काण  
 जी, च्यार सूत्रे मूल ॥ आवश्यक दशमीकालिक जी, उत्तरध्ययन  
 अमूल ॥ सु० ५ ॥ च्यारे अनुयोगे करी जी, रचना सूत्रे जाण ॥  
 तेह न्याय निक्षेपणी जी, अनुयोगद्वार प्रधान ॥ सू० ६ ॥ द्रव्यानु  
 जोग ठए द्रव्यनी जी, चर्चा विधि विस्तार ॥ चरण करण अनुयो  
 गमें जी, मुनि श्रावक आचार ॥ सू० ७ ॥ गणतानुयोग गणना  
 करी जी, पृथ्वी निरी विमाण ॥ वर्गमूल घनमूलणी जी, जाणो  
 चतुरसुजाण ॥ सु० ८ ॥ धर्मकथा अनुयोगमें जी, धर्मकथा दृष्टांत  
 ॥ ए च्यारों विस्तारीया जी, पेंतालीस सिद्धांत ॥ सु० ९ ॥ (ढाल  
 तीसरी ॥ सांगानेर विराजै ॥ ए देशी ) ॥ सुण२ गोतमवाणी,  
 इम वीर वदे गुणखाणी रे, ज्ञवियां आगमसुं मन लावो ॥ मन  
 कल्पित वात म गावो रे ॥ ज्ञ० आ० १ ॥ नंदीसूत्र चिरनंदो, यामें  
 पंचज्ञानने वंदो रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ ज्ञानना जेद वखाण्या, मति  
 अठावीसे आण्या रे ॥ ज्ञ० आ० २ ॥ श्रुत चवदे वीसां जेदे, ए मि  
 थ्यामतने ठेदे रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ अवधिष्ठ असंख्य प्रकारे, मनपर्य  
 व डुय जेद धारे रे ॥ ज्ञ० आ० ३ ॥ केवल एक प्रकारे, ए सब  
 विधि नंदी ज्ञासे रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ एतो सह आगमनी नूंद, स्या-

द्वाद गंगनी वूंद रे ॥ ज० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्त्ताने  
 नमूं निरञ्जीका रे ॥ ज० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअन्नय  
 देव बलिहारी रे ॥ ज० आ० ५ ॥ मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि  
 कने सिर नामी रे ॥ ज० आ० ॥ सामान्य विशेषे ज्ञाखी, निश्चय वि  
 वहार ठै साखी रे ॥ ज० आ० ६ ॥ उत्सर्ग वचन ठे केइ, अपवाद  
 वचनने लेइ रे ॥ ज० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंठित स  
 गला साधो रे ॥ ज० आ० ७ ॥ ( ढाल ४ ॥ मंगल कमला कंद ए  
 ॥ ए देशी ) ॥ पैतालीस आगमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो  
 हित जणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपथी कर्म  
 जाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति ठते उपवास ए, आंबिल निविथी उ  
 द्वास ए ॥ एकासण अथवा करै ए, इम पैतालीस दिन आचरे ए  
 ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक  
 मण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३ ॥ उजमणो  
 हित चित करै, गुरु शक्ति चित्तसुं आदरे ए ॥ शक्ति करै साहमीतणी  
 ए, जे पढय पढ़ावै ते जणी ए ॥ ४ ॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए,  
 तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमर्थ  
 लहै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ ( कलश ) शुभ नंद सर निधि चंद्र  
 बरषै माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर वीकानेर सुंदर बृहत्खरतर  
 गण घणे ॥ गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक रामगणि रुद्धिसार ए, इ  
 म करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयशकार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै, ११  
 दिन उपवास वा एकासणा करै, जिस दिन जो गणधर माहारा  
 जका तप दोय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोंका नाम गुणनो ॥

१ श्रीईश्वरतिगणधरायनमः २ श्रीअग्निभूतिगणधरायनमः

- ३ श्रीवायुज्जूतिगणधरायनमः      ४ श्रीव्यक्तज्जूतिगणधरायनमः  
 ५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय०      ६ श्रीमंसितस्वामीगणधराय०  
 ७ श्रीमोर्वपूत्रजीगणधरायननः      ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०  
 ९ श्रीअचलजीगणधरायनमः      १० श्रीमेतार्यजीगणधरायनमः  
 ११ श्रीप्रज्ञवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर जगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान द्वादसांगीके रचना करनेवाले ज्ञेये, इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै. गणधरपदकी आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होणेंसे गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी ज्ञक्ति करै, यथाशक्ति परमान्न भोजनसे सादमी बञ्चल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥

प्रथम ५ साधिया करै (नमंतसामंत) यह गाथा पढके शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियावही पम्किमे, एक लोगस्सका कानुसग्ग करै, पार कै प्रगट लोगस्स कहै, नीचा बैठके मुंहपत्ती पम्कि है, दो वांदणा देवै, स्थापनाजीको खमासमण देई (जगवान अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेहं) एसा कह चैत्यवंदन करै, एमो-नुणं इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्नबू० कह ४ थुई कहै, चौथी गाथा कहकै नीचा बैठके एमोनुणं कहै, फेर खमा होके (श्रीशांतिनाथस्वामी आराधनार्थ करेमिकानुसग्गं अन्नबू०) कहकै १ लोगस्सका कानुसग्ग करै, पार कै नमोर्हतसिद्धा० कहकै (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ स्वैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाञ्च-र्चितांहये ॥ १ ॥ यह थुई कहकै (शांतिदेवताआराधनार्थकरेमिका-नुसग्गं अन्नत्थु०) कहै, एकेक नवकाराका कानुसग्ग करै, थुई पढै. (शांतिःशांतिकरःश्रीमान्, शांतिदिशतुमेगुरुः ॥ शांतिरेवसदातेषा,



येषां शान्तिर्गृहे २ ॥१॥) पीठे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी नुवनदेवता-  
की स्तुति कान्तसग्न एकेक नवकारका करके अनुक्रमसें कहै. पीठे  
शासनदेवताका कान्तसग्न एक नवकारका करै (यापातिशासनं जैनं,  
सद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ साजिप्रेतसमृध्यर्थं, जूयाद्यासनदेवता ॥१॥ )  
पीठे समस्त वैयावृत्ति कर आराधनार्थं करैमि कान्तसग्न अन्ननु०  
एक नवकारका कान्तसग्न करै, पारकै (श्रीशक्रप्रमुखाय क्ता, जिन-  
शासनसंस्थिताः ॥ देवान् देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षंस्त्वपायतः) यह  
शुई कहकै नीचा बैठके नमोत्युगं कहै, जयविराय पर्यंत चैत्यवंदन  
करै. फेर खमासमण देके (जगवन् अमुक तप गहणत्वं करैमि  
कान्तसग्न) एक लोगस्तका कान्तसग्न करै, पार के प्रगट लोगस्त  
कहै, खमासमण देके ३ नवकार गुणो. फेर खमासमण देके  
(इत्तकार जगवन् अमुक तप ग्रहण दंरुक् उच्चरावो जी) गुरु कहै  
(उच्चरावेमो) पीठे (अहं जन्तुं तुह्याणं समीपे अमुकतवं न पसंपज्जा-  
त्ताणं विहरामि ॥ तं जहा दवन् कालन् जावन् दवन्तं अमुकतवं  
खित्तन्तं इत्तावा अन्नत्तवा कालन्तं जावपरिमाणं जावन्तं जाव-  
गहेणं न गहिज्जामि जाववलेणं न वलिज्जामि सन्निवाएणं न जविज्जामि  
जावअप्पेणवा केण श्रोणायंकादिपरिणामवसेण एसो मे परिणामो न प-  
रिवज्जइ तावमेएसतवो अन्नत्तरायाज्जियोगेणं गणाज्जियोगेणं बलाज्जि-  
योगेणं देवाज्जियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं अन्नत्थणाज्जोगेणं  
सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥)

जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ बेर यह  
पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो आपनाचार्यजी समकै तीन बार यह  
पाठ पढ़ै, पीठे गुरु कहै ( हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तडुत्तयेणं सम्मं-  
धारणीयं गुरुगुणेहिं बुद्धाहि नित्यारगपारगाहोहि ) एसो गुरु कहै.  
पीठे खमासमण देके गुरुमुखे पञ्चखाण करै अथवा गुरु नहि होय



तो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करै इरियावही पन्निक्कमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पन्निक्कहै २ वांदणा देवै ( इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तुप्पेअम्हं अमुक तप पारावेह ) गुरु कहे ( पारावेमो ) इच्छामिख-मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्कमणं करेमि काउसग्गं अन्नंभू० कहके १ नवकारका काउसग्ग करै, स्तु-तिकी गाथा कहै, पीठै एमोन्नूणं कहै, बैठकै जगवन् अमुक तप करतां अविधि आशातनायें करी जो कोइ दूषण लागो होय सो मन वचन कायायें कर मिच्छामिडुक्कं. और ज्ञानज्जत्ति डव्यसें जावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होणा. गुरु कहे ( नि-त्तासगपारगाहोह ) पीठै पच्चस्काण करै, अमुक तप आलोयण नि-मित्तं करेमि काउसग्गं अन्नंभू० कहके ४ लोगस्सका काउसग्ग करै, प्रगट लोगस्स कहै, पीठै उपगण पात्र जत्त पानादिकसें साधुज्ज-त्ति करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढ़ेवाले तथा पढ़ा-एवाले विद्यागुरुको जत्ति करै, साहमी वञ्चल करै, पहंरावणी करै, पीठै याचकोंका दानसन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, बैठी परखद बारजी ॥ अमृ-त वचन सुणी अति मीठा, पामे हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणोरे श्रावक उपधान वह्या विन, किम सुजै नवकार जी ॥ उत्त-राध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह ज्ञायो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २ ॥ महानिशीत सिद्धांत साहे पिल, उपधान तप विस्तार जी, अनु-क्रम सुद्ध परंपर दीसे, सुविहित गढ आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप उपधान वह्यां विन-किरिया, तुठ अलप फल जाण जी, जे

उपधान वंहां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 तप उपधान कह्यो सिद्धांने, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-  
 नी आण विराधै, जमस्यै जव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अथज्या  
 घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता  
 आदेश निरदेश, काम सरै नहि कोय जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ इक धेवरने  
 खांमे जरियो, अतिघणो मीठो आय जी ॥ एक श्रावक उपधान वेह  
 तो, धन२ ते कहिवाय जी ॥ सु० ॥ ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो  
 तप पहिलो वीसम जाण, इरियावहीनो तप बीजो वीस  
 म आण ॥ इण बिहुं उपधाने निश्चै नाण मंमाण, बारे उपवासै  
 गुरु मुख बे बे वाण ॥ ८ ॥ पैत्रोसम त्रीजो एमोवुणं उपधान,  
 त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चो  
 थो चोकम एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ए ॥ पांचमो  
 लोगस्त तप अठावीसम नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रि  
 ण ठाम ॥ पुस्करवरदी तप बढो ठक्कम सार, साढात्रण उपवासे  
 वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ निहाणंबुद्धाणं सातमो उपधान म  
 ल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै वलि  
 गुरुमुख सरस रसाल, गच्छनायक पामै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥  
 माल पहरण अवसर आणी मन उग्रंग, घर सारू वारू खरचै धन  
 बहु जंग ॥ अति उच्चव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवा  
 वै पावै अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान,  
 विधिसों जे वडै, ते सूधी किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद,  
 जीव जतन करइ, पूंजि२ पगलां जरै ए ॥ १३ ॥ न करै  
 क्रोध कषाय, हरु२ हसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥  
 नाणे घरनो मोह, उत्कृष्टी करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥  
 पहुर सीम सिझाय, करि पोरसि जणी, जंचै स्वर बोलै नही ए ॥

मन माँहै जावै एम, धनर ए दिन, नरनव माहि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती वहै, पहिरै माल सोहामणी ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अति-  
घणी ए ॥ १६ ॥ परनव पामे रुद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध  
नाटक पमै ए ॥ लाजै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती  
पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ ( कलश ) इम वीर जिनवर जुवन  
दिनयर माता त्रिसला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम जवि-  
य जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनी  
सरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर जणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥  
इति सात उपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्याह्न समे सु-  
हागणस्त्री चांदी आदिके आलके अंदर कुंकुमका साधिया करकै  
ऊपर चावलोंका करै, पांच सुपारी १ नालेर धरकै माला पधराके  
सुहागणस्त्री अपणें हाथसैं सिर पर धरै, पीठै सब संघ समेत गीत  
गाते वाजित्र वाजते गुरु पास आवै, संघवस्त्री गुंढली करै, उर  
स्त्रियां गुंढली गावै, पीठै गुरु उर्ध्व साससैं वर्द्धमान विद्यासैं मंत्रकर  
वासकेपसैं माला प्रतिष्ठित करै. यथा ॥ उँह्रीणमोअरिहंताणं ।  
उँह्रीणमोसिद्धाणं । उँह्रीणमोआयरियाणं । उँह्रीणमोउवज्ञायाणं ।  
उँह्रीणमोलोएसवसाहूणं । उँह्रीणमोअरहन्त जगवन्त वर्द्धमाणसा-  
मिस्त ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सबेसिद्धिए उँ ह्रीं वः वः वः  
स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीठै वाजित्र वाजते स्वस्थानके  
आवै, बाजोट पर आल रस्कै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै,  
श्रीफलादिककी प्रज्ञावना करै, पीठै मालाग्राहक प्रज्ञात समे प्रति-  
क्रमण करकै पमिलेहण देववंदनादि करकै जिनपूजा करै. पीठै

मुहुर्तकी वखत वाजित्रादि उच्चव संघ समेत गुरु पास आवैं, पाच श्रीफल रोक इव्य हाथमें लेके पहले जो नांदकी थापना करी दे- नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वनी ठवणी पर मोलीसे लपेटके थापे सो उस नांदके च्यारों खूणो पर च्यार साधिया कुंकुं उर चावलोका करके नारेल उर रोक मोहर वगेरे जेट करै. साधि- यों पर अछे विदामादि फल चढ़ावै. पीठे मालाआहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरुके संग इरियावही पम्किमे. पीठे आवक खमासमण देके आवकमुहपत्ती पम्किदे, फेर खमासमण देके इच्छाकारजगवन् तुझे अम्मं संघपति मालाआरोहावणि देववंदा मणि वासनिकेप करो. तब गुरु वासकेप करै. पीठे फेर खमास मण देई तुझे अहं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेह, आवक इच्छं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम खमासमण देके इच्छा ० जगवन् चैत्यवंदन करूं. गुरु कहे करेह. पीठे गुरु चैत्यवंदन बोलै. आवक एमोबुणं कहे अरिहंत चैदयाणं ० कहके एक नवकारका काजसग करै, नमोईत्सिद्धा ० कहके गुरु स्तुति कहै. यथा ॥ अहंतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोतरैः । अप्पेडीसकला त्रेदि । रहंसासदसोच्यते ॥ १ ॥ पीठे लोगस्सज्जो ० सबलोए ० वंदणव ० अन्नबु ० कहके १ नवकारका ० स्तुति कहै. उमितिमंतायं । शासनस्यनतासदायदंहीच । आश्रियंतेश्रियांते । जवतो ० जिनायातु ॥ २ ॥ पीठे पुस्करवर ० वंदन ० कहके १ नवकारका ० स्तुति कहै. नवतस्वयुतात्रिपदी । मिश्रेतारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकी र्तिविद्या । नद्यास्याज्जैनगीजीयात् ॥ ३ ॥ पीठे सिद्धाणंबुद्धाणं ० त तः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काजसगं वंदणव ० अन्नबु ० कहके एक लोगस्सका काजसग करै, नमोईत् ० स्तुति कहै ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदा ।  
 सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं०  
 एक नवकारका० पारके नमोर्हत्सि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजो  
 पांगासदास्फुरदुपांगा । जवतादनुपहतमहा । नमोपदाद्वादसांगीव ॥  
 ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काजसगं अन्नबु० कहके  
 १ नवकारका० नमोर्हत्सि० ॥ वदवदतीवागवादनी । जगवतिकःश्रु  
 तगमेबु । रंगसरंगमितिबर । तरणीस्तुज्यंनमइतिहः ॥ ६ ॥ ततः  
 शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नबु० १ नवकारका० स्तुति॥  
 उपसर्गविलयवियन । निरत्तीजिनशासनावनैकरता । हृतमिहसमिदी-  
 तत्कृते । स्युशासनेदेवताजवतु ॥ ७ ॥ पीठै समस्त वेयावच्चकरा-  
 णं शंतिकराणं सम्मदिदिसमाहिकराणं अन्नबु० १ नवकारका का-  
 जसग स्तुति० ॥ संघत्रयेगुरुगुणोधिनिधोसुवैया । ब्रत्यादिकृत्यकरणैक  
 निवदकृदा । तैशांतयेसहजवंतुसुरासुरीजिः । सधृष्टयोनिखिलविघ्न  
 विघातदका ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोबूणं जावतिचे०  
 नमोर्हत्सि० कहकै स्तवन कहै ॥ नमिति नमो जगवतु । अरिहंत  
 सिद्धाचारियजवजाए । वरसवसाहूमुणिसंघ । धम्मतिज्यप्रवयण  
 स्स ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतहजगवइ । सुयदेवयाइसुहयाए । सिव  
 संतिदेवयाय । सिपवयणवदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमनेरइया ।  
 वरुणोवायुकुवेरईसाणा । वंजोनागुत्तिइशम । मवियसुदिसाणपाला  
 ण ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासवाणंतहयपंचण्हं । तहलोगपा-  
 लियाणं । सुराई गहाणयनवन्हं ॥ ४ ॥ साइंतस्ससमरकं । मझमिणंचेव-  
 धम्मणुठाणं । सिद्धिमविग्धंगज्जु । जिणाणंनवकारनंजणियं ॥ ५ ॥ इति  
 स्तवनं ॥ जयवीराय कहै पीठै जगवान आगे पढदा करके मालाआह  
 क गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनार्थे वांदि, पीठै खमा होके कहै इच्छकार  
 ज० तुझे अहं संघपति मालाआरोदावणी उदेसावणी नंदीसुव

संज्ञलावणी कान्तसग्न करावो, गुरु कहे करेह, इहं, संघपतिमाला  
 आरो० उदे० करेमि कान्तसग्नं अन्ननु० कहके ? लोगस्तका का०  
 प्रगट लोगस्त कहे, गुरुजी कान्तसग्न करै, पीवै मालाग्राहक स्वमा  
 समण देई इच्छाकार जगवन् नंदीसूत्र संज्ञलावो, तब गुरु स्वमा  
 होकर हाथमें वासक्षेप लेके तीन नवकार सुणावै, नित्यारगपार  
 गाहोह कहके मस्तक पर वासक्षेप करै, पीवै श्रावक स्वमासमण  
 देके इच्छा० संघपति माला उदेसनं, गुरु कहे उदेसनं, फेर श्रावक  
 इच्छामि० इच्छाका० किंजणामी, गुरु कहे वंदित्तापधेह, स्वमासमण देके  
 इहं तुह्ये अहं संघपति मालाउदिनं इच्छामो अणुसद्धिं, उदिद्वि२ स्व  
 मासमणां हत्येणं सुत्तेणं अत्येणं तडुजयेणं जोगकरीजाहि गुरु  
 गुणबुद्धीजाहि नित्यारगपारगाहोह, फेर स्वमासमण देई तुह्याणं  
 पवेइए संदिसह साहुणंपवेमी, गुरु कहे पवेह, पीवै स्वमासमण  
 देके तीन नवकार गुणता जया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासक्षेप  
 चढावै, गुरु ? प्रदक्षिणा देवे, पीवै मालाग्राहक गूहपत्नी ५ मिलेहै,  
 स्वमासमण देके इच्छाका० तुह्याणंपवेइयं संदिसहजगवन् कान्तसग्नं  
 करेमी इच्छामी० इच्छाका० जगवन् तुह्ये अहं संघपति माला उदे  
 सामणी आरोहावणी करेमिकान्तसग्नं अन्ननु० कहके ? लोगस्तको  
 कान्तसग्न प्रगट लोगस्त कहै पीवै स्वमासमण देके वेसणो संदिसानं,  
 हुजै स्वमासणो वेसणो वानं, पीवै स्वमासमण देके जो विधि करतां  
 अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायार्थ करी मि०  
 इति नांदकी क्रिया ॥ पीवै मालाग्राहक जगवानके नव अंग नव रु-  
 पिया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करै, मुहुर्त्तकी वखत मंदरजीके  
 बाहिर जमीन खुली होय तो जगवानके सनमुख सर्व संघ आवके  
 स्वमा रहे, पीवै मालाग्राहक गुरुके पास आके नव अंग पूजा करे, नव  
 रूपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्ते जेट धरै, पीवै गुरु उर्ध्वग्यासे माला



हाथमें लेके ७ नवकार गुणै, पीठै जो माला पहिरावै जिसको माला पहिरावेवाला यथाशक्ति पहिरामणी करै. माला पहिरावेवाला उर्ध्व-श्वासै करी संघपतिकों माला पहिरावै, दोनुं जणें ८ दिन तक सच्चित्त कुशीलादिकका गुरु पास पञ्चखाण करै, पीठै मंदरजी पर चढ़ाणे-की धजा सो संघपति आत्ममें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्रदक्षणा देकर गुरु पास वासकेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर चढ़ावै, पीठै सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवै, साधर्मी वात्स-ल्य करै ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुठ तो शास्त्रोके लिखतसैं कुठएक दे-देखणेमें आई जो परंपरा सो लिखते हैं ॥ उपधानवाला श्रावक विगयोमेंसैं एक घीहीज लेता हे नुर विकृती नहीं लेता १, उप-धानमें तीस विगयोंकी नीवीतोंमेंसैं एकही नीवीता लेणा का-रणयोगसैं खांरु वगेरे लेणेकी जयणा २, नुत्कट डव्यादिक नही लेणा ३, घी तेलका वधारया साग ज़ी नहीं लेणा धूंगारया हुवा लेणा ४, हरासाग नीलोती नहि लेणा ५, तलाहुवा पापन सीरा वमे वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरषणैवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसैं स्त्री शुद्ध होती है अन्यथा नही ७, अन्न पुरषणैवाली स्त्री फटावस्त्र अथवा कारीलगावस्त्र नहि पहरे ८, जोजन करणेकी जगा ऊरू वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित्त करै अखंमित वस्त्र रखे तो शुद्ध ९, जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रखे हैं वो सब जोगाजोगकी दोनों वखत पमिलेहणा करणी १०, जीमणके ठिकाणे जो जो आली कटोरा वगेरे रखेहे वो सब जोजन करे जिस दिन पादोनपोरसीमें पमिलेहणाकी वखतही पमिलेहणा इसरी वखत अन्यदा नही ११, कदाचित् हार कुंरुल, दिक गहणा अपणे



शरीरसे उतारके अपने धरादिकमें रखा होय तब विना उपधान-  
 वाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसे  
 रातका दिनका नही वह उपधानवाहीकूं देवै उर वोही स्त्री प्रज्ञात  
 समें उनके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवै १२, उपधानमें सर्व वस्त्र  
 आप अथवा मालकणके हाथसे पमिलेह्यां शुद्ध होय १३, सब  
 क्रिया अनुष्ठानादिक आदेस निर्देसादिक मालकणके आदेससे शुद्ध  
 होय १४, क्रिया अनुष्ठानकी करणवाली मालकण जी दोनुं वस्त्र  
 पमिकमण करै रात्री आयश्चित करै सात बेर देव वांछे तब शुद्ध  
 होय अन्यथा नही १५, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नही गिणे  
 जाय १६, महास्वध्याय संबंधी आसौज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी  
 सातम आठम नवम दिन तीन तपस्यामें नही गिणे जाय १७,  
 प्रतिक्रमणमें प्रज्ञात समें नवकारसीकाही पंचस्काण करै पीठे  
 क्रिया करती वस्त्रत गुरुके पास उपवास १ अथवा आंबिल  
 २ नीवी ३ अथवा एकासलोका ४ करै १८, पंचस्काण पारती  
 वस्त्रत पहली नवकारसी परै पीठे उपवासादिक पारै १९, पहले  
 दो उपधान तप ग्रहण करणोके दोनों दिन नंदीके आंखरसे देरी  
 हो जाती हे इस वास्ते अठपहरी पोसा वण नहि आता इस  
 वास्ते तीसरे पहरकी पमिलेहण किये बाद सर्वोपगरणोकूं पमि-  
 लेहके रातकूं निश्चै पोसा लेगा २०, प्रज्ञातसमें उपधानवाही गुरु-  
 के पास आयके इरियावही पमिलेहके पोषय वपुन सामायक लेके  
 वस्त्र पमिलेहणा उर अंग पमिलेहणा करै, पीठे मुहपत्ती पमिले-  
 हके (नहीपमिलेहणसंदिस्तानं नहीपमिलेहणकरूं) ऐसे खमासण  
 होय देवे पीठे ठव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवै उसका  
 क्रम ऐसे हे बहुवेलंसंदिस्तानं १ बहुवेलंकं वैतणोसंदि० वैतणो-  
 गानं० सिझायसं० सिझायक० पांगरणोसं० पांगरणोपमिगहुं

कहासणोसं० कहासणोपनिगहूं) एवं१० ॥ ११, पीठै वंदन दिया बाद सुख तप पूजा २२, सांजकूं ज़ी यही क्रिया करणी लेकिन इतना विशेष हे पट पन्निहणा नर अंग पन्निहणा तो करै परंतु उपधि पन्निहण नही करै, पीठै गुरुवंदन ठव दिये बाद स्वमासमण दस देवै (नहीपन्निहणसंदिस्सा० नहीपन्निहणकरूं सिज्जायसं० सिज्जायक० वैसणोसंदिस्सा० वैसणोठाउं) बाकी पहलीकी तरै २२, न्यारा पन्निहणा होणैसैं पाकीवंदना सुखतपपूजना पर्यंत क्रिया सब करेदेना १३, माला पहरणैसैं सांजकूं माला मंत्रायके अपने घर रात्रीजागरण करै प्रज्ञातसमें आचार्य पास माला पहरणी तिसके बाद दिन दश तक दशाहिका करणी उहां पोसा नही लिया हुआ ज़ी हे तो ज़ी तिविहार एकासणा करताजया निरा-रंजी होकर रहै २४, सज्जी उपधान उत्कृष्ट विधिसें वहना, उसके अज्ञावमें श्रावक एकांतर उपवास नर साधुओंने उपवास आमल निवी एकासणा करै नतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन दिन संख्याका नियम नहीं हे ॥ इति नित्यकर्तव्यता समयसुंदरो-पाध्याय कृत संस्कृतोपरिअस्मद् कृत ज्ञाषा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान वहणेवाला बारे उपवाश अथवा चोवीस आंबिल ३५ नीवी अमृतालीस एकासणा करके ११ उपवासकी पैठ पूर कर पीठै पांच अध्ययनकी वाचना नमो अरिहंताणसैं लेके नमो लोएसवसाहूणं तककी १ वाचना एक दिनमें लेवे, तिसके बाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमो-कारो १, सवपावप्पणासणो २, मंगलाणंचसवोसिं पढमंहवइमंगल ॥ एवं ३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आठ अध्ययनोंकी एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो ठवतो आंबिल करै,

फेर तैला करै, तैलेके पारणे आंबिल करै, फेर तैला करै, फेर आंबिल करै, फेर तैला कर पारणा करके आठ अध्ययनोकी एकही दिनमें वाचना लेवे. आठ आंबिल ३ तीन तैला मिलाएसे उपवास १९ ज्ञये. यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविधिसें करे तो पोसा २० वीस करै उपवास १९ करै, विधिसुं वहे तो १६ पोसा उपवास १२॥ यह पहिला वीसमत्तप २०॥ अब दूसरा इरियावह्नीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें नी आंगलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीठै इच्छाकारेणसंदिस्सहसुं लेकर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेदियासें लेकर ठामिकाउसगं तक दूसरी वाचना देणी, उर एकही वाचना लेणी होय तो पहली तरे आठ आंबिल ३ तैला करके लेवै ॥ इरियावहिया श्रुतस्कंधका तप वीसम नामका अविधिसें पोसा २० उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२ ॥ ॥ अब तीसरा जावारिहतका तीसरा उपधान उगणीस उपवासकी पैठपूरकर वाचना ३ लेवे सो इस मुजब. पहली १ तैला करै पीठै नमोनुणसे लेकर गंधहठीणं तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६ आंबिल करै, लोगुत्तमाणसे लेकर धम्मवरचानरतचक्रवट्टीणं तक दूसरी वाचना लेवै २, पीठै सोले आंबिल करके अप्पन्दिहयवरणाणसे लेकर सबेतिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३. यह तीसरा उपधान नमोनुणका पैत्रीत्तम नामका जिसमें उपवास १९ विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविधिसुं करता पोसा उपवास ॥ ॥ अब चौथा स्थापना अरिहत श्रुतस्कंधका उपधान अध्ययन तीन, जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंबिल तीन करै, अरिहतचेइयाणं इहांसे लेकर वंदणवत्तियाए अन्नउत्तसीएणं अप्पाणं वोसिरामि तक १ वाचना लेणी. यह आपनारिहतका

चौथा उपधान चतुर्कर्म नामका जिसमें पोसा ४ उपवास १॥  
अठारह ॥ ॥ नामारिहत चतुर्वीसत्येका पहले तेलो करै, पीठे  
लोगस्तनजोयगरे इहांसे लेके चतुर्वीसंपिकेवली तक पहली वाचना  
लेवै, फेर बारे आंबिल करके नसज्जमजियंचवंदे इहांसे लेकर पास  
तद्वद्वमाणंच तक दूसरी वाचना देणी, फेर तैरे आंबिल करके एवम  
एअजित्युआसे लेकर सिद्धासिद्धिममदिसंतु तक तीसरी वाचना  
लेवै. ए नामारिहत चतुर्वीसत्येका अठावीसमनाम तप विधिसुं व-  
हतां दिन २० पोसा २० उपवास साढापनरे एकांतर करै, अवि-  
धि करता दिन अठारहस पोसा २० उपवास साढासंतरै ॥ ५ ॥

सुत्रार्थश्रुतस्कंध पहली १ उपवास पीठे ५ आंबिल पीठे पुरकर-  
वरदीवट्टेसैं लेकर सुयस्सज्जगवउकरेमिकाउसगं तक एक वाचना  
देणी. यह ठठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम ठक्कन पोसा ६ उपवास  
साढातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान  
पोसह समेत चोविदार उपवास १ करै, पीठे सिद्धाणंबुद्धाणंसैं ले-  
के तारेइनरिंवनारिंवा तक एक वाचना देणी. यह सातमा उपधान  
माढाका तप ॥ ७ ॥

॥ अब उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब वहीत आवक अथवा वहीत आवकएया उपधान  
वहे तब तो संघके नामसे चंद्रमा अछा देखेणा, संघकी कुंजरासा  
हे, अगर एक आवक अथवा एकही आवकणी उपधान वहे तो  
अपणे नामसे चंद्रबल लेवै तथा उपधानवाही सांझकुं वाचनाचार्य  
के पास आयके इरियावही पनिकमके खमासमण देके कहे (अमुक  
उपधान तपे पवेसह) गुरु कहे (पवैसामो, नवकारती करणा अंग  
पमिलेइण संदिस्साणा) तब उपधानवाही कहे (तद्वत्ति) इहां इमा  
श्रमण दिथे वाद चोवीदार करै, चाहेपाणी पीवै वा अथवा जोजन

करो व्यवस्था नहीं है, अथ किसी ज़ी कारण करके सांजकूँ खमा-  
सण नहीं दिया होय तो तब पम्कमणके वखतसे पहली पिठली  
रातकूँ ज़ी खमासण देणा काल वखत पम्कमणा करणा नवका-  
रसीका पञ्चस्काण मालकण पास करणा पीठै सूर्य उदय जये वाद  
वाचनाचार्य पास आणा. तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके नुर  
इरियावहीके) तो प्रारंभमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी नुर  
उत्क्षेप ज़ी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा. इस उपरांत  
बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नहीं हे. तिसके बाद प्रज्ञातसमें  
पहले उत्क्षेप करणा, तिसके बाद पोसा सामायक लेणा, पीठै  
दो वांदणा देके पञ्चस्काण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप  
पूछा वांदणा दोय देवै ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावही पम्कमके मूहपत्ती पम्लेहके दो वांद-  
णा देवे, खमासण देके उपधानवाही कहे (पहले उपधानमें पंच  
मंगल महासुयस्कंध तवंउस्किवह) गुरु कहै (उस्किवामो) पहले पंच  
मंगलउपधान महाश्रुतकंध उस्केवावणियं नंदीपवेसावणियं कानसगं  
करावेह, गुरु कहै करावेमो. पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध  
उस्केवावणियं नंदिपेवसावणियं करेमिकानसगं अन्नउससिएणं इ-  
त्यादि कानसगमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चितवै, पार के प्रगट लोगस्स  
कहे, पीठै खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उस्के  
वावणियं चेश्याइवंदावेह, गुरु कहै वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, गु-  
रु कहै करेमो. पीठै वासक्षेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करै. ऐसे सर्व  
उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना. इतना विशेष हे पहले दो उपधानों  
का उत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी उपधानोंके विषे सो जब नंदी  
होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नहीं थापे तो प्रातसमे प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन जो जो उपधान वहे उसका ना-  
मोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांजकूं पहिले चोविहारका पञ्चकाण कर इरियावही  
पम्किमके मुहपत्ती पम्लिहके दो वांदणा देवै पहले उपधान पंच  
मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि का  
उसगं अन्नतू० कहके काउसग सागरवरगंजोरा तक लोगस्स विचारे,  
पार के प्रगट लोगस्स कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेणसंदिस्सह प  
हिले उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइ वं-  
दावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, करावेमो. पीठै गुरु  
वासक्षेप करै, पीठै चैत्यवंदन करै, पीठै खमासण देके उपधानवा-  
ही दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ठांककर अर्द्धवनतगात्री होयके  
वार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिच्चामिडुक्कमं  
एसें सब जगे वाचनान्जिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनकों सांजकूं  
चोविहार करके अथवा प्रज्ञातसमें इरियावही पम्किमके मुहपत्ती  
पम्लिहके दो वांदणा देके उपधानतपवाही कहै-इच्छाकारेण तुप्पे  
अम्हं अमुक तवंनिस्सिवह, गुरु कहे निस्सिवामो. फेर खमासण  
देके कहै-इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्सिवणत्तं का  
उसगं करावेह, गुरु कहे करावेमो. इच्छामि० अमुक तप निस्सिवणत्तं  
करेमि काउसगं अन्नतू० कहके एक नवकारका काउसग करके  
खमासण देवै, अमुक तप निस्सिवणत्तं चेइयाइ वंदावेह. वंदावेमो  
गुरु कहै. पीठै संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधि ॥

॥ अथ पडिपुन्ना विगव पारण विधि लिख्यते ॥

प्रज्ञातसमें गुरुके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण किया इस



वास्ते मुहपत्ती पन्धिलेहके वंदन ठव देवे ( दो वांदणा देवै इस कूं  
ठव वंदन कहतै हे ) गुरुके साथ पन्धिकमणा कीया होय तो वा-  
दिणा दोयही देवै, पीठै गुरु कहे पवेयणं पवेह एसा कहके कहे प  
रुपुणोविगयपारणयंकरेहत्ति, पीठै अपणी इच्छानुसार पञ्चस्काण-  
करै पीठै गुरुके सामने कहे उपधानमें अन्नक्ति आसातेना करी  
होय तस्स मिच्छामिउक्कमं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रज्ञातसमें गुरु पास आयके गुरुकी  
आज्ञासैं इरियावही पन्धिकमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक  
लेके दोय खमासणपूर्वक पन्धिलेहणा ठर अंगपन्धिलेहणा करै, पीठै  
मुहपत्ती पन्धिलेहके पहिले खमासणसैं नहीपन्धिलेहणसंदिस्साएमि,  
दूसरी खमासण देके नहीपन्धिलेहणकरूं, पीठै मुहपत्ती पन्धिलेहके गु-  
रु कूं ठव वंदन देवै पीठै गुरु कहे—पवेयणं पवेयह, उपधानवाही कहे,  
इच्छाप अमुक उपधान निमित्त निरुद्वंवातवंकरावेह, गुरु कहे उप-  
धासे आंवले निरुदेति एकाशणे, एसा कहे, पीठै दश खमासणसैं  
अनुक्रमसैं कहे—बहुवेलंसंदिस्सावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, वइसणं  
संदिस्सावेमि ३, वइसणं ठाएमि ४, सज्जायंसंदिस्साएमि ५, सज्जा-  
यंकरेमि ६, पांगरणोसंदिसाउं ७, पांगरणोपनिग्गहूं ८, कठासणो-  
संदिस्साउं ९, कठासणोपनिग्गहूं १०, पीठै मुहपत्ती पन्धिलेहके दो  
वांदणा देवै, गुरु कहे सुखत्तप, उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥  
इति प्रज्ञात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पन्धिलेहणा जये वाद  
स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसैं इरियावही पन्धिकमके पहिले  
खमासणसैं पन्धिलेहण करूं १, दूसरी खमासणसैं पोसहसाला  
प्रमाज्जु २, एसा कहके मुहपत्ती पन्धिलेहे, एसैं दो खमासण देणे-  
पूर्वक अंग पन्धिलेहणा ठर मुहपत्ती पन्धिलेहे, इहां अंग शब्द करके



कटिपट्ट ( अर्थात् कणधोरा जाणना ) ऐसा गीतार्थ कहते हैं. पीठे वसति प्रमार्जकर तहां जो नसही दिन नोजन कीया होय तब तो पहेरे वस्त्र पमिलेहे, बाकाके अवशेष वस्त्र नहीं पमिलेहे, जो नस दिन उपवास होय तब तो एकत्री वस्त्र नहीं पमिलेहे. पीठे गुरु पास आयके इरियावही पमिकनके पमिलेहणा १, अंगपमिलेहणा २, फेर गुरूके सामने केर. पीठे सिझायसंदिस्साएमि सिझायंकरेमि आठ नवकारं गुणे. पीठे मुहपत्ती पमिलेहके ठव वांदणा देवै. पीठे त्रिविहार अथवा चोविहारका पञ्चस्काण कर दस स्वमा सण अनुक्रमसें इस मुजब देवे—उहीपमिलेहणसंदिस्सानं १, उही पमिलेहणकरं २, सिझायसंदिस्सानं ३, सिझायकरं ४, बइसणो संदिस्सानं ५, वैसणोठानं ६, कंठासणोसंदिस्सानं ७, कंठासणोपमिगहुं ८, पांगरणोसंदिस्सानं ९, पांगरणोपमिगहुं १०. पीठे मुहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूठै, पीठे सर्वोपगरण पमिलेहे, मातृका ( पालसिया ) प्रमुख पमिलेहै, तथा जिस दिन नोजन करै नस दिन पूण पहरकी पमिलेहणकी वखत थाली कंठोरादिक सर्व उपनोगके पात्रादिक पमिलेहै, उपवासके दिन नहीं पमिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपमिकमणामें असिझाईका कानसग नही करे तो आवंती परकी तक सर्व सिद्धांतकी असिझाई होय, इरियावहीका पाठ त्री गुण्यां नहीं सूजै. इस वास्ते असिझाईमें त्री असिझाईका कानसग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागर चंडगणिकूं पूठा तब एसाही जबाब दिया योगारंजकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंजमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडधुवचरक्षिपेः । वारेनोमं शनिंविना ॥ आद्याटनंतपोनंद्या । लोचनादिसुजं २ ॥ १ ॥ इति

आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपधान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपन्नासं । अठारसअसणम्मिपमिलेहा ॥ दंढे  
पत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअमा ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरु  
कंबलतइयचेवसंथारे ॥ कढासणेअठारस । जपेदंढेअपंचेव ॥ २ ॥ इति ॥  
प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणउववासायाम । अठयंकुणहअठमंअंते ॥  
नवकारउवहाणं । इत्तियमित्तंइरियाए ॥ १ ॥ सक्कठयंमितहएगं ।  
अठमंअंविळाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइयठए । चउत्थमायामतियगं  
अ ॥ २ ॥ चउवीसठएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण  
ठयंमिचउठं । आयामापंचउवहाणं ॥ ३ ॥ चउवीसंउववासा । ए  
गासीअंविळाणसवंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । मुवहाणेसुजाणेसु ॥  
४ ॥ आरसवारसएगो, पणवीसअठ्ठाइपाणपन्नरस ॥ अठयउववासा  
। सवंगंसठ्ठचउसठ्ठी ॥ ५ ॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमठ्ठअवठ्ठएगडु  
जंतेहिं ॥ इगढाणयनिविगई । विलेहिंअठंवेलेणंच ॥ ६ ॥ पणया  
लाचउवीसं । सोलसचउइहिअठहिकमेणं ॥ चउइडुहियणेणय ।  
आयरणादोइउववासे ॥ ७ ॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ रुषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम २४ तीर्थकरोंके नामकी चिठियां लिखके बीच मं-  
दलमें २४ कोठोंमें धरे, इति चतुर्विंशति तीर्थकराः ह्रीं नमः १ कों-  
नमः बबबबबबबबबबबबबबबब १, बबबबबबबबबबबबबबबब २, बबबब-  
बबबबबबबबबबबबबबबबबबबब ३, बबबबबबबबबबबबबबबबबबबबब ४, उँ ह्रीं अर्हज्योनमः  
उँ ह्रीं सिद्धेज्योनमः उँ ह्रीं आचार्येज्योनमः उँ ह्रीं उपाध्यायेज्योनमः  
उँ ह्रीं सर्वसाधुज्योनमः उँ ह्रीं ज्ञानेज्योनमः उँ ह्रीं दर्शनेज्योनमः उँ हः  
चारित्र्येज्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १ ॥ दूसरी वलयमें दश दिग-  
पालोंके नामकी दस चिठी दश कोठोंमें धरे ॥ इति द्वितीय वलय २ ॥

तीसरी वलयमें नव ग्रहोंके नामकी नव कोठेमें नव चिह्नियां ॥ इति  
 तृतीय वलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोले स्वर उकारादिक  
 तेतीस वर्ण इंद्रजुति आदि इग्यारे गणधरोके नाम नुँही युक्त लि-  
 खे. पीठे अमृतालीश लब्धिपद नुँही अर्द्ध एसा आदिमें देकर लिखे  
 ॥ अमृतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंमलपूजामें लिखे हे उस  
 मुजब लिखे. पीठे चोवीस तीर्थकरोके पिता नुँनाजयेनमः १ इ-  
 त्यादि लिखे. पीठे नुँमरुदेवायैनमः इत्यादि चोवीस तीर्थकरोके  
 माताका नाम लिखे ॥ पीठे नुँह्रियैनमः १, नुँश्रियैनमः २, नुँधृत्यै-  
 नमः ३, नुँलक्ष्म्यैनमः ४, नुँगोर्त्यैनमः ५, नुँचंम्यैनमः ६, नुँसरस्व-  
 र्यैनमः ७, नुँजयायैनमः ८, नुँअंवायैनमः ९, नुँविजयायैनमः  
 १०, नुँक्लिन्नयैनमः ११, नुँअजितायैनमः १२, नुँनित्यायैनमः १३,  
 नुँमदद्रवायैनमः १४, नुँकामांगायनमः १५, नुँकामबाणायैनमः  
 १६, नुँसानंदायनमः १७, नुँनंदमालियेनमः १८, नुँमायात्यैनमः  
 १९, नुँमायावित्यैनमः २०, नुँरौज्यैनमः २१, नुँकालायैनमः २२,  
 नुँकाल्यैनमः २३, नुँकालप्रियायैनमः २४. एसें श्रीदेव्यादि चोवी-  
 सोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष नर २४ यक्ष-  
 णीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीठे  
 नव निधानोंके नाम लिखे, फेर चोसठ इंद्रोंके नाम लिखे. पहली  
 वीशस्थानक मंमलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके  
 अष्ट सिद्धिका नाम लिखे नुँअणिमसिद्धयेनमः १, नुँगरिमसिद्धये-  
 नमः २, नुँलघिमसिद्धियैनमः ३, नुँप्राकास्यसिद्धयेनमः ४, नुँमहि-  
 मसिद्धियैनमः ५, नुँईसित्वसिद्धयेनमः ६, नुँविसित्वसिद्धयेनमः  
 ७, नुँप्राप्तसिद्धयेनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ नुँश्रीधरणे  
 डेरकृतुः १, श्रीपद्मावतीरकृतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवै-  
 रोव्यारकृतु ४. इति श्रीरुषिमंमल पूजन विधि संपूर्ण. इण पदोंमें

द्रव्य नवपदमंमल वीस स्थानक मंमलपूजा मुजब चढ़ावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुभ दिन शुभ मुहूर्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावै, आगे पंचपरमेष्ठीपट्ट स्थापन करै तथा जगवनाके दहिणे पासे दश दिग्पालपट्ट उर बांधे पासे नव ग्रह का पट्ट स्थापन करै, पीछे एक वस्त्र एक गेटा मट्टीआदिकका हंसा ऊपर खन्नी सपेदमट्टी पोतके चार२ केसर कुंकू का साधिया करै, पीछे उंची नीची दोय टिवची काठकी धरावै, नीची टिवची पर मोटा हंसा धरै, उंची पर गेटा हंसा धरै, गेटे हंसेके तले एक बिड़ करै, दोनुं मट्टकाके अंदर साधिया करै, वस्त्रे मट्टकेकी टिवची नीचे चावलका साधिया करै, ऊपर नालेर रुपिया आपनाका धरै, दोनुं मट्टका ऊपर मोलीसूत्र बटके पंचरंगी खजली एकेक खूणी २१ इकीस२ पोंकर चारों कोणोंमें ८४ खजली पोंके तणी बांधे, नालेरके आकार मोलीसूत्रको दसो नीचला मोटा हंसामें लटकतो रखके ऊपरकी मोली गेटा हंसाके बिद्रमें पोंकर ऊपर जो चौ खूणी तणी बांधीहे जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे जो संघ समुदायकी तरफसे शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै उर एक जणकी तरफसे होय तो शांति कराणेवालेके घरसे ली सधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों मावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अन्ना वस्त्र आन्नूपण पहिरायके कलशके अंदर कुंकूमकेसरका साधिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोटली धरके मुख पर नालेर ठकणे माफक खन्ना धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके चारों तरफ चार साधिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वाजित्रादि अनेक उद्यव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-

मुख चावलोंका साधिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीठे पाच दश जणा इये मुर जावे अपना अंग श्रुद्ध करै, गुरुके पास से केसर मंत्रायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधी इहांसे आगे नव ग्रह दश दिग्पालका आह्वान अठारे स्तुतिसे देववन्दन वगैरे करे सो सब विधि पूर्वे लिखी हे, सो सब करके बलबाकुल सब देके पीठे सुंदर अंगोपांगवाले सुशील स्त्रीपूत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन१ नवकार गुणे, जिसमें दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खमा रहै, एक स्नात्रिया धूप खैवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन वासकैप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोंमें जल जरके दोनुं तरफ धारा देणेवाले कलशोको पूरता रहै, दो जणे दोनुं तरफ चमर दुलता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात२ नवकार गुणे, स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवै, एसे सात धारा दे चुके तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसे नमोर्हतसिद्धाचा० कहके अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीठे जक्तामर बमीशांति गोटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृक्षशांति आती होय तब तो गुरुके संग अपने मनमें गुणता रहै, मुर नहि आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंड ऊपरले गेटे कलशों धारा देता रहै, ठीक कोई नही करै, आपसमें दूसरी संसारी विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणें पीठे तीन नवकार गुणके कलस धरे, पीठे नीचेके हंमेमेसे जितप्रतिमाकूं निकालके अच्छी तरे अंगलूहणा करकै केशर पुष्पादिकसे पूजा करै, जगवानकी अच्छी तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके आरती उतारै, मंगलदीपक करै. पीठे शांतिजल सर्व संघ लगावै,

अपने घरोंमें ठाटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे लेके राखनी बांधे. इससे संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिक होय, अनेक प्रकारसे रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. पीठे आधा बलवाकुल परातमें रक्का था सो लेके गुरु पूर्वोक्त स्त्रात्रियोंसे दश दिग्पाल विसर्जन विधि पूर्वे लिखी हे उस मंत्रोंसे विसर्जन करै ॥ इति शांतिक पूजा विधि सं०

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंमण रूपन जि-  
णंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ दुसरी आरती मरुदेवी-  
नंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रि-  
भुवन मोहे, रत्नसिंघासण म्हारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चोथी  
आरती नित्य नई पूजा, देव रूपनदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥  
पंचमी आरती प्रभुजीने ज्ञावे, प्रभुजीना गुण सेवक हम गावै ॥  
॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रभु शांतिजिनंदकी, मृग लंठनकी में  
जाउं बलिहारी ॥ जय२ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचि-  
राजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति  
कीजै प्रभु नेमजिनंदकी, शंख लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ०  
समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ०  
५ ॥ आरति कीजै प्रभु पाशजिणंदकी, फणिंद लंठनकी में जाउं  
बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख  
पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह  
लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाकों नंदा,  
वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ७ ॥ आरति कीजै चोवीस जिनं-  
दकी, चोवीस जिणंदकीमें जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कम-  
ल नित सेवित इंदा, चोवीस जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८ ॥



करजोमी सेवक इम बोलैं, नहि कोइ माहरा प्रज्जुजीने तोले ॥ इति ॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय१ आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी  
॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्रेश्वरी जग सौ-  
ख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गङ्गनी शासनदेवी, सकल संघने  
सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टीलमी रत्न विराजै, काने कुंम  
ल दोय रवि शसि ठाजै ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध वोरखा सोहे,  
नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूनी  
खलके, पाये घूघरमा घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुड चढ्या  
बहु प्रेमे, तुज गुण पार न पासु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूनी जन्मां  
देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित१  
मानी आरती ऊतारे, रोग सोग जय दूर निवारे ॥ ज० ९ ॥ तसु  
घर पुत्र पुत्रादिक ठाजै, मन वंछित सुख संपद राजे ॥ ज० १० ॥  
देवचंड मुनि आरति गावे, जय१ मंगल नित्य वधावै ॥ ज० ११ ॥ इति ॥

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सौरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपड इण  
विध खेल रे ॥ अशुभ करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग  
रे, वनीय विठायत वैस जो च० ॥ जहां नहीं कुमतिको लाग रे ॥  
अरे० १ ॥ दान शील तप ज्ञावना च०, चोपड एह पसार रे ॥  
आठ दाव इक बोलमें च०, आठुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥  
देव गुरु धर्म तीनुं ज्ञला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर  
हाथे लिया च०, उज्जल लेश्या आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरसन ज्ञान  
चारित्र ज्ञला च०, तीनुंइ गुपती विचार रे ॥ नव तत्व सात हिरदे  
धरो च०, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ४ ॥ पम्या अठारे रहण  
दे च०, पोबारा व्रत धार रे ॥ दश लक्षण दश धरम हे च०, हित



कर हियै विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया ठकनी पनी च०, हिर-  
दे दया विचार रे ॥ पुन्य नदय पंजनी पनी च०, पंच महाव्रत धार  
रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काणा पख्या च०, सातुंर विसन निवार  
रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ०  
७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, डुख सह्या जरपूर रे ॥  
करम कदै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ८ ॥ इति

॥ अथ सेतुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेतुंज खेल खिलारी, सब समऊ देख सेतुंजकी घात,  
खख दोनं दल अपणो परायैकी जात ॥ कान विध कर मोह बाद-  
स्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥  
आहुं कर्म पियादै आगे फुकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत अंज  
त नहीं अंजै ॥ लोअ ऊठ चारुं खूटकी मरोरु चल ध्यावै, मान  
माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो बजीर वीर  
वाके ठंग ठामो, वाके मारवैकों दल अपणो संजार ॥ हे से० २ ॥  
तेरे ग्यान सो बजीर वीर तेरे ठंग ठामो, आठों अंग समकित  
के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको  
मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ कमा शील दोय  
फील राखो दलकै अगामी, पर दल कर मारो गिनमें संहार ॥  
हे से० ३ ॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं जर, जब वाकै चल-  
नेकी काइ रहै नही वोर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो  
खिलारी, जब सुजशको तेरै शिर बंधेगो मोरु, ठामे इंद्र धरणेंद्र  
तेरे होलेंगें चवर, तेरो जजन जजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥  
इति सेतुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण ॥ टुक निजर महरदी करणा हो, टु० ॥ में

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ तु० १ ॥ अ-  
 ष्ट जवनकी प्रीत हमारी, नवमे जव निरवाहना हो ॥ तु० ॥२॥  
 रूपचंद जगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ तु० ३ ॥  
 इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-  
 का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिखा, फिटक  
 रतन जुजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजै साहिब,  
 ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ ॥ पंच वरणकी धजा  
 फरुके, क्या कहूँ अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन  
 नाम तुमारो, नुरनकी क्या आसा हे ॥ लो० २ ॥ चौसठ इंड ख-  
 मे बाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं-  
 जन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 सखि सध बनठन, सखी० ठाढ़े नाजि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥  
 रिषजकुमारको जनम जयो हे, मंगल मुख उच्चरै री ॥ स० १ ॥  
 ताव मृदंग रबाव मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हा-  
 व जाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २ ॥ सुरवनिता  
 मिल गई वधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर-  
 खत, आनंद हर्ष अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 हो जिन तेरे दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन जव२में  
 जटक्रंदा, अब मेंनी नुर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मेंने  
 लार लगे है, उनकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तु-  
 साढ़े, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 म्हारा रिषज जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंवेली चंपा गु-  
 लाव लाऊं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा०  
 १ ॥ अगर चंदन अकृत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध पु-  
 ण्य पाऊं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ जाव जावुं रे ॥

कर दियै विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया ठकनी पत्नी च०, हिर-  
दे दया विचार रे ॥ पुन्य नदय पंजनी पत्नी च०, पंच महावन धार  
रे ॥ अ० ६ ॥ चार तीन काणा पड्या च०, सातुंर विसन निवार  
रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ०  
७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, डुख सह्या जरपूर रे ॥  
करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ८ ॥ इति

॥ अथ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेत्रुंज खेल खिलारी, सब समझ देख सेत्रुंजकी घात,  
खख दोनं दल अपणो परायैकी जात ॥ कान विध कर मोह बाद-  
स्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥  
आतुं कर्म पियादे आगे फुकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत अंज  
त नही अंजै ॥ लोभ जंत चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावै, मान  
माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो बजीर वीर  
वाके ढंग ठामो, वाके मारवैकों दल अपणो संजार ॥ हे से० २ ॥  
तेरे ग्यान सो बजीर वीर तेरे ढंग ठामो, आठों अंग समकित  
के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको  
मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ कमा शील दोष  
फील राखो दलकै अगामी, पर दल कर मारो तिनमें संहार ॥  
हे से० ३ ॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं नर, जब वाकै चल-  
नेकी काइ रहै नही गोर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो  
खिलारी, जब सुजशको तेरै शिर बंधेगो मोर, ठामे इंद्र धरणेंद्र  
तेरे दोलेंगे चवर, तेरो जजन जजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥  
इति सेत्रुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण ॥ टुक निजर महरदी करणा हो, टु० ॥ में

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ तु० १ ॥ अ-  
 ष्ट जवनकी प्रीत हमारी, नवमे जव निरवाहना हो ॥ तु० ॥२॥  
 रूपचंद जगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ तु० ३ ॥  
 इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-  
 का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिखा, फिटक  
 रतन जुजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजै साहिब,  
 ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ ॥ पंच वरणकी धजा  
 फरुके, क्या कहूं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन  
 नाम तुमारो, नुरनकी क्या आसा हे ॥ लो० २ ॥ चोसठ इंड ख-  
 मे वाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं-  
 जन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 सखि सख बनठन, सखी० ठाढ़े नाजि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥  
 शिषजकुमारको जनम जयो हे, मंगल मुख उच्चरै री ॥ स० १ ॥  
 ताव मृदंग रबाव मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हा-  
 व जाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २ ॥ सुरवनिता  
 मिल गई बधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर-  
 खत, आनंद हर्ष अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 हो जिन तेमे दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन जव२में  
 जटकंदा, अब मेंमी नुर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मेंमे  
 लार लगे है, उनकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तु-  
 साढ़े, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 म्हारा शिषज जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंवेली चंपा गु-  
 लाव लाऊं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा०  
 १ ॥ अगर चंदन अकृत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध पु-  
 ण्य पाऊं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ जाव जावुं रे ॥

रूपरत्नदास पूरो अस्ति गुण गाउं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ मन लीमो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि ज्वतर  
 णा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट धन  
 हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाजि तात मरुदेवी माता, नंद रुपन्न सु  
 खकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटेन जग तत्पर, कुमतांगन  
 दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग दृग शशि वदन मनोहर, अंग  
 कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरेश्वर जंपै, जिन  
 संमरण दिख धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जिंजोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्या  
 न, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत  
 ज्ञान ॥ म्हारे० १ ॥ त्रिहुं जगतारन टारन अधको रे, वारुं तन धन  
 ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वर्चनामृत पान करीजै रे, केवल  
 निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रभु पाए रे, निवृ  
 त्ति पुरंदर म्यान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यह  
 अरजी मोरी सहियां, मोहे तारलो गहवहिया ॥ य० ॥ में नाहि  
 जाणूं सहियां, य० ॥ में तारण तरण सुणयो है, में यातें शरणो ग  
 हियां, इनतें उवार लेहियां ॥ य० मो० १ ॥ इन करमनके वश  
 हुयकै, में जटक्यो चिहुं गति महियां ॥ य० मो० २ ॥ हित करकै  
 दाश निहारै, करजोमि पमि हुं पइयां, शिव देति क्युं न सहियां  
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागकाफी ॥ मुजरो मानी लीजै, हो गोमरींय अरज सु  
 एीने, म्हारो मु० ॥ किरपा काज करी सेवगने, दिखजर दरशण  
 दीजै ॥ हो गो० १ ॥ गुणनिध गवमी दरसन दीजै, संकल करम  
 दल ठीजै ॥ हो गो० २ ॥ रूपविबुधको मोहन पन्नणें, प्रहजगी प्रण  
 मीजै ॥ हो गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तु मेंमा प्रभु इण दिख

बसणावे, तेंना तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर  
 गुणके आगर, जोही घ्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो त  
 त्वज्ञानके दाता, जिविजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जि  
 नचंद ऐसे प्रभु मेरे, चरणकमल चित्त द्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहें तुम तारोगे, हम० ॥ ना-  
 निराय मरुदेवीकों नंदन, मेरी नर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि  
 जिनेसर अंतरजामी, खाभी कबुन विचारोगे ॥ हम० २ ॥ जगजीवन  
 जगतारक तुमहो, एही विरुद संजारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौजा  
 ग्य सूरिंदके साहिब, जवजल पार कृतारोगे ॥ ह० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ पंथीमा पंथ चलेगो, प्रभु नजले दिन चार ॥ पं० ॥ जूठी  
 काया जूठी माया, जूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणमें खेल गमायो,  
 जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृढापण आयो धरम न पायो, प्रीति  
 करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जायगो, पाप पु  
 ण्य दोष लार ॥ पं० ४ ॥ दया मया कर पास एवंती, अब तेरोही  
 आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तेवीशमा जिनराज,  
 जोमे थारे कोण जुमेगो ॥ ते० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता,  
 तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ कमठ विमारण नागकूं तारण, सं  
 जलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ विबुद्ध कुशल करजोमीने वीनवै,  
 जव२ देज्यो दीदार ॥ जो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खंझायची ॥ कैसें काज सरै, महाराजा विन, कैसें०  
 ॥ भ्रमत२ लख चौरासीमें, सुख दुःखसें जीया रुखत फिरै ॥ म०  
 कैसें० १ ॥ ए रिपु कर्म वैरी नटकावत, जाहीसें मेरो प्राण मरै  
 ॥ म० कैसें० २ ॥ जो जीव सुखकी वांछा चाहै, प्रभु सेव्यासें  
 काज सरै ॥ म० कैसें० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः राजरी वधाई  
 वाजै ठै, महा० ॥ सरणाई सरै नोवत वाजै, धन ज्युं अंबर गाजै

वै ॥ महा० १ ॥ इंझणी मिल मंगल गावै, मोतिचन चौक पुरावै  
 वै ॥ महा० २ ॥ सेवग प्रजुजीसैं अरज करै वै, चरणारी सेवा  
 प्यारी लागे वै ॥ महा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अमाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे,  
 मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंमल लागत वाला ॥  
 ॥ जि० १ ॥ नजोरी नजो तुम लोक सहरके, नहिय नजै सो  
 काला, माणक पर प्रजु महिर करो तो, अपणा विरुद संजाला ॥  
 जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सौरठ ॥ रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय, रहे०  
 ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ र० १ ॥  
 अविरत घूँघट पट नवारी, अनुभव मुख निरखाय ॥ र० २  
 ॥ नव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ र०  
 ३ ॥ अति आग्रह सब ग्यानसारकूं, जीवन कंठ लगाय ॥ र०  
 ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः हे माय वांकसी करमगति जाय ना  
 कही, चिंतत और वनत कहु औरै, हौनहार सो होय रही ॥ हे माय  
 वां० १ ॥ सकल साज सजियौ व्याहनकूं, राजुलकों तव चाह  
 नई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन विलख मुरजाय रही ॥  
 हे माय वां० २ ॥ सीता सती योंही पतिनगता, जानत सकल  
 मही ॥ जूठो दोस दियो जब रुधपति, पावक कुंममें धीज दही ॥  
 हे माय वां० ३ ॥ दायक सुदृष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक  
 बंध ठई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात  
 लही ॥ हे० वां० ४ ॥ ठिनमें रंक ठिनकमें राजा, अकल कथा  
 किम ज्ञाण कही ॥ नलट पलट वाजी नटसीकी, नवल सरबमें  
 व्याप रही ॥ हे० वां० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हांनु प्यारो  
 लागे वै जी थारो उपदेस, म्हांनु० ॥ ग्यान जगावण नंगुण



मैटण, संशयन रहै न लैस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिमिर डुख  
 दूर करणकुं, जगत बंढावत हेत ॥ चंद फतै नित एही चाहै,  
 समकित सुखको खेत ॥ म्हा० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 मेरो पिथा पर संग रमत हे, मै कैसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सोतन  
 संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत  
 सखी पइया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति  
 डुसह पिथा विन, कोन बुजावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अ-  
 नुजव आयो, सब परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यारी दोऊं हिल-  
 मिल, सोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ वरषित वचन जरि, हो सुगुरु  
 मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतैकुमटी, ग्यानघटागहरी ॥ हो सुगु०  
 १ ॥ स्याद्वादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति रुरी ॥ हो सुगु०  
 ॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ हो सु-  
 गु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढ़ी अति जोरे, शुद्ध सुजाव धरी ॥ सु-  
 ज्ञरज्ञरयो सुमतारससागर, समकित जूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥  
 प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरि ॥ चातक मोर पप-  
 इया जविजन, बोलत नक्तिनरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान व्रत  
 संजम खेती, जविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी,  
 सहज स्वजाव फली ॥ हो सुगु० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या  
 घरीमें रंग, बन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा  
 धरमीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध जेठे, हरख  
 जयो अंग अंग ॥ व० या० २ ॥ एसी विध जवश् मांहे मिलियो,  
 धर्मप्रसाद अन्नंग ॥ व० या० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागमलार ॥ चिहुं नर दरिया वरसै, अब घरर घरर  
 धन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रभु गिरनार सिधाए, देखणकुं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दाडुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन ज्ञे घन  
 जरसै ॥ चि० २ ॥ ठूढत ठूढ सकल वनशमें, कबहुं पिया ना दर  
 सै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेंगें सजनी, दिवस घरी जिन  
 फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले  
 पीनु २ घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी  
 कारी विजुरी मरावै, दूजी विरह व्याकुल जई तनमें ॥ मो० १ ॥  
 जिरमिर वरषित गरजत दाडुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥  
 मो० २ ॥ आणंद यह सम देखण चाहै, राजुल जई विरागण बि  
 नमें ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग विहाग ॥ समऊ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो  
 ॥ स० ॥ पल २ आयु घटत बिन रही, गलत जात जेसैं नरो ॥ स० १ ॥  
 या तनको कहो कोन नरोसो, बिन मासो बिन तोरो ॥ जो कबु  
 करै सो अबही करलै, पुनपरहो जिम मोरो ॥ स० २ ॥ तन धन  
 आदि सकल सामग्री, गरज २ घनघोरो ॥ रूपचंद ब्रसनाको बांध्यो,  
 जानवूऊ जयो नोरो ॥ स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मत कर मा  
 न गुमान, योवन धन ठगहे ॥ म० ॥ वेलूकी ज्ञीत नसको मोती,  
 कोइ घमी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदियां गहरी नाव पुरा  
 णी, तारणहारा जिनहे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल  
 घर हे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोनं थारी वाटमी, घर आवोनी  
 होला ॥ नि० ॥ मुऊ सरिखा तुऊ लाख है, मेरे तूही अमोला  
 ॥ नि० १ ॥ जोंहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥  
 जिसके पटंतर को नही, उसका क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे  
 किसपें कहूं, किसपें मांडू खोला ॥ तेरे सुख दीठै टलै, मेरे मनका  
 जोला ॥ नि० ३ ॥ मित्त विवेक कहै हितकर तुं, सुमतासु न बो

ला ॥ आणंदधन प्रभु आवसी, सैजनी रंगरोला ॥ नि० ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे जाग, वीरप्रभु आए  
हैं ॥ आ० ॥ चंदना खनी डुवार, चित्तसैं करै विचार ॥ देखत दी  
दार हीया, हरख जराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली,  
अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥  
आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म जेरो ॥ सुरुत बहु  
तेरो, जगवान दिल जाए हे ॥ आ० ३ ॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत  
सरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा० ॥  
आप रंगीला वाकी रंगीली, नर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ०  
१ ॥ आपन आवै वारी न लिख जेजै, प्रीत करणकुं उतावरो रे ॥  
आ० २ ॥ आनंदधन पिया निजघर आवै, मिट गयो मोहसंतावरो  
रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रुषज विहारी, आंरी तो ठवि न्यारी हो  
॥ रु० ॥ प्रथम तीर्थकरप्रथम जिनेसर, प्रथम यतो व्रतधारी हो ॥  
रु० १ ॥ धनुष पांचसैं मान मनोहर, काया कंचन वानी हो  
॥ रु० २ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी  
हो ॥ रु० ३ ॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रभु ठो पर ऊपगारी  
हो ॥ रु० ४ ॥ केवल पाय प्रभु मुगति सिधाए, आवागमननिवारी  
हो ॥ रु० ५ ॥ आनंदधन प्रभु एती वीनती, तुम पर जानं बलि  
हारी हो ॥ रु० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार  
न टरै रे, सु० ॥ चित कबु ठर विचारत है नर, नरही ठर बने  
रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचै, चिरिया केसैं बचे रे ॥  
सु० २ ॥ होणहार वश रुस्यो हे पारधी, सर सींचाण मरे रे ॥ सु०  
३ ॥ होत पदारथ जावी जइया, क्युं जग चाह धरै रे ॥ सु० ४

॥ उदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न जजै रे ॥ सु० ५ इति पदं ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ श्रेणक झूप चेलणाराणी, जक्ति करत हे आज ॥ स० २ ॥ निज श्रद्धा लिये पुर के जन, उमंगर गुन साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतै, डखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ जब शमें तोकूं सुखदाई, आनंद वंठित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण सरण जिनेसर लखके, जेटै सहु जवि चित सुख पाय ॥ च० २ ॥ गंगा दरस जमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखूं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखूं रे हो ॥ जाके प्रभाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, ज्ञागा जया नजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागै, पेख्या विजाव स्यागै, अध्यात्मरूप जागै ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रूपजे सजू तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम दे अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै, जितहर्ष सूरि ज्ञाखै, दिल मांज याही राखै ॥ हो० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी क्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकूं द्वार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब कैसे विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धन२ राजुल,  
 प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः आरे  
 मुखमारी हो वारी राज, प्यारी ठवी वरणी न जाय ॥ आ० ॥  
 शीस मुण्ट सोहै सिर टीको, काने आरे कुंमल सोहाय ॥ आ०  
 १ ॥ मोहनगारी सूरत आरी, देख्या म्हारो मनमो लोनाय ॥ आ०  
 २ ॥ बरजत नेण जए दोनं निरखत, आंसु प्रभु प्रीतनी लगाय ॥  
 आ० ३ ॥ जव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलमेमें  
 चाव ॥ आ० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय  
 ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानमो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कबु कर-  
 नी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरजव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सु-  
 खदाई रे, जसु पातिक ऊरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ जूठ पर  
 तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥  
 तप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुहाई रे, जवजल  
 निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगमो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रभुजी  
 मो० ॥ में मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि ठानो ॥ राग  
 छेष अरु मोह महा मद, वाध्यो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥  
 ए रिपु कर्म पन्थो मुज केमे, किस बिध बूटै पानो ॥ कुमति क-  
 दाग्रह मांहि अलूज्यो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं  
 जववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो  
 साम संनारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ नक्ति  
 सदाई शिवसुख दाता, संजवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौनाथ  
 सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रधानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागजैरवी ॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखी

मेहरवान जई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पठावै, तेरी  
सूरत कुरवान जई रे ॥ वी० १ ॥ साशणनायक एही अरज दे,  
दाजै दरस वनो बैर जई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण  
कीजै, चरण सरण लपटाव रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विज्ञास ॥ जोर जयो अब जाग बावरे, जो० ॥ कोउ  
पुन्य तें नरजव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दावरे ॥ जो० १ ॥ धन  
बनिता सुत तात आतकों, मोह मगन ए विकल ज्ञाव रे ॥ जो०  
२ ॥ कोइ न तेरो तूं नही का को, इह संजोग अनाद सुज्ञाव रे ॥  
जो० ३ ॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रज्ञावरे  
॥ जो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं मूवै अब पायनाव  
रे ॥ जो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट्वा ॥ जागरे सवरैन विहाणी, जा० ॥ उदयो उदयाच-  
ल रविमंजल, पुन्यकाल क्यूं सोवै प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंभ  
वन २ विकसानी, अजुअ न तेरी दृग उधराणी ॥ जा० २ ॥ चेत-  
न धर्म अनादि तुमारो, जम संगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥  
तुम कुल दोष अवस्था पड़्यै, नीद सुपन ए जम नीसाणी ॥ जा० ४  
आतम रूप संज्ञार आपणो, कब तुमरे घर कुमति घराणी ॥ जा०  
५ ॥ सुध बुध जूली निरुपम रूपकी, तातें घट बध होत कडाणी  
॥ जा० ६ ॥ निश्चै ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जधा  
नी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग बेलाउल ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन ज्ञावनो,  
रूप देखायै भैरो मन ललचावणो ॥ सां० ॥ तोरणसें रथ फेर च-  
ले पिया, ना जानुं ए काहेको रुसावनो ॥ सां० १ ॥ नव जव नेह  
निज्ञादो नेम तुम, याहीतें कहा वदन डुरावणो ॥ आनंद राजुल  
चाकी प्रीत कपटकी, जयो पीया मुगतसखीको पावनो ॥ सां० २ इति

राग ललित ॥ आज रुषज्ञ घर आवै, देखो माई आ० ॥  
 रूपमनोहर जगदानंदन, सबहीके मन जावै ॥ दे० १ ॥ केइ मुगता  
 फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय  
 रथ पायक केइ कन्या, ले प्रभु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांस-  
 कुमर दानेसर, इकुरस वहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल,  
 साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई  
 अं० ॥ रुद्रि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिढ्यो  
 री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे बरास  
 मिढ्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग ट-  
 ल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख कृपा कर साहिब, ज्युं पारे  
 वो पढ्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुमारी कृपासैं, हुंरहिसुं सुहलो री  
 ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ऊगोने मोरा आतमराम,  
 जिनमुख जोवा जइये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसन है अति  
 दोहलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवजव एहवो,  
 जुमवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ ब्यार दिवशनो चटको म-  
 टको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जातां वार न लागै, कायाघ-  
 ट है काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें जरियो हे जिनवर, पूरब  
 पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो  
 रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणै मत गमजो  
 रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित रमज्यो रे ॥  
 ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥  
 लाजऊदै जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति

राग केदारो ॥ नज मन नाजिनंदन देव, न० ॥ ध्यान  
 मुनिजन अरुग धारै, सुरनर करत हे सेव ॥ न० १ ॥ चक्री नू-



पति वने सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष  
मणिधर सेव ॥ ज० २ ॥ असरण शरण हे विरुद जाको, जक्ति-  
वञ्जल जेव ॥ राजसिंह प्रभु रूपन सिर पर, नाथ हे नितमेव  
॥ ज० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आवो नेम रहजावो सदन, हमको न स  
तावो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सऊके सजन, पशुवनको सुन देख  
रुदन ॥ गिरनारी चलै निज ठांमी वतन, तकसीर बतावो रे ॥  
आ० १ ॥ पूनम जेसे चंदवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥  
मेरी नीकी लगी नव जवकी लगन, मत ठेह दिखावो रे ॥ आ०  
२ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके भ्रमन ॥ सब  
ऊठे पमेगें कोलवचन, रथ फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर  
कहे प्रभुजीके चरण, राजकुल मन वैराग धरण ॥ लेजं दोम नेम  
जिनजीकी शरण, शिवपुर तो बतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कीरतीबाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥  
की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशिवंदन  
॥ दरसनसैं नयणानंद ठरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अं-  
व कदंब मालती निरमल, चंपक बेल सधन तरु परिमल ॥ बीच  
भुवन हिय हरख धरै, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सांवली  
सूरत अधिक विराजै, वासुपूज्यकी महिमा गाजै ॥ प्रभु अतिशय  
तन मकरंद ऊरै, पदकज बलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुजग  
दरसकुं आवै, निरखै प्रभु सहज स्वभावै ॥ जीव जन्मी मन प्रे-  
म धरै, जगपति रुद्रसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अथम जग काम जये अगीवान,  
हे ना निकला मुखसैं कजी जगवान ॥ यार नहीदेखा समोसरणा,  
किया नवदधिमें ऊदर जरणा ॥ दोम जो लेते प्रभु सरणा, दूर

डुख होतै जनम मरणा ॥ बैठ जववरमै लगाया नही ध्यान, राज-  
 शिवपुरमें हुवा अपमान, करो अब देख काल खगवान, ना नि० १  
 ॥ नाम जो जिनके दान देते, आतुं मद तुमसैं दूर रेतै ॥ यार जो  
 तिनके चरण सेते, शशी सुमंताकों तुमैं देतै ॥ रहे तप जपमें सदा जो  
 सूर, वरे वो जव जव सुख जरपूर ॥ करै कपूर करम चकचूर, देखयां  
 जिन नूर हुवै डुखदूर, करो जवपार सुणो महरवान ॥ ना० २ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रभु तेरी सूरतिया लागे जली, नेणां हमारी  
 प्रभु तुमसैं मिली ॥ प्र० ॥ अनुजव रंग मगन तेरी अखियां, खु-  
 ल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम  
 प्रभु आनन, मुख देखत आफत दूर ठली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम  
 अगोचर तेरी महिमा, आप विसंजर अतुल बली ॥ ने० प्र० ३ ॥  
 मुजकूं आश दीनपति तेरी, जर न चाहूं देव ठली ॥ ने० प्र० ४ ॥  
 लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर चली ॥ कर  
 सुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र०  
 ५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जमी रुद्धसार फली  
 ने० प्र० ६ ॥ इति पद ॥

॥ राग पीलू ॥ आयो सही अब जाइ कहां, शरणागतकों  
 शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तौहू समान मिल्यो नही कोई, हूँढ  
 फिरयो धरती सब हैरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रभुजी अ-  
 ब, आन जई तुमसैं जट जेरी ॥ आ० २ ॥ दास कल्याण करै  
 वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पद ॥

॥ राग खांवाज ॥ घनी१ पल१ तिन१ निशदिन, प्रभु  
 कों समरण करलै रे ॥ घ० ॥ प्रभु समरण सब पाप कटत है, अ-  
 शुद्ध करम सब हरलै रे ॥ घ० १ ॥ मन वच काय लगी चरणन नित,  
 ज्ञान हियेमें धरले रे ॥ घ० २ ॥ दोलतराम प्रभु गुण गावै, मन

वैठित फल वरलै रे ॥ घ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सौरठ ॥ सुमतानें क्या कर मारा रे, जिन मोह्या  
स्याम हमारा ॥ जि० सु० ॥ शखी दोस नही सुमतामें हे, आली अपना  
नेम ऐसा ॥ जि० सु० ॥ सुमता शोकण जई हे हमारी, बस किया प्राण  
पियारा रे ॥ जि० सु० १ ॥ प्रीतकी रीत करी नहीं वालम, ठोम  
चले निरधारा रे ॥ जिन मो० सु० २ ॥ जादव जात कठिन निर  
मोही, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन मो० सु० ३ ॥ तुम तो ने-  
म तजे हो हमकूं, में न तजू पद आंरा रे ॥ जि० सु० ४ ॥ लग-  
न हमारी तोरी नही तूटै, कर बांधी इक तारा रे ॥ जि० सु० ५ ॥  
सब जग जो तुमसे हो जइयै, तो क्युं चलत संसारा रे ॥ जि०  
सु० ६ ॥ रुद्धसार राजुल प्रभुजीसैं, पोहची मुगति मजारा रे ॥  
जि० सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शिखरगिरि स्तवनं ॥

॥ तुम तो जले विराजो जी, सांवलिया महाराज शिखर  
पर जले विराजो जी ॥ तेरे घाटे चोकी लागै, श्रावक जाण न  
पावै ॥ हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर, बांह पकम ले जावै ॥ तु०  
१ ॥ जंचा नीचा परवत सोहे, तलै जीलनका वासा ॥ पैरु२ पर  
सींह दमूकै, जिहां लीया तुम वासा ॥ तु० २ ॥ टूंक२ पर धजा  
विराजै, जालररे ऊणकारै ॥ जालररेऊणकोरे सेती, वाजा अविच  
ल वाजै ॥ तु० ३ ॥ दूर देशके जात्री आवै, पूजा आण रचावै ॥  
अष्ट द्रव्य पूजामें लावै, मन वंछित फल पावै ॥ तु० ४ ॥ सुरनर  
मुनिवर वंदन आवै, महा परम सुख पावै ॥ चंद खुसाल चरणको  
सेवक, हरखर गुण गावे तु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ शिखर गिरिंद्र जुहारो, निज पातिक दूर नि-  
वारो रे ॥ जवियां शि० ॥ इण सम तीर्थ न कोई, में देखा सहु

जग जोई रे ॥ ज० १ ॥ वीश जिनेसर आया, इहां मुक्तिपुरी सुख  
पाया रे ॥ ज० ॥ कोमाकोमी मुनि सीधा, जिहां अजर अमर पद  
लीधा रे ॥ ज० २ ॥ वीश चरण जिन सोहै, जविजन चात्रक मन  
मोहे रे ॥ ज० ॥ ध्रुवमठ मंदिर ठाजै, जिहां पाशप्रभु महाराजै  
रे ॥ ज० ३ ॥ पावन तीरथ एहवो, इहां शंसय धरवो न केहवो  
रे ॥ ज० ॥ तीर्थ आसातन टालो, जविजन ठहरी व्रत पालो रे ॥  
ज० ४ ॥ नरजव लाहो लीजै, इण तीरथ महिमा कीजै रे ॥ ज०  
सय नगणीस तेतीसै, अगहन सुदि पंचमी दीसे रे ॥ ज० ५ ॥  
दूगम गोत्र सुहावै, जवि चंदगोविंद गुण गावे रे ॥ ज० ॥ जात्रा  
करी मन रंगे, चंद शिखर जणै अति चंगे रे ॥ ज० ६ इति पदं ॥  
पुनः ॥ ( सांवरियां जेसैं वणे जेसे तारो, सां० ॥ इस चालमें ) सां  
वरियामें दीठो दरस तिहारो, मेरी जव जय बाधा टारो ॥ सां० ॥  
अश्वशेननंदन जगवंदन, जगबंधव जग प्यारो ॥ नीलवरण युति श्री  
जिनवरकी, वामा नदर अवतारो ॥ सां० १ ॥ कमठ विमारण शिव  
सुख कारण, तारण तरण निहारो ॥ अलख अगोचर अगम अरूपी,  
निर्यामक सत्यवारो ॥ सां० २ ॥ शिखर गिरी मंरुण जिनवरजी,  
अदभुत महिमावारो ॥ कर जोमी दोउं वीनती करतहे, बुधसिंह  
अरजी धारो ॥ सां० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पावापुरी स्तवनं ॥

( श्रीचिंतामणि पासजी ॥ ए चाल ) ॥ त्रिभुवन नायक  
वीरजी, दरशण अतहि सुरंग ॥ वधाई प्रभुजी ॥ आरी मोहनी मृ  
रती म्हारो मन लागो राज ॥ मुख ठवि चंदनै निरखवा, लगन  
चकोर अन्नंग ॥ वधा० १ ॥ सिद्धारथ कुल सेहरो, तेज जलामल  
ज्जाण ॥ व० ॥ हृदयकमल विकसायवा, तूं जगजीवन प्राण ॥ व०  
आ० २ ॥ आस धरी जिनचरणनी, आयो हुं त्रीभुवन नाथ, म-

हिर लहिर कर बगसीयै, आनंद निज गुण साथ ॥ व० था० ३ ॥  
 ॥ धन२ वेला जी आजनी, सँमुख मिलिया ठो आप ॥ व० ॥ हूं  
 सँ घणी कहिवा तणी, वीतक डस्क संताप ॥ व० था० ४ ॥ जो  
 नही सुणसो नाथजी, तो तुम विरुद न आय ॥ व० ॥ जगतव-  
 छल जग सहु कहै, ते निरफल किम जाय ॥ व० था० ५ ॥ किरिया  
 जोगे जे तारवुं, तेहमां स्यो उपगार ॥ व० ॥ तो बलिहारी श्री  
 नाथजी, विन आयास उधार ॥ व० था० ६ ॥ गुनही तारथा जी ब  
 हु विधे, विबुध कहे तुम नाम ॥ व० ॥ हूं तो जी अनुचर चरणनो,  
 किम नवि सारो जी काम ॥ व० था० ७ ॥ अतिशय ज्ञानी जी इण  
 अरै, नहि कोइ लब्धि निधान ॥ व० ॥ मोहन मुझसुं मन रमें,  
 के तुम वचन प्रमाण ॥ व० था० ८ ॥ मुऊ तन मन मंजूसमें, ज  
 तन करुं जगनाथ ॥ व० ॥ तुम गुणरतननी मूँधरी, प्रेम जमो निज  
 हाथ ॥ व० था० ९ ॥ आस फली जात्रा करी, कंचन वरण सुवा  
 स ॥ व० ॥ सरवर बीच सुहामणो, जुवन रमण केलास ॥ व०  
 था० १० ॥ पावापुर उगलीशमें, अमृतालीश उदार ॥ व० ॥ का  
 र्तिक दिन निरवाणनो, कुशल निधि रुखिसार ॥ व० था० ११ इति ॥

॥ अथ चंपापुरी स्तवनं ॥

( नैणा सफल जयें, प्रभु दरसन पायो आज ॥ ए चालमें )  
 निरख हिया हरख जरे, प्रभू वासपूज्य महाराज ॥ नि० ॥ अजि  
 क्षापा दरशणतणी रे, परम पदारथ काज ॥ कारण कारज नीपजै  
 रे, आप गरीबनिवाज ॥ नि० १ ॥ मेरु महीतल तोलवा रे, सम  
 रथ को नलि हाल ॥ अतुल गुणाकर उपमा रे, जक्त सुधारण कां  
 ज ॥ नि० २ ॥ डखजंजन दाता सुण्यो रे, जस कीरत मुख संत ॥  
 अंतर राख्यां नवि बनेरे, तार२ जगवंत ॥ नि० ३ ॥ कळपवृक्ष  
 पुन्ये लह्यो रे, वंदित पूरण नाथ ॥ ज्ञान्योदय अव माहरो रे, शिं

वपुर दायक साथ ॥ नि० ४ ॥ कमल नयण रतना जमी रे, अनु  
 जव आतम तेज ॥ दीजै निजपद दासकूं रे, पलक न कीजै जेज  
 ॥ नि० ५ ॥ उगणिले अमृतालमें रे, कार्तिक सुदि निधि सार ॥  
 चंपापुर अधिपति मिट्यो रे, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥  
 कुशल निधान विबुधतणो रे, कलीअली जिम लीन ॥ रुद्रसार जिन  
 ध्यानमें रे, अंतरंग गुण चिन ॥ नि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ मैं मुख देख्यो गोमी पारसको, मेरो ज  
 नम सफल ज्यो आज ॥ मैं० ॥ अन्य देवकूं बहुत मैं ध्यायो, तो  
 य न सरयोजी मेरो काज ॥ आजरे मैं० १ ॥ जवश् जटकत शरणे  
 हुं आयो, अबतो रखोजी मेरी लाज ॥ आजरे मैं० २ ॥ कमठ हरा  
 वण नागकूं तारण, संजलाव्यो नवकार ॥ आजरे मैं० ३ ॥ रूप  
 चंद कहै नाथ निरंजन, तारण तरण जिहाज ॥ आजरे मैं० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ किरपा करो रे गोमी पाश जिनेसर, तुम  
 स्वामी अंतरजामी ॥ कि० ॥ उंचे२ गढ़ पर पाश विराजै, चारो तरफ  
 ज्ञानी ध्यानी ॥ कि० ॥ नीलवरण तेरा अंग विराजै, वदनोंकी जाउं  
 बलिहारो ॥ कि० २ ॥ बांहे वाजुबंध वेरखा विराजै, कुंमलकी ठवि  
 हे न्यारी ॥ कि० ३ ॥ ठूठतश् मैं प्रज्नु पायो, पूरण पदवो अब पाई ॥  
 कि० ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कि० इति ॥

मुजरा साहिब मुजरा साहिब, साहिब मुजरा मेरा रे ॥  
 मु० ॥ साहिब सुविध जिनेसर स्वामी, चरण पखालूं तेरा रे ॥  
 मु० १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फूल चढाउं सेहरा रे ॥ घंट  
 वजाउं अगर उखेवुं, करुं प्रदक्षणा फेरा रे ॥ मु० २ ॥ पंचशब्द  
 वाजित्र वजाउं । नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत  
 हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ३ ॥ इति पदं ॥

घंट वाजै धननननन, इंड्रोक हरखनयो ॥ जन्मे वर्द्धमानकुंवर,  
 वीतराग तननननन ॥ धं० १ ॥ मृदंग ताल गुण विसाल, जलरी  
 नाद ऊननननन ॥ धं० २ ॥ रूपचंद राग रंग, होत ध्यान  
 मगनननन ॥ धं० ३ ॥ इति पदं ॥ निरंजन सांझां रे, सांझ  
 मेरा टुकसा मुजरा लै ॥ तुम तीरथके देवता जी, हम केशरदा  
 बोल ॥ कनककचोली हाथमें जी, पूजा करुं रंगरोल ॥ नि० १ ॥  
 तुम अंबरदा मेहला प्रभु, हम गिरवरदा मोर ॥ रुमजुम२ मेहला  
 वरसे, ठम२ नाचै मोर ॥ नि० २ ॥ हमगुण काली कोयली जी,  
 प्रभुगुण आंबा मोर ॥ मांजरके परतापसे कांझ, करवा लागी सोर  
 ॥ नी० ३ ॥ तुम दो मोतीयनकी लरी रे, हमगुण जंफा जोर ॥  
 रूपचंद दिलदार मयाकर, तुम विन देव न नर ॥ नि० ४ ॥ इति॥

राग कल्याण ॥ ऐसे सहर विच कोनसा दिवान है ॥ पा-  
 नीके कोट पवनके कांगरे, दस दरवाजै मंझान है ॥ ऐसे० १ ॥  
 पांचइंडीके तेवीस तस्कर, नगरकूंकरत हेरान हे ॥ ऐसे० २ ॥ प्रजा  
 पुकार सुणी जब जाग्यो, चेतनराय सुजाण हे ॥ ऐसे० ३ ॥ ज्ञान  
 को धाण वचनरस जेदे, हाथमें लाल कबाण हे ॥ ऐसे० ४ ॥  
 रूपचंद कहे तेने वारो, डुस्मन मान गुमान हे ॥ ऐसे० ५ ॥  
 इति पदं ॥ आय रहो दिल बागमें, सुण प्यारे जिनजी, आ० ॥ चुन२  
 कलिया तोरे चरण चढानं, गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सु० १ ॥  
 मरुदेवी नंदन आद जिनेश्वर ॥ खेल अनंता तोरा बागमें ॥ सु०  
 २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, जानं विकसित वन फागमें ॥  
 सु० ३ ॥ इति पदं ॥ रहो२ रे यार्दव दोय घमियां, दोय घमियां  
 रे अब च्यार घमियां ॥ र० ॥ प्रेमका प्याला बहोत मसाला,  
 पीवत मधुरी सेलमियां ॥ र० १ ॥ हाथसुं हाथ मिलाय दियो  
 सांझ, फुलमा विठानं सेजमियां ॥ र० २ ॥ राजुल ठोमि चले



गिरनारी, दीपत मोहन वेलनियां ॥ २० ३॥ रूपचंद कहै नाथ नि-  
रंजन, मुक्तिवधू गुण वेलनियां ॥ २० ४॥ इति पदं ॥ विराजो  
बंगलामें, विराजो मंदिरमें, प्रभु गोमीचा पारसनाथ ॥ वि० ॥  
चुवाश् चंदन ओर अरगजा, केशरमें गरकाब ॥ वी० १ ॥ शिर  
सोनेको ठत्र विराजै, मोतियमे तपे रे निलाम ॥ वी० २ ॥ जव  
सागरमें आण पमाहुं, बांह पकरु मुऊ तार ॥ वी० ३ ॥ रूपचंद  
कहै नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ वी० ४ इति पदं ॥

किण देखा हमारा स्वामी, स्वामी अंतरजामी रे ॥ कि० ॥  
आठ जवकी प्रीत प्रकाशी, नवमें गया शिवगामी रे ॥ कि० १ ॥  
सहसावनकी कुंजगलीनमें, मिले मोहे अंतरजामी रे ॥ कि० २ ॥  
आप चलै गिरनारके ऊपर, नारी तारी केवल पामी रे ॥ कि० ३॥  
कहे नथू प्रभु नेमनगीनो, कहुंबू आज शिरनामी रे ॥ कि० ४ ॥

राग आसानुरी ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा, उस पदका  
करे रे निवेसा ॥ अ० ॥ तरुवर एक मूल विन ढाया, विन फूलै  
फस लागा ॥ शाखा पत्र नही कर उनकूं, अमृत गगने लागा ॥  
अ० १ ॥ तरुवर एक पंढी दोउं वैठै, एक गुरु एक चेला ॥ चेलने  
जुग चुण२ खाया, गुरु निरंतर खेला ॥ अ० २ ॥ गगनमंमलमें  
अधविच कूआ, उहां हे अमीका वासा ॥ सुगरा होय सो जर२  
पीयै, निगुरा जात पियासा ॥ अ० ३ ॥ गगनमंमलमें गजआ वि  
आणी, धरती दूध जमाया ॥ माखण था सो विरला पाया, ठाठ  
जगत जरमाया ॥ अ० ४॥ अरु विन पत्र पत्र विन तूंबा, विन जी  
च्या गुण गाया ॥ गावनवालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही वताया  
॥ अ० ५ ॥ आतम अनुभव विन नही जाणे, अंतर ज्योति जगा  
वै ॥ घट अंतर परखै सोही मूरत, आनंदन पद पावै ॥ अ० ६ ॥  
इति पदं ॥ पुनः ॥ अबधू एसो ज्ञान विचारी, वामें कोण

पुरुष कोण नारी ॥ अ० ॥ ब्रह्मनके घर नाती धोती, जोगीके  
 घर चेली ॥ कलमा पढ़े जई रे तुरकनी, आपही आप इकेली ॥  
 अ० १ ॥ सुसरो हमारो बालोन्नोलो, सासू बालकुंवारी ॥ पिऊजी  
 हमारो पोढ़े पालणे, मेंहुं जुलावनहारो ॥ अ० २ ॥ नहि हुं पर  
 णी नही हूं कुंवारी, पूत्र जणावणहारो ॥ कालोदाढीको में कोइ  
 नही ठोरयो, अजुए हूं बालकुंवारी ॥ अ० ३ ॥ अढीद्वीपेमें खाट  
 खुटली, गगन नसीकूं तलाई ॥ धरतीको ठेको आज्ञकी पिठोमी,  
 तोय न सोम जराणी ॥ अ० ४ ॥ गगनमंजुलमे गाय वियाणी,  
 वसुधा दूध जमाई ॥ सऊरे सुणो ज्ञाई विलोवणा विलोवै, कोइ-  
 यक अमृत पाई ॥ अ० ५ ॥ नाहीं जानं सासरीये नहि जानं  
 पीहरियै, पीयुजीकी सेज विठाई ॥ आनंदघन कहै सुणो ज्ञाई सा-  
 धो, ज्योतसें ज्योत मिलाई रे ॥ अ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हं-  
 सा तूं मानसरोवर वासी, वामे जूठो रंग विलासी रे ॥ हं० ॥  
 नीर अगाध जस्यो ओ करदम, पसरौ बेल जरासी ॥ आंकी वांकी  
 कबहू न सीधो, सब जगकी हे मासी रे ॥ हं० १ ॥ आयो चं-  
 माल जूपके घरमें, रतन गयो ले नासी ॥ नृप पठतावै पर आंग-  
 णमें, जटके गया नर काशी रे ॥ हं० २ ॥ हाथी जूठो फैल म-  
 चावै, ज्ञागो माहावत जासी, डनियां चढ़े नीचै गिरती, पमत्तै  
 ही फालै फासी रे ॥ हं० ३ ॥ बाप आप बेटाके प्यारी, परणावै  
 इक दासी ॥ रुद्धसार इनकूं जब देखै, तबही प्यासी रे ॥ हं० ॥  
 ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ वेर वेर नहीं आवै, अवसर वेर नही  
 आवै ॥ ज्युं जाणे त्युं करले जलाई, जनम सुख पावै ॥ अ० १  
 ॥ तन धन जोवन सबही जूठो, प्राण पलकमें जावै ॥ अ०  
 २ ॥ तन ठूटे धन कोण कामको, काहेकूं रुपण कहावै ॥ अ० ३ ॥  
 जाके दिलमें साच वसत हे, ताकूं जूठ न जावै ॥ अ० ४ ॥

आनंदघन प्रभु चलत पंथमे, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ ये जिनजी के पाये लाग रे, तोने कहिये केतो  
 ॥ ये० ॥ आठोई जाम फिरै मदमातो, मोह निंदरियासुं जाग रे ॥  
 तोने० ये० १ ॥ प्रभुजी प्रीतम विन कोइ नही प्रीतम, प्रभुजीनी  
 पूजा घणी माग रे ॥ तो० ये० २ ॥ जवका फेरा वारी करो जि-  
 नचंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तो० ये० ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो, एती शीख हमारी प्यारे  
 चित्तमें धरो ॥ ओमासा जीवन काज अरे नर, काहेकूं ठल परपंच  
 करौ ॥ एती० १ ॥ कूट कपट पर द्रोह करो तुम, अरे नर परजव-  
 श्री न करो ॥ एती० २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम  
 मरणके दुःखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति पदं ॥ अबधू निर-  
 पढ़ विरला कोई, देख्या जग सब जोई ॥ अ० ॥ समरस ज्ञाव ज्ञा  
 चित्त जाके, आप उत्थाप न होई ॥ अविनाशीके धरकी वा-  
 तां, जाणगे नर सोई ॥ अ० १ ॥ राव रंकमें जेद न जाणे, कन-  
 क उपल सम लेखे, नारी नागणको नहि परिचय, तो शिवमंदिर  
 देखे ॥ अ० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवण सुणने, हर्ष शोक नवि आणे  
 ॥ ते जगमे जोगीसर पूरा, नित चढ़ते गुणगणे ॥ अ० ३ ॥ चंड  
 समान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंजीरा ॥ अप्रमत्त जारम परे  
 नित्या, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अ० ४ ॥ पंकज नाम धराय पं-  
 कसुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद एसा जन उत्तम, सो  
 सादबका प्यारा ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

राग प्रज्ञाती ॥ चलणा जरूर जाकूं ताकूं केसा सोचणा ॥  
 च० ॥ जया जब प्रातकाल, माता धवरावे बाल ॥ जगजन करत,  
 सकल मुख धोवणा ॥ च० १ ॥ सुरजीके बंध बुटै, धूधर जये  
 अपूठे ॥ ग्वालबाल मिलके, विलोवत विलोवणा ॥ च० २ ॥ तज

परमाद जाग, तूं ज़ी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय, वृथा  
नहीं खोवणा ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥

कैरवा राग ॥ समझ परी, मोहे समझ परी, जगमाया अब जुठी  
॥ मोहे समझ० ॥ काल२ तूं क्या करे मूरख, नहीं ज़रोसा पल  
एक घरी ॥ ज० स० १ ॥ गाफिल बिनजर नांही रहो तुम, शिर पर धूमें  
तेरे काल अरी ॥ ज० स० २ ॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे, जाणो  
तुम चित मांहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
जलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार, इकेली जानसैं मेरो ने० ॥ रा  
जुल ज़ुनी अरज करे बै, जलांजी मेरी अरज सुणो महाराज ॥  
इके० १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी, जलांजी वांतो पशुवनकी  
सुणी बै पुकार ॥ इ० २ ॥ सहसावनकी कूंजगलनमें, जलांजी  
वांतो महाव्रत धार ॥ इ० ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल बिनवै, ज  
लांजी मेरो होजो मुक्तिमें वास ॥ इ० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
रसना सफल जई, मैतो गुण गाये महाराज ॥ रसना० ॥ परम  
आनंद प्रगट ज्यो मेरो, जब देखे जिनराज ॥ र० १ ॥ अति उ  
ज्वल जस सुण जिनजीको, संख्यो सुकृत समाज ॥ र० २ ॥ ना  
क नमन करतां प्रभुजीकूं, सारथा आतमकाज ॥ र० ३ ॥ पदपं  
कज प्रभुके फरसतही, दूर गई दुख दाऊ ॥ कहत कृमाकढ्याण  
सुपाठक, अब मोहि अविचल राज ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग गजल ॥ राजुल पुकारे नेम पिया, एसी क्या करी  
॥ मुजें ठोमके चले हो चूक, हमसैं क्या परी ॥ रा० १ ॥ हुई  
आशकी निराश, उदाशीनता घनी ॥ प्यारा वश नहीं हमारा, प्री  
तम पीरमें पनी ॥ रा० २ ॥ हमसैं रह्यो न जाय, प्रीतम तुम  
बिना घनी, संयम लीजियें दयाल, दयाधर्म आदरी रा० ३ ॥ नि  
शदिन तुमारा नाम, देते ज्ञानकी ऊरी ॥ मुनि चंद विजय चरण

कमल, चित्तमें धरी ॥ रा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कोन किसीको मित्त, जगतमें कोन कि  
सीको मित्त ॥ ज० ॥ मात तात नुर जात सजनसें, कांइ रहत  
निचित ॥ ज० १ ॥ सबही अपने स्वारथके है, परमारथ नहि  
प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होसी, मित्ता मनमें चित ॥ ज०  
२ ॥ ऊठ चलेगो आप इकेलो, तुंहीसुं सुविदीत ॥ ज० ॥ को नहीं  
तेरो तूं नही किसको, एह अनादी रीत ॥ ज० ३ ॥ ताते एक ज  
गवान जजनकी, राखो मनमें नीत ॥ ज० ॥ ग्यानसार कहै एह  
धन्याश्री, गायो आतमगीत ॥ ज० ४ ॥ इति पदं ॥ आदी-  
सर जिनराज, त्रिभुवनके महाराज, आज हो आयो रे, में शरणें  
प्रभुजी तुम तणे जो ॥ १ ॥ उल्लस्यो ज्ञान अंकूर, प्रगट्यो पुण्य  
पूर ॥ आज हो जागी रे, मुज मनमें तुम सेवना जी ॥ २ ॥  
लगन लगी जरपूर, दोष गये सब दूर ॥ आज हो ठोमूं रे, नहीं  
तुम पद सेवा सुखकरू जी ॥ ३ ॥ नात्रिराय कुलचंद, मरुदेवीके  
नंद ॥ आज हो राखो रे, प्रभु मुजकुं निज चरणे सदा जी ॥ ४  
अमृत धर्म सुजाण ॥ शीश कृपाकल्याण ॥ आज हो रागे रे,  
प्रभु आगे आ विनती करे जी ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग केदारो ॥ गोरीगाइयैमन रंग, गो० ॥ एक ध्याने  
एक ताने, कर केदारो संग ॥ गो० १ जात्र कीजै अमृत पीजै,  
नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासै, आलस नावै अंग ॥ गो०  
२ ॥ पोढतां प्रभु नाम लीजै, आणी मन नठरंग ॥ अजय तेहने  
उंघ मांहे, कदिय न होवे चित्त जंग ॥ गो० ३ ॥ इति पदं ॥  
पुनः ॥ हारे हूं तो मोह्यो रे लाल, जिन सुखमानें मटकै ॥ न  
यण रसादा ने वयण सुखादा, चित्तुं लीधुं चटकै ॥ प्रभुजी केरी  
जक्ति करंता, करमतणी कस तटके ॥ हां० हूं० १ ॥ मुज मन

लोत्ती जमरतणी पर, जिनगुण कमले अटके ॥ रत्नचिंतामणि में  
की राचै, कही कुण काचतणे कटके ॥ हारे हूं० १ ॥ ए जिनगुण  
तां क्रोधादिक सहु, आसपासथी हटके ॥ केवलनाणी वह सुख  
दाणी ॥ कुमति कुगतिने पटके ॥ हारे हूं० ३ ॥ ए जिनने जे  
दिलमां न आणे, ते तो जूला जटके ॥ जाव जक्तिसुं उलग करतां  
बंधित सुखमे सटके ॥ हारे हूं० ४ ॥ मूरत संजव जिनेश्वर केरी,  
जोतां हियमुं हटकै, नित्यलाज कदै प्रभु ए मोटो, गुण गाउं हूं  
लटके ॥ हारे हूं० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी ॥ प्रभुजीसे लागो मेरो नेह सखीरी, अब कैसे  
कर बूटे री ॥ प्र० ॥ धिगर जगमें बाको जीयो, अपना प्रभुजीसे  
हसे री ॥ प्र० १ ॥ जो कोई प्रभुजीसे नेह करेगो, शिवपुरना सु-  
ख लहस्ये री ॥ प्र० २ ॥ सेवाराम प्रभु गांव रेसमकी, लगी प्रीत  
नही तूटे री ॥ प्र० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ खतरा डुर  
करना, ड० ॥ एकध्यान प्रभुका धरणा, खतरा दूर करना० दू० ॥ जब  
लग पांचो निर्मल करणा, तब लग जिन अणुसरणा ॥ खतरा० ॥  
१ ॥ क्रोध मान माया परिहरना, सुमति गुपति चित्त धरना ॥  
खत० २ ॥ संवर जाव सदा मन धरना, आतम डुरगति हरना ॥  
ख० ३ ॥ धण कण कंचनकुं क्या करणा, आखिर इक दिन मर-  
णा ॥ खत० ४ ॥ ज्ञानउद्योत प्रभु पाये परना, शिवसुंदरी सुख  
धरना ॥ खत० ५ ॥ इति पदं ॥

राग रामग्री ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये, धर्मना चार प्र-  
कार ॥ दान शीयल तप जावना, जगमे ए तंत सार ॥ रे० १ ॥  
धरस दिवसने पारणे, आदीशर सुखकार ॥ इहुरस दान बहरावि-  
यो, श्रीश्रियांस कुमार ॥ रे० २ ॥ चंपा बार नवामिया, चलणी  
काढ़यो नीर ॥ शतीय सुजडा जस अयो, शीले सुरगिर धीर ॥



रे० ३ ॥ तप कर काया सोषवी, अरस निरस आहार ॥ वीरजि-  
नंद वखाणिघो, धन धनो अणगार ॥ रे० ४ ॥ अनित्य ज्ञावना  
ज्ञावतो, धरतो निरमल ध्यान ॥ ज्ञरत आरीसा ज्ञुवनमें, पाम्यो  
केवलज्ञान ॥ रे० ५ ॥ ए जिनधर्म सुरतरु शमो, जेहनी शीतल  
ठांह ॥ समयसुंदर कहै सेवतां, मुगतितणा फल त्यांह ॥ रे० ६ ॥  
इति पदं ॥ पुनः ॥ सोइ२ सारी रैन गमाई, वैरन  
निद्रा तूं कहांसैं आई ॥ सो० ॥ निद्रा कहे मेंतो बाली रे ज़ोली,  
वमे२ मुनिजनकूं नाखूं रे ढोली ॥ सो० १ ॥ निश कहे मेंतो ज  
नमकी दासी, एक हाथमें मूंकी डुसरे हाथमें फासी ॥ सो० २ ॥  
समयसुंदर कहे सुनो ज्ञाइ वनिया, आप मूवै सारी मूब गई डुनि  
या ॥ सो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चंदाप्रज्जुजीसैं ध्यान रे,  
मोरी लागी लगनवा ॥ चं० ॥ लागी लगनवा बोमी नहि बूटै,  
जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान शीयल तप ज्ञावना  
ज्ञावो, जैनधर्म प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ हाथ जोम्के अरज कर-  
त है, वंदत सेठ खुस्याल रे ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
ते शिवपुर गये रहै रे, वारी सकल करम दल खचकर ॥ शि०  
॥ अविनाशी अविकार विराजित, परमात्म शिवधाम रे ॥ समा-  
धान सरवंग सरूपी, मेरे मन वसे२ रे ॥ शि० १ ॥ शुद्ध बुद्ध  
अविरुद्ध है, वहे अनादि अनंत रे ॥ वीरप्रज्जुके आगे गौतम, अमृ-  
त पद लहे लहे रे ॥ वा० शि० २ ॥ इति पदं ॥

गरबाकी चाल ॥ म्हारे ज्ञले रे ज्ञगो बैद्यामो आजनो रे, मेंतो  
मुखमो दीगो जिनराजनो रे ॥ म्हारे ज्ञ० ॥ म्हारे सुत सिद्धारथ  
महाराजनो रे ॥ जिन लंठन सोहे मृगराजनो रे ॥ म्हा० १ ॥  
म्हाने पागी मिढ्यो शिवपाजनो रे, मोने साधन मिढ्यो शुज  
काजनो रे ॥ म्हा० २ ॥ मारे कळपवृक्ष फळ्यो काजनो रे, म्हारो



महीयल वाध्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाज सूरिंद  
महाराजनो रे, फढ्यो वंछित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥  
इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाली म्हारे आजनीरे, मेंतो ढवि  
निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पदरी अंगी अलोकिक जातनी  
रे, मांदि बूटी दीसे ज्ञांतनी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट-  
मा जम्या बहु रे, काने कुंमलनी शोभा शी कहुं रे ॥ धन० २ ॥  
मुने किरपा करी ते कहुं कसी रे, मारे वाहले मुज सामो जोयुं  
हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, अई सूर  
शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो जम्यो सो-  
हामणो रे ॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्यो रे, जिनराज  
ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थवा म्हारे आ  
जथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां  
ते दुख सखे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्युं रे ॥ ध० ३ ॥  
आपी सेवा ते शुद्ध मनषी खरी रे, सूरशशी ऊपर करुणा करी  
रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे आज आनंद वधाम

णा रे, हुंतो लेजं रे वाहलाजीना जामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास  
पोतानो जाणियो रे, आश्रमता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १ ॥  
आप्युं दरशन ते दुर्लज देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेव  
में रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो जरोसो साचा गुरू रे, प्रभु  
विना जगत मिळ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा म  
नमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥  
इति पदं ॥ पुनः ॥ सवालाख टकानी जाये एक घडी, स० ॥

ए संसार जेसा सांजिला, घरपण आया घोमे चढी ॥ मांगी तूंगीने  
उत्र थरायो, केहनो कंदोरो केदनी कमी ॥ स० १ ॥ साधो जाई

जिनने संजारो, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे लीबो ज्ञज  
 तूं जगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ आवोशनी प्यारा नेम अम घर आवो रे, तुम जगत  
 वञ्चल जगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रभु केहवी अइ तकसीर कही  
 ने सुणावो रे, इम विन गुनेहे दीनानाथ मूकी न जावो रे ॥ आ०  
 १ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रुठो ठबी  
 दो कंत कोइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता दंस  
 के लंघन राचे रे, सषी आंबातणी जे रुहाम, आंबलिये न माचे रे,  
 आ० ३ ॥ हूं तो मोही तुज दीदार नहीं तुज जोमे रे, इण जग  
 में जोतां कंत कहूं ठूं थोमे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें ठीलरिया मि  
 त ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रंगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥  
 आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न जावे रे, जो माहरो  
 साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ० ६ ॥ इम करतां बांधी प्रीत  
 राजुल साची रे, जे नेहनो नावै ठेह इक चित राची रे ॥ आ० ७  
 ॥ इम रुद्धसारनी वाण चित्तमें धरजो रे, प्रभु नेम राजुल सी प्री  
 त मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारु ॥ ऊजो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमो  
 हन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा वागमें  
 रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल ठिन घमी रे,  
 मत मन प्रभुकुं जूल रे, चि० म० १ ॥ स्याम घटा तन शोभता  
 रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन  
 अन्नंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुषोत्तम  
 जयदेव ॥ वेपरवाही वालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥  
 श्रीफलवर्धीपुर तिलक ज्युं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण दा  
 स पर साहिबा रे ॥ हित कर दीजै दाथ रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

नचंड शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश ॥ निधि इंडुशित सप्तमी रे,  
 रुद्धिसार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन जाव  
 नकी, ठवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर चाहूं,  
 लागी लगन गुण गावणकी ॥ ठ० १ ॥ सांमली सूरत लटक चटक  
 पर, वरसे घटा जेसैं सावणकी ॥ ठ० २ ॥ बालपणे प्रभु हम संग  
 खेले, अब तो जइ विसरावणकी ॥ ठ० ३ ॥ याद करो जिन पू  
 रब प्रीती, वखत वनी हे दिल लावणकी ॥ ठ० ४ ॥ मोहे जरो  
 सो हे बहुतेरो, आप कहो ललचावनकी ॥ ठ० ५ ॥ सहजानंदी  
 एक लहरमें, दीजै सुख दुख जावनकी ॥ ठ० ६ ॥ पारस जेट रहे  
 जो लोहा, होवै लोक हसावणकी ॥ ठ० ७ ॥ राम निवास आश  
 प्रभुजोसैं, रुद्धसार पद पावनकी ॥ ठ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेम जिनंदजीसैं आंखमली ॥ ए चाल ॥ साहिब सुगुण  
 सुपारससैं, मेरी अजब अनोपम प्रीत जइ रे ॥ सा० ॥ जिन मुख  
 चंड चंद्रिका निरमल, चंचल नैण चकोरमई रे ॥ सा० १ ॥ डर न  
 कीजै निज चरणनसैं, सुरतरुकी ठांइ गही रे ॥ सा० ॥ दिलज्जर  
 प्रभुसैं अरस परस अब, वतिया दुखकी आण कही रे ॥ सा० २ ॥  
 विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूख क्युं विसार दई रे ॥ सा० ३  
 ॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, रुद्धसार लय लाग रही रे ॥  
 सा० ४ ॥ इति पदं ॥

रूपानिध वीनती अवधारो ॥ ए चाल ॥ सावरिया पास  
 जी सुख दीजै, प्रभु अरजी दिलज्जर लीजै ॥ सा० ॥ मनमोहन  
 मूरति थारी, आतम अनुभव उपगारी, सुध लीज्यो नाथ हमारी ॥  
 सा० १ ॥ करुणारस अनृत कूंपी, लवलोन सुधानंद रूपी ॥ तन मन  
 पद पंकज सूंपी ॥ सा० २ ॥ जब पारस नाम उचार्यो, रघुपति  
 को कारज सार्यो, प्रभु थरलीधर निसतार्यो ॥ सा० ३ ॥ शिव-

शेकरे रमणविहारी, प्रभु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता  
 धारी ॥ सां० ४ ॥ मुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये  
 ताजा, जिनजुवन करावण काजा ॥ सां० ५ ॥ शिववामी सुंदर ठा  
 जै, जिनमंदिर शरस विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६  
 ॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसे प्रे  
 म लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अजिनव श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन  
 वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ नगणीसे नग  
 णपचासे, सुदि पांचम यतन विलासै, प्रभु माधव माश हुलासै  
 ॥ सां० ९ ॥ हितवल्लभ प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत  
 रंगी, रुद्रसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववामी सुमं  
 तेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ रुषभदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे ठोर चला विणऊरा ॥ ए चाल ॥ तुम जो रुष  
 भ प्रभु धारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकनर  
 न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सुरतिधारी, कंद  
 रपदर्य विषधारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी,  
 प्रभु नए जगतसे न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पी  
 यूस सहज सुखजीने ॥ माया ढाया तज दीने, आगम गम अंतर  
 चीने, जया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विभूषा  
 त्यागी, अध्यात्म रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपाणी, वर  
 ध्यान धरै अनुरागी ॥ शैलेसी करणकुं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रम  
 धर नयर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर  
 चंदा, दील रंजनमें तुम बंदा, प्रभु सुखसंपति दातारा ॥ ज० तु० ४  
 ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपे कुशलनिधाना ॥ रुद्रसार  
 करत गुण गाना, प्रभु कीजै आप समाना ॥ अब जगमिग ज्यौतिस  
 तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पद ॥

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अगमडुं१ वाजै चोधमा, सवाइ मंका साहेबका ॥ ठननं२  
अवाज होता, महेल वनाया गगनोका ॥ कढ्याणपारसनाथ ना  
मका, नित२ वाजै चोधमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्व  
नाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता  
वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोजे, जैसा सरद पूनमचंदा ॥  
स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोरु देवता  
मिलकर, ओठव करणेकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ  
नाम लेता देवा ॥ चौसठ इंद्र अरज करंता, चंड सूरज करता सेवा  
॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको  
पार न पावै, जिनका गुण हे सबसैं वमा ॥ ३ ॥ दूर देससैं आया  
जोगी, वमे जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वमे२  
जोके खाता, बारे वरसकी उमर प्रज्जुकी, ठोटेपनमें बहोत कला  
॥ बरोवरीके लिये सोवती, तपशीकुं देखण चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देख  
के बोले जोगीसैं, एसी तपस्या कुं करता, न जोगी तेरे वमे लक  
मेमें, वमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता,  
तोवी जोगी नहिं सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमा  
सा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, वमा नागकुं जला  
दिया, दिया सार नवकार नागकुं, धरणीधर पदवी पाया ॥ वमी  
उमेदसैं आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी  
आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज ठोरके चले जं  
गलमें, जुगतीसैं कानसग्न किया ॥ वमे धीर गंजीर प्रज्जुने, तीन  
लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वमी धूपमें, नीरंजन निराका  
र खमा, कमठासुरने किया कमाका, नज्जमंजल बादल चमा ॥ ७

॥ उसी दिन्नको कमठासुरने, पिठला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी  
 सेना लेकर, जलकूं जलदी बुलवाया ॥ वरुा किया घनघोर जोरसें,  
 पवन चलाया मतवाला ॥ कम्हर कर हुआ कम्काका, चमक बी  
 जका उजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता  
 चौताला ॥ सात खूटकी वरुी ऊनीमें, प्रभु खमा दे मतवाला ॥  
 नाक बरोबर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वरुा, पराजय नहिं  
 होय जिनुंका, एसा प्रभुका ध्यान चढा ॥ ९ ॥ संकटसें सिंहासन  
 मोला, हुवा घंटका आधाजा, अबधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धात्रे  
 धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया,  
 पदमावतीने लिखे शीस पर ॥ शेषनागने ठत्र किया ॥ १० ॥  
 क्रोम ऊपाय तो किया कमठनें, कुठबी इलाज नही चलता ॥ तर  
 एवाला साहिब उनकूं, ठलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज  
 द्वारके, कमठहाथ दो जोर खमा ॥ धरणीधर साहिबके आगे, अरजी क  
 रता खमा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुंचै, पार्श्वनाथ शुभ्र  
 मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला  
 ॥ बीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वरुे देवलमें  
 इंदर सोहे, घंट वाजता चौताला ॥ १२ ॥ वरुी जुगतसें सिंहा  
 सण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगों पर शिखर चढाया,  
 दरवाजा शुभ्र केवलका ॥ ज्ञानमंरुलके आगे शोभता, मूल गुंजा-  
 रा आरसका ॥ पीठै पच्चीस देरिया सोजित, सिरे काम सिंघा-  
 सणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहै, सहस्रफला प्रभु पार-  
 सका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, बहू काम है सारसका ॥  
 अठारसे पैसठ सवाई, मुहुर्त फागण मास जला ॥ सुदी तीजकूं  
 तखते वैठै, जगो पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश के संघ बहु  
 मिलकर, तेरे दर्शनकूं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वरुी



॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अग्रमुंड १ वाजै चोधमा, सवाइ मंका साहेबका ॥ वननं २  
अवाज होता, महेल वनाया गगनोका ॥ कढ्याणपारसनाथ ना  
मका, नित २ वाजै चोधमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिव, पार्श्व  
नाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता  
वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोजे, जैसा सरद पूनमचंदा ॥  
स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोरु देवता  
मिलकर, ओठव करणोकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ  
नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंड सूरज करता सेवा  
॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको  
पार न पावै, जिनका गुण हे सबसैं वमा ॥ ३ ॥ दूर देससैं आया  
जोगी, वमे जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वमे २  
जोके खाता, वारे वरसकी उमर प्रजुकी, गोटपनमें वढोत कला  
॥ बरोवरीके लिथे सोवती, तपशीकुं देखण चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देख  
के बोले जोगीसैं, एसी तपस्या कुं करता, उ जोगी तेरे वमे लक  
मेमें, वमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता,  
तोबी जोगी नहिं सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमा  
सा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, वमा नागकुं जला  
दिया, दिया सार नवकार नागकुं, धरणीधर पदवी पाया ॥ वमी  
उमेदसैं आया साहिव, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी  
आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज गोरुके चले जं  
गलमें, जुगतीसैं काजसग्न किया ॥ वमे धीर गंज्जीर प्रजुने, तीन  
लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वमी धूपमें, नीरंजन निराका  
र खमा, कमठासुरने किया कमाका, नजमंमल वादल चमा ॥ ७



सब लाया ॥ प्रभु निरममती गतमाया ॥ ( उहा-साखी ) हस्तिना-  
गपुर नगरमें, श्रीश्रेयांशकुमार ॥ इहुरस प्रभुकुं वहिराया, देव कर-  
त जयकार ॥ अक्षयतृतिया जई परकासा ॥ ल० ४ ॥ करम इन  
केवल चिदरासी, नाथ जये अविचलअविनासी ॥ शिखर केलाश  
आप वाशी, नाम शिव ब्रह्मा विष्णु ज्ञासी ॥ ( उहा-साखी ) ॥  
कुंदण काया सोहनी, परम धरम जिनचंद ॥ जमी  
घमी मनमोहन मुरति, लाखमी धरत आनंद ॥ फूल रही  
मीना उजियासा ॥ ल० ५ ॥ कृश्र घनस्याम मूरति नीकी, सजल  
घन घटा प्रभुजीकी ॥ नयण अरिविंद जमरकीकी, जक्तिरस कुं  
ल पुर सीखी ॥ ( उहा-साखी ) ॥ जगणीशय अमृतालमें, ज्ञानपंच  
मीरंग ॥ कूरु कपटतज जेट जई जिन, सुंदर कमलासंग ॥ कुशल  
कृदसार चरण दासा ॥ ल० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दीवाली लावणी ॥

प्रभु वीर धीर मणि हीर दरस बलिहारी, प्रभु पावापुर  
निर्वाण संघ सुखकारी ॥ प्रभु केवल ज्ञान प्रकाश तत्व दरसाये,  
प्रभु चन्द्र सहस मुनिराज संघ सुखदाये ॥ प्रभु चरम समय  
निज देख पावापुर आये, तब सुरवर सुखकर समवसरण विरचाये  
॥ क्या सघन तरुगत शोक रमण ठवि ठाये, जामंरुल धजवर  
हुंहुं नाद सुणाये, मणि कनक रतनका बीच सिंहासन जारी  
॥ प्रभु पावा० १ ॥ तब हस्तपाल नरपति सुरपतिके आगै, प्रभु  
शोले पहर धुनि अमृत उपम लागे ॥ पंचम आरेके ज्ञाव प्रगट ग  
त रागे ॥ ज्ञापै सिद्धारथनंद सुणत अमज्जागे ॥ तिहां नरपति सु  
रपति खगपति सेवा मागे, जय२ श्रीजगपति नाथ सरस रस जागै  
॥ गौतमकूं जेजा प्रतिबोधन उपगारी ॥ प्रभु पा० २ ॥ अम्मावश पिठली  
रैन मुगतिपद लीने, इंद्रादिक मिलकर अधिक महोच्चवकीने ॥ गौ

तेरी अकलमाया ॥ धर्मचंद जोरता सवाईने, वरु साहमी वा-  
 लसल्य किया ॥ सकल संघकी आज्ञा लेकर, वरु शिखर निशान  
 दीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने, खेमचंदने खुब किया ॥  
 पारसनाथकुं तखत बैठाकर, जगोर पर नाम किया ॥ कीर्त्तिवि-  
 जय गुरुराजकुं प्रणमूं, पाय गुरुका राज वरु ॥ गुलाबचंद साहिब  
 के आगे, जिनसासनका काम वरु ॥ १६ ॥ तेजा गाता चंग रंग  
 में, ग्यान ध्यानसें खरुआ, हाथ जोरकै अरजी करता, पारसनाथ  
 जी तूही वरु ॥ वरु काम तेरे है साहिब, मुखसें नहि कहणे  
 आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी, जविजनकुं सुखके  
 दाता ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आखातीजकी लावणी ॥

रूपज्ञ तेरी सूरतका प्यासा, लगी मोहे दरशनकी आसा ॥  
 वंश इक्काकु नरुचंदा, नूमिपति नात्तीके नंदा ॥ मात मरुदेवा  
 सुखकंदा, प्रगट जये जगजन आनंदा ॥ (उहा-साखी) रेणु पूंज पर  
 आपकै, गये मिथुन जल लैन ॥ आसन कंप जये सचिपतिको,  
 आयो तिलक पद दैन ॥ नाथ जये वसुधर सुखरासा ॥ ल० १ ॥  
 मौखि पर कतक मुगट राजै, मालगल मोतियनकी ठाजै ॥ श्रवण  
 सुग कुंरुल अति साजै, निरख ठवि कोटि ज्ञानलाजै ॥ (उहा-साखी)  
 हीर वीर सोजावणी, आप ताप ऊलकंत ॥ युगल अलंकृत देख  
 प्रभूकुं, चरण नीर वरसंत ॥ विनीता धनदपुरी वासा ॥ ल० २ ॥  
 सुनंदा सुमंगला राणी, जोगसें योग प्रीत ठानी ॥ जये शत पूत्र  
 सुगुण खाणी, प्रभूने दिया राजधानी ॥ (उहा-साखी) चौसठ विद्या  
 भारकी, पुरुष बहोत्तर ग्यान ॥ जग विवहार चलाया प्रभूने, प्रजा-  
 पती अजिधान ॥ मुनि हुय तजै जगत फासा ॥ ल० ३ ॥ लाज  
 अंतराय छुदै आया ॥ बरसदिन जोजन नहि पायां, जेट मणिकंचन

धन२ वो सदर सुकाम जिहां जिनराजै, धन२ वो नर नर नार सुण-  
 त धुन साजै ॥ जो पर पानं इक वार मिलणके काजै ॥ तो आनं  
 जिन तुम पाश देख डख जाजै ॥ ये सुण जिन मेरा स्वाल कुटि  
 लता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजै ॥ तुम वचन  
 मालती फूल जमर मन रीजै ॥ प्रभु २० १ ॥ क्या समवसरण  
 सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥  
 प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर  
 मीन खुसियाला ॥ अब दीजै कुशल निधान सदा सुविशाला, में  
 चाहुं संग अजंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन जक्ति जमी रुद्धसार  
 नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामबाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद हरख घन वरसण, श्रीसांवरिया म-  
 हाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस गाजै, जहां  
 अश्वशेन वरशैल सुदर्शन राजै ॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै,  
 प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद जाजै ॥ प्रभु कमठ दीन उप  
 देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज जोग अचलपद साजै ॥ पा  
 रसके संगत लोह फनक जयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-  
 णूं साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि  
 प्रकाशी ॥ श्रीअन्नयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल  
 सें गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी,  
 श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग  
 रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुधिर  
 सुविलासी, नित आनंद उज्जव होत धर्म उजियासी ॥ प्रभु रामबाग  
 विच जुवन वण्यो केलासी, क्या अदभुत महिमा चंडकिरण  
 परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु उरजन

तमने सुणकर वीतरागपद चीने, तब जगत प्रकाशन ग्यान सुधा  
 रस पीने ॥ मेरी धन्य घनी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हि  
 यरा हरष न माथ फरकता सीने ॥ जई दीवाली जग बीच तन्नीसे  
 जारी ॥ प्र० ३ ॥ तहां देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज ऊ  
 ठालिया नरानरी ॥ तहां जया सरोवर महिमा अपरंपारी, नंदीवरधन  
 ने किया जुवन विस्तारी ॥ प्रभु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रभु  
 दो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल ठवि जविकूं लागत  
 प्यारी ॥ प्रभु० ४ ॥ प्रभु धरमचंड हो आप आप जस राजा ॥  
 क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसे जमाव  
 अंगिया साजा, प्रभु मुन्नी चुन्नी अविचल वाजत वाजा ॥ सन  
 जगणीसे अमताल कृष्ण पख गाजा, जये कार्तिक दिन निर्वाण  
 जेट माहाराजा ॥ प्रभु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रुखसारी ॥  
 प्रभु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजै, प्रभु रहम नजर  
 कर दिलजर दरसण दीजै ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी  
 लागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करूं नाथ  
 तुम दूर वसे वरुजागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी  
 ॥ नहि इस दुनिया दरम्यान पंथका आगी ॥ मेरे रात दिवस इक  
 ध्यान जया अनुरागी ॥ जो पल जर पाउं संग अमृतरस पीजै ॥  
 प्रभु रह० १ ॥ मैं जरखणीके बीच सुपन प्रभु पाया, प्रभु अर  
 स परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोमर आनंद हरख जर  
 आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो परतिख  
 देखूं नाथ चरणकी ठाया, मेरा जनम सफल हो जाय करूं दिल  
 चाया ॥ तुम जाणत हो घट बात ढील नहि कीजै ॥ प्रभु र० २ ॥

धन२ वो सदर मुकाम जिहां जिनराजै, धन२ वो नर नर नार सुण-  
त धुन साजै ॥ जो पर पाउं इक बार मिलणके काजै ॥ तो आउं  
जिन तुम पाश देख डख जाजै ॥ ये सुण जिन मेरा स्वाल कुटि  
लता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजै ॥ तुम वचन  
मालती फूल जमर मन रीजै ॥ प्रभु २० ३ ॥ क्या समवसरण  
सोनापद पदम नजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥  
प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर  
मीन खुसियाला ॥ अब दीजै कुशल निधान सदा सुविशाला, में  
चाहुं संग अजंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन जक्ति जमी रुद्धसार  
नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामबाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद हरख घन वरसण, श्रीसांवरिया म-  
हाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस बाजै, जहां  
अश्वशेन वरशैल सुदर्शन राजै ॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै,  
प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद जाजै ॥ प्रभु कमठ दीन उप  
देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज जोग अचलपद साजै ॥ पा  
रसके संगत लोह फनक जयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-  
ण साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि  
प्रकाशी ॥ श्रीअजयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल  
सें गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी,  
श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग  
रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुधिर  
सुविलासी, नित आनंद उहव होत धर्म नजियासी ॥ प्रभु रामबाग  
विच भुवन वण्यो केलासी, क्या अदभुत महिमा चंडकिरण  
परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु उरजन

फंदा तौम मोहकी फासी ॥ जिनचंड सूरेश्वर विजयराजके सर  
सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पाठक हितवृत्त चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री  
संघ सदा कल्याण ज्ञति बुध दीनी ॥ सन् उगणी सथ अमृताल  
माध सुद लीनी, सुज वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल  
हमी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्रसार कहै सुखकार ज्ञतिरस  
पीनी ॥ जइ कंधन काया प्रजु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोंकी, तोरण  
आये फेर मत जानु, तुमकुं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान  
लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ वृषपन्न कोरु जादव  
मिल आए, ए अवसर नही फिरणोकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिर-  
वरकुं सिधाए, हमकुं ठांमी नव जवकी ॥ मेरे सामरे स्याम सखू  
णे, में इहां नही अब रहणोकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी में तो-  
कुं कहतहुं, देखूं शोभा गिरवरकी ॥ मातापिता बाधव सब ठंमी ॥  
जामुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवै राजुल,  
बात सुणो पियु मुऊ घरकी, हमकुं ठोरु चलै निरधारी,  
अब हे पीतम सरणोकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहै तुम सु-  
ण हो राजुल, विषयारस हे विष सरणी ॥ यह संसार असार निरं-  
तर, कर करणी यह तरणोकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासे संयम  
लीयो, जिनसें कारज सरणोकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह  
जव पार ऊतरणोकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहलां राजुल नारी, पो-  
हता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोभा  
हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनसें  
काया उद्धरणोकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल मांहे, फिर फेरा नहिं  
फिरनेकी ॥ ने० ९ ॥ इति पदं ॥



॥ अर्थ जिनदासजी कृत १० घन तथा लावणीओं ॥

॥ अरै तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरौगे जव पार  
॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अव-  
तार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाए डख की एहे संसार  
॥ करो प्रभु निहाल अजी जिनदास, रखो प्रभु मुज चरणोंके पा-  
स ॥ १ ॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली ॥ सोबत  
समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं वाली ॥ अनंत जव वीतगया  
खाली, वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदास मांगे, सदा पद प्र-  
भुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाजिनंदन, चरण पर चढे  
केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटत हे कर्मोंका फंदन  
॥ साध्यो ते शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद-  
गुण जिनदास गावै, शीश चरणोंसें नमावै ॥ ३ ॥ बोलत हे हि-  
या मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पैठामें धर्ममें ध-  
सकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खसा कमर कसकर,  
हटाया कर्मोंका लसकर ॥ श्रीजिनराज जिहाज खासा, शरण जिनदास  
लिया वासा ॥ ४ ॥ समज मन मेरा मतवाला, तुजें नहिं कौइ दृष्ट  
कणवाला ॥ वस्या तेरे हिये कुगुरु काला, दिया ते सुरगति कूं ता-  
ला ॥ फेर तो ममताकी माला, वाल तो जगवंत पर जाला ॥ द-  
यासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया में  
गणधर प्रेमपती, मुजे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्भ-  
यमती ॥ पूठ पर खमे जागता जती ॥ मुजे बलवंत जई शोल सती,  
मिटी मेरी दुर्गतिकी सब गती, ऐसा घन जिन दास गावे, अचल  
पद जक्तिसें पावै ॥ ६ ॥ विकट घट दुर्गतिका जारी, नीर  
ज्यां जरती कुमति नारी ॥ वरखी जन नेणोंकी मारी, मुब्या केइ  
कामी संसारी ॥ इनोकी हो रहियै खुआरी, जीता कौइ सत्य



धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आ  
या ॥ ७ ॥ चैत नर निगोदका वांसी, कराई जगमें तें हांसी ॥  
कुमतिकी पत्नी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे उदासी ॥ कुमतिकी  
वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकुं मासी ॥ हियो  
खोल अरिहंतकुं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया  
नही गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊन  
रं गया पानी, गती तेरी डुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास  
वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ ९ ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी,  
शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें  
लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती तेरी  
सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही  
काजै ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी ॥ चल चैतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये ॥  
कीसीकी झूमी ना कहियै रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजी  
का जेटो रे च०, जव२ संचित पाप करम सब तन मनका मेटो  
॥ सुकृत कीजै—महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण जज लीजै, सम  
कित अमृतरस पीजै ॥ लाज जिनजत्तीका लहिये रे—लाज० ॥  
चल० १ ॥ करो मत मुखसे बढाई, करो०, तज तामस तन मनका  
सुमति कर घर रहणा जाई ॥ रीतसे बोखो—मेरी जान री० ॥  
आतम समतामें तोखो, मत जरम पारका खोखो ॥ मौनकर तन  
मनसें रहियेरे—मो० ॥ च० २ ॥ जोवन दिन व्याततणा संगी रे,  
जो० ॥ अंत समें चैतन उठ चाढ्यो, काया पत्नी नंगी ॥ प्रीत सब  
तूटी—मेरी व्या० प्री० ॥ आजखेकी खरची खूटी, चैतनसें काया  
रूठी ॥ सुख दुःख आप किया सहियैरे—सुख दुः० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता नदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी डुर  
गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा—मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख  
पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चाहिये  
रे—मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे—मु० ॥  
अब अचल अखंमित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ में रूढ्यो चोरासी  
मांही जूढ्यो में जरम, जूढ्यो०॥ महारे उदय अनंता डुख बांध्या  
जब कर्म ॥ में कदियक हुनु रंक फिरयो तज शरम, फि०॥ अरु  
कदियक राजा जयो गरमको गरम ॥ जब गरब आणकर बोढ्यो  
पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनु  
ष्य जनममें चेत धनी शुज आई रे, ध० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर  
का सुख वार अनंती पाया, अन० ॥ मारे शिव समताका सुख  
हाथ नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव जला कर ध्याया, जला०  
॥ में नलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग ज्ञाया ॥ में पम्या  
लोन्नके फंद जोरतो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय  
कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म०  
अ० २ ॥ अब दुर्लज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥  
अब दानशील तप ज्ञाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट  
पाप परिहर रे, पा०॥ अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं  
निर्मल नयणे देख जगतसें सर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान  
अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बैन अर जाई रे ॥  
बे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुऊ मन ज्ञायो सदा गुण गांजं,  
सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जानं ॥ अब जवर  
मांही देव जिनेसर पांजं ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी चरण  
चित द्यांजं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चांजं ॥ स० ॥ ए

चोरासी के माहि फेर नही आउं ॥ यूं अरज करै जिनदास, कीरत  
एगई रे ॥ की० अब० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी ॥ हारे तूं कुमति कलेसण  
नार, लगी क्युं कैमे, ल० ॥ चल सरक खमी रह दूर तुजें कुण  
छेमे ॥ हारे तूं सुमतीको जरमायो, मुजे क्युं बोमी, मुजे० ॥ मेरी सदा  
शाश्वती प्रीत बिन कमें तोमी ॥ तुज बिन सूनी मेरी सेज, कहूं करजोमी,  
क० ॥ उठ चलो हमारी संग सुखे रहो पोढी ॥ यूं फुरश कुमति  
आंसु आंखसे रेमे, आं० च० १ ॥ हारे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति  
में रुवो, सेति० ॥ पक्रमयो साचो जिनराज, संग तेरो टूटो ॥ तेरो  
भूरख माने बात, हियाको फूटो, हिया० ॥ में सहज हुवो हुं दूर  
तार तेरो टूटो ॥ तुम करो दूरसे बात आव मत नेमे, आ० च०  
२ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नहिं पाली, पल० ॥ सुमती  
के लागो संग मुजें क्यों टाली ॥ तूं सुमतीको सिरदार, सुणावे  
गाली, सु० ॥ तेरी हम दोनूं हे नार गोरो जर काली ॥ तूं हम  
कूं छेले दूर सुमतिकुं तेमे, सु० च० ॥ ३ ॥ अब कुमतीको लल  
घायो, रती नहिं मिगियो, र० ॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय  
झगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं जगियो, दू० ॥ जिनराज  
घचनको ग्यान, हिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तूं बात खोटी  
मन खेमे, खो० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका खयाल, इसकका गाना, इस०  
तेरी अलप कमर खूट जाय, नरक उठ जाणा ॥ तैं दिना चार  
जुग बीच लिया है वासा, लि० ॥ तेरे सिर पर बैठा काल, करे  
है हासा ॥ में बोलूं साची बात, ऊठ नहीं मासा, ऊ० ॥ तूं सूता  
है कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज खलक  
में खासा, खल० ॥ तेरे जीवन पतंगका रंग, ऊठ सब

आसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समझ रे दिवाना, स० तु० ॥  
 १ ॥ अब बुरी जलौ सब बात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मी  
 ठा संसार जेद नहीं दीजै ॥ कर वीतराग विसवास, हिये धर ली  
 जै, हिये० ॥ पण नीच नारका संग मांहे मत जीजै ॥ अब सात  
 विसनको संग, प्रीत मत कीजै, प्री० ॥ तोहे डुरगति दे पोहचाय  
 तेरो तन बीजै ॥ तुं सुख दुखका सिरदार, रंक नइ राणा, रं० तुं० ३  
 ॥ तुं विसरगया जुग बीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कु  
 टंबके काज, किया फंद धरका ॥ ते दया धरम बिन खोया, जनम  
 सब नरका, ज० ॥ तेरे पल्ले बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लि  
 या नहीं ते लाज, वखत पर करका, व० ॥ तेरी वीती बात सब जा  
 य जनम थुं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे  
 स्याना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद  
 दिल आया, आ० ॥ मेरी जगी जूख सब प्यास सुधारस पाया ॥  
 मेरे सिर पर तुम शिरदार, जितेसर राया, जि० ॥ में चाहुं चर  
 णकी सेव सफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसनकी, मेरे ए  
 हि माया, मे० ॥ थूं अरज करै जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब  
 बुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार,  
 सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस  
 असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर गजै ॥  
 ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्ञान, जगत सब लाजै ॥ एसो नेम  
 नवल इक वींद, अनोखो बाजै, अ० ॥ सुरनर सब गावै गीत, गनन  
 में गाजै ॥ अब दोरु२ सब डुनियां, देखणे आई, दे० ॥ दे०  
 १ ॥ अब चढा नेम तोरणकू, आनंद दिल धरकर, आ० ॥ सज  
 आयै सुरंगा साज, किलोलां करकर ॥ में पायो परमानंद, हरख

हिया ज़रकर, ह० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, मेरो मन हरकर ॥  
 सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० दे० २ ॥ अब  
 इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, श्या० ॥ पशुअनकी सुणी  
 पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्या-  
 गी, शिवरमणीके शिर वींद, वण्यो वैरागी ॥ अब महल चढ़ी रा-  
 जुलकूं, खनी ठिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके  
 नही पाणी, टि० ॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी ॥  
 अब कठन जीव डुरगतको, बन्यो मेंदानी, ब० ॥ जिनदास करो  
 जव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी  
 गई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक बीच मगसी पारसका बाज रह्या रुंका, मुगति गढ  
 जीत लिया वंका रे, मु०॥ मुल०॥ करमदल बलकूं कय कोया रे,  
 क० ॥ मुगतिमहलमें केलि करै, अनुजव अमृत पीया ॥ शाशता  
 जीया, महाराज शा० ॥ कढ्याणक कारज कीया, अमरापुर पद-  
 वी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥ मुल० १ ॥ प्रजु  
 पारसजजले ज़ाईरे, प्रजु पा०॥ ज़ाव ज़मरकामेट जोत तेरी जगमें  
 सवाई ॥ टेककूं टालो, महाराज टे०॥ चंचल चितसे मत चालो, गुमान  
 गरबकूं गालो, गरबसे धूरु मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे  
 शुज ज़ाग्य नदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांहि प्रजु  
 मगसी पाया, पापसे मरता, महाराज पाप० ॥ ज़वि जीव ध्यान  
 दिल धरता, श्रावक नित समरण करता, मरण डुख मिट्या मेरे  
 अंगका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमा मगसीकी अब जाणी रे,  
 म० ॥ नहि ऊधनी मेरी आंख विलोया परब विना पाणी ॥ में  
 जिनवर जाच्या, महाराज में जि० ॥ जिनदास जिनंदसे राच्या, म-

गसीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संका रे ॥ क० मु० ४ ॥

॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती ना रही  
रे, पुदगलमें मान्यो सुख कल्पना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहे  
जैन निज सार संघाते आवै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वैगो,  
विषय गुण गावै ॥ अमृतकुं अलगो ढोल, विसन विष खावै, वि० ॥  
सुगतीको मारग मेट, उवटमें जावै ॥ थारी तुष्ट जिंदगानी मांहि, विक-  
ल बुध जई रे ॥ पु० १ ॥ थारे धन दोलत जंमार जस्याहे मोती, अ-  
स्या० ॥ सत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसले तेल  
फूलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख उठ आवै, अबला तेरो मुख  
जोती ॥ एसी संपत बिन मांहि सरब क्य जई रे, स० ॥ पुद० ॥  
२ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सु-  
खजर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सजिया शोले सणगार, नारिसें  
मोह्या, ना० ॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक नि-  
गोदकी वाट, पकर कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातौ  
आठ मद मांहि, गरबसें बोले, ग० ॥ में सुख संपतको नाथ,  
मेरे कुण तोले । दुर्बल करता पोकार, पलक नही खोलै, प० ॥  
चाकर हुय रह्या हजूर चमर सिर ढोलै, अब अवसर आ-  
यो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥ पु० ४ ॥ कायासें कीयो लाम वना  
इ चंगी, व० ॥ पलजर परवार्यो पुन्यतणो तिहां जंगी ॥ पकरी  
परजवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ तेरो हंस गयो आकाश  
काया पनी नंगी ॥ जिनदास कहे करमोंसें जोर तेरा नही रे, जो०  
॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ नेमजिन लावणी ॥

तुम तजकर राजुल नार, तजा सब घर रे, तजा० ॥  
में नमुं नेमके पाय गया गिरवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर  
पछे लागी, तुम त्याग चले वनखंर जये वैरागी ॥ अब राजुलसी



संसंवती जावसैं त्यागी, जा० ॥ आरे अंतरघटमें ज्योत ज्ञानकी  
जागी ॥ यूँ रोती राजकुल नार नेण ज़रर रे, नेण॥में० १ ॥ में अरज  
करुं करजोम, करो मन परसन, करों० ॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार,  
देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख संखियनका देख, लग्यो मन तरसन,  
ल० ॥ मेरे आवैं नयणमें नोर लग्यो नित वरसन ॥ मेरे नेम मिल-  
नकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ में० २ ॥ में नहि कीनी त  
कसीर, चले क्यूं रूठै, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस  
चूटे ॥ में रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूटे, जो० ॥ में चलूं  
पियाँके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं उर, जगतमें वर  
रे, ज० ॥ में० ३ ॥ तुम तारी राजकुल नार, मुगतमें मेली, मु० ॥  
पीठै नेम गये निरवाण, करम सब ठेली ॥ में नित ऊठे परजांत,  
नमुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहिं उर जगतमें बेली ॥ यूँ  
अरज करे जिनदास सुणों जिनवर रे, सु० ॥ में० ४ ॥ इति पद ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहिं पाया, दूजेकुं क्या  
समझावै ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, होयो हाथमें नहि आवै ॥  
दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रिका  
परवसमें पमियो, ग्यानकला कहो कैसें जगें ॥ तृष्णाने जग लूट  
लियो दे, कपट करी परधनकुं ठगै ॥ खायर लोही मांस बधायो,  
प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपतकी करै चूंथणी, चरचासैं  
चित नही लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकुं नही देखै,  
दूजाका अवगुण जाखै ॥ हिंसाहीमे हूओ हजुरी, दया दूर दिलसैं  
नाखै ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणकै रसकुं चाखै ॥  
तीनूही प्रणमें राग धरामें, सरणे जिनवर किम राखे ॥ ठग फा-  
सीगर चोर अन्याई, धनके मिस इनकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥  
२ ॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहि पूजै ॥



नही गाममे रुख अंबको, एरुं अंब सरिखो सूजै ॥ पारख नही  
 हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुजै, गामर देख कदै मुज  
 घरमें, कामधेनु इतनी दूजै ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा, अव-  
 गुण किम गाया जावै ॥ वं० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें  
 भातो, लोभ मांहे लपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी,  
 पीर पारकी नहिं सहतो ॥ जगति नहीं गुरु देव धरमकी, कठन  
 वचन मुखसें कहतो, अंतर आंट न खुलै हियाकी, पूठ परमपदकूं  
 देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥  
 वं० ही० आप० ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निग्रंथकूं, वे जिन  
 मुझधारी हे ॥ पुलक ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे  
 ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवै, गत निग्रंथकी न्यारी हे ॥  
 कनक कामनीके नही जोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ ठ  
 कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काटकर के-  
 बल पावै, ज्ञानगरथ गुण जारी हे ॥ न० ३ ॥ शुद्ध श्रद्धासें सुम-  
 ती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै,  
 उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ करूं२ में ऐसे सदगुरु, शिवर कटप जिन धारी हे ॥  
 सरधा शुद्ध सदा उपदेशी, जिविजनके उपगारी हे ॥ करूं२  
 में० १ ॥ ज्यार निक्षेपे सप्त जंग नय, देश काल आचारी हे ॥  
 विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २ ॥  
 सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्नव अरु  
 पाखंरु खंरुते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी  
 अरु संवेगपही, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद  
 साधै, कहे पाठक रुद्धसारी हे ॥ करूं२ में० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ कुगुरूकी लावणी ॥ तजुं० में उन कुगुरूकुं, कनक का-  
मनी धारी है ॥ ज्ञान ध्यानकी बात न जाणे, अष्ट कर्मसें ज़ारी  
है ॥ तजुं० १ ॥ करी कपाल वज्रूत लपेटी, शिर पर जटा बधा-  
री है ॥ कान फामकर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी है ॥ तजुं०  
२ ॥ जोग लेइ जग जीव विणासै, वे मद मांस आहारी है ॥  
कूमा पंथ जगतकुं करतां, मुखसें कहे आचारी है ॥ तजुं० ३ ॥  
कहूं नगुण कुगुरूकां कब लग, साथ नही संसारी है ॥ आप सुबै  
नरनकुं भूबावै, दुर्गतिका अधिकारी है ॥ तजुं० ४ ॥ समकित  
श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकुं प्यारीरै, जिनवरकुं जिनदास बीन-  
वै, कुगुरू संग खुआरी है ॥ तजुं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास जूगो रे जूगो, येने  
लेइ लाकमी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं नरतो, ग्यान  
दियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही धमतां, जैसो लकमको ठुंगो  
॥ यो० १ ॥ जणवा गुणवाका गुण नहिं आया, कोरोही पक-  
मयो पूगो ॥ गपोमा सुणकर लोक पूजता, ए अलग मालको ठुंगो  
॥ यो० २ ॥ पंमित गुरुकी सोबत पाई, चेत्यो ना हीयाको फूटो,  
साचा नरको संग न करतो, कूम कपट नहीं बूटो ॥ यो० ३ ॥  
जूगोही बोले जूगोही चालै, कपट करे एक मूगो ॥ साचो एह अ-  
सार देखके, जिनदास सबसुं रूगो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह म-  
स्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वांस समर ले साहिब, आज घटे  
तनकी ॥ खबर नही है जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो क-  
रले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंरुल रवी चंडमा,  
सज्जी चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां  
जलकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग है सुपणेकी माया, उस

बूंद जलकी ॥ विणस जावता वार न लागै, डुनिया जाय  
 खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी हे मंगल-  
 की ॥ हंसा ठाम चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥  
 मनमावत तन चंचलहस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सदगुरु अंकुश  
 दीया आनके, वातां जई अलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बं-  
 धव जई, सब जन मुतलबकी ॥ काया माया सबे कारमी ॥ ए  
 तेरे कबकी ॥ ख० ६ ॥ जूठ कपट कर माया जोमी, कर वातां  
 बलकी ॥ बोजकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय हलकी ॥ ख०  
 ७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ऐ वाता सलकी ॥ राग द्वेष क  
 पजै नही जिनकूं, वीनती अखैमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन ज्ञांत तिरणा ॥  
 हम डुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसैं, निरणा, दीनपति  
 को० ह० १ ॥ घोराघोर तरकके नीतर, नानाडुख जरना ॥ मा-  
 रन तामन ठेदन जेदन, नर देह धरणा ॥ दीनप० १ ॥ कबहुक  
 तिरयंच जोनि पायकै, गलै फास परना ॥ कुधा तृषा अरु शीत  
 उष्णता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विभूति पायके सुंदर,  
 देखै जरना ॥ जब माला मुरजावण जागी, सोच किये मरणा ॥  
 दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके जक्यो, कहूं नांही धिरना ॥  
 साहिब तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून  
 प्ररुप्पा हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप  
 ज्ञावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोहच्यो  
 मुगति मजार ॥ २ ॥ चवदै सहस साधु हुआ, आर्या ठत्तीस ह-  
 जार, लाखो श्रावक श्राविका, पाया जवजल पार ॥ ३ ॥ (चाल-हीर)

रंजके ख्यालकी) मेरी अदावत प्रजुजी कीजीयै ॥ जिनशासन ना-  
 यक, मुगती जाणेकी मिगरी दीलियै ॥ जि० ॥ खुद चेतन मुद-  
 ई बनादे, आतुं करम मुदाला ॥ दावा रसता मुगति मारगका,  
 धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १ ॥ तप कागद इष्टांम लिया, त-  
 लबाणा क्रमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजबून वणाकर, अरजा  
 थान गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ में जाता था मुक्तिमारगमें, करमोने  
 आघेरा ॥ धोखा देकर राह जुलाया, लूट लिया सब मेरा जी ॥ जि०  
 ३ ॥ बहोत खराब किया करमोने, चौरासीके मांही ॥ डस्क अ-  
 नंता पाया मेने, अंत पार कबु नांही जी ॥ जि० ४ ॥ सच्चे भिले  
 वकील कानूनी, पंच मद्दाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा केना, तब  
 में अरजी मारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आ-  
 तुं गवा बुलावो ॥ शीख असेसर वमा चौधरी, उसकूं पूठ भंगावो  
 जी ॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी ॥  
 हाजर आवो जुआव लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥  
 जि० ७ ॥ आतुं मुदा लै हाजर आवे, मोह मुगत्यार  
 बुलाये ॥ ह्यार कपायरु आठे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये  
 जी ॥ जि० ८ ॥ ( ढेर मुदायलेकी ) ॥ जिनशासन ना-  
 यक, जूग दावा दे चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही बहकाया  
 इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, एसा फरेब  
 मचाया जी ॥ जि० ९ ॥ विषयज्ञोगमें रमिया चेतन, घाट  
 न जाणा ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ता  
 जि० १० ॥ हाजर खमे गवाह हमारे, पुठियै हाल  
 बिना लियां करजा चेतनसें, कैसें करे किनारा जी ॥  
 ( ढेर मुद्दीकी ) ॥ चेतन कहै सतावी मांही,  
 म सिरदार ॥ इमानदार है गवाह मारे, जाणे सब

जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रजूजी, करम फरेबी नार  
जीव अनंते राह चलतकुं, लूट चोरासीमें मारी जी ॥ जि०  
१३ ॥ बमेर पंमित इन लूटे, ऐसा दम वतलाया ॥ धरम क  
नर पाप कराया, ऐसा करज चढ़ाया जी ॥ जि० मे० १४ ॥  
सल एन सरकारी सूत्रमें, मन मत अर्थ धसाया ॥ धर्म ए  
हिंसा कहकर, उलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥  
अर्थसें वेद पढ़ाया, हिंसक यज्ञ वताया ॥ इसके फलसें स्वर्ग  
खाकर, ऐसा मुझे सतायाजी, जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे  
वताया, तपस्या सेती मिगाया, इंडिय सुखमें मगन करीनै, ज  
जाल फेलाया जी ॥ जि० मे० १७ ॥ ऐसा करो इनसाफ प्रजू  
अपील होण न पावे ॥ हकरसी चेतनकी होवे, जन्म मरण  
जावै जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दो  
कों समझाया ॥ चेतनकी मिगरी कर दीनी, करमूका करज व  
या जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो आ कर्मोका, चे  
सेती दिखाया, जि० ॥ सुध संजम जब करी जमानत, चेतन मि  
पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन् उगणीस अठाई  
जि० मे० २० ॥ इति ॥

॥ अथ अनुभव पद डिगरी ॥

साहब अदालत पर बैठ, श्रीपारस प्रवीण एन उत्तम  
लाए है ॥ शील हे सिरदार और दान हे दरोगा जाके, दयारु  
वारण सत्त श्रावण पर आए है ॥ ग्यान हे चपरासी ताको  
ग्यो हे मोहोसल ताकी, माल जामनीमें श्रीजिनवरजी लिख  
है ॥ रोसकी रसूम नर कमीसन लगे कर्मनकुं, मोहकों म्याद  
सत्यार लटकाये है ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जब जीवकी जुवान  
धी, तबके कुब स्वाल जबाब सतगुरुने बताए हैं ॥ ओमकार

जी पायो पकड़्यो अरिहंतजीको, अनुज्ञव पद पायवैकी मिगरी  
कराय लाये है ॥ अबतो दरकास में करी हे तुमारे पास, साहब  
जिनराज अरज मेरी सुण लीजीयै ॥ अष्ट करम आठुं जाम करत  
हे कार साजी, साहब बुलाय इसें पिसेमान कीजीयै ॥ २ ॥  
मेंतो हूं गरीब मेरी करेगा नकीली कोन, पारस प्रवीण मेरी मि-  
खल आज कीजीयै ॥ हारुं तो हाजर हजुरीमें रह्या करुं, जीतूं  
तो लगाय जुगल चरणनमें लीजीयै ॥ अब तो फरियाद नाथ  
करी हे तुमारे पास, मेरी दाद दीजीयै तो रावरी वरुई हे ॥ मु-  
नसबकी बात ओर मामलत अदालतकी, अब तो अफील मान अ-  
रजी लगई हे ॥ जूठमूठकार साजी करत हे पांच तीन, सांचो  
मत जैन जाकी अैन अधिकाइहे ॥ मेरेही पांच लोक मोहीकों जू-  
ठावत हे, जाते ग्वाही श्रीजिनराजकी लिखाई है ॥ ठोमकार सा-  
जी पायो पकड़्यो अरिहंतजीको, अनुज्ञव पद पायवैकी मिगरी  
कराय लाए है ॥ ४ ॥ इति मिगरी संपूर्ण ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी ज्ञारी, देखनकुं आवै नर नारी ॥ अनं-  
ता घोमा नर हाथी, मिनखकी गिणती नही आती ॥ उंठ पर  
धजा जो फरराती, धमकसें धरती थरराती (डुहा-साखी) समुद्रवि-  
जयजीका लामछा, नेम ननोंका नाम ॥ राजुलदेकुं आया परणवा,  
उग्रसेन घर वाम ॥ प्रसन जई नगरी जब सारी ॥ नेमकी० १ ॥  
कसुंबल वागा अति ज्ञारी, काने कुंमल ठवि है न्यारी ॥ किलंगी  
तुररासुखकारी, माल गलमोतियनकी मारी ॥ (डुहा-साखी) काने  
कुंमल जगमगे, शीश मुगट जलकार ॥ कोमि जानुकी करुं उप-  
मा, शोजा अधिक अपार ॥ वाज रह्या वाजा टंकसारी ॥ नेम०  
२ ॥ बूट रही ननकी ठरराई, व्याहमें आये वमे ज्ञाई ॥ जरोखे



राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ (डहा-साखी) नग्रसेनजी देखके, मनमें करे विचार ॥ वहीत जीव करि एकठां, वामौ ज-रयो अपार ॥ करी सब जोजनकी त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव सबही कुरत्ताए ॥ नेमजी वचन फुर-माये, पशुजीव काहेकुं लाये ॥ (डहा-साखी) याको जोजक होवसी, जान वासते एह ॥ एह वचन सुणी नेमजी, अरहर कांपे देह ॥ जावसें चढ़ गये गिरनारी ॥ नेम० ४ ॥ पीठेसें राजुलदे आई, हाथ जब पकम्यो बिन मांही ॥ कहां तूं जावै मेरी जाई, उर वर हेरूं मुकताई ॥ (डहा-साखी) मेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥ और ज़ुवनमें वर नहीं, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम० ५ ॥ सहेड्यां सबही समजावै, हियै राजुलके न-हि आवै ॥ जगत सब जूगो दरसावै, मेरे मन नेमकुमार जावै ॥ (डहा-साखी) तोम्या कांकण दोरमा, तोम्या नवसर द्वार ॥ काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सध सिणगार ॥ सहेड्यां सबही विल-खाणी ॥ नेम० ६ ॥ तज्या सब शोले सिणगारा, आनूषण स्तन-जमित सारा ॥ लगे मोहे सबही सुख खारा, ठोमकर चाली निर-धारा ॥ (डहा-साखी) मात-पिता परवारकुं, तजतां न लागी वार ॥ वियोग करके चली आपसुं, जाय चढ़ि गिरनार ॥ फूरति ठोमि मा-प्यारी ॥ नेम० ७ ॥ दया दिल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो बिन मांहि ॥ नेमि जिन गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन बुझवाई (डहा-साखी) नेम राजुल गिरनारपैं, लिनो संजमदान ॥ नवलराम यह करि लावणी, ऊपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध सारी ॥ नेम० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेमनाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

बाई घटा गगनमें कारि, राजुलकुं विरह डख नारि



॥ ग० ॥ चोमासा लग्या रस जिना, अलि अषाढ रंग  
 महिना ॥ च्यारुं तरफसें वादल पिना, बिजलिने चमकणा  
 किना ॥ दिल होत धरकता सिना, में अबला सखी  
 पति हीना ॥ ( उम्माना ) सररररर चलत समीर, अररररर  
 करत सरीर ॥ मररररर मरत समीर ॥ अलि केसी करुं तदबीर,  
 बुरी तकदीर, पीया वित प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ आवणमें  
 श्याम धनघोर, जरजोर बोलते मोर ॥ दाडुर मिल करते दोर,  
 पिनु२ पपइया सोर ॥ ऊरु लग्यो वूंद ऊमजोर, बिच चमके दा  
 मनी कोर ॥ ( उम्मावनी ) खरुखरुख रवधनमाला, तरुतरुतरु  
 जल परनाला, अरुतरुतरु नाला खाला, में डुखी हुई बेहाल, हीथेमें  
 साल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ ज्ञाद्रवमें पवन प्राचीना, बाद  
 लमें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर जीणा, ज्युं बाजै मनोहर  
 बीणा ॥ अब ऐसे कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुझे डुख दीना ॥  
 ( उम्माना ) युं विलपत मुख मुरझाई, सखियन मिल दौरु जगाई,  
 युं विलखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोरुके प्री  
 त, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नहीं धीर, याडुचंद  
 जये वे पीर ॥ ऊठचली नेमके तीर, काटनकूं कर्म जंजीर ॥ प्रीतमसें  
 लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ ( उम्माना ) शिव राजुल  
 नेम सिधाए, इंद्रादिक जसुगुण गाये, जिविजन मिल शीश नमाए ॥  
 मुनि कहे कपूराचंद, प्रेमसे ठंड, जाऊं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज हे, प्रीतम दोनुं प्यारीका ॥ ऊगमा  
 दिल धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोनुं नारीका० ॥ चि० ॥  
 कहंति सुमता सुणारी शोकन मोह लिया प्रीतम प्यारा, अविरत उ-  
 र कषाय इस्कमें झूल गया सुधबुध सारा ॥ तूं वैरण हे जनमरकी

तेरा संग लगे खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होता  
 न्यारा ॥ कहुं खराबी कब लग तेरी तेरा चरत ठंदगारीका ॥  
 जगमा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग  
 अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क जमर है, इंद्री पांच सबादीका  
 ॥ कर सिणगार कसाय सोलेके राग रंग उनमादीका, मेंहुं मोह-  
 रायको ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पाश नही आवेगा  
 वालम वो हे फूल हजारीका ॥ ऊ० २ ॥ सुण रे वैरन वात ह-  
 मारी तेरे संग दुख पावेगा, तेरा महल पाताललोकमें जहां वो  
 वास वसावेगा ॥ संगतके फल नसकूं लगेगा फिर पीठै पठतावेगा,  
 आखिर बेह देवेगी वैरण कैसे प्रीत निजावेगा ॥ मैं समझाजंगी  
 प्रीतम मेरा जो माने दिलदारीका ॥ ऊ० ३ ॥ कुमता बोली वात  
 सुमतसें तेरे संग क्या होणा हे, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख  
 दुख दोनों खोणा हे ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही  
 सोणा हे, नही ऊजावा नही अंधेरा शिख्रा सहज विठोना हे ॥  
 ऐसा मेरा जोग ठोरके सहे न दुख अणगारीका ॥ ऊ० ४ ॥  
 कहती सुमता सुण मेरे प्रीतम इसकी संगत नही करणा, दुक  
 इक सोच करो दिल ज़ीतर मेरी अरज दिलमें धरना ॥ निगोद  
 इसकी बात कठिन हे समझके बूझके नहि पचना, पहली सुखसें  
 फिर दुख उपजै वो सुखसें चातुर मरणा ॥ रतन तीनका तूं हे  
 जोगी मुगति महल सिणगारीका ॥ ऊ० ५ ॥ ऐसे बोल सुणे  
 सुमताके चिदानंद नठके चह्वा, नेणोमें आंसु जर रोती प्रीतमका  
 पकम्या पछा ॥ मत ना बेह दिखावो साजन सोकणकी सुणके  
 सछा, में अबलासें दगा करोगे कैसे दोष तुमरा जछा ॥ मेंहुं  
 दासी जनम२की मानो वचन करारीका ॥ ऊ० ६ ॥ तजके संग  
 कुमतनारीका सुमता प्रेम जगाया हे, संजमसे सिणगार वणाकर

शील सुगंध लगाया है ॥ प्रीत रीतसे सदा मगन हुय मुगतिम-  
 हल जब पाया है, सीख सुरंगी मानो जविजन अपणां दिल सम  
 जाया है ॥ कहें रामरुखिसार प्यारसे तजो ख्याल संसारीका ॥  
 ऊ० ७ ॥ इति पदं ॥ नेमप्रभूकी लावणी ॥ सज शोले  
 सिंगार हुई हुसीयार सहेब्ब्या सारी, चली राजुल गिरनारी रे० ॥  
 कर केसरिया बेस ठिठक रह्या केश, अजब नखराली, खुली तो  
 जेसे केसर क्यारी रे ॥ गल मोतियनको हार, वणी तो दिलदार  
 हंस जेसी चाली, मधुर मुख वैण नञ्चारी रे ॥ ( उम्मावणी ) नेण-  
 नेमे कजरा हृद नीका, सिर सोहै रतनोका टीका ॥ चंदवदन सा  
 हुसन परीका, लगी पियासे लगन, मगन दिल सघन घटा जेसे  
 कारी ॥ चलीतो रा० १ ॥ करे पियासे अरज गरज मेरी सुण  
 वालम दिल वाते, गुने विन क्युं ठिठकाते रे ॥ में चरणनकी  
 दाश रहो मेरे पाश जोवन मदमाते, जोर कर शीश नमाते रे ॥  
 ( उम्मावणी ) आठ जवनकी प्रीत हमारी, आप पिया में प्रीतम  
 प्यारी ॥ साजन प्रीत निज्जा इकतारी, तेरे विना नहीं चैन, नींद  
 नहीं रैन, सज्जी तो लगे खारी ॥ च० १ ॥ सजके खुब वरात साथ  
 लिये राम कृष्णसे जाई, पहली तो क्यों लगन लगाई रे ॥ अब  
 क्या देखी खोट लगा दिल चोट चला मुरजाई, कदो मुज्जकूं सम  
 जाई रे ॥ ( उम्मावणी ) तुमसे प्रीतम नहीं कोइ स्याणा, दिलमें  
 अरज हमरी लाणा, सुखसे रंगजर चैन उम्माणा ॥ नेणा वरसे  
 मेह लग्या तुमसे नेह, विरहकी मारी ॥ च० ३ ॥ नेम प्रभु दे  
 ज्ञान एक घर ध्यान सदा निज्ज जाणी, प्रीतका अंत न आवे रे ॥  
 विजली जेसी चमक दमक जेसे उस बूंदका पाणी, अंत मोती  
 खिर जावे रे ॥ ( उम्मावणी ) ज्योतिरूपका अज ले सरणा, नित  
 प्रेम उसीसे करणा, नर किसीके फंद नही परणा, मेरा वचन ले

मान, ज्ञान धोखेकी समझले सारी ॥ च० ४ ॥ गुणवंतोंका संग  
 रहे नित रंग समझले स्याणी, जगत थोमी जिंदगानी रे ॥ चली  
 जाय सब खलक पलकका नहीं ज़रोसा जाणी, करो सुकृतकी  
 निसाणारे ॥ ( उमावणी ) इतना कह्या जब दिल समझाया, अविचल  
 राजुल नेह लगाया, सदा मुगतिमें वास वसाया, कहै राम रुद्धसार,  
 करो तो ऐसा प्यार, नाम रहे जारी ॥ चली० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चंदावदनी मुखसे कैती गिरनारीकूं जावोगे, रा-  
 जुल ऊज्जी अरज करत हे प्रीतम कब धर आवोगे ॥ डूब ज़र बा-  
 ती मनमें चिंता नेणामें आसुं ऊरते, हाथ जोरकै राजुल ऊज्जी  
 वार वार विनती करते ॥ ज्ञान वणाई व्याहन आए घरमें  
 आनंद वरते, किस विध ठाम चले गिरनारी मेरी दया नहीं दिल  
 धरते ॥ में चरणाकी खासी जो दासी तुम विन मेरे नही सरते,  
 ज्युं सागरमें जल विन मठली प्राण घनी पलमें हरते ॥  
 ( उमावणी ) हे तूं महिर निजर कर आव फेर रखला रे, तूं चं-  
 दवदन दीवार मुजें दिखला रे ॥ हे तूं दिलकी धूमी खोल चूक  
 वतला रे, हे तूं मोहनगारा प्यारे हे जी मुझकूं साथ निजावोगे  
 ॥ रा० १ ॥ डूखसुं ज़री वातां मत बोलो राजुल मन धीरज धा-  
 रो, एकर आंसु मिलणे कारण मुगतीमहलमें मन मारो ॥ ज़र नार  
 नही दाय हमारे शिवनारीसुं मन प्यारो, पांच सखी ले साथ सि-  
 धावो मुगतिमहलकूं शिणगारो ॥ कवल वचन आंसुमें कीनो रा-  
 खो मनमें पतियारो, मुगतिमहलमें आसां हे सुंदर सोच फिकरकूं  
 विसारो ॥ ( उमावणी ) हे तूं चंपकली सी नार जोवन मतवाली,  
 हे तूं मिरगानेणी मुख चंद मधुरधुनिवाली ॥ हे तूं शील सखूणी  
 उग्रशेनकी लाली, हे तूं लागे सबकों प्यारी हे जी मुझकूं कदि न  
 जुलावोगे ॥ रा० २ ॥ कपटी साजन हसकर बोले मनकी गुंठी

नहि खोलें, या दुनिया मुतलबकी गरजी विन मुतलब मुख नहि  
 धोले ॥ सहज प्रीतकी रात लगाणी फिर निजणी मुसकल होलै,  
 धन मानव जो प्रीत निजावै तरः अधकी रंगरोलै ॥ अरज वीनतो  
 करकै राजुल बचन रसीला अणमोलै, जलदी आयजो नैमकुमरजी  
 मुगतिमदलमें रमजोलै ॥ ( उमावणी ) हेवा चंदकपूर अपूरब  
 ख्याल वणावै, हेवा नरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ हेवा जांज  
 ताल रुफ होल मृदंग बजावै, हेवा आनंद हर्ष वधावै हे जी मन  
 बंघितफल पाउंगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोई

देख्या रे हो सांवलिया सादिव प्यारा लागे रे० ॥ अश्वशेन घर  
 जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद  
 वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे ॥ हारे० सु० को० १ ॥ बालपणे  
 प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हरयो दुखदाई  
 रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर  
 मुगट श्रवण कुंमल हृद ज्ञारी रे, कर श्रीफल जुजबंध जलक विव  
 न्यारी रे, गल मोतियनको हार वणयो गुलजारी रे ॥ हारे गु०  
 को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद वसाई रे, पारस२ नाम  
 जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम वधाई रे ॥ हारे प्रे० को० ४ ॥

॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

मुणजो वातां राव सदाशिव, मत चढ जाणा धूलेवा ॥  
 गढ़पति जनका वरुा अरुंगा, मत ठेसो तुम जन देवा ॥ सु० १ ॥  
 सकतावत चंदावत बोले, हमही नोकर जनहीका ॥ हींडपति वाकूं  
 हाथ जोमे, तीन जुवन शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु  
 पाताल सबेही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन  
 आवै, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज जनहीसै  
 आवै, निर्धनियाकुं धन देवै ॥ बांज खिलावै सुंदर लरुका, सदा

सुखी जो प्रभु सेवै ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग  
निवारे प्रवशका ॥ नूप जुजंग महारि करि नदियां, चोरन बंधन  
अरिदंका ॥ सु० ५ ॥ धौं धौं धौं धौं धौंसा वाजै, दशो दिशामें  
हे मंका ॥ जान तातिया नहीं जलाइ मत बतलाओ गढ़ वंका ॥  
॥ सु० ६ ॥ राणाजीके ऊमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥  
आंरा कीया थेहीज पावो, म्हे नहिं आवां थां साथां ॥ सु० ७ ॥  
मूंठ मरोम चढा अजिमाने, जहर जरा हैं निजरूममें ॥ रुषनदेव  
हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरूममें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत  
अणे मूलचंद, वने सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर २ घोसा,  
लज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ कैसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिन-  
राज ॥ धुलेवनाथ जाचो धणी, वरणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ ( चाल  
लावणी ) काश्यपगोत्र इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥  
नाजि नरेसर वंश नजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ २ ॥  
चोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपे न्हवरायो ॥ इसो  
रुषन निधि प्रगट कळपतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ ३ ॥  
खरगदेशमें नगर धुलेवे, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा  
अपरंपारा, कविजन कीरत करता है ॥ ४ ॥ आदौ मुरत काल  
असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद  
युग, बलि पूजत सूरज चंदा ॥ ५ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी,  
वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण  
गुणरासा ॥ ६ ॥ रामचंद्र शीता अरु लबमन, ए मुरत पूजन  
लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उज्जैणी ठहराए  
॥ ७ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, बा-



नहि खोलै, या डुनिया मुतलबकी गरजी विन मुतलब मुख नहि  
 बोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निजणी मुसकल होलै,  
 धन मानव जो प्रीत निजावै तरऱ अधकी रंगरोलै ॥ अरज वीनतो  
 करैके राजुल वचन रसीला अणमोलै, जलदी आयजो नेमकुमरजी  
 मुगतिमदलमें रमजोलै ॥ ( उन्नावणी ) हेवा चंदकपूर अपूरब  
 ख्याल वणावै, हेवा नरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ हेवा जांज  
 ताल मफ होल मृदंग वजावै, हेवा आनंद हर्ष वधावै हे जी मन  
 बंठितफल पाजोगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ  
 देख्या रे हो सांवलिया साद्वि प्यारा लागे रे० ॥ अश्वशेन धरं  
 जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद  
 वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे ॥ हारे० मु० कोइ० १ ॥ बालपणे  
 प्रभु अदभुत भ्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हरयो डुखदाई  
 रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर  
 मुगट अवण कुंमल हृद ज्ञारी रे, कर श्रीफल जुजबंध जलक ठिव  
 न्यारी रे, गल मोतियनको द्वार वणयो गुलजारी रे ॥ हारे गु०  
 को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद वमाई रे, पारसर नाम  
 जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम वधाई रे ॥ हारे प्रे० को० ४ ॥

॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदाशिव, मत चढ जाणा धूलेवा ॥  
 गढ़पति उनका वमा अरुंगा, मत ठेम्तो तुम उन देवा ॥ सु० १ ॥  
 सकतावत चंदावत बोले, हमही नोकर उनहीका ॥ हींडपति वाकूं  
 हाथ जोमे, तीन जुवन शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु  
 पाताल सबेही, सुरनर वाकूं व्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन  
 आवै, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज उनहीसें  
 आवै, निर्धनियाकुं धन देवै ॥ बांज खिलावै सुंदर लम्का, सदा



सुखी जो प्रभु सेवै ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग  
निवारे जवशका ॥ नूप नुजंग महारि करि नदियां, चोरन बंधन  
अरिदंवका ॥ सु० ५ ॥ धौं धौं धौं धौं धौंसा बाजै, दशो दिशामें  
हे मंका ॥ ज्ञान तातिया नहीं जलाइ मत बतलाओ गढ़ वंका ॥  
॥ सु० ६ ॥ राणाजीके कुमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥  
आंरा कीया ऐहीज पावो, म्हे नहिं आवां आं साथां ॥ सु० ७ ॥  
मूँठ मरोठ चढा अजिमाने, जहर जरा हें निजरुमें ॥ रुषनदेव  
हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरुमें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत  
अणे मूलचंद, वमे सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर २ घोसा,  
लज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ कैसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिन-  
राज ॥ धुलेवनाथ जाचो धणी, वरुण श्रीमहाराज ॥ १ ॥ ( चाल  
लावणी ) कास्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥  
नात्ति नरेसर वंश नृजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ १ ॥  
बोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरये न्हवरायो ॥ इसो  
रुषन निधि प्रगट कळपतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ २ ॥  
खरगदेशमें नगर धुलेवे, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा  
अपरंपारा, कविजन कीरत करता है ॥ ३ ॥ आदौ मुरत काल  
असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद  
युग, बलि पूजत सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी,  
वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण  
गुणरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लठमन, ए मुरत पूजन  
लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर नज्जेणी ठहराए  
॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, बा-

यकरम अरु आपकरमकी, जई लम्हाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आपक-  
 रमके ऊपर नृपनें कुष्टी वरपें परणाई ॥ मयणा चिंते कांई नवाई,  
 करम लिखी सो बन आई ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन,  
 आई श्रीजिनमंदिरपें ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरै  
 मनकंदरपें ॥ ९ ॥ ( मोतीदाम बंद ) तूहि अरिहंत तूहि  
 जगवंत, तूहि जिनराज तूही जग संत ॥ तूहि जगनाथ तूहि  
 प्रतिपाल, तूही मनमोहन तूही दयाल ॥ १ ॥ तूहि जवजंजन  
 जाव सरूप, तूहि अरिगंजन रंजन नूप, तूही अविनासी  
 तूही वीतराग, तूही माहाराज तूही वरुजाग ॥ २ ॥ तूही गुण-  
 वाम तूहि विसराम, तूहि नवनिद्ध तूहि वरु नाम ॥ तूही अध-  
 नाश तूहि अविनाश, तूही मतिवंत तूही मतिवास ॥ ३ ॥ तूही  
 गुण केवलरूप अनंत, तूही जगतारन तारण संत ॥ तूही जग ध्येय  
 तूही जग ध्यान, तूही चिदरूप तूही जगवान ॥ ४ ॥ तूही मम  
 तात तूही मम मात, तूही मम आत तूही मम वात ॥ तूही  
 सरणागत राखणहार, तूही दुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ (चाल  
 लावणी) ॥ करूं अरज एक तोपें जिनपति, कंत कुष्टसैं नही मरते  
 ॥ पूरव करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥  
 पण तुज शासन जगत हेलना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म  
 अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुख मोसैं  
 सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग  
 निवारण, गुण कीजै जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यहु प्रसन्न हुय फल  
 बीजोरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब जल्लास जई  
 मन, चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर तनु  
 फरसैं, कुष्टरोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवरु,  
 नृप श्रीपाल सोदावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी नूतल,

प्रगट प्रबल हे जस सेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देशमें  
 प्रजु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागमदेश वमोद नगरमें, जग पर प्रजु क-  
 रुणा कीनी ॥ कितने वरस लग महीमें महिमा, अविचल जूतल  
 रुद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान जयो तब, पातस्याह ल-  
 रुवा आयो ॥ बूत जूत पत्थरकी मूरत, जन्मुल्लासें उखरायो ॥  
 ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की विलराइ, आको यों वाचा बोले ॥ देव  
 हिंदको वमो जागतो, यूं बोलत फिर १ मोले ॥ ए ॥ सुनो वात  
 कांजी मुल्लां तुम, एक वातसें त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल क-  
 हाई, गो वधसें ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निज  
 रे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब जये महाबल,  
 शस्त्र ऊमोऊम विकराला ॥ ११ ॥ ( दूहा ) महा युद्ध करण लगे,  
 घाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गान्धी, आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥  
 ( चाल लावणी ॥ ) गांव धूलेवा वंशजालमें, गुप्त रहे हैं प्रजु  
 भरती ॥ गाय एक कोमी वनियनकी, आइ वाहां चरती २ ॥ सवे  
 तिहां पयधारा शिर पर, सांऊ समें फिर नही दूजै ॥ रीस करी  
 तब गोपालन पर, गौपाल थरहर धूजै ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो,  
 लह्यो जेद कह्यो वनियनपे ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित  
 जयो हे तन मनपे ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, रुषजनाथकी  
 मूरत हे ॥ बहिर निकासो करो लापसी, जीतर मूरत पूरत हे ॥ ४  
 ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियो  
 सेठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु ठ दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवासी  
 केइ व्रतधारी, केइ अलुआणे पांव चलै ॥ केइ लोककूं डु-  
 क्कर बाधा, कब प्रजुको दरशन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस  
 तरसकी, कहे लोक मूरति काढो ॥ लाओ २ महाराजकी मूरत,  
 संघ सबे लीनो आओ ॥ ७ ॥ जवरदस्तसें दिवस सातमें, लापसी

बाहिर तब कीने, अंसर जर वरण रहाए, संघ लोक दर्शन दीने ॥  
 ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें डूब्य दिखायो, संघे मिल देवल कीनो ॥  
 मध्य विराजै रूपन तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ९ ॥  
 ( दुहा ) संवत अदारे तेसठे, जान सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो  
 डुष्टने, जाखूं वरण बनाय ॥ १ ॥ ( मोतीदाम ठंड ॥ ) सदा-  
 शिव राय चिते मन एह, लूटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ जित्ना  
 पति नाथ धुलेव कहाय, लखो लग डूब्य जंमर सुणाय ॥ २ ॥  
 जावां अब लूटण गाम धुलेव, ग्रहं सब माल जई ततखेव ॥ आयो  
 निज फोज लेई दल गाज, तोपां दोय साथ लियां बहु साज ॥ ३ ॥  
 कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, उठा जर साथ लिया कोकवाण ॥  
 तवां बहु लोक कहे महाराज, नही इह कारण कृत्य अकाज ॥  
 ॥ ३ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे नहीं लाज ति  
 हारिय काय ॥ तवां फिर बोले सदाशिव नूप, ग्रहां सब माल  
 अबां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट कछर, कियो नज  
 राणह नाथ हजूर ॥ राख्यो नही नाथ तबे नजराण, जयो मन  
 चकितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चित जंमारी बुलाय, मीठे  
 वच बोल सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मजार, कियो  
 तब कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार, जंमारी सबे  
 इ पुकार ॥ करो अब बाहिर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज  
 गरीब निबाज ॥ चढो अब बाहिर राखण लाज ॥ ७ ॥ ( दुहा )  
 जण समैं कोन सेठको, वाहण तारण काज ॥ गये अधिष्टायक  
 नाथजी, जेहं गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी  
 सहेर धुलेव मजार ॥ कियो अकारज डुष्टने, शीघ्र चलो जन तार  
 ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संजाल ॥ दो घोरे  
 दोनुं चढे, जेहं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जित्ना कोप आपे कियो, द-

छ दिशि फौज हजार ॥ मार ३ ची तरफते, जई लमाई त्वार ॥  
 ४ ॥ ( जुजंग प्रयात बंद ) कूकू कुकू कुकू बहे कोकवाण, सण-  
 सण सण तीर तरकस वाण ॥ धुवाके धमाके बहे माल गोला,  
 जिमा कर्कसा जम्भरा नयनमोला ॥ १ ॥ किते अंगपे शस्त्रा  
 घाव लागे, किते मारते कंपते दूर जागे ॥ किते दंतपे तिरण लेवे  
 वराका, किते घरघरे आस होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुद्धाई-  
 लछा पुकारे, किते दीन होके खुदापे संजारे ॥ किते नाथपे केस-  
 रा खून माणै, किते नाथकू जागती ज्योत जाणै ॥ ३ ॥ सदाशि  
 वने घाव लागो अटारो, पुनी ज्ञान जसवंत दोनुं संहारो ॥ वनो  
 कोप जाणी सबे फौज जाजी, हुई केशरीनाथकी जीत वाजी ॥ ४ ॥  
 सदाशिवने आखमी अटक लोनो, सवापांचसें रकमरो खून दीनो ॥  
 इसो नाथ धूलेवरो मईगाजी, सदा केशरानाथरी जीत वाजी ॥ ५ ॥  
 ( दूहा ) या विध कलियुग जग जणा, तारया केई जिनराज ॥  
 दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ ( मोतीदास  
 बंद ) तूही नवनिद्ध तूही अमसिद्ध, तूही मनवंछित वंछित रुद्ध ॥  
 तूही सिरदार तूही किरतार, तूही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥  
 तूही कामकुंज तूही कामधेन, तूही सुरवृक्ष तूही मम श्रेण ॥  
 तूही दक्षिणावर्त दायक देव, तूही विसराम तूही वम सेव  
 ॥ ३ ॥ तूही मम प्राण आधार जरूर, तूही मम इच्छित दायक  
 नूर ॥ तूही मम जूप तूही पतसाह, तूही मम रुद्ध जंमार अगाह  
 ॥ ४ ॥ तूही मम मंत्र तूही मम यंत्र, तूही मम सत्य तूही मम  
 तंत्र ॥ तूही गहनायक तूही श्रीपूज्य, तूही मम पूज्यतूही जग-  
 पूज्य ॥ ५ ॥ ( लावणी चाल ) नाथ धुलेवा कीरत सुणके, देश  
 नृप आवत हे, केशरमें गरकाव रहते, केशरनाथ कहावत हे  
 ॥ १ ॥ सहर परगणे देश दिशावर, फिरे उद्दार् नाथनकी ॥ दिंड

मूसल वरु राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट  
 अलवट वाटघाटमें, रण रावल डुख दूर हरै, इक चित्त ध्याने जे  
 नित समरे, अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ विधिमप विधिमप  
 धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गरुगरु दौ गरुगरु दौ गरु-  
 गरु, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह ऊदेपुर, नीम-  
 सिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें  
 ॥ ५ ॥ संवत अठार पञ्चोत्तर वर्षै, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥  
 मंगलके दिन दीपविजयकूं, दर्शन परशन दो जुलसे ॥ ६ ॥ (क-  
 लश-वृषय ठंड) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल  
 हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, जरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर्म  
 नीती हरन, सब करम जुघ घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सु-  
 कनु वरन शुद्ध चरन, इंड चंड पदजुगल सेवन, जगत विरुद तार-  
 नतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, ऋषजनाथ असरनशरन  
 ॥ १ ॥ ऋषजनाथ महाराज, सबे डुख दालिड जंजन ॥ ऋषजनाथ  
 महाराज, सबे जूष मनरंजन ॥ ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, समरयो  
 वाहर धाये, ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय  
 कविराज बहाडुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं,  
 सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म बनारशी हे जिनका, घ-  
 ननं घननं वाजै घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥  
 जब कमठासुर कोप कियो तब, स्यामवटा बिजुरी चमका ॥ गिरु  
 आ गाज जल मूसलधारा, धरु धरु काजन शंका ॥ आ० २ ॥  
 अररर आशन कंफे सुरको, तब धरणीधर चित्त चमका ॥ फण  
 बिस्तार हजार किया तब, ऊमक जाय प्रभु तन टंका ॥ आ० ३ ॥



जब पदमावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमकश  
धौं मादल वाजत, घननं घुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी  
कट नौवत बाजै, धौं धौंकट डुंडुंनि धौंका ॥ या विध गीत संगीत  
बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररतंत  
ताल सब, रुफ मौं मौं करते मंका, जेरण फेरणके जनकारे,  
जागमदी जालरके जंका ॥ आ० ६ ॥ सुरनर इंड सब जै जै करते,  
जीवत सफल जया जिनका ॥ अमृत नदय तिण वेर जयो  
सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलमी ॥ आ० ॥  
घमा एकसो आठ शेलमी, रस जरिया बै नीका ॥ नलटनाव  
श्रेयांश वहिरावै, मांम दिवीआठूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुनी  
वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो,  
गई जूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोका-  
मना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ डुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा  
त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेतूंजा सिद्धेक्षेत्र हे, मोटो कहिये  
धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥  
संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोनी  
नानु कहता, रुषनदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर  
जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारै अरजी ॥ कर माफी मारा  
वांक, रजलियो रांक, अनंता नवमें ॥ अ० ॥ आव्यो हुं तारा  
शरण, बली दुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार,  
लग्या मुऊ केमे ॥ ल० ॥ बली पापी म्हारो नाथ, ठेक ठंठेमे



मूसल वर राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट  
 अलवट वाटघाटमें, रण रावल डुख दूर हरै, इक चित्त ध्याने जे  
 नित समरे, अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप  
 धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गरुगरु दौ गरुगरु दौ गरु-  
 गरु, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह ऊदेपुर, ज़ीम-  
 सिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें  
 ॥ ५ ॥ संवत अठार पञ्चोत्तर वर्षै, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥  
 मंगलके दिन दीपविजयकूं, दर्शन परशन दो नलसे ॥ ६ ॥ (क-  
 लश-ठप्पय ठंड) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल  
 हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, जरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर्म  
 नीती हरन, सब करम उंघ घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सु-  
 कनु वरन शुद्ध चरन, इंड चंड पदजुगल सेवन, जगत विरुद्ध तार-  
 नतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, ऋषजनाथ असरनशरन  
 ॥ १ ॥ ऋषजनाथ महाराज, सबे डुख दालिड जंजन ॥ ऋषजनाथ  
 महाराज, सबे जूष मनरंजन ॥ ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, समरयो  
 वाहर थाये, ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय  
 कविराज बहाडुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं,  
 सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म बनारसी हे जिनका, घ-  
 ननं घननं वाजै घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥  
 जब कमठासुर कोप कियो तब, स्यामघटा बिजुरी चमका ॥ गिरु  
 आ गाज जल मूसलधारा, धरु धरु काजन शंका ॥ आ० २ ॥  
 अरर आशन कंपे सुरको, तब धरणीधर चित्त चमका ॥ फण  
 विस्तार हजार किया तब, ऊमक जाय प्रभु तन टंका ॥ आ० ३ ॥

जब पदमावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमकश्  
धौं मादल वाजत, घननं घुघरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी  
कट नौवत बाजै, धौं धौंकट डुंडुनि धौंका ॥ या विध गीत संगीत  
बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत  
ताल सब, रुफ मौं मौं करते मंका, जेरण फेरणके जनकारे,  
जागमदी जालरके जंका ॥ आ० ६ ॥ सुरनर इंड सब जै जै करते,  
जीवत सफल जया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर जयो  
सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलमी ॥ आ० ॥  
घमा एकसो आठ शेलमी, रस जरिया बै नीका ॥ नलटजाव  
श्रेयांश वहिरावै, मांरु दिवीआठूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुनी  
वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो,  
गई नूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोका-  
मना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ डुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा  
त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेतूंजा सिद्धक्षेत्र हे, मोटो कहिये  
धाम ॥ श्रीसंधका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥  
संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोमी  
नानु कहता, रुषजदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर  
जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा  
बांक, रजलियो रांक, अनंता जवमें ॥ अ० ॥ आव्यो हुं तारा  
शरण, बली दुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार,  
लग्या मुऊ केमे ॥ ल० ॥ बली पापी म्हारो नाथ, ठेक ठंठेमे

मूसल वर राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट  
 अलवट वाटघाटमें, रण रावल डुख दूर हरै, एक चित्त ध्याने  
 नित समरे, अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ विधिमप विधिमप  
 धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गरुगरु दौ गरुगरु दौ गरु  
 गरु, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह ऊरेपुर, ज़ीम  
 सिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें  
 ॥ ५ ॥ संवत अटार पञ्चोत्तर वर्षै, फागुण सुदि तेरश दिवसै  
 मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन दो उलसे ॥ ६ ॥ ( क  
 लश-वृषय ठंड ) समवंशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल  
 हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, जरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर  
 नीती हरन, सब करम नुब धनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सु  
 कनु वरन शुद्ध चरन, इंड चंड पदजुगल सेवन, जगत विरुद्ध तार  
 नतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, रूपजनाथ असरनशरन  
 ॥ १ ॥ रूपजनाथ महाराज, सबे डुख दालिड जंजन ॥ रूपजनाथ  
 महाराज, सबे जूष मनरंजन ॥ रूपजनाथ पृथ्वीनाथ, समरथे  
 बाहर धाये, रूपजनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय  
 कविराज बहाडुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव ह  
 सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म बनारसी हे जिनका, य  
 ननं धननं वाजै घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥  
 जब कमठासुर कोप कियो तब, स्यामघटा बिजुरी चमका ॥ गि  
 आ गाज जल मूसलधारा, धरम धरम काजन शंका ॥ आ० २ ॥  
 अरर आशन कंफे सुरको, तब वरणीधर चित्त चमका ॥ फ  
 विस्तार हजार किया तब, ऊमक जाय प्रभु तन टंका ॥ आ० ३ ॥

जब पदमावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमकश  
धौं मादल वाजत, घननं घुघरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी  
कट नौवत बाजै, धौं धौंकट डुंडुनि धौंका ॥ या विध गीत संगीत  
बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत  
ताल सब, रफ मौं मौं करते मंका, जेरण फेरणके जनकारे,  
जागरुदी जालरके जंका ॥ आ० ६ ॥ सुरनर इंड सब जै जै करते,  
जीवत सफल जया जिनका ॥ अमृत नदय तिण वेर जयो  
सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलनी ॥ आ० ॥  
घमा एकसो आठ शेलनी, रस जरिया ठै नीका ॥ नलटनाव  
श्रेयांश वहिरावै, मांरु दिवीआठूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुनी  
वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो,  
गई झूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोका-  
मना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा  
त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेतूंजा सिद्धक्षेत्र हे, मोटो कहिये  
धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥  
संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोनी  
नानु कहता, रुषजदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर  
ली ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा  
वांक, रजलियो रांक, अनंता जवमें ॥ अ० ॥ आव्यो हुं तारा  
शरण, बली दुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार,  
लग्या मुऊ केमे ॥ ल० ॥ बली पापी म्हारो नाथ, ठेक ठेके

॥ आ मुंजरो मुंज जगवाने, करुं गुणगान, ध्यानमां धरजी ॥ धा०  
 ॥ सेवक० १ ॥ में पूर्ण कर्या ठै पाप, सुणजो आप, कइ  
 करजोमी ॥ क० ॥ मुंज जंमामां जगवान, जूळ नही ओमी ॥ जो  
 बहिंसा अपरंपार, करी किरतार, हवे सुं करवुं ॥ इ० ॥ जूवू बहु  
 बोली, सांचने सुं हरवुं ॥ तुज खोलामां मुंज शीशं, जाण जगदा  
 दा, गमे ते करजी ॥ ग० ॥ सेवक० २ ॥ में किया बहुत कुकर्म,  
 धरी नहि धर्म, पूर्ण हुं पापी ॥ पू० ॥ अवलो अइ थारी आण में  
 ज उत्थापी ॥ में मुख निंदा घणी, मुनि पर तणी, करी हंरखायो  
 ॥ क० ॥ परदारा देखी लंवार, हुं ललचायो ॥ किंकर कइ केशव  
 लाल, आणीने वहांल, दुःख तुं हरजी ॥ ड० सेवक० ३ इति पदं ॥  
 ॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥

पिया मेरां हो गिरनार सिधाए, हम संग मोह निवारयो रे  
 ॥ समुद्रविजै सुत नेमजी रे, सब जादव सिरताज ॥ नायक ती-  
 नों लोकके रे, गुणनिध गरीबनिवाज ॥ मो० १ ॥ बहोत हठांसुं  
 व्याह मनायो, हलधर कृष्ण मुरार ॥ पटपंचाश कुल कोटि प्र-  
 भाणे, जाइव उनके द्वार ॥ मो० २ ॥ खूब वरात वणावके रे,  
 लयशेन दरबार ॥ आए प्रभुजी हरखसूं रे, चढ़गये गिरनार ॥ मो०  
 ३ ॥ पशुवन पर कीनी दया रे, मो पर कीनो रोस ॥ विन अव  
 गुण बोमो मती रे, कोइ नही ठै दोस ॥ मो० ४ ॥ सावण सुद  
 पष्टी दिने रे, इंद चंड परिवार ॥ दीक्षा लीधी शुभ मन रे, करम  
 दिया सहु जार ॥ मो० ५ ॥ नेत्र दुताशन नंदकू रे, चैत्र शुक्ल  
 शुभ वार ॥ श्रीजिनदस सूरिसरू रे, श्रीखरतर गणधार ॥ मो०  
 ६ ॥ राजुल पहली नेमसुं रे, मुगतिमहलमें जाय ॥ प्रीत निजार्इ  
 जुगसुं रे, रुद्रसार गुण गाय ॥ मो० ७ ॥ इति पदं ॥

दूहा ॥ इक पोथी अरु पदमनी, नहि दीजे पर हत्य, वा

विगमै पंक्ति विना, वा विगमे पर सङ्ग ॥ १ ॥

॥ अथ दिवाली स्तवनं ॥

धन२ मंगल एह सकल दिन, पूजा प्रज्ञाते चाली रे ॥  
 आज म्हारे दीवाली अजुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरुने,  
 मोतीमे आल पूरावो ॥ चार२ आगे चतुर सुहागण, चरण कमल  
 चित्त सारी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ धन धून धनतैरस दिवसे, काले चव  
 दश काली ॥ पाप हरणने पोसो कीजै, कर्म मेलो सब टाली रे ॥  
 आ० २ ॥ अमावसकी परब दिवाली, फरती जाकऊमाली, घर२  
 तो दीवलिया जलकै, रात दीसै अजुवाली रे ॥ आ० ३ ॥ अम्मा  
 वशकी पिठली राते, अठि कर्म सब टाली, श्रीमहावीर निरबाण  
 पोहता, अजरामर सुखकारी रे ॥ आ० ४ ॥ पस्तिवाने दिन जुहा  
 रपटोला, ए रत रूमी सारी ॥ गुरु गौतमना चरण पखाली, रीऊ  
 पामी रहियाली रे ॥ आ० ५ ॥ बीजे तो वली ज्ञावरुबीजरु, बे  
 नमली अति वाहाली ॥ ए पांचे दिन होया रे पनोता, एबे२ ह  
 रखे गाई रे ॥ आ० ६ ॥ हरख विजय पंक्ति इम बोलै, करो स  
 हु सेव सुहाली ॥ रूपविजय पंक्ति गुण गादै, जय२ बाजै ताली  
 रे ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे दीवाली रे अई  
 आज, प्रभुमुख जोवाने, सरस्वती रे सेवकना काज, जवहुःख खो  
 वाने ॥ महावीरस्वामी मुगते पुहता, गौतम केवलज्ञान रे ॥  
 धन अमावस्या धन दीवाली म्हारे, वीरप्रभु निरवाण ॥ जिन मु०  
 २ ॥ चारित्र पाढ्या निर्मलाने, टाढ्या ते विषय कषाय रे ॥ एह  
 वा प्रभुने वांछियेतो, उत्तरे जव पार ॥ जिन मु० ३ ॥ बाकुला  
 वंदोस्या वीरजीने, तारी चंदनबाल रे ॥ केवल लइ प्रभु मुक्ते पो  
 हता, पास्या जवनो पार ॥ जिन मु० ४ ॥ एवा मुनिने वांछिये  
 जे, पंचम ज्ञानने धरता रे ॥ समवसरण देइ देशना रे, प्रभु ता

स्था नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणा  
दातार रे ॥ करजोमी कवियण एम जणे, मारो जवनो फेरो टाळ  
॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी रुषज विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥  
पो० ॥ प्रभु आलस अंग हुलसाई, पूढे मरूदेवा माई ॥ पो० १ ॥  
प्रभु नंदा सुमंगला राणी, उन रुचर सेज विठाणी ॥ पो० २ ॥ प्र-  
भु नवलसु नेह सनेहा, प्रभु मनवंछित फल देहा ॥ पो० ३ ॥  
प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंछित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अ-  
जर अमर पद पावै, करजोमी शीश नमावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजै मंगल ब्यार, आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजै० ॥  
पहिले मंगल प्रभुजीकूं पूजूं, घसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥  
बीजुं मंगल अगर नखेबुं, कंठै ठवुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे  
मंगल आरती ऊतारूं, घंट वजानं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चौथे मं-  
गल प्रभुगुण गाउं, नाचूँ छै छैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कहै ना-  
थ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटो रे, जविजन सुखकारा ॥ सि० ॥  
प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, ज्ञाख्या विविध प्रकारा ॥ इण गिरि  
साधु अनंता सीधा, एहनी हुं बलिहारा रे ॥ ज० सि० १ ॥ रु-  
षज जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ रायण तल  
पगला प्रभु जेढ्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ ज० सि० २ ॥  
चोमुख बिंब मनोहर अदभुत, दरशण अतही उदारा ॥ मूलना  
यक श्रीआदजिनेश्वर, पूजत डख सहु वारा रे ॥ ज० सि० ३ ॥



माते चक्रेसरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ उष्ट  
निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥  
४ ॥ खरतर गह्व नायक सुख दायक, कीरत जग विसतारा ॥ गु  
ण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५  
॥ संवत जगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन  
मन हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज० सि० ६ ॥ धर्मशील प  
दपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ तास पशाये गिरवरना  
गुण, पन्नणे मुनि रुढसारा रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले ज़ारी ॥ प्रथम  
पद तीर्थपती राजै, दोष अष्टादशकूं त्याजै ॥ आव प्रातीहारज  
ठाजै, जगत प्रभु गुण बारै साजै ॥ ( दोहा—साखी ) अष्ट करम-  
दल जीतके, सकल सिद्ध ते आय ॥ सिद्ध अनंता जजो बीजे पद,  
एक समय शिव जाय ॥ प्रगट ज्यो निज स्वरूप ज़ारी ॥ ज०  
१ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, नममा चंड सूरज जेशी ॥ नमारथो  
राजा परदेशी, एक जव मांहे शिव लेशी ॥ ( दोहा—साखी )  
चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी नवज्ञाय ॥ सब साहु पंचम पदे,  
धन धनो मुनिराय ॥ वखाण्यो वीरजिणंद ज़ारी ॥ ज० २ ॥ द्र  
व्य षट्की श्रद्धा आवै, सम संवेगादिक पावै ॥ विना यह ग्यान  
नही किरिया, जैनदरशनसें सब तिरिया ॥ ( उहा—साखी ) ज्ञा  
न पदारथ सातमें, पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें,  
निजपद साधे काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जो  
गकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर ठोमी सब राणी ॥ यती दश ध  
रम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ ( उहा—साखी )  
करम निकाचित कापवा, तप कुठार कर ध्याय ॥ कृपा युत नव-

मा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ जजो तुम नवपद सुखकारी ॥  
 ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र जजो जाई, अचामल तप विधिसें आई ॥  
 पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, जाव श्रीपाल परे करजो ॥ ( दूहा—  
 शाखी ) संवत जगणीस सतरा समें, जेपुर श्रीजिन पाश ॥ चैत्र  
 धवल पूनम दिने, सफल फली मुऊ आश ॥ बाल कहै नवपद  
 ठवि प्यारी ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल इंडसजाकी ॥  
 ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जे  
 सा जगसें तारण, मिलणा नही ऐसान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें  
 जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत,  
 इनका कौनकथान ॥ २ ॥ कुष्ठ जगंदर राजरोग सब, जूत प्रेत  
 बल नाश ॥ नवपद जैसा निरजय शरणा, फेर करो क्या आश  
 ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहं, अहै पद अरिहंत ॥ सिद्धसूरि  
 जवझाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव  
 पदके विच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर  
 होंगे, कोइय न पाया पार ॥ ५ ॥ इनकी महिमा कहां लग बरणूं,  
 मैतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुप्रान  
 ॥ ६ ॥ चैत्र मास आश्विन सुदि सातम, आंबिल व्रत उजमाल ॥  
 सुरेसर नूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीवि-  
 मलेश्वर एक सहाई, वरचक्रेश्वरि मात ॥ नुबव विविध करै मन  
 शुद्धते, त्रिजुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन  
 जिनंदसें, मै पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासें आनंद, जयश  
 श्रीरुद्धसार ॥ ए॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ (स्थ चढ जडुनंदन  
 आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शाखी जिनमंदिरमें, जग नवपद  
 महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तमिक्कांति प्रज, मदन  
 चंद ठवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र धुर तीन तत्वसें, व-

सुधा पीठ विराजत है, तीर्थनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि  
कर राजत है रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदधन, चरण  
निरजरा साजत है ॥ परम करण मन वंशित दायक, अतुल सु-  
जश जग वाजत है रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश,  
ज्ञोति अरुज सब ज्ञाजत है ॥ ध्यान रंग मन संग एकसें, जग  
दानंद निवाजत है रे ॥ च० ४ ॥ शंभुव नुवन पुरी बालूचर,  
अंतरंग अरि दाऊत है ॥ शंकर बृहदेव तुम ध्यावै, गोविंद चरणा  
माजत है रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति  
उपम काजत है ॥ मंत्र मणी तुम जमी नामकी, लखमी लील  
पराजत है रे ॥ च० ६ ॥ दीजै कुशल निधान जक्तिनर, रुद्रसार  
सुख राजत है रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वशेन अं-  
गज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें  
प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि जक्तकूं तारो ॥ सां० १ ॥  
चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज दीदारो ॥ लगन तिहारें  
दरश शरसकी, कैसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥  
सां० २ ॥ सुंदर रूप चंद वदनामृत, नयणकमल नजियारो ॥  
धनर आज दिवशकी महिमा, जीवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग  
सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुदस थिर श्रीसंध, करत  
सदा जयकारो ॥ रामवांग विच इंद्रनुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो,  
बन्यो अति सुख दातारो ॥ सां० ४ ॥ जगणीसै अमतालीश शुभ  
दिन, वस्तपंचमी धारो ॥ पाठक हितवृद्धन बहु विधसें, चैत्य  
प्रतिष्ठा सारो, कुशल निधी कहै रुद्रसारो ॥ सां० ५ ॥ इति पदं ॥  
पुनः ॥ (हमकूं गंम चले ॥ इस चात्रमें होरी) ॥ आज

मा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ ज्ञजो तुम नवपद सुखंकारी ॥  
 ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र ज्ञजो ज्ञाई, अचामल तप विधिसँ थाई ॥  
 पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, ज्ञाव श्रीपाल परे करजो ॥ ( दूहा-  
 साखी ) संवत उगणीस सतरा समें, जेपुर श्रीजिन पाश ॥ चैत्र  
 धवल पूनम दिने, सफल फली मुऊ आश ॥ बाल कहै नवपद  
 ठवि प्यारी ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल इंस ज्ञाकी ॥  
 ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जे  
 सा जगसँ तारण, मिलणा नही आसान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें  
 जिसने ध्याया, सो प्राया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत,  
 इनका कौनकथान ॥ २ ॥ कुष्ठ जगंदर राजरोग सब, जूत प्रेत  
 बल नाश ॥ नवपद जैसा निरञ्जय शरणा, फेर करो क्या आश  
 ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहं, अहै पद अरिहंत ॥ सिद्ध सूरि  
 जवझाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव  
 पदके विच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर  
 होंगें, कोईय न पाया पार ॥ ५ ॥ इनकी महिमा कहां लग बरणूं,  
 मेंतो अथम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुग्रान  
 ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आंबिल व्रत उजमाल ॥  
 सुरनर चूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीवि-  
 मलेश्वर यक्ष सहाई, वरचक्केसरि मात ॥ जव विविध करै मन  
 शुद्धसँ, त्रिजुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन  
 जिनंदसँ, में पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासँ आनंद, जयश  
 श्रीरुद्रसार ॥ ए॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ (रथ चढ़ जडनंदन  
 आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शखी जिनमंदिरमें, जग नवपद  
 महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तमिक्कांति प्रज, मदन  
 चंद्र ठवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र धुर तीन ततासँ, व-

सुधा पीठ विराजित है, तीर्थनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि  
 कर राजत है रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदधन, चरण  
 निरजरा साजत है ॥ परम करण मन वंठित दायक, अतुल सु-  
 जश जग वाजत है रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश,  
 जोति अरुज सब ज्ञाजत है ॥ ध्यान रंग मन संग एकसें, जग  
 दानंद निवाजत है रे ॥ च० ४ ॥ शंजव जुवन पुरी बालूचर,  
 अंतरंग अरि दाऊत है ॥ शंकर बृहदेव तुम ध्यावै, गोविंद चरणा  
 माजत है रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति  
 उपम काजत है ॥ मंत्र मणी तुम जमी नामकी, लखमी लील  
 पराजत है रे ॥ च० ६ ॥ दीजै कुशल निधान जक्तिनर, रुद्धसार  
 सुख राजत है रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वशेन अं-  
 गज कुल दिनमणि, अधम नधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें  
 प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि जक्तकूं तारो ॥ सां० १ ॥  
 चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज दीदारो ॥ लगन तिहारें  
 दरश झरसकी, कैसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥  
 सां० २ ॥ सुंदर रूप चंड वदनामृत, नयणकमल नजियारो ॥  
 धनर आज दिवशकी महिमा, जीवन नाथ जुंहारो, बन्यो रंग  
 सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुदस अरि श्रीसंघ, करत  
 सदा जयकारो ॥ रामबाग विच इंद्रजुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो,  
 बन्यो अति सुख दातारो ॥ सां० ४ ॥ जगणीसै अमंतालीश शुभ  
 दिन, वस्तपंचमी धारो ॥ पाठक हितवृद्धन बहु विधसें, चैत्य  
 प्रतिष्ठा सारो, कुशल निधी कहै रुद्धसारो ॥ सां० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ (हमकूं बांस चले ॥ इस चालमें होरी) ॥ आज

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत  
 बाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर  
 तन ठवि दमकत, चमकत दामनी ज्ञास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु  
 आनन अमृतरश धारा, ऊनी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत  
 वचन मन मेरो, प्राण प्रभूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कबाण  
 इंधनुषनकी, हिलमिल जमर उजास रे ॥ अपठर गान करत  
 सुर वनिता, कोयल वचन उल्लास रे ॥ आ० ३ ॥ थिर चित्त  
 लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अबिर सुवास रे ॥ तन मन प्रीत  
 जरी पिचकारी, पेलूं प्रभूसैं कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गु-  
 लाब फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान धरो  
 गतियनपैं, रुद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषभ गया क्युं व-  
 नमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरपणकी  
 आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें जई उदासा, प्रभु रुषभ गये वनवासा  
 ॥ ( दूहा-साखी ) रुषभ प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥  
 जरतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी  
 मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी फिरमिर  
 मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ जरतादिक जी सौ पूत्र-  
 नके मरसैं, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ ( दूहा-साखी ) नगर  
 अयोध्या युं फुरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलंजा जरतकूं, मेरा  
 पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी  
 ठिनमें ॥ मे० २ ॥ जादू महीना जी तज धन दोलत माया, वो  
 गया इकेली काया ॥ जरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये  
 विना कमाये पाया ॥ ( दूहा-साखी ) नित नव नाटक होत हे,



कर रहै जोगविलास ॥ सब माया या रुषनकी, गोरु गया वन-  
 वास ॥ हेजी जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३ ॥ आ-  
 सू महोने जी सूरतकी ठिव लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके  
 सब लोनी जी पूत्र जये नीरागी, कनी खबर न लो वरुजागी ॥  
 ( दूहा-साखी ) जरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप  
 ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रभु आप ॥ इंद पद सेवे जी  
 नहीं हे रती विधनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महिना जी कब वो रु-  
 षन घर आवै, मोहे नेणा आण बतावै ॥ नही कागद जी मुऊकूं  
 पूत्र पठावै, मेरा जीव बहोत दुख पावै ॥ ( दूहा-साखी ) जरती  
 निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उरकर मिलती रुषनसें,  
 जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते धनमे ॥  
 मे० ५ ॥ भिगसर महीना जी जरत बाहुबल जाई, आपसमें करे  
 लमाई ॥ जरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढ-  
 कर आई ॥ ( दूहा-साखी ) बारा वरस लमते जये, इंद्र दिये सम  
 जाय ॥ चक्रवर्ति बनता गये, जये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप-  
 कारण जी खमे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महोना जी  
 पमे ठंरुका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा  
 जी रुषन जगत प्रतिपाला, में रटुं रुषनकी माला ॥ ( दूहा-साखी )  
 कोइ परवतकी उदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंरु तापकी विपतमें, सहै  
 बहोत दुख धंद ॥ जरत मेरे सुतका जी नही फिकर तेरे मनमें ॥  
 मे० ७ ॥ माइका महीना जी किसें कहुं दुख मेरा, सब पूत्र विना  
 अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे रुषनका  
 वेरा ॥ ( दूहा-साखी ) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥  
 राज रमणकी संपदा, वो गया ठिनकमें गोरु ॥ ऐसा निरमोही जी  
 पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें



झरती, सूने मन घरमें फिरती ॥ झरत यूँ केता जी सोच फिकर  
 क्यूँ करती, रहे निशदिन मुऊसैँ लरती ॥ (दूहा-साखी) झरत विविध  
 तर ज्ञांतसों, कहता बात बनाय ॥ वनपालक उद्यानके, दीवी वधाइ  
 आय ॥ प्रभू पञ्चधारे जी सैवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए ॥ चैतका  
 महीना जी हय गय रथ सब तयारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥  
 झरत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥  
 (दोहा-साखी) इंद्रध्वज आगे चले, जामंरुल हे लार ॥ चोसठ  
 नमर सुरपति करै, डुंडुजी गगन मजार ॥ एसो सुत तेरो जी  
 विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ साश वैशाखां जी मरुदेवा  
 मन हरखै, जब रूपनप्रभू मुख निरखै ॥ नैणपट उधम्या जी वीत  
 राग पद सरखै, चढ शुक्र ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा-साखी) गज ऊपर  
 मुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी दर्श, एसें रु-  
 पन सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभु मगनमें ॥ मे०  
 ११ ॥ जेठका महीना जी रुत गरमीकी आई, मैं रूपन चरण  
 धई धाई, दरस नित तेरो जी मुऊकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम  
 सदा मन ज्ञाई ॥ (दूहा-साखी) धरम शील आधारसैं, कुशल  
 सदा आनंद ॥ रुद्रसार जिन नामसैं, हरे छुरित डुख धंद ॥ हे  
 जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नेमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूवरी वोमशुरावाली एवाल) ॥ सावण  
 सदीने नेम पिया मोहे व्याहनकूं आये, नयशेन घर बटत वधाई  
 सब मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण ज्ञाई, तोरणसैं रथ फेर सि-  
 धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी-मोह लियो  
 शिवरामणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ जादू महीने गगन  
 बीच पीया इंद्र चढ आयो, वैरण बीज खीज रही मोपें जोवन

मरणायो ॥ सखी मोकूं विरहा संतायो, मोर पपइया बोलै पापी,  
 मदन सदन ढायो ॥ तीज विन प्रीतम यूँ जासी ॥ मोह लि० २ ॥  
 आसू महीने आश पीयाको मिलणैकी लागी, तेल चढ़ी मोकूं ठि-  
 टकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने  
 तकशीर कंत मोहे, कैसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी मारी गले फासी—  
 मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी,  
 उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी ॥ पशुनकी दयापै  
 चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग ज्ञीनी ॥ स्याम  
 तोकुं मति ये क्या जासी—मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन  
 लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत  
 त्वारी ॥ पिया तुम चढ़गये गिरनारी, अनंत लोग जोगी सो काम-  
 ण, लगी तुमें प्यारी ॥ पीया में चरणनकी दासी—मोह लि० ५ ॥ पोश  
 पीया नलंजा देती हिये नहीं धारो, नहीं गोमूंगी संग नाश अब चाहे  
 सो कर मारो ॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक बेर घर अंगण आवो  
 फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समजासी—मो० ६ ॥ माह  
 महीने रूत सरदीकी ठंरु बहोत वाजै, सेज लगे नागण सी मु-  
 ज्जकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण जाजै, नहीं वरुन  
 कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह बाजै ॥ पिया विन करूं में गति  
 काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग घरोघर खेले दंपति सुख माणै,  
 में अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानै ॥ कौन संग में  
 खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं बाला जोरी ॥  
 कंत में दरशनकी प्यासी—मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई  
 कोयल सोर करै, ऐसे निरमोहीसे करके कहो कुण फंद पमै ॥  
 प्रीत जिन नव जवकी तोरी, राजुल तज सिलागार हार कूं मदन  
 मान मोही ॥ नेम विन हो रही ऊदासी—मो० ९ ॥ माश

वैशाख आंख थूं उलजै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज डुला-  
री गइ सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंड चंड शेवित  
पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी—मो०  
१० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं बाजै कंत बुरी, नही रैण सुख  
चैन शखीरी चल रही प्रेमवुरी ॥ पाप कोइ पूरव नदैं आया,  
ठोरु चले धनस्याम आज में दरशण सुख पाया ॥ तजी में सब  
घरकी फासी—मो० ११ ॥ माश असाढ़ सखी संग राजुल नेम  
चरण जेव्या, धरं करणी जव तिरणी होकर थंड सज्जी मेव्या ॥  
प्रीत तुम अजर अमर राखी, रुदसार आधार तुमारो प्रेम शिवा  
शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी—मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशिनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अग्निन  
तोत्तम जक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज  
सुंदर सङ्गुणमंदिरं, विमल केवल बोध विकेश्वरं ॥ अति सुवर्ण  
सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ अद्विय  
जक्तिर्जविनां जवेजवे, जवेदन्नीष्टार्थ निदानमद्भुतं ॥ सएव नंदा-  
त्म समुन्नवो जिनः, समर्चनीयः खलु शीतलः प्रभु ॥ ३ ॥ कर्मा  
जितमान् जवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥  
सदेव देवो जवतात् सदेवमे, सदिष्ट सिद्धयै जिनराज शीतलः ॥  
४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनुं जन्मा  
सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्तिः स्फुर्त्तिमत् पुण्यकीर्तिः,  
जयतु गत जवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विशदगुण विचित्रं सत्त्वरित्रं दधानो, दलित दुरित राशि

विश्व विश्वावदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्यो, जय  
 तु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली  
 मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कृत पदाब्जेयस्य जृंगीव पद्मा ॥ अवि  
 कृतमति कायोत्सर्ग मुडान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु  
 वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि विभ्रत् सत्फलानां सहस्रं,  
 बहुल विमल नास्वदूषणोज्ज्वल गात्रः ॥ गुरुतर वर ज्ञतया सक्त  
 चित्ताङ्गनाजां, जवतु शिव समृद्धयै चाश्वसे निर्जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥  
 कुपित करि भृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुह्यातंक शंका  
 पहर्ता ॥ विकशित मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु नृजग  
 लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेन्द्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्या  
 श्व तीर्थेशो, निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै,  
 रघाधस्या नद्या गुणः ॥ स्मर्यते येन सस्मार्यो, जवेत् प्राचीन वर्हि  
 षां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यतां  
 मरुयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन,  
 येन कटपद्रुमा अपि ॥ जवेदज्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृताय च  
 ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाज प्रदायकः ॥ कट्याण  
 कारको नूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥  
 यक्षेश पार्श्व शित पाद पार्श्व ॥ नुवामी पार्श्व जवजेद पार्श्व ॥ १ ॥  
 स्मेरातसी सून सम प्रज्ञावा, सम प्रज्ञावा जवदीय मूर्तिः ॥ वि-  
 ज्ञाति वामां प्रजव त्रिलोके, जव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥  
 तवेश पत्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता जवेदेक

यदे पराया, निर्वेश वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष जूषर्षितं  
दान वारि, यन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव गव्युत्तम दानवारी,  
प्रोच्चारितोदाम यशाः सदैवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव,  
सुज्ञान सुज्ञाननिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांगवितीर्णजूषः, कट्याण  
कट्याण कृदं गज्जाजां ॥ ५ ॥ यैरुच्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोजिरामैः  
सुमनोजिरामैः ॥ कर्मान्निधै रुज्जित जूषनास्ते, विसारि लोकेश  
विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य जगवन् प्रोदाम धामा  
न्वितं, पादाब्जं परज्जाग जूतं त्रिजुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्तं  
कर्म विपक्व पक्व दलने जव्या जवंतु कृमाः, कट्याणांश्रय मुक्ति  
माप्नु मखिलंतीर्त्वा जवान्नोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी तंदः ॥ गौमीग्रामे स्तंजने चारु तीर्थे, जीराव-  
ह्या पत्तने लोड्वाख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपा-  
र्थेशं नौमि शंखेश्वरस्यं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामा  
देव्या नंदनं देव वंध्यं ॥ स्वर्गे जूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥  
२ ॥ जित्वा ज्ञेयं कर्म जालं विशालं, प्राप्यामेन्तं ज्ञान रत्नं  
चिरत्नं ॥ लब्ध्वा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्व० ३ ॥ विश्वार्थी  
शं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कउत्रं ॥ अंजो जादं  
सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्व० ४ ॥ वर्षे रम्यं खंग दोन्नांग चंड, संख्ये  
मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा०  
५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन सौत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, धनवना धननाद विज्जाजि-  
तं ॥ जजत जक्ति जरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं  
॥ १ ॥ विविध वर्ण विज्जूपित विग्रहाः, विहित उर्द्धम दर्पकं निग्रहाः ॥

वसु युगाकै मितः सुकृताकराः, जिनवराः प्रज्जवतु शिवकरा ॥ २ ॥  
 रुचरवर्णं निबद्धं मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रज्जिवन्दितं ॥ निखिल  
 साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चित्तशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल  
 ज्ञव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसौच्चय नाशिका ॥ जिन-  
 वरानन पद्म गतोन्मुदा, ज्जवतु वाग्जिनलान्न शुन्नार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांजौनिधेः, सद्भा-  
 वेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदस्थुषः ॥ सद्भुत प्रतिबिम्ब तस्तु-  
 सुतरां गोप्तीपुरोद्भासिनः, सोद्भासप्रणिपत्य सत्यमनसां तत्रैव नित्यं  
 स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो ज्ञव्याव्रजंतो ध्वनि,  
 स्पृश्यंतैनहि उष्ट्रजंतुनिवहे वन्यैर्न वातस्करैः ॥ नैवोज्ज्वलदवानलै-  
 र्जलचराकीर्णैर्जलैजातुनो, सः श्रीपार्श्वविभुर्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्यो-  
 न केषां जवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणान्तं कुटिलतां मोहादिनोद्भा-  
 वितां, धृत्वा निर्मलज्ञावनांच विधिनायककिमातन्विता ॥ लज्जयन्ते  
 नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपि सैव शुद्धमनसा  
 संसेव्यतां विश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीरुषजस्ततो जितजिनः, श्रीशंभोवस्तीर्थकृत् ॥  
 सुश्रीमान् जिनंदनश्च सुमतिः, श्रीसद्गुणप्रज्ञः ॥ पृथ्वीकुक्षिजवसुपा-  
 र्श्व, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रज्ञः ॥ सर्वज्ञः सुविधिर्जिनो मुनिमतः, श्री-  
 शीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांशप्रभुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः,  
 शांतिः कुंथुररस्ततो जितरिपुर्महर्षिर्जिनः सुव्रतः ॥ अर्हंतो नमिने मिशुद्ध-  
 मुनिपौ विश्वत्रेये विश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनः प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान-  
 प्रभुः ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमश्रद्धपाश्चतुर्विंशति, निःशेषो-  
 त्तमज्ञव्रजंतुहृदयांजौ जप्रबोधोद्यताः ॥ वंद्यन्ते सुरवृंदवन्द्यविशदशो



कव्रजानिर्जय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकालिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रज्ञा, ज्ञास्वत्पादनखेदव-  
प्रवचनांजोधौव्यवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-  
साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनं बोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-  
र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्मःसूक्तिसुधाश्चैत्यमखिलं जैनालयंश्चालयं प्रोक्तं तत्त्रिविधं चतुर्विधममीकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ २ ॥ नाज्ञेयादिजिनाधिपा स्त्रिजुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोन्नरतेश्वरप्रज्ञतयोयेचक्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिकाविंशती, त्रैलोक्येजयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषजस्य निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशेलेर्हतां ॥ शेषाणामपिचोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणा विनयःप्रसिद्धविज्जवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरज्ञावनामरगृहे मेरौकुलाङ्गैस्थिता, जम्बुशालमलिचैत्यशास्त्रिपुतश्रावहाररूपा दिपु ॥ इहवाकारगिरौचकुंभलनगेहीपेचनंदीश्वरे, गौलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगज्ञवितरोजयत्यर्हतांजन्मान्निपेकोत्सवे, योजातः परिनिक्रमेवचज्ञवो यःकेवलज्ञानज्ञाक् ॥ यःकैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संज्ञावितः स्वर्गिज्ञिः, कल्याणानिचतानिपंचसततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ६ ॥ येपंचोषधिरुद्धयः श्रुततपोरुद्धिगतापंचये, येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि बलिनोयेबुद्धीरुद्धीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्चतेगणज्ञताकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्याश्चाष्टजयादिकाद्विगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थंकरमातृका-  
भजनकायकाश्चयक्षीश्वराः द्वात्रिंशन्निदशाग्रहानिधिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं



श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकल्याणकालेर्हतां, पूर्वाण्येपिमहोत्सवेपिस-  
ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येशूएवंतिपठंतितैश्चमनुजैर्द्धर्मार्थिकामा-  
न्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति  
मङ्गलाष्टकं संपूर्णं ॥

॥ अथ परमात्मां स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबन्धु नकर्म नकर्ता ॥  
न श्रंगं नसंगं नशृङ्गा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥  
नबन्धो नसोक्तो नरागादि लोकं, नजोगं नजोगं नव्याधि नशोकं ॥  
नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ  
नघ्राणं नजिह्वा, नचकुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिश, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं  
नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिंता, नकुतूह-  
नजोतं नकृष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी ननृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि० ४ ॥  
त्रिदंमे त्रिखंमे हरे विश्वव्यापं, रुषीकेश विद्धंस कर्म्मरिजातं  
॥ नपुण्यं नपापं नअहानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नत्राढ्यं नवृद्धं  
नविद्धि नमूढा, नखेद्यं नजेद्यं नमूर्तिर्नमीहा ॥ नरुष्णं नशुक्लं नमोदं  
नतंदा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नड्व्यं नक्षेत्रं  
नदृष्टो नजग्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥  
इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, नपूणां नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो  
न्निजिष्णं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणानि  
धिश्चैतन्यरत्नाकरं, सर्वेज्जुतगतागते सुख दुःख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥  
त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगेश्वराः, वंदेतं हरिवं-  
श हर्ष हृदयं श्रीमाननूदच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं,  
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेनच ॥

नतिष्ठति चिरंषापं, त्रिं हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य  
 श्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश  
 कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्माभूत वर्षणं ॥ जन्मदाय वि-  
 नाशाय, वृंहणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेज्जक्ति, जिनेज्जक्ति दिने २  
 ॥ सदामेस्तु २, सदामेस्तु ज्ञवेश ॥ ५ ॥ नहित्राता २, नहित्रा  
 ता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नज्जतो नज्जविष्यति ॥ ६ ॥  
 अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन,  
 रक्ष २ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखं दृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रज्जं ॥  
 नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नि-  
 त्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्मः सर्वत्र  
 मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इहार्हंतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो-  
 कोत्तमो यतीशानां, धर्मो लोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदाहं  
 तः, सिद्धा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्मं शरणं मर्हं  
 तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ तपगच्छ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोचन वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स  
 कुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिज्जुवनपति त्रि  
 सत्तातणो, नंदन गुण गंज्जीर ॥ शासनदायक जगजयो, वर्द्धमान  
 मन्वीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनंदनें, चरणें करी परिणाम ॥  
 ज्ञविक जीवना हित ज्ञणी, पूवै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ सुगति मा  
 रग आराधियै, कहो किण पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन  
 रस, ज्ञाखे श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोइयै, व्रत धरीये गु  
 रू साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥  
 विधिसुं वलि चोसराविये, पाप स्थानक अघार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरै, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ्र करणी अनुमोदियै, ज्ञा  
 व जलो मन आनि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु  
 जाण ॥ ७ ॥ शुभ्रगति आराधनतणा, ए ठै दश अधिकार ॥ चि  
 त्त आणीने आदरो, जिम पामो जव पार ॥ ८ ॥ ( ढाल ॥ १ ॥  
 ए ठिंमी किहां राखी ॥ इस चालमें ) ज्ञान दरिशाण चारित्र तप  
 वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह जव पर जवना, आलोइये  
 अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी  
 रे ॥ प्रा० ज्ञा० १ ॥ गुरु नलविये नही गुरु विनयें, कालै धरी बहु  
 मान ॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधा, जणिये वही उपधान रे ॥  
 ॥० ज्ञा० २ ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ एह  
 णी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥  
 ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव प  
 जव वलिय जवोजव, मिठाडुक्रम तेहरे ॥ प्रा० समकित  
 द्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजै, नवि परमत  
 अजिलाष ॥ साधुनणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥  
 प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं ठंमो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा  
 हमीने धर्मे करि श्रिता, जगति प्रज्ञावना करिये रे ॥ प्रा० स०  
 ६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे  
 वको जे विणसाड्यो, विणसंतां नवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-  
 त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंरुचुं जेह ॥ आ जव प०,  
 मि० ॥ प्रा० चारित्र द्यो चित आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण  
 गुप्ति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे घरमे प्रमादे, अशुद्ध  
 वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ए ॥ आवकने धर्मे सामायक, पो  
 सहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमायन पाली  
 रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र रुहोड्युं

जेह ॥ आज्ञव०, मित्रा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ वारे जेदे तप नवि  
 कीधो, ठते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि  
 फोरविनं जगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर,  
 विविध विराध्या जेह ॥ आज्ञव०, मित्रामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥  
 वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर व  
 चन सुणीने, पाप मैल सवि धोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२)  
 पृथ्वी पाणी तेज, वाज वनस्पती, ए पांचे आवर कह्या ए ॥ करी  
 करसण आरंज, खेत्र जे खेमीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥ १ ॥  
 घर आरंज अनेक, टांका ज्योरां, मेमी माल चिणाविया ए ॥  
 लीपण गुंण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥  
 २ ॥ धोयण नाहण पाणी, जीलण अप्पकाय, ठोती धोती कर दू  
 हव्या ए ॥ ज्ञाठीगर कुंजार, लोह सोवनगरा, ज्ञामजूजा लिहालागरा  
 ए ॥ ३ ॥ तापण सेकण काजे, वस्त्र निखाण, रंगण रांधण रसवती ए ॥ इ  
 णि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेज वाज विराधिया ए ॥ ४ ॥ वासी  
 वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूंटीया ए ॥ पौंदक  
 पापमि शाक, सेक्या सूकव्या, ठेद्या ठूंद्या आश्रिया ए ॥ ५ ॥ अल  
 शीने एरंम, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलू  
 मांदि, पीली सेलमी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकें-  
 डी जीव, हणया हणाविया, हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आज्ञव  
 परज्ञव जेह, वलिय ज्ञवोज्ञव, ते मुऊ मित्रामिडुक्कमं ए ॥ ७ ॥  
 क्रमी सरमिया कीमा, गामर गंमोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥  
 वाला जलो चूमेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥  
 ८ ॥ इम बेइंडी जीव, जे में दूहव्या, ते मुऊ मि० ॥ उदेही जूं  
 लीख, मांकम मंकोमा, चांचम कीमी कंशुआ ए ॥ ९ ॥ गदहिया  
 घीबेल, कानखजुग्मा, गीमोला धनेरीयां ए ॥ इम तेइंडी जीव,

जे में दूहव्या, ते मुऊ मिठा० ॥ १० ॥ माखी मडर मास, मसा  
 पतंगिया, कंसारी कोलियावना ए ॥ ठीकण विबु तोर, जमरा  
 जमरीय, कौंता बग खरमांकमी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव,  
 जे में दूहव्या, ते मुऊ० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या,  
 वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीम्या पंखी जीव, पामो पा-  
 समां, पोपट घाड्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंडी जीव, जे में दू०, ते  
 मुऊ० ॥ १३ ॥ ( ढास ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए  
 चाल ) क्रोध लोभ जय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥  
 क्रूर करी धन पारका जी, लीधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी  
 मिठामि डुकर आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥  
 देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥ १ ॥ देव मनुज तिर्यचना जी,  
 मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह  
 रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, जंवर मेली आधि ॥  
 जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोश्य न आवै साध रे ॥ जि० ३  
 ॥ रयणी जोजन जे कर्मा जी, कीधा जह अन्नह ॥ रसना र  
 सनी लालचें जी, पाप कर्मा परतह रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई  
 बीसारीया जी, बलि जांग्या पञ्चस्काण ॥ कपट हेतुं किरिया करी  
 जी, कीधा आप बखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आवे दूहे जी,  
 आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अ-  
 धिकार रे ॥ जि० ६ ॥ ( ढाल ४ ॥ साहेलमीनी देशी ॥ ) पंच  
 महाव्रत आदरो, साहेलमी रे ॥ अथवा ढयो व्रत बार तो ॥ यथा  
 शक्ति व्रत आदरी, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १ ॥ व्रत लिया  
 संजारीयै, सा० ॥ हीयमै धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन-  
 तणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सबै खमाविथै  
 सा० ॥ योनि चोरासी लाख तो ॥ मनशुद्धि करो खामणा, सा० ॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवौ, सा० ॥  
 कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजै  
 जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी संघ खमावियै, सा० ॥ जै उप  
 नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा  
 सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमावियै, सा० ॥ एहीज धर्म  
 नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजों अधि  
 कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ धन मुर्खा मैथुन  
 तो ॥ क्रोध मान माया तूष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥  
 निंदा कलह न कीजीयै, सा० ॥ कूटा न दीजै आल तों ॥ रती  
 अरती मिथ्या तजों, सा० ॥ माया मोल जंजाल तों ॥ ८ ॥ त्रि-  
 विधर वोसरावियै, सा० ॥ पाप स्थान अठार तो ॥ शिवगति आ  
 राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥ ( ढाल ५ मी  
 ॥ हवै निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥ ) जनम जरा मर-  
 णो करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्या कर्म सहु अनुजवे ए,  
 कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण  
 सिद्धनगवंत तो ॥ शरण धर्म अजैननो ए, सार्धु शरण गुणवंत  
 तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार  
 तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तों ॥ ३ ॥  
 आज्ञव परज्ञव जे कस्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म  
 साखे निंदिये ए, पम्किमिये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत  
 वर्त्ताविआ ए, जे ज्ञाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वले ए,  
 बलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५ ॥ घम्या घमाव्या जे घणा ए, घरटी  
 हल हथियार तो ॥ जवर मेढी मूकीया ए, करतां जीव संहार  
 तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जनमर परिवार तो ॥ जन-  
 मांतर पोहतां पढी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आज्ञव



परञ्चैव जे कर्यां ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविधर वोस्ति  
राविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा इम  
करी ए, पाप कर्यां परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए  
ठठो अधिकार तो ॥ ९ ॥ ( ढाल ठठी ॥ आदि तुं जोइने आपणी  
॥ ए चाल ॥ ) धनर ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान  
शीयल तप आदरी, टाळ्या दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शैत्रुंजादिक तीर्थ  
नी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, वलि पोष्या पात्र ॥  
ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर चिने चैत्य ॥ संघ चतु  
र्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पम्किमणा सुपैर कर्या,  
अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवझायने, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥  
धर्मकारज अनुमोदिये, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ ज्ञाव जलो मन आणीयै, चित्त आ  
णी ठाम ॥ समता ज्ञावे ज्ञाविये, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख  
दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचर्या,  
जोगविये सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य  
काम ॥ ठारि ऊपर ते लीपणू, जाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ ज्ञावे  
जली परै ज्ञाविये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
आठमो अधिकार ॥ ध० ९ ॥ ( ढाल ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपरै  
॥ ए चाल ) हवै अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसण  
आदरिये पञ्चस्की च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूकी ठांमी समत  
अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यारे कीधा आ  
हार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीन रंक ॥ इसहो  
ए वलीर अणशणनो परिणाम, एहथी पामीजै शिवपद सुरपद ठाम  
॥ २ ॥ धन धन्ना शालिज्जइ खंडो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या  
जवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्यै करी एक अवतार, आराधन करे



ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमै अधिकारै महा मंत्र नवकार,  
 मनथी नवि मूँको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जायै दुर्ग  
 ति दोष विकार, सुपरे ए समरो चन्द्र पूरवनो सार ॥ ४ ॥ ज-  
 न्मांतरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर अव-  
 तार ॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह जव ने परजव सुख  
 संपति दातार ॥ ५ ॥ जुन जील जीलणी राजा राणी आय, नवपद म  
 हिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुं पाम्या बै सुर  
 जोग, इक जवथी लेस्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व  
 ली मंत्र फढ्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥  
 शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना  
 सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर जाख्यो, आराधनकेरो विधि  
 जिणे चित्तमां राख्यो ॥ तिणे पाप पखाली जवजय दूरे नांख्यो,  
 जिन विनय करंता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ७ ॥ ( ढाल ७  
 मी ॥ नमो जवि जावसुं ए ॥ ए चाल ) सिद्धारथराय कुल तिलो  
 ए, त्रिशला मात मढ्हार तो ॥ अवनी तलै तुमे अवतरया ए,  
 करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में  
 अपराध करया घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आ  
 व्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० २ ॥ आश करीने आवियो  
 ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखस्यो ए, तो किम  
 रहस्यै लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूऊण आकरा ए, जनम मरण  
 जंजाल तो ॥ हुं तुं एहथी उजग्यो ए, ठेम्ह देवदयाल ॥ ज०  
 ४ ॥ आज मनोरथ मुऊ फढ्या ए, नाठा दुःख दंदोल तो, तूगे  
 जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥ ज० ५ ॥ जव  
 विनय तुम्हारमो ए, जाव जगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि  
 दीजीये ए, बोधवीज सुपसाय ॥ ज० ६ ॥ ( कलश ) इय

तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर  
 जिणवर चरण शुणतां, अधिकमन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव  
 सूरिंद पटवर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगह्वपति श्रीविजयप्र  
 ञ्सूरि, सूरि तेजे जगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वा  
 चक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तश शिष्य वाचक विनय वि-  
 जयें, शुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगणतीसे,  
 रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण  
 अज्यास ए ॥ ४ ॥ नरजव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील वि  
 लास ए ॥ निर्झरा हेते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥  
 इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिंहाय लिख्यते ॥

भरहेसर बाहुवली, अजयकुमारोअ ठंढणकुमारो ॥ सिरिज  
 अणियान्तो ॥ अयमन्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मे अज्जयूलिज्जदो, वरय  
 रिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंरिओ केसि  
 करकंरू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिज्ज  
 होअ ॥ ज्जदोअ दंसन्नज्जदो, पसन्नचंदोअ जसज्जदो ॥ ३ ॥ जंबूपहू  
 वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चि-  
 लाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरस्किंय, अज्जसुहत्थो  
 उदाय गोमणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥  
 पज्जवो विन्दुकुमारो, अदकुमारो इठपहारोअ ॥ सिज्जंत कूरगडुअ,  
 सिज्जंतव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुदं गुण-  
 गणेहि संयुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे, पावपबंथा विलयजंति ॥ ७ ॥  
 सुलसा चंदणवाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ नमयासुंदरि  
 सीया, नंदा ज्जहा सुज्जहाय ॥ ८ ॥ राईमई रिसिंदत्ता, पज्जमावई  
 अंजणा सिरीदेवी ॥ जिठ सुजिठ मिगावई, पज्जावई चिह्णणादेवी

॥ ए ॥ वंज्री सुंदरी रुपिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई  
 दोवई थारणी, कलावई पुष्पचूलाय ॥ १० ॥ उपमावईय गोरी,  
 गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चजाया, रुपिणी कन्हव  
 महितीत ॥ ११ ॥ जस्काय जस्कदिना, नूआतह चव नूअ वि-  
 न्नाय ॥ सेणा वेणा रेणा, नअणीओ थूलनदस्स ॥ १२ ॥ इच्चाई महा-  
 सईओ, जयंती अकलंक शील कलिआन ॥ अऊ विवऊई जासिं,  
 जस परुदो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीउनी सिझाय  
 ॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, सिङ्गपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ उव्विहआव-  
 द्दसयंमि, उज्जुत्तोहोइपयदिवसं ॥ १ ॥ पवेसुपोसहवयं, दाणंशीलं  
 तवोअत्तावोअ ॥ सझायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥  
 २ ॥ जिणपूआजिणयुणिणं, गुरुयुअसाहस्मिआणवच्चलं ॥  
 ववहारस्सयसुद्धी, रदयत्तातित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उव्वशमविवेकसंबर,  
 द्दासासमिईउज्जीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोच  
 णपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवस्विहुमाणो, पुत्थयलिहणंपत्तावणा  
 तित्थे ॥ सद्धाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोरु, जिनवर नामे मंगल कोरु ॥ पदेले  
 स्वर्गे लाख वत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजै लाख  
 अष्टावीश कह्या, त्रीजै वार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अरु लाख  
 धार, पांचमें बांदूं लाखज ध्यार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस्र पचास,  
 सातमें चाळीस सहस्र प्राशाद ॥ आठवे स्वर्गे ठ हज्जार, नव द-  
 शमें वंदूं शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणसे सार, नव ग्रैवे  
 यके त्रणसे अठार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधि-  
 का वली ॥ ४ ॥ सहस्र सत्ताणु त्रेवीस सार, जिनवरस्तुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पच्चास नुं वा बहोत्तर धार ॥ ५ ॥  
 एकसो असी बिंब परिमाण, सजा सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोम  
 बावन कोम संजाल, लाख चोराणुं सहस चोआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर  
 साठ विसाल, सबी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोमने बहो-  
 त्तर लाख, जुवनपतीमां देवल जारव ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब  
 प्रमाण, इकर चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोमि निव्याशी कोमि,  
 साठ लाख वंदू करजोम ॥ ८ ॥ बत्तीशे ने ओगणसाठ, तिर्था-  
 लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशै वीश ते  
 बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर ज्योतषीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर  
 वंदू तेह ॥ रुषजा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-  
 शेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥  
 विमलाचल ने गढगिरनार, आबू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥  
 शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-  
 काणो पाश, जीरावलो ने थंजणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर  
 पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन  
 वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-  
 गार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार,  
 घाले पदावै पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अन्त्यंतर तप नजमाल, ते  
 मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नितर ऊठी कीर्त्तिकरुं, जीव कहे नव-  
 सायर तरुं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हतप्रतिष्ठान, मधिष्ठानंशिवश्रियः ॥ नृर्नुवःस्वस्वयी-  
 शान, मार्हित्यंप्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यजावैः, पुनतःस्त्रिज-  
 गजनं ॥ क्षेत्रेकालेचसर्वस्मिन्, नर्हतःसमुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-  
 मंपृथ्वीनाथ, मादिमंनिःपरिग्रह ॥ मादिमंतीर्थनाथंच, रुषजस्वा-

मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्द्धतमजितंविश्व, कमलाकरजास्करं ॥ अस्मान-  
 केवलादर्श, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वज्जव्यजनाराम, कुड्या-  
 तुड्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंज्ञवजगत्पतेः ॥ ५ ॥  
 अनेकांतमतांज्ञोधि, समुद्धाशनचंडमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, जगवान्-  
 जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्कीरीटशाणाग्रो, तेजितांजिनखावलिः ॥  
 जगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वज्जिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रजप्रज्ञोर्देह,  
 ज्ञासःपुष्पंतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कौषाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥  
 श्रीसुपार्श्वजिनेंज्ञाय, महेंद्रमहितांह्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-  
 ज्ञोगजास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रजप्रज्ञोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्ति-  
 मुर्ति सितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्व, कल-  
 यनकेवलश्रियां ॥ अचिंत्यमहात्म्यनिधिः, सुविधिवोधयेस्तुवः ॥ ११ ॥  
 सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः  
 पातुवोजिन ॥ १२ ॥ ज्वरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ नि-  
 श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीञ्चूत,  
 तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनांतुवः ॥ १४ ॥  
 विमलस्वामिनोवाचः, कृतकहोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो,  
 जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पदि, करुणारसवारिणा ॥  
 अनंतजिदनंताव, प्रयच्छतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्माण,  
 मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्ध्याधर्मदेष्टारं, धर्मनाथंमुपास्महे ॥ १७ ॥  
 सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्म्यातमःशांत्यै,  
 शांतिनाथजिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथोजगवान्, सनाथोतिशयध्वि-  
 ज्ञिः ॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तुज  
 गवां, श्रुतश्रीरनजोरविः ॥ श्रुतश्रीपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः ॥ २० ॥  
 सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं ॥ कर्मद्रुमूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमज्जि  
 पुमः ॥ २१ ॥ जगन्महामोहनिज्ञ, प्रत्युपममयोपमं ॥ मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥ २२ ॥ लुठंतोनमतामूढि, निर्मलीकारकारिणं ॥  
 वारिष्ठवाश्वनमेः, पातुंपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदुवंशसमुद्भूः,  
 कर्मकक्षदुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्जगवान्, नूयादोऽरिष्टनाशनः ॥  
 ॥ २४ ॥ कसोवेधरणेन्द्रेच, स्वोचितं कर्मकुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनो  
 वृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथा  
 याद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायादतेनमः ॥ २६ ॥ कृता  
 पराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्वाष्पादयोर्जद्र, श्रीवीरजिनने  
 त्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्री  
 मान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्जगवान् ॥ २८ ॥  
 वीरः सर्वसुरासुरेण्महितो, वीरंबुधाः संश्रिता ॥ वीरेणान्निहतः स्वक  
 र्मेनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरासीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वी  
 रस्यधोरंतपो ॥ वीरे श्रीधृतिकीर्तिं कांतिनिचयः, श्रीवीरज्ञेदिशः ॥  
 ॥ २९ ॥ अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानां दिव्य  
 वैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां  
 ज्ञावतोर्दनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्रं लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीशदायारं ॥ समरामिन्नत-  
 पालग, निवाणीगरुकयसेवं ॥ १ ॥ नैसनमो विष्णोसहिपत्ताणं,  
 संतिसामि पायाणं ॥ जौस्वाहा मंतेणं, सवाशिवदुरिअहरणाणं  
 ॥ २ ॥ नैसंतिनमुक्कारो, खेवोसहि माइलद्विपत्ताणं ॥ सौह्नीनमो  
 सवोसहि, पत्ताणंचंदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरि-  
 देवीजस्करायगणिपिरुगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरस्कंतुजि-  
 णत्तत्ते ॥ ४ ॥ रस्कंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जासिखलासया ॥ व-  
 ज्जंकुसिचकेसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगं-  
 धारी, महजाला माणवीअ वरुद्धा ॥ अहुत्तामाणसिआ, माहा



माणसिआन देवीन ॥ ६ ॥ जस्कागोमुहमहोजस्का, तिमुहजस्के  
 सुतुंबरूकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिन, वंजोमाणुनसुरकुमारो ॥ ७ ॥  
 ठम्मुहपायालकिन्नर, गरुलोगंधवतहयजरिंदो ॥ कुबेरवरुणोजिनमी  
 गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीनचकेसरी, अजिआडुरिआरि  
 कालीमहाकाली ॥ अञ्चुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिवन्हा ॥ ९ ॥  
 चंमाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निवाणिअञ्चुआधरणी ॥ वैरुट्टवु-  
 ल्गंधारी, अंबपन्नमावईसिध्वा ॥ १० ॥ इयतित्थरस्केणयां,  
 अन्नेविसुरासुरीचक्रहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरस्केसयाअ  
 म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिठिसुरगण, सद्विओसंघस्सलंतिजिणचंदो ॥  
 मञ्जविकरेउरस्के, सुणिसुंदरसूरिअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना  
 हत्तम्मदिठी, रस्केलरइतिकालंजो ॥ सव्वोवद्वरद्विओ, सलहइसुह  
 संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगण्ठगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरू  
 णं ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिंजणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता ॥ पुस्कलवई विज-  
 ये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंमरीगणी, नयरी  
 ये सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, जवियणना मन मोहे ॥ २ ॥  
 चन्द्र सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंथु अर जिना  
 अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अजुक्रमे प्रजु जनमिया, वली  
 योवन पावै ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावै ॥ ४ ॥  
 जोगवी सुख संसारना, संजम मन लावै, मुनिमुव्रत नमी अंतरे,  
 दीक्षा प्रजु पावै ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो हय करी, पास्या केवल  
 नांण ॥ वृषज लंठने जोजता, सर्व ज्ञावना जाण ॥ ६ ॥ चौराशी जस  
 गणधरा, मुनिवर एकसो कोमी ॥ त्रण जुवनमां जोजतां, नहि  
 कोई एहनी जोजी ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रजुजीनो



परिवार ॥ एक संनय त्रण कालना, जाणै सर्व विचार ॥ ८ ॥  
 सुदय पेढाल जिनांतरे ए, आशै जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु  
 प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीव ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः  
 ॥ आसीमंधर जगधणी, आ जरते आवो ॥ करुणावंत करुणा  
 करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल ज्ञात तुमे धणी ए, जो होवे  
 अम नाथ ॥ जवोजव हूं तूं ताहरो, नहीं मेळूं हवे साथ ॥ २ ॥  
 सयल संग ठंरी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने,  
 शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुऊनै धणो ए, पूरो सीमं-  
 धरदेव ॥ इहांथकी हूं वीनवूं, अवधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन दिनकरं ॥  
 सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल  
 गिरिवर शृंग मंमण, प्रवर गुणगण जूधरं ॥ सुर असुर किन्नर  
 कोमि सेवित, नमो ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिह  
 नगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमै अहनिशि, नमो ॥ ३ ॥ पुंन-  
 रीक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल  
 गिरिवर शृंग सीधा, नमो ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद  
 मुनिवर, कोमिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगै, नमो ॥  
 ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि  
 अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर  
 शिखर मंमण, दुःख विहंमण ध्याईये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधन  
 नार्थे, परम ज्योतिर्नेषाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विमोह निज्ञ,  
 परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मवि-  
 जयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीशत्रुंजय  
 सिद्धक्षेत्र, दीवै दुर्गति वारै ॥ ज्ञाव धरीनै जे चढै, तेने जव पाइ

ऊतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥  
 पूर्व नवाणूं रुपनदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंम  
 सोहामणो, कवरुयक अजिराम ॥ नाजिराया कुलमंणो, जिन-  
 चर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेश्वर परमात्मा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधि-  
 देव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा  
 रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण  
 अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कळ्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन  
 ध्यानश्री, चिदानंद सुख आय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमात्म पासे जावजो ॥ मुऊ  
 चीनतरी, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संजलावजो ॥ जे त्रएय जुवन  
 ना नायक वै, जस चोसठ इंदर पायक वै, नाण दरशण जेहना  
 कायक वै ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया वै, जश धोरी  
 लंठन पाया वै, पुंरुगीणी नगरीनो राया वै ॥ सुणो० ॥ २ ॥  
 बार पर्पदा मांदि विराजै वै, जश चोत्रीश अतिशय ठाजै वै,  
 गुण पेत्रीस वाणीयें गाजै वै ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ जविजनने ते पमिवोहे  
 वै, तुम अधिक शीतलगुण सोहे वै, रूप देखी जविजन मोहे वै ॥  
 सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो वूं, पण जरतमां दूरै वसि  
 ओ वूं, महा मोहराय कर फसियो वूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण  
 साहिव चित्तमां धरियो वै, तुम आणा खरुग कर ग्रहियो वै, तव  
 कांइक मुऊश्री रुरियो वै ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ द्वे  
 पूरो, कहै पद्मविजय आजुं शूरो, तो बांधे मुऊ मन अति नूरो ॥  
 सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखमियें रे में आज सेत्रुंजो दीगो रे, सवालाख टकानो  
दिहानो रे, लागे सुनें मीगो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो ऊमा  
हो, वालामारा, जवनो संशय जाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर  
निवारी, चरणे प्रभुजीनें लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवजवनो  
लाहो लीधो, वाला० देहमी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपानें फू-  
लमे वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधमे पखालीनें  
केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे  
जोतां, पापमेवासी ध्रुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सु-  
रपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ  
मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इंद सरीखा ए  
तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल  
टालै, सूरजकुंरुमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरेश श्रीसिद्धक्षेत्रे,  
वा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अ-  
नंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाग्निराया सुत नयणे जोतां, वा०  
मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री  
आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदियै, कीजै एहनी सेवा ॥ मानू  
हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जाल जिन गृहमंरुली,  
तिहां दीपै उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि०  
२ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि  
आगलै, श्रीसीमंधर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कर्या,  
जात्राफल लहियै, तेहथी ए गिरि जेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥  
वि० ४ ॥ जनस सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश  
विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाग्निराजांगजं,  
 वंदैरैवतशैलमौलिमुकुट श्रीनेमिनाथं यथा ॥ तारंगे अजितं जिनं नृगु  
 पुरे श्रीसुव्रतं स्पृजने, श्रीपार्श्वे प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा  
 ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प जुवने ग्रैवैयके व्यंतरे, ज्योतिष्कामरमंदरा  
 त्रिवसतो स्तीर्थकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे  
 कुंभले, ये चान्येपि जिना नमामि सततं तान् कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥  
 श्रीमद्दीरजिनास्य पद्महृदतो निर्गम्यते गौतम, गंगावर्त्तनमेत्यया प्रवि-  
 ष्णवे मिथ्यात्ववैतादयकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहति त्रिपयगा ज्ञानां-  
 वुग्रावृद्धिगा, सामेकर्ममलंहरत्वविकलं श्रीद्वादशांगीनदी ॥ ३ ॥ शक्र  
 श्वेन्द्रविग्रहाश्वधरण ब्रह्मेन्द्रशांत्यंबिका, दिग्पालाः सकपर्दिगो मुख  
 गण श्वकेश्वरी नारती ॥ येन्ये ज्ञानतपक्रियाव्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रा  
 दिपु, श्रीसंघस्य तुराचतुर्विधसुरा स्ते संतुज्ज्वलंकराः ॥ इति श्रीपंच  
 तीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिन्नाय ॥

( नदी यमुनाके तीर उमे दोय पंखीया ॥ ए देशी ) पिन्जी  
 पिन्जी रे नाम जपुं दिन रातियां, पिन्जी चढया परदेश तपे मो  
 री गतियां, ॥ पगपग जोती वाट वालेसर कव मिले, नीर विगो  
 ह्या मीन के ते जुं टलवलै ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण  
 नवि गमे, जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारूं मन जमें ॥ जो होव  
 सज्जन दूर तोही पासे वसै, किहां सायर किहा चंद देखी मन न  
 छसै ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलावै  
 देह दीपक मनमें नहीं ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहनें,  
 सादे रे साल समान हियामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीर  
 जोवनवय अति दहै, जेहनो पिन् परदेश ते माणस दुःख सहै ॥

जुरी२ पंजर कीध काया कमला जिसी, हजुअ न आव्यो नेम मि  
ली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहसु रंग टाळ्यो ते नवि टलै,  
चकवा रयणी विजोग ते तो नयणो मिलै ॥ आंबा केरो स्वाद निंबू  
ते नवि करै, जे नाह्या गंगा नीर ते ठीलर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या  
मालतीफूल धतुरे किम रमे, जेहने घीसुं प्रेम ते तेले किम जमे ॥  
जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करै, नवजोवन तजी नेम वैरागी  
थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वां  
द्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनै ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती  
मनरली, रूपविजय प्रभु नेम जेदे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिंहाय लिख्यते ॥

आजखो तूटाने सांधो को नही रे, तिण कारण म करो  
जीव प्रमाद रे ॥ जरा आव्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा ठोमने  
दया पाल रे ॥ आ० १ ॥ कुटुंब कबीला नारी कारणे रे, मूरख  
संख्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे ठंढी जूरसे रे, सहीसे इह  
लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ नुंछा चिणाव्या मंदिर मालि  
या रे, दे दे धरतीमें जुंढी नीद रे ॥ एक दिन अणजाण्युं कठी  
चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जीव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्र  
वर्त्ति हर बल राणो केशवो रे, जोजो वली इंद्र सुरानो नाथ रे ॥  
कगी२ने नवेही आथम्या रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे ॥  
आ० ॥ ४ ॥ अशिर संसार तजी मुनि नीसरया रे, करता मुनि  
नवला तेह विहार रे ॥ जारंरुपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे मम-  
ता नेह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पावै रूमी रीतसुं रे, देवे  
मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोहने रे, जश  
लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता  
धरो रे, म करो मुनि जणानुं अजिमान रे, रुषी चोथमल सूत्र

देखीनि रे, जोरु करी जालोर मऊार रे ॥ आउ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतोर्थी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रति  
मा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥ ओत्रुंजय श्रीआदिदेव,  
नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आवू रूपन्न जूहार  
॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरै, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय  
शूरति मानसुं, नरते नरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ  
वमूं, ज्यां वीजै जिन पाय ॥ वैन्नारकगिरि ऊपरै, श्रीवीर जिने  
श्वरराय ॥ ४ ॥ मांसवगहनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ रूपन्न  
कहै जिन समरतां, पोहचै मननी आश ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

हु विध धर्म जिन उपदिश्यो, चोआ अजिनंदन ॥ बीजै  
जन्म्या ते प्रजु, नवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ हु विध ध्यान तुम्हे  
परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमतिजिन, ते चविया  
बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने नवि तजिये ॥  
सुऊ परे शीतल जिन कहै, बीज दिन शिव नजिये ॥ ३ ॥ जी  
वाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने वासुपूज्य परे,  
लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्रय नय व्यवहार दोय, एकांत न  
अदियै ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहियै ॥  
॥ ५ ॥ वर्तमान चोवीशीये, एम जिनकळ्याण ॥ बीज दिने केश  
पामिया, प्रजु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीये, हुआ  
बहुत कळ्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां दोय सुख  
खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगमै वैरा वीरजिन, न्नाखै नविजन आगै ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो ज्ञवि ज्ञावसैं, पांचम  
 अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तित्थि निहाली ॥ २ ॥  
 ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी  
 लहुं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कहो,  
 काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक पन्धान  
 ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करै कर्मनो खेह ॥ पूर्व कामी वरसा  
 लगै, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कहो, सर्व  
 आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥  
 पंच मास लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच  
 मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,  
 काजसग लोसस केरो, ऊजमणूं करो ज्ञावशुं ए, टाले ज्ञव फेरो  
 ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणी ज्ञाव अपार ॥ वरदत्त  
 गुणमंजरी वरे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमी चैत्य-  
 वंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण  
 वदि आठमें, संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें,  
 जनम्या रुषज्जिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम  
 सुनिचंद ॥ २ ॥ माघव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर ॥  
 अजिनंदन चोथा प्रज्जू, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम  
 ऊजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-  
 रावै सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥  
 नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण  
 वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगज्जाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमें,  
 पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ ज्ञाइवा वदि आठम दिने, चविया



स्वामी सुंपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, सैव्याथी शिववास ॥३॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभुकेवल पायो, संघ चतुर्विध थापवा,  
महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सौमलद्विज  
यज्ञ ॥ इन्द्रुति आदे मिळ्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें  
चतु गुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करै, मन अग्निमान  
अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक शंसय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें  
थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर  
मल्लि पास, वर चरण विलागी ॥ रुषन्न अजित सुमती नमी, मल्लि  
घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रन्न शिव वाश पास, जवन्नवना  
तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्धि सगली जोमी ॥ ६ ॥ दश  
क्षेत्रें त्रिहु कालनां, देहसें कळयाण ॥ वरश अग्यार एकादशी, आराधो  
वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंग लखाविये, एकादश पाठा ॥ पूंजणी  
ठवणी विटेंणी ॥ मस्ती कागल काठा ॥ ८ ॥ अग्यार अव्रत वांस्वा ए,  
वहो पस्तिमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनै, सफल करे अव  
तार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहिव देव, अरिहत सकलनी  
जाव धरी करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर जाषित वाणी,  
जंयवंतो आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ( यह थुई च्यार  
वखते पण कहवाय ठे )

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंशु  
अंरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परसंसा जी ॥ सुव्रत नमि  
अंतर वर दीक्षा, शिक्षा जयतनि रासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांत-  
रमां प्रभु, जासे शिवबहु पासे जी ॥ १ ॥ वत्रीस चउसदि

चनसठि मलिया, इगसथ सठि उक्किठा जी ॥ चन अम अम मिली  
 मध्यम काले, वीश जिनेसर दिठा जी ॥ दो चन च्यार जधन्य  
 दश जंबू, धायई पुरकर मऊरे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे,  
 प्रवचनसार उद्धारेजी ॥ १ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद  
 खवण निमित्ते जी ॥ अर्धनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत  
 विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरब युत्त रचिया, गणधर लब्धि विक-  
 सिया जी ॥ अपञ्जवसिय जिनागम बंदो, अकर पदना रसिया  
 जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगो, विविध जंग व्रतधारी जी  
 ॥ चनविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपडव हरनारीजी ॥ पंचां-  
 गुली सुरी शासनदेवी, देती तस जश रुद्धो जी ॥ श्रोशुन वीर  
 कहै शिवसाधन, कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्र-  
 णमें चंद्रतणी जिहां रेख ॥ तिहां चंड विमानें शाश्वत जिनवर  
 जेह, जे बीजतणे दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन  
 चंदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव  
 साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें  
 दिन प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजै द्विविध धर्म जग-  
 वंत, जेम विमला कमला विबल नयण विकसंत ॥ आगम अति  
 अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार, बीजै सवि कीजै पातिकनो परि-  
 हार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्के-  
 सरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोमीबीजे हुं प्रणमुं तस पाय,  
 इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज थुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमजिनंद तो ॥ स्यामबन

रण तनु शोजतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रजु  
 आउखो ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए,  
 पोहता मुक्ति मज्जार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या  
 मुक्ति मज्जार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरमार  
 तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत-  
 शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥  
 नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, ज्ञाखे सार वचन तो ॥ जीवदया गुण  
 वेदनी ए, कीजै तास जतन तो ॥ मृषा न बोखो मानवी ए,  
 चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थकर इम कहे ए, परहरियै  
 परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यह जलो ए, देवी श्रीअंबिका  
 नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥  
 तपगठ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिष-  
 ज्ञदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, ज्ञाव धरी सुरराजाजी ॥  
 आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिने  
 श्वर जन्म महोत्वस, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप  
 करतां अम घर, मंगलकमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी  
 गजगंजन, अष्टापद परे बलीया जी ॥ आठमें आठसुरूप विचारी,  
 मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंचता जिनवर,  
 फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य  
 वाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण  
 जिन राजै जी ॥ आठमे आठ सो आगम ज्ञाखी, ज्ञवि मन संशय  
 ज्ञांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पालै निरतीचारो जी ॥  
 आठमने दिन अष्ट प्रकारै, जीव दया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा कराने, मानवजन्म फल लीजै जी ॥ सिद्धाई देवी  
जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजैजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजै,  
निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, तपथी,  
कोरु कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवसी, गोविंद पूठ नेम ॥ कोण कारण  
ए पर्व मोहुं, कहो मुझसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अति-  
घणा, एकशो ने पञ्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोहोहुं, करो मौन  
उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहै ते जिनवर  
देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौवीश  
जिनवर सखल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल  
नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखाविये,  
अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवली विंटणा, ठवणी पूंजणी  
सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी  
इम कुजमो, जेम पामिये जव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी  
कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ जुजमरु चंद्र अखंड  
जेहनें, समरतां सुख आय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि  
हर्ष पंक्ति शीश, शासनदेवो विघन निवारो, संघतणा निश  
दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शय्याविभोः शैशवै ॥ रूपा-  
लोकनविस्मया, हृतरसप्रांत्या अमञ्जकुषा ॥ उन्मृष्टनयनप्रज्ञा  
धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रंयस्यपुनःपुनःसजयति, श्रीवर्द्ध-  
मानोजिनः ॥ १ ॥ इंसांसाहतपद्मरेणुकपिश, क्षीरार्णवांजोन्नतैः ॥  
कुंजैरप्सरसांपयोधरजर, प्रस्पर्धिज्जिःकांचनैः ॥ येषांभंदररत्नशैल-

शिखरे जन्मान्निषकेऋतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेपांनतोहं  
 क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशालं ॥  
 चित्रंवद्वर्धयुक्तंमुनिगणवृषजै, धारितंबुद्धिमन्निः ॥ मोक्षाश्वद्वारज-  
 तंत्रतचरणफलं, ज्ञेयज्ञावप्रदीपं ॥ ज्ञक्तयानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं,  
 सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचं-  
 दानंदं ॥ मत्तंघंटारवेणप्रसृतमदजलं, पूरयंतंलमंतात् ॥ आरूढो-  
 दिव्यनागंविचरतिगगने, कायदःकामरूपी ॥ यक्षःसर्वानुज्जूतिर्दिश-  
 तुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्याणकंदं पदसं जिणंदं, संतितन्न नेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं  
 पयासं सुगणिककाणं, जत्तीइवंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार  
 संसार समुदपारं, पत्ताशिवं दितु सुइक्सारं ॥ सद्ये जिणंदा सुर-  
 विंद विंदा, कल्याणवल्लीण विसालकंददा ॥ २ ॥ निवाणमग्गे वरजा  
 ण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं बुद्धाणं  
 ॥ नमामि निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदीइ गोखीर तुसारवन्ना,  
 सरोज हठा कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुठयवग्ग हठा ॥ सुहा  
 यसा अम्ह सयापसन्ना ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार,  
 वाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम  
 चंड वखाणूं, जलवर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम  
 दंश, कुलमांहे जिम रूपन्ननो वंश, नाजितणो जे अंश ॥ कमा  
 वंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महांता, शत्रुंजयगिरि गु  
 णवंता ॥ १ ॥ रूपन्न अजित संजव अजिनंदा, सुमतिनाथ मुख  
 पूनमचंदा, पद्मप्रन्न सखकंदा ॥ श्रीसुपार्थ चंद्रप्रन्न सुविधी, श्रुतल

श्रेयास सेवो बहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत  
 जिन धर्म ए शांती, कुंशु अर मल्लि नमुं एकांती, मुनिसुव्रत सुद्ध  
 पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश,  
 सिद्धगिरि आख्या ईश ॥ २ ॥ ज़रतराय जिन साथै बोलै, स्वामी  
 शत्रुंजयगिरि तोले, जिनहुं वचन अमोले ॥ रुषज कहै सुणो ज़र  
 तराय, बहरी पालंता जे नर जाय, पातक जूको आय ॥ पशु पं  
 खी जे इण गिरि आवै,, जवबीजे ते सिद्ध ज आवै, अजरामर  
 पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो वखाएयो, ते में आगम दिलमांहे  
 आणयो, सुणता सुख डर आणयो ॥ ३ ॥ संघपति ज़रत नरेसर  
 आवै, सोवनतणां प्रासाद करावै, मणिमय मूरति ठावै, नाजिरा-  
 य मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता, मूर्ति नवाणुं  
 आता ॥ गोमुख नैं चकेसरीदेवी, शत्रुंजय सार करै नित्यमेवी,  
 तपगढ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव  
 सूरी प्रणमी पाया, रुषजदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्र सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी,  
 रूपाना कोशीला विराजै रत्नना दीवा दीपै जी ॥ कुंकुमवर्णी  
 गहंली विराजै मोतीना अकृत सार जी, त्यां वैठा सीमंधरस्वामी  
 बोलै मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन जरी रे कचोली क  
 स्तूरी बराश जी, पहली रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमते परजात जी ॥

॥ अथ पंचिदिय संवरणो ॥

॥ पंचेदिय संवरणो, तइ नव विह बंजचेर गुनिधरो ॥ च  
 न्द्विह कसाय मुक्को, इय अछारस गुणेहि संजुतो ॥ १ ॥ पंच म  
 हवय जुतो, पंच विहायारपालण समत्थो ॥ पंच समईतिगुतो,  
 उत्तीस गुणेहिं गुरुमज्ञ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाश्यवयजुतो, जावमणेहोइनियमसंजुतो ॥ विन्नइश्र  
सुहंकम्मं, सामाश्यजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाश्रंमिन्नकए, समणो  
इवसावउहवइजह्मा ॥ एएणकारणेणं, बहुसोसामाश्यंकुजा ॥ २ ॥  
सामायक विधे लीधु विधे पारिणं विधि करतां जे अविधि दुओ  
होइ ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिळामि डुक्कं ॥ दश म  
नना दश वचनना वरै कायाना एवं वत्तीस दूषणामांहे जे कोइ  
दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिळामि डुक्कं ॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवमिसोसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह  
परिमा, अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासत्ताहणिज्जा, सुवसा  
आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइज्जयवं, दद्धवयंतंमहावीरो ॥ २ ॥  
पोसह विधे लोधुं विधे पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हुन  
होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिळामि डुक्कं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवदन ॥

॥ इष्ठाकारेण संदिस्सह जगवन् चैत्यवदन करूं, इच्छं ॥ जग  
चिंतामणि जगनाइ जगगुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह,  
जगज्जाव वियक्खण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥  
चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पमिहय शाशण ॥ १ ॥ कम्मजू-  
मिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरं  
त लप्रई ॥ नवकोमिहिं केवल्लिण, कोमि सहस्स नव  
साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर बीस मुणि, विहुं कोमिहिं वरणाण  
॥ समणइकोमी सहस दोअ, शुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥  
जयउसामी२ रिसहसंतुंजि उज्जित पडू नेमज्जिण ॥ जयउ  
वीर सच्च उरमंण, जरुअठहि मुणिसुवय ॥ महुरिपसा



हुह डुरिय खंमण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि  
जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ  
सहस्सा, लस्का उपन्न अठ कोमीउ, बत्तीसय बासीआइ, तिय  
लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी बायाल लस्का  
अमवन्ना ॥ उत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंवाइ पणमा-  
मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥  
आयरणं आचारो, इअ एसो पंचहा जणिउ ॥ १ ॥ काले विणए  
बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तडुन्नय,  
अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निकंखिअ, निवि ति-  
गिन्हा अमूठ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वञ्जल पन्नावणे अठ  
॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस  
चरित्ता यारो, अठविहो होइनायवो ॥ ४ ॥ बारसविहंमिवि तवे, अ-  
प्रितर बाहिरे कुशल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायवा सो त  
वायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसच्चान-  
काय किलेसो संली ए याय, वज्जो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायच्चित्तं वि-  
णउ, वेयावच्चं तहेव सज्जानं ॥ ऊणं उस्सग्गोविय, अप्रितर उ त  
वो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिकमइ जो जहुत्त मा-  
ऊत्तो ॥ जुंजइअ जहाआमं, नायवो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनैन्द्रस्य,  
मुखपद्मंपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामग्निषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात्  
सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते  
जिनर्षाः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं ॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रनाथितं, दिनागमे नौमिषुवैर्नमस्कृतं ॥३॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवतानो स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि कान्तसगं० सुअ देवया जगवई, ना  
णावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे जत्ती ?

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सइएहिं ॥ साहं  
ति मुक्कमगं, सा देवी हरउ डुरियाइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम भुंछे आसणे पुस्तक प्रमुखनी आपना मूकीने आ  
वक आविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहरी ज  
ग्या पूंजी कटासण ऊपर बैशी मुहपत्ती मावा हाथमां मुख पाले  
राखी, जमणो हाथ आपनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी  
( पंचिंदिअ ) कहौ इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी  
अन्नवउसलिएणं कहै, १. लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो कान्त  
सगं करै ( पारी ) प्रगट लोगस्स कहै, खमालमण देई इच्छाका  
रेण संदिस्सह जगवन् सामायक मुहपत्ती पमिलेहुं इहं । इम कहौ  
मुहपत्ती तथा अंगनी पमिलेहणना पचास बोल कहौ मुहपत्ती प  
मिलेहीए पठी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् सामा  
यक संदिस्साउं इहं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकठानं  
इहं । एम कहौ वे हाथ जोमी एक नवकार गणी इच्छाकार जग  
वन् पसाय करी सामायकदंरक उच्चरावोजी, पठी गुरु प्रमुख व  
मेल करेमिन्नंते केहे, पठी खमासमण देई इच्छा० वैसणो संदिसा  
उं । खमा० इच्छा० वैसणोउं, खमा० इच्छा० सिक्काय, संदिस्साउं  
खमा० इच्छा० सिक्काय करुं इहं, एम कहौ त्रण नवकार गणावा । पठी  
वे धमी सझाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पमिकम्याथी ( यावत् ) लौ  
जस्त सूधी कही खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पमिलेहुं एम कही मुंह  
पत्ती पमिलेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति,  
चली खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं तहत्ती कही पढी ज  
मणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव  
कार गणी सामाश्वयजुत्तो० कहिए, पढी जमणो हाथ आपना  
सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार  
वानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिकं प्रतिक्रमणं विधिः ॥

प्रथम सामायक लीजै, पढी पाणी वावरुं होय तो मुंहपत्ती  
पमिलेहवी अने आहार वावरुं होय तो वांदणा वे देवा, तिहाँ  
बीजा वांदणामाँ आवसिसयाए ए पाठ नही कहियो. पढी यथाशक्ति  
पञ्चस्काणं करवुं, पढी खमासमण देई इच्छा० कही वमेरायें अथवा  
पोते चैत्यवंदन कहवुं, पढी जंकिंचि० नमोबुणं० कही जंजा धईने  
अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो कानुसगग करी नमोर्हत्तुं क  
हीनें प्रथम धुई कहवी, पढी लोगस्त० सवलोए अरिहंतचेइयाणं  
कही एक नवकारनो कानुसगग पारीनें बीजी धुई कहवी, पढी  
पुस्करवरदी० कही सुअस्तजगवनं करेमिकानुसगगं वंदण० कही  
एक नवकारनो कानुसगग पारी बीज। धुई कहवी पढी सिद्धाणंबुद्धाणं०  
कही वेयावच्चगराणं० करेमि कानुसगगं अनत्तु० कही एक नवका  
रनो कानुसगग पारी नमोर्हत्तकही चोथी धुई कहवी पढी वैसोनें  
नमोत्थुणं कहै, पढी चार खमासमण देवापूर्वक जगवान् आचार्य  
उपाध्याय सर्वसाधुभ्यः प्रते औन्नवंदन करीयै. पढी इच्छाकारेण०  
दैवलिक प्रतिक्रमणठानं एम कही जमणोहाथ चवला अथवा कट

च्यार खमासमणपूर्वक जगवान आचार्य नपाध्याय अने सर्वसाधू प्र-  
 त्येके वांदवा, पठी खमासमण बे देई सञ्चायनो आदेश मांगी एक  
 नवकार जणीने जरहेसरनी सञ्चाय कहीने फरी ? नवकार मण-  
 वो, पठी इच्छाकारसुहराईनो पाठ कहवों, पठी इच्छाका० राईपदि-  
 क्रमणोठाउं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर आपीने पठी इच्छं  
 सवस्सविराईय डुच्चिंतिय० कही नमोत्पुणं तथा करेमिज्जंतं कही  
 इच्छामिठामिकानुसग्गं० तस्सज्जत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा  
 च्यार नवकारनो कानुसग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कही सवलोएअ-  
 रिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो कानुसग्ग करवो,  
 पठी पुरकरवरदी० सुअस्स० वंदणव० कही अतीचारनी आठ गा-  
 थानो अथवा न आवमे तो आठ नवकारनो कानुसग्ग पारी सि-  
 द्धानुद्धाणं कहीने बीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पढिलेही वांदणा  
 वे देवा तिहांथी लेनें अप्पुठ्ठिमिखामी वांदणा बे दीजै तिहां सूधी  
 देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवै ते ठिकाणे  
 राईयं कहेवुं, पठी आयसियनवद्याए० करेमिज्जंतं० इच्छामिठामि०  
 तस्सज्जत्तरी कही तपचिंतामणी करतां न आवमे तो च्यार-लोगस्स  
 अथवा शोल नवकारनो कानुसग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स  
 कही ठठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पढिलेही वांदणा बे देवा, पठी स-  
 कल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तियें पञ्चस्काण करवुं, पठी इच्छा-  
 कारेण संदिस्सह जगवन् सामायकचउवीसत्थो वंदनक पढिक्रमण  
 कानुसग्ग पञ्चस्काण करवुं ठेजी, एस ठ आवश्यक संजारवा, पठी  
 पञ्चस्काण करवुं होयतो करवुं ठेजी अने धारवुं होयतो धारवुं ठेजी,  
 एम कहवुं, पठी इच्छामोअणुसदिं० नमोखमासमणायं० नमोर्हत्त०  
 कहीने विशाललोचन० नमोवुणं० अरिहंतचेइयाणं० कही एक  
 नवकारनो कानुसग्ग पारी नमोर्हत्तकही कट्टयाणकंदनी प्रप्रस ओव

कहवी, पढी लोगस्स० पुरस्करवरदी० सिद्धाणंबुद्धाणं कही अनु-  
क्रमे च्यार थोयो कहवी, पढी नमोभुणं कही जगवान् आदि चारने  
च्यार खमासणे वांदवा, पढी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर आपी अ-  
द्वाइजेसु कहेवुं पढी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवी-  
राय० कानुसग्ग० थोय पर्यंत कहौये तिहांसुधी करवुं, पढी खमा-  
सणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय कानु-  
सग्ग० अने थोय कहवी, पढी सामायक पारवानी विधिये सामा-  
यक पारवुं इति ॥

॥ अथ परकी प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदितु कही रहियै तिहांमूधी  
सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हतनुं कहेवुं अने थोयो स्नात-  
स्थानी कहेवी, पढी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदिस्सह जग-  
वान् देवसिपं आलोइयंपणिकुंता इच्छा० पस्सियमुंहपत्ती पणिलेहुं  
एम कही मुंहपत्ती पणिलेहीये, पढी वांदणा बे दीजै, पढी इच्छा-  
कारेण० संबुद्धाखामणेणं अप्पुठ्ठिहं अप्पितर पस्सियंखामेजं इच्छं  
खामेमिपस्सियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं०  
कही इच्छाकारेणसं० पस्सिअंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपस्सि-  
अइयारोकनु कही इच्छा० परकी अतीचार आलोऊं. एम कही  
वृद्ध अतीचार कहीये, पढी एवंकारे श्रावकतणें धर्मे श्रीसमकितमृ-  
तवारवत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पक्कदि-  
वसमांहे सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुन होय ते सबे हुं  
मनकर वचनकर कायायेंकरी मिच्छामिडुक्कमं ॥ सबस्सविपस्सिअ  
उच्चिंतिअ उप्पासिय उच्चिठिय इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तस्स  
मिच्छामिडुक्कमं ॥ इच्छाकारिजगवन् पसानु करी परकी तपप्रशाद  
कराउ जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकनु-

पचाश वेआंविह त्रणनीवि च्यारएकाशणा आठवेआसणा वेदङ्कार  
 मझाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश करयो होयतो पइठी कहीए,  
 करवो होयतो तद्वत्ति कहीये, न करवो होयतो अणवोडया रहीये  
 पठी वांदणा वे दीजै, पठी इच्छाकरे० पत्तेयखामणेणं अणुविनहं  
 अप्रिंतर पस्किअं खामेउं इहं खामेमिपस्किअं पन्नरसदिवसाणं  
 पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पठी वांदणा वे दीजै पठी देव-  
 सियआलोइयपमिकंता इच्छाका० जगवन् पस्किअं पमिकमुं समपमि-  
 क्रमामि इहं एम कही करेमिजंतेसामाइयं० कही इच्छामिपमिक-  
 मिउं जोमिपस्किउं० कहवो पठी खमासमण देई इच्छाका० प-  
 स्कीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण  
 नवकार गणीने आवक वंदित्तु कहै, पठी सुयदेवयानी थोय कहवी  
 पठी देवा बैसी जमणोढींचण ऊनो राखो एक नवकार गणी क-  
 रेमिजंते० इच्छामिपमि० कहो वंदित्तु कहैवुं०, पठी करेमिजंते इ-  
 च्छामिठामिकाउसग्ग जोमिपस्किउं० तस्सउत्तरी० अन्नवू० कहोने  
 (१५) अर लोगस्सनो कानुसग्ग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मल  
 यरा सूधी कहवा अथवा अमृतालोस नवकारनो कानुसग्ग करी  
 पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंइपत्ती पमिलेहीने वांदणा  
 वे दीजै, पठी इच्छाका० समातिखामणेणं अणुविनहं अप्रिंतर०  
 पस्किअंखामेउं इहं खामेमिपस्किअं पन्नरसदि० कहो पठी खमा-  
 सण देई इच्छाका० कही पस्कोखामणाखामूं एम कही खामणा  
 च्यार खामवा पठी दैवसीप्रतिक्रमणामां वंदित्तु कह्या पठी वे वां-  
 दणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूथी सर्व दैवसीनी  
 पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी थुईने ठिकाणे ज्ञानादि थोयो कहवी  
 स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सझायने ठिकाणे उवसग्गहरं तथा  
 संसारदावानी थुई च्यार कह्वी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोइटी



शांति कहेवी ॥ इति परकी प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कहा प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो वि-  
शेष, बार लोगस्सना कानुसगने ठिकाणे बीस लोगस्सनो कानु-  
सग्न करवो अने परकीना आगारने ठिकाणे चउमाशीना कहवा,  
अथात्तपने ठेकाणे ठेकेणं बे उपवास च्यार आंबिल ठनीवी आठ ए-  
काशणा शोल बेआसणा च्यारहज्जारसझाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण परकीना  
बार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो कानुसग्न अथवा एक  
शो शाठ नवकारनो कानुसग्न करवो, अने तपने ठिकाणे अठमज्जत्त  
एटले त्रणउपवाश ठआंबिल नवनीवी बारएकाशण चोवीश बेआ-  
सणा अने ठहज्जार सिझाय ए रीते कहवुं अने परकीना आगारने  
ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधी ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पम्निक्रमवी. आपना हो-  
य तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पढी नस्सनुत्तरी कही एक लो-  
गस्स अथवा चार नवकारनो कानुसग्न करी प्रगट लोगस्स कही  
उत्ते पगे बैसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीनं कंदोरो  
आदिनुं पम्निलेहण करवुं, पढी काजो काढी जीव कलेवर सञ्चित्त  
आदि जोवुं, पढी काजो काढनार आपनाजी सन्मुख उत्तो रही  
इरियावही पम्निक्रमे पढी काजो परठवेवा जग्या सोधी त्रणवार  
अणुजाणहजस्सुगो कही काजो परठवे, पढी त्रण बार वोसिरे  
कहे ॥ इति पम्निलेहण करवानो विधी ॥



॥ अथ पञ्चस्काण पारवानो विधि ॥

प्रथम इरियावही पन्तिकमिये, पठी जगचिंतामणीनुं चैत्य  
वंदन जयवीरराय सूधी करनुं पठी मन्हजिणाणंती सिद्धाय कह  
वी, मुहपत्ती पन्तिकेही इच्छामि० इच्छाका० पञ्चस्काणपारुं यथाश  
क्ति० इच्छामि० इच्छाका० पञ्चस्काणपारयुं तहति एम कही जमणो  
हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर आपी एक नवकार गणी प  
ञ्चस्काण करयुं होय ते कहेयुं, ते लखियेठिये ॥ नगए सूर नमोका  
रसहियं पोरसिं साढपोरसिं गंठिसहियं मुठिसहियं पञ्चस्काणकरयुं  
चञ्चविहार आंविज नीवी एकासणुं बेआसणुं करयुं तिविहार पञ्च  
स्काण फासियं पालियं सोहियं तोरिअं कीट्टिअं आराहिअं जंचन  
आराहियं तस्समिच्छामिउक्कमं ॥ एम कही १ नवकार गणवो ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

पुरुक्कलवइ विजयें जयो रे, नयर पुंमरीगणी सार ॥ श्री  
सीमंधर साहिवा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिणंदराय धरज्यो धर्म  
सनेह ॥ (आंकणी) । मोहोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥  
शशि दरिद्राण सायर वधै रे, कैरव वन विकलंत ॥ जि० २ ॥ ठाम  
कुठाम न लेखवे रे, जग वरसत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वा  
सियो रे, गया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा  
गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते विहुं तणा रे, ताप करे  
सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे ठो  
माहाराज ॥ मुजसुं अंतर किम करो रे, बांह अह्यांनी लाज ॥ जि०  
॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो  
माने सवितणो रे, साहिव तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषज्जलठन  
माता सत्यकी रे, नंदन लकमणी कंत ॥ वाचक जश इम धीनवे  
रे, जयजंजण जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ बीजनं स्तवन ॥

( ॥ फतमल पाणीमाने जाय ए देगी ॥ ) ॥ प्रणमी  
 शारदमाय, शासन वीर सुहकरुं जी ॥ बीज तिथी गुणगेह, आ  
 दरो नवियण सुंदरु जी ॥ १ ॥ एह जिन पंच कल्याण, विवरीने  
 कहूं ते सुणो जी ॥ माहा सुदि बीजे जाण, जन्म अजिनंदनतणो  
 जी ॥ २ ॥ आवण सुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी  
 जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥  
 समेतशिखर शुभ्र ठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र व-  
 दिनी हो बीज, वरया मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाळगुन  
 मासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस ज्यवन,  
 कर्मकर्यें तब पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजे  
 वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराज  
 नो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहा  
 जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेम समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥  
 उपशम तद्रूप नोर, समकित ठेग प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी  
 अहो वाम, पञ्चस्काण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु  
 चोर, समकित वृक्ष फळयो तिहां जी ॥ मांजर अनुन्नवरूप, उत्तरे  
 चारित्र फल जिहां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी  
 सुख लीजीये जी ॥ तंबोल सम ढ्यो स्वाद, जीवने संतोष रस  
 कीजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीस  
 मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालियें शील वसुधासती जी  
 ॥ ११ ॥ आवश्यक दोष वार, पन्तिहेहण दोष लीजीये जी ॥ दे  
 ववंदन त्रिण काल, मन वच कायार्यें कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊज  
 मणुं शुभ्र चित्त, करी धरीयें संजोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम,  
 पीजीये श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो बीज,

राग ने छेप दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति नल्लट  
धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदा जी  
॥ पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ इति  
बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

( ॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥ )

सुत सिद्धारथ

भूपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, जाखे  
श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ भविष्य चित्त धरो ॥ मन वच काय  
अमायो रे, ज्ञान भक्ति करो ॥ एआंकणी ॥ गुण अनंत आतमत-  
णारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वरुं रे, जिणश्री  
दंसण होय रे ॥ ज० १ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने  
उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने शिवरपणुं लहे रे, आचारज उवझाय रे  
॥ ज० २ ॥ ज्ञानी श्वासोद्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥  
वह्नि जेम इंधन दहे रे, कणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज० ३ ॥  
प्रथम ज्ञान पठे दया रे, संवर मोह विमाश ॥ गुणठाणांग  
पगथालीये रे, जेम चढे मोह आवासोरे ॥ ज० ४ ॥ मइ सुअ  
उंहि मणपझवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक  
ठे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज० ५ ॥ तेहना साधन जे  
कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावै साचवैरे, धर्मी धरी  
अप्रमादो रे, ॥ ज० ६ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, जणतां  
करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा वोवमा रे, मुंगा पांगुल आय रे  
॥ ज० ७ ॥ जणतां गुणतां न आयमे रे, न मले बल्लभ चीज ॥  
गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज० ८ ॥ प्रेमें  
पूठे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे,  
करो अधिकार पसायो रे ॥ ज० ९ ॥ इति ॥

( ॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ )

जंबुद्वेपना नरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजित-  
सेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आ-  
राधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए  
आकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें  
जणावा मूँकिन रे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंरित  
यत्न करे धणो रे, ठात्र जणावण हेत ॥ अकर एक न आवमे रे,  
अंशतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोठें व्यापी देहमी रे, राजा  
राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे  
॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुण  
मंजरी तस बेटमी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल  
वरसनी सा अई रे, पामो यौवनवेश ॥ दुर्जग पण परणे नही रे,  
मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे,  
विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रत-  
धार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक नूपालने रे, दीध वधाइ जाम ॥  
चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्म-  
देशना सांजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन  
मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ९ ॥ ज्ञान विराधन परजवे रे,  
मरख पर आधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसै दुःखीया दीन  
रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥  
ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥  
श्रेष्ठी पूढे मुणिंदने रे, जाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुऊ अंग-  
जा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

( ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमां )

धातकीखंरना नरतमां, खेटक नयर सुगाम ॥ व्यवहारी

जिनदेव ठै, धरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सौदामणा,  
 पुत्री चतुरा चार ॥ पंक्तिपासे सीखवा, तातें मुंक्का कुमार ॥ २ ॥  
 बालस्वप्नावें रामतें, करतां दहामा जाय ॥ पंक्ति मारे जाहरे,  
 मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवै, जणवानुं  
 नही काम ॥ पांढ्यो आवे तेमवा, तो तस दणजो ताम ॥ ४ ॥  
 पाटी खनिया लेखणा, बाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि  
 रुचै, जेम करहाने डाख ॥ ५ ॥ पामा परे मोहोटा अया, कन्या  
 न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥  
 त्रटकी ज्ञाखे ज्ञामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी,  
 जाणे ठै सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म  
 बोल ॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें  
 मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटा उपनी, ज्ञान  
 विराधन हेव ॥ ९ ॥ मुर्छांगत गुणमंजरी, जातीसमरण पामि ॥  
 ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे  
 सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो  
 वंजित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥  
 नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरब  
 उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य  
 फलादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवटतणो, साधियो मंगल गेह ॥  
 पोसदमान करी सके, तेण विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अश्रवा  
 सौजाग्यपंचमी, उज्ज्वल कार्तिक मास ॥ जावज्जीव लगे सेविये,  
 ऊजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

( ॥ ढाल चौथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥ )

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥ चावखी दोरा रे,  
 पाटी पाटला वर तणा ॥ मसी कागल रे, कांवी खनिया लेखणी ॥

कवली माबली रे, चंद्रुआ ऊरमा पूंजणी ॥ १ ॥ ( त्रूटक ) प्रा-  
 साद प्रतिमा तास जूषण, केसर चंदन माबली ॥ वासकूंपी वाला  
 कूंची, अंगलूहणा ठावली ॥ कलश आली मंगलदीवो, आरती नें  
 धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती साहमी वच्छल, नोकरवाली आपना ॥  
 ॥ २ ॥ ( ढाल ) ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप  
 संयुत रे, गुणमंजरीयें सह्या ॥ नृप पूवै रे, वरदत्त कुंवरनें अंग  
 रे ॥ रोग जपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ ( त्रूटक ) मु-  
 निराज ज्ञासै जंबुद्वीपें, ज्ञरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु  
 तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमतां दोय  
 बांधव, पुण्य योगें गुरु मळ्या ॥ वैराग्य पामी ज्ञोग वामी, धर्म  
 धामी संवरया ॥ ४ ॥ ( ढाल ) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी  
 लहै, पणसथ मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे,  
 अशुज नदय अयो अन्यदा, संघारे रे, पोरसी ज्ञणी पोढ्यो यदा  
 ॥ ५ ॥ ( त्रूटक ) सर्वधाति निंद व्यापी, साधु मांगे वायणा ॥  
 जंघमां अंतराय आतां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जा-  
 ग्यो, लाग्यो मिळ्या जूतको ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, जस्थो  
 पापतणो घमो ॥ ६ ( ढाल ) मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥  
 श्रुत अज्यासो रे, तो एवमो संताप रे ॥ मुज बांधव रे, ज्ञोयण  
 खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥  
 ( त्रूटक ) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुज  
 ध्याने आयु पूरी, जूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जम  
 पणुं, कोठनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो  
 सही ॥ ८ ( ढाल ) वरदत्तने रे, जातिस्मरण जपनो ॥ जव दीठो रे,  
 गुरु अगमी कहे शुज मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दी-  
 वमो ॥ गुण अवगुण रे, ज्ञासन जे जम परवमो ॥ ९ ॥ ( त्रूटक )



ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कह्यो किम आवने ॥ गुरु कहे  
तपथी पाप नासै, टाढ़ जेम धन तावने ॥ जूप पन्नणें पूत्रने प्रभु,  
तपनी शक्ति न एवमी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा  
ढयो बेवमी ॥ १० ॥ इति ॥

( ढाल पांचमी ॥ मैदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ )

सक्रु वयण सुधारसे रे, जेदी साते धात ॥ तपसुं रंग लागो,  
गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप  
महिमा धणो रे, पसरयो महियल सांही ॥ त० ॥ कन्या सहस  
सयंवरा रे, वरदत्त परणयो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ जूपें कीधो पाट  
वी रे, आप थयो मुनि जूप ॥ त० ॥ जौम कांत गुणें करी रे, वर  
दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, जोगवै  
जोग अखंरु ॥ त० ॥ वरसें ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंरु ॥ त०  
॥ ४ ॥ जुक्तजोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥  
गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावै निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख  
विलसी अई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण  
ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा धरे  
रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें  
कीधो जेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या ज  
रतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥  
त० ॥ ८ ॥ जिहां पण ते तप आदरयुं रे, लोक सहित जूपाल ॥  
त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पालै राज्य ऊदार ॥ त० ॥ ९ ॥  
चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि  
मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शु  
जापुरी रे, जंबुविदेह मऊार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे,  
अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमं-



जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सु  
 ग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ बीसे वरसे राजवी रे, सहस चौरासी पूत्र ॥  
 त० ॥ लाख पूरब समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥  
 पंचमी तप महिमा विषे रे, जाषै निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे  
 जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

( ढाल छठो ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी )

चोवीश दंरुक वारवा, हुं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे,  
 हुं वारी लाव ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गशी, हुं० ॥ त्रिसळा उर  
 सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आं-  
 कणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विळाश रे,  
 हुं० ॥ माहाभिशीथ सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे,  
 हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधरयो, हुं० ॥ चंमकोसियो साप रे,  
 हुं० ॥ यज्ञ करंता बांजणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा०  
 ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिपजदत्त वली विप्रे, हुं० ॥  
 व्यासी दिवश संबंधशी, हुं० ॥ कामित पूरयो क्षिप्र रे ॥ हुं०  
 मा० ४ ॥ कर्मरोगने टालवा, हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे,  
 हुं० ॥ आदर्यो में आसा धरो, हुं० ॥ मुऊ ऊपर हित आशि रे,  
 ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयसिंह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्थास  
 रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास  
 रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निद्धे, हुं० ॥ खिमाविजय  
 गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो, हुं० ॥ पंचमी  
 तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ ( कलश ) इय वीर लायक  
 विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोमर  
 गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर त्राणुं संवत्सरे,  
 श्रीपार्श्व जन्मकल्याण दिवसें सकल जिवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हारिं मारे ठाम धरमना साढाषचवीश देश जो, दीपे रे  
 त्या देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हारिं मारे नगरी तेहमां राज-  
 गृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजै गज परे रे लो ॥ १ ॥  
 हारिं मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां  
 आवी वीर समोसरया रे लो ॥ हां० चन्द्रसहस्रमुनिवरना साथे साथ  
 जो, सूधा रे तप संयम शिखले अलंकरया रे लो ॥ २ ॥ हां० फूट्या  
 रसन्नर फूट्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शलिवन हसि  
 रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो,  
 वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतु-  
 र्विध आवै कोमाकोम जो, त्रिगुं रे मणि हेम रजतनुं ते रवे रे  
 लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होम्हाहोम जो, आगे रे रस लागे  
 इंडाणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण बेठा  
 आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिस्तनै जम्हा रे लो ॥ हां०  
 सुणतां डुंडुजि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस  
 जानू अम्हा रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे घन जेस लूब  
 जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी  
 हरखी आवै जन मन लूब जो, पोषे रे रस न पमे धोषे जर्ममां  
 रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो,  
 आव्यो रे परवरियो हय गय रस पायगै रे लो ॥ हां० दइ प्रद-  
 क्षिणा वंदी वैठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे ज्ञायगे रे  
 लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिभूवननाथक लायक तब जगवंत जो, आणी  
 रेजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी  
 जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो ॥ ८ ॥  
 इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ बालम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसै, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥  
 भौहनी नौदमां कां प्रमो, जलखो धर्मनां ठाण रे ॥ १ ॥ विरति  
 ए सुमति धरी आदरो, ( ए आंकणी ) परिहरो विषय कषाय रे ॥  
 बापमा पंच परमादथी, कां प्रमो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥  
 करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले  
 करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ  
 पर्व खटना कह्या, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आ  
 राधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु  
 परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराध  
 तां, प्राणिन सहति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल  
 तिहां, पूबै गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहै  
 वीरप्रभु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, सं  
 पदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजै, एहथी आठ गुण  
 सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ जान होय आठ प्रसिद्धारनो, अठ पवयण  
 फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे  
 ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षांतणो, अजितनो जन्म क  
 ढ्याण रे ॥ व्यवन संजवतणो एह तिथे, अजिनंदन निर्वाण रे ॥  
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमोया, नेमनो मुक्ति दिन  
 जाण रे ॥ पासजिन एह तिथे सिद्धता, सातमा जिन व्यवन माण  
 रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिन, दंमवीरज लह्यो  
 मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहै सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि०  
 ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कढ्याण  
 रे ॥ एह तिथे वलि घणा संजमी, पामले पद निर्वाण रे ॥ वि०  
 ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिया, एह तिथे करे ऊपवास रे ॥  
 व्रतधारी जीव पोसो करै, जेहने धर्म अन्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

जांखियो वीरे आठमतणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन  
मुखें उच्चरी प्राणिया, पामसे जवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥  
एहथी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोम रे ॥ सेवजो शिष्य बुध  
प्रेमनो, कहे कांति कर जोम रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ ( कलश ) एम  
त्रिजग ज्ञासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरू, बुध प्रेम गुरु सु-  
पसाय पामी संशुणयो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे ज्ञायो रंगे  
स्तवन ए आठमतणो, जे जविक ज्ञावे सुणो गावै कांति सुख पावे  
धणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरथा ॥  
जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोमिसुं परिवरथा ॥ १ ॥ जग  
पति धीगुण फूल अमूल, जक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी  
पूवै कृष्ण, क्षायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र  
धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति मुऊ आतम उद्धार,  
कारण तुम विन कोण कहै ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ  
नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताय,  
जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्जल मागशिर मास,  
आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पच्चाश, कल्याणक तिघि  
उद्धसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे म  
ली ॥ नरपति नेउ जिनना कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥  
॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मछ्छी जन्म व्रत केवली ॥  
नरपती वर्तमान चोवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरप  
ति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच  
काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धा-  
तकीखंरू, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

जिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंडविती  
 तास, चंडमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शुर विख्यात, शीयल  
 सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार चूषण  
 चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा  
 करै ॥ ११ ॥ नरपति पोषै पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करै ॥  
 नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति  
 ( ढाल बीजी ) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ वि  
 नयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुळ दिन  
 एक, ओढो पुण्य कियो री ॥ वाघे जिम वरुबीज, शुभ अनुबंधी  
 थयो री ॥ २ ॥ मुनि ज्ञाषै महान्नाय, पावन पर्व घणा री ॥ ए  
 कादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी  
 सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शु  
 वगे री ॥ ४ ॥ सांजलि सङ्गु वैण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥  
 तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर  
 आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांजलि केशवराय, आगलि जेह थसे  
 री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्धत वमो री ॥ प्रीतिमती प्रिया  
 तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित  
 शुभ स्वप्ने री ॥ जनम्यो पूत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥  
 नाल निक्षेप निधान, जूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्ज दोहद अनु  
 जाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र  
 अनेक जण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥  
 ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पञ्चस्काण धरे री ॥ अगियार  
 कंचन कोरु, नायक पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणवार,  
 तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे  
 री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, जकें तप उचरे री ॥ एक

तिल पगतल लक्षण एक हजार नैं आठ ठै, तेहथी निश्चय जाण्या  
 जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणो जंगै लंगन सिंह विराजतो,  
 में पहले सुपनैं दीगो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला  
 बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाइयोना देवर गो सुकमाल, ह  
 ससैं जोजाइयो कही देवर माहरा लामका, हसशे रमशे नैं वली  
 चूटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नैं वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा०  
 ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेमाराजाना ज्ञाणेज गो, नंदन नवला पां-  
 चसैं मामीना ज्ञाणेज गो, नंदन मामलिआना ज्ञाणेजा सुकमाल ॥  
 हशशे हाथे उन्हाली कहीने नाहना ज्ञाणेजा, आंख्युं आंजीनैं  
 वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे  
 टोपी आंगलां, रतने जमिया जालर मोती कशबीकोर ॥ नीला  
 पीला नैं वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकि  
 शोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखमलो सहु लावशे  
 नंदन गजुवे जरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखमा जोईने लेशे  
 मामी ज्ञामणा, नंदन मामी कहेसे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥  
 ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेमा मामानी साते सती, मारी जत्राजी ने  
 बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंजे जरवा लाखणसाई लावशे, तुमनैं  
 जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे  
 लावशे लाखटकानो घूघरो, वली शूना मेंना पोपट नैं गजराज ॥  
 सारस हंस कोयल तीतर नैं वलि मोरजी, मामी लावशें रमवा  
 नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ वप्पन कुमरी अमरी जलकलशें  
 नवरावीआ, नंदन तुमनैं अमनैं केली घरनी मांहि ॥ फूलनी  
 वृष्टि कीधी योजन एकने मंमले, बहु चिरंजीको आशीय  
 दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमनैं भेरुगिरिवर सुरपतिये नव-  
 राविआ, निरखी हरखी सुकत लाज कमाय ॥ मुखमा ऊपर वारुं



कोटी कोटी चंडमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥  
 हा० १३ ॥ नंदन नवला जलवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर  
 अंबामी बेसामी मोहोटे साज ॥ पसला ज़रशुं श्रीफल फोफल  
 नागरवेलशुं, सूखमली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥  
 नंदन नवला मोहोटा आशोने परणावशुं, बहु वर सरखी जोमी  
 लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूने पधरावशुं, वर वहु  
 पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-  
 रा बेनं पक्ष कजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-  
 हरे आंगण वूग अमृत दुधे मेकला ॥ माहरे आंगण फलिया  
 सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला  
 सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा  
 नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जयर मंगल होजो दीपविजय  
 कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिंहाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोढ्या महा  
 पाप रे ॥ वयर विरोध बाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे  
 मायबाप रे ॥ निं० १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब  
 लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेळामें धोया लूगमां रे, कहो केम  
 कजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,  
 नींदानी मूको परी टेव रे, ॥ ओमे घणे अवगुणे सहु ज़रचा रे, के-  
 हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 आये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-  
 जो आपणी रे, जेम वूटकवारो आय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-  
 जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख  
 पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥



तल पगतल लक्षण एक हजार नें आव ठै, तेहथी निश्चय जाण्यो  
 जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणो जंगें लंठन सिंह विराजसो,  
 में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला  
 बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाइयोना देवर ठो सुकमाल, ह  
 ससैं जोजाइयो कही देवर माहरा लामका, हसशे रमशे नें वली  
 चूंटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा०  
 ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेमाराजाना ज्ञाणेज ठो, नंदन नवला पां-  
 चसैं मामीना ज्ञाणेज ठो, नंदन मामलिआना ज्ञाणेजा सुकमाल ॥  
 हशशे हाथे उहाली कहीने नाहना ज्ञाणेजा, आंख्युं आंजीनें  
 वली टवकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे  
 टोपी आंगलां, रतने जरिया जालर मोती कशबीकोर ॥ नीला  
 पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकि  
 शोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखमली सहु लावशे  
 नंदन गजुवे जरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखमा जोईने लेशे  
 मामी जामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥  
 ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेमा मामानी साते सती, मारी जत्रीजी ने  
 बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंजे जरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें  
 जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे  
 लावशे लाखटकानो घूघरो, वली गूमा मेंना पोपट नें गजराज ॥  
 सारस हंस कोयल तीतर नें वलि मोरजी, मामी लावशें रमवा  
 नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ ठप्पन कुमरी अमरी जलकलशें  
 नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी  
 वृष्टि कीधी योजन एकने मंमले, बहु चिरंजीवो आशीष  
 दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमनें भेरुगिरिवर सुरपतिये नव-  
 राविआ, निरखी हरखी सुकत लान्न कमाय ॥ मुखमा ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंद्रमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥  
 हा० १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर  
 अंबामी बेसामी मोहोटे साज ॥ पसलो जरशुं श्रीफल फोफल  
 नागरवेलशुं, सूखमली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥  
 नंदन नवला मोहोटा आशोने परणावशुं, बहु वर सरखी जोमी  
 लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूने पधरावशुं, वर वहू  
 पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-  
 रा बेजं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-  
 हरे आंगण वूठा अमृत डुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया  
 सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला  
 सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा  
 नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय  
 कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिंहाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोळ्या महा  
 पाप रे ॥ वयर विरोध बाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे  
 मायबाप रे ॥ निं० १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब  
 लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेळामें धोया लूगमां रे, कहो केम  
 ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,  
 नींदानी मूको परी टेव रे, ॥ ओमे घणे अवगुणे सहु जरया रे, के-  
 हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 आये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-  
 जो आपणी रे, जेम वूटकवारो आय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-  
 जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख  
 पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथमं इरियावही पन्तिकमवाथी मांसीने यावत् लोगस्स कही पठी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्पुणं कही अरुधुं जयवी राय आनवमखंमा सूधी हाथ जोमी कहै, वली चैत्यवंदन कहीने नमोत्पुणं कही यावत् चारं ओयो कहीये ठीये तिहां सूधी वधू कहेवुं, पठी नमोत्पुणं कही वली च्यारं ओयो कहीये त्यांसूधी वधू कहेवुं, पठी नमोत्पुणं तथा बे जावंती कही स्तवन कही अरुधुं जयवीअराय आनवमखंमा सूधी कही पठी चैत्यवंदन कही नमोत्पुणं कही आखो जयवीअराय कहेवो, इहां सवारे देववांदवा तेमां मन्ह जिणाणंनी सझाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांजे देववांदवामां सझाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजो कृत चउमाशी देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पन्तिकमी कान्तसग करी लोगस्स० कही एक खमासमण देइ इवाका० श्रीरूपज्जिन आराधनार्थं चैत्य वंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करै ॥ ( श्री आदिजिन चैत्यवंदन लिखते ) ॥ प्रथम जिनेसर रूपज्जदेव, सबछत्री चविया ॥ वदि चउथें आपाढनी, शक्रे संस्तविथा ॥ अठ्ठी चैत्रह वदितणी, दि वसे प्रजु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी आया ॥ फागुण वदि इयारसी ए, ज्ञान लहे शुज ध्यान ॥ महा वदि ते रजो शिव लहा, परमानंद निखन ॥ १ ॥ इहां नमोत्पुणं० अरिहंत वेइयाणं० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनो कान्तसग पारी शुइ क्रमथी कहिये ते लखिये ठीये ॥ ( ॥ अथ ओय जोमो प्रारंज ॥ ) रूपज्जिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला जास जाया ॥ वृषज लंछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय धणु वाया ते प्रजु ध्यान ध्याया ॥ २ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

त्रैवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया निरधार ॥ गिरि  
 कमणें आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिनें ते बंदू जयकार  
 ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगम सूत्र मऊार, सिद्धाचले सीधा  
 बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार  
 जिन जेठे आवे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेसरी शा  
 सननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करै संजाल ॥ गिरुओ  
 जस महिमा संप्रति काखै जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि नामें  
 लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोऽप्युणं जावंती बे कही  
 नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जी, बुजगमी अवधार ललना ॥ प्रथम  
 जिनेसर प्रणमीयें, वंठित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ०  
 ॥ १ ॥ उपगारी अवनीतले, गुण अनंत जगवान ललना ॥ अवि-  
 नाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥  
 गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनी आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें  
 लहै, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग छे जे  
 हनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ जरतादिक थया केवली, अ-  
 नुन्नव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाग्निराय कुलमंरणो,  
 मरुदेवी सर हंस ललना ॥ रुषजदेव नित बंदिये, ज्ञानविमल  
 अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री रुषजजिन स्तवनं ॥  
 पठो जयवीअराय अर्धो कहेवुं, एक खमासमण देई इच्छा० श्री  
 अजितनाथजी आराधनार्थै चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी तेरशें, चविया विजयंत ॥ साह सुदि आ-  
 ठमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ साह शुदि त्वमें मुनि थया,

पोषी इग्यारस ॥ उज्ज्वल उज्ज्वल केवली, अया अक्य कृपारस ॥  
 वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल  
 कविरायनो, नय प्रणमै धरी नेह ॥ १ ॥ इति ॥ पढी नमोत्पुणं  
 अरिहंतचे० ॥ कही एक नवकारको काजसंग करके धुईनी गाथा  
 कहै, इसी तरै सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारब्ध-

ते ॥ अजित जिनपतीनो, देह कंचन जरीनो ॥ जविक जन  
 नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुज पद लीनो, जेम जल मां-  
 दे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति  
 अजित श्रोत्र ॥ ॥ अथ श्री शंजवनाथ चैत्यवंदन ॥

सत्तम त्रैवेयक अकी, चविया श्री शंजव ॥ फागुण सुदि आठम  
 दिने, शुदि चवदशी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासें जनमीया,  
 तणी पूनम संजम ॥ कार्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरू-  
 पम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी कुजली ए, शिव पोहता जिनराज ॥  
 ज्ञानविमल प्रभु प्रणमतां, सीजै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य-  
 वंदन ॥ ॥ अथश्रोत्रप्रारब्धते ॥ जिन शंजव वारू, लं-

ठने अश्व धारू ॥ जवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र दारू ॥ सुर  
 तरुपरी वारू, दुसमाकाल मारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना  
 ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति श्रोत्र समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अजि-  
 नंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानअकी चव्या, अजिनंदनराया

॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि बारशे  
 अदिय दिस्क, पोष सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें  
 शिवसुख रज ॥ चउथा जिनवरनें नमी ए, चउगति भ्रमण निवार  
 ॥ ज्ञानविमल गणपति कहै, जिनगुणनो नही पार ॥ २ ॥

॥ अथ स्तुति प्रारब्धते ॥ ॥ अजिनंदन वंदो, साम्यमाकंद  
 कंदो ॥ नृप संवरनंदो, प्रपिताशेपकंदो ॥ तमतिमिरदिणंदो, लंठने

वानरिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सारिंदो ॥ १ ॥ इति  
 श्रुत्य ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ श्रावण  
 सुदि बीजै चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमुं,  
 पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संज  
 म ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्या-  
 रश ऊजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें,  
 नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ  
 श्रुत्य प्रारज्यते ॥ ॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोमि कापै  
 ॥ सुमति सुजन व्यापे, बोधिनूं बीज व्यापै ॥ अविचलपद आपे,  
 जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कइही नावे, जो प्रभुध्यान व्यापे ॥  
 १ ॥ इति श्रुत्य ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रभु चैत्यवंदन ॥ ॥  
 नवम अवेयकथी चव्या, माहा वदि ठठदिवसे ॥ काती  
 वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखै ॥ वदि तेरस संज-  
 म ग्रहे, पद्मप्रज्ञस्वामी ॥ चैत्रीपूजन केवली, वलि शिवगति पाम्नी  
 ॥ मृगशिर वदि इग्यारसे, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन  
 राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ श्रुत्य प्रारज्य  
 ते ॥ ॥ पद्मप्रभु सोडावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ सुगति वधू म  
 नावे, रक्त तनुं कांति पावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य  
 पावे ॥ प्रभु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि आवे ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री  
 सुपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥ ॥ ठठा अवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥  
 ज्ञादरवा वदि आठमें, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्र बारसी जण्या,  
 तस तेरसे संजम ॥ फागुण वदि ठठे केवली, शिव लहे तस स  
 त्तिम ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ ज्ञानविम  
 ल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ श्रुत्य  
 प्रारज्यते ॥ ॥ फले कामित आशे, नामथी दुःख नाशे ॥ म



दिम मदि प्रकाशै, सातमा श्रीसुपासैं ॥ सुरनर जस दास, संप  
दांनो निवाश ॥ गाय जवि गुणरास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥  
इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्ञजिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आ

ठमा, चंद्रप्रज्ञ शम देह ॥ अचतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चै  
त्रेह ॥ पोष वदि बारसैं जनमिया, तस तेरसे साथ ॥ फागुण व  
।दनी सातमें, केवल निराबाध ॥ ज्ञाद्रव सातम शिव लह्याए, पूरी  
पूरण ध्यान ॥ अठ म्हासिद्धि संपजै, नय कहै जिनअज्ञिधान ॥ २

॥ अथ श्रोत्र प्रारच्यते ॥ ॥ शुभ नरगति पाप्मी, उद्यमें  
धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रज्ञ नाम स्वामी ॥ मुक्त  
अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति वरगाथी, सेवन  
गुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥

गोस सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्कदंत ॥ फागुण वदि न  
वमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगाशर वदि पंचमे जण्या, तस  
ठठे दिक्षा ॥ काती शुदि बीजें केवली, दिये बहु परें शिक्षा ॥ शु  
दि नवमी ज्ञाड्वा तणी ए, अजर अमर पद दोय ॥ धीर विमल  
सेवक कहे, ए नमतां सुख दोय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रो

त्र प्रारच्यते ॥ सुविधि जिन जटंत, नाम बलि पुष्क-  
दंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म  
धुरंत, लडि लीला वरंत ॥ जव जलधि तरंत, ते नमीजे  
महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथचैत्यवंदन ॥

प्राणतकल्पशकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी ठ  
ठै, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ मादा वदि बारस जनम दिख्या,  
तस बारसैं लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली परसिद्ध ॥ व  
दि बीजें वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिन  
राजथी, लीजे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रोत्र



प्रारज्यते ॥ ॥ सुख शीतल देवा, वालही तुल्ल सेवा ॥ जेम  
गज मन रेवा, तूही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम ठै नित्य  
मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु डःरक खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांश जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पश्रकी  
चव्या, श्रेयांश जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस ठेठे, करत बहु आ  
नंद ॥ फागुण वदि बारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह  
अमावसि, देशन चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजै लह्या ए, शिवसु  
ख अक्षयअनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै ए जगवंत ॥ १ ॥  
इति ॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥ सवि जिन अवतंस,

जास इक्ष्वागवंश ॥ विजितमदन कंश, शुद्धचारित्र हंश ॥ कृतज्ञय  
विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांश ॥ वृषज ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश  
॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया,  
ज्येष्ठ सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावसी संजम ॥  
माह शुदि बीजै केवली, चौदसि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या क  
र्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे  
काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख आय ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीज  
यादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंठन विख्यात ॥ जस  
गुण अवदात, गीत जाणें निदात ॥ होय नित सुख गात, ध्याव  
तां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवं

दन ॥ ॥ अष्टम कल्पश्रकी चव्या, माधव सुदि बारस ॥ शु  
दि महा त्रीजें जण्या, तस चोथें व्रत रस, शुदि पोष ठेठे लह्या,  
वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल  
॥ विमल जिणोसर वंदियै ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो  
जिन नितु दिये, पुण्य परिवल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

श्रोत्र प्रारज्यते ॥ विमलश्चावे, वंदतां दुख जावै ॥ नव  
 निधि घर आवै, विश्वमां मान पावै ॥ सुख लंठन कावै, ज्ञोमि  
 न्नरस्वेद आवै ॥ मनु विनति जणावै, स्वामिनुं ध्यान ध्यावै ॥ १ इति ॥  
 ॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतश्चकी चविया इहां,  
 आवण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसें व्रत ॥  
 वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पास्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी  
 दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चउदमाए, कीथा उ  
 ष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामश्री, तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥  
 ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥ अनंत जिन नमीजै, कर्मनी कोटि ठीजै ॥  
 शिवसुख फल लीजै, सिद्धि लीला वरीजै ॥ बौधिवीज मोह दोजै,  
 एटलुं काज कीजै ॥ मुज मन अति रीजै, स्वामिनुं कार्य सीजै ॥  
 ॥ १ ॥ ॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि  
 सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहमाज्ञानी, शुदि त्रीजें  
 जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये संजमनार ॥ पोषिपूनमें के  
 वली, गुणना जंमार ॥ लेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पास्या  
 जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, बाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥  
 ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांश  
 ज्ञीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिजुवन सुख  
 कीनो, लंठने वज्र दीनो, नवि होय ने दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥  
 ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ज्ञाद्रवा  
 वदि सातम दिने, सब्बथी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जएया, उ  
 खदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥  
 केवल उज्जलपोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवरा ए  
 शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो  
 काज ॥ १६ ॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमौ चक्रधारी ॥ त्रिजुवन सुखकारी, सप्त जय ईति  
 वारी ॥ सहस्र चतुस्रि नारी, चतुद रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति  
 जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली, मांहे क-  
 पूर् चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गंध धूली ॥ नरी पुष्प  
 पटोली, टाळीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें जाव  
 लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ बलि मूल  
 सूत्र चार, नंदी अनुयोगदार ॥ दश पथन्न उदार, ठेद खट वृत्ति  
 सार ॥ प्रवचन विस्तार, ज्ञाथ्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय  
 जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करै परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥  
 ज्ञानविमल सुरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्या  
 नथी नित्य नदा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥  
 मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुकंदा, शांतिकरण  
 श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिबा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज  
 हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो, पलक मात्र  
 न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे,  
 ठंर्यो पण तुम्हें नवि ठंमाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न  
 लावो, वीतराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर  
 कहो एम समझे, पण ठौरु दीधायी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना  
 हठथी नवि चालै, जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ नक्ति  
 खांची मनमांहे आय्यो, सहज स्वजावें पण में जाय्यो ॥ सा० ॥  
 माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥  
 ॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो बूटीजे, जेह मुंह मागे तेहिज दीजै ॥  
 सा० ॥ अजेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकल-  
 शो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अस्सयजाव निधी तुम पाश, आपी दासनें  
 पूरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुताई, दीधी साहज एह व

साई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंभुनाथ चैत्य-  
वंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सबदधी चविया ॥ वदि

चवदश वैशाखनी, जिन कुंभु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी,  
लीये संजमजार ॥ शुदि बाजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ प  
मिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ ठढा चक्री जय  
करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥ १७ ॥ ॥ अथ श्लोक प्रारब्धते ॥

जिन कुंभु दयाला, ठाग लंठन सुहाला ॥ जश गुण शुभमाला,  
कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति नवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला  
॥ त्रिजुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति श्लोक ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथधी आविया,  
फागुण शुदि बीजे ॥ मृगशिर शुदि दशमी जणिया, अरदेव नमी  
जे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्जल  
बारसें, केवलगुण बरिष्ठ ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद  
लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रानें नमूं, नय कहे जोमी हाथ ॥ १८  
॥ ॥ अथ श्लोक प्रारब्धते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारूं, क

र्मनो क्लेश वारूं ॥ अहनिश संजारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ कृत ज  
यजयकारूं, प्राप्त संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप  
तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

चव्या जयंतविमानधी, फागुण शुदि चनुअें ॥ मृगशिर सुदि इग्या  
रसें, जनम्या निग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिनें, कढ्याणक तीन ॥  
फागुण शुदि बारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर  
नीलना ए, नगलीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणभूपपद, नव  
जल तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ श्लोक प्रारब्धते ॥

जिन मल्ली महिला, वान ठें जेह नीला, ए अचरज लीला, स्त्री  
पणें नाम पीला ॥ डुस्मन सवि पीळ्या, स्वामि जो ठें बसीला ॥

अविचल सुखलीला, दीजिये सुण रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लि-  
 स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपरा-  
 जितथी आविया, श्रावण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारमी,  
 थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि बारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥  
 फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णै निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण ज-  
 जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमलजिनराजना, सुरनरन-  
 यक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ शोय प्रारज्यते ॥ मुनिसुव्र-  
 तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुऊ अंतरजामी कामदाता अका-  
 मी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्भ्या सर्वदारामी  
 राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै-  
 त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ आ-  
 वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढ  
 नी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, वर केवल  
 धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अस्कय अनंता सुक ॥ नय कहे  
 श्रीजिन नामथी, नाशो दोहग दुःख ॥ १ ॥ ॥ अथ शोय प्रा-  
 रज्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेह नही विश्वठानो ॥ सुत वप्रा मानो,  
 पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंज ठे जे कृपानो ॥ स-  
 वि जुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ ११ ॥ ॥ अथ श्रीने-  
 मीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, कासी वदि  
 बारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जण्या, यादव अवतंस ॥ श्रावण  
 सुदि ठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढनी  
 ठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमी अणपरणीया ए, रा-  
 मतीना कंत ॥ ज्ञानविमलगुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥ २२ ॥ इ-  
 ति ॥ ॥ अथ शोय प्रारज्यते ॥ गया शस्त्रागारे, शंकर  
 निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्यो तिवारे ॥ २३ ॥

संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालश्री ब्रह्मचा  
रे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंमे,  
सुरनर सारे सेव ॥ अरु पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ सं  
प्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवेचन प्रवहण शम, ज  
वजलनिधिने तारे ॥ कोहादिक मोटा, मद्यतणा जय वारे ॥ जिहां  
जीवदयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ जवि ज्ञाव धरीनें चित्त करीनें  
चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विहारे ॥ समकित  
दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो ज  
व पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥  
॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घ  
मीयां, दो घमीयां दो चार घमीयां ॥ रहो रहो ० ॥ मोज महिरा  
ण शिवादेवी जाया, तुमें गो आधार अरु वनियां ॥ रहो ० १ ॥ ना  
ह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चनियां ॥ रहो ०  
२ ॥ पशुपु पुकार सुणीय कीय करुणा, गेरुदीए पशुपंखी चनियां  
॥ रहो ० ३ ॥ गोद विठानं में बली जानं, करुं बीनती चरणे प  
नियां ॥ रहो ० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवरु, न गमे  
स्वपनमें सेजनियां ॥ रहो ० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन,  
वामी वन घर सेरनियां ॥ रहो ० ६ ॥ अष्ट ज्ञवांतर नेह निजाव  
त, नवमें जव ते वीठमीयां ॥ रहो ० ७ ॥ सहसावनभांहे स्वामी  
सुणीने, राजुल रेवतगिर चनियां ॥ रहो ० ८ ॥ पीयु करे निज  
शिरें हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलनियां ॥ रहो ० ९ ॥ जादव  
वंश विष्णुपण नेमजी, राजुल मीठी बेलनियां ॥ रहो ० १० ॥ ज्ञान  
विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखमीयां ॥ रहो ०  
११ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीपार्थनाथ चैत्यवंदन ॥  
॥ कृष्ण चौथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोष वदिदशमी ज-



नम, त्रिजुवन सुख पाया ॥ पोष वदि इग्यारसैं, लहै मुनिवर पंथ ॥  
 कमठासुर उपसर्गनो, टाढ्यो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चौथह दिनें  
 ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ आवण शुद्धि आठमें लह्या, अविचल  
 सुख नरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रौय प्रारब्धते ॥ जलधर  
 अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विधनने जे विना  
 रे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोमि वारे ॥ मुज प्राणाधारे, मात  
 वामा मढ्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावै ॥ अ  
 नुजव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कढ्याण, संप्रति जे  
 प्रमाणे ॥ सवि जिनवर ज्ञाण, श्रीनिवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दशवि  
 धि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सप्त प्रकार, पञ्चस्का  
 णादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे ज्ञया जिहां नदार ॥ ते  
 प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला,  
 जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयवि  
 मल विशाला, ज्ञान लह्नी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे  
 सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ आरे मा  
 शे पंचरंगी पाग सोनानो ठोगलो मारूजी ॥ प्रजु पास जिनेसर  
 जुवन दिनेसर संकरो, साहिबजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर  
 नूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो,  
 सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुठवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥  
 तूं अक्षय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी  
 तुम गुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी  
 निजमते, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमते ॥  
 सा० २ ॥ षट् दर्शन ज्ञासे युक्ति निरासे शासने, सा० ॥ स्याद-  
 वाद विशाले सहज समाजे ज्ञावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञानने ज्ञाने  
 आतमध्याने आतमा, सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेद नही त-



मा ॥ सा० ३ ॥ एक अनेकै बहुत विवेक देखिये, सा० ॥ आत  
 म तत्कामी अगुण अकामी लेखिये ॥ सा० ॥ सवि गुण आरा  
 मी ठो बहुनामी ध्यानमां, सा० ॥ आपे गतनामी अंतरजामी ज्ञा  
 नमा ॥ सा० ४ ॥ तूं अनियतचारी नियत विचारी योगमां, सा०  
 ॥ अध्यांतम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तूं धर्म सन्या  
 सी सहज विलासी समगुणें, सा० मोहारि विनाशी तूं जितका  
 शी कवि ज्ञणे ॥ सा० ५ ॥ ज्ञानदर्शनदायक गुणमणी लायक  
 नाथ है, सा० ॥ दुर्गति दुःखघायक गुणनिधि दायक हाथ है ॥  
 सा० ॥ जित मनमथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो, सा० ॥ अ  
 नैकांती एकांती तूं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ६ ॥ ध्यानानल योगें  
 पुंदगल जोगें ते दह्या, सा० ॥ अंतररिपु हणिया मूलथी खणिया न  
 वि रह्या ॥ सा० ॥ तूं हेतू समीयो सुरवर नमीयो सह  
 केहे, सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुण लहे ॥ सा०  
 ७ ॥ इम तुम गुण धुलियें कर्मने हणिये पलकमां, सा० ॥  
 पण नवि अवगणियें सेवक गणिये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे  
 नंदा त्रिजुवन इंदा संयुणे, सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुम पय  
 वेदा गुण ज्ञणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीवर्द्धमान  
 जिनचैत्यवंदन ॥ शुद्धि आपाढ ठठ दिवसें, प्राणतथी चवि  
 या ॥ तेरस चैत्रह शुद्धि दिने, त्रिसलायें जणिया ॥ मृगशिर वदि  
 दशमी दिने, आपे संजम आराधै ॥ शुद्धि दशमी वैशाखनी, वर  
 केवल साधै ॥ काती कृष्ण अमावशी ए, शिवगति करै उद्योत ॥  
 ज्ञानविमल गौतम लहै, पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥ इति ॥  
 ॥ अथ थोय प्रारच्यते ॥ लह्यो जवजल तीर, धर्म कोटीर  
 हीर ॥ दुरति रज समीर, मोह मूसार सीर ॥ दुरित दहन नीर,  
 भाण ॥ कर्पें संग कर पणसय धणु माणु. सासय असासय

मेरुश्री अधिक धीर ॥ चरम श्रीजिनवीर, चरण कटपट्ट कीर ॥  
 ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥ जगजंतु दयाला,  
 धर्मनी शास्त्रशाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला विशाला ॥  
 सुरनर महिपाला, वंदता है त्रिकाला ॥ २ ॥ श्रीजिनवर चाणी,  
 द्वादशांगी रचाणी ॥ सुगुण रयणखाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ न-  
 वम रस रंगाणी, सिद्धि सुखनी नीसाणी ॥ उह पीलण घाणी,  
 सांजलो ज्ञाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपा-  
 ला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगलमाला,  
 गलीने मोहहाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजै विशाला ॥  
 ॥ ४ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ आज गइ श्री हुं समव-  
 तरणमें ॥ ए चाल ॥ वंदो वीर जिनेसरराया, त्रिशलामाता  
 जाया जी ॥ हरि लंठन कंचन सम काया, मुऊ मनमंदिर आया  
 जी ॥ वंदो वी० ॥ १ ॥ दूषम समर्थे शासन जेहना, शीतल चं-  
 दन ठाया जी ॥ जे सेवता जविजन मधुकर, दिन२ होत सवाया  
 जी ॥ वंदो० २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी, जस मनमां-  
 जिन आया जी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया  
 जी ॥ वंदो० ३ ॥ कर्म कठिन जेदन बलवत्तर, वीर विरुद जिन  
 पाया जी ॥ एकलमल अतुलीबल अरिहा, उसमन डुर गमाया  
 जी ॥ वंदो० ४ ॥ वंछित पूरण, संकट चूरण, मातपिना तूं सहा-  
 या जी ॥ सिंहपरे चारित्र आराधी, सुजस निशान वजाया जी ॥  
 वंदो० ५ ॥ गुण अनंत जगवंत विराजै, वर्द्धमान जिनराया जी  
 ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, शुद्ध समकित गुणदाया जी  
 ॥ वंदो० ६ ॥ इति ॥ इहां पूरण जयवीरराय कहेवो ॥  
 ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ सकल  
 मंगलकार एही, सिद्ध सकल पय दाण ॥ स्याद्वाद साधन पद एही,

अध्यात्म गुणदाण ॥ १ ॥ ( सही ए नमो जिणाणं ) २ ( ए  
 आकणी ) विहुंतेर लख सगकोमि जवणवई, सासय जिण  
 हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, सगसठ विंवह परिमाणं ॥  
 सही० ॥३॥ मेरु वैताळ्य वस्कारा कंचन, यमक कुंम इह जाणुं ॥  
 एकत्रीश ओगण्यासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥  
 त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, व्यासी अधिक विंव जाणुं ॥ रुच  
 क कुंमल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥ ५ ॥ अरु  
 शत सय सहस चालोसा, विंवतणुं परिमाणं ॥ सरवाले वत्तीससैं  
 गुणसठी, तिर्यकलोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख  
 सहस एकाणुं, चळ सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर  
 त्रिवारा, रुचक कुंम नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ वार देवलोके नव  
 ग्रैवेयके, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रे  
 वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो वावन कोमि लख चोराणुं,  
 सहस चमाळीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर बुद्धलोके, जिन प-  
 मिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ९ ॥ त्रिभुवनमांहे सासय जिनहर,  
 सगवन्न लख वसैं व्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सु  
 एजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी वैतालीश  
 कोमी, तेम अठावन्न लखा ॥ ठत्रीश सहस अशी वलि साधिक,  
 सासयविंवनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रति  
 मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सत्ता तिहां साठ वधारो, एकश  
 त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रूपन्न चंझनन नें वर्द्धमान, वा  
 रिखेण चळ नामे ॥ व्यंतर ज्योतिपी मांहे असंख्या, जिनघर पमि  
 मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर ज्ञावना ज्ञावै, समकि  
 तगुण दीपावै ॥ परित्त संसार करी शिव जावै ॥ कुमति ते मन  
 ज्ञावै ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताळे ने तिर्यकलोके, पणसय धणु परि

जाण ॥ सं० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु, सेत्रुंजादि  
 क बहुला ॥ ते सविहूनें त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥  
 सं० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रभु नाम जपंता, लहिये कोमि कट्या  
 ण ॥ मनह मनोरथ सगला सीऊँ, जनम सफल सुविहाण ॥ सं०  
 ॥ १७ ॥ जयहर जगवंताणं जयत्तुर, नमो जिणाणं सही ए ॥  
 नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥  
 ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोग  
 स्सको कानुसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते कानुस  
 ग्ग पारी पढी चार थोयो कहेवी ते लखिये ठिये ॥

॥ अथ थोय प्रारब्धते ॥ रुषन्नदवे नसुं गुण निर्मला, दुध-  
 मांहे जिम जेखी सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार ठै,  
 जव२ मुऊने चित्ते रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली,  
 जेह हसे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे,  
 जिन पन्निमा प्रणमुं नित जगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम कीर  
 महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ जविक देह सदा पावन  
 करे, डुरित तापर जोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन ज्ञासन  
 कारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुताये  
 दीपता, डुरित दुष्टतणा जय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशा-  
 श्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहां एक जण  
 मोटी शांति कहे ( अने ) बीजा सर्व कानुसग्गमां सांजलै ॥  
 पढी सर्वे जणा कानुसग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहै ॥  
 पढी बैसीनें एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पढी सर्वे  
 जण मुखथकी आवी रीते कहे--श्रीशेत्रुंजायनमः १ श्री पुंमरीका  
 यनमः २ श्रीसिद्धेन्द्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री  
 सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेश्वरायनमः ९ श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री  
 शाश्वतायनमः ११ श्रीदृढशक्तयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिलायनमः १३  
 श्रीपुष्पदंतायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय-  
 नमः १६ श्रीसूरजगिरयेनमः १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री  
 पातालमूलायनमः १९ श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा-  
 यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने  
 पठे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये गिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशो ॥

नीलमी रायणतरूतले, साहेलमियां ॥ पीलमा प्रजुजीना  
 पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइये, सा० ॥ एहीज मुग-  
 ति उपाय ॥ गु० १ ॥ शीतमी गायथे बैसीये, सा० ॥ रातमो  
 करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल अई, सा० ॥ पहेरी व  
 खादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलमे, सा० ॥ नेह  
 धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे जवे शिव लहे, सा० ॥ थाये निर्म-  
 ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे  
 सार ॥ गु० ॥ अजंग प्रीति होए जेहनै, सा० ॥ जवश् तुम आ-  
 धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा अरु  
 ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाअई, सा० ॥ तीरथने अनुकूल ॥  
 ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनै, सा० ॥ सेवो एहने उवाह  
 ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु ज्ञाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम  
 मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीसत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरिनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होलाण कामें ॥ ए  
 चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करूं, हो लाल के ॥ सेव ॥

अहनिश ताहरुं ध्यान के दिल मांहे धरुं हो लाल, दि० ॥ शख  
 लंठन गुणखाण के अंजन वान बै हो लाल के अं० ॥ राजिम-  
 तीना कंत के परया विणुअ बै हो० प० ॥ १ ॥ तूहीज जीवन-  
 प्राण के आतमराम बै हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के ताहरुं  
 नाम बै हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो०  
 नि० ॥ कीजीये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥  
 जोत्या मनमथ राज रही गढ़ ऊपरै हो० र० ॥ पहरी शील  
 सनाह उदास एसी धरै हो० ऊडा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि  
 तुझे अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुंमरपणे धरी धोर महाव्रत  
 उचरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ जवांतर नेह जे तेह नुवेखीने  
 हो० ते० ॥ करुणा कीयी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥  
 पूरण पाली प्रीत बली निज नारने हो० व० ॥ आषी संजमजार  
 पहोचामी पारमें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते  
 जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धरो नेह के ते विरला सुण्या  
 हो० ते वि० ॥ राजमतीनो कंत वखाणे कविजना हो व० ॥  
 तुझे तो दीधा ठेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जाद-  
 वनाअ सनाथ करो मुऊनें सदा हो० क० ॥ दिनु मुऊ शिर हाथ  
 होवे जंम संपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नही  
 हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोमो दोमें सही हो० घो० ॥ ६ ॥  
 सबला साथै प्रीत निबलनें नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी  
 जे ओमी किहां जाअे वही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते जीम  
 न मंजीये हो० जी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मने  
 मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो दुसमन होय दूर कोणे नवि  
 मंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दरशन दीजीजे हो०  
 द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर मलीनें कीजीये होला० म० ॥



विमल गुरु ज्ञाखियो रे, आवश्यकज्ञाप्यनी वाण रे ॥ ज० से०  
॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववंदन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणयर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोच्चव कीजै जी  
॥ होल दमाया जेरी नफेरी, ऊल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन  
आगल ज्ञावना ज्ञावी, मानवज्जव फल लीजै जी ॥ परब पजूसण  
पूरव पुन्ये, आब्या इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ मास पास वज्रो द-  
शम डुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय क  
रीनें, जिन चौबीश पूजीजै जी ॥ वक्राकलपनो ठठ करीनें, वीर-  
वखाण सुणीजै जी ॥ परवाने दिन जन्म महोच्चव, धवल मंगल  
वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावी, अठमनुं  
तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परै केवल लहिये, जो शुभ्र ज्ञावै  
रहिये जी ॥ तेलाधर दिन त्रणय कलयाणक, गणधरवाद वदीजै  
जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजै, रुषज चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥  
बारशें सूत्र नें सम्राचारी, संवत्सरी पम्किमिये जी ॥ चैत्यप्र-  
वामी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें स्वामीजै जी ॥ पारणाने दिन  
सामीवञ्चल, कीजै अधिक वक्राई जी ॥ मानविजय कहे सकल  
मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको वारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू जली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोर-  
णथी रथ फेरीयो रे लाल, नीतुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पद-  
मणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी  
अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नाथो  
पीठ ॥ प्रीतम विन हिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥  
हो ० २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो डुख दैण ॥



तो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥  
 माहमहाने सी पमे हो लाल, प्रीत संग पोढै नारी ॥ प्रीतम वि  
 ण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले  
 हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हूं कियसुं खेलूं हिवे हो  
 लाल, पाश नही जरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहाने चांदणी रे ला  
 ल, संजोगण सुख दैण ॥ विरहणनै वालम विना रे लाल, रोवत  
 जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही  
 महकाय ॥ अरज सुणी अवला तणी हो लाल, तपत मिटावो  
 आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाजै कोम  
 लगात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुश पूछै मुऊ  
 वात ॥ हो० ८ ॥ आसाढे काली घटा हो लाल, ऊनमि आयो  
 मेह ॥ कंत मिढ्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥  
 हो० ९ ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, धन वरसे ऊरला-  
 इ ॥ इण रुत सूतां एकली हो लाल, कयूं कर रैण बिहाई ॥ हो०  
 १० ॥ काली कालाहण मिली हो लाल, जाइवमै वर खंत ॥  
 अरज सुणीनै साहिबा हो लाल, पूरो मो मन खंत ॥ हो० ११ ॥  
 आसोजै आंसू ऊरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न  
 पूछी साहिबे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० १२ ॥  
 काती दृढ ठाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख  
 निज नाहनो हो लाल, सफल गिणे अवतार ॥ हो० १३ ॥  
 संयम ले पिउ सेंहथे हो लाल, पामे जवनो पार ॥ इण पर पाले  
 प्रीतमी हो लाल, धन १ ते नर नारि ॥ हो० १४ ॥ जे कीधी  
 पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद जणी द्यो करि  
 दिया हो लाल, प्रभु चरणारी सेव ॥ हो० १५ ॥ इति श्रीनेम  
 राजुल वारेमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपठरा करतो आरती जिन आगै, हारे जिन आगे रे जिन  
आगै, हारे ए तो अविचल सुखमा मागै, हारे नाज्जीनंदन पाश ॥

॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हारे दोय च-  
रणे जांजर जमकै ॥ हारे सोवनना घूघरी घमके, हारे लेती फूद-

मा बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशलो रुफ वीणा, हारे  
रूमा गावंती स्वर जोणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नयणां, हारे जो-

ती मुखुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभु जा-  
या, हारे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हारे मे तो पूरब पून्ये पाया,

हारे तोरी देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु  
प्यारो, हारे प्रभु सेवक हूं तुं तारो, हारे जवो जवना दुखमा

वारो, हारे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो  
चित्त धरजो, हारे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हारे मुनि मा-

णक सुखिउं करजो, हारे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥  
॥ अथ नेम राजोमती सिंहाय ॥ देशो उमादे भटीयाणोरी ॥

पहली तो समरुं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागुं गुरां  
रे पाय ॥ प्रभुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिनतणा, सुजमत

आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरोपुरहुंती हो नेमीसर साहिब थे  
चढ्या, जान करी याडाय ॥ हसतो तो सिणगार्या हो नेमासर

साहिब थे जला, घोरलारी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाज्रा तो अ-  
धिका हो नेमीसर साहिब वाजता, आया तोरण बार ॥ महिल

चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥  
आंख फरुके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे बै जरता-

र ॥ वामो तो जरीयो हो नेमीसर साहिब जीवनो, पशुवाणी  
पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ कनो तो रघनें हो नेमीसर साहिब राखी-

यो, ए पशु बांध्या बै किय काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर  
 साहिब तुमतणो, साखी कहे बै महाराज ॥ ५ ॥ थोमा तो  
 सुखने हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥  
 जीव बंध्याने हो नेमीसर साहिब गोमिया, जीव सबे तिण वार  
 ॥ ६ ॥ अणपरणो राजुल हो नेमीसर साहिब गोमने, जाय  
 चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमांसुं हो नेमीसर साहिब जीतवा,  
 लीधो संजमजार ॥ ७ ॥ राजुल तो जूरे हो नेमीसर साहिब  
 एकली, जल विन मढली जेम ॥ नव ज्वारो हो नेमीसर साहि-  
 ब गोमने, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावै हो  
 राजुल दुःख मृत करो, एतो कालो बै जरतार ॥ पाठो तो राजुल  
 जाधै हो सहेली मारी थे सुणो, इण जव ए जरतार ॥ ९ ॥ रा-  
 जुल तो चाली हो नेमीसर साहिब वांदवा, साथे तो घणुं रे परि-  
 वार ॥ गिरनारे चढतां हो सब आगे पावै नीकढ्या, एकली रही  
 बै राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अ-  
 तियणा, जोज्या बै सबि सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल  
 नारी अति जली, चीर जिचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो  
 वाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घूघरना ऊणकार ॥ ऊणका तो  
 सुणिया हो रहनेमी वैठे ध्यानमें, खोली बै पलक तिणवार ॥ १२ ॥  
 रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी वैठो ध्यानमें, कहै सुंदर करो मोसुं  
 प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मानै गोमी बै  
 नेमजरतार ॥ १३ ॥ जोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांम तो,  
 नलटी करै नाखै तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पाठो नही  
 जखै, जखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम  
 थारे सारखी, हूं वमा जाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम  
 माहरे ऊपरां, तो परस्यो थे नरक मजार ॥ १५ ॥ एहवा तो व-

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपमा  
तो पहरया हो राजुलनारी आपणा, पुहती बै प्रज्जु दरबार ॥ १६ ॥  
राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वांदिआ, बांदिनें लीधो सं-  
जमजार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती  
बै सुगति मजार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आग-  
लै, मिलिया बै सुगति मजार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब  
गाईयो, म्हाारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिद्धाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूढा करे, विनय करी शीख नमाय प्रज्जुजी ॥  
अविचल आनक में सुण्यो, कृपा करी मोय बताय प्रज्जुजी ॥ शिव-  
पुरनगर सोढामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलग करी, सारया  
आतम काज प्रज्जुजी ॥ ठूटा संसारना डुख अकी, रहवानो  
किहां ठाम प्रज्जुजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्द्ध लोकमां,  
सिद्धशिखातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे,  
तेहना बारे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस  
जोजना, लांबी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जामी  
विचै, बेमे माखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला द्वार  
मोतीतणा, गोडुग्ध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते अकी ऊजली  
अविघणी, नलटो ठत्र संगण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजन-  
स्वर्ण शम दीपती, बठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन  
अकी निरमली, सुंआली अत्यंत बखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥  
सिद्धशिखा उलंधी गया, अधर रह्या सिद्धगज हो गोतम ॥  
अलोकसुं जाई अमया, सारया आतकाज हो गोतम ॥ शि०  
॥ ७ ॥ जनम नहीं मरणो नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गोतम ॥  
वैरी नहीं मित्रो नहीं, नहीं संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ८ ॥ झूख नहीं तिरखा नही, हरख नहीं नहीं सौक हो गो-  
 तम ॥ करम नहीं काया नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥  
 शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नही, फरस नहीं नही वेद हो  
 गोतम ॥ बोले नही चाले नही, मोनपणू नही खेद हो गोतम ॥  
 ॥ शि० १० ॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नही ऊजाम हो गोतम ॥  
 काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम ॥ शि०  
 ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नही ठाकुर नहीं दास हो गोतम  
 ॥ सुक्तिमें गुरु चेलो नहीं, नहीं लघु वरुई वास हो गोतम ॥  
 शि० १२ ॥ अनंता सुखमें जिलरह्यां, अरूपी ज्योत प्रकाश हो  
 गोतम ॥ सहुकोईनें सुख सारिखा, सगलानें अविचल राज हो  
 गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध सुगते गया, वली अनंता जाय  
 हो गोतम ॥ अवर जग्या रूधे नही, जोतनां जोत समाय हो गो-  
 तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित है, केवलदर्शन खास हो  
 गोतम, द्वायकसमकित दीपता, कदय न होवै ऊदाश हो गोतम ॥  
 शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे ललखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥  
 शिवरमणी बेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि०  
 १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविरल  
 वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकरो, जादववंस मांहे वनेरो ॥ १ ॥  
 नगरी सोरीपुर पृथ्वीमें दीपे, रिद्धै समूद्धै अलकानें जीपे ॥ राजा समुद्र  
 विजै शिवादे राणी ॥ सीलै रूपै कर अधिकी वखाणी ॥ २ ॥  
 तेहनोजी अंगज नेमजीनाथो, सुगतरमणसुं घाले बैबाथो ॥ आणंद  
 घणें वसंत आयो, कुली बत्तीसै फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाजो  
 सारू चलिया गोपालो ॥ रुफ चंग वाजै रेमे गुलालो ॥ रुखमण

राणी राधा सतनामा, बीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेम-  
 नाथजीरो व्याह मंमायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥  
 राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई,  
 जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरधू सखरी सरणाई, जुंगलने  
 जेरी सखरी सजाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाल कुहके करनाला, गोरी  
 जी गावै गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजै घूघरमाला, मदऊरता  
 मंगल जाकऊमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, ला  
 मी राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग जराई ॥ सीस  
 फूलांरी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले जालै टीकोजी सोहै, अ  
 णियाली आंण्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जमावकेरा, नकवे-  
 सर मोती जलके जलेरा ॥ ९ ॥ दामिमकुलियां दांत बत्तासे, बदनी  
 बोलै सार बत्तीसै ॥ डुलमी तिलमी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर  
 कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूमे नें गहणें जाइ न वखाणी, रू  
 पैकर गोरी जीपे इंडाणी ॥ जांऊरनें नेवर घूघर घमकंती, हंसा तो जीपै  
 सुंदर हालंती ॥ ११ ॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुधामेदेही गर  
 काव कीधी ॥ फावेंते कपमै सखियां वणाई, राजूल राखी नार न  
 काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां ति  
 ण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें  
 मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोमेजी  
 ग्यानें जादव थाटो ॥ घणुं मठराला महा अजिमाना ॥ केसरिये वागै  
 मिलिया ठै जानी ॥ १४ ॥ डुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही  
 जानी जूपति जलेरा ॥ धक्को मारे तो भेरु धूजामै, जातां कालनें  
 जाल पठामै ॥ १५ ॥ तिहां मांहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता  
 सुरपतिसुं नर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोन्ने जु चंदो, तिण विध  
 मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण बेला देखी पसुअ तुम्हाया, अण-



परण्या नेमजी पाठाजी आया ॥ धिग् १ संसार मायाजंजालो,  
जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी  
चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल  
ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम  
नाथजीरो शिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिखयते ॥  
प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने चरणे नित  
नमूं ॥ धुरि तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपा-  
ध्याय मन आणियै ॥ ( उल्लाखो ) आणियै निज मन जाव सुदै,  
उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमजूमिमांहे, साधु प्रणमुं ते  
वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नै शुक्ल पक्ष वलि शील पाटयो ते  
सुणो, जरतारने लो विन्हे तेहनो चरित जावेसुं जणो ॥ १ ॥  
( ढाल ) जरतक्षेत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कछदेसै रे विजय-  
सेठ श्रावक वसै, शीलब्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बालागणै रे ए-  
हवो निश्चै मन कियो ॥ ( उल्लाखो ) मन कियो एहवो तेण निश्चै  
पक्ष अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुन विषय शेवा ढाल-  
स्युं ॥ इकअठै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्ल  
पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ ( ढाल ) कर्म-  
जोगे रे मांहोमांहे बिहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुन विवाह सुहाम-  
णो ॥ तब विजया रे सोले शृंगारजला करी, पिउ मंदर रे पोहती मन  
उल्लट धरी ॥ ( उल्लाखो ) मन धरी उल्लट अधिक पहुतो पिया  
पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोलै शील निश्चो संजरी ॥ मुऊ  
शील निश्चो पखअंधारे तेहना दिन तीन ठै, ते नेम पाखो शुक्ल  
पक्षे हुं जोग जोगविस्युं पवै ॥ ३ ॥ ( चाल ) इह सांजल रे वि-



जया मन विलखी आई, पिस पूछै रे किम चिंता तुजने जई ॥  
तब विजया रे कहे शुक्लपद व्रतमें लियो, व्रत चोथे रे बालापण  
निश्चो कियो ॥ ( उल्लाखो ) बालपणमें कियो निश्चो शुक्लपद व्रत  
पालस्युं, तो उन्नय पद हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥  
तुझे अवर नारी परणने हिव शुक्लपद सुख जोगवो, कृष्णपद  
निज निमय पाली अजिग्रह इस जोगवो ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तब  
बलतो रे तसु जरतार कहै इसो, विपचारस रे कालकुटविष  
है तिसो ॥ ते ठंरी रे शीलव्रत दोनुं पालस्यां, एह वार्त्तारे माता  
पिता न जणावस्यां ॥ ( उल्लाखो ) मातपिता जब जाणस्ये तब  
दिख्य लेस्यां धर दया, इस अजिग्रह लेईने ते ज्ञावचारत्रिया  
अया ॥ एकत्र सय्या सयन करतां स्वमगधारा व्रत धरे, मन वचन  
काया करी सूयो शील वेनं आचरै ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ) विमल  
केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिल आवी समोसरया ए ॥  
आणी अधिक विवेक, आवक जिणदास, कहै विनयगुण परि-  
वरयो ए ॥ ६ ॥ सहस चोरासी साधु, मुऊ घर पारणो, करै मनो-  
रथ तो फलै ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहै आवक सुणो, एह  
बात तो नवि मिलै ए ॥ ७ ॥ किहां एतला अणगार, किहां बलि  
सूऊतो, ज्ञातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो हिव तेह विचार, करो  
तुम्हें जिम तिम, फल अम्ह हुवै तेतलो ए ॥ ८ ॥ अठै हिवे कछ-  
देश, सेठ विजय बली, विजया जार्या तसु धरै ए ॥ ज्ञावयती  
अहवास, तेहनें जोजन, दीधां फल हुवे तेतलो ए ॥ ९ ॥ जिण  
दास कहै जगवंत, ते मांहे एतला, कुण गुण कुण व्रत वै घणा  
ए ॥ केवली कहै अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपद व्रतत  
णा ए ॥ १० ॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहै जग हूं वमो ए ॥ देशी ॥  
केवलीनें मुख सांजली, आवक ते जिनदास रे ॥ कछदेशें हिव

आवियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो,  
 शील शमो नही कोय रे ॥ शीलै देव सानिध करै, शीलथो शिव  
 सुख होई रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय विजयाज्ञणो, जगतसुं ज्ञो-  
 जन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारणानो फल लेई रे ॥  
 ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूठै तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥  
 केवलीने सुख जिम सुण्यो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥  
 ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें, पारणो दीये कोइ ज्ञाय रे ॥  
 कृष्ण शुक्लपद दंपती, ज्ञोजननो फल आय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥  
 मातपिता जब जाणियो, प्रगट हूँ संबंध रे ॥ सेठ विजय विज-  
 या लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ दाल ४ ॥  
 केवलीनें पासे, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूंकी, पालै निर-  
 तीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाभ्यो केवल ज्ञान ॥ ते सु  
 गते पहुंचता, दंपती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै,  
 ज्ञावै जे नर नार ॥ ते वंछित सुख लहै, पहुंचै जवनें पार ॥ १९ ॥  
 ॥ कलश ॥ इम कृष्णपद नें शुक्लपदें शील पाट्यो निरमलो,  
 ते दंपतीना ज्ञाव शुद्धें सदा शुभगुण सांजलो ॥ जिम डुरिय दो-  
 हग दूर जायै सुख आयै बहु परै, बलि सकल संगल मनह वंछत  
 कुशल नित घर अवतरै ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुप्रोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलांमे बैठी राणी कमलावती, जीणी तो उमै मारग  
 खेह ॥ जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौतुक उपनो मनमें एह ॥  
 सांजल रे दासी आज नगरमें वहडो किस घणो ॥ १ ॥ कांतो  
 परधान सखी रुंझिया, कां केइ लूट्या राजा गांव ॥ कां कोइ गा-  
 म्यो धन नीसख्यो, गामा रह्या वै ठामो ठाम ॥ सां० ॥ आ० ॥  
 ॥ २ ॥ नातो परधान बाईजी रुंझिया, ना कोई राजा लूट्या

गांव ॥ जग्गूपुरोहित धन तज नीसरयो, राजारै धन लेवा  
 चाव ॥ सांजल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥  
 ३ ॥ बेटां तो तिएरा संजम लियो, वरज्यो घएयोंही पितामात ॥  
 ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, जग्गू जसा तिएं मोह ललचात ॥  
 सांजल हे रा० ॥ ४ ॥ इन सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां  
 तो कमी नहीं काय ॥ सांजलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म  
 मता नही गाय ॥ सां० दासी राजानें ए वातां जुगती नही ॥ ५  
 ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई बै राजारे हजूर ॥ वचन कहै  
 राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा  
 ब्राह्मण गोमी रुद्धि क्युं आदरो ॥ ६ ॥ करजोमी कमला कहै, सां  
 जल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे रुद्धि परिहरि, ते तो घर भांड़े म  
 त आण ॥ सांजल हो राजा० ७ ॥ ए रुद्धिसुं अणो कांइ घणो हुसी,  
 राजारा मोटा बै जग ॥ वमियें आहाररी वांढा कुण करै, कै कुतरा  
 कै काग ॥ सांजल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीणो नर जखै,  
 नही परसंसवा जोग ॥ जग्गूपुरोहित रुद्धि तज नीसरयो, ये  
 जाणयो बै असी म्हारे जोग ॥ सां० राजा० ९ ॥ संक-  
 लपियोमो पाणो किम लियै, सांजल हो महाराज ॥ दान दि-  
 यो ये पहिलां हाथसुं, ते पूवो लेतां नावै आने लाज ॥ सांजल  
 रा० १० ॥ निहच्चे तो मरणो राजा इक दिने, गोमीनें काम विशेष  
 ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥  
 सांजल हो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन जैलो करी, ये धालो  
 जंझारो मांदि ॥ तोपिण ब्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनमो  
 थाय ॥ सांजल हो राजा० १२ ॥ सांजलनें इखुकारराजा बोलीयो,  
 तूं जाषैनी वचन संजाल ॥ का तनें राणी जोखो वाजियो, का  
 काई कीधी मतवाल ॥ सांजल हो राणी राजानें करमा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी जोलो बाजीयो, ना कोई  
 कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वसियो धन थे आदरो, वरजण  
 आई हो जूपाव ॥ सांजल हो रा० १४ ॥ बलतो राजा राणीने  
 इम कहै, इसमी वैरागण आय ॥ अजुं तो निजरां आवै नही, तूं  
 बैठी बै घर मांय ॥ सांजल हे राणी० १५ ॥ उत्तरवाली तो दीसे  
 नही, इसमी आई बै मतवाल ॥ हुंतो घर गोमीने नीसरी, थे  
 पिण गोमो हो जूपाव ॥ सांजल हो राजा आग्या देवो तो संजम  
 आदरुं ॥ १६ ॥ रतन जमतरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पमियो  
 फंद ॥ इण रतै हूं आरे राजमें, रहिनै पांमु आणंद ॥ सांजल  
 हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूणीया तांतण तोमनें, आरंज  
 धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत अई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो  
 सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मऊं,  
 हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमां-  
 हे हरखित आय ॥ सां० रा० राज द्वेषरा ज्ञांगा लग रह्या १९ ॥  
 मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ दुस्मन  
 तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥  
 सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोनी मूरख अका, मुरज  
 रह्या जोगमांहि ॥ पहिलाने दुखियो देखी चेत नही, लागी राग  
 द्वेषरी लाय ॥ सांजल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी वोटी  
 पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पमियो आय ॥ आमिष सम  
 जोग गोमनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांजल रे प्राणी संय  
 मथी सुख पामियै २२ ॥ महल पिलंगादिक अथिर बै, ते पाम्याठे  
 आपणे हाथ ॥ कामजोगमें रक्त होय रह्या, ते तजहोय सांनाथ ॥  
 सांजलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रियारा जोग गोमने, इय जावै  
 हलक आय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

गांव ॥ जगूपुरोहित धन तज नीसरयो, राजारै धन लेवा  
 चाव ॥ सांजल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥  
 ३ ॥ बेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घएयोंही पितामात ॥  
 ते पिण चारित्र लेवा कुमह्या, जगू जसा तिरें मोह ललचात ॥  
 सांजल हे रा० ॥ ४ ॥ इन सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां  
 तो कमी नहीं काय ॥ सांजलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म  
 मता नही गाय ॥ सां० दासी राजानें ए वातां जुगती नही ॥ ५  
 ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई बै राजारे हजूर ॥ वचन कहै  
 राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा  
 ब्राह्मण ठोमी रुद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोमी कमला कहै, सां  
 जल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे रुद्धि परिहरि, ते तो घर झांड़े म  
 त आण ॥ सांजल हो राजा० ७ ॥ ए रुद्धिसुं अणणे कांइ घणो हुसी,  
 राजारा मोटा बै जग ॥ वमियें आहाररी बांढा कुण करै, कै कुतरा  
 कै काग ॥ सांजल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीठो नर जखै,  
 नही परसंसवा जोग ॥ जगूपुरोहित रुद्धि तज नीसरयो, ये  
 जाण्यो बै असी म्हारे जोग ॥ सां० राजा० ९ ॥ संक-  
 लपियोमो पाठो किम लियै, सांजल हो महाराज ॥ दान दि-  
 यो ये पहिलां हाथसुं, ते पूवो लेतां नावै थाने लाज ॥ सांजल  
 रा० १० ॥ निहचे तो मरणो राजाइक दिजे, ठोमीनें काम विशेष  
 ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥  
 सांजल हो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन जैलो करी, ये घालो  
 जंझारारे मांदि ॥ तोपिण ब्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनमो  
 थाय ॥ सांजल हो राजा० १२ ॥ सांजलनें इखुकारराजा बोलीयो,  
 तूं जापैनी वचन संजाल ॥ का तनें राणी जोलो वाजियो, का  
 काई कीधी मतवाल ॥ सांजल हो राणी राजानें करमा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी जोलो बाजीयो, ना कोई  
 कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण  
 आई हो जूपाव ॥ सांजल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीने  
 इम कहै, इसनी वैरागण आय ॥ अजुं तो निजरां आवै नही, तूं  
 बैठी बै घर मांय ॥ सांजल हे राणी० १५ ॥ उत्तरवाली तो दीसे  
 नही, इसनी आई बै मतवाल ॥ हुंतो घर गोमने नीसरी, थे  
 पिण गोमो हो जूपाव ॥ सांजल हो राजा आग्या देवो तो संजम  
 आदरुं ॥ १६ ॥ रतन जमतरा राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पमियो  
 फंद ॥ इण रंतै हूं आरे राजमें, रहिनै पांमु आणंद ॥ सांजल  
 हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूषीया तांतण तोमनें, आरंज  
 धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत अई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो  
 सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दब तो लागी हो राजा वन मऊं,  
 हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमां-  
 हे हरखित आय ॥ सां० रा० राण द्वेषरा जांगा लग रह्या १९ ॥  
 मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ दुस्मन  
 तो मनमें हरख पाम्यो घणौ, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥  
 सां० राजा राग दे० २० ॥ इण दृष्टांते लोन्नी मूरख अका, मुरज  
 रह्या जोगमांहि ॥ पहिलांने दुखियो देखी चेत नही, लागी राग  
 द्वेषरी लाय ॥ सांजल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी वोटी  
 पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पमियो आय ॥ आमिष सम  
 जोग गोमनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांजल रे प्राणी संय  
 मथी सुख पामियै २२ ॥ महल पिलंगादिक अथिर बै, ते पाम्या ठे  
 आपणे हाथ ॥ कामजोगमें रकत होय रह्या, ते तजहोय सांनाथ ॥  
 सांजलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रियारा जोग गोमने, इय जावै  
 हलक आय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥



सांजल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखी ज्युं जोग जाणज्यो, ए काम  
 बधारे संसार ॥ साप ज्युं मोर अकी करतो रहै, ज्युं पापसुं संक-  
 स्यां इण वार ॥ सांजल रे प्रा० २५ ॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां  
 संयमज्जार ॥ समता तजी समता ग्रहो, करस्यां नग्र विहार ॥ सांजल  
 रे प्रा० २६ ॥ तेन धन जोवन कारमो, चंचल बीज समान ॥ खिण २  
 खूटै आनखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांजल रे प्रा० २७ ॥  
 हस्ती ज्युं बंधण तोरनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंद तूटै संयम  
 लियां, सुणो कहुं तुं महाराय ॥ सांजल हो रा० सं० २८ ॥ इम  
 सुणनें इखुकारराजा चेतियो, ठोमीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो  
 ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सारयां काज ॥ सांजल हो राणी  
 सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह ठोरकै, पायो जिनध-  
 रम सुजाण ॥ तपस्या संगलांही आदरी, नत्कण्ठो पराक्रम आण ॥  
 ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति शुपति  
 दयाल ॥ जमरानी परै करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां०  
 प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज वै, जव्यजीवनें नतरै  
 पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं०  
 ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समझनें, निरमल ज्ञावना ज्ञाव ॥  
 ठएजणा ओसा कालमें, सुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥  
 ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, नृगुपुरोहित जसा नार ॥  
 नृगुप्रोहितना दोय दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० सं०  
 ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा नृगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥ ३५ ॥ प्रथम जिनैसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान  
 शील तप ज्ञावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद लमोसस्या  
 राजगृही उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्यो, बैठा अवर्द्धमान ॥ २ ॥



बैठी बारै परखदा, सुणवा जिणवर दाण, दान कहे प्रभु हुं वमौ,  
 मुऊने प्रथम बखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहुको तुमैं, कुण ठै मुऊ  
 समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥  
 प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीधारी देवल चढै,  
 सीधै वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरनें पारणे, कुण करस्यै मुऊ  
 होरु ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारै कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग  
 सगलो वस करुं, मुऊ मोटी ठै बात ॥ कुण २ दानथकी तिरथा,  
 ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥  
 धनसारथवाह साधुनैं, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थकर पद में  
 दियो, तिणें मुऊने अजिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहै जग हूं  
 वमो, मुऊ सरखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा,  
 दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती,  
 पमिलाज्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुबाहु सुख लहै, ते तो मुऊ  
 जपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पमिलाज्यो  
 रुषिराय ललना ॥ शालिजइ सुख जोगवै, दानतणें सुपसाय ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसैं मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण  
 ललना ॥ जरत अयो चक्रवर्त्ति जलो, ते पण मुऊ फल जाण ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या लुमदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष  
 ललना ॥ मूलदेव राजा अयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥  
 ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलमी-  
 रस बहरावियो, पाम्यो जवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंद-  
 नबाला बाकुला, पमिलाज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट  
 अया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव  
 पारेवहुं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थकर चक्रव-  
 र्त्तिपणें, प्रगटयो पुन्य पमूर ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजजव शिशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अ  
 वतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में  
 ऊधर्या, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुज  
 पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दा-  
 न तुं, किस्यो करै अहंकार ॥ आरुंवर आवै पदुर, याचकसुं विव-  
 हार ॥ १ ॥ अंतराय बलि ताहरै, जोगकरम संसार ॥ जिनवर  
 कर नीचो करै, तुजने पमो धिकार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान  
 तूं, मुज पूवै सज्ज कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्थुं राजा  
 होय ॥ ३ ॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी  
 दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकटसज्ज टले,  
 शीले जश शोभाग ॥ शीलेसुर सानिध करै, शील वमो बेराग ॥ ५ ॥  
 शीलै सर्प न आज्ञमै, शीले शीतल आग ॥ शीलै अरिकरी केसरी,  
 जय जावै सब ज्ञाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जय अकी, में ठोम  
 व्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांजलजो सुविवेक ॥ ७ ॥  
 ॥ दोहा २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहे  
 जग हूं वमो, मुज बात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावै लो  
 कनें, में दानतणी बात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग  
 जाणीयें, बलि विरती नही पण कांई रे ॥ ते नारद में सीजव्या,  
 मुज जुन ए अधिकार रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिर्या वैरखा, शं  
 खराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो ह्यप्र कलावती, ते में नवपद्धव  
 कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंडै घर आणी  
 रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी०  
 ४ ॥ चंपावार उघामिया, बली चलणियें काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय  
 सुजद्रा जस अयो, में तसु कीधी जरीरो रे ॥ शी० ५ ॥ राजा मा-  
 रण मांसीयो, राणी अन्नयायें दूषण दाख्या रे ॥ शूली सिंहासन

में कियो, में श्रेष्ठ सुदर्शन रख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाह  
 मंत्रीसरें, अवतां अरिदल अंज्यो रे ॥ तिहां पिण सानिय में करी,  
 बल धरम काज आरंज्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट  
 किया, में अगेतरसो वारो रे ॥ पांमवतारी झैपदी, में राखी मा-  
 म नारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, बलि शीलवती  
 दवदंती रे ॥ चेम्पानी साते सुत, राजीमती सुंदर कुंती रे ॥ शी०  
 ९ ॥ इत्यादिक में ऊधर्या, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्र-  
 भु वीरजी, पहिबे मुज आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥  
 तप बोळ्यो त्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुज आगल तुं  
 किसुं, सांजल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा नोजन तें तज्या, जगमें  
 मीठा नाद ॥ देहतणी शोजा तजी, तुज्मां किस्यो सवाद ॥ २ ॥  
 नारी थकी मरतो रहे, कायर किस्युं वखाण, कूरु कपट बहु के  
 लवी, जिम्ह तिम्ह राखै प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुज आदरै, ठंमी  
 सहु संसार ॥ आप एक तूं जांजतो, बीजा जांजै चार ॥ ४ ॥ क  
 रम निकाचित तोमवा, जांजु जवजय जीम ॥ अरिहंत मुजने  
 आदरै, वरस ठम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरै, मुज  
 लबधै मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारै शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥  
 ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंशु आकार ॥ हय गय रथ पा  
 यकतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुज कर फरसै उपशमें, कु  
 ष्ठादिकना रोग ॥ लब्धि अठवीस ऊपजै, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥  
 जे में ताख्या ते कहूं, सुणजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पाम  
 सो, देशो मुज साबास ॥ ९ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नखदलरी दे  
 शी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कोधी चार हो सुंदर ॥ ते  
 पिण तिण जव ऊधर्यो, मूक्यो मुगति मजार हो सुंदर ॥ १ ॥  
 तप सरखो जग को नही, तप करै कर्मनूं सूख हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूरु हो सुंदर ॥ त० २ ॥  
 सात माणस नित मारतो, करतो पाप अधोर हो सुंदर ॥ अर्जुन  
 माली में ऊधर्यो, वेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिपे  
 णनें में कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुतर सहस्र अतेजरी,  
 सुख भोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घ  
 णो, हरिकेशी चंद्राल हो सुंदर ॥ सुरनर कोमी सेवा करै, ते में  
 कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लवधे कियुं, ला  
 ख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुऊ शक्ति  
 अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांया जिन  
 चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिवूज्यो, तिण मुऊ अधिक  
 जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस्र अणगारमां, श्रीधनो अ  
 णगार हो सुंदर ॥ वीर जिखंद बखाणीयो, ए पण मुऊ अधिकार  
 हो सुंदर ॥ त० ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलै, डुकरकारक एह हो सुं  
 दर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुऊ महिमा सवि तेह हो सुंदर ॥ त०  
 ९ ॥ नंदिपेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर ॥ वृष्टिकरी सोव  
 नतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १० ॥ इ स बलजगदप्रमुख  
 बहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रजु वीरजी,  
 पहिलो मुऊ प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ जाव कहै  
 तप तूं किसुं, ठेरुं करै कयाय ॥ पूर्वकोमी जो तप तपै, कणमां  
 खैरूं आय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रतें, तें बाढ्यो सवि देश ॥  
 अशुभ नियणो तूं करै, कमा नही लवलेस ॥ २ ॥ द्वीपायन  
 रुषि दूह्या, सांव प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तव क्रोध करी तिहां, कियो  
 द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शील तप सांजलो, म करो जूठ गुमान ॥  
 लोक सहूको साख दे, धर्म ज्ञाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपूंसक ठो  
 त्रिणहे, ये व्याकरणी साख ॥ काम सैर नहि कोइनुं, ज्ञाव ज्ञे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रस-  
 वति रस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र  
 मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ ज्ञाव विना ते सवि वृथा, ज्ञाव फलै  
 नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमैं, विधरकह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो  
 ज्ञाव न हुंततो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ ज्ञाव कहे में एकले,  
 तास्या बहु नर नार ॥ सावधान अइ सांजलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥  
 ( ढाल चौथी ॥ कपूर हुवै अति बजलो रे, एदेशी ) ॥ काननमें का  
 नसग्न रह्यो रे, प्रभञ्जंद रुषिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, तत-  
 खिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोज्जागी सुंदर, ज्ञाव बमो संसार ॥  
 एतो बीजो मुज परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे,  
 पोहचाइं जवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एला-  
 पूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो०  
 ३ ॥ नूख तृषा खमें अतिधणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल  
 सहिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाज्यी लोच  
 बाधे घणो रे, आएथो मन वैराग ॥ कपिल अयो मुनि केवली रे,  
 ते मुजनें सोज्जाग ॥ सो० ५ ॥ अशिकासुत गह्वनो धणी रे,  
 खीणजंवा बलि जाण, कीधो अंतगम केवली रे, गंगाजल गुण  
 खाण ॥ सो० ६ ॥ एनरेसें तापसजणी रे, दीधी गौतम दिस्क ॥  
 ततखिण कीधा केवली रे, जो मुज मांनी सीख ॥ सो० ७ ॥  
 पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी  
 गोमया रे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंमरुडने चालतारे,  
 दीधो दंम प्रहार ॥ नवदीक्षित अयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी  
 वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पमिलाच्यो नलास ॥  
 मृगलो ज्ञावना ज्ञावतो रे, पोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥  
 निज अपराध खमावती रे, मूक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीनें

में दियुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपर  
 रे, देखी पूत्रनी रुद्धि ॥ मुझनें मनमांहे धर्यो रे, ततखिण पामी  
 सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाढ्यो मारगे रे, चांण्यो चपल  
 तुरंग ॥ दर्डुर नामे देवता रे, तेह अयो मुझ संग ॥ सो० ॥ १३ ॥  
 प्रभु पाय पूजन नीसरी रे, दुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचमां  
 करी रे, पोहती स्वर्ग मजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोना  
 कारमी रे, रूप किसुं अजिमान ॥ नरत आरीसानुवनमां रे ॥  
 पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढजूति कलानिलो रे, प्र  
 गढ्यो नरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप  
 ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काजसग रह्यो रे, गजसुकमाल म-  
 साण ॥ सोमल शीस प्रजाखीयो रे, सिद्धि गयो शुज जाण ॥ सो०  
 ॥ १७ ॥ गुणसागर अयो कैवली रे, सांजल पृथ्वीचंद ॥ पोते  
 केवल पामियो रे, सेव करै सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक  
 में ऊधर्या रे, मूक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी रे,  
 मुझने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर  
 कहै तुमें सांजलो, दान शील तप जाव ॥ निंदा है अति पापणी,  
 धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां अकां, पापे पिंन नरा-  
 य ॥ वेद राम वाधै घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक स-  
 रिखो पापीयो, जूंनो कोइय न दिठ ॥ बलि चंराल समो कह्यो,  
 निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद  
 नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासै निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को  
 केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रह्यो,  
 सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अथको जाव है, एकाकी  
 समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें जला, पण जाव विना अकथ  
 ॥ ६ ॥ अंजन आंखै आंजता, अधिको आणी रेख ॥ रजमांहे



तज काढतां, अधिको ज्ञाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण  
 जणी, चारे समान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चउ विध  
 धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ए मी ॥ वीर जिणेसर  
 इम जणे रे, वैठी परखदा बार, धर्म करो तुमें प्राणिया रे, जिम  
 पामो ज्ञव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे,  
 ज्ञवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी  
 धन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म  
 समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति परतां प्राणिया रे, राखै  
 श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहुको कारमो रे, मति जूलो ज्ञवि जर्म रे ॥  
 ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे बै जेह ॥  
 ते जिनवरना धर्मथी रे, मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥  
 सोलेसे बासठ समे रे, सांगानेर अजार, प्रद्यप्रजु सुपसानले रे,  
 एह ज्ञायो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे,  
 खरतर गंज कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मु-  
 नींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत ज-  
 संवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ ध० ॥  
 ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ स-  
 मयसुंदर वाचक ज्ञणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥  
 दान शीयल तप ज्ञावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ ज्ञणतां गुणतां  
 ज्ञावसुं रे, रुद्धि समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति दान शील  
 तप ज्ञाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरनें चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधनें मन्नथी दूर  
 वारो ॥ संतोषवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर आंज उहाही ॥  
 ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतत्त्वनी वात तेणे न



जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो गो, जैनमार्ग वंमो जुलां  
 कां जमो गो ॥ २ ॥ अलोत्ती अमानी निरागी तजो गो, सलोत्ती  
 समानी सरागी जजो गो ॥ हरि हरादि अन्यशी सुंरमो गो, नदीगंग  
 मुकी गलीमां पमो गो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ  
 देव घाले गले रुंममाला ॥ केइ देव नत्संगे राखेवे वामा, केइ  
 देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जेपे लेइ जपमाला, केइ  
 मांस जकी माहा विकराला, केइ योगणी जोगिणी जोग मांगे,  
 केइ रुद्रणी ठागनो जोग मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश रा  
 खै, सदा मुक्तिने सुखने केस चाखे ॥ ६ ॥ जदा लोत्तना थोकनो पार  
 नाव्यो, तदा मंथनो विंडुल मन ज्ञाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी  
 आस राखे, तेह पिंरने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी चीन  
 ते केस ज्ञाजे, फूटो ढोल होवे कहो केस वाजै ॥ ७ ॥ अरे सूद  
 भ्राता जजो मोहदाता, अलोत्ती प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ ८-  
 तनचिंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंरसुं मत  
 राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेवै, सवि धर्म एकत्व जूलो  
 जमेवै ॥ किहां सर्पवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शू-  
 रवीरं ॥ ९ ॥ किहां स्वर्णशालं किहां कुंजखंमं ॥ किहां कोइवान  
 किहां क्षीरमंमं ॥ किहां क्षीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु  
 किहां वांगखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां क्रूरवाणी, किहां  
 रंकनारी किहां रायरणी ॥ किहां नारकीने किहां देवजोगी, किहां  
 इंदेही किहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म  
 धारी, नमो वीरस्वामी जजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्न-  
 थि राज्य पामी, राचे मंदबुद्धी वरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अत्रि  
 सुक संसारमां मन्न माचे, जना सूदमां श्रेष्ठसुं इष्ट वाजै ॥ तजो  
 मोह माया हरो दंज रोसो, सजो पुण्य पोसी जजो ते अरोसो

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु  
पाय स्वामी ॥ तूही २ तुंही प्रभु परमरागी, जवफेरनी शंखला मोह  
जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी है एक अर्ज मोरी, दीजै दासकुं  
सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य नदय हुओ गुरु आज मेरो, विवेकें  
लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ बंढित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥  
निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अमरसठ अक्षर  
अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वीतराग सैमुख वदे, पंच  
परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरथां संपत्ति  
आय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुढाय ॥ ३ ॥ सकल  
मंत्र सिख मुकटमणि, सदगुरु ज्ञाषित सार, सोनविषां मन शुद्धसै,  
नित जपिये नवकार ॥ ४ ॥ ( छंद हाटकी ) नवकार अकी  
श्रीपाल नरेशर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कु  
मरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपंता नरक निवारै, पामे ज  
वनो पार ॥ सो ज्ञविषां ज्ञते चोखे चित्ते नित जपिये नवकार ॥ ५  
॥ बांधी वरसाखा ठीके बैसी हेठल कुंरहुताश, तस्करने बलि सं  
त्र समर्थो श्रावक नज्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विष  
धर विष टालेढाले अमृतधार ॥ सो० ६ ॥ बीजोरा कारण राख महा  
बल अंतर दुष्ट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यह प्र  
तिबोध ॥ नवलाख जपंता आयै जिनवर एहवों है अधिकार ॥  
सो० ७ ॥ पृथ्वीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध,  
परजव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परधल रिद्ध ॥ ए मंत्रधकी  
अमरापुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी कासी  
तप साधंतो पंचाग्नि परजाळे, दीठो श्रीपासकुमारे पन्नग अधवलंतो

तै टाले ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इन्द्रनुवन अवतार ॥  
 सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण  
 ध्याने कुष्ट टट्युं नंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नव-  
 निधि आयै धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णज्जंगम  
 घाढ्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रज्ञावे हारफूलनो, वसुधा-  
 मांहि विक्तात ॥ कमलावतिथे पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥  
 सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पामी बाण प्रहार,  
 पद पंच सुणंता पांसुपतघर ते अइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख  
 महिमा मंदिर जवडुख जंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल  
 कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके  
 विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही विलसे  
 जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार  
 अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम ज्ञाखै जगवंत ॥  
 पूरवदिसि चारै आदि प्रपंचे समस्यां संपति सार ॥ सो० १४ ॥  
 परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंमरगिरि ऊपर  
 प्रत्यक्ष पेख्यो मणिघर नैं इक मोर ॥ सहगुरु सन्मुख विधिथे  
 समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर  
 कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अ-  
 मरनी रुद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवार्यो सुरें करी मनुहार  
 ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच  
 सिद्धाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो  
 पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ ( कलश ॥ वप्पय ) नित्य  
 जपियै नवकार सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो  
 एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिहंत सुसिद्ध सुद्ध आचार्य ज्ञानीजै,  
 श्रीनवज्ञाय सुसाधु पंच परमेष्टि शुणीजै ॥ नवकार सार संसार

है कुशल लान्न वाचक कहै, एक चित्तै आराधता रुद्धिसिद्धि बंछित  
लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणो लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥  
जाकी ठवि कांति अनोपम नपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-  
ज्योति जिगामिग जिगमग२, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप  
वखाणाहि नूपत, तूही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर  
लोक सबे मिल, जाका जस्त शुणंदा है ॥ तेरी खिजमत्त करे  
इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तें जलता आगनिकाड्या नाग,  
किया वरुजाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला  
अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पंचाग्नि,  
ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी दुद्धाधारी, अल्प अहार  
लियंदा हे ॥ सब ज्ञेय सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा  
हे ॥ दिसि ज्यारां दिढी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥  
महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण  
वत्तां धरिय नकत्तां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामोदे अस्कै कुण तो  
परके, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो  
गारंज जगंदा हे ॥ ४ ॥ जननी मन आसा पूरण पासा, औरापत्ति  
सजंदा हे ॥ गल घूग्घरमाला जाण हेमाला, दंताला नपंदा हे ॥  
वर वीर घंटाळा मद मतवाला, जोलाली ऊलकंदा हे ॥ ५ ॥  
पंचरंगी परकर सजी सरकर, ढालांसु ढलकंदा हे ॥ धतकारे धत्ता मत्ता  
अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खमे रहाए, प्रनु  
झानी आस्कंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अग्निमानी तप अज्ञानी, पावक  
जीव जलंदा हे ॥ तिहां फारु डुफारु दिखाले लकरु, वरु फराधर  
नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जस घटंदा हे ॥

तिणं किया नियाणा तप खजाणा, कोमी सट्टे वेचिंदा हे ॥ ७ ॥  
 हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमठासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन  
 सुतन महाराज विषय डुख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुढी  
 लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रभु अप्रतिबंध वि-  
 हार कियो तब, रनवन वास वसंदा हे ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे  
 कानसग मऊरे, कमठासुर दाव लहंदा हे ॥ वना असुराणा वली  
 हेराणा, पिठाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार  
 विरोध, महा अजिमान धरंदा हे ॥ बाउल मतवाली नीली काली,  
 वायु महा वाजिंदा हे ॥ ९ ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट,  
 दिवाकर तेज ठिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा नमटी, अरु बाजू  
 गाजंदा हे ॥ गरमाटा बाटा सुणिया आटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥  
 हुआ अकाला धुर वरसाला, बीजलिया पीवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी  
 थारांसुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चह्ले जल खाला नदियां  
 नाला, हेमाला हालंदा हे ॥ दरियाव नलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि  
 मावंदा हे ॥ दिगपाल दहल्लां धरिय उत्पल्लां, खोणीपत्ति खिसंदा  
 हे ॥ ११ ॥ वमे पाहामां ऊंगी ऊामां, सऊामां ढाहंदा हे ॥ सम  
 दाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ बहु वासर वूठा जाण  
 किरुठा, जूठा मन असुरेंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, कान  
 सग कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ नवसग्गाहंदी केल करंदी, पाठा  
 नांहि मुमंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान  
 धरंदा हे ॥ प्रभु नासा तांड नदी आई, तोही नांहि खुजंदा हे ॥  
 देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीम सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिण  
 अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण बेग चलंदा हे ॥ तिण अवधि  
 प्रयुंजी दीठे प्रभुजी, तन मन अति नलसंदा हे ॥ तिहां पदमा-  
 वती देव सकती, सुं मिल बेग वहंदा हे ॥ हुयके हेराना वैठ वि-

माना, पांवां आय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फलनाग-हजारां कर विस  
 तारा, उत्तर ज्युं ठावंदा हे ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरब  
 प्रीत सुखंदा हे ॥ इंझाणीनारी सब सिणगारी, जोबन अंग जिल  
 कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सुंदर रूप सो  
 हंदा हे ॥ अणियाला कज्जल जलके विज्जल, खूब वणाव वणंदा  
 हे ॥ नकवेसर नट्यां लाल सुकट्यां, विच मोती जलकंदा हे ॥ नटण  
 पाटंबर जीणी अंबर, आनूषण जलकंदा हे ॥ १६ ॥ उर कंचु क  
 सिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा  
 हरिया दूवा, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कमियां सोने जमि  
 यां, हीरा बीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके घूबरियां पाए धरियां,  
 पग नेवर रणकंदा हे ॥ ले जांजर ताला ताल कंसाला, पस्कावज  
 वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला बीच रसाला, जंगी होल घुरंदा हे ॥  
 बाजे सरणार्ई सखरी घार्ई, नगारा रोहंदा हे ॥ १८ ॥ पजमा वै  
 रुट्टा आण जलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्ताथेइ२ तान त  
 रंसा, रस जेद रमंदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न वीता, पा  
 वस जल पसरंदा हे ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिठाण्या,  
 कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्ती आंख्या रत्ती, किती रीस  
 आवंदा हे ॥ रे मुठा धिठा चित्त विणठा, क्यूं नांही समजंदा हे ॥  
 साहिब बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा हे ॥ २० ॥ ए  
 कमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा हे ॥ असमांन खमाई  
 रीस झरार्ई, हिक्काइ बजरंदा हे ॥ किती बहु गह्वां पमै दहह्वां,  
 धमहम देह धूजंदा हे ॥ धरणेंद्र मराया तब ते आया, पावां आय  
 लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोमि खमाया सीस नमाया, जगनाथक  
 जिनचंदा हे ॥ तूं साहिब सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा  
 हे ॥ तें रीस न धरियां क्णिणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा हे ॥



कमठासुर किन्ती बहु विनती, निज अपराध स्वमंदा हे ॥ ११ ॥  
 सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा हे ॥ सुध सं  
 जम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा हे ॥ सम्मेतशिखर पर  
 चढकै ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा हे ॥ तेरी कीरती जग ऊपती, पार  
 न को पावंदा हे ॥ १३ ॥ तूं सच्चा रखे जेद परस्के, गुमानी मो  
 रंदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा हे ॥ तूं  
 दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अछ्वा पीर फकीर  
 मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुख्वां मरद अ  
 टछ्वां, तूंही शेष फरींदा हे ॥ तेंही ऊपाया धंदे लाया, मायामें मु  
 लकंदा हे ॥ तूं बूढा बाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा हे ॥ तूं  
 कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहंदा हे ॥ २५ ॥ बाबागो-  
 साई जेद न पाई, ज्नीम पछ्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरा-  
 यण, माधव तूंही मुकंदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा  
 देवंदा हे ॥ तूं एकां अण्णे एक नथण्णे, अति निज सुध आपंदा हे  
 ॥ २६ ॥ तो देवल मज्जां लोकति संज्ञा, सीरणिया वाटंदा  
 हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत ज्ञासे, जीणे सुर गावंदा हे  
 ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेमा धुखंदा हे ॥ कुंकुम कसतूरी  
 केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला  
 हंदा, टोमर कंठ ठवंदा हे ॥ चंपा गुलाबां जरीया ठाबां, परमल  
 तिहां वासंदा हे ॥ कसावोई चंगी रचियै अंगी, फूलां बीच फावं  
 दा हे ॥ आनूषण धरियां तन ऊपरियां, कुंमल कान जिगंदा हे ॥  
 २८ ॥ सूरत सोहंदी मूरत हंदी, दीठां नैण ठरंदा हे ॥ तेरी बलि  
 जानं मोजां पात्रं, वीनती तूंहि सुणंदा हे ॥ २९ ॥ क्या कल्युं ग  
 ल्वां हुकम अदल्लां, समकित मनउलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिहा  
 रहासा, तुज सेवक बिलसंदा हे ॥ घग्घर नीसांणी पास बखाणी



गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीवग्घर नीलाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे रुद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगै पुण्यदशा सफली

॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलबली, मनवंछित आपै दादो रंग  
रली ॥ १ ॥ मंगल लील समें विपुला, नवनवा महोन्नव राजेला ॥ सुप-

सायें गुरु चढती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही

दिन आयै सबला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ

पायक बहुला, किल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वीजै चमर नि

साण धुरै, नर बै दरबार खमा पुहरै ॥ जय२ करजोमी उचरै, सा

निद्ध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा जोजन पान सदा, डख

रोग डुकाल न होय कदा ॥ अविचल जलट अंग मुदा, गुरु कूरम

दृष्टि प्रशन्न सदा ॥ ५ ॥ धमधम मादल नाद धुमें, बत्तीसे नाटक

रङ्गरमै ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें

॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरें वेलानल होयरनें ॥ ध्या

वि कुशल गुरु एक मनैं, जूझक सुर मंदिर जरै धनें ॥ ७ ॥ तत

खग धल खंव्यो आवै, करि स्यामवटा मेह वरसावै ॥ तिसीयां

तोय तुरत पावै, जलदाता त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां

जल कल्लोल करै, प्रवहण जवसायर मझ मरै ॥ वूंरता वाहण जे

समरै, ते आपद निश्वेसुं नवरै ॥ ९ ॥ खरुखरु खरुग प्रहार वहै,

सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल२ गुरु नाम कहै, ते खे-

मकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुंन सकल परचा पूरै, श्रीनाग

पुरै संकट चूरै ॥ संगलोर अधिके नूरै, देरावर जय टालै दूरै ॥ ११ ॥

वीरमपुर वानै सुधरै, खंजायतपुर विक्रमनयरै ॥ जिणचंद सूर पा

टै पवरै, जसु कीरति महीमंजल पसरै ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम द

क्षण आगै, उत्तर गुरु दीपै शोभागै ॥ दहदिशि जन सेवा मागै,

श्रीखरतरंगह्वनी महिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद ठामै, गा  
ईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पद  
वी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजनने सुखिया  
साखै ॥ समस्यां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक जाखै  
॥ १५ ॥ इति पद ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सद्गुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाठ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश  
फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥  
॥ जय२ जिनदत्त सूरिंदयती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ ज-  
सु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥  
शुभ मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥  
आराध्यां आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥  
जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश वावन खेतलवीर कियां ॥  
जसु नामे न पमे वीजलियां, भूत प्रेत न कर सके छलवलियां  
॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण  
पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु  
सिद्ध बाधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागा  
नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक  
कीध सहू ॥ ६ ॥ वरुनगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लइ जिण  
चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेष सहू गुरु पाय  
परी ॥ ७ ॥ वज्रमय शंखो दोय खंरु कियो, पोथी परगट परजा  
व थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सजियो, वर नयर उज्जोणी सुजश  
लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंवरु वंसे जीवदया, मंत्री वाढग परसिद्ध  
थया ॥ बाह्मदे कूखै जनम जणूं, ते चवदे विद्या जाण धणूं  
॥ ९ ॥ इग्यार वत्तीसै जनम जणूं, इग्यार इगतालै दिरु शुणूं ॥

युगवर इग्यारै गुणहत्तरै, स्वर्गे बारैसै इग्यारै ॥ १० ॥ जिनवल्लभ  
सूरी पटोघरणं, परजाव उदेसर जयहरणं ॥ नवनिधि लवमी  
संपति करणं, बलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ शुंन  
सकल श्रीअजमेरे, गढमंसो वर वीकानेरै ॥ सुखदायक श्रीजेशल  
मेरे, दीपे गुरु गाजीखान मेरे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा  
सागै, जावठ दालिद्र दूरे जागै ॥ मेरे असमालखानके सोजागे,  
गुरु पुरमें कीरति जागै ॥ १३ ॥ धन२ जे सहुरु ध्यान धरे,  
तेरनवन पूजा जेह करै ॥ गढ खरतरनी महिमा पसरै, कवि  
सूरि उदय जिनकीरति करै ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सहुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसह जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव  
वंदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ ( चोपाई ) चंद  
कुलावर पूनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल मुणिंद ॥ नाम मंत्र जसु  
महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंरुल सवि-  
याणो गाम, धण कण कंचन अति अजिराम ॥ जिहां वसै जि-  
ह्वागर मंत्र, जैतसिरो जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे  
तीसे जम्म, सेतालै सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहत्तरै जसु पाट,  
निव्यासियै तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ नूमंरुल सरगै पायाल, अचि-  
राचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रनु प्रताप नवि मानै सोय, में नवि  
नयणै दीगो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन सुवन्न, पुन्नहीण  
पामें बहु पुन्न ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करतां गुरु  
ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संप-  
ति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते ठंमि नवि मंमै व्याप ॥  
॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उत्कंठा जिहां ॥  
सेवंता सुरतरुनी ठांह, निश्रै दालिद्र मेटे बांहि ॥ ८ ॥ त्रिसहर

विसनरै विस नरनाह, जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रजु नामें ते न  
 कैर पीम, जाजै जावठ जवजय जीम ॥ ए ॥ रोग सोग सवि  
 नासै दूर, अंधकार जिम जगै सूर ॥ मूरख फीटी पंक्ति आय,  
 प्रजु पसाय डुख डुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिव २ जिमसासन उ-  
 द्योत, जिहांअठै जवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में जेव्यो आज,  
 रतियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअं-  
 गण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, उदयो पर-  
 मानंद धरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धने गिलियो, जुगपवरागम जो  
 में शुणियो, चंद्रगढ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी  
 पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥ १४ ॥  
 वार ९ एक चित्त जणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सरै काज  
 आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी दरसै, मुलक वाहण  
 पुरमें मन हरसै, अजिय जिणसर पर जुवणें ॥ १६ ॥ कीयो क  
 चित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत  
 संसो धरो मनै ॥ १७ ॥ जिम ९ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल  
 मुनीसर पाया, जयसागर उवझाय शुणे ॥ १८ ॥ इस जो सदगुरु  
 गुण अजिनंदै, रुद्धि समृद्धै सो चिरनंदै, मनवंछित फल मुज दूवो  
 ए ॥ १९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ  
 आश धरे, गुरु मोन ग्रह्यां कहो केस सरे ॥ दर्शन वहिलो सद  
 गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी  
 विरियां आयवणी, केहवी करिये तुज अरज घली ॥ हिव अलगा  
 वो तो वेगा आवो, हिव ढील घनीजर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद  
 गुरु खरतर गढ साचो, कोइय न जाणे तुजने काचो ॥ इण संक  
 टमें आलश म करो, दादा इसमनने दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक  
 पमी सदगुरु दमसुं, तो ज्यूं कहसो तिण पर खमसुं ॥ हिवणा हठ

थे मृत ताणो, निश्चे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सब  
 श्रीसंघ अठा लगै, पाठा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर करिये  
 गुरु अरज इसी, हिव सगला मेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुश  
 ल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले  
 बजवालो, परघल निज ठोरु प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गमाये  
 ए गायो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजो हुय सगला संगरली,  
 जिनचंदनी आस्या सकल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 सदगुरुजी थे सांजलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध  
 करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संप  
 ति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, आंहरा विरुद अने  
 क हो ॥ आं समरचां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो  
 ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥  
 सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥  
 पन्निकमणामांहे बीजली, बली२ ऊबकाय हो ॥ थे मंत्री  
 राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्चव क  
 रतां उच्चमैं, मूंज सुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनैं जीवाप्तियो, संघ  
 मांहे राख्यो दादैं सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वरुनगररे ब्राह्मणें, देहरे  
 धरी मृतगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादे पा  
 य हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकोया तें सहू दुःख  
 हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनैं दियो दादे सुख हो ॥ दो०  
 ७ ॥ अंबरु हाथे अकरै, थे प्रगव्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग  
 तूं जयो, आखै अंबिकादेव हो ॥ दो० ॥ ८ ॥ आंजो वज्र विदारनैं,  
 पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअकरे, उज्जेशीमांहि लीध  
 हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा ठै ताहरा, कहतां नवै पार  
 हो ॥ ज्ञागसंजोगे दादो जेदियो, अरुवक्तियां आधार हो ॥ दो० ॥

॥ १० ॥ हुं वूं सेवक ताहरो, थे आपो धन रुद्ध हो ॥ कनककीरत  
 सुषसाजलै, लान्नजदय सुख सिद्ध हो ॥ दा० ११ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशण सदा देवो ॥  
 दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरथां आपे सुखशाता, दादो  
 जगबंधव जगगुरु आता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगले पूरै,  
 दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो डुरितदूरै सद्गुनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥  
 दादो अलगांथी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हारा  
 दादाजीनी जोर कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे  
 राजै, जिहां मुजशनगारा नित वाजै, दादो गोगाळां सेहर ठाजै,  
 दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकर धोली, हाथे लेइ सोवन क  
 घोली, पूजो दादाजीनै मिलै टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरति-  
 थां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन  
 मासन नित उजवाळै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत  
 मादाराजा, दादो राजै खरतर गठ राजा, दादो समरथां सफल  
 करै काजा ॥ दा० ॥ ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी,  
 दादो परतिख सुरतर अवतारी, जाजं दादाजीनी हूं वलिहारी ॥  
 दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन ग  
 दगाटै, जसु थान सोहे जग थिरथाटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर  
 निजर मुऊ पर करियै, दादा आरति प्रीमा डुख हरियै, दादा जिम  
 जग जयकमला वरियै ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध कर  
 ज्यो, दादा डुस्मणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनवंठित फलज्यो ॥  
 दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गमालै,  
 सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै,  
 सेवकनी चिंता चूरे हो ॥ गा० ॥ २ ॥ वतरीनितरी ठवि ठाजै,  
 विधमै थिर थुंन विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ जूलरे यात्री मिल



आवै, दादोजी दीठां सुख पावै हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर धंस  
 नरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ८ ॥ पूजो  
 पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ९ ॥  
 दादोजी डुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा०  
 ॥ १० ॥ हय हाथी रथपति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥  
 ॥ गा० ॥ ११ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी  
 हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ अलगांथी रोग गमावै, गुरु पूज्यां वंछित पावै  
 हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी, तिण  
 वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ ग्रह गोचर चोर  
 जंजालै, पीठा हुवै आलेमालै हो ॥ गा० ॥ १५ ॥ बाजै  
 जग जशना बाजा, राजै खरतर गछ राजा हो ॥ गा० ॥ १६ ॥  
 जसु जैतसिरी वर माता, जिडहा गरमंत्र विख्याता हो ॥  
 गा० ॥ १७ ॥ संवत सतरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥  
 गा० ॥ १८ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासे  
 हो ॥ गा० ॥ १९ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनजक्ति जतीसर  
 वंदे हो ॥ गा० ॥ २० ॥ इति पदं ॥ पुनः सहाइ मेरे श्रीजि-  
 नकुशल गुरु ॥ कुशल करण कलिमाहे प्रगटयो, खरतर गछ वरू  
 ॥ स० ॥ वावनोचंदन मृगमद मेली, पूजो प्रेम जरू ॥ स० १ ॥  
 चिंता चूरण विघ्न विमारण, दालिङ्ग दूरहरू ॥ स० २ ॥ दिन२  
 साहिब चढते वाने, ध्यावो ध्यानधरू ॥ स० ॥ वाजै जेहना  
 जशना बाजा, ठावी ठामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अठारसमें  
 अमसठै, मिगसरमाश थिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु जेदे,  
 श्रीजिनहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गमालै चरण नमंता, तूठो  
 कटपतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिते, उदयरत्न करू ॥  
 स० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जी, समरंता दादोजी



आथो ॥ संकट देखे सेवककूं सद्गुरु, देरानुरते ध्यायोजी ॥ स०  
 ॥ १ ॥ दादा वरसे मेहनै रात अंधेरी, वाय पिस सबलो वायो ॥  
 पंचनदी हम वैठे बेसी, दरगै चित्त करावो जी ॥ स० ॥ २ ॥  
 दादा उच्चजणी पोहचावण आयो, खरंतर संघ सवायो ॥  
 समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स०  
 ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ ज्ञाया जक्तिसूं पूर रहो रे,  
 डुरिजन सब डुर हरो रे ॥ ज्ञा० ॥ मेरे मनमें जक्ति वैरागी, चित्त  
 परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी ज्ञान्यदशा अब जागी, जीया हो  
 ज्ञा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो, गुरुचरणे चोक पूरावो ॥  
 बलि अकृत आल वधावो, जीहा हो ज्ञा० ॥ २ ॥ गुरु महिमावतं  
 सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया  
 हो ज्ञा० ॥ ३ ॥ घस केसर जरके कचोली, मांहे मृगमद कुंकुम  
 धोली ॥ गुरु पूज रचो जर जोली, जीया हो ज्ञा० ॥ ४ ॥ श्री  
 जिनहर्ष सूरिसरराजा, वाजै जग जशना वाजा ॥ सत्यरत्न करै  
 सुन्न काजा, जीया हो ज्ञा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
 ॥ राग कैरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो जवि हितसुं, कु० ॥  
 कशर चंदन कपूर अरगजा, ज्ञाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु०  
 १ ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती, मन सुध माल करै जवि रुच-  
 सुं ॥ कु० २ ॥ अशरण सरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो  
 आतम रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आसा  
 पूरै गुरु धणुं दत्तसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुधारै ज्ञान वधारै, रूप रंग  
 देवै चित हित मतिसुं ॥ कु० ५ ॥ कुशल सूरिंद गुरु सानिधका-  
 री, परतिख परचा पूरै सतसुं ॥ कु० ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा  
 सुविदाशी, सत्यरत्न सुख एही ठतसुं ॥ कु० ७ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ राग देवश्रीचलत ॥ आज करो रे उवाह, श्रीजिनकुशल

सूरिंद आगै ॥ आ० ॥ आ आन्ही वेला नै न आगे दाव, इण  
 आन्ही वेला क्युं करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो  
 मनरंग, हिलमिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै  
 वय सार, फुलवारीनो नहीं जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अकत  
 श्रीफल ठोवै जेह, पुत्र कलत्र पामे संपदा तेह ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 सुर नर नारी कृत्ता करजोर, कोण करै म्हारा दादाजीनी होर  
 आ० ॥ ४ श्रीखरतर गन्धपति सिरदार, राजा राणा सेवै इकतार  
 ॥ आ० ॥ ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज, कुशलसूरिंद गुरु  
 गरीबनिवाज ॥ आ० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ष करै नठरंग, सत्यरत्न मन  
 ग्यान नमंग ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग बंगालोघाटो ॥ में  
 निरख्या गुरु साहाराज, बतियां हर्षनरी ॥ में० ॥ अमल अनंत  
 गुण आगरु रे, समतारसनो धाम ॥ परम परम परमात्मा रे, वं  
 ठित दायक स्वाम ॥ ठ० १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे, सेवक जन  
 प्रतिपाल ॥ नविजन नके जावसुं रे, द्यावै नर अल ॥ ठ० २ ॥  
 केशरचंदन कुमकुमारे, नरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवै मलपती  
 रे, पूजै सहियर साथ ॥ ठ० ३ ॥ कुशल सूरिसर साहिबारे, श्रीजिन  
 चंद सूरि पाट ॥ बलिहारी जिनकुशलनी रे, गाजै घणुं गहगाट ॥  
 ठ० ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख संपूरण सार ॥ श्रीजिन  
 हर्ष सूरिसरु रे, सत्यरत्न सुखकार ॥ ठ० ५ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ राग प्रजाती ॥ चरणकी चरणकी चरणकी, वारी जातं गुरुरा  
 य चरणकी ॥ वा० ॥ श्रीजिनदत्त सूरिसर सदगुरु, सफल घनी  
 सेवा चरणकी ॥ वा० १ ॥ प्रथम संगल गुरुरायकी सेवा, अशुभ  
 कर्म सब हरणकी ॥ वा० २ ॥ दालिझंजन अरि सब गंजण ॥ प-  
 गर सानिध करणकी ॥ वा० ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी, सर  
 ण अही इन चरणकी ॥ वा० ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको दा

शां, आशां पूरो सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 अब मोहि दरसण दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी ज्ञात कः  
 रो मेरे सदगुरु, ज्युं मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥  
 जलदांतार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलनर पीजै ॥ सुरतरु  
 शम दरसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीजै ॥ कु०  
 ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥  
 परमजगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो नरपूर, सेवकजन मन  
 वंछित पूरण, समस्यां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रे  
 मरस पूरण, अशुभ हरण जये दूर ॥ संघ नदोकर सदगुरु मेरा,  
 वीनवै श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल  
 लूवरकी ॥ सदगुरु पूजण जावस्यां, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण  
 गावस्यां हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल जेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी  
 पूज रचावस्यां हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारुदेशमें सोजता, नगरवी  
 काणे राजे हे माय ॥ गाम गमालै दीपता, ज्यारी महियल सहि  
 मा ठाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समस्यां संकट चूरता, कुशल करण  
 अवतारी हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंघनें, खरतर गद्य अधिकारी  
 हे माय ॥ सा० ३ ॥ दूर देशांतरणी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे  
 माय ॥ लुलश शीस नमावता, संत सुजना मिल गावे हे माय ॥  
 स० ४ ॥ सज सिणगार मनोहरू, ठसर पाय ठमकावे हे माय ॥  
 तन मन प्राण लोनावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥  
 विठड्या साजन मेलवे, अनमी पाय नम्रावे हे माय ॥ मनरा मनो  
 रथ पूरवै, परघल लखमी लवावे हे माय ॥ स० ६ ॥ विषमी वे  
 ला वाटमें, समस्यां मानिध आवे हे माय ॥ नूखां नोजन मेलवै,  
 तिसियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवै नित नवां,

आन आंगल थिर आट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामग्री, गवै  
 गुण गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आंगलै,  
 नवि मिल जावना जावे हे माय ॥ चंद फते मुनि नित नमै, पर  
 मानंद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥  
 श्रीसदगुरुजीसैं वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अ  
 रज सुणीज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुंद सुण आयो, तन मन सु-  
 धकर ध्यान लगायो ॥ महिर निजर अब कीजीये जी, चरणक  
 मल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट डुख मेढो,  
 सोमवार पूनम दिन जेढो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, वधती  
 संपद सारी ॥ दादा० ॥ २ ॥ नर नारी अपठर मिल आवै, अतर  
 गुलाब केवलो लयावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर  
 क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरे, चिंता दोखी ड  
 स्मन चूरे ॥ धनर सदगुरु जगजयो रे, सहस किरण अवतारी ॥  
 दा० ॥ ४ ॥ नगणीसे अठावन वरसैं, कातीपूनम दिन जलसैं ॥  
 गहपति कार्ति सूरिसरू रे, वंदै वार हजारि ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस  
 परस दरशण अब दीजै, अपणो दास मुजै समजीजै ॥ जगमें सु  
 रतरु सारखो रे, कीरति ठारही आरी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटपणें व  
 रदाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल  
 सूरिंद धणी रे, कहैं रामरुदिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ पुनः ॥ ॥ चाल नरतरि की ॥ सदगुरु दीनदयाल, गहपति  
 दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, डुखतमहारण दिनम  
 णी ॥ १ ॥ गढ सवियाणें जी देश, ठाजेम कुल नदयाचले ॥  
 जिह्वासाह पितेश, जैतसिरी अंबर जलै ॥ २ ॥ गहपति चंदमु  
 णदि, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्र  
 काशन मनरली ॥ ३ ॥ पुर पतन सब देश, जगमिग ज्योती जी

जिंगमिगै, पूनमनें सौमवार ॥ नर नारी गुरु भुलगे ॥ ४ ॥ अरचै  
 अतर फूलेल, परिमल फूली जी मालती ॥ महके चंपक वेल, सुं  
 दर आवत मलपति ॥ ५ ॥ शुभ थिर थुंन वीकाण, बालूचर म  
 हिमा घणी ॥ कीरतबाग प्रधान, डुखनंजन चिंतामणी ॥ ६ ॥  
 पूरो वंछित आश, गांथा तुम सुनिऊरतणी ॥ दाता सुख कैलाश,  
 चरण झरण किंकर जणी ॥ ७ ॥ पूजै पद गोविंद, चंडशिखर  
 जय राशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥  
 ॥ ८ ॥ नगणीसें अरुताल, मिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण  
 अतहि विशाल, कुशलनिधान हरख धरी ॥ ९ ॥ गुरुगुण शरिता  
 नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, रुदिसार जस  
 वासमें ॥ १० ॥ इति प्रदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी  
 गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी बेनिया पार उतारो, तूं वण  
 अब मांजी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता ज्ञाडव नीर जलधि ज्युं, यो  
 संसार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥  
 सु० ॥ १ ॥ राग रंग इक जीरण नौका, तिररही जर मऊ धारो ॥  
 में बेठो परमारथ खातर, मोह मगरनें उगारो ॥ सु० ॥ २ ॥  
 जक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण बाल ग  
 लपति करुणानिध, याविपतितसें वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उडकापात  
 गगन ज्युं विषयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह अथादिक  
 निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु  
 रटै कोइ ईसा, अह्मा उमया प्यारो ॥ में ध्याउं जिनदेव  
 कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सुण अरजी  
 आये गठ तमहर, तुरतही विघन विहारो ॥ रामबाग पुर गंज  
 अर्जामें, कुशलनिधान जुहारो ॥ सु० ६ ॥ केइयक गुरुसे लखमी  
 पावत, हुकम धरै वसुधारो ॥ में इक सेवा चरणकमलकी, मां

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत नगलीसे अरुतालोश, मेरुत्रयो  
 दशी सारो ॥ नयणा सफल किये गुरु दर्शण, हे क्रद्धसार ति  
 हारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस  
 कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या में दर्श तिहारा, दे० ॥ श्रीसद  
 गुरु महाराज ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु  
 आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख  
 साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, मुज मन निरमल काज ॥ दे०  
 २ ॥ गुण रुद्धि संपत काजै, कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ सब  
 सिद्धि लीला प्रगटी, दुख दोहग गये जाज ॥ दे० ३ ॥ गुरु  
 तुल्य परनुपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुज  
 थांन पुर २ सोहे, मुलक वीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ वर गठ खरतर  
 राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रामरुद्ध  
 सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥  
 ताल तुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु, द्यो दोलत गुरु  
 रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटै, दिन २ वधे  
 सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुंदर नारी, सुज  
 परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधा  
 रण, नितप्रति हरख नवाह जी ॥ स० २ ॥ राजा परजा पायनमें सहू,  
 गुरु समरण सुपसायजी ॥ स० ॥ दोखी दुसमन नृप जय पक्रियां,  
 सदगुरु करय सहायजी ॥ स० ३ ॥ विखमी विरियां संकट पक्रियां,  
 समरया आवै धायजी ॥ स० ॥ झूखां जोजन तिसियां पाणी,  
 निरधनियां धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुखसातां,  
 जिम कीरत जग थाय जी ॥ स० ॥ थानक चिरता परगल जोजन,  
 पग २ कुशल सहाय जी ॥ स० ५ ॥ अजय महा सुखदाई सदगुरु,  
 नवनिधि बंठित थायजी ॥ स० ॥ सुमति सवाई नित घर सपदं,



दान विशाल लहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ जिनकुश  
 लसूरिंद गुरु सदा नमो जी० ॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब  
 होजर, देश देशांतर कांइ जमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु  
 विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिशि  
 नाम मंत्र नर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥  
 इक मन ध्यावो वंछित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो  
 ॥ जि० ४ ॥ अजय महा सुख संपति पामो, सुधिर आनक थित  
 जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ उत्रपती आरे पाय  
 नमें जी, सुरनर सोर सेव ॥ ज्योत आरी जग जागती जी, डुनि  
 यांमे परतिख देव ॥ १ ॥ हुंतो मोहि रह्यो जी, ह्यारा राज दादरे  
 दरवार ॥ केसर अंबर केवमो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंदो चंदन राय  
 चंपेली, जक्ति करूं जरपूर ॥ हुं० १ ॥ पांगूलियांने पांव समावै,  
 आंधलियांने आंख ॥ रूपहीणाने रूप देव दादा, पांखहीणाने पांख  
 ॥ हुं० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिबा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥  
 आठ पहर आंने नलगे जी, रंग बणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम किये  
 बहुतेरे, अपना विरुद विचारी ॥ पल २ चूक परी सदगुरुजी, में  
 सुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहुं न ध्यायो,  
 पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक वंछित पूर्या, आही आंरी  
 मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चेसेती तुमगुण गावै, तुरत कटत डुख  
 वेनी ॥ जक्त उधार कहावत जगमें, ताहे करत हुं अरजी ॥  
 स० ३ ॥ और देवकूं में नही ध्यानं, शरण अही में तेरी, दूरथको  
 में जेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका  
 में हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ कमारतकी वीनती  
 सुणकै, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥



पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ सदगुरुके चरण चित  
 लाय ॥ जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ बा-  
 वन वीर अने वलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या  
 पुस्तक सोवन अकर, आंजो वज्र विमार पाय ॥ सद० १ ॥  
 मुलतानमें पंच पीर महाबल, पंचनदी साधी चित लाय ॥  
 इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समस्या सब डुख जाय ॥ स० २ ॥  
 गुरुके नामसें अरुसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही धाय ॥  
 श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय  
 ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ होरी खेलो जविक सदगुरुके  
 संग, नित आनंद उच्चव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण  
 आया, श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत  
 स्वर जीणा, अली कलीके संग जंग ॥ हो० ॥ १ ॥ रूत वसंत  
 आनंद पिया संग, गोरी गावत वजत चंग ॥ हो० ॥ ऐसें साज  
 समाज जक्तिसें, गुण गुलाल लिये गुरुके अजंग ॥ हो० ॥ २ ॥  
 निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥  
 ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, ठिरको महकत सुरजिगंग  
 ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत चैन दरसनसे बैण, रामरुद्धीसार के चित  
 जमंग ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ नेमस्यामसें कहियो मोरी ॥  
 इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुझानी, जली हिये जक्ति जराणी  
 ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरिसर साहिब, खरतरगबरा जानी ॥  
 देशदेशमें ध्यानक गुरुका, सोजा जग पहिचानी, सदा रवि तेज  
 समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद जेली, चरणांरी पूज  
 रचानी ॥ धूप दीप वलि आगल ढोवी, बहु विध पुष्प चढानी,  
 जला फल जेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक,  
 हाजर होत सहानी ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरिके साहिब, बंठत

काज करानी, सदा गुरु महिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये  
 श्रीसंघ सब हिलमिलके, संग लिये वालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद  
 यालकेसनमुख ठामै, पठत मधुरधुन गुण गोरी ॥ स० ॥ १ ॥ केशर  
 घोली नरी रे कचोली, पूजत हे वारीजोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाल  
 मन्वो सदगुरुके, अवीर उमावत जरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धनश  
 नाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुनें पकमी मोरी ॥ स० ॥ अती मनरं  
 जण दुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि  
 तदाता जगके नाता, अरजी हय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कहत  
 रामरुदिसार सुपाठक, वंदत हे डुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥  
 इति पदं ॥ राग प्रज्ञातो ॥ केसे २ अवतरमें गुरु रस्की लाज  
 हमारी ॥ के० ॥ मोकूं सबल नरोसा तेरा, चंद सूर  
 पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या  
 जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥  
 के० २ ॥ आगे तो केई बेर हमारी, चिंता दूर निवारो ॥  
 अबकी विरिया जूल मत जावो, सदगुरु परनपगारी ॥ के० ३ ॥  
 अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल  
 सूरिंद गुरु तेरा, वना नरोसा नारी ॥ के० ४ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ श्रीजिनकुशलसूरीसर साहिब, तुम हो परनपगारी ॥ श्री० ॥  
 खरतर गव नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पटधारी ॥ श्री०  
 १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण, नीमजंजण अति नारी ॥  
 नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजानं वार हजारो ॥ श्री० २ ॥  
 जगवधल तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जिन  
 चंद मेरे हो सदगुरु, हम हैं सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति  
 पदं ॥ पु : ॥ श्रीगणेश्वर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणक्रमल पर

चारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अकृत कुंकुम, जलजर कंचनजारी ॥  
 देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरूं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एशी  
 ज्ञाति करूं विध पूजा, आणके चित इकतारी ॥ राज कहत मेरे  
 परमगुरुकी, बेर वलिहारी ॥ श्री० २ ॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥  
 कुशलगुरु देखके दरशण, मेरा दिल होत हे परशान ॥  
 जगतमें या शमो कोई, न देख्या नयण जर जोई ॥  
 १ ॥ विरुद नूमंमले गाजै, फरशतां पाप सब जाजै ॥  
 पूजतां संपदा पावै, अचिंती लख घर आवै ॥ २ ॥ इके मुख  
 गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज  
 सुण लीजै, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥  
 राग कहारवो ॥ कुशलगुरु दरशण दीजै हो ॥ कु० ॥ स्वरतर  
 गठपति कुशल सुरिंद गुरु, मुऊ पर महिर धरीजे हो ॥ कु० १ ॥  
 पतित उधारण विरुद तुह्यारो, इतनी अरज सुणीजै हो ॥ कु० २ ॥  
 आधि व्याधी अरु दोखी दुसमन, ए सब दूर हरीजै हो ॥ कु० ३ ॥  
 खेमरतन सेवकूं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजै हो ॥ कु० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ पूजो नजो रे जाई, गुरु महिमा  
 ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर  
 पुष्प चढ़ाई ॥ पू० ॥ २ ॥ नविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके  
 सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु मेरे, नि  
 शदिन हर्ष बधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो  
 अरज करूं करजोमने जी, म्हारो अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥  
 विरुद घणा ठै राजरा जी कांई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥  
 सुनिजर जोयजो साहिबा ॥ १ ॥ थारै रावल राणा राजवी जी,  
 थारा पूनम पूजै पाय ॥ सु० ॥ केशर अगर नैं कुमकुमा जी,  
 कांई मृगमद रही महकाय ॥ स० सु० २ ॥ थारै वुमलां रे आगल

धूमरा जी, कांइ हूलत चमर गजदाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम  
 नी जी, कांइ निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थारी ठावी  
 ठोमे थापना जी, कांइ बुदयापूर आवेर ॥ स० महिमा जली  
 गुरु मेमते जी, कांइ सालूमेवाली सांगानेर ॥ स० सु० ४ ॥ थारी  
 ज्योति घणी गुरु जिंगभिगे जी, कांइ वधती गढ़ वीकाण ॥ स० ॥  
 आसा पूरण आवजो जी, अेतो देरावररा दीवाण ॥ स० ५ ॥  
 म्हारी वीनतनी जलै मानज्यो जी, कांइ दादाजी दीनदयाल ॥  
 स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांइ पाटोथर प्रतिपाल ॥ स०  
 सु० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सांगानेर विराजै, गुरु परतिख  
 तिहां राजै रे ॥ म्हारा सगुरुजीनी बलिहारी ॥ मनवंछित पूरो  
 म्हारा, म्हेतो चरण पखावां थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन जरिख  
 कचोली, मांहे बलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु  
 थाया, पूज्यां सब पाप पुलायारे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमने सोमवारा,  
 थारे जात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० ॥ सुध मन पूजा कीजै, दुख  
 दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमां  
 हे तारी, कीरत चिहुं दिशिमांहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अ  
 वर न कोई, दीगो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूमेवा  
 ली सांगानेरे, जिहां राज करै नितमेव रे ॥ म्हा० ॥ श्रीलंघ मिल  
 तिहां आवै, जिहां लूणियां गेठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान  
 सार गुरुराजा, ज्यांरा वाजै सदाइना वाजारे ॥ म्हा० ॥ हमानंद  
 न गुण गावै, करजोमी शीस नसावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ अथ दादाजीकी लावणी संग्रह ॥  
 सदगुरुजी म्हारा, दरशाण दीज्यो जी गणपति साहिवा ॥  
 ॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो बुद्धि विख्याता ॥ सद  
 गुरु महर करीज्यो मुऊपर, ज्युं निंजनकूं माता हो ॥ स० ॥ १ ॥

खरतर राजचंद्र पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें सं  
 कट काटै, संघ सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगजाहे परचा  
 अधिकारि, जागे सब संसार ॥ जगदरियांमे ज्याज नगारी, जिन गु  
 रुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणाम्बुज दरशालेती, पा  
 पतिमर हट जाय ॥ गुरु परमानम सुगुण शोभागी, गुरुगुण केम  
 कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेली नेवर वणकाती, लिये अली  
 बहु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अन्न विचक्षण, मृडु समीर ऊणकार  
 हो ॥ स० ॥ ५ ॥ सदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसदगुरु दरवा  
 र ॥ इंद नरिंद नसे पदपंकज, हरखित चित्त नुहार हो ॥ स० ॥  
 ६ ॥ रुद्र सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावै ॥ जात्री  
 आवै जात्र करणकूं, केशर रंग मचावै हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन  
 अर्चन सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन ऊ  
 लार, कौरे सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवन  
 सुखकर, नंद चंद्र शशि वार ॥ हतैष माश प्रतिपत् दिन जेव्या,  
 शुक्ल पक्ष शुक्ल वार हो ॥ स० ॥ ९ ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहै,  
 तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद्र जिम हंस सूरिसर, खरतर इंद्र न  
 दार हो ॥ स० ॥ १० ॥ सदगुरु धर्मशाल परजावै, कुशल होत नित  
 साय ॥ रुद्रिसारपे महिर करीनें, अविचल लील वताय हो ॥ स०  
 ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुनः ॥ मोरी सखी सहेलियां आज  
 चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद्र पाट अधिकारी, श्रीजि  
 नकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद्र हे  
 ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगहना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥  
 डुष्ट कष्ट जय दूर करीनें, देवो सुख विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥  
 पूनमश् जक्ति धरीनें, आवै संघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद  
 घोली, पूजै विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु आगले

सरे, सऊ शौले सिणगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेनुर  
 ऊणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवै चित्त  
 अलशाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥  
 मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कदवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥  
 बलिहारी गुरुनामनीसरे, बारीजात वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥  
 संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम  
 गमालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगठ  
 सुखकर सोजागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत शशि  
 अग्निनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज  
 सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ रुढसार गुरु गुणगण ऊपर, नित  
 प्रति हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥  
 कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह  
 अकवर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर  
 मंरुल सम सूरी, दीपत वदन ठवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंरुल  
 मांहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमा  
 णिक्य सूरी पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंद्र रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पे  
 खतही हरखित ज्यो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥  
 इति पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥ श्रीसौजाग्य सूरीसरू,  
 गुरु गठपति हो, खरतर गठ सुखकार ॥ साहिबजी ॥ कोठारी  
 कुल दीपता, गुरु गठपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥  
 करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत  
 अठारे बासठै, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे  
 सीतोत्तरे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाणमें,  
 गु० पद प्रजाकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोजता,  
 ०गु करता जग उपहार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-



हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोधरू, गु० दीपत  
 गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ जगणीस सतरे समें, गु० पायो देववि  
 मान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद बन्धि निधि उरुपती, गु० माघमाश  
 सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वेत पद्म तूर्या तिथि, गु० प्रेम धरें हरखाय  
 ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरिसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥  
 कुशल कला नित नेहसें, गु० प्रणमैं इम रुद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥  
 इति सौजाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये ठे देशना रे, त्रिजुवन जन हितकारज ॥ पर  
 खद बारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रजु  
 मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ ज्ञव्य मधु-  
 र तो ज्ञावणी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज-  
 रपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रजु वचनामृत पान  
 श्री रे, अजर अमर पद आय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणें मनमोहनी  
 रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांजले ज्ञव्य लहे सही रे, जिन पर  
 ज्ञाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणारे, नय निक्षेप  
 अजंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतजंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥  
 शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर  
 वरसतारे, जवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाज पसा  
 यणी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश  
 जणें कळयाण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुणनिधि  
 श्रीजिनचंद मुणिंदा, मुख सोहे पूनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर  
 वृंदा, सुगुरु म्हारा देशना हिव दीजै ॥ आंरी देशना सुण मन  
 रीजै ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, ज्ञमंरुल ऊपर  
 बायो ॥ कमलादि सकल मन ज्ञायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाउल देव-



गंधार, वलि जैरेव राग मंजार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥ ३ ॥  
 पंच सबद गहिर ध्वनि गाजै, जिनवर घर जालर बाजै ॥ बहु  
 सज्ज अया धर्म काजै, सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो,  
 श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरै स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥  
 सुण विनंती वचनविशेष, गुरु आपै धर्म उपदेश ॥ टालो जव  
 कोरु कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनो मीठी बारी, उपदेश सुणो  
 जविप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रत  
 पो ज्युं शशि सूर, दिनप्रति वधते नूर ॥ हरो संघ सकल दुख  
 दूर, सु० ८ ॥ गोरी मिल संगल गावै, जर मोतियां आल वधावै ॥  
 लावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापूत्र गोखे रतन जमाव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद  
 सूरिसरु, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गहराय हो ॥ श्रीजिनलाल पा  
 टोधरु, सुगुरु म्हारा दिनर सोजे सवाय हो ॥ म्हारा सहिज सो  
 जागी, म्हारा शुभ गुण रागी, म्हारा हितधरु ॥ १ ॥ सुगुरु म्हारा  
 देशना द्यो मनरंग हो ॥ संघ सहू उठक अयो, सु० सुणवा असृ-  
 तवाण हो ॥ वहिला वंछित पूर हो ॥ सु० अये अवेसर जाण  
 हो ॥ म्हा० २ ॥ मूर किरण धर संचर्या, सु० विकस्या कमल  
 कलाप हो ॥ राग विज्ञास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप  
 हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसबद जालरतणा, सु० संगल नाद उच्चार  
 हो ॥ इम बहु विध जूझरुलै, सु० वरत्या जयकार हो ॥ म्हा०  
 ४ ॥ संघ सकल जगते करी, सु० जोवै थारी वाट हो ॥ नीचे  
 पधारो गठपती, सु० द्यो दरिशाण महगाट हो ॥ म्हा० ४ ॥ तिण  
 अवसर सिंघासणें, सु० पावधारै नलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गहरै  
 स्वरै, सु० वांचै सूत्र सिद्धांत हो ॥ म्हा० ६ ॥ बहु जवियण प्रति-

भूजवै, सु० वयस सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशता, सु०  
 टालै जवहुख जोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तरणी जिम दिनमणी,  
 सु० गुण वत्तीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतरणी, सु० निर  
 ख्यां मन उल्लास हो ॥ म्हा० ८ ॥ थे चिरजीवो गढपती, सु०  
 राज करो इक आण हो, इम बोलै मुनि सुध सदा, सु० वाणी  
 कमाकट्याण हो ॥ म्हा० ९ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा  
 निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदिह्यै, जविकजन  
 ॥ एहवा ० ॥ आप तरै जुरनकूं तरै, शरण तिहारी गहियै ॥  
 ज० १ ॥ जिम सारथपति साणीजनकूं, वंछित देशें बहियै ॥  
 ज० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशें, लहै जविक सुख कहियै ॥ ज०  
 २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारे, राखै गांजन महियै ॥ ज० ॥  
 बलि निर्यामक उपमा धारै, जिम नाविक नौ तरियै ॥ ज० ३ ॥  
 एक असंजम दोय विधि बंधन, त्रिविध दंभ परिहरियै ॥ ज० ॥  
 चार कषाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ ज० ४ ॥ षट्  
 काय रक्षक महाजय जीपक, अशरण शरण कहिजियै ॥ ज० ॥  
 एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ ज० ५ ॥  
 गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ ज० ॥  
 रिदयकमल नितप्रति राखोजै, आनंद शिवपद लहिय ॥ ज०  
 ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः जवि तुझे वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥  
 ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थकरू रे, वरधमान जिनरा  
 ज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोजत तेज समाज ॥  
 जविकजन वंदो रे जावै गढपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुध-  
 रम गणधरू रे, इत्या द्वादश अंग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोहा  
 मणो रे, चवद पूरुधर चंग ॥ ज० २ ॥ प्रजव सज्यंजव जगमें  
 परगदा रे, श्रीयशोजन सुणिंद ॥ श्रीतंजुतविजय जइव हुजी रे,

श्रीधूलज्जद दिणंद ॥ ज० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरू रे, हुवा  
 वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो जूनले रे, सुरनर नामत शिस ॥  
 ज० ४ ॥ तास परंपर चंद्रकुले ज्ञा रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री  
 उद्योतन सूरि सोहामणा रे, वयरी साख मऊर ॥ ज० ५ ॥ दरवमान  
 परमुख शिष्य जेहना रे, चार अशी परिमाण ॥ गठ चोराशो प्रमद्व्या  
 तिहांथकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ ज० ६ ॥ तास शीस जिने  
 श्वर सूरिजी रे, दुर्लभराय समक ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रूवमो  
 रे, गठपति जीत प्रत्यक ॥ ज० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपता  
 रे, श्रीअन्नयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त गठपती रे,  
 श्रीजिनकुशल अमाय ॥ ज० ८ ॥ परम प्रज्ञावक इण गठमें थ  
 या रे, आचारज गुणवंत ॥ शुद्ध सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि  
 हरखंत होय संत ॥ ज० ९ ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमे रे, श्री  
 जिनलान्न सूरिश ॥ तास पटोधर जगमां परगमा रे, श्रीजिनचंद  
 मुणीश ॥ ज० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे  
 द्विजपति ॥ गंजरीगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥  
 ज० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥  
 जंग पदारथ अति बिस्तारसें रे, ज्ञाखे ज्ञवि हितकार ॥ ज० १२  
 ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधे ज्ञानी रे, जिनवाणी अनुसार ॥ एहने  
 सेवो रे क्युं जूला ज्ञमो रे, थाय सफल अवतार ॥ ज० १३ ॥  
 सुरतरु ठंमी वांवल आदर रे, काइ नर मूढ गिमार ॥ ए उखाणो  
 साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ ज० १४ ॥ नाम धार-  
 क आचारज ठै यणा रे, पंचम काल मऊर ॥ पिण इण सरिखो  
 जगमां को नही रे, स्व पर तारणहार ॥ ज० १५ ॥ वाचक लाव  
 एयकमल पसायथी रे, कमलसुंदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख  
 पामस रे, पातिकनी करि हाण ॥ ज० १६ ॥ इति वधावा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस कृत्तस्थो ॥ ए चाल ॥ मोतियने मेह  
 वरसीयो, सखि आज हुल आणंद ॥ पूज पधार्या विहरता, नामे  
 सौभाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सदगुरु सुरतरुनो  
 कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ कान्तिगुणे  
 करी शोजता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर ठत्तीस गुणे सदा,  
 विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसिया जे पर उपगार रे, उपशमरशना  
 जंमार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी पर गाजता,  
 सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी  
 खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपे जिम जलहल जाण  
 रे ॥ जेहनो अतिशय विन्नाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु  
 सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथै जेहनें शोजता, मुनिवर  
 जिम मोतीमाल रे ॥ कोई शिवर ने कोई बाल रे, वंदीजै तह त्रि  
 काल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गह  
 सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ स  
 हु संघतणा सिरदार रे, सखि सुमतितणा जरतार रे ॥ जेहनें प्र  
 णमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ बिसतारता, सखि दे  
 ता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप जावना, बारे जावन सुविशेष  
 रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदेश रे ॥ सखि०  
 ॥ ६ ॥ सुणतां श्रोजिनराजना, सखि अमृतवचन विलाश ॥ कण  
 में कर्म समूहनो, सखि निश्चै होवे नाश रे ॥ आय निज ज्ञान प्र  
 काश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करतां निज रूप सुजाष  
 रे ॥ सखि० ७ ॥ इति दधवो ॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी,  
 जगगुरु गोतम गणधारी रे ॥ सहियां गुंहली करो ॥ गुंहली करो

गुरु संगे, जगति तणै उबरंगे रे ॥ सही० ॥ विचरंता मुनिराया  
 राजग्रहनगरी आया रे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचैडी विषय निवारी,  
 नवविध ब्रह्मव्रतधारी रे ॥ सही० ॥ ज्यार कषायकुं टालै,  
 पंच महाव्रत सूया पाले रे ॥ सही० ॥ २ ॥ सेवे पंचाचार, धरै पंच  
 सुमति मनुहार रे ॥ सही० ॥ त्रिण गुप्ती वलि ठाजै, इम ठत्रीश  
 गुणै गुरु राजे रे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी, शुद्धातम  
 अनुभव रंगी रे ॥ सही० ॥ उत्सर्गने अपवादी, बहु नयगम जंग  
 प्रवादी रे ॥ सही० ॥ ४ ॥ ओक्कमारग उपदेशी, धरे धरमध्यान शुज  
 लेशी रे ॥ स० ॥ रत्नत्रय अज्यासी, ज्ञविजन चितकमल विकासी  
 रे ॥ स० ॥ ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै, गणधर वंदन शुज जावे रे ॥  
 सही० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूरै, मोह तिमिर जरमने चूरै रे ॥ सही०  
 ॥ ६ ॥ निसुणी गुरुमुख वाणी, समकित निरमल करै शाणी रे ॥  
 स० ॥ श्रुत सेवा जे करस्यै, ते कीर्तिसागर पद वरस्यै रे ॥ स०  
 ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

पुनः देशना ॥ नणदलवाई चुरुले जोवन जिल रह्यो ॥ ए  
 चाल ॥ सुणीये सदगुरु देशना ए सहियां, मधुर सुधारश वाण ॥  
 सदगुरु स्हारा, द्यो मनमोहन देशना ॥ १ ॥ वीरजिनंद जिम उप  
 दिस्या ए सहियां, नय निक्षेप सरूप ॥ स० ॥ तुम मुखवाणी नि  
 रमली ए सहियां, ज्यसे घ ५२ चूं ॥ सद० ॥ २ ॥ तखत विराजो  
 साजता ए सहियां, उदयाचल ज्युं दिखंद ॥ स० ॥ तेज ऊलामल मुर  
 तरू ए सहियां, मुखवि पूनमचंद ॥ स० ॥ ३ ॥ जीवदया तरू सींच  
 वा ए सहियां, तुम वाणी जलधार ॥ सद० ॥ श्रुतसागर वीरजधरा  
 ए सहियां, जाखो नव तत्व सा ॥ सद० ॥ ४ ॥ संव जगति  
 नित साचवै ए सहियां, पूरव पुन्यसुग्रह ॥ सद० ॥ तारण तरण  
 जिहाज ज्युं ए सहियां, सुध समकित सुध ज्ञान ॥ सद० ॥ ५ ॥

खरतरगठ महिमां निलो ए सहियां, सदगुरु कुशलनिधाम ॥ सदा० ॥  
 रुद्रसारनी ज्ञावना, मंगल धवल प्रधान ॥ स० ॥ ६ ॥ इतिदे  
 शना ॥ पुनः ॥ सुगुरु म्हारा व्याजनी पर तारो, गुरु म-  
 नरो ये मोह्यो म्हारी ॥ सवाईगुरु व्याजनी० ॥ अमृत उ  
 पम जिनवाणी, एयादाद सुधारण खाणी, अति नय निक्षेप प्रमा  
 णी ॥ सवाई० ॥ १ ॥ जगगुरु श्रीजिनवर ज्ञाखी, गणधर मुनि  
 सूत्रे साखी, आगमविधि हृदये राखी ॥ सवा० ॥ २ ॥ सदगुरु  
 ज्ञानी गुणवंता, ज्वि हृदयकमल बोधंता, गुरु सदास किरण ज  
 लकंता ॥ सवा० ॥ ३ ॥ ज्विजीव श्रवण गुण रसिया, चात्रक  
 ज्युं जलधर हसिया, उपदेशे डुरित सब नसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 गुरु धर्म शील सोजागी, तसु चरणों श्रुतमति जागी, रुद्रसार व  
 चन धुन जागी ॥ सवाई गु० ५ इति वधावो ॥

## अथ श्रीखरतर वृहद्भक्ती सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पञ्चस्काण व्रत  
पिठवी अष्टावास्या ३० तिथियों करे, ८ अष्टमी कम होय तो  
अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, ७ जो चतुर्दस कम होय तो १४  
का उपवास अमावस या पूर्णमासी करे, इसका कारण यह है की  
यह दोनों तिथि दशावर पर्य है, चौदश पर्यदिन हैं तेसैं अमावस  
पूर्ण ज्ञी चिरंतन पक्षीका दिन है, यह दोनों दिन धर्मकृत्य क  
रनेके हैं, पारण उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत  
जैनी पंचांगकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथियां  
गिनेमें आती है, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोंका कय  
वृद्धि नहि होता, जंबूद्वीपपद्मतीर्थ पांच संवत्सर कहे हैं, उसमें  
स अग्नि वर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्वियोने प्रचलित कर रक्का है, लेकि  
न् सूर्यसंवत्सर तीनसैं सवापैंसठ दिनका होता है, इस वास्ते जै  
नागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नयवाद हेतुसैं. इस वास्ते  
जो चौदश कय के तो उपवास तथा पक्षी प्रतिक्रमण निस्संदेह  
पूर्ण तथा अमावसके दिन करे, लेकिन् तेरस तथा चौदस कय  
तिथिक वितत्येको न करे, ७ जो बेला करे तोहरीगोमेतो दोनों  
दिन त्यागपक्षमें आह्य है ॥ अब कोइ वखत संवत्सरीकी चोथ  
कम हो तो पांचसके दिन संवत्सरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन् तीजके  
दिन कदापि काले ज्ञी नहि करे, ७ जो चोथ दो होय तो पहली  
तिथिको संवत्सरी करे, ओर कोइ ज्ञी तिथि दो होयतो पहली  
तिथि जाननीय है, दूसरी लौकतिथि है. इसरा यह प्रमाण है,  
साठ घन्टीकी तिथि गोरुके दुसरी घन्टी अधवन्टीकी तिथि मानणा



बुद्धिमानोंका काम नहीं, इस पर कोई ऐसा कहे की अपने तो नक्षत्रतिथि मान्य है, सूर्य उदय होय जहां तक कोई ज्ञी तिथि होयतो उस दिन वोही तिथि मानते है, इस वास्ते जो दुसरी तिथि अधवनी उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष है? इस प्रश्नका उत्तर—हे ज्ञव्य, जो पहले दिन तिज मानी है, उर ती जके दिन चोथ बहुत घनी जुगतेगा, लेकिन वह तिथि तीजही मानीजेगा, इसी तरे चोथके दिन सूर्य उदयकी वखत घनी अधवनी चांथ होखेसं चोथ मानीजेगा, लेकिन जो तिथी दो होगी उसमें पहली तिथि सूर्य उदय उर अस्त दोनोंमें रहंगी, तबतो ऐसी संपूर्ण तिथिकों ठोकके दुसरी ओमीसी तिथिकूं व्रत करणा लाजम नहीं. कार्तिक मास बढे तो पहले कार्तिक चोमासो करे. फाल्गुण तो बढताही नहीं, अगर बढेतो दुसरे फाल्गुणमें चोमासा करे. असाढ़ दो होयतो दुसरे असाढ़में चोमासा करे. असाढ़ चोमासेकी चौदससे पचास गुणपचासमे दिन चोथकूं संवत्सरी करे, श्रावण जा-दवा आसोज बढेतो पंचमासी चोमासा करे. श्रावणमास दो होयतो दुसरे सावण सुद ४ कूं संवत्सरी करे, चोमासेकी चौदससे पचास दिन लांघके संवत्सरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीक ढासूत्रजीके पहिली समाचारीमें पाठ है, उर जो दो महीना होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक्ष दुसरे बढे महीनाका शुक्ल पक्ष ऐसे कड्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका सुदपक्ष दुसरेका वदिपक्ष एवं ३० दिन लूं जाननां, इन ३० दिनोंमें कड्याणकतिथिका व्रत पञ्चस्काण नहि करे, यह तिथियो का प्रमाण श्रीहरिजङ्गमूरजी कृत तत्त्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध है, सो किंचित्प्रमाण गाथा लिखो हे ॥ निहिपक्षोपुञ्जति ॥ कयवा

जुत्तधम्मकज्जेय ॥ चान्हसीविलोवो, पुत्तमियपस्किपम्भिकमणं ॥ १ ॥  
 तत्रेवपोसदविदी, कायवासवगेहिसुद्धहेज ॥ नहुतेरसीइकीरई, ज  
 म्दानाणाइणोदोसा ॥ २ ॥ सूरुदयपम्भियायावी, तेरसीहुंतिनप  
 स्कियंकुज्जा, चन्नम्मासियकरणे, एसविदीदेसिजुत्तमणा ॥ ३ ॥ ति  
 हिवुठ्ठीएपुवा, गहियापम्भिपुत्तज्जोगसंयुत्ता, इयराविष्वाणणिज्जा, परं  
 योवत्तित्तुत्ता ॥ ४ ॥ ( तेसेइ ज्योतिष्करं पयत्तेमें जी एसाही  
 लिखा हे ) ॥ बहिसहियानअदमी, तेरसिसहियानपस्कियाहोई ॥ प  
 म्भिवेसहियानकयावि, इइज्जणियावीयरामेण ॥ १ ॥ अदमिदिनंमि  
 पायं, कायवाअदमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तमंमि, नवमीठ्ठीनका  
 यवा ॥ २ ॥ पनरसम्मियदिवसे, कायवंपस्कियंतुपाएण ॥ चान्हसे  
 विकइया, नहुतेरसिसोलस्समेकहवि ॥ ३ ॥ तथा श्रावक सामायक करे  
 तब पहली सामायकदेमक ३ वीर उच्चस्के पीठे इरियावही पम्भिकमें,  
 बयोंकी आत्मार्थी आचार्य श्रीजदवाहूस्वामी, श्रीहरिजदसूरजी,  
 तथा श्राद्धविधिके कर्ता तथागन्धी श्रीरत्नशेखरसूरजी, तथा कमला  
 गन्धी नवपद प्रकरण कर्ता श्री सूरि प्रमुख आचार्योंके बनाये  
 ग्रंथोंमें पहले करेमिजंते साठ कहके फेर इरियावहीका पाठ हे ॥  
 तथा श्रीमहावीरस्वामीके बव कढयाणक मान्य हे, इस बातका  
 कढपसूत्रादिक अनेक ग्रंथोंमें पाठ हे, स्वरतरंग, तपगन्ध के आचा  
 र्योंने ग्रंथोंमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी संबंध जा  
 एके बडा कढयाणक न मानते हे उनोको मिंगंवरकी तरे मल्लि  
 नाथस्वामीको जी स्त्रीपणें माणना नहि चाहिये, क्यूंकी वो जी  
 आश्चर्यकारी संबंध समानत्वही हे, इसरा अपने मनकद्विपतपणेंसे  
 न माणनेसे अपनेही पूर्वाचार्य गुरुवोकी आज्ञा लोपन होती हे  
 तैसें सर्वे पोषध अष्टमी चतुर्दशी कढयाणकादिक पर्वतिथिको करे,  
 लेकिन विनापर्व सामान्य तिथिमें पोसह करणेका कथन कित

सिद्धातमें जी नहीं है, पर्युसणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही क-  
 रणी ऐसा बंधाण नहीं, अधकी जी करे । तथा आंखिलमें एक  
 अन्नद्रव्य दूसरा उष्णजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणेका क-  
 यन है इस वास्ते जीव्हाका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रह-  
 ण करणा नहिं चाहिये । तथा तरुण स्त्रीकुं मूलनायकजीकी  
 पूजा करणी प्रमाणीक आचार्योंने मना किया है, कारण इस का-  
 लमें प्रायें स्त्रियोंमें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगट  
 होना दीखरहा है, तथा श्रावककुं पञ्चस्काणमें पाणस्तलेणवाका  
 पाठ कहणा युक्त नहीं, यह पाठ साधूका है, तथा दिनप्रति एक  
 उपवाश पचस्कावे, जो अधिक तपकी इच्छा होय तो अपने दिलमें  
 धारणा रखे, लेकिन पञ्चस्काण नित्य सूर्योदयकी वखतही करे ।  
 तथा जिस धान्यकी दो फाळ होय सो सब बिदलकी गिणतीमें  
 है, इस द्विदलधान्यकुं गोरस दही ठाठके साथ जड़ण नहिं करे,  
 तथा मरण जन्मका सूतक जिस घरमें होय उस घरका आहार  
 पाणी साधू वर्जन करे, लेकिन संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं  
 माने, इत्यादि इहां संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी है,  
 अनेक ग्रंथ खरतर सामाचारीके है जिसमें सरल शुद्धोपयोगी स-  
 मयसुंदरोपाध्याय विरचित सामाचारीशतक पंचांगी प्रमाण सू-  
 त्रोंके पाठ संयुक्त है सो अनेकांती बुद्धिवानोंने गुरुगमसें देखके  
 धारणा ॥ यह खरतरगण्डमेसें चोरासी गण्ड जया है, जिस वास्ते  
 खरतरगण्डमें चोरासी नंदि है, उद्योतनसूरजी, नेमचंद्रसूरजी के  
 निजशिष्य थे, इस उद्योतनसूरजीने ८३ विद्यार्थी शिष्य उर ८४  
 में निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरिः एवं ८४ को आचार्यपद दिया, व-  
 र्द्धमानसूरिःके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०८० की शालमें अ-  
 णदिलपुरपत्तनमें चैत्यवाशी उपकेशी गणवालोकुं ज्ञान उर किया

करके जीता, तब डुल्लेन्नराजाने खरतर विरुद्ध दिया, तबसे कौटिक गच्छ चंडकुल वज्रशाखावाले खरतरगच्छ कहलाये लगे, लेकिन अग्नी स्वमताभिमानो खरतरगच्छकूं संवत् वारेसे १४ की सालमें जिनदत्तसूरजीसे जया ऐसा धर्मसागर निन्हवकी तरे स्वकल्पित ग्रंथोंमें लिखा है, लेकिन अण्णो पूर्वाचार्योंके बणाये सध्यक्तसप्तति आदि ग्रंथकूं तो देखे, इन जिनेश्वरसूरिके दो शिष्य जये, बड़े जिनचंडसूरि, जिनोने संवेगरंगशालादि ग्रंथ बणाये नुर श्रीमाल गोत्र थापा, दुसरे श्रीअजयदेवसूरि, जिनोने नवांगकी वृत्ति शाश नदेवताकी वीनतीसे रची, जिनोके शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरि, जि नोने हजारों राजपूतोंको श्रावक बणाये, जिनोके शिष्य श्रीजिन दत्तसूरजी एक लाख तीस हजार राजन्यवंशी माहेश्वरी तथा ब्रा ह्मनोंको श्रावक बणाये, राखेचा लूणीया पारख, सांवसुखा मालू कोठारी, वोधरा नाहटा, बड़ेर गेलठा जावक चम्म डुगम सेठिया ब्रह्मेचा, इत्यादिक तीनों गोत्र स्थापक जणशाली प्रमुखगोत्रोंकूं नुसवंशमें श्रावक बणाया, सब गोत्रोंके नाम लिखलेसे ग्रंथ बढ जायगा इस वास्ते इतने पर समज लेणा, एक अठारे जाति रत्न प्रज्ञसूरिजीने नुसियामे नुसवाल बणाये है, बाकी प्रायें सर्व नुस वाल कुल श्रीवर्द्धमानसूरजीसे लेकर श्रीजिनदत्तसूरि माहाराज तक खरतरगच्छके प्रतिबोधक है, पीठे नुसवालवंशी हुये पीठे सं वत् १५ सैं से लेकर आज दिन तक नुर गच्छियोने तथा अताव लंबियोने इनोपर अपना सिका जमाया है, मूल वंशावली देखो गे तो सब व दोलत खरतर वृहज्जकी है, यह बात हमने बहोतों की वंशावली तपासके लिखी है, जिनोके पट्ट परंपरामें दादा श्री जिनकुशलसूरजी जये, उनोके शिष्य उपाध्याय श्रीकेमकीर्तिले केमधामशाखा तविद्याणगढमें पांचसे राजन्यवंशीयोकूं दीक्षा देखे

से प्रसिद्ध जई, उस शास्त्रामें जगत्पुज्य श्रीसाधूगुणसैं विराजमान  
 धर्मशालगणिः परमगुरु जये, जिनोके शिष्य पंडित श्रीकुशलनि  
 धानमुनिः जये, उन परमपुरुषसाधूजी माहाशजका चरणाब्जचं  
 चरीक न० श्रीरामलालगणिः ने शिष्यमंडली पं । केमचंदमुनिः चि ।  
 पेमचंद अमरचंदादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य  
 अनेक विद्यार्थियोके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्तव्य सर्व जो  
 वोके उपगारार्थ ठपायके प्रसिद्ध करा हे.

ठिकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर बसा उपासरा विद्या-  
 शाला न । श्री । परमोपगारी युक्तिवारिधिः । रामलालज । गणिः ॥





